

बीर सेवा मन्दिर  
दिल्ली

★

७३८

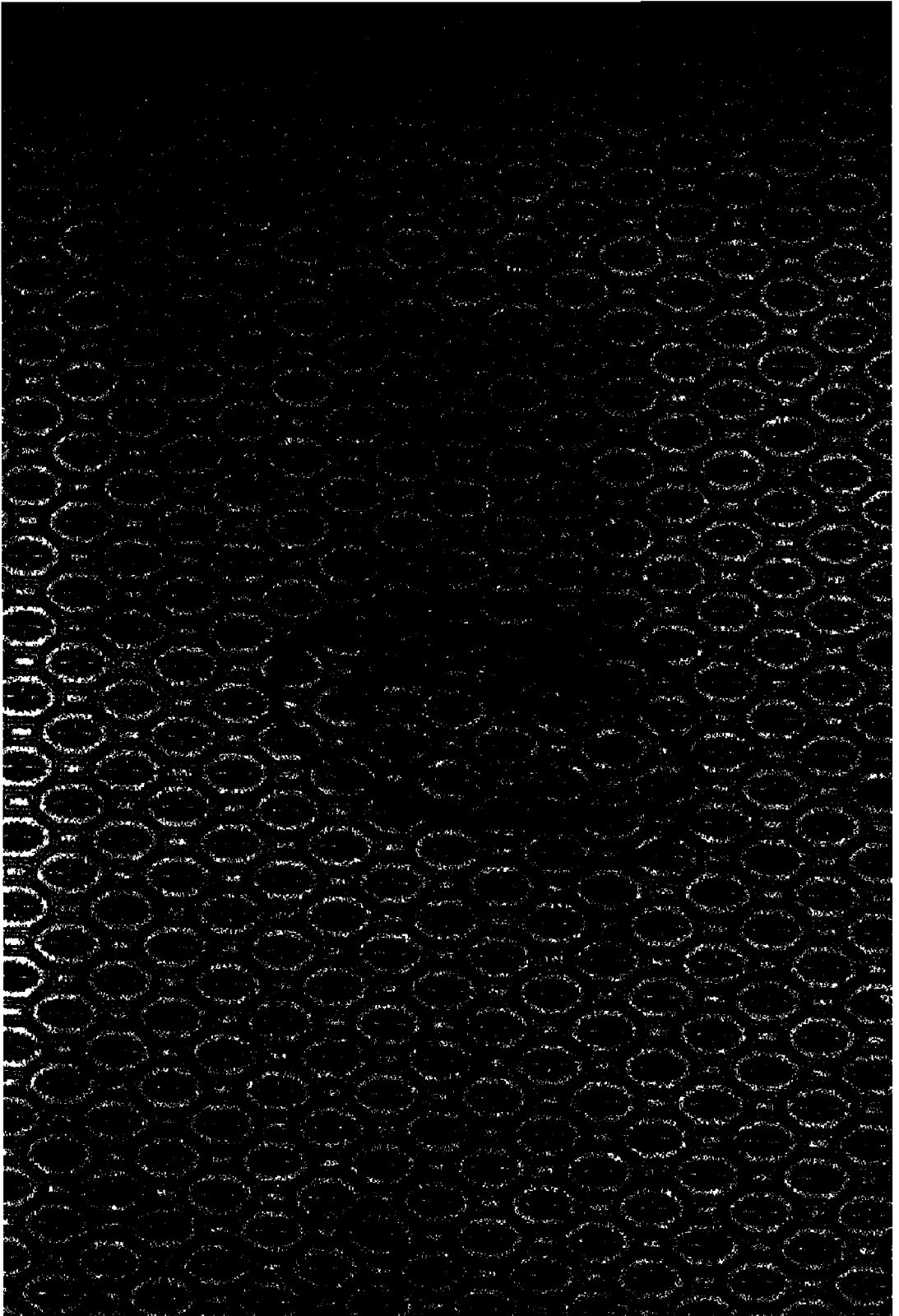
क्रम संख्या

२२४.०१

काल न०

३८५

वर्ष





MANIKCHAND DIGAMBARA JAINA GRANTHAMĀLĀ  
No. 37

GENERAL EDITOR : PROFESSOR HIRALAL JAIN



THE  
**MAHĀPURĀNA**  
OR  
**TISATṬHIMAHĀPURISAGUṆĀLAMKĀRA**  
( A Jain Epic in Apabhramśa of the 10th Century )  
OF  
**PUSPADANTA**

Vol. I.

CRITICALLY EDITED BY  
D. P. L. VAIDYA, M. A. ( Cal. ); D. Litt ( Paris )  
Professor of Sanskrit and Allied Languages  
Nowrosjee Wadia College, Poona

Published by  
**MANIKCHAND DIGAMBARA JAINA GRANTHAMĀLĀ, BOMBAY**

**1937**

**Price Rs. Ten**



**Text ( pages 1-592 ) Printed by Ganesh Krishnath Gokhale, Secretary Shree Ganesh  
Printing Works, 596-97, Shanwar Peth, Poona 3 and the rest by Anant Vinayak  
Patwardhan, B. A., at the Āryabhāṣhan Press Poona, Peth Bhamburda, House  
No 915/1, and published by Pandit Nathuram Premi, Secretary, Manikchand  
Digambara Jaina Granthamālā, Hirabag, Girgaum, Bombay 4.**

माणिकचन्द्रदिगम्बरजैनग्रन्थमालायाः सप्तत्रिंशत्तनो ग्रन्थः

महाकविपुष्पदन्तविरचितं  
त्रिषष्टिमहापुरुषगुणालंकारं नाम  
अपभ्रंशभाषानिवद्धं

# महापुराणम्

तस्यायं

## आदिपुराणं

नाम

प्रथमः खण्डः

पुण्यपत्तनस्थत्राडियार्केलिजम्ब्यत्रियामन्दिरनियुक्तेन

संस्कृतप्राकृतादिभाषाध्यापकेन

वैद्यापाह्वपरशुरामशर्मणा

संपादितः

प्रकाशिका

माणिकचन्द्रदिगम्बरजैनग्रन्थमालासमितिः

विक्रमाब्दाः १९९३ ]

[ ख्रिस्ताब्दाः १९३७

मूल्यं दश रूपिकाः

## TABLE OF CONTENTS

मकाशकका निवेदन ... ..	vii
INTRODUCTION ... ..	ix-xxxvi
Introductory ... ..	ix
The Critical Apparatus ... ..	x
The Prasasti Stanzas of the Mahāpurāna ... ..	xvi
Bharata, the patron of Puṣpadanta ... ..	xxviii
What is a Mahāpurāna ? ... ..	xxxii
Works on Sixty-three Great Men ... ..	xxxiv
Acknowledgment of obligations ... ..	xxxvi
ग्रन्थपरिचय ... ..	xxxvii-xlii
TEXT WITH CRITICAL APPARATUS AND FOOT-NOTES ... ..	१-५९०
NOTES. ... ..	593-662
Glossary of Important Prakrit Words ... ..	663
Addenda et Corrigenda ... ..	671

## प्रकाशकका निवेदन

अपभ्रंश भाषाके सर्वश्रेष्ठ महाकवि पुष्पदन्तकी रचनाओंका परिचय संभवतः सबसे पहिले, मैंने अपने एक विस्तृत लेखमें दिया था जो ' जैन-साहित्य-संशोधक ' के जुलाई सन १९२३ के अंक में ' महाकवि पुष्पदंत और उनका महापुराण ' शीर्षकसे प्रकाशित हुआ था। उसके बाद अनेक विद्वानोंका ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और अपभ्रंशके साहित्यके विषयमें लोगोंकी दिलचस्पी बढ़ने लगी। किंग एडवर्ड कालेजके प्रोफेसर सुहृद्वर पं० हीरालाल जैन एम० ए०, एलएल० बी० तो अपभ्रंश-साहित्यपर मुग्ध ही हो गये और उन्होंने अपने अध्ययनका मुख्य विषय ही इसे बना लिया। अपभ्रंशके साहित्यके लिये उन्होंने जयपुरकी यात्रा की और वहाँके पुस्तक-भंडारोंका महीनों तक अन्वेषण किया। कारंजाके भंडार भी उन्होंने समय समयपर देखे। इसके फलस्वरूप उनके पास अपभ्रंश-साहित्यका और उसकी साधन-सामग्रीका इतना अच्छा संग्रह हो गया है कि अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। उनकी जिद्दापर तो इस साहित्यकी सुललित सूक्तियाँ निरन्तर ही वृत्त्य करती रहती हैं। इस विषयपर वे अँगरेजी और हिन्दी पत्रोंमें कुछ न कुछ लिखते ही रहते हैं।

सन १९३१ में उनके उद्योगसे कारंजा-सीरीजका प्रारंभ हुआ और उसमें महाकवि पुष्पदन्तके यशोधरचरित और नागकुमारचरित तथा अन्य कवियोंके पाहुड दोहा, सावयधम्म दोहा और करकंडुचरित ये पांच ग्रंथ उन्हींके संपादकत्वमें प्रकाशित हुए।

यह महापुराण भी उक्त सीरीजमें ही प्रकाशित होता, परन्तु कुछ आकस्मिक कारणोंसे उसके फण्डमें कमी आ गई और अर्थाभावेक कारण वह संभव न हो सका। तब इसे माणिकचन्द्र-ग्रन्थमालामें प्रकाशित करनेका निश्चय किया गया।

परन्तु यह ग्रन्थमाला भी तो धनसम्पन्न नहीं है, समाजसे जो इस पन्द्रह हजार रुपया इसे मिला है उससे ही यह अब तक चल रही है और किसी तरह अत्यन्त मितव्ययसे ३५-३६ ग्रन्थ प्रकाशित करनेमें समर्थ हुई है। बड़ी कठिनाईसे महापुराणका यह प्रथम भाग प्रकाशित किया जा रहा है और उत्तरभागके लिये चिन्ता है कि क्या किया जाय। पूर्वप्रकाशित ग्रंथोंकी बिक्री इतनी कम है कि उसके भरोसे इस महान् ग्रन्थके प्रकाश करनेका साहस नहीं किया जा सकता। यह तो तभी संभव हो सकता है जब जैनसमाज अपने अमूल्य साहित्यके प्रति अपने कर्तव्यको कुछ समझे और ग्रन्थमालाको इतना वरिद्ध न रहने दे।

अभिमानमेरु पुष्पदन्तके ग्रन्थ जैनसाहित्यकी अमूल्य निधि हैं और ऐसी निधि हैं जिनका वह गर्व कर सकता है। परन्तु दुर्भाग्यकी बात है कि हमारा समाज उस भाषाको एक तरहसे बिलकुल ही भूल गया है, जिसमें इस महान् कविने और इसके पूर्व-उत्तरवर्ती सैकड़ों कवियोंने अपनी सरस, सालंकार, सुपदन्थास रचनाओंसे सरस्वती माताका अपूर्व शृंगार किया था। एक समय था जब ये रचनाएँ घर घर पढ़ी और गाई जाती थीं और इनका संस्कृत काव्योंसे भी अधिक आदर था। सर्वसाधारण जनता शायद इसी भाषाको समझती थी और अपने कलाप्रेमको परितृप्त करती थी। परन्तु आज यह वृथा है कि जहाँ हमारे समाजमें संस्कृतके जाननेवाले सैकड़ों विद्वान हैं वहाँ इस भाषाके जानकार दस पाँच भी कठिनाईसे मिलेंगे। हमारे भंडारोंमें अब भी अपभ्रंश-साहित्यके सैकड़ों ग्रन्थ मौजूद हैं परन्तु पंडित कहलानेवाले भी उन्हें कोई महत्त्वकी चीज नहीं समझते। यह भी नहीं जानते कि आखिर ये किस भाषामें हैं। उन्हें पता नहीं कि वर्तमान प्रान्तिक भाषायें इसी भाषाकी बेटियाँ हैं इसलिये आज भाषा-शास्त्रियोंके लिये इसका साहित्य बड़े ही महत्त्वका साहित्य बन गया है। बाँम्बे, अलाहाबाद, बनारस और नागपुर यूनीवर्सिटियोंने अभी अभी इस साहित्यके एक दो ग्रन्थोंको अपने पाठ्य-क्रममें स्थान दिया है और आशा है कि शीघ्र ही अन्य यूनीवर्सिटियाँ भी इस ओर ध्यान देंगी। मेरा तो विश्वास है कि किसी भी प्रान्तीय भाषाका ज्ञान तब तक पूर्ण नहीं हो सकता जब तक वह अपभ्रंश-साहित्यको थोड़ा बहुत न जान ले। इस दृष्टिसे जो विद्यार्थी हिन्दी, मराठी, गुजराती, बंगाली आदि प्रान्तीय भाषाओंको लेकर एम० ए० होते हैं, उनके लिये अपभ्रंश-साहित्यके ग्रन्थ अनिवार्य रूपसे पढ़ने होंगे।

इस ग्रन्थका सम्पादन संशोधन संस्कृत, पाली, प्राकृत और अपभ्रंश भाषाओंके प्रकाण्ड विद्वान्, वाडिया कॉलेजके प्रोफेसर डॉ० परशुराम लक्ष्मण वैद्य एम्. ए., डी. लिट. द्वारा हुआ है। आपने अपनी स्वाभाविक उदारता और अपभ्रंश-साहित्यके प्रेमवश ही इस कार्यको किया है, अन्यथा इस दरिद्र ग्रन्थमालाकी उन जैसे धुरंधर विद्वानोंसे कार्य कराने जैसी शक्ति कहाँ है? इसके लिये ग्रन्थमालाके संचालक डॉक्टर साहिबके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकाशित करते हैं, साथ ही प्रो० हीरालालजीकी भी ग्रन्थमाला ऋणी है जिनके सहयोग और उद्योगसे यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है और जिन्होंने कृपापूर्वक इस ग्रन्थकी अंग्रेजी भूमिकाका हिन्दी सारांश भी लिख दिया है। यह माला कारंजा-सीरीजके अधिकारीवर्गकी भी कृतज्ञ है जिन्होंने बहु व्ययसे तैयार की गई इसकी प्रथम प्रेस-कापी इस मालाको प्रदान कर दी।

## INTRODUCTION

THE Mahāpurāna or Tisatthimahāpurisaguṇālaṃkāra is the earliest and the largest of the three known works of Puṣpadanta in Apabhraṃśa. Of the two smaller works, the Jasaharacarīa was edited by me and published in the Kāranjā Jaina Series, Vol. I, 1931. The Nayakunārucarīa was edited by Professor Hiralal Jain and published in the Devendrakīrti Jaina Series, Vol. I, Kāranjā, 1933. I am now presenting to the reader the first volume of Puṣpadanta's Mahāpurāna comprising the Ādipurāna, and hope to complete the work in two more volumes. When I announced in my introduction to Jasaharacarīa that I had undertaken the edition of the Mahāpurāna I did not realise how enormous the task before me was, and what financial and other difficulties the editor and the publishers might be involved into, but I am glad, after six long years of waiting, to offer to the linguists and the students of the Jain culture the first volume of this great work, and now I can assure the reader that if no further difficulties arise, I would offer the rest of the work within the next two or three years' time, so that all the three extant Apabhraṃśa works of Puṣpadanta will have been brought to light.

This Volume contains the first thirty-seven Saṃdhis out of the total of one hundred and two of the entire work. This portion is popularly known as the Ādiparva or Ādipurāna, and describes the lives of Riṣaha or Rṣabha, the first Tīrthamkara, and of Bharata, the first Cakravartin. The second volume will begin with the thirty-eighth saṃdhi and end with the eightieth, and the third volume will cover all the remaining saṃdhis. Dr. Ludwig Alsdorf of Hamburg, Germany, has just published in Roman characters a portion of the Mahāpurāna under the title "Harivaṃśapurāna, Ein Abschnitt aus der Apabhraṃśa Welthistorie, Mahāpurāna Tisatthimahāpurisaguṇā-

lamkāra von Puspadanta, Hamburg, 1936", which contains samḍhis 81-92 of the work. This portion will be re-edited in Devanāgarī characters and incorporated in the third volume, so that the entire work will now be made available to the public in a uniform edition. Besides as we now possess more Mss. than Dr. Alsdorf was then able to get, improvement on his work may be possible.

The text of the entire Mahāpurāna will cover approximately 2000 pages of the royal size, of which the present volume contains 600. It is clear that the whole of the Mahāpurāna could not be conveniently issued in one volume. I therefore propose to include in each volume an Introduction, dealing chiefly with the problems which concern the text of that volume only, reserving larger questions arising out of entire text for the Introduction to the third and the last volume. Moreover, Introductions to Jasaharacariu and Nayakumāracariu already contain some information about the author, the language of his works, metres etc., which the reader is presumed to possess.

#### THE CRITICAL APPARATUS

The text of the Adipurāna or of the present volume of the Mahāpurāna is based upon the following five Mss. fully collated.

1. G. This Ms. consists of 503 leaves measuring 11" x 5". It has 8 lines to a page and about 29 letters to a line. It was written at Ghoghā Mandir, is dated 1575 of the Samvat era, or 1441 of the Saka era, corresponding to 1518 A. D. It uses prsthamātrās and has brief marginal gloss. It is a well-preserved Ms., belongs to the Balātkāra Gana Mandir at Kāranjā, Berar, and bears No. 524 of their list (No. 7752 of the Catalogue). It was secured for my use by Professor Hiralal Jain. It begins:—॥ ओं नमः सिद्धेभ्यः ॥ मिद्धिवहूमणरजणु etc., and ends:—इय महापुगणे तिराहिरमहापुगितगुणालंकारे महाकडपुष्कयंतविरडए महाभवाभरहाणुमणिए महाकव्वे सगणहरिसइणाहभरहणिव्वाणगमणं णाम सत्ततीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३७ ॥ आइयं पव्वं समत्तं ॥ शुभं भवतु संघस्य ॥ स्वस्ति श्री सं० १५७५ वर्षे शाके १५५१ प्र० दक्षणायने धीष्मक्तो द्वि...एवदि ७ रवौ घोघामंदिरे श्रीमूलसंघे सरस्वतीगच्छे यलात्कारगणे श्रीमत्कुंदकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीपदानंदिदेवाः तत्पट्टे भट्टारकश्रीदेवेन्द्रकीर्तिदेवास्तत्पट्टे भट्टारकश्रीविद्यानन्दिदेवास्तत्पट्टे म० श्रीमहिभूषणदेवास्तत्पट्टे म० श्रीलक्ष्मीचंद्र तच्छिष्य मुनीश्रीनेमिचंद्र । देशावुंवडझानीयगांधी श्रीपति तस्यांगना बाईं सभू तयोः पुत्र गांधी कारुभा गांधी साता । तेषां मध्ये बा० सभू तथा लिखाय्य प्रदत्तमिदमादिपुराणशास्त्रं मुनिश्रीनेमिचंद्रेभ्यः ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीस्तु ॥ सं० ८००० ॥ म० लक्ष्मीचंद्रेभ्यः प्रदत्तं ॥ चिरं नंदतु ॥ शुभं भूयात् ॥

This is one of the best and the most authentic of the Mss. of the work that I possess. My text therefore is based mainly on this Ms. There have been a few—indeed very few—occasions when I had to adopt a reading other than the one given in it, but I feel confident that there were sufficient reasons for doing so on every such occasion.

2. K. This is a paper Ms. containing 732 pages measuring 16" × 4". Of these 732 pages, 288 are covered by the Ādipurāṇa or Ādiparva as it is called there. Each page contains 8 lines with about 50 letters to a line. The Ms. is carefully written and has copious marginal gloss. The words of the text are separated by a vertical stroke between words to be separated. Occasional use of *prsthamaṅgā* is noticed. The Ms. is decorated with thick red lines indicating the margin and there are three dots in red ink of the size of a four-anna silver coin, two in margins and one in the centre of the page where a square blank space is left. It seems that these dots represent the holes of a palm leaf Ms. from which this Ms. may have been copied. I secured this Ms. through my friend and pupil, Professor A. N. Upadhye of the Rajaram College, Kolhapur, who obtained it from his friend Mr. Tatyasaheb Patil of Naudni, near Kolhapur. It begins:—  
॥ ओं नमो वीतरागाय ॥ सिद्धिवद्मणं जणु etc., and the Ādipurāṇa portion ends:—  
इय महापुराणे तिस्रिंशत्सगुणालंकारं महाकण्डपुष्कयतविग्रहं महाभवभरहाणुमण्णिणं महाकण्डे सगण-  
हरिसहनाहभरहाणुमण्णिणं नाम सत्तनीसमो परिच्छेद समन्तो ॥ आइपव्वं समन्त ॥ It adds in  
a different hand : म० श्रीवीरचंद्रास्तत्पट्टे म० लक्ष्मीचंद्रास्तत्पट्टे म० ज्ञानभूषणास्तत्पट्टे म०  
श्रीप्रभाचंद्राणा पुस्तकं ॥ The Uttarapurāṇa portion ends:—इय महापुराणे तिस्रिंश-  
महापुरिसगुणालंकारे महाभवभरहाणुमण्णिणं महाकण्डे वीरिजिणिदिण्णिण्णाणमण्णिणं नाम दुत्तरसयपरिच्छेयाणं  
महापुराणं समन्तं ॥ छ ॥ यंथायं ॥ श्लोकसंख्या २०००० (?) ॥ शुभं भवतु ॥ We find on  
the final blank leaf :—म० लक्ष्मीचंद्रास्तत्पट्टे म० श्रीवीरचंद्रास्तत्पट्टे म० श्रीज्ञानभूषणास्तत्पट्टे  
म० श्रीप्रभाचंद्राणा पुस्तकं ॥ It adds further in a different hand : म० श्रीवार्द-  
चंद्रास्तत्पट्टे म० श्रीमहीचंद्रास्तत्पट्टे म० श्रीमेरुचंद्राणा पुस्तकं ॥

The entire work seems to be written in one hand ; in fact this is the only Ms. of the whole of the Mahāpurāṇa, i. e., Ādipurāṇa and Uttarapurāṇa, written in one hand, that I have so far discovered. This Ms. seems to preserve the text as in G described above, but seems to be corrected to the version represented by the M B P group of Mss., in a different hand. This Ms. thus represents a mixed text. It is however easy to decipher what the original reading might have been. The gloss in the margin is more copious than in the Tippana



of Prabhācandra, ( for which see below ). There is no indication of the age of the Ms. although its original, probably a palm-leaf Ms., represents the older of the two recensions of our text. The corrections made therein to make it agree with a later recension of our text represented by the M B P group are made in a different hand, perhaps after about three generations of monks who owned it.

3. M. This Ms. consists of 470 leaves measuring 11" × 4½". It has 8 lines to a page and about 33 letters to a line. It is written in Mathurā, modern Muntra, in 1883 of the Samvat era, i.e. in 1826 A.D. It is written in good modern hand and has some gloss in the margin, but not so copious as in K. or in the Tippana of Prabhācandra. It belongs to the Deccan College Collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, and bears No. 1050 of 1887-91. It begins :—ओं नमो वीतरागाय ॥ सिद्धिवह्नमणरंजणु etc., and ends :—  
इय महापुराणे तिसद्विमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्कयंतविग्इए महाभञ्जभरहाणुमणिए महाकव्वे सगणहरिसहनाहभरहणिव्वाणगमणं णाम सत्तत्तिसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ संधि ३७ ॥ संवत् १८८३ का मिसीवेशास शुकु ३ चुधवासरे ॥ शुभं भवतु ॥ लिखितं श्रीमथुरापुरीमध्ये ब्राह्मण स्वामलाल ॥ श्रीजिनधर्म-प्रतिपालक श्रीमहाराजाधिराजश्रीकुमरजी खेयागमजी पठनार्थं वा प्रयोगकारार्थं ॥ शुभ दीर्घायुर्भवति पुत्रवृद्धिर्भवति ॥ श्रीजिनधर्मप्रवर्तनं करंनि ॥ श्री आदिनायेभ्यां नमः ॥ समाप्तोय आदिपुराणः ॥ शुभं ॥

4. B. This Ms. consists of 306 leaves measuring 11" × 5". It has 9 lines to a page and about 33 letters to a line. It belongs to the Balatkāra (Jana Mandir at Karanjā, Berar, and bears No. 523 of their list (No. 7753 of the Catalogue). It was secured for my use by Prof. Hiralal Jain of Amraoti. It was written at Yogimpura, i. e., Dehli, in 1659 of the Samvat era, i. e., 1602 A. D. The Ms. is worn out, and its margins are decayed. It is an indifferently written Ms., omits portions mechanically while copying from its original, and has no gloss at all. I was at one time inclined to stop collating it, but did not do so for the simple reason that I thought I might find in it a version not influenced by the marginal gloss. I was however disappointed to see that the Ms. was very indifferently prepared. It begins :—ओं नमो वीतरागाय ॥ सिद्धिवह्नमणरंजणु etc., and ends :—  
इय महापुराणे तिसद्विमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्कयंतविग्इए महाभञ्जभरहाणुमणिए महाकव्वे सगण-हरिसहनाहभरहणिव्वाणगमणं णाम सत्तत्तिसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ संधि ३७ ॥ आदिपुराणं संदह्येन जान ॥ श्लोकमानेनाएसहस्राणि अंकतो प्रथ ८००० ॥ अक्षरमात्रपदस्वरहीनं व्यंजनसंधिविजितरेफं ॥ साधुभिरेव मम क्षमितव्यं को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे ॥ योगिनीपुरदुर्गस्थाने जलालदीनसाहिअकबर-

राज्ये अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीविक्रमादिन्यराज्ये संवत् १६५९ पौषशुद्धि च बुधवासरे श्रीमूलसंघे बलात्कारगणे सरस्वतीगच्छे कुंडकुंदाचार्यान्वये भट्टारकश्रीसिंघकीर्तिदेवा.....

5. P. This Ms. is incomplete and has lost a portion at the end. The available portion of it consists of 305 leaves measuring  $11\frac{1}{2}'' \times 5''$ . It has 9 lines to a page and about 30 letters to a line. It belongs to the Deccan College Collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, and bears No. 370 of 1879-80. It seems to be a very old Ms., edges of leaves being worn out. There is a profuse marginal gloss. The prsthamātrās are used. The available portion ends with a part of the third kaḍavaka of the 28th sandhi (see foot-note 8 on this kaḍavaka on page 433 of our edition). This Ms. preserves a recension which is metrically correct, i. e., it uses इ, ए, उ and ओ as they are required for their correct metrical value almost uniformly. I found it therefore very convenient to follow it for this purpose, and hence have not recorded variants like पणनिवि and पणवेवि where पणविवि represents the metrically correct form. It begins:—स्वस्त ॥ ओं नमः ॥ सिद्धेभ्यः ॥ सिद्धिवद्मणरंजणु etc., and ends with चामर<sup>०</sup> in XXVIII .3. 11.

In addition to these five Mss. fully collated, I came across three more Mss of the Ādipurāṇa. Of these one is deposited in the Sena Gana Mandir at Kāranjā, (No. 7754 of Rai Bahadur Hiralal's Catalogue of Mss. in C. P. & Berar). I examined it on the spot during my visit to that place in 1927. This Ms. was got copied at her own cost by a lady ancestor of the famous Chaware family of Kāranjā and presented by her to the Bhattāraka of the temple. It is dated Wednesday the 8th of the dark half of Kārtika of 1591 of the Saṃvatera, i. e., 1534 A. D. As I could not secure it for full collation, I prepared some trial collations from it, but as they did not reveal any difference in the variants other than those found in M B P, I dropped the idea of incorporating them in my apparatus. The two other Mss. belong to the Deccan College collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona. One of them bears No. 1140 of 1891-96. It is incomplete and carelessly written. It contains the first 19 sandhis only, and is dated the 5th day of the bright half of Jyēṣṭha of 1848 of the Saṃvat era, i. e., 1791 A. D. I made some trial collations from this Ms. but found the variants agreeing with those of M B P and hence did not collate it further. The other Ms. from the Bhandarkar

Oriental Research Institute bears No. 1139 of 1891-95. It is dated Wednesday, the 10th of the bright half of Phālguna of 1925 of the Samvat era. i. e., 1868 A. D. This Ms. consists of three parts written in three different hands and on two different kinds of paper. The first part consists of 142 leaves and contains the text of the first sixteen saṁdhis. The second part contains 177 leaves which are numbered from 1 to 177, and not from 143. The third part contains the remaining 33 pages, numbered from 178, but written by a different person. I made some trial collations from this Ms. also, but did not find variants different from those found in M B P, and hence did not collate it further. This Ms. puts dots at places where the writer was unable to decipher his original either because it was illegible or damaged. Besides, these last-named Mss. are considerably modern and could, on that account too, be ignored.

By far the most important aid for fixing the text and preparing the critical apparatus was obtained from the Tīppana of Prabhācandra (T in the Critical Apparatus). I secured a Ms. of this Tīppana on the Adipurāna portion from the Deccan College collection, now deposited at the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona, which bears No. 563 of 1876-77. This Ms. measures  $13\frac{1}{2}'' \times 5\frac{1}{2}''$ , has 51 leaves, with 13 lines to a page and 45 letters to a line. The script used is peculiar in that words like द्वितीय are written like द्विता. There is no indication as to its age, but from appearance it seems to belong to the 16th century A. D. It begins:—ओं नमो वीतरगाय ॥ प्रणम्य वीरं विबुधेन्द्रमस्तुत निरस्तद्वेषं वृषभं महोद्भवम् । पदार्थसिद्धिजनप्रबोधकं महापुण्यस्य क्रमेण टिप्पणम् ॥ १ ॥ सिद्धित्यादि सिद्धिमन्तचतुष्टयप्राप्तिः सैव वधुस्तस्या मनोरञ्जनत्रिसरञ्जकः . It ends:—इति समावेशात्तमसाधि समाप्ताः ॥ समस्तसंदेहहरं मनोहरं प्रकण्ठपुण्यं प्रभवं जितेश्वरम् । कुरु पुण्येण प्रथमे सुदिप्येण सुखावबोधं निखलाधर्षणम् ॥ इति श्रीप्रभाचन्द्रविरचितमादिपुराणटिप्पणकं पचासन्लोकहीणं सहस्रद्वयपरिमाणं परिसमाप्ता ॥ शुभं भवतु ॥

I also examined a Ms. of Prabhācandra's Tīppana on the Uttara-purāna which I obtained, through the kindness of Professor Hiralal Jain, from Master Motilal Sangha of Jaipore. This Ms. measures  $12'' \times 5\frac{1}{2}''$ , has 57 leaves with 13 lines to a page and about 31 letters to a line. It begins:—ओं नमः सिद्धेभ्यः ॥ बंभहो परमात्मनः . It ends:—श्रीविक्रमादित्यसंवत्सरे वर्षाणा-मशीत्यधिकसहस्रे महापुर्णावषमपदविवरणं मागमेनमेद्वान्तात् परंज्ञाय मूलाटिप्पणकां चालोक्य कृतमिदं समुच्चयटिप्पणं अज्ञपातभीतेन श्रीमद्वला... रगणश्रीसिद्धाचार्यसत्कविशिष्येण श्रीचन्द्रमुनिना निजदोर्दण्डा-भिभूतारपुराज्यविवर्जितः श्रीभांजदेवस्य ॥ १०२ ॥ इति उत्तरपुराणटिप्पणकं प्रभाचंद्राचार्यविरचितं

समाप्तम् ॥ अथ संवत्सरेस्मिन् श्रीनृपविक्रमादित्यगताब्दः संवत् १५७५ वर्षे भाद्रवास्त्रुदि । सुद्धदिने । कुरुजागलदेसे । सुलितानसिकंदरपुत्रु सुलितानमहिमु राज्यप्रवर्तमाने श्रीकाष्ठासंघे मथुरान्वये पुष्करगणे । भट्टारकश्रीगुणभद्रसुरिदेवाः । तदाम्नाये जैसवालु चौ. टोडरमड्डु । इदं उत्तरपुराणटीका लिखापित ॥ सुभं भवतु ॥ मांगल्यं द्दानि लेखकपाठकयोः ॥ This Ms. is dated Samvat 1575, i. e. 1578 A. D.

On examining the colophon of the author of the Tippiṇa we learn some very important and interesting particulars about the manner of its composition. We learn that the Tippiṇa was composed in the year 1080 of the Vikrama era, i. e., 1023 A. D., i. e., within sixty years of the completion of the Mahāpurāṇa by Puspādanta ; we also learn that King Bhoja of Dhārā was then ruling in Malva ; that Prabhācandra consulted the works of Sāgarasena for his Tippiṇa ; that he also consulted the original Tippiṇa, probably of Puspādanta himself ( मूलटिपणिका चालोक्य ), and prepared a collected Tippiṇa ( समुच्चयटिपण ) on the Mahapurāṇa, embodying the original Tippiṇa. An author's writing a Tippiṇa on his own work may appear somewhat strange, but it is not altogether impossible, for I had an occasion to examine Mss. written by the authors of the 18th century in their own hand bearing also a gloss in their own hand, and I feel certain that these authors must have borrowed the mentality of writing a gloss on their own works from their forefathers. I therefore think that Puspādanta must have written a short gloss on the difficult words of his work ; this gloss must have been amplified by Prabhācandra, and that the process of amplification must have continued still further down. The gloss found in Mss. of our text is not identical with the Tippiṇa of Prabhācandra, but is one which is either abridged or amplified.

Professor Hiralal Jain, in his Introduction ( LXIII—LXIV ) to the Nāyakumaracariu refers to the colophon of a Ms. of the Tippiṇa of Prabhācandra which he came across, and says that Prabhācandra lived in the reign of Jayasimhadeva of Dhārā ( circa 1055 A. D. ) But in view of the express mention of the date, 1080 of the Vikrama era, i. e., 1023 A. D. and of the reign of King Bhoja in our Ms., we must regard that reference to a subsequent copy of the work, perhaps by Prabhācandra himself. Our Ms. of the Tippiṇa again does not contain the stanza तत्त्वाचारमहापुण etc. Prabhācandra might have added this stanza in a subsequent copy of his work at a later date, which assumption may also explain the reference to king Jayasimhadeva.

The critical apparatus described above divides the Mss. into two groups, one comprising G and K, and the other M, B and P, not only because of the general agreement of the variants noted, nor on account of additions or omissions to the original text in a particular group ( see page 514 ), but also on the strength of the agreement of the Prasasti stanzas found at the beginning of several samdhis. I have already alluded to this topic in my Introduction to Jasaharacariu ( page 21 ), but I think it is necessary to discuss it in detail as it throws considerable light on the Ms. tradition of the works of Puspadanta and also the principle on which I have grouped the Mss. and valued them.

#### THE PRASASTI STANZAS OF THE MAHĀPURĀNA \*

When I had an occasion to study the manuscript material for my edition of Jasaharacariu, I discovered that certain Mss. contained, at the commencement of a samdhi, stanzas in praise of the poet's patron, Nanna, while others did not record them. In the course of the collation of Mss. I also discovered the fact that those Mss. which contained these prasasti stanzas agreed very closely in one set of variants, while those Mss. which did not contain these stanzas agreed very closely in equally another set of variants. On further examination I found that those Mss. which did not give the prasasti stanzas presented an older recension of the text, while those that contained these stanzas presented a later and amplified recension. In the case of the Jasaharacariu the amplified passages were located and their author and his date found out. As that interpolator, who lived four centuries after the poet, had nothing to do with the poet's patron, I was convinced that the poet himself must have composed these prasasti stanzas, and was forced to advance a hypothesis that the poet himself, with the help he obtained from his patron, must have got made two or three sets of copies of his work, in one of which he wrote, at leisure, at first in the margin perhaps, some stray stanzas glorifying his patron, while other set or sets had already gone out of his hand without the addition of these stanzas. This hypothesis, briefly enunciated on

---

\* Some of the Prasasti stanzas are put together by Pandit Nathuram Premi in his article on Puspadanta in Jain Sahitya Samśodhaka, Vol II. No I, 1923.

page 21 of the Introduction to *Jasaharacariu*, enabled me then to fix up that Mss. S and T of the work presented an older version. I had there an occasion to test the correctness of the hypothesis by referring to one of the *Prasasti* stanzas of the *Mahāpurāṇa*, viz.,

दीनानाथधनं सदाबहुजनं प्रोत्कुलवल्लीवनं

मान्वासैटपुरं पुरंदरपुरीलीलाहरं सुन्दरम् ।

धारानाथनरेन्द्रकोपशिक्षिना दुर्घं विदम्बप्रियं

केदानीं वसतिं करिष्यति पुनः श्रुपुष्पदन्तः कविः ॥

which puzzled the historian in respect of the fixing of the date of the composition of the *Mahāpurāṇa*, in as much as the plunder of *Māñyakhetā*, a well-ascertained historical event of 972 A. D., was referred to by the poet in the middle of the work in the above-mentioned stanza found in the *Kāraujā* Ms. at the beginning of the 50th *samdhī*, while the completion of the *Mahāpurāṇa* in the *Krodhana* year, i. e., in 965 A. D., was an equally certain event. I found that the stanza did not occur in my Ms. K. This fact coupled with the absence of *prasasti* stanzas in my best Mss. of the *Jasaharacariu* enabled me to advance the hypothesis set out above, which further examination of a large number of *Mahāpurāṇa* Mss. fully corroborates. The *Nāyakumaracariu* of *Puspadanta*, which was then being prepared for the Press by my friend Professor Hiralal Jain, did not contain any *prasasti* stanzas in any of his Mss., and hence I could not test the accuracy of my hypothesis there. I therefore proceeded to collate the *prasasti* stanzas occurring at the beginning of the *samdhīs* of the *Mahāpurāṇa*. I have not so far discovered a Ms. of the *Mahāpurāṇa* which has no *prasasti* stanzas : at the same time I have found that Mss. do not agree in giving them all. I have however found that groups of Mss. agree amazingly in giving a stanza at a particular place or omitting it altogether. A smaller number of stanzas was found in my Mss. G and K of the *Ādipurāṇa*, while the remaining Mss. gave a much larger number of them. I therefore regard that G and K preserve an older, if not the oldest, recension of the text of the *Ādipurāṇa*. I think that these stanzas do not form an integral part of the text and hence they are relegated to notes in the *Critical Apparatus*. I however believe that they were composed by the poet himself as nobody could be interested in glorifying Bharata to such extent. I also believe that the poet composed these stanzas

long after he had completed the composition of the Mahāpurāna. At any rate the stanza दीनानाथधनं etc. he could not have written before 972 A. D., i. e., seven years after the completion of the Mahāpurāna. As the question of these stanzas is important for the manuscript tradition and as they throw considerable light on the relation of the poet with his patron Bharata and allied topics, I give them all arranged in groups, i. e., (a) those found in G and K ; (b) those found in other Mss. of the Ādipurāna ; (c) those found in Poona, Kāranjā and K of the Uttarapurāna portion ; and (d) those found exclusively in the Jaipore Ms.. I have also numbered them consecutively for easy reference in the next section.

- (a) 1. ( i ) आदित्योदयपर्वतादुहतराबन्द्राकंचूडामणे-  
रा हेमाचलतः कुशोनिलयादा सेतुयन्वाद् दृढान् ।  
आ पातालतलाद्दीन्द्रभवनादा स्वर्गमार्गं गता  
कर्त्तियस्य न वेदि मद्र भरतम्याभाति खण्डस्य च ॥

This stanza states that the fame of Bharata, the patron and friend of Khanda, i. e., the poet himself, has pervaded the entire universe. The stanza is found at the commencement of the 3rd sandhi in G and K, but at the beginning of the 2nd sandhi in the remaining Mss. ( See foot-note on page 18 and also note the variants ).

2. ( ii ) सोमाय ह्युचिता क्षमा भुजवल शौर्यं वपुः सुन्दर  
सन्धं सर्वजनोपकारकरणं वृत्तं स्वकं सन्मतम् ।  
हे विद्वत् भगतस्य भूतिजननं विद्यार्थिनामाशु य-  
स्यैकैकं गुणमङ्गमूर्जितधिया पुंसांमचिन्त्यं भुवि ॥

This stanza mentions some of the qualities which Bharata, the poet's patron, possessed. This stanza is found exclusively in G and K at the beginning of the fourth sandhi.

3. ( iii ) भ्रूलीला त्यज मुञ्च मंगतकुचद्वन्द्वदिकं वक्षमा  
मा त्वं दर्शय चारुमण्डलनिकी तन्वाङ्गि कामाहता ।  
मुञ्चे श्रीमदनिन्यखण्डसुकवेर्यन्धुगुणैरुन्नतः  
स्वप्नेऽप्येष पराङ्गना न भगतः शौचोदधिर्वाञ्छति ॥

This stanza states that Bharata, the poet's friend and patron, is so virtuous that he would never think of the wife of another person. The stanza is found at the beginning of the 5th sandhi in G and K,

and in other Mss. also at the same place. ( See footnote on page 72 and also note the variants ).

4. ( iv ) एको दिव्यकथाविचागचतुरः श्रोता बुधोऽन्यः प्रियः  
 एकः काव्यपदार्थसंगतमतिश्राम्यः परार्थोद्यतः ।  
 \* एकः सत्कविरन्य एष महतामाधारभूतो विदां  
 द्वावंतौ सखि पुष्पदन्तभरतौ भद्रे भुवो भूषणम् ॥

This stanza brings out the characteristics of the poet and his patron, both of them adorning the earth. The stanza is found in G and K at the beginning of the eighth samdhi, but in all others at the beginning of the 9th samdhi.

5. ( v ) जगं रम्भं इम्भं दीवओ चन्दबिम्भं  
 धरिती पल्लंको दो वि हत्था सुवत्थं ।  
 पिया णिद्धा णिच्चं ऋक्कीला विणोओ  
 अदीणत्तं चित्त ईसरो पुष्पदन्तो ॥

This stanza states that the poet Puspadanta is a king in as much as he has the nobility of mind : the whole world is his fine mansion-house, the moon the lamp, the ground his bed-stead, his arms his clothing, sleep his beloved and poetry his pastime. The stanza is found in G and K, and in all other Mss. at the beginning of the tenth samdhi, and also at the beginning of the fiftieth samdhi of the Uttarapurāṇa in Poona, Jaipore and Kāranjā Mss.

6. ( vi ) णाइन्दच्चुरिन्दणरिन्दवन्दिया जणियजणमणाणन्दा ।  
 त्तिरिक्कुसुमदसणकइमहणिवासिणा जयइ वाईसी ॥  
 7. ( vii ) तन्त्रीवायैरानिन्यैर्वरकविरचितैर्गद्यपद्यैरनेकेः  
 कान्तं कुन्दावदानं दिशि दिशि च यशो यस्य गीतं सुरोचैः ।  
 काले तृष्णाकराले कलिलमलमलितेऽप्यद्य विद्याप्रियो गां  
 सोऽयं सत्सारसारः प्रियसखि भगतो भाति भूमण्डलेऽस्मिन् ॥

Of these the first stanza glorifies the poetic genius of Puspadanta and the second glorifies Bharata, the poet's patron, for his appreciation of learning in the Kali age. These stanzas are found in G and K at the beginning of 30th samdhi and in MBP and others of this group at the beginning of 29th samdhi.



8. (viii) प्रतिगृह्णतति यथेष्टं बन्दिजनैः स्वैरसङ्गमावसति ।  
भरतस्य बह्वभासो कीर्तिस्तदपीह चित्रतरम् ॥

The stanza notes that it was strange on the part of Bharata still to cherish love for fame, conceived as his wife, when she wanders wantonly in every house and freely dallies with bards. This stanza is found in G and all Mss. of the other group, but is missing in K. The want of agreement in G and K in this respect, however, strengthens my hypothesis that these stanzas do not form an integral part of the text, but were composed by the poet at a later stage and added in the margin of some of the copies of his work that he still had with him.

The agreement existing between G and K regarding the location of the above-mentioned praśasti stanzas led me to believe that they formed a group by themselves. This belief of mine was confirmed by a general agreement of the variants and also by non-inclusion of a long passage, found in Mss. of the other group and noted by me in the Critical Apparatus on page 514 of the printed text. Further, the fact that the number of praśasti stanzas in the other group is much larger than in this group indicates that this group of Mss. represents an older recension than the other one. Occasional disagreement between G and K is due to the fact that K represents a mixed version, the text in it being corrected on the model of the text in the MBP group at numerous places. I have noted all such places in the Critical Apparatus where I was able to read the original and the corrected variants, but at places the pigment or the ink was applied rather thick which made it difficult for me to decipher the Ms. correctly.

The second group of Mss. in my Critical Apparatus is represented by M, B and P. Besides these, I had an occasion to consult three more Mss., one from the Sena (ġana Bhāṇḍāra at Kāranjā and two from the Bhandarkar Oriental Research Institute, Poona. All the Mss. of this group contain the Praśasti stanzas, (i) and (iii-viii) given above. Over and above this, they also contain the following :—

- (b) 9 ( i ) बलिजीमूतदधीचिषु सर्वेषु स्वर्गितामुपगतेषु ।  
संप्रत्यनन्यगतिकस्त्यागगुणो भरतमावसति ॥

( Found at the beginning of the third saṁdhi ).

10. ( ii ) आश्रयवशेन भवति प्रायः सर्वस्य वस्तुनाऽतिशयः ।  
भरताश्रयेण संप्रति पश्य गुणा मुख्यता प्राप्ताः ॥

( Found at the beginning of the fourth samdhi ).

11. ( iii ) श्रीविद्भिर्धै कुप्यति वाग्देवी द्वेषि संततं लक्ष्म्ये ।  
भरतमनुगम्य सप्रितमनथोरात्यन्तिकं प्रेम ॥

( Found at the beginning of the sixth samdhi ).

12. ( iv ) हंले भद्र प्रचण्डावनिपतिभवने त्यागसंख्यानकतां  
कोऽयं श्यामः प्रधानः प्रवरकरिकराकारबाहुः प्रसन्नः ।  
धन्यः प्रालेयपिण्डोपमधवल्यशोधीतधात्रीतलान्तः  
ख्यातो बन्धुः कवीर्वा भरत इति कथं पान्थ जानासि नो स्वम् ॥

( Found at the beginning of the seventh samdhi ).

13. ( v ) मातर्वसुंधरि कुतूहलिनो ममैत-  
दापुच्छतः कथय सत्यमपास्य शाठ्यम् ।  
त्यागी गुणी प्रियतमः सुभगोऽतिमानी  
किं वारितं नारितं सदृशो भरतार्यतुल्यः ॥

( Found at the beginning of the eighth samdhi ).

14. ( vi ) सूर्यात्तेज ( १ ) गर्भारिमा जलनिधेः स्थैर्यं सुराद्वैर्विधेः  
सौम्यत्वं कुसुमायुधासुभगतां त्यागं बलेः संभ्रमान् ।  
एकीकृत्य विनिर्मितोऽतिचतुरो धात्रा सखे सांप्रतं  
भरतार्यो गुणवान् सुलब्धयशसः स्रण्डः ( १ ) कवेर्वल्लभः ॥

( Found at the beginning of the eleventh samdhi ).

15. ( vii ) तीव्रापद्विवसेषु बन्धुरद्वितेनैकेन तेजस्विना  
संतानक्रमतो गतापि हि रमा रुष्टा प्रभोः सेवया ।  
यस्याचारपदं वदन्ति कवयः सौजन्यसत्यास्पदं  
सोऽयं श्रीभरतो जयत्यनुपमः काले कलौ सांप्रतम् ॥

( Found at the beginning of the thirteenth samdhi and also  
at the beginning of the thirty-fourth samdhi ).

16. ( viii ) केलासुब्भासिकन्दा धवलदिसिगउग्गिण्णदन्तकुरोहा  
सेसाहीचइमूला जलहिजलसमुब्भूयपिण्डरिवत्ता ।

ब्रह्मण्डे विरथन्ती अमयरसमयं चन्द्रविम्बं फलन्ती  
फुल्लन्ती तारओहं जयइ नवलया तुञ्ज भरहेस किरती ॥

( Found at the beginning of the fourteenth samdhi ).

17. ( ix ) त्यागो यस्य करोति याचकमनस्तृष्णाङ्कुरोच्छेदनं  
कीर्तिर्यस्य मनीषिणां वितनुते रोमाञ्चचर्चं वपुः ।  
सौजन्यं सुजनेषु यस्य कुरुते प्रेम्णोऽन्तरा निवृत्तिं  
श्लःद्योऽसौ भरतः प्रभुर्बत भवेत्काभिर्गिरां सूक्तिभिः ॥

( Found at the beginning of the fifteenth samdhi. It is also found at the beginning of the 95th samdhi of the Uttarapurāna in K, and in Poona and Jaipore Mss. )

18. ( x ) बलिभङ्गकम्पिततनु भरतयशः सकलपाण्डुरितकेशम् ।  
अत्यन्तवृद्धिगतमपि भुवनं वि ( बं ? ) अमति तच्चित्रम् ॥

( Found at the beginning of the seventeenth samdhi. It is also found at the beginning of the 102nd samdhi of the Uttarapurāna in K, and in Poona and Jaipore Mss. )

19. ( xi ) शशधरविम्बात्कान्तिस्तेजस्तपनाद्गभीरतामुदधेः ।  
इति गुणसमुच्चयेन प्रायो भरतः कृतो विधिना ॥

( Found at the beginning of the eighteenth samdhi. It is also found at the beginning of the thirty-ninth samdhi of the Uttarapurāna in K, and in Poona and Jaipore Mss. )

20. ( xii ) श्यामरुचि नयनसुभगं लावण्यप्रायमङ्गमादाय ।  
भरतच्छलेन संप्रति कामः कामाकृतिमुपेतः ॥

( Found at the beginning of the nineteenth samdhi ).

21. ( xiii ) कणिनि विमुह्यतीव मेघकरुचि कचनिचयेषु योषिता-  
मलकिपु मूर्च्छतीव हसतीव तमालतलेषु पुञ्जितम् ।  
मदमुचि मायतीव लोलालिनि वरकरिगण्डमण्डले  
दिशि दिशि लिम्पतीव पियतीव निमीलयतीव सङ्गणे ( ? ) ॥

( Found at the beginning of the twentieth samdhi ).

22. ( xiv ) यस्य जनमसिद्धमत्सरभरमनवमपास्य चारुणि  
प्रतिहतपक्षपातदानश्रीरुसि सदा विराजते ।

वसति सरस्वती च सानन्दमनाविलवदनपङ्कजे  
स जयति जयतु जगति भरतेश्वर सुखमयमलमङ्गलः ॥

( Found at the beginning of the twenty-first samdhi ).

23. ( xv ) मदकरिदलितकुम्भमुक्ताफलकरभरभासुरानना  
मृगपतिनादरेण यस्या धृतमनघमनर्घमासनम् ।  
निर्मलतरपवित्रभूषणगणभूषितवपुरदारुणा  
भारतमह्य सास्तु देवी तव बहुविधमम्बिका मुदे ॥

( Found at the beginning of the twenty-second samdhi ).

24. ( xvi ) अङ्गुलिदलकलापमसमद्युति नक्षानिकुरुश्वकर्णिकं  
सुरपतिमुकुटकांठिमाणिक्यमधुमनचक्रचुम्बितम् ।  
विलसदनुप्रतापनिर्मलजलजन्मविलासि कामलं  
घटयतु मङ्गलानि भरतेश्वर तव जिनपादपङ्कजम् ॥

( Found at the beginning of the twenty-third samdhi ).

25. ( xvii ) हिमगिरिशिखरनिकरपरिपाण्डुगधवलितगगनमण्डलं  
पुलकमिवातनोति केतकतरुवरतरुकसुममंकरे ।  
विकसितफणिफणासु सुरसरितो मणिर्वाचगतमधः क्षितं-  
ग्दिमार्ताचित्रकारि भरतेश्वर जगतस्तावकं यशः ॥

( Found at the beginning of the twenty-fourth samdhi ).

26. ( xviii ) उन्नतातिमनुमात्रपात्रता ( 1 ) भाति भद्र भरतस्य भूतले ।  
काव्यकीर्तिघण्टारवो गृहे यस्य पुष्पदन्तो दिशागजः ॥

( Found at the beginning of the twenty-fifth samdhi ).

27. ( xix ) घनधवलताश्रयाणामचलस्थितिकारिणां मुहुर्भ्रमताम् ।  
गणनव नास्ति लोके भरतगुणानामरीणां च ॥

( Found at the beginning of the twenty-sixth samdhi ).

28. ( xx ) गुरुधर्माद्भवपावनमभिनन्दितकृष्णार्जुनगुणोपेतम् ।  
भीमपराक्रमसारं भारतमिदं भारत तव चरितम् ॥

( Found at the beginning of the twenty-seventh and thirty-seventh samdhis ).

29. (xxi) मुखनलिनोदरसदानि गुणधृतहृदया सदैव यद्वसति ।  
चोज्जमिदमत्र भरते शुक्लापि सरस्वती रक्ता ॥

( Found at the beginning of the twenty-eighth samdhi ).

30. (xxii) बम्भण्डाहण्डलसोणिमण्डलुच्छलियकित्तिपसरस्स ।  
सण्डेण समं समसीसियाह कइणो न लज्जन्ति ॥

( Found at the beginning of the thirty-second samdhi ).

31. (xxiii) विनयाङ्कुरशातवाहनादौ नृपचक्रे दिवमीयुषि क्रमेण ।  
भरत तव योग्यसज्जनानामुपकारो भवति प्रसक्त एव ॥

( Found at the beginning of the thirty-third samdhi. It is also found at the beginning of the fortieth samdhi of the Uttarapurāṇa in Poona and Jaipore Mss., but is missing in K ).

32. (xxiv) इति भरतस्य जिनेश्वरसमयेकशिरोमणेगुणान्वक्तुम् ।  
मानु च वार्धितोयं चुलुकैः कन्यास्तिसामथर्यम् ॥

( Found at the beginning of the thirty-fifth samdhi )

It will thus be seen that the MBP group of Mss. which I fully collated for my work and at least three more Mss., one from Seṇa Gaṇa Bhaṇḍāra at Kāranjā and two from Poona, contain as many as twenty-four more stanzas at exactly the same point in the Adipurāṇa portion. Some of these are repeated in some Mss. of the Uttarapurāṇa, no doubt, still the evidence strongly supports me to group them together. The variants in the text that they give justify the above view.

The above conclusion led me to see if similar groups of Mss. existed for the Uttarapurāṇa also. Unfortunately the number of the available Mss. of the Uttarapurāṇa is very small, viz., four. Of these one is my K, the second comes from the Bhandarkar Institute, Poona, the third from Jaipore and the fourth from the Balātkāra Gaṇa Bhaṇḍāra at Karanjā. On examination I found that Poona and Kāranjā Mss. agree in putting certain stanzas at a place, particularly those four that are given at the beginning of the 50th samdhi, while K omits these very stanzas there and the Jaipore Ms. distributes them over four different samdhis from 50th onwards. I give below these stanzas with their location in the four Mss. mentioned above.

- (c) 33. ( i ) वरमकरोद्धारतरविवरमहिकिरणेन्दुमण्डलं  
यदपि च जलधिवलयमधिलंघ्य विधेस्तदन्तरं दिशः ।  
विगलितजलपयोद्पटलद्युनि कथमिदमन्यथा यशः  
प्रसरदमादमल्लकदनाभारत भुवि भरत सामतम् ॥

( Found in the Poona and Kāranjā Mss. at the beginning of the 41st and the 47th sandhis. The Jaipore Ms. has it only at the 41st. K does not give it anywhere ).

34. ( ii ) भास्वानेककलावतोऽस्य च भवेद्यत्राम तन्मङ्गलं  
सर्वस्यापि गुरुर्बधः कविर्ग्यं चक्रे अयं च ( ? ) क्रमः ।  
राहुः केतुरयं द्विषामिति दधत्साम्यं यद्वाणां प्रभुः  
सप्रत्योदय ( ? ) माननोति भरतः सर्वस्य तेजोधिकः ॥

( Found in the Poona and Kāranjā Mss. at the beginning of the 50th along with two following and जगं रम्मं इम्मं etc. ( see stanza 5 above ). The Jaipore Ms. gives this stanza alone at the 50th, and K does not give it anywhere ).

35. ( iii ) सया सन्नो वेसो भूतणं सुदृसीलं  
मुसतुदं चित्तं सव्वन्निविसु मत्ती ।  
मुहं दिव्वा वाणी चारुचारित्तभारो  
अहो सण्डस्सेसो केण पुण्णण जाओ ॥

( Found in the Poona and Kāranjā Mss. at the 50th, the Jaipore Ms. gives it at 49th, and K does not give it anywhere ).

36. ( iv ) दीनानाथधनं सदाचहुजनं प्रोक्तुल्लवल्लीवनं  
मान्यासैटपुरं पुरंदरपुरीलीलाहरं सुन्दरम् ।  
धारानाथनरेन्द्रकोपशिखिना दग्धं विदग्धप्रियं  
क्रेदानीं वसति करिष्यति पुनः श्रीपुष्पदन्तः कविः ॥

( Found in the Poona and Kāranjā Mss. at the 50th, in the Jaipore Ms. at 52nd, and K does not give it anywhere ).

37. ( v ) अत्र प्राकृतलक्षणानि सकला नीतिः स्थितिश्छन्दसा-  
मर्थालंरुतयो रसाश्च विविधास्तस्वार्थनिर्णीतयः ।  
किं चान्यदादिहास्ति जैनचरिते ग्रन्थेषु तद्विद्यते  
ह्रावेतो भरतेशपुष्पदन्तौ सिद्धं ययोरिदंशम् ॥

( Found in all the four Mss. at the beginning of the 59th sandhi ).

38. ( vi ) बन्धुः सौजन्यवार्धः कविकुलधिषणाध्वान्तविध्वंसभानुः  
प्रौढालंकारसारामलतनुविभवा भारती यस्य नित्यम् ।  
वक्त्राम्भोजानुरागक्रमनिहितपदा राजहंसाव भाति  
प्रोद्यद्गम्भीरभावा स जयति भरते धार्मिके पुष्पदन्तः ॥

( Found in all the four Mss. at the beginning of the 63rd  
samdhi ).

39. ( vii ) आसण्डोडूमरारवं इमरुक्तं चण्डीशमाश्रित्य यः  
कुर्वन् काममकाण्डताण्डुवविधिं डिण्डीगपिण्डकण्डवेः ।  
हंसाडम्बराडिण्डमण्डललमद्रागीरधीनायकं  
वाञ्छन्निन्धमह कुतूहलवती सण्डस्य कीर्तिः कृतेः ॥

( Found in all the four Mss. at the beginning of the 64th  
samdhi ).

40. ( viii ) आजन्मं ( १ ) कवितागसैकधिषणासौभाग्यभाजो गिरां  
दृश्यन्ते क्वच्यो विशालमकलग्रन्थानुगा बोधतः ।  
किं तु प्रौढनिरुद्धगूढमतिना श्रियुष्मदन्तेन भोः  
साम्यं विश्रान्तं ( १ ) नैव जानु कविता शिघ्रं ततः प्राकृते ॥

( Found in all the four Mss. at the beginning of the 65th  
samdhi ).

41. ( ix ) यस्येह कुन्दामलचन्द्रोच्चःसमानकीर्तिः ककुभां मुत्तानि ।  
प्रसाधयन्ती ननु बंध्रमीति जयत्वसौ श्रीभगतो नितान्तम् ॥

42. ( x ) पशुपसूर्तिाकरणा हरहासहाग-  
कुन्दप्रसूनमुरतीरिणिशक्रनागाः ।  
क्षीरोदशेषचलसप्तम (?) हंस (?) चैव  
किं सण्डकाव्यधवला भरतः स यूयम् (?) ॥

( Both these stanzas are found in all the four Mss. at the  
beginning of the 66th samdhi. )

43. ( xi ) इह पठितमुदारं वाचकैर्गर्धमानं  
इह लिखितमजन्मं लेखकैश्चाह काव्यम् ।  
गतवन्ति कविमित्रे मित्रतां पुष्पदन्ते  
भरत तव गृहेऽस्मिन् भाति विद्याविनोदः ॥

( Found in all the four Mss. at the beginning of the 67th  
samdhi ).

44. ( xii ) चञ्चलचन्द्रमरीचिचञ्चुराचातुर्यचक्रोचिता  
चञ्चन्ती विचटञ्चमत्कृतिकविः प्रोद्गामकाव्यक्रियाम् ।  
अञ्चन्ती त्रिजगन्ति कोमलतया बान्धुर्यधुर्या रसेः  
खण्डस्यैव महाकवेः सभरतान्त्रित्यं कृतिः शोभते ॥

( Found in all the four Mss. at the beginning of the 68th samdhi ).

45. ( xiii ) लोके दुर्जनसंकुले हतकुले वृष्णाकुले नीगने  
सालंकारवचोविचारचतुरे लालित्यलीलाधरे ।  
भद्रे देवि सरस्वति प्रियतमे काले कलौ सांप्रतं  
कं यास्यस्यभिमानरत्ननिलयं श्रीपुष्पदन्तं विना ॥

( Found in all the four Mss. at the beginning of the 80th samdhi ).

The following three stanzas are found only in the Jaipore Ms.

- (d) 46. ( i ) सोऽयं श्रीभरतः कलङ्कगङ्गितः कान्तः सुवृत्तः शुचिः  
सज्ज्योतिर्मणिराकरो पुत्र इवानर्घ्यो गुणेर्भासते ।  
वंशो येन पवित्रतामिह महामन्त्राह्वयः प्राप्तवान्  
श्रीमद्ब्रह्मराज— कटकके यथाभवन्नाय F ॥

( Found at the beginning of the 42nd samdhi ).

47. ( ii ) वापीकूपतडागजैनवसतीस्त्यक्त्वेह यत्कारितं  
भव्यश्रीभरतेन मुन्दरधिया जेनं सुराणां ( पुराणं ! ) महत् ।  
तत्कृत्वा पूर्वमुत्तमं रविकृतिः ( ! ) संसारवार्धेः सुखं  
कोऽप्यत् ( ! ) स्वसहस्रो ( ! ) स्ति कस्य हृदयं तं वन्दितुं नेहने ॥

( Found at the beginning of the 45th samdhi ).

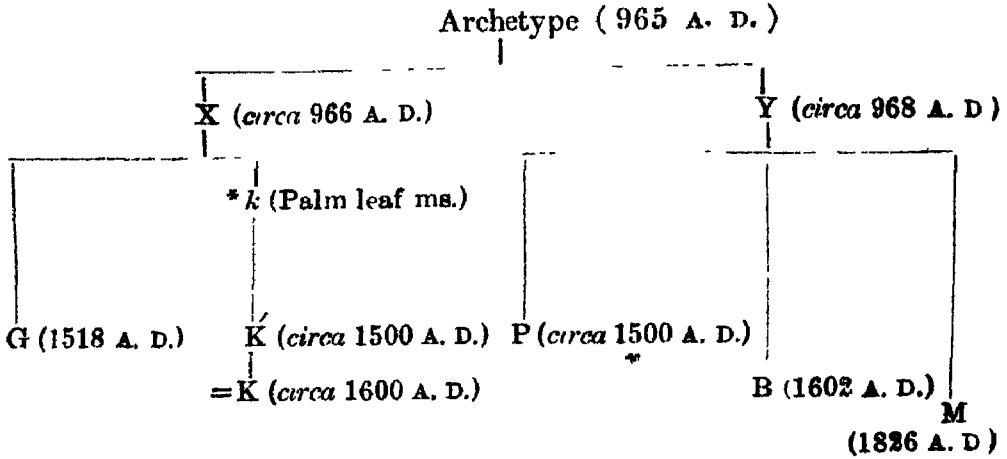
48. ( iii ) संजुडियजाणुकांपरर्गावाऋडिवन्धणावयवो ।  
अणुहवह वोरियं तुज्ज जं पावह लेहओ दुक्त्तं ॥

( Found at the beginning of the 58th samdhi ).

It will be seen from the account of these praśasti stanzas that even the Uttarapurāṇa Mss. preserve three different recensions, K representing the oldest, the Poona and Kāranjā Mss. the middle and the Jaipore Ms. the youngest. Leaving the question of the genealogy



of the Mss. of the Uttarapurāna for the time being, I present below in genealogical form the relation of the different Mss. of the Ādipurāna :—



#### BHARATA, THE PATRON OF PUSPADANTA

There are in all 48 praśasti stanzas found in the Mss. of the Mahāpurāna. Of these stanzas, six, viz., 5, 6, 16, 30, 35 and 48 are in Prakrit and the remaining are in Sanskrit. The Prakrit of these stanzas is grammatically correct and graceful, but we cannot say the same about the Sanskrit of the same. Prakritisms occur there pretty often (e. g. चोज्जं in 29). The subject matter of these stanzas covers topics such as homage to the goddess of learning (वाङ्मती, 6) and Ambikā (23), the poet Puspadanta himself (5, 30, 36, 39, 40, 45), the poet and his Mahāpurāna (37), the relation between Bharata, the patron, and the poet (1, 4, 14, 26, 35, 37, 38, 42, 43, 44), and the glorification of Bharata, the poet's patron (remaining stanzas). Bharata is mentioned and glorified in the body of the work (I. 3-8; XXXVII. 3-5; CII. 13) and also in the Ghatta lines and the puspikā at the end of each sandhi (महामन्वभग्दानुमण्डि महारुद्र) of the Mahāpurāna. There are three stanzas in Sanskrit in some Mss. of the Jasaharacariu glorifying Nanna, Bharata's son and successor in office; and a long praśasti at the end of the Nāyakumāracariu (page 112) gives some details about the same. On the strength of the information supplied by these it is possible to construct a short biography of Bharata to whose generosity the world owes this epic poem in Apabhramśa.

\* The asterics indicate conjectural Mss.

We have now an excellent account of the *Rāṣṭrakūtas and their Times* by Dr. A. S. Altekar ( Poona, 1934 ). We find that a few pages ( 115-123 ) are devoted there to the political events of Kṛṣṇa III ( 939-968 A. D. ). We also have there a section dealing with education and literature ( Chapter xiv ) of the period. And yet, we do not find any reference in the book to Bharata, the minister of Kṛṣṇa III, nor do we find any reference to the Poet. On the contrary we read on page 412 a remark to the effect that there is hardly any output of Prakrit Literature during the period. Puṣpadanta, under the patronage of Bharata and his son Nanna, composed three works in Apabhramśa, which covering as they do over 2000 pages of the size of the present volume, cannot be easily ignored, nor can Bharata, the patron of learning, be neglected, who constantly urged on the poet to make the best use of his gifts. It will not therefore be out of place to construct the story of the life of Bharata, the forgotten patron of Prakrit Literature, from out of the material like the references in the works of Puṣpadanta and the praśasti stanzas.

Kṛṣṇa III is known in Puṣpadanta's works by three names : Tudiga, Suhatuṅgarāya ( Sk. Subhatuṅgarāja ) and Vallabhaurpa. He came to the throne in 939 A. D., and ruled up to 968 A. D. In this year he was succeeded by his younger brother Khottigadeva. It was during the reign of Khottigadeva, in 972 A. D., that Mānyakheta, the capital of the later Rastrakūtas, was plundered by the king of Dhāra. Bharata was the minister of Kṛṣṇa III. Nanna, Bharata's son, also, is mentioned as a minister of Suhatuṅgarāya, i. e., Kṛṣṇa III. Bharata however was still living when Puṣpadanta's Mahāpurāṇa was completed, i. e., upto 965 A. D. As Kṛṣṇa III died in 968 A. D., we have to suppose that Bharata must have died between 965 and 968 A. D., so that his son, Nanna, could succeed his father by 968 A. D. After the death of Bharata, Nanna extended his patronage to Puṣpadanta and induced him to write *Jasaharacariu* and *Nāyakumāracariu*.

Bharata seems to have come from the family of Koṇḍella gotra ( Sk. Kaundīnya ). This was a rich family and held the office of ministers ( महासन्नाह्वयः वंशः, 46 ), but had become poor. There are references which indicate that Bharata regained the lost wealth of his family by devoted service to his master ( संतानकमतो गतापि हि रमा रुष्टः प्रभोः सेवया ). His grandfather's name was Annaiya or Annayya. His

father's name was Aiyāna or Airāna and his mother was called Devī. Bharata had no brother or near relative (बन्धुरहितेन, 15). He was married to Kundavvā and had seven sons, viz., Devalla, Bhogalla, Nāṇṇa, Sohaṇa, Guṇavamma, Dangaiya and Santaiya. Nāṇṇa is mentioned as the son of Kundavvā and it is not unlikely that Bharata had more wives than one. All the seven sons of Bharata were still living in 965 A. D., while Nāṇṇa is stated to have succeeded his father already in 968 A. D. We have therefore to presume that his two elder brothers died following the death of their father or that Nāṇṇa had some special qualifications to supercede his brothers in the office of his father.

Bharata is described by Puṣpadanta as possessing dark complexion (श्यामः प्रधानः, 12 ; श्यामहाचि, 20). He had a beautiful figure and is likened to the god of love (20). He had a good physique (भारतमल्ल, 23), and held the office of a general in the army of Kṛṣṇa III (बलभराज...कटकेश्यामवन्नयकः, 46). He also held the portfolio of the minister of charities in the royal household (प्रचण्डावनिवतिभवने त्यागसंख्यानकर्ता, 12). He had a gentle dress and courteous manners and speech (सया सन्तो वेसो, मुहे दिव्या वाणी, 35). He was fond of learning (विद्याप्रियः, 7). He combined in him wealth and learning (श्रीलसि, सरस्वती बदनपङ्कजे, 22). It was impossible to count his virtues as it is impossible to count the waters of the sea (11 ; 12). He had a pure character (स्वप्नेष्येष पराङ्गनां न वाञ्छति, 3). He was in fact a rendezvous of all virtues, most striking among them being his generosity. Poems were being recited in his house, copyists prepared copies of works. Thus, since Puṣpadanta became the friend of Bharata, his house became a meeting place of the learned (43). He was always generous to the needy and so held a place amongst generous persons of the past such as Bali, Jimūtavāhana, Dadhici, Vinayaṅkura and Śātavahana (9, 31). His fame travelled far and wide (1). He had countless virtues as he had countless enemies (27), who experienced the same miseries as copyists experienced while toiling (48). One graceful act on his part was to induce Puṣpadanta to write the Mahapurāna and to offer him the necessary help for this purpose. In fact, instead of spending his wealth in building wells, lakes, ponds and Jain temples, he used it on the preparation and propagation of the Jain epic with the help of which he would cross the ocean of saṃsara with comfort (47).

The poet Puspadanta came of a Brahmin family of Kāśyapa gotra. His father's name was Keśava and mother's name was Mugdhādevī. Both of them were devotees of Siva, but were later converted to Jainism. Puspadanta had a dark complexion and a lean body. He does not seem to have married. He was in extreme poverty, had neither property nor house, and yet he possessed a lord's noble mind (5). He seems to have been in the court of a king named Bhairava or Vīrarāja, and written a poem on him, but being insulted there, left his court, and came to Mānyakheta, modern Malkhed, which was then the capital of the Rāstrakūtas, and very prosperous (36). There he stayed in a grove of trees, outside the town; two citizens, Indrarāja and Annaīya by name, saw him there and persuaded him to go to the house of Bharata where he would have a good reception. The poet was at first unwilling because of his bitter experiences of the wicked world in the past. He was however assured by these men that Bharata was a man of a different type, that he was so kind and noble. The poet thereupon went to him, had a good reception, as assured. After a few days' rest Bharata requested him to write the Mahāpurāna so that his poetic gifts could be rightly used. It was in this way that the poet began his Mahāpurāna in the house of Bharata in the Siddhārtha year of the Saka era, i. e. in 959 A. D. The poet was out of mood after he had completed his Ādipurāna, i. e., the first thirty-seven saṁdhis, and halted there for some time. The goddess of learning appeared before him and encouraged him to resume the work. Bharata also induced him to complete the work. The poet thereupon finished his work in the Krodhana year of the Śaka era, i. e., in 965 A. D. He seems to have been highly pleased with his performance, and out of satisfaction and just pride he wrote—

अत्र प्राकृतलक्षणानि सकला नीतिः स्थितिश्चन्द्रसा-  
मर्थालंकारयो रसाश्च विविधास्तत्त्वार्थनिर्णयितयः ।  
किं चान्यद्यदिहास्ति जैनचरिते नान्यत्र तद्विद्यते  
द्वावैतौ भरतेशपुण्यदर्शनौ सिद्धं ययोरीदृशम् ॥ ( 37 )

in the same spirit which prompted Vyāsa of the Mahābhārata to say—

यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्कश्चित् ।

For the Mahāpurāna is as sacred to the Jains as the Mahābhārata is to the Hindus. The poet attributed the successful completion of the

work as much to his genius as to the generosity of Bharata. His fame as poet travelled far and wide as that of Bharata for his generosity. It appears that Bharata died within three years of the completion of the Mahāpurāṇa, Nanna succeeded him in the office, extended his patronage to Puṣpadanta and asked him to write two more poems in Apabhramśa, Jasaharacariu and Nāyakumaracariu. The glory of the Rāṣtrakūtas, however, soon came to the end. Their capital, Manyakheta, was plundered in 972 A. D., and the poet became destitute once more (केदानी वसतिं करिष्यति पुनः श्रियुष्पदन्तः कविः, 36).

### WHAT IS A MAHĀPURĀṆA?

The Digambara Jains hold that their sacred literature consisting of Purvas and Aṅgas is lost; they do not therefore accept the authority of the Canon of the Svetāmbaras. The Canon, according to the Digambaras, consists of four divisions: (i) Prathamānuyoga, lives of Tirthankaras and other great men of the faith; in other terms, the kathā literature; (ii) Karānanuyoga, description of the geography of the universe; (iii) Carānanuyoga, rules of conduct for monks and laymen; and (iv) Dravyānuyoga, philosophical categories or philosophy. According to this classification works like the present text fall under the category of Prathamānuyoga.

The Mahapurāṇa is a term peculiar to the Jain literature and means a great narrative of the ancient times. There are purāṇas or old tales in the Jain Literature, but they narrate the life of a single individual or holy person. The Mahāpurāṇa, on the other hand, describes the lives of sixty-three prominent men of the Jain faith. Jinasena uses the term Mahāpurāṇa as a synonym for Triṣaṣṭilakṣaṇa, while Hemacandra calls his work on the theme as Triṣaṣṭisālākā-puruṣacarita, i. e., the lives of sixty-three prominent men (Sālākāpuruṣa). Puṣpadanta uses the term Mahapurana to alternate with Tisatthimāhāpurisaguṇalankara, Adoration of the Virtues or qualities of Sixty-three Great Men. The term purāṇa is defined in the Hindu Literature as follows:—

सर्गश्च प्रतिमर्गश्च वंशो मन्वन्तगणि च ।  
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम् ॥

The purāṇa deals with the five topics, viz. the creation, the dissolution or secondary creation, dynasties, epochs between the Manus and the history of the dynasties. This definition is applicable to our

Mahāpurāṇa as well ; for we do find the five topics mentioned above in our work. Still it is interesting to see how the Jains themselves interpret the term. Jinasena who is a predecessor of Puṣpadanta in the writing of a Mahāpurāṇa says :—

तीर्थेशामपि चक्रेशां हलिनामर्षचक्रिणाम् ।  
 त्रिषष्टिलक्षणं वक्ष्ये पुराणं तद्वृत्तमपि ॥  
 पुरातनं पुराणं स्यात्तन्महत्प्रहदाश्रयान् ।  
 महद्विरूपदिष्टवान्महाश्रेयोनुशासनात् ॥  
 कविं पुराणमाश्रित्य प्रसृतत्वात्पुराणता ।  
 महत्त्वं स्वमहिम्नैव तस्येत्यन्यैर्निरुच्यते ॥  
 महापुरुषसंबन्धि महाभ्युदयशामनम् ।  
 महापुराणमात्रातमत एतन्महर्षिभिः ॥ I. 20-23.

“ I shall recite the narrative of sixty-three ancient persons, i. e., of the Tirthamkaras, of the Cakravartins, of Baladevas, of half-Cakravartins ( i. e. Vasudevas ) and of their opponents ( i. e., of Prati-Vāsudevas ). The work is called ‘ purāṇa ’ because it is a narrative of the ancients. It is called ‘ great ’ because it relates to the great ( persons ), or because it is narrated by the great ( sages ) or because it teaches ( the way to ) great bliss. Other writers say that, because it originated with the old poet it is called ‘ purāṇa ’ and it is called ‘ great ’ because of its intrinsic greatness. The great sages have called it a Mahāpurāṇa because it relates to great men and because it teaches the bliss.” A Tippana on I. 9. 3 of our text seems to make a distinction between *aihāsa* and *purāṇa* and says that *aihāsa* means the narrative of a single individual while *purāṇa* i. e. Mahāpurāṇa means narratives of sixty-three great men ( अइहास एकपुरुषाश्रिता कथा; पुराण त्रिषष्टि-पुरुषाश्रिताः कथाः पुराणानि ). The Mahapurāṇa therefore is a work on the lives of sixty-three great men of the Jain faith, and thus occupies the same place of importance as the Mahābharata or the Rāmāyana in Hinduism. The Mahāpurāṇa however lacks the unity of the Mahābharata or of the Rāmāyana and therefore cannot be called an epic in the strictest sense of the term.

The sixty-three great men whose lives are described in a Mahāpurāṇa are classified under five heads. I give their names below for ready reference :—

- (a) The Tirthamkaras ( 24 ) : ( 1 ) वृषभ or ऋषभ ; ( 2 ) अजित ; ( 3 ) शंभु or संभु ; ( 4 ) अभिनन्दन ; ( 5 ) सुमति ; ( 6 ) वपामन ; ( 7 ) सुषाम्भ ( 8 ) चन्द्रप्रस ;

(9) पुण्यवन्त or सुविधि; (10) शीतल; (11) श्रेयांस; (12) वासुपुंज्य; (13) विमल; (14) अनन्त; (15) धर्म; (16) शान्ति; (17) कुन्धु; (18) अर; (19) मलि; (20) सुवत; (21) नमि; (22) नेमि; (23) पार्श्व; and (24) महावीर.

(b) The Cakravartins (12): (1) भरत; (2) सगर; (3) मघवन्; (4) सनत्कुमार; (5) शान्ति; (6) कुन्धु; (7) अर; (8) मुभौम or सुभूम; (9) पद्म; (10) हरिषेण; (11) जयसेन or जय; and (12) ब्रह्मदत्त.

(c) The Vāsudevas (9): (1) त्रिपुष्ट; (2) द्विपुष्ट; (3) स्वयंभू; (4) पुरुषोत्तम; (5) पुरुषसिंह; (6) पुरुषपुण्डरीक; (7) दत्त, (8) नारायण; and (9) रुष्ण.

(d) The Baladevas (9): (1) अचल; (2) विजय; (3) मद्र; (4) सुप्रभ; (5) सुदर्शन; (6) आनन्द; (7) नन्दन; (8) पद्म; and (9) राम ( बलराम ).

(e) The Prati-Vasudevas (9): (1) अश्वपति; (2) तारक; (3) मेरुक; (4) मधु; (5) निधुम्भ; (6) बलि; (7) मल्लाद; (8) रावण; and (9) मगधेश्वर or जगसेव.

It is to be noted that Santi, Kunthu and Ara are Tirthamkaras as well as Cakravartins.

#### WORKS ON SIXTY-THREE GREAT MEN

The oldest known published work on sixty-three great men is the Mahapurāna or more accurately Adipurāna of Jinasena (*circa* 850-875 A. D.). Jinasena calls his work Triṣaṣṭilakṣanamahapurana-samgraha, and thus seems to have planned a complete Mahapurāna. He was however unable to complete it, probably on account of his death. We get from his hand forty-two parvans only of the Adipurāna, the remaining five parvans of the Adipurāna and the whole of the Uttarapurāna being written by his disciple Gṇabhadra and completed in 820 of the Saka era, i. e., in 898 A. D., at Vanikapura, under the patronage of Lokāditya, a feudatory of Akālavarsa *alias* Kṛṣṇa II (880-914 A. D.) This Mahapurāna is written in Sanskrit, and printed twice, first at Kolhapur with a Marāthi translation by Kallappa Nīṭve and again at Indore with a Hindi translation by Pandit Lalaram Jain. It is written from the point of view of the Digambara Jains.

The second known work on the subject is the present work and belongs to the Digambara sect of the Jains.

The third work is the Triṣaṣṭīśalākāpuruṣacarita by Hemacandra. It is a Śvetāmbara work and is written in Sanskrit. It is one of the last

works of Hemacandra and so may have been written about 1170-72 A. D. It was published by the Jaina Dharma Prasārika Sabhā of Bhavnagar in 1905-9, and a reprint of it is being issued at present.

The Jain Granthāvalī published in 1965 of the Vikrama era, i. e. in 1907-8 records three works named Mahāpuruṣacarita on page 229. One of them is by Silācārya (circa 925 of the Vikrama era, i. e. 888 A. D.), is written in Prakrit and its Mss. are said to be deposited in the famous Patan Bhandar No. 4 and also at Jesalmer Bhandar. The same book mentions another work on the subject in Prakrit by Anrasūri on the authority of Brhāttippanikā. It mentions a third work in Sanskrit on the theme by Merutuṅga, Mss. of which are deposited in two Bhandars at Patan and also at Ahmedabad. I propose to give in the last volume a concordance of Jinasena-Guṇabhadra, Puṣpadanta and Hemacandra, as also of Silācārya and Merutuṅga if these two last-named works become available to me.

#### THE GLOSS ON THE CONSTITUTED TEXT

The reader will notice that the bottom portion of the printed text is divided into two parts. The first part, separated from the text by a wavy line gives the variants found in the Mss. or recorded in the margin of Mss., and also in the Tippana of Prabhācandra. The second part, separated from the first part by a double line, gives a short gloss on the text in Sanskrit. I have culled it from the marginal notes in Mss. G, K, M and P, and also from the Tippana of Prabhācandra. In selecting the gloss for this purpose I have kept in mind the difficulties which a reader is likely to meet with while going through the text, and I hope that if the reader is equipped with a good knowledge of the Sanskrit language and literature and some elementary knowledge of the grammar of the Prakrit and Apabhraṃśa dialects, he will be able to understand the text easily with the help of this gloss. Extracts from Prabhācandra's Tippana, where they appeared to be interesting but rather extensive to be accommodated at the bottom of the text are given in the notes at the end. I hope this method of supplying the gloss at the bottom of the page will be appreciated by the reader as it taxes him less, and helps me to reduce the volume of notes. It should be noted that I have not retouched the text of the gloss, but have retained it as it was found in Mss. even though I felt at times tempted to improve upon uncouth Prakritisms or unwarrant-



ed historical allusions ( see for example, the gloss on कइव विहियसेउ on page 8 ).

#### ACKNOWLEDGMENT OF OBLIGATIONS

It now remains for me to perform the pleasant duty of thanking all those who, one way or another, assisted me in the production of the present volume. I must thank in the first place the Trustees and the Secretaries of the Manikchand Digambara Jaina Granthamālā who were kind enough to find the necessary fund for the preparation and publication of this volume, and I feel sure they will also find the necessary funds to complete the work. The poetic genius of Puspādanta required the benevolent encouragement of his patron Bharata in the 10th century. After the plunder of Mānyakheta in 972 A. D. the poet became desolate and remained uncared for for about a thousand years, and had it not been for the help that the Trustees of the Series offered to the Editor, his efforts to bring the poet out of oblivion would have been of no avail. The spirit of Puspādanta will thus take a special delight in having once more discovered the spirit of his former patron regenerated in the Trustees of the Series. The Editor hopes that the same spirit will find a few thousand rupees more to enable him to complete the task that he has undertaken to rescue from oblivion this monumental work of the Poet.

To Professor Hiralal Jain of King Edward College, Amraoti, I owe a special debt of gratitude. He moved heaven and earth to find the funds for this publication. He has helped me in various other ways, in securing the loan of Mss. from Kāranjā and Jaipore, and in sending me bits of information that he came across. To Pandit Nathuram Premi, the veteran savant of Jain literature and an adventurous publisher of Jain works, I also tender my heart-felt thanks.

I would like to record here my sense of high appreciation of the services which Mr. R. G. Marathe, M. A., formerly my pupil and now professor of Ardha-Māgadhī at the Willingdon College, Sangli, rendered me in the preparation of this work. He did a lot of copying work for me and helped me at the time of collation as well.

Nowrosjee Wadia College, Poona }  
August 1937

P. L. VAIDYA

## ग्रन्थ-परिचय

### १ अपभ्रंश-साहित्यकी खोज

आज से बीस वर्ष पूर्व अपभ्रंश भाषा का उपलब्ध साहित्य नहीं के बराबर था। कुछ स्फुट रचनाएँ जैन धार्मिक समाज में प्रचलित थीं, पर न तो विद्वत्संसार को उनका कुछ परिचय था और न जैन समाज में ही भाषा की दृष्टिसे उनका कोई विशेष महत्त्व था। किन्तु गत बीस वर्ष में इस भाषा के अनेकों ग्रन्थों का पता चला है और धीरे धीरे उनका सूक्ष्म अध्ययन, सुसंशोधित प्रकाशन और विद्वत्समाज में आदर भी बढ़ रहा है। विशेष रूप से इस ओर ध्यान तभी से गया है जब से मैंन सन् १९२४ में कारंजा के भंडारों का अवलोकन किया और वहाँ के उपलब्ध दश बारह अपभ्रंश ग्रन्थों का परिचय मध्यप्रान्त के हस्तलिखित संस्कृत प्राकृत ग्रन्थों की सूची में प्रकाशित कराया, तथा इन ग्रन्थों के प्रकाशनार्थ ही कारंजा ग्रंथमाला की स्थापना कराई। तब से मेरी इस साहित्य की खोज बराबर जारी है। जिसके फलस्वरूप मुझे इस भाषाका विपुल साहित्य उपलब्ध हुआ है। हर्ष की बात है कि इस साहित्य के अध्ययन, संशोधन और प्रकाशन में अब अनेक सुप्रतिष्ठित विद्वान् मेरा हाथ बँटा रहे हैं।

### २ पुष्पदन्त के ग्रन्थ

इस खोज से अबतक जितने ग्रन्थों का पता लगा है, उनमें पुष्पदन्त के ग्रन्थ विशेष महत्त्वशाली ज्ञात हुए हैं। वे भाषा की दृष्टि से सब से प्रौढ, काव्य की दृष्टि से सबसे सुन्दर तथा प्राचीनता में, एक स्वयंभूके काव्यों को छोड़, सबसे पूर्व के प्रमाणित होते हैं। पुष्पदन्त के जो तीन ग्रन्थ अबतक पाये गये हैं उनमें से 'जसहर-चरित' प्रस्तुत ग्रन्थ के सम्पादक श्रीयुत डा. वैद्य द्वारा ही सम्पादित होकर कारंजा-सीरीज में और 'णायकुमार-चरित' मेरे द्वारा सम्पादित होकर देवेन्द्र-कीर्ति-सीरीज में प्रकाशित हो चुके हैं। तीसरा ग्रन्थ यही प्रस्तुत महापुराण है। इसे भी कारंजा सीरीज में प्रकाशित करने का विचार था और इसी के लिये इस ग्रन्थ का संशोधन सम्पादन प्रारम्भ किया गया था किन्तु उस सीरीज में प्रकाशित होने में अभी कुछ बिलम्ब होता। प्रकाशनीय साहित्य बहुत विपुल मात्रा में तैयार है। इसी से अबसर पाकर यह ग्रंथ इस ग्रंथमालाद्वारा प्रकाशित किया जा रहा है।

पूरे महापुराण में एक सौ दो सन्धि अर्थात् परिच्छेद हैं। इनमें से प्रथम सैंतीस संधियों में आदिपुराण समाप्त हो जाता है। यही आदिपुराण वर्तमान संस्करण में प्रस्तुत है। शेष पैंसठ संधियाँ उत्तरपुराण की हैं जिन्हें आगे दो ग्रन्थों में प्रकाशित कराने का विचार है। इस उत्तरपुराण का एक खण्ड मेरे एक जर्मन मित्र डा. लुडविग् आल्सडॉर्फ ने सम्पादित कर के अभी अभी जर्मनी में प्रकाशित

कराया है। इसमें उत्तरपुराण की बारह (८१-९२) संधियाँ हैं जो हरिवंशपुराण कहलाती हैं। जब जर्मनी से यह संस्करण प्रकट नहीं हुआ था तब विचार था कि डा. आल्सडॉर्फ द्वारा सम्पादित यह खण्ड भी एक ग्रंथ में स्वतंत्र रूपसे प्रकाशित करा दिया जाय, और इसी विचार से मित्र आल्सडॉर्फ ने बड़े ही परिश्रम से अपने संस्करण का पाठ नागरी लिपि में तैयार कर दिया, भूमिका का भी अंग्रेजी अनुवाद कर डाला और नोट्स व अनुक्रमणिकादि भी बना कर भेज दीं। पर इसके प्रेस में भेजने में कुछ विलम्ब हुआ, और इसी बीच जर्मनी से उनका रोमन लिपि में जर्मन भाषामय भूमिकादिसहित संस्करण प्रकट हो गया। तब विचार हुआ कि अब इसके नागरी लिपि के संस्करण निकालने में जल्दी करने की आवश्यकता नहीं है। विद्वानों को ग्रंथ उपलब्ध हो ही गया है। अब उत्तरपुराण के क्रम-बद्ध प्रकाशन में ही यथास्थान इस का उपयोग करना उचित होगा। यही विचार कर उसकी छपाई स्थगित करा दी गई।

### ३ संशोधन-सामग्री

प्रस्तुत आदिपुराण का संशोधन आठ प्राचीन हस्तलिखित प्रतियों पर से किया गया है। इनमें से पाँच का तो पूर्ण रूप से उपयोग किया गया है और उनके पाठ-भेद दिये गये हैं, और शेष तीन का यत्र तत्र उपयोग किया गया है, क्योंकि या तो उनके पाठ उक्त पाँच में से किसी एक के साथ अभिन्न थे या वे अपेक्षाकृत अर्वाचीन थे। जिन प्रतियों का पूरा पूरा उपयोग किया गया है उनमें से दो बलात्कारगण-जैनमंदिर, कारंजा, की हैं; दो भांडारकर ओरियंटल रिसर्च इंस्टिट्यूट, पूना, की और एक तात्यासाहिन पाटील, नांदणी (कोल्हापुर) के पास से प्राप्त। इनमें से कारंजा के बलात्कारगण-मंदिर की, संवत् १५७५ में लिखित प्रतिको प्रधान रूपसे साम्हने रख कर पाठ संशोधन किया गया है।

### ४ प्रभाचन्द्रकृत टिप्पण

पाठ संशोधन में सब से अधिक महत्त्वपूर्ण सहायता प्रभाचन्द्रकृत महा-पुराण-टिप्पण से मिली। आदिपुराण-टिप्पण की एक प्रति सम्पादक की भांडारकर-इन्स्टिट्यूट से प्राप्त हुई जिसमें संवत् का उल्लेख नहीं पाया गया। उत्तर-पुराण के टिप्पण की एक प्रति जयपुर से प्राप्त हो गई थी जिसकी प्रशस्ति से ज्ञात होता है कि यह टिप्पण संवत् १०८० = १०२३ ईस्वी में, अर्थात् महापुराण के रचे जाने के साठ वर्ष के भीतर ही लिखा गया था। उस समय मालवे में राजा भोज का राज्य था। प्रभाचन्द्र ने इस टिप्पण को 'सागरसेन सैद्धान्तिक से परिज्ञात करके तथा 'मूलटिप्पणिका' का अवलोकन करके लिखा था। संभव है यह मूलटिप्पणिका स्वयं कवि पुष्पदंत की ही लिखी हुई हो।

### ५ संधियोंके प्रारंभके स्फुट पद्य

महापुराण की भिन्न भिन्न प्रतियों में कुछ संधियोंके प्रारंभ में कविके आश्रयदाता भरत की प्रशंसा के छंद पाये जाते हैं। इनमें से छह की भाषा प्राकृत और शेष सबकी

संस्कृत है। इसमें सन्देह नहीं कि इनकी रचना स्वयं कवि पुष्पदंत की ही है, क्योंकि अन्य किसी कवि को उनके आश्रयदाता की ऐसी गुणगाथा गाने के उत्साहका कोई कारण नहीं दिखता। दूसरे इनमें से कुछ छन्दों में स्वयं पुष्पदंत के व्यक्तिगत भावों और अनुभवों का उल्लेख है जो दूसरे कवि के द्वारा नहीं किया जा सकता। ऐसे कुल पद्यों की संख्या ४८ है। पर ये सभी पद्य सभी प्रतियों में नहीं पाये जाते और न उनमें से प्रत्येक छंद किसी एक निर्विष्ट संधिमें ही पाया जाता है। किसी प्रति में कहीं कोई पद्य, तो दूसरी प्रतिमें कहीं अन्यत्र, या तीसरीमें वह बिलकुल ही नहीं पाया जाता। इस अवस्थासे अनुमानतः यह निष्कर्ष निकलता है कि ये पद्य कविने ग्रंथरचना के समय ही रचकर विशेष विशेष स्थानों पर नहीं रक्खे। ग्रंथरचना समाप्त हो जाने, तथा उसकी कुछ प्रतिलिपियाँ बाहर चले जाने पर यथावसर कविने जो पद्य कभी रचा उसे अपनी प्रति में किसी संधि के प्रारंभ में लिख दिया, ऐसा जान पड़ता है। इससे उस 'धारानाथ-नरेंद्र' के उल्लेख वाले पद्य की गुंथी भी सुलझ जाती है जो पूना और कारंजा वाली प्रतियों में ५० वीं संधि के प्रारम्भमें और जयपुर की प्रतिमें ४९ वीं संधि के प्रारम्भमें, और तात्या साहिब वाली प्रतिमें कहीं भी नहीं पाया जाता। इस पद्य में धाराके नरेंद्र श्री हर्षदेव के मान्यखेट पर आक्रमण का उल्लेख है जो 'पाह्यलच्छी-नाम-माला' के उल्लेख परसे १०९९ संवत् की घटना सिद्ध होती है। इस घटना का उल्लेख सात वर्ष पूर्ण समाप्त हुए ग्रंथ के बीच में कैसे आया यह बहुत समय तक मेरे लिये एक उलझन बनी रही जिसके सुलझाने के लिये मुझे अनेक अनुमान लगाना पड़े। किन्तु अब इन पद्यों की रचना के इतिहास परसे यह सहज ही समझमें आजाता है कि अन्य अनेक पद्यों के समान उसे भी कवि ने पीछे रचकर अपने ग्रंथ में डाला होगा।

## ६ कविके आश्रयदाता भरत का परिचय

उक्त पद्यों की प्राकृत भाषा बिलकुल शुद्ध और सुन्दर है। संस्कृत पद्यों में कहीं कहीं प्राकृत का प्रभाव आ गया है। इन पद्यों का विषय कहीं सरस्वती देवी की उपासना है, कहीं कविका आत्म परिचय है, पर अधिकांश पद्यों में कविके आश्रयदाता भरत की प्रशंसा पाई जाती है। इन पद्यों तथा महापुराण की उत्थानिका व पुष्पिकाओं और जसहरचरित व णायकुमारचरित के उल्लेखों पर से भव्यात्मा भरत और उसके कुटुम्ब का खासा इतिहास हमें मिल जाता है। भरत राष्ट्रकूटनरेश कृष्णराज तृतीय के मंत्री थे। इस नरेश के तुडुंग, शुभतुंगराय और बल्लभराय नाम भी पुष्पदंत के ग्रंथों में पाये जाते हैं। इन्होंने सन् ९३९ से ९६८ तक राज्य किया। उनके पश्चात् उनके लघुभ्राता खोद्विगदेव सिंहासनारूढ हुए। उन्हींके राज्य में सन् ९७२ (विक्रम १०२९) में उनकी राजधानी मान्यखेट पर धारानरेश हर्षदेव का आक्रमण हुआ था। महापुराण की समाप्ति अर्थात् सन् ९६५ तक भरत मंत्री जीवित थे। अन्य दो काव्यों की रचना के समय उनके पुत्र णण मंत्रिपद को विभूषित कर रहे थे। इस बीच में या तो भरतजी का परलोकवास हो गया, या उन्होंने वैराग्य धारण कर लिया होगा।

भरत कौण्डिन्य गोत्र के थे। उनके कुल में महामात्र पद्म परम्परामत था। पर बीच में इस कुटुम्ब को कुछ दुर्विन भोगने पड़े थे। इस दुरवस्था से भरत ने अपने कुल का पुनरुद्धार किया। उनके पितामह का नाम 'अन्नय्य,' पिता का 'पेयण' या 'ऐरण' तथा माता का 'देवी' था। इनके कोई भ्राता नहीं था। उनकी धर्मपत्नी का नाम 'कुन्दव्या' था। उनके सात पुत्र थे। जिनके नाम-देवल्ल, भोगल्ल, नन्न, सोहन, गुणवर्म, दंगय्य और संतय्य थे। भरत का शरीर सुदृढ और शूरोचित था और वर्ण श्याम। वे कृष्णराजके मंत्री, सेनानायक और दान-विभाग के अधिष्ठाता थे। इतना होने पर भी उनका वेषभूषा तथा व्यवहार बहुत सौम्य और शिष्ट था। वे सद्गुणों की खानि और विद्याप्रेमी थे। श्री और सरस्वती का उनमें असाधारण संयोग था। उनका आचरण सर्वथा निर्दोष था। उनके भवन में काव्य-रचना, काव्य गायन, और काव्य-लेखन होता रहता था। वे बलि, जीमूतवाहन, दधीचि, विनयांकुर और शातवाहन जैसे महादानी थे। उनका यश सुविस्तृत था। वापी, कूप, तडाग व देवमंदिर निर्माण कराने की अपेक्षा जैन पुराण की रचना और प्रसार कराना उन्हें अधिक अभीष्ट था। इसी हेतु उन्होंने कवि पुष्पदन्त को आश्रय देकर उनसे यह महान उत्तम कार्य सम्पन्न कराया और संसार-समुद्रको तरने का साधन पा लिया।

### ७ कवि-परिचय ।

कविराज पुष्पदन्त काश्यप गोत्रीय ब्राह्मण थे। उनके पिता का नाम केशव और माता का नाम मुग्धादेवी था। वे दोनों शिव के उपासक थे, किन्तु पीछे उन्होंने जैन धर्म ग्रहण कर लिया था। पुष्पदन्त का शरीर श्याम और कृश था। उनका विवाह हुआ ही ऐसा जान नहीं पड़ता। उनके न घर-द्वार था, न धन सम्पत्ति, किन्तु उनका मन बड़ा ऊंचा और विशाल था। वे पहले किसी भैरव या वीरराय नाम के राजा के आश्रय में रहे थे जिसकी प्रशंसा में उन्होंने कोई काव्य भी रचा था। किन्तु किसी कारण से सम्भवतः अपमानित होकर वे मान्यखेट आगये, और वहाँ नगर के बाहर उपवन में ठहर गये। इन्द्रराज और अन्नश्या नाम के दो नागरिकों ने उन्हें वहाँ देखा और इनसे नगर में आकर भरत से मिलने का आग्रह किया। पहले कविराज राजी नहीं हुए। क्योंकि उनका हृदय कटु अनुभवों के कारण संसार से और धनिक समाज से विरक्त हो गया था। किन्तु उन्हें जब यह आश्वासन दिया गया कि भरत मंत्री दूसरी ही प्रकृति के सज्जन हैं, तब वे उनसे मिलने पर राजी हुए। भरत के यहाँ उनका बड़ा स्वागत सत्कार हुआ। उन्हीं के शुभतुंग-भवन में वे रक्खे गये। कुछ दिनों के पश्चात् भरत ने उनसे महापुराण रचने की प्रार्थना की, जिससे उनकी काव्य-शक्ति का समुचित उपयोग हो और संसार का कल्याण हो। इस प्रकार कवि ने सिद्धार्थ शक ९५९ में महापुराण की रचना प्रारम्भ की। आदिपुराण पूरा होने पर कवि को फिर कुछ उद्वेग हुआ जिसका स्वयं सरस्वती देवीने निवारण करके उन्हें उत्तरपुराण पूरा करने के लिये प्रोत्साहित किया। कवि ने महापुराण को क्रोधन शक ९६५ में समाप्त किया।

उन्हें अपनी इस सफलता से बड़ा सुख और संतोष हुआ। उन्होंने कहा है कि “ इस रचना में प्राकृत के लक्षण, समस्त नीति, छंद, अलंकार, रस, तत्त्वार्थनिर्णय तब कुछ आगया है, यहाँ तक कि जो यहाँ है वह अन्यत्र कहीं नहीं है। धन्य हैं वे पुष्पदन्त और भरत जिनको ऐसी सिद्धि मिली। ” इसे पढ़कर महाभारतकार व्यासके इन वचनोंका ध्यान आये बिना नहीं रहता—

‘यदिहास्ति तद्वन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्कचित्’

जो यहाँ है वही अन्यत्र मिलेगा; जो यहाँ नहीं वह कहीं नहीं।

### ८ महापुराण के लक्षण

दिगम्बरमतानुसार महावीर स्वामीकी वाणी जिन ग्यारह ‘अंग’ और चौदह ‘पूर्व’ में ग्रन्थित थी वे अंग पूर्व सब विच्छिन्न हो गये। जो श्वेतांबर अंग अब पाये जाते हैं उन्हें दिगम्बर समाज स्वीकार नहीं करता। वह अपना धार्मिक साहित्य प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, और द्रव्यानुयोग ऐसे चार अनुयोगों में विभाजित करता है। प्रथमानुयोग का विषय तीर्थकरादि पुरुषोत्तमों का चरित्र वर्णन करता है। महापुराण इसी प्रथमानुयोग की एक शाखा है। उसमें चौबीस तीर्थकर, बारह चक्रवर्ती, नौ वासुदेव, नौ प्रतिवासुदेव और नौ बलदेव इन त्रैसठ शलाका-पुरुषों अथात् श्रेष्ठ पुरुषोंका चरित्र वर्णन किया जाता है। पुष्पदन्त की इस रचना का भी यही विषय है और उसे उन्होंने “ तिसट्टि-महा-पुरिम-गुणालंकार ” नाम भी दिया है। जिनसेनने अपने संस्कृत महापुराण को भी त्रिषष्टि-लक्षण नाम दिया है और हेमचन्द्राचार्यने भी त्रिषष्टि शलाका पुरुष-चरित।

जिनसेन और हेमचन्द्र के महापुराण छप चुके हैं। उनमें और प्रस्तुत ग्रंथमें कहां कंसा मेल व वमेल है यह अन्तिम जिल्द की भूमिका में स्पष्ट किया जावेगा।

### ९ आभार-प्रदर्शन

इस महापुराण का सम्पादन मेरे प्रिय सुहृद् डॉ. परशुराम लक्ष्मण वैद्य ने किया है। पाठक इन विद्वान् सम्पादक से सुपरिचित ही होंगे, क्योंकि उनके सम्पादित अनेक प्राकृत जैनग्रन्थ छप चुके हैं। कारंजा-सीरीज का प्रथम ग्रन्थ (इन्हीं पुष्पदन्तकी दूसरी रचना) भी इन्हीं विद्वानद्वारा सम्पादित हुआ है। प्रस्तुत विशाल ग्रंथ के संशोधन सम्पादन में वैद्य जी ने कितना परिश्रम किया है यह मर्मज्ञ पाठक इस ग्रंथ के अवलोकन से ही समझ सकेंगे। अनेक प्रतियों में से सबसे शुद्ध पाठ चुनकर रखने में, अन्य सब पाठोंको फुट नोट में अंकित करने में, तथा उपलब्ध टिप्पणियाँ भी नीचे उद्धृत करने में उन्होंने बड़ी ही कुशलता और विद्वत्ता दिखलाई है। उनके इस परिश्रमके फल स्वरूप जिन्हें अपभ्रंश या प्राकृत पढ़ने का अभ्यास नहीं है किन्तु जो संस्कृत जानते हैं वे भी इस काव्य-कलापूर्ण सुन्दर रचना का आनन्दोपभोग कर सकते हैं। उनकी इस निर्व्याज साहित्य-सेवा के लिये मैं तथा समस्त पाठकसमाज उनका उपकार माने बिना नहीं रह सकते।

मैं उपर कह चुका हूँ कि इस महापुराण को पहले कारंजा सीरीज में प्रकाशित करने का विचार था। और इस हेतु प्रथम इसकी हस्तलिखित प्रतियाँ कारंजा तथा अन्य स्थानों से संग्रह की गई थीं। अम्बादास चवरे ग्रन्थमाला फंड से इसकी प्रथम प्रेस कॉपी तैयार करने में तीनसौ रुपया खर्च हो चुका था, किन्तु पीछे इस ग्रन्थमाला में फंड की कमी के कारण इस बहुव्ययसाध्य प्रकाशन को रोकना पड़ा। इसी समय माणिक्यचन्द्र-ग्रन्थमाला के अधिकारीवर्ग ने मुझे इस ग्रन्थमाला का सम्पादक और सहकारी मंत्री निर्वाचित किया और इस महान् ग्रन्थके प्रकाशनकी अनुमति दे दी। अतएव माणिक्यचन्द्र ग्रन्थमाला की ओर से मैं चवरे ग्रन्थमाला के अधिकारी वर्ग और विशेषतः गोपाल सावजी चवरे का आभार मानता हूँ कि उन्होंने इस व्यय का ख्याल न कर के केवल साहित्योद्धार की भावना से प्रेरित होकर अपनी वह सब सामग्री इस माला के उपयोगार्थ अर्पित कर दी।

### १० आशा

यह साहित्य भारतीय भाषाओं के विकास को समझने के लिये विशेष रूपसे महत्त्वपूर्ण है। दुर्भाग्य से इसकी कदर करनेवालों की संख्या जैन समाज में बहुत कम है। कितने ही समाजहितैषी, शास्त्रप्रेमी दानी बन्धुओं ने मुझे इस साहित्य के लिये इतना अधिक परिश्रम और व्यय करने से रोका है, और मेरे न रुकने-पर मुझे इस बात का दोषी बतलाया है कि मैं समाज का पैसा इस अनुपयोगी प्रकाशन में व्यर्थ खर्च करा रहा हूँ। ऐसी अवस्था में मैं इस समाज के अद्वितीय साहित्यसेवी और मेरे श्रेष्ठ मित्र तथा इस माला के सुयोग्य मंत्री पं० नाथूरामजी प्रेमी का विषयरूप से कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने ने इस साहित्य के महत्त्व को अच्छी तरह समझा है और अपने प्रभावशाली उद्योग से इस महान् ग्रन्थ का प्रकाशन संभव किया है। इस कार्य में उन्हें विशेष आनन्द और संतोष होना स्वाभाविक ही है, क्योंकि जैसा उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा है, पुष्पदन्त और उनकी रचनाओं का परिचय सबसे पहले उन्हींने ही विद्वत्संसारको दिया था।

मुझे आशा ही नहीं दृढ निश्चय है कि उनके प्रयत्न और साहित्यप्रेमी समाज की उदारता से इस ग्रन्थ का शेष भाग भी शीघ्र ही प्रकाशित हो सकेगा और इस प्रकार महाकावि पुष्पदन्त की समस्त रचनाओं का विद्वत्संसार में प्रचार हो जावेगा। यह जानकर किसे प्रसन्नता न होगी कि पुष्पदन्त के पूर्वप्रकाशित दो ग्रन्थ जसहरचरिउ और णायकुमारचरिउ अलाहाबाद और नागपुर विश्वविद्यालयों के एम. ए. के कोर्स में नियुक्त हो गये हैं।

माणिक्यचन्द्रग्रन्थमालाकी अभीतक प्रकाशित सभी पुस्तकों का आकार छोटा रहा है जो इस ग्रन्थ के लिये अनुपयुक्त पाया गया। इसी कारण यह ग्रन्थ इस बड़े आकार में प्रकाशित किया जा रहा है। माला के ग्राहक, आशा है इसे पसंद करेंगे।

अमरावती }  
२८-८-३७ }

हीरालाल जैन  
सम्पादक और सहमंत्री

तिसड्डिमहापुरिसगुणालंकारु

णाम

महापुराणु







I

सिद्धिचङ्गमणरंजणु परमणिरंजणु भुवणकमलसरणेसरु ॥  
पणविवि विग्घविणासणु गिरुवमसासणु रिसहणाडु परमेसरु ॥ ५० ॥

I

सुपरिक्खिय रक्खियभूयतणुं	पंचसयधणुण्णयदिव्वतणुं ।	
पयडियसासयपयणयरवहं	परसमयभाणियदुण्णयरवहं ।	
सुहसीलगुणोहणिवासहरं	देविंदियुं दिव्वासहरं ।	5
जुहणिल्लियमंदरमेहलयं	पविमुक्कहारमणिमेहलयं ।	
सोहंतासोयरमियविवरं	उव्वासियबडुणारयविवरं ।	
सुरणाहकिरीडपहिट्टुपयं	अहपउरपसायपहिट्टुपयं ।	
णवतरणिसमप्यहभावलयं	गिरुदुस्सहदुम्मैयभावलयं ।	
हरिमुक्ककुसुमवित्तलियणहं	अरुहंतमणंतजसं अणहं ।	10

1. १. B देविंदियुं. २. M °दुम्मह°. ३. MBP अरहंत°.

1. 1. सिद्धिरनन्तचत्तुष्टयप्राप्तिरिव बधुस्तस्या मनोरञ्जनश्चित्तरञ्जकः; गिरंजणु पापरहितः; णेसरु सूर्यः. 2. गिरुवमसासणु उपमातीतमतः; परमेसरु परा उत्कृष्टा मा समवसरणानन्तचत्तुष्टयादिलक्षणा बाह्याभ्यन्तरलक्ष्मीस्तस्या ईश्वरः. 3. a भूयतणुं भूतविस्तारः, पृथिव्यादिप्रपञ्चः. 4. a नयरवहं नगर-मार्गम्; b दुण्णयरवहं दुर्णयाः सर्वथैकान्तप्रकाशकप्रमाणानि, तेषां रवाः प्रतिपादकशास्त्राणि ताञ् हन्ति निरा-करोति यः तम्. 5. b दिव्वासहरं नममुद्राकरम्, दिव्वासोधरम्. 6. a जुह द्युतिः; °मंदरमेहलयं °मन्दरमेखलकम्; b °मणिमेहलयं °रत्नमेखलकम्. 7. a असोय अशोकः; °विवरं पक्षिश्रेष्ठम्; b °विवरं विलम्. 8. a पहिट्टुपयं प्रष्टुष्टपादम्; b °पहिट्टुपयं आनन्दितलोकम्, ( प्रहृष्टप्रजम् ). 9. a °भावलयं °भामण्डलम्; b गिरुदुस्सहेत्यादि-गिरुदुस्सहा अतिशयेन सोढुमशक्याः प्रमाणविरुद्धत्वात्ते च ते दुर्मतभावाथ भिम्यागमप्रतिपादितार्थास्तेषां लभो निराकरणं यस्मात्. 10. a हरि इन्द्रः; b अणहं निष्पापम्.

सीहासंजलससयसहियं	उद्धरियपरं सकिवं सहियं ।	
दुंदुहिसरपूरियभुवणहरं	बंधूअफुल्लसंजिहणहरं ।	
पुरुपैवजिणं जियकामरणं	दुरुजिहयजम्मजरामरणं ।	
विरयं वरयं णियमोहरयं	उज्जयभीमणियमोहरयं ।	
पणमांभि रविं केवलकिरणं	मत्तासमयं भणियं किर णं ।	15

घसा—भवठ वि पणविचि सम्मइं विणिहयदुम्मइं कोवपावविद्धंसणु ॥

जासु तिथि मइं लद्धउ णाणसमिद्धउ णिम्मल्लुं सम्मइंसणु ॥ १ ॥

## 2

णिम्महियमाणमायामयाहं	जिणसिद्धसूरिसुयवेसयाहं ।	
साहूण वि चरणंभोरुहाइं	णहंदरिसियसुरणयमुहाइं ।	
कयहरिसु सरसु सुमदुरु चवंति	कोमलपयाइं लीलाइ दिंति ।	
गंभीर पसण्ण सुवण्णदेह	कंतिल्ल कुडिल णं चंदरेह ।	
सालंकारी छंद्रेण उंति	बहुसंत्यअत्थगारव वहंति ।	5
बोहंइपुव्विल्ल दुवालसंणि	जिणवयणविणिमाय सत्तभंगि ।	
घउमुहमुहवासिणि सइंजोणि	णीसेसहेउ सा सोहछोणि ।	
दुक्खक्खयकारिणि सोक्खखाणि	पणवेवि सरासइ दिव्ववाणि ।	
घम्माणुसासणणंभ्रमरिउ	पुणु कहमि णिरहु णाहेयचरिउ ।	

५. MBP सिंहासणं ५, MB पुरएव°. ६. T notes पणयामिरविं as p and explains it as पणया-  
भीति पाठे षणयो मोहः स एव यामी नाम रात्रिस्तस्या रविं स्फेटकम्. ७. M णिम्मल°. ८.

2. १. M °जिणदेवयाहं, but सुयदेवयाहं in the margin. २. MBG णहे दरिसिय°. ३. M  
बहुअत्थगारव संवहंति, but adds सत्थ in margin; P बहुअत्थगंगारव वहंति. ४. M बोहइं; P  
बोहइं; T बोहइं°. ५. T मुणि° ६. M °विणग्गय°. ७. P सत्थजोणि.

11. b उद्धरियपरं उन्मूलितभिध्यावादिनं उद्धृतमर्थं वा. 12. b आरकनखमित्यर्थः. 13. a वि-  
कामरणं जितकामसंप्रामम्. 14. a विरयं विरतं संयतम्; वरयं वरदम्; णियमोहरयं संयमौघरतम्;  
b उद्धयं उद्धतनिजमोहरजसम्. 15. a मत्तासमयं परिग्रहसमकम्; मात्रा परिग्रहः तामस्यन्ति निराकुर्वन्ति  
ये ते मात्रासाः मुनयः तेषां मतम् अभीष्टम्; अथवा मत्ताना गर्वितानामा समन्तात् हामकं उपहामकम्; अन्यत्र  
मात्रासमकं छन्दः 16. सम्मइं वर्धमानम्.

2. 1. b °सुयदेवयाहं °श्रुतपाठकानामुपाध्यायानाम्. 2. a पखपरमेष्ठिनामित्यर्थः; b °णयं °नत°. ३.  
b कुडिल कुडिला णी, पक्षे वक्कोक्तिः. 7. b णीसेसहेउ° निःश्रेयसयुक्तिः; सा लक्ष्मीः; सोहछोणि,  
शोभाशोभिः; पक्षे, सा सोहछोणि सस्वीयशोभिः. 9. a घम्माणुसासणं धर्मप्रतिपादनम्; b णिरहु निष्पापम्.

ब्रह्मा—जेण सुपण सुहोहं तिहुयण खोहं हौति चारुकलाणं ॥ 10  
उपपज्जंति पसत्थं मुणियपयत्थं मणुयहो पंच वि णाणं ॥ २ ॥

3

तं कहमि पुराणु पसिद्धणामु  
उब्बद्धजूड भूभंगभीसु  
भुवणेकरामु रत्थाहिराउ  
तं दीणंदिण्णधणकणयपयह  
अवहेरियखलयणु गुणमहंतु  
दुग्गमदीहरपंथेण रीणु  
तरुं सुमरेणुरंजियसमीरि  
णंदणवणि किर वीसमइ जाम  
पणवेप्पिणु तेहिं पवुत्तु एम्ब  
परिभमिरभमररवगुमगुमंति  
करिसरबहिरियादिच्चकवालि  
तं सुणिवि भणइ अहिमाणमेरु  
णउ दुर्ज्जणभउँहावंकियाइं

सिद्धत्थवरिसि भुवणाहिरामु ।  
तोडेप्पिणु चोडहो तणउ सीसु ।  
जहिं अच्छइ तुडिगु महाणुभाउ ।  
महि परिभमंतु मेपाडिणयह ।  
दियहेहिं पराइउ पुप्फयंतु । 5  
णवयंदु जेम देहेण खीणु ।  
मायंदगोँछगोँदलियकीरि ।  
तहिं विण्ण पुरिस संपत्त ताम ।  
भो खंड गलियपावावलेव ।  
किं किर णिवसहि णिज्जणवणंति । 10  
पइसरहि ण किं पुरवरि विसालि ।  
वरि खज्जइ गिरिकंदरि कसेरु ।  
दीसंतु कलुसभावंकियाइं ।

घत्ता—वर णरवरु धवलच्छिहे होउ म कुच्छिहे मरउ सोणिमुहणिग्गमे ॥  
खलकुच्छियपहुवयणइं भिउडियणयणइं म णिहालउ सूरुग्गमे ॥ ३ ॥ 15

८. P तिहुयणु खोहं.

3. १. MP ओबद्ध° and gloss in M उत्कृष्टकेशपाशम्; B नबद्धजूड. २. M बंदीण°. ३. MP मेवाडि°. B मेवाड'. ४. K मायंदगोँदिगोँदलिय°. ५. MBP खजउ. ६. M हउँहावंकियाइं; BP भउहावंकियाइ.

10. सु हो हं सौख्यसमूहाः. 11 पयत्थ पदार्थ.

3. 1. b सिद्धत्थवरिसि सिद्धार्थनामसंवत्सरे. 2. a उब्बद्धजूड उद्बद्धजूटम्; b चोडहो चोड-  
देशात्पस्य. 3. b तुडिगु कृष्णराजः. 4. b यत्र मेलपाटीयनगरे. 9. a तेहिं ताभ्याम्. 11. a दिच्चक-  
वालि दिशामण्डले; करिसर° गजस्वर°. 12. a अहिमाणमेरु पुष्पदन्तस्य विरुदमेतत्. 14. धवल-  
च्छिहे उपज्वललोचनायाः; सोणिमुहं कटिच्छिद्र°. 15 कुच्छियपहुवयणइं कुत्सितराजवदनानि;  
भिउडियं भुकुटित°.

## 4

बमराणिलउडावियगुणाइ  
अविवेयइ दप्पुस्तालियाइ  
सत्तंगरज्जभरभारियाइ  
विससहजम्मइ जडरत्तियाइ  
संपइ जणु णीरसु णिव्विसेसु  
ताहिं अम्मह लइ काणणु जि सरणु  
अम्मइयइंदरापहिं तेहिं  
गुरुविणयपणयपणवियसिरेहिं  
घत्ता—जणमैणतिमिरोसारण मयतरुवारण णियकुलगयणदिवायर ॥

अहिसेयघोयसुयणत्तणाइ ।  
मोहंधर मारणसीलियाइ ।  
पिउपुत्तरमरणसयारियाइ ।  
किं लच्छिइ विउसविरत्तियाइ ।  
गुणवंतउ जहिं सुरगुरु वि वेसुं । 5  
अहिमाणे सहुं वरि होउ मरणु ।  
आर्येणिवि तं पहसियमुहेहिं ।  
पडिवयणु दिण्णु णायरणरेहिं ।

भो भो केसवतणुरुह णवसररुहमुह कव्वरयणरयणायर ॥ ४ ॥ 10

## 5

बंभंडमंडवारुदकित्ति  
सुहतुंगदेवकमकमलमसत्तु  
पाययकइकव्वरसावउदु  
कमलच्छु अमच्छु सच्चसंधु  
सविलासविलासिणिहिययथेणुं  
काणीणदीणपरिपूरियासु

अणवरयरइयजिणणाहभत्ति ।  
णीसेसकलाविण्णाणकुसलु ।  
संपीयसरासइसुरहिदुसु ।  
रणभरधुरधरणुग्घुदुसंधु ।  
सुपसिद्धमहाकइकामथेणु । 5  
जसपसरपसाहियदसदिसासु ।

4. १. MBP देसु. २. MBP आयण्णिय, G आयण्णवि. ३. MB तिउरोसारण.

5. १. MBPK °बलुधु, but G °रसावउदु and marginal gloss रसावबुद्धः, T also रसाव-उधु and explains it as परिज्ञातरसः. २. MBP °धरणुग्घुदुसंधु ३. MP °थेणु.

4. 2. a दप्पुस्ता लियाइ दपोंद्वृत्तया, दपोंत्ताल्या. 3. a °भारिया °सुता; b पिउपुत्त° पितृ-पुत्रमर्तृविषदायिकया, अथवा, पितृपुत्राभ्यां द्वाभ्यामपि कौडनासक्तया. 4. a विससहजम्मइ कालकूट-सहजन्मना; b विउसविरत्तियाए विद्वज्जनविरक्तया 5. a णिव्विसेसु अज्ञानभेदः, गुणागुणविचाररहितः; b वेसु द्वेषः. 7. a अम्मइय-इंदरायनामानौ द्वौ पुरुषौ. 8. b णायरणरेहिं चतुरनराभ्याम्. 10. ति मि रो सार ण अज्ञाननिराकारकः.

5. 2. a सुहतुंगदेव कृष्णराजः, तत्प्रतिष्ठापितो जिनश्च. 4. a सच्चमधु सत्यप्रतिज्ञः. 5. a °थेणु स्तेनः. 6. a काणीण° अकिवित्कर°; °पसाहिय° °मण्डित°; °दिरासु °दिङ्मुखः.

पररमणिपरंसुह सुखसीलु  
गुरुयणपयपणवियउत्तमंगु  
अण्णइयतणयतणुरुहु पसत्थु  
महमत्तवंसधयवहु गहीरु  
दुब्बसणसीहसंघायसरहु  
घत्ता—भाँउ जाहु तहो मंदिरु णयणाणंदिरु

सो गुणगणतत्तिर्लुउ तिहुयाणि भल्लउ णिच्छउ पइं संमाणइ ॥ ५ ॥

6

जो धिहिणा णिम्मिउ कच्चपिंडु  
आवंतु दिहु भरहेण केम  
पुणु तासु तेण विरइउ पहाणु  
संभांसणु पियवयणेहिं रम्म  
तुहुं आयउ णं गुणमणिणिहाणु  
पुणु एवँ भणेप्पिणु मणहराई  
वरणहाणविलेवणभूसणाई  
अच्चंतरसालइं भोयणाई  
देवीसुएण कइ भणिउ ताम  
णियसिरिविसेसणिज्जियसुरिंदु  
पइं मणिणउ वणिणउ वीरराउ

उण्णयमइ सुयणुद्धरणलीलु ।  
सिरिदेवियंबगम्भुम्भवंगु ।  
इत्थि व दाणोल्लियदीहइत्थु ।  
लक्खणलक्खंक्रियवरसरीरु । 10  
ण वियाणहि किं णामेण भरहु ।

तं णिसुणिवि सो संवल्लिउ खंडु ।  
वाइसरिसरिक्कल्लोलु जेम ।  
घरु आयहो अम्भागयविहाणु ।  
णिम्मुक्कडंभु णं परमधम्मु ।  
तुहुं आयउ णं पंकयहो भाणु । 5  
पहँरीणद्धीणतणुसुहयराई ।  
दिण्णेइं देवंगइं णिवसणाई ।  
गलियाईं जाम कइवयदिणाई ।  
भो पुप्फयंत ससिल्लिहियणाम ।  
गिरिधीरु वीरुं भइरवणारिंदु । 10  
उप्पण्णउ जो मिच्छत्तैराउ ।

४. P सिरिअम्बदेवि° B सिरिदेविअम्ब°. ५. M आउजाहं. ६. P °मत्तिळउ though marginal gloss °चिन्तकः.

6. १. B omits this line. २. B omits a of this line. ३. M पुणु एण; P पुणु एम. ४. MBP पहखीणरीणतणु°. ५. B दिण्णाईं देवगइणिवसणाईं. ६. B वीरभइरव. ७. MBPK °भाउ, but GT मिच्छत्तैराउ and gloss °रागः.

7. b उद्धरणलीलु उद्धरणस्वभावः. 9. a अक्षैयाकस्य तनयः ऐरणः, ऐरणस्य पुत्रो भरतः. 10. a °धयवहु महामन्त्रिवंशध्वजपठः. 11. a सरहु अष्टापदः. 13. तत्तिळउ चिन्तकः; णिच्छउ निश्चयेन.

6. 3. a पहाणु मुख्यः. 4. b परमधम्मु जिनधर्मः. 9. a देवीसुएण भरतेन. 10. b भइरव-ण रिंदु वीरभैरवः अन्यः कश्चिदुष्टमहाराजो वर्तते, कथामकरन्दनायको वा कश्चिद्राजास्ति; P वीरभैरवः कश्चिन्मिथ्यादृष्टी राजा. 11. a वीरराउ शूद्रकः.

पच्छिस्तु तासु जइ करहि अज्जु ता घडइ तुज्जु परलौबकसु ।  
 तुहुं देउ को वि भव्ययणबंधु पुरुर्वचरियभारस्स खंधु ।  
 अब्भत्थिओ सि दे देहि तेम णिव्विग्घे लहु णिव्वहइ जेम ।  
 घत्ता—अइललियए गंभीरए सालंकारए वायए ता किं किज्जइ ॥ 15  
 जइ कुसुमसरवियारउ अरुहु भडारउ सव्भावे ण शुणिज्जइ ॥ ६ ॥

## 7

सियदंतपंतिधवलीकयासु ता जंपइ वरवायाविलासु ।  
 भो देवीणंदण जयासिरीह किं किज्जइ कच्चु सुपुरिससीह ।  
 गोवज्जिएहि णं घणादिणेहि सुरवरचावेहि व णिग्गुणेहि ।  
 मइलियचित्तिहि णं जरंघरेहि छिहण्णेसिहि णं विसहरेहि ।  
 जडवाइएहि णं गयरसेहि दोसाथेरेहि णं रक्खसेहि । 5  
 आचक्खियपरपुट्टीपलेहि वरकइ णिदिज्जइ हयखलेहि ।  
 जो बालवुडुसंतोसहेउ रामाहिरामु लक्खणसमेउ ।  
 जो सुम्मइ कइवइ विहियसेउ तासु वि दुज्जणु किं परि मै होउ ।

घत्ता—णउ महु बुद्धिपरिग्गहु णउ सुयसंगहु णउ कासु वि केरउ बलु ॥

भणु किह करमि कइत्तणु ण लहमि कित्तणु जगु जि पिसुणसयसंकुलु ॥७॥ 10

## 8

तं णिसुणिवि भरहें वुत्तु ताव भो कइकुलतिलिय विमुक्कगाव ।  
 सिमिसिमिसिमंतकिमिभरियरंधु मिलेवि कलेवरु कुणिमगंधु ।

c. M पुरएव°. ९. M जय.

7. १. T जरहरेहि. २. PG ण.

18. पुरएव° आदिनाथ°.

7. 1. a धवलीकयासु धवलीकृतास्यः. 2. a जयसिरीह जयश्रीलक्ष्मीवाञ्छकः. 3. a गोवज्जिएहि घाणीरहितैः, पक्षे किरणरहितैः. 6. a आचक्खिय भक्ति. 7. b लक्खणसमेउ व्याकरणसमेतः, पक्षे, लक्ष्मणसमेतः. 8. a सुम्मइ भ्रूयते; कइवइ विहियसेउ कपिपतिर्हनुमाए तेन कृतः सेट्टः, पक्षे, प्रवरसेनो राजा—स प्रवरसेनो जैनः—तेन कृतं सेट्टबन्धनाम काव्यं रामायणम्.

8. 1. b विमुक्कगाव विमुक्तगर्व. 2. b कुणिम कुवित.

बबगयविबेड मसिकसणकाउ  
 षिकारुणु दारुणु बद्धरोसु  
 ह्यतिमिराणियरु वरकरणिहाणु  
 जइ ता किं सो मंडियसराहं  
 को गणइ पिसुणु भविसहियतेउ  
 जिणवरणकमलमसिल्लएण

सुंदरपयसि किं रमइ काउ ।  
 दुज्जणु ससहावें केइ दोसु ।  
 ण सुंहाइ उल्लयहो उइउं भाणु । 5  
 णउ कइइ वियसियसिरिहराहं ।  
 भुक्कउ छमैयंदहु सारमेउ ।  
 ता जांपिउ कव्वविसिल्लएण ।

वस्ता—णउ हउं होमि वियक्खणु ण मुणामि लक्खणु छंडु देसि ण विवाणमि ॥  
 जा विरइय जयबंदहिं आसि मुणिंदहिं सा कह केम समणमि ॥ 6 ॥ 10

9

अकलंककविलकणयरमयाहं  
 दसिल्लविसाहिल्लुद्धारियाहं  
 णउ पीयइं पायंजलजलाहं  
 भावाहिउ भौरवि भासु वासु  
 चउमुहु सयंभु सिरिहरिसु दोणु

दियसुगयपुरंदरणयसयाहं ।  
 णउ णायइं भरहवियारियाहं ।  
 अइहासपुराणइं णिममलाहं ।  
 कोहलु कोमलगिरु कांलियासु ।  
 णालोउउं कइ ईसाणु बाणु । 6

8. 1. MBP सुहाय. 2. P उयउ. 3. P छणइंदहु. 4. P पयासमि but marginal gloss कर्ष समानयामि वर्णयामि.  
 9. 1. B दसिल्ल°. 2. MBP पायंजलि°. 3. M भारहिं; B भारहमासु. 4. MBP कालिदासु.  
 5. MP णालोउउ.

8. 3 a बबगय विबेड नष्टविबेकः; °क सण काउ °कृष्णशरीरः; b काउ काका. 4 b ससहावें स्वस्व-  
 मात्वेन; केइ यद्धाति. 6 a मंडियसराहं मण्डितसरसाम्; b वियसिय सिरिहराहं विकसितकमलानाम्. 7 b  
 छणमंदहु पूर्णिमाचन्द्रस्य; सारमेउ कुक्करः. 8 a °भसिल्लएण °भक्तियुक्तेन; b कव्व विसिल्लएण काव्य-  
 राक्षसेन पुण्यदन्तेन. 9 लक्खणु व्याकरणम्; देसि देशी भाषा. 10 विरइय विरचिता; जयबंदहिं  
 जगद्वन्द्वैः; समाणमि वर्णयामि.

9. 1 a अकलंक कव्यायकुमुदचन्द्रोदयकर्ता; कविल सांख्यदर्शने मूलकारः; कणवर वैशेषिकदर्शने  
 मूलकारः; b दिव वेदपाठकः; सुगय बौद्धः; पुरंदर चार्वाकमते ग्रन्थकारः; णयसयाइं सुफबोद्धमिप्राया वा.  
 2. a दसिल्ल विसाहिल्लुद्धारियाहं दसिल्लविसाहिल्लकृतानि संगीतशास्त्राणि; b भरहवियारियाहं भरतमुनिवृत्तं  
 गान्धशास्त्रम्. 3 a पायंजल पाणिनिव्याकरणभाष्यम्; b अइहास एकपुरुषाभिता कथा; पुराण त्रिपिटपुराण-  
 भिताः कथाः पुराणानि. 4 a भावाहिउ भाषाधिकः अर्थगौरववाचः; वासु व्यासो महाभारतकारः; b कोहलु  
 कृष्णाण्डः कश्चित्कविः. 5. a चउमुहु कश्चित्कविः; सयंभु पाण्डोबद्धरामायणकर्ता आपत्तीसंघीयः.



णउ घाउ ण लिंगु ण गणी समासु  
 णउ संधि ण कारउ पयसमत्ति  
 णउ बुज्जिउ आर्यमु सहधामु  
 पइ रुइइ जडणिण्णासयारु  
 पिंगलपत्थारु समुहि पडिउ  
 जसरंधु सिंधु कल्लोलसिनु  
 हउं बप्प णिरक्खर कुक्खिमुक्खु  
 अइदुग्गामु होइ महापुराणु  
 अमरासुरगुरुयणमणहरेहिं  
 तं हउं मि कहमि भत्तीभरेण  
 पट्टु विणउ पयासिउ सज्जणाहं

णउ कम्मै करणु किरियाणिवेसु ।  
 णउ जाणिय मइं पक्क वि विहत्ति ।  
 सिद्धंतु धर्बलु जयधवलु णामु ।  
 परियच्छिउ णालंकीरसारु ।  
 ण कर्यां वि महारइ चित्ति चडिउ । 10  
 ण कलाकोसलि हियवउ णिहिसु ।  
 णरवेसें हिंइमि चम्मरुक्खु ।  
 कुडएण मवइ को जलणिहाणु ।  
 जं आसि किर्यउं मुणिगणहरेहिं ।  
 किं णहि ण भमिज्जइ महुयरेण । 15  
 मुहि मसिक्कुंउं कउं दुज्जणाहं ।

घत्ता—घरे घरे भर्मउ असारउ दुण्णयगारउ विवरोक्खए किं अक्खइ ॥

लैइ मइं सो मोर्कल्लिउ खलु दुब्बोल्लिउ लेउ दोसु जइ पेक्खइ ॥ ९ ॥

## 10

चारणावासकेलाससेलासिओ  
 सामवण्णो सउण्णो पसण्णो सुहो  
 गोर्म्मुहो संमुहो होउ जक्खो महं  
 विग्घाविद्दावणी चारुक्खेसरं  
 वेरिणिहारिणी सुंभणी थंभणी

किंणरीवेणुवीणासुणीतोसिओ ।  
 आइदेवाण देवाहिभत्तो बुहो ।  
 चित्तयंतस्स पयं अमेयं कहं ।  
 सत्थसारंभक्खोल्लमालासरी ।  
 आसि जम्मंतरे हौंतिया बंभणी । 5

६. BP गुण. ७. M कम्म. ८. MBP किरियाणिवेसु. ९. M आयम°. १०. MBP धवलजयधवलणामु. ११. M णालंकारु सारु. १२. B कयाइ. १३. K कहिउ. १४. MB कुच्चउ. १५. M किउ. १६. G भमइ. १७. MB लहु. १८. MB. मोकल्लिउ.

10. १. MBP गोमुहो. २. MB °णिद्दारणी; P °णिद्दारणी.

7 a पयसमत्ति पदसमाप्तिः पदखण्डना. ७ a पट्टु पट्टुश्चतुरः; जडणिण्णासयारु जडत्वनाशकः. 12 अकुक्खि-  
 मुक्खु गर्म्ममूर्च्छः. 13 b कुडएण कुडवेन घटेन. 17 दुण्णयगारउ अन्मायकारकः; विवरोक्खए विपरोक्षे  
 18 दुब्बोल्लिउ दुर्बचनः.

10. 1 a चारणावासं मुनीश्वरवासं; °सैलासिओ °शैलाश्रितः; b सुणी ध्वनिः. 2 a सउण्णो  
 सपुण्यः; सुहो शुभः; b अमेयं कहं महती कथाम्; एतां महतीं कथां चिन्तयतो मम गोभुक्खयक्खः संमुहो भवइ.  
 4 b सत्थसारंभं शास्त्रमेव सारान्मः सुट्टु जलम्. 5 a सुंभणी हिंसिका.

साद्रुदाणेण संजाहया जक्खिणी  
उज्जयंतत्थलीकाणणावासिणी  
सुंदरे मंदरे कंदरे कैलिली  
पिक्कमायंदगोच्छेणे ङिभं णियं  
खुइवाइविवेयावहा वाइणी  
पोमवत्ताहवत्ता पवित्ता सई  
कव्ववित्थारदुत्तारमग्गे सही  
होउ बुद्धी महासत्थसामग्गिणी

णाणसम्मत्तवंती गुणावेक्खिणी ।  
सव्वभासांसमूहं समुब्भासिणी ।  
तुंगणग्गोहपारोहंहिंदोलिली ।  
संथवंती हसंती चवंती पियं ।  
अंबिया गोरि गंधारि सिद्धाइणी । 10  
णायच्चूडामणी देवि पोमावई ।  
ठाँउ मज्झं मुहे देवया भारही ।  
परिसो छंदओ भण्णप सग्गिणी ।

घत्ता-मई णिमियहो उयारहो सहगहीरहो जो णरु भसइ णिबंधहो ॥

● जणदुव्वयणहिं दडुहो तहो दुबियडुहो दुज्जसु होउ मयंधहो ॥ १० ॥ 15

II

अहवा हउं णिग्घिणु पाँवयम्मु  
मिच्छाँहिरामरंजियविवेउ  
उमौरसभावणिरंतराई  
लइ हत्थेँ शंपमि णहु सभाणु  
लई तुच्छबुद्धि णिण्णट्टणाणु  
लइ णिंदउ दुज्जणु मच्छरेण  
करिमयरमीणजलयरवमालि

ण वियाणमि अज्ज वि किं पि धम्मु ।  
ण वियाणमि जिणवरवयणभेउ ।  
अलियाई जि कहमि कहंतराई ।  
लइ कलसि समप्पमि जलणिहाणु ।  
लइ अक्खमि पउ महापुराणु । 5  
लइ कहमि कव्वु किं वित्थरेण ।  
चललवणजलहिधलयंतरालि ।

३. P कीलिणी. ४. P °हिंदोलिणी. ५. MBP °गोच्छेण. ६. B omits this foot. ७. BP उवमारहो and gloss in P उपकारस्य उदारस्य वा. ८. K होइ.

11. १. M पावकम्मु. २. MB मिच्छाहिमाण°; P मिच्छाहिमाण but gloss सिध्याभिराम°.

३. M उग्गव° and gloss उत्कट. ४ MBP अइतुच्छ°. ५. MBP करमि.

7 a उज्जयंत ऊर्जयद्विरि, गिरिनगरपर्वतः 8 b णग्गोह वटवृक्षः. 9 a खुइवाइ° खुद्रवाडिविवेकोप-  
घातिका. 11 a पोमवत्ताहवत्ता पद्यपत्राभमुखी; b णायच्चूडामणी त्रिफणसर्पयुक्तमस्तका. 12 a सही  
सखी सहाया. 13 a महासत्थसामग्गिणी महाशास्त्रसामग्रीसाहिता. 14 भसइ निन्दति; णिबंधहो  
महापुराणस्य. 15 दुबियडुहो दुर्विदग्धस्य; मयंधहो मदान्धस्य.

11. 2 a मिच्छाहिराम° मिथ्या असत्यं यच्चित्रकथादिकं तत्राभिरामः अत्यासक्तिस्तया रञ्जितो  
विवेको यस्य सः; b °भेउ °भेदो विशेषः. 3 a उग्गय उत्पन्नः. 4 a णहु सभाणु भानुयुक्तं मनः; 5  
जलणिहाणु समुद्रः. 7 a °वमालि °कीलाहले.

दोषं वसु रपयदिवपईवि	जंबूतहलंछणि जंबुदीवि ।
कारंमोणिहिसामीवसंगि	सुरसिहरिहि संटिउ दाहिणंगि ।
सरिगिरिवरितरुपुरवैरविचिनु	एत्यथि पसिउउ मरहलोनु । 10
तहु मज्झि परिट्टिउ मगंहवेसु	अं वण्णहुं सकइ जेय सेसु ।
मुहि सुळइ जासु जीहासहासु	जसु णाणि णथि दोसावयासु ।

घसा—सीमारामासोमहि पविउलगामहि गज्जंतहि धवलोहहि ॥

सोहइ हलहरसत्थहि दाणसमत्थहि णिचं चिय णिल्लोहहि ॥ ११ ॥

## 12

अंकुरियइं णवपल्लवघणाइं	कुसुमिबफलियइं गंदणवणाइं ।
जहि कोइलु हिंडइ कसणपिंडु	वणलच्छिहे णं कज्जलकरंडु ।
जहि उट्ठिय भमरावलि विहाइ	पवर्दिणीलमेहलिय णाइ ।
भोयैरिय सरोवरि हंसपंति	चल धवल णाइं सप्युरिसकिसि ।
जहि सलिलइं माहयपेल्लियाइं	रविसोसभयण व हल्लियाइं । 5
जहि कर्मलइं लच्छिइ सहं सणेहु	सहुं ससहरेण वडुउ विरोहु ।
किर दो वि ताइं महकुम्भवाइं	जाणंति ण तं जडसंभवाइं ।
जहि उच्छुवणइं रसगभिर्माणं	णावइ कच्चइं सुकइहिं तणाइं ।
जुज्झंतमहिसवसहुच्छवाइं	मंथामंथियमंथणिरवाइं ।
चंचलुउपुच्छवच्छाउलाइं	कीलियगोवालाइं गोउलाइं । 10
जहि चउरंगुल कोमलतणाइं	घणकणकणिसालइं करिसणाइं ।

६. M पुरवच. ७. B मगहएसु. ८. M घुलय. ९. MB °रामहिं, P °रामारम्महिं.

12 १ M अवयरइ; BPT उवयरइ. २ MBP कमलहुं सहं. ३ P °गणिमराइं. ४ M धवलुउपुच्छ°.

9 b सुरसिहरिमेरुः 11 b वण्णहुं वर्णमितुम्; सेसु धरणेन्द्रः ( शेषः ). 12 b दोसावयासु दोषावकाशः. 13 °सामहिं °स्यामलै; धवलोहहिं बलीवर्दसमूहैः. 14. हलहरसत्थहिं कर्षकसमूहैः; णिल्लोहहिं निकर्मैर्वितलोहैश्च.

12. 2 a कोइलु कोकिलः; कसणपिंडु कृष्णवर्णः कृष्णशरीरः. 3 a विहाइ विभाति; b °मेइलिय °शेखला. 4 a भोयैरिय अवतीर्णा; 5 a माहयपेल्लियाइं वायुना प्रेरितानि, b हल्लियाइं कम्पितानि. 7 a वहुं कुम्भवाइं समुद्रमयनोद्भूतौ; b जडसंभवाइं जलजन्मानौ अज्ञानत्वाच्च जानन्ति. 8 a रस° इक्षुरसः सुप्पारादिव. 9 b °मन्वणि° गोपी. 11 b कणिसालइं कणिसयुक्तानि.

घत्ता-तर्हि कुहधवलयिमंदिरु गयणाणंदिरु गयक रायमिहु रिद्धउ ॥  
कुलमहिहरथणहारिप वसुमइणारिप भूसणु णं आइद्धउ ॥ १२ ॥

13

संकेयागधविरहीयणां	सासोवपवडियकंथणां ।
बहुलोयदिष्णणाणाफलां	णावइ कुलां वम्मुज्जलां ।
जर्हि महुगंठूसर्हि सिंचियां	विभरियाहरणर्हि भंचियां ।
सीमंतिणिपयपोमाहयां	विर्यसंतविडवडुगीगयां ।
पियमणिणयसुहवाणासणां	जर्हि संदरिसियवाणासणां । 6
पडिखलियसूरभाधियरणां	उज्जाणं णं भाधियरणां ।
उकलियाळं णवजोव्वणां	णिरु सच्छं णं सज्जमणां ।
जर्हि सीयलां ससमाणियां	परकज्जसमाणं पाणियां ।
जर्हि जणैलुंणु कंटयकरालु	जलि णल्लिं ल्हिक्काविणउ णालु ।
वाहिरि णिहियउ वियसंतु कोसु	भणु को व ण ठंकर गुणर्हि दोसु । 10
जर्हि भमरु तर्हि जि संठिउ सुहाइ	संगहु सिरिणयजंजणहु णां ।

घत्ता—कुसुमरेणु जर्हि मिलियउ पर्वणुल्लियउ कणयवणु महु भावइ ॥  
दिणयरचूडामणियइ णहकामिणियइ कंचुउ परिहिउ णावइ ॥ १३ ॥

13. १ P वियसंति but gloss विकसित. २ M उकलिवालं. ३ PK जणुलुंणु. ४ M B P उदुल्लियउ and gloss in P उच्छलित.

12 कु ह सुधाचूर्णम्. 13 कु ल म हि ह र थ ण हा रि ए कुलपर्वता एष स्तनाः तान् धरति; आ इ द्द उं गृहीतम्.  
13. 1 a संकेएत्यादि-संकेतेनागता विरहिजना येषूषानेषु, कुलपक्षे संकेतेन नामता विरहिजना येषु; b सासोएत्यादि-वनपक्षे, अशोकवृक्षैः सह प्रवर्षिता काञ्चनवृक्षाः चम्पकवृक्षा येषु; अन्यत्र, जलौकैः इवैः सह प्रवर्षितानि काञ्चनानि सुवर्णानि यत्र. 3 a म हु गं ठू स र्हि मद्यनुलकैः; b वि भ रि य विस्मृतानि ज्ञाश्वर्षाणि वा. 4 a 'प य पो मा ह या इं' पद्मपद्याहृतानि; b वि ड व विटपाः शाखाः, अन्यत्र वि ड व विटा इव. 5 a विवेत्यादि-वनपक्षे, पिकानामभिमताः सुभगाः आणाशब्दास्तेषामस्रनं प्रचरणं येषु; मुद्गपक्षे, शिवाणां मानिताः अग्नीकृताः सुभगानामाज्ञास्वना आदेशशब्दाः 'संप्रभं जित्वा मम हस्तिमुक्ताफलादिकमानेतव्यम्' इत्यादयः येषु. 6 a पडिखलियेत्यादि-वनपक्षे, प्रतिस्खलितमादित्यप्रभाविवरणं यत्र; मुद्गपक्षे, प्रतिस्खलितं क्षुराणां सुभटानां भा वि य र णं प्रतापप्रचरणं यत्र; b भा वि य र णा इं भावितं परिकलितं रणं यैः पुरुषैः. 7 a उ क ल ि या ल इं कलोलमाकाविराजितानि, पक्षे कलिरहितानि. 8 b परकज्जेत्यादि-परकार्ये सति जनाः क्षीतलाः, स्वकार्ये उरावकाः (?). 9 b ल्हिक्का वि ण उ गोषितम्. 10 प रि हि उ परिहितः.

## 14

जहि कीलागिरिसिहरंतरेसु  
सिक्खंति पक्ख दरदावियाइं  
जहि पिकसालिछेत्ते घणेण  
पंगुत्ते वीहे पीयलेण  
जहि संचरति बंहुगोहणाइं  
गोवालबाल जहि रत्तु पियंति  
मायंदकुसुममंजरि सुएण  
जहि समयल सोहइ वाहियालि  
हरि भामिज्जंति कंसासणेहिं  
णिज्जंति णाय कण्णारएहिं  
रुज्जंति गयासा ईरिएहिं  
आसयर दिंति सिक्खावयाइं  
कप्पूरविमीसु पवासिएहिं  
घसा—ससिपहपायारहिं गोउरदारहिं जिणवरभवणसहासहिं ॥

मडदेउलहिं विहारहिं घरवित्थारहिं वेसावासविलासहिं ॥ १४ ॥ 15

## 15

जं सोहइ जहिं अविहंडियाइं  
सिरिं<sup>१</sup> णिहियकणयकलसइं घराइं

गंयणं व केउसयमंडियाइं ।  
णावइ अहिसिसजिणेसराइं ।

14. १ MP गाईहणाइं. २ MBP तिणाइं. ३ MBP महु; gloss in M मिघरसम् but in P इक्षुरसम्. ४ MBPK कुसासणेहिं but gloss in K तर्जनकेन. ५ MBP जलपरिहापायारहिं.

15. १ MBP गयणयलि. २ M सिरिणहिय°.

14. 1 a कीला गि रि° क्रीडापर्वत°; b वे ल्लि हरं त रे षु वल्लीगृहान्तरेषु. 2 a दर दा वि या इ ईषइशितानि; b °म णि य° रतिकृतं विकसितकामोद्रेकवचनम्. 3 b छज्जइ छाद्यते; उप्प रि य णे ण उपरितनेन वल्लेण. 4 a पंगुत्ते पंगुरणेन, b रिंछ° शुक्र°. 6 a र सु इक्षुरसः; b थलसररुह° स्थलकमल°. 7 a सु ए ण शुकेन; b क य म ण्णु ए ण कृतमन्युना, भ्रमरैः सह संगः कस्मात्कृत इति कोपेन. 8 a वा हि या ली वाहाली राजमार्गः; b वा ह ण° अश्वादि°. 9 a हरि अश्वाः; क सा स णे हिं तर्जनकेन. 10 a णाय नागा इस्तिनः; b णाय नागाः सर्पाः. 11 a गयासा गजा अश्वाश्च. आ ई रि ए हिं आरोहकैः; b गयासा ई रि ए हिं गताशा आचार्यास्तेषां वचनैः. 13 a °वि मी सु °विमिभ्रमः; प वा सि ए हिं पथिकैः; b प वा सि ए हिं प्रपात्रितैः 14 स सि प ह पा या र हिं चन्द्रप्रभावत् प्राकारैः.

15. 1 a अ वि ह डि या इं निरन्तराणि, अविच्छिन्नानि; b केउ केतुर्ग्रहो ध्वजा च, असंख्यातद्वीपापेक्षया केतु-  
शतानि कथ्यन्ते. 2 b अ हि सि स जि णे स रा इं अभिविष्णो जिनेश्वरो यैस्ते, तेषां मत्सकेऽभिषेकार्थं कलशाः सन्ति.

अधियाणियकरदप्यणविसेसि  
दीसइ सर्बिबु महुमसियाहिं  
जहिं अलिउलु अलयावलि मिलंतु  
अंगणवावीसयदलहु जाइ  
संजणियवहलमयरंदरंगु  
तं चेष खुडइ मत्तउ विहंगु

घत्ता—जहिं दीसइ तहिं भल्लउ णयरु णवल्लउ ससिरविअंतविहूसिउ ॥

उवरिविलंबियतरणिहे सम्मो धरणिहे णावइ पाहुडु पेसिउ ॥ १५ ॥ 10

## 16

जहिं मणहरु सोहइ हट्टमग्गु  
जहिं णेहहो भरिउ विहाइ माणु  
कामिणिकमवियलियकुंकुमेण  
कणिरैणियसुकिंकिणिणीसणेहिं  
खुप्पइ गयमयहयफेणपंकि  
जहिं राउलु रेहइ रयणजडिउ  
जहिं धूवधूमकयमणवियार  
जहिं विजयवडहदुंदुहिसरेहिं  
णवदिणयरकरतंबिरइ गोसि

बहुसंयउ णं जडचट्टवग्गु ।  
पूरिउ पत्थेर्ण कणेहिं दोणु ।  
णिल्हसइ जंतु जहिं जणु कमेण ।  
गुप्पइ णिवडंतहिं भूसणेहिं ।  
तंबोलुग्गालइ जणियसंकि । 5  
णं अमराविमाणु णहाउ पडिउ ।  
जलहरभंतिणं णच्चंति मोर ।  
सुव्वैइ णं किं पि णारीणरेहिं ।  
विदिथण्णइ जहिं पंगणपपसि ।

३ M °रविअंति विहूसिउ.

16. P पत्थेहिं. २ MBP कणिराणियकिंकिणी° ३ P सुम्मइ.

4 a सर्बिबु स्वप्रतिबिम्बम्; b सर्बत्ति सपत्नी; तियाहिं स्त्रीभिः. 5 a अलयावलि कुरुलकेशपंकिः; b सासाणिलि मुखघ्नासानिले. 6 b पयंगु पतङ्गः सूर्यः. 8 a विहंगु हंसः. b सिरिहरहो कमलस्य तथा लक्ष्मीपतेः पुरुषस्य दुष्टसंगोऽतीव दुःखदः. 9. णवल्लउ अभिनवमपूर्वम्; ससिरविअंतविहूसिउ चन्द्रकान्तसूर्यकान्तमणिविभूषितम्. 10. तरणि सूर्यः; पाहुडु प्राभूतम्.

16. I b बहुसंयउ बहु रत्नवस्त्रादिकं तेन संस्तृतः; जडचट्टवग्गु मूर्खशिष्यवर्गः. 2 b पत्थेण प्रस्थेन, पक्षे पार्थेन बाणेन कृत्वा पूरितो द्रोणाचार्यः. 3 b णिल्हसइ स्खलति; जंतु गच्छन्. 4 b गुप्पइ पतति. 5 a खुप्पइ स्खलति. 6 a राउलु राजगृहम्; रेहइ शोभते. 7 a °कयमणवियार °कृतमनोविकाराः °कृतसंवेहाः मयूराः 8 a विजयवडह° विजयपटह°. 9 a गोसि प्रभाते.

वत्ता—होवुउ जयसिरिसारहिं रायकुमारहिं बलचोषाणहिं ताडिउ ॥

10

जणियजणानुरायहिं परकइवायहिं णावइ लोउ भमाडिउ ॥ १६ ॥

## 17

तहिं सेणिउ णामे अत्थि राउ  
कजेसु दण्डु संजायवेउ  
सीयामणु व्व रामाहिरामु  
णियसमयणिसेवियइट्टकामु  
पविदंडो इव णिहलियलोडु  
वयधारि व गुरुयणि मुकमाणु  
जोईसरु व्व हयरोसहरिसु  
जाणइ विग्गह संघाण ठाणु  
सत्तंगु वि पालइ रज्जु केम  
पवणो इव फेडियमंदमेडु  
मंडलियमउडपरिहिट्टवरणु

गारुडगुरु व्व विण्णायणाउ ।  
रिउवंसडहणि णं जायवेउ ।  
सूरो इव परदुल्लंघघामु ।  
पावणि व पयंडुहामथामु ।  
मयमारउ व्व णासियमओडु । 5  
सुरप्ररकरि व्व अविहंडदाणु ।  
णं सत्तधम्मु थिय होवि पुरिसु ।  
णं वेर्योयकरणु महापहाणु ।  
पयईणिवसु णियदेडु जेम ।  
गोवालु व कयमहिसीसणेडु । 10  
जिणणाडु व णिहिलणिरायसरणु ।

वत्ता—अवरेकहिं विणि राणउ सो आसीणउ सिंहासणि दीहरकरु ॥

वेळ्ळिणिवेविई मंडिउ णं अबरंडिउ वल्लरीइ सुरतरुवरु ॥ १७ ॥

17. १ MBP विग्गह संघाणु ठाणु. २ MBP वइयाकरणु. ३ MBP अवरेकहिं. ४ P सह आसी-  
णउ. ५ M वेळ्ळणदेवी°; B वेळ्ळिणि° P वेळ्ळणदेविहि.

10 होवुउ कण्डुकः; चो वा ण मेडी ( मष्टिः ). 11 परकइ वा य हि मिथ्याहष्टिकविभिः.

17. 1 b विण्णायणाउ न्यायकुशलः; पक्षे विज्ञातसर्पः. 2 a संजायवेउ क्षीघ्रकारी. 3 b परदुल्लंघ-  
घामु सन्नुविरलंघः, सूर्य इव अजिततेजाः. 4 b पावणि पवनपुत्रो हनुमान् भीमो वा; पयंडुहामथामु उत्कट-  
पराक्रमः. 5 a पविदंडो वज्रदण्डः; णिहलियलोडु निर्दालितलोमः, पक्षे °लोहः; b मयमारउ व्याघः;  
णासियमओडु नाशितमदौषः, पक्षे नाशितमुगौषः. 6 b अविहंडदाणु अविखण्डवानः, दानं मदस्त्यागश्च. 7 a  
°जोईसरु महामुनिः. 8 b पयई° प्रकृतयो लोका वातापित्तश्लेष्माणश्च. 10 a °मंदमेडु °अल्पमेघः, पक्षे, अल्प-  
मेघाः, मन्दमेघाः इतिकर्तव्यतामूढाः. 11 a °परिहिट्टु° °परिघृष्टु°; b णिहिलणिरायसरणु निखिलधराजशरणं,  
पक्षे, निर्गतरागाणां मुनीनां शरणम्. 12 अबरंडिउ आलिङ्गितः.

अतुलियबलबलकुलपलयकालु  
 तामायउ तर्हि उज्जाणबालु  
 अणवरयविहियसामंतसेव  
 कुसुमसरपसरपसमणसमत्यु  
 अहिमयरखर्यरपारणामियपाउ  
 आहंडलणिम्मियसमवसरणु  
 वउतीसातिसयविसेसवंतु  
 परमण्णउ परमु महाणुभाउ  
 उण्णइयकेवल्लु विमलणाणु  
 जगदुरियतिमिरणिहणेकभाणु  
 तं णिसुणिवि दुज्जाणहिययसल्लु  
 परिवड्डियजिणधम्माणुराउ  
 लहु पणविउ ससपयाइं गंपि

जामच्छइ मेइणिसामिसालु ।  
 सिरसिहरचडावियबाहुडालु ।  
 सो पमणइ भो भो णिसुणि देव ।  
 णीसेसमंगलासउ पसत्यु ।  
 तेल्लोकणाहु जिणु वीयरउ । 5  
 चउदेवणिकायाणंदकरणु ।  
 अरहंतु महंतु अणंतु संतु ।  
 तित्थयरु वीरु देवाहिदेउ ।  
 अट्टविहपाडिहेराहिहाणु ।  
 विउल्लइरि पराइउ वड्डुमाणु । 10  
 परपुरदावाणलु सुहडमल्लु ।  
 आसणु मुयावि रायाहिराउ ।  
 एहउ थुइवयणु कैरंतु किं पि ।

घत्ता—जय पयपणमियसुरगुरु जय तिहुयणगुरु सामिय सयलपयाहिय ॥  
 जय णिहयणियामय भरहणियामय पुण्णयंततेयाहिय ॥ १८ ॥ 15

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुण्णयंतविरइए  
 महाभवभरहाणुमण्णिए महाकब्बे सम्मइसमागमो णाम  
 पढमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १ ॥

॥ संधि ॥ १ ॥

18. १ B °बलु. २ M °खरयणिव°. ३ MB °केवल्लविमल°. ४ M विउल्लइरि. ५ MBP कहंतु.

18 1 b जामच्छइ यावदास्ते. 2 b °बाहुडालु °प्रलम्बहस्तः. 4 a कुसुमसर° काम°; b णीसेस-  
 मंगलासउ निःशेषमङ्गलाश्रयः 5 a अहिमयर° आदित्य°. 6 a आहंडल° इन्द्र°. 7 b अणंतु शुद्धात्म-  
 द्रव्यापेक्षयानन्तः, संतु पर्यायापेक्षया सान्तः. 10 b विउल्लइरि विपुलाचले; पराइउ प्राप्तः. 13 a गंपि गत्वा;  
 a क रंतु उच्चरन्. 14 सयलपयाहिय सकलप्रजाहित. 15 णिहयणियामय निहतनिजरोग; भरहणियामय  
 भरतक्षेत्रजनानां नियमदाता नियामकः; पुण्णयंततेयाहिय चन्द्रसूर्यादपि तेजोधिक.



II

पणिवाउ करेवि पसण्णमणु भत्तिरायरहंसुच्छलिउ ॥  
सो णरवर सहं णियपरियणिण पासु जिणिंद्हु संचलिउ ॥ धुवकं ॥

I

पहयाणंदभेरे बलु चलिउ  
भाविणि का वि देवंगुणभाविणी  
का वि सचंदण सहइ महासइ  
कुवलउ का वि लेइ जसघारिणि  
रुप्पयथालु का वि धुसिणालउ  
पवरकसणगंधोहकरंबउ  
कणयवत्तु काइ वि करि धरियउ  
णावइ णहयलु उडुविप्पुरियउ  
का वि ससंख समुहसही विव  
का वि सदप्पण वेसाविसि व

पुरणारीयणु हैरिसुप्पेच्छिउ ।  
चलिय सँ कमलहत्थ णं गोमिणि ।  
णं मलयइरिणियंबवणासइ । 5  
णं वररायविसि रिउदारिणि ।  
ससिबिंधु व संणारायालउ ।  
उवरजंतु व णंवरविबिंबउ ।  
इंदणीलमउ मोत्तियभरियउ ।  
गुरुचरणारविंदु संभरियउ । 10  
का वि सकलस णिहाणमही विव ।  
का वि सरस कइकव्वपउत्ति व ।

MBP have at the commencement of this Samdhi the following stanza in praise of the poet and his patron:—

आदित्योदयपर्वताद्गुहतराब्धन्दार्कचूडामणे-  
रा हेमाचलतः कुशेनिलयादा सेतुबन्धाद् दृढात् ।  
आ पातालतलाद्दहीन्द्रभवनादा स्वर्गमार्गं गता  
कीर्तिर्यस्य न वेद्मि भद्र भरतस्थाभाति खण्डस्य च ॥

GK give it at the beginning of the third Samdhi and have उहतरात् for गुह-तरात्; चूडामणे: for चूडामणः and कीर्तिः कस्य न वेत्सि for कीर्तिर्यस्य न वेद्मि.

1. १ M पणवाउ. २ MB °रयसु°. ३ MBP रहसुप्पेच्छिउ. ४ MBP देवगुरुभाविणी. ५ MBP सहत्थकमल. ६ P णं रवि°.

1. 1 रहसु-च्छलिउ ह्येण उद्वतः 2 पासु पार्श्वम्. 3b उ प्पे छिउ प्रेरितः 4 a भा वि णि भाविनी स्त्री; °भा वि णि °भावनायुक्ता; b गो मि णि लक्ष्मीः 5 b °व णा स इ °वनस्पतिः. 6 a कुवलउ नीलोत्पलं पृथ्वी-मण्डलं च. 7 a धु सि णा ल उ कुङ्कुमयुक्तम्; °रा या ल उ °रागयुक्तम्. 8 a °क स ण गं धं कृष्णागुह कस्तूरिकादि वा; b उ व र जं तु राहुणा प्रस्यमानम् . 9 a क ण य व तु कनकपात्रम्. 10 a उडु° नक्षत्र°. 11 a स सं ख संखमुक्ता; समुहसही पृथिवी; b णि हा ण म ही निधानघटयुक्ता पृथ्वी. 12 b सरस इक्षुरसादियुक्ता कुंभारवि-रसोपेता च.

का वि जिभिर्व्यसिपम्भारै  
काहि वि दिट्टुड पयडु थणत्थलु  
मयणंकुसवणरेहाँरुणियउ  
काहि वि बुलई हारु मणिमंडिउ  
झल्लरिपडहमुइंगसहासहिं

गच्छइ भरहभाववित्थारै ।  
गाइं गिरंगकुंभिकुंभत्थलु ।  
समवंतेण पिर्यण ण गणियउ । 15  
णावइ कामे पासउ मंडिउ ।  
वज्जंतहिं जयजयणिग्घोसहिं ।

वत्ता—आरूढंउ महिवइ मत्तगइ मयजलघुलियचलालिगणे ॥

णं मैहिहरि केसरि खरणहरु पवणुल्ललियतमालवणे ॥ १ ॥

2

चोइउ कुंजरु कमसंचारै  
चामरैचवल्ले छंसंधारै  
पत्तु णरेसरु तियसरवण्णउं  
णिम्मिउं सहं सोहम्मपहाणं  
माणखंभमणितोरणदामहिं  
जलखाइयधूलीपायारहिं  
वेइवीवणपरिभमियमरालहिं  
सुरणरविसहरथोत्तवमालहिं  
गंभीरहिं भुवणयलाऊरहिं  
सरिग म प ध णी सरसंधायहिं  
उव्वसिरंभाणच्चणभावहिं  
जं रेहइ तहिं राउ पइट्टुउ

गंडालीणभमरझंकारै ।  
गच्छमाणु संहं णियपरिवारै ।  
दिट्टुउ समवसरणु वित्थिण्णउं ।  
ठियउ पक्कजोयणपरिमाणं । 5  
कप्पियकप्पपायवारामहिं ।  
तियससरासणवण्णावियारहिं ।  
वेइहरणाणाणडसालहिं ।  
खयरुखाइयकुंसुमोमालहिं ।  
वज्जंतहिं बहुमंगलतूरहिं ।  
तुंबुरुणारयगेयणिणायहिं । 10  
कणरणंतआलावणिरावहिं ।  
परमेसरु सबडंमुहु दिट्टुउ ।

७ MBP °वणियउ. ८ BP पिण्ण व ९ MBP घुलिय. १० MBP आरूढु महीवइ.

2. १ M छत्तं धारै; P छत्ताधारै. २ P णिय सह परिवारै. ३ M वल्लियं ४ MBP सुकुसुममालहिं.

13 b भरह भा व वित्थारै संगीतभावविस्तारेण. 14 b गिरंग कुंभिकुंभत्थलु काम एव गजस्तस्य कुम्भस्थल-  
मिव. 15 a मयणंकुसं नखं; b समवंतेण कामखेदेन उपशमयुक्तेन वा भर्त्रा. 16 b पासउ बन्धनपाशः.  
17 a °सहासहिं °सहस्रैः. 18 मत्तगइ मत्तगजे. 19 महिहरि पर्वते.

2. 1 a कमसंचारै चरणसंचरणेन. 2 a °चवल्ले °चपलेन. 3 a °रवण्णउं रम्यम्. 5 b कप्पियं  
विकुर्वणया कृतं. 6 b तियससरासणं इन्द्रधनुः. 7 b णडसालहिं नाट्यशालाभिः. 8 a °वमालहिं  
°कोलाहलैः; b कुसुमोमालहिं कुसुमानामव समन्तान्मालाभिः. 11 b आलावणि बीणा. 12 a जं रेहइ  
यत् समवसरणं शोभते; b सबडंमुहु संमुखः.

घसा—सीहोसणसिहरासीणु जिणु णिम्मल्लु जर्णजणणसिहरु ॥  
पारद्धु थुणहुं णराहिविण भुवणंभोरुहदिवसयरु ॥ २ ॥

## 3

जय सयल-	भुवणयल-	
मलहरण	इसिसरण ।	
वरचरण-	समधरण ।	
भवतरण	जर्मरण-	
परिहरण	जय वरुण-	5
वइसवण-	जमपवण-	
दणुदमण-	सिरिरमण-	
दिवमयर-	फणिसयर-	
ससिजलण-	सिरणमण-	
मउडयल-	मणिसलिल-	10
धुयंविमल-	कमकमल ।	
जय णिहिल-	विहिकुसल ।	
णयमुसल-	हयपबल-	
सुयसबल-	दियकविल-	
निवसुगय-	कइकुणय-	15
वहदलण	मयमलण ।	
मवरहिय	दुहेरहिय ।	

५ MBP सिंहासण°. ६ B जिणु जणणसि°

3. १ B जलमरण. २ BP धुवविमल. ३ MBP कयकुणय° but GK कइकुणय and T कवि-  
कुणय°. ४. MBP मयमहण. ५ B omits दुहरहिय.

13 °जण णसि °संसारदुःखम्. 14 थु ण हुं स्तोतुम.

3. 2 b इसि° ऋषि°. 7 a दणुदमण° इन्द्रः, b सिरिरमण° विष्णु; वरुणादिज्वलनपर्यन्तानां देवानां  
क्षिरोनमनमुकुटतलमणिसलिलघौतकमकमल. 12 a-b णिहिलविहि° सागारानागारसंबन्धि सकलमनुष्ठानम्.  
13 a णयेत्यादि - नया एव मुसलास्तेर्हताः प्रबलद्विजादीनां कुनयपथा. येन. 16 b मयमलण मदचूर्णकर्ता.  
17 a सवरहिय स्वपरहित,

मुणिमहिय	महमहिय ।	
सुराहिरस-	विससरिस ।	
कुसुमसर-	अणवसर ।	20
जय दुरह-	हरिसरह ।	
बुहतिलय	सुहणिलय ।	
रुविलय	जुइवलय-।	
जियतराणि	जय करुणि ।	
जडदमिर-	मणममिर-।	25
घणतिमिर-	हरमिहिर ।	
जय सुमुह	जय समह ।	
जय सुमण	जर्य गयण-।	
चुयसुमण-	पहंगमण ।	
जर्य चलियचमरिरुह	जय ललियसुरकुरुह ।	30
जर्य गहिरमहुरमुणि	जय चरमपरममुणि ।	
जय विसयविसिगरुल	जयधवल जसधवल ।	
जय रसियजसवडह	गयगरुह जय अरुह ।	

यथा—सीहासणछत्तालंकरिय उत्तारेपिणु चउगइहे ॥

जर्य मयमयणिवहमयाहिवइ मइ णेज्जसु पंचमगइहे ॥ ३ ॥ 35

६ MBP गयणयल°. ७ B पहंगमण. ८ B omits this line. ९ B omits this line. १० MB जय जय मयणिवह°.

18 b महमहिय मखाः यज्ञाः मथिता येन, अथवा, महेसु पूजासु महितः पूजितो वाञ्छितो वा.  
 19 a सुराहिरस° गोदुग्धम्, °विससरिस विषं तत्र समः 20 b °अणवसर °अविषय. 21  
 a-b दुरहहरिसरह दुष्पापसिद्धस्याष्टापद. 24 b करुणि करुणायुक्त. 25 a जडेत्यादि—जडानां मूर्खाणां  
 दमकाः मनसा भ्रान्तिं प्राप्नुवन्तः ये मिथ्यादृष्टयः ते एव घनतिमिराणि तेषां हरणे मिहिर सूर्य. 32 a विसय-  
 विसिगरुल विषयाः एव सर्पास्तेषां गरुड. 32 b जयधवल जगतां मङ्गलध्वज. 33 b गयगरुह अनिन्य.  
 35 मयमयणिवह° मदा एव मृगास्तेषां यूथम्; °मयाहिवइ सिंहः; पंचमगइ सिद्धावस्था.

4

इय 'बंदिवि जिणु पालियरदुड  
संभवंतभवभारभयंगउ  
पुच्छइ महिवइ संजमधारा  
पावणासु चउवग्गाइणउं  
तं णिसुणिवि आघोसइ गणहरु  
सुणि सेणिय मयमोहविहीणहि  
णाइ णंतु भाविणिहि णिरुत्तउ  
पढमु समासमि कालु अणाइउ  
जगपरिणामहु सो सहयारिउ  
मुणइ को वि सम्मत्तवियक्खणु

एयारहमइ कोट्टि णिविट्टउ ।  
भूवइ भत्तिभारणवियंगउ ।  
अक्खहि गोत्तमसामि भट्टारा ।  
जेम महापुराणु अवइणउं ।  
वासारत्ति पत्ति णं जलहरु । 5  
अरहंतावलीहि घोलीणहि ।  
एहउ वीरजिणिंहे वुत्तउ ।  
सो अणंतु जिणणाने जोइउ ।  
अरसु अगंधु अरुउ अमारिउ ।  
णिच्छयकालु पवत्तणलक्खणु । 10

घसा—भो मुणिपयपंकयभमर णिव तच्चु ण कासु वि हउं रहमि ॥

वचहारकालु परमेट्टिमुहिं जिह णिसुणिउं तिह तुह कहमि ॥ ४ ॥

5

अणुअंतरयरु समउ भणिज्जइ  
ऊसांसु वि आवलिहिं दु संखहि  
सत्तहिं थोवएहिं लव्वे भणियउं  
होति महामुणिचित्तावडियहि

आवलि तेहिं असंखहिं किज्जइ ।  
सच्चसासहिं थोवउ लेक्खहि ।  
इह पियकारिणितणएं मुणियउं ।  
सडु जि अट्टीस लव घडियहि ।

4. १ MBP वंदिय. २ MBP भवभाव°; K भवभाव° but corrects it to भवभार°; T भवभाव° but explains it as संसारे परावर्ताः प्रचुराः. ३ MBP जिणणाहे.

5. १ M ओसासु २ MBP लक्खहि. ३ MBP लउ.

4. 2 a संभवंतेत्यादि— उत्पद्यमानसंसारप्राचुर्यभयत्रस्तः. 4 a चउवग्गाइणउ धर्मार्थकाममोक्षे-  
राकीर्णः. 5 b वा सा रत्ति वर्षाकाले. 6 b वो ली ण हि व्यतीतायाम्. 7 a णाईत्यादि— भाविन्या अर्हदावल्या  
आदिरन्तश्च नास्ति. 8 a समासमि संक्षेपतः कथयामि. 9 b अमारिउ अगुरु स्पर्शरहितः. 10 b पवत्तण-  
लक्खणु प्रवर्तनालक्षणो निश्चयकालः. 11 तच्चु तत्त्वम्; रहमि गोपयामि.

5. 1 a अणुअंतरयरु अप्वोरन्तरं एकमाकाशप्रदेशं परिन्यज्य यावता कालेन एकः अणुः द्वितीयमाकाशप्रदेशं  
गच्छति स कालः समग्र इति कथ्यते; b असंखहिं असंख्यैः समग्रैः आवली; 2 a दुत्तु पुनः 3 b पिय-  
कारिणितणएं महावारेण. 4 b सडुत्यादि—घटिकायाः सार्धा एवाष्टत्रिसहस्रा भवन्ति.

घडियहिं दोहिं मुहुसहु अवसर  
तेसियहिं जि दिर्यसहिं विरइजइ  
बिहिं मासहिं उहेमाणु णिबद्धउ  
बिहिं अयणिहिं संवच्छर बुद्धइ  
बिहिं जुगेहिं दसवरिसइं जायइं  
सउ वहेहिं ताडिजइं जामहिं

तीसहिं तेहिं जाइ णिसिवासर । 5  
मासु महारिसिणाहहिं गिजइ ।  
उडुहिं तीहिं पुणु अयणु पसिद्धउ ।  
पंचहिं वच्छेरोहिं जुगु बुद्धई ।  
दहगुणियइं सयसंखइ आयइं ।  
आवइ अहसहासु वि तावहिं । 10

पत्ता—सो सहसु वि दहहउ दससहसु होइ समासिउ मं णिउणु ॥

ते दह वि दहहिं जइ गुणइ गुणि तो उप्पजइ लक्खु पुणु ॥ ५ ॥

6

संखाणाणिहिं णिमिउं चंगउ  
जाणिजइ फुहु अक्खियमेत्ती  
पुव्वंगे पुव्वंगु णिहम्मइ  
वरिसहं सत्तरि कोडिउ लक्खहं  
परमागमि जं देवे बद्धउ  
पव्खु णउदु कुमुदु वि पउमक्खउ  
अडुहु अममु हाहा इहु तिह  
मउलय लय वि महालयंगउ  
सीसपकंपिउ हत्थपहेलिउ  
णाणाणामपमाणहिं भेज्जउ

चउरासीलक्खहिं पुव्वंगउ ।  
लक्खसपण जि कोडि पउत्ती ।  
जइ तो इह अवरु वि अवगम्मइ ।  
छप्पणेव ताउ संहसंखइं ।  
पुव्वपमाणु एउ तं लद्धउ । 6  
णालिणु कमलु तुडियउ वि ससंखउ ।  
जाणहि जिणवरेण जाणिउं जिह ।  
पुणु वि महालयणामपसंगउ ।  
अचलप्पु वि वीरे उम्मीलिउ ।  
एसिउ कालु होइ संखेज्जउ । 10

पत्ता—परमाणु अट्टु जइ मेलवाहिं तो तसरेणु समुब्भवइ ॥

अट्टुहिं तसरेणुहिं पिंडियहिं पक्कु जि रहरेणुउ हवइ ॥ ६ ॥

४ MBP दिवसहिं. ५ MBP रिउमाणु ६ MBP सुचइ. ७ MBP दससहस.

6. १ K सहसकखहं. २ M पुव्वे पमाणु. ३ B हत्थपहिद्धउ; P °पहिलिउ. ४ MBP रहरेणु.

7 a उहु माणु कहुप्रमाणम्. 10. a ताडिजइ गुण्यते; b अहसहासु अब्दसहसम्. 11 दहहउ दहागुणितः.

6. 1 a संखाणाणि हिं गणितज्ञैः. 2 a अक्खियमेत्ती आख्यातमात्रेण, 3 a णिहम्मइ गुण्यते.  
6 a पउमक्खउ पद्मसंज्ञम्. 8 a मउलय सुदुलता; लय लता; महालयंगउ महालतिकान्णम् 9 a  
हत्थपहेलिउ हस्तप्रहोलिका; b अचलप्पु अचलात्मकम्; उम्मीलिउ प्रकाशितं कथितम्. 10 a भेज्जउ भेषः.

अट्टहिं रहरेणुयहिं समग्गहिं  
 लिक्ख भणिय पुणु अट्टहिं लिक्खहिं  
 अट्टहिं सरिसवेहिं परिमाणिउ  
 परमण्यदिट्टउ को दुसइ  
 छंगुलु पाउ विहत्थि दुवाइ  
 चउरयणिल्लु दंड मणि भ वहि  
 जोयणु तं पि सपहिं गुणिज्जइ  
 एम महाजोयणु वक्खाणिउं  
 तस्स पमाणे खम्मइ खांणी  
 कत्तरियहिं अविहायहिं सुहुमुहुं  
 होउ पडुच्चइ लेक्खे म गणाहि  
 जइयहुं रोमरासि सा खिज्जइ  
 तेहिं असंखिहिं उद्धारुल्लउ  
 तं पि असंखगुणिउं अद्धारउ  
 होइ समुहोवमु चुअणाडिहिं

चिहुरग्गउ अट्टहिं चिहुरग्गहिं ।  
 सियसिद्धत्थु कहिउ णिहयक्खहिं ।  
 जवपमाणु देवागमि आणिउं ।  
 अट्टजवंगुलु सूरि समासइ ।  
 दोहिं ताहिं किर रयणि वि इई । 5  
 दंडहिं अट्टसहासिहिं पावहि ।  
 पंखेहिं पुणु लोयहु दंसिज्जइ ।  
 जं जगमाणकरणु अहिणाणिउं ।  
 परिवट्टुलिय संपरियरतिउणी ।  
 सा पूरिज्जइ सिसुअविरोमहुं । 10  
 मंवच्छरसइ एकु जि अवणहि ।  
 तइयहुं पलिओवमु धुंथु पुज्जइ ।  
 दीवसमुहपमाण परुल्लउ ।  
 भवठिदिआउपमाणाधारउ ।  
 पल्लोवमदहकोडाकोडिहिं । 15

घत्ता--तेसियहिं जि सायरसमहिं फुडु कालचक्कु मइं लक्खियउ ॥

लइ एउ वि अवरु वि पुणु भणमि केवलणार्णे अक्खियउ ॥ ७ ॥

7. १ MBP लिहक्ख. २ MBP लिहक्खहिं. ३ M जाणिउ. ४ MBP पंचहिं लोयहु पुणु दरिसिज्जइ  
 ५ MBP खोणी. ६ Tp सपरियय and adds सपरिरयेति पाठेऽप्ययमेवार्थः ७ MBP अविभायहिं. ८ MP  
 धुउ; B धुउ. ९ MBP हवइ तियआउ°.

7. 1 b चिहुरग्गउ रोमाग्रम्. 2 b सिय सिद्धत्थु श्वेतसर्षपः; णिहयक्खहिं जितेन्द्रियैर्महामुनिभिः.  
 3 a परिमाणिउ एकत्र कृत्वा; b देवागमि जिनाय . 5 a दुवाइ द्वाभ्यां पादाभ्याम्, b रयणि हस्त.  
 ( अरत्तिः ). 8 b जगमाणकरणु लोकप्रमाणम्; अहिणाणिउं अभिज्ञातम्. 9 b सपरियरतिउणी स्व-  
 परिधिना त्रिगुणा. 10 b अवि° शेषकः. 11 b अवणहि स्फेटय. 13 b परुल्लउ परम्. 14 b भवठि वि°  
 भवस्थिति°. 15 a चुअणा डि हिं गलितघटिकाभिः; पत्थोपमैदेशकोटिभिः सागरोपमं स्यात्.

8

सुसंसुसुसु अण्णेकु वि सुसमउ  
 दुस्समु अरुदुस्समु पविहंता  
 ए ओहामियदावियइहिहिं  
 भुयबलविहवसरीरिसरीरहिं  
 वहुंतेहि होइ उच्छप्पिणि  
 सायराहं विभियगिब्बाणहिं  
 नीहिं मि कालहिं तिण्णि विहत्तइं  
 दरिसियमाणवदेहारोयइं  
 छञ्जउदुधणुसहाससरीरइं  
 तिण्णितुपक्कपल्लथियजीवइं  
 उस्सिममज्झमाइं णिक्किट्टइं

सुसमंसुसु पुणु दुस्समंसुसमउ ।  
 इय छक्काल वीरपण्णत्ता ।  
 परिभमंति जगि हाणिपवुक्किहिं ।  
 धम्मणाणगंभीरिमधीरहिं ।  
 ओहट्टंतयहिं अबसप्पिणि । 6  
 चउतिदुकोडाकोडिपमाणहिं ।  
 दहविहविडविपसाहियत्तेसइं ।  
 इच्छासंणिहमाणियभोयइं ।  
 बोरक्खामलमेत्ताहारइं ।  
 रयणाहरणविहूसियगीयइं । 10  
 भोयभूमिबिघ्घाइं पइट्टइं ।

घत्ता—णउ सत्तु असेसु वि मिच्चु तहिं सीडु गइं सहुं वत्तइ ॥

लायण्णवण्णविब्भमभरिउ जणवयजोव्वणु णउ व्हत्तइ ॥ ८ ॥

9

बहुबोलीणइ तइयइ कालइ  
 भट्टारहधणुसयतणु थिरजसु  
 पडिसुइ णामे जायउ कुलयरु  
 भमममियाउ राउ मंथरगइ  
 पुणु णं माणुसवेसु अणंगउ

थियपल्लोवमट्टभायालइ ।  
 पलिओवमदहमंसु थिराउसु ।  
 पुणु तेरहसयथावपईहरु ।  
 अबरु वि इवउ णामे सम्मइ । 6  
 भट्टसयाइं सरासणतुंगउ । 6

8. १ MP सुसमुसुसु. २ MBP सुसमुदुसुसु. ३ MBP दुस्समुसुसमउ. ४ P पवहंता but gloss प्रविभक्ताः पृथग्गुणिताः. ५ MBP छञ्जउदुधणुसहास°. ६ MBP विहूसियगीयहिं.

8. 1 a अण्णे कु द्वितीयः. 2 a पविहंता प्रविभक्ताः. 3 a ए एते वहुं कालाः; ओहामियदाविय-इ हिं स्फोटितदर्वीतकडिभ्यां हानिवृद्धिभ्याम्; अवसर्पिण्यां कडिः स्फोट्यते उत्सर्पिण्यां कडिईस्यते. 6 a साय रा इं सागरोपमैः. 7 b दहविहेत्यादि-दशप्रकारैः कल्पवृक्षैर्बभूवितक्षेत्राणि; मद्याङ्गुर्यभूषास्रग्ज्योतिर्दापगृहाङ्गकाः । भोजन-मन्त्रवज्रा दशधा कल्पशास्त्रिनः. 8 a °आ रो य °आरोग्य; b इच्छा सं णि ह° इच्छानुत्पत्त्याः. °मा णि य° प्राप्त. 9 b °अक्ख° विभीतकः. 10 a °पल्लथिय जी व इं °पत्त्यस्थितिजीवितानि. 11 b पइट्टइं प्रविष्टानि. 13 णउ व्हत्तइ न पतति.

9. 1 b °अट्ट भायालइ अट्टमे मागे काले. 2 b पलिओवमदहमंसु पल्लोपमस्य दशमो भागः. 3 b पई हरु प्रदीर्घतरः. 4 a मं थरगइ मन्दगतिः.



अडडपमाणियाउ खेमंकर  
 सत्तसयाइं पंचसत्तरि धणु  
 खेमंधरु णामे णं दिग्गाउ  
 सयसत्तउ पंचासैहिं जुत्तउ  
 कमलजीवि सीमंकरु भण्णइ  
 णलिणाउसु किर को णउ भण्णइ  
 सत्तसयइं पंचुत्तरवीसइं  
 सिरिकरपल्लवलालियकंधरु  
 पणुवीसुज्झिपहिं दिहिगारउ  
 तेत्तिपहिं पुणु गुणमणिमंडिउ  
 पैक्कु वि पोसु जासु संजीविउ  
 छहसयपणहत्तरिइ पसाहिय  
 कैम्मयाहं कामिणिकयविंभउ  
 पउमंगाउ महीयलि अच्छिउ  
 पुणु वि जसस्सि पुण्णचंदाणु

संभूयउ सुभूयखेमंकरु ।  
 उच्छिउ अणु वि उप्पण्णउ मणु ।  
 तुडियइइं जीवेप्पिणु सो मंड ।  
 गैत्तपमाणउ जासु पउत्तउ ।  
 तहु चरित्तु जइ सुरगुरु वण्णइ । 10  
 बाणासणहं सरीरसमुण्णइ ।  
 जासु जिणिंदंभडारउ भासइ ।  
 सो संजायउ पुणु सीमंधरु ।  
 कोदंडहं सपहिं गरुयारउ ।  
 विमलबाहु हुउ पंडापंडिउ । 15  
 मुउ सुहकम्मै सुरइरु पाविउ ।  
 जासु देहउच्छेहु पसाहिय ।  
 णामे सुपसिद्धउ चक्खुम्भउ ।  
 पच्छा खयकालेण णियच्छिउ ।  
 उप्पण्णउ पत्थिवपंचाणु । 20

घस्ता—उडुमाणइं सयइं कैणासणहं पण्णासाहियाइं णणमि ॥

तहु देहुद्धत्तणु पत्तडउ जीविउ कुमुदु पक्कु भंणमि ॥ ९ ॥

10

पयहु अक्खियाइं जेत्थियइं जि  
 पुणु जायहु बलतुलियगइंदहु  
 कुमुयंगाउणिबद्धपमाणहु

पंचवीसरहियइं तेत्थियइं जि ।  
 धणुसयाइं अहिचंदणरिंदहु ।  
 णिउ सो काले अमरविमाणहु ।

9. १ MP मुउ. २ MBP पण्णासहिं. ३ MBP गत्तमाणु जणि जासु पउत्तउ. ४ MP जिणिंदु  
 भडारउ. ५ MBP एक्कु पोसु जा सो संजीवउ. ६ MBP कामुयाइं. ७ BP बाणासणहं. ८ MBP गणिउं.  
 ९ MBP देहुद्धत्तणु. १० MBP भणिउं.

6 b सु भूय खेमं करु सुणु प्राणिनां क्षेमकर्ता. 7 b उच्छिउ उच्छिउतः. 10 a कमलजीवि कमलाहप्रमा-  
 णायुः. 11 a णलिणाउसु नलिनाह्वायुः 14 a दिहिगारउ धृत्तिकारकः. 15 b पंडापंडिउ पण्डा बुद्धि-  
 स्तया पण्डितवतुरः. 18 a कम्मयाइं कार्मुकाणा धनुषाम्. b चक्खुम्भउ चक्खुम्भान्. 19 b णियच्छिउ  
 निरीक्षितः. 21 उडु कतु; कणासणहं धनुषाम्. 22 कुमुदु कुमुदाह्वायुः.

10. 2 a बलतुलियगइंदहु गजेन्द्रबलनिर्दलनस्य.

पंचसयहं पुणु सयसंजुप्तहं  
 णउदाउसु महिवह संजायउ  
 तहु पच्छह गच्छतें कालें  
 भज्जवलयहु आसि पहाणउ  
 साययवीढहं सयहं महिद्धिउ  
 गउ सो णउयंगउ जीवेप्पिणु  
 सहुहं पंचसयहं रणैचंडहं  
 पव्वाउसु पय पालहुं जाणह  
 कंडमोक्खकरणाहं सउण्णउ  
 पुव्वक्कोट्टिजीवियसंपुण्णउ  
 तिहुअणभवणखंभु णं दिण्णउ  
 गुरुउद्धरियवंसें वरमेहलु  
 भूसणरयणकिरणहयतममलु  
 मउडसिहरु हारावलिणिज्झरु  
 णं अवयरियउ जंगैसु मंदरु  
 घप्ता—हुउ पच्छह आयहं तेरहहं बाहुद्धारियभुर्वणभरु ॥

जियल्लोयहो णाहि व णाहिपहु णरसंथुउ कुल्येरु पवरु ॥ १० ॥ 20

II

णहयलि जंतजणेण णं याणिय  
 अण्णु वि रुहरुक्खक्खह दिट्ठहं

पहिलपण रविससि वक्खाणिय ।  
 बिंदुयबिंदुपहिं उवरिट्ठहं ।

10. १ MBP चावहि. २ MBP चंदाहणाम्. ३ MBP उच्छज्जतें, ४ MBP add after this line दीहबाहु उरयलवित्थिण्णउ. ५ B °वसु णं मेहलु. ६ M °जोग°; BP °जोग°. ७ MBP जंगममंदरु. ८ MBP °भुवणहरु. ९ MBP कुलयरपवरु.

11. १ M ण जाणिय.

7 a अज्जव लोय हु आर्यलोकस्य; b बहुजाणउ बहुभ्रुतः. 8 a साययवीढहं धनुषाम्. 9 b सुरबों दि देवशरीरम्. 10 a रणचंडहं संप्रामप्रचण्डानां धनुर्घण्डानाम्. 11 a पव्वाउसु पर्वप्रमाणासुः. 12 a कंड-मोक्ख करणाहं धनुषाम्. 13 b सम्भावाउण्णउ सद्भावपूर्णः. 15 b °अमयहलु अमृतफलम्. 16 b सयणु-तेयेत्यादि—स्वतनुनेजसोद्योतितनमस्तलः. 19 आयहं एतेषाम्. 20 जियल्लोयहो जीववर्गस्य.

11. 1 a णहयलीत्यादि—आकाशे गच्छता जनेन कल्पतरूणां बहुलतेजस्वात् न ज्ञातौ; b पहिलपण प्रथमकुलकरेण प्रतिभुतिना. 2 a रुहरुक्खक्खह कल्पवृक्षस्य क्षयात्, उभोतिरक्षयात्.

बीषण वि लोयडु भयरिदुं  
 ह्या जे मृग दारुण जइयुं  
 सिगि नैक्खि दादि वि परिहरिया  
 चोत्थपण पुणु णउ उप्पेक्खिउ  
 ताडिय ते दददंडपहारिहिं  
 वियलियफल तरु विरइयमेरइ  
 पविरलहुमकालइ कुज्जंता  
 छट्टपण मणुणा अणुयंथे

अहरत्तइं णक्खत्तइं सिद्धुं ।  
 तइयपण ते साहिय तइयहुं ।  
 सोम्मं सुलक्खण णियडंइ धरिया । 5  
 लोउ मृगीहिं खज्जंतउ रक्खिउ ।  
 पंचमेण बहुबुद्धिपयारिहिं ।  
 अज्जव सुणिरोहिय णियकेरइ ।  
 फललोहे कोहे जुज्जंता ।  
 वारिय णर कयसीमाचिंथे । 10

घसा—कुलयरपवरेण वि संत्तमेण णियमइविहथे मांविउ ॥

पल्लाणिवि हयगयवरवसहभारारोहणु दीविउ ॥ ११ ॥

## 12

अट्टमेण चंगउ उवपसिउ  
 णवमपण सुयमुहससि दरिसिउ  
 खणु जीवेप्पिणु मुउ सोमालहुं  
 पयारहमइ कुलयरि जायइ  
 जीउ ण वच्चइ कइवयदिवसइं  
 णंदइ पय पयाइ संजुत्ती  
 विहियइं सरिसमुहजलजाणइं  
 तक्कालइ जायइं णिम्मगाइं

डिंभयदंसणभउ णिण्णासिउ ।  
 तं जोइवि जणु हियवर हरिसिउ ।  
 दहंमे केलि पयासिय बालहुं ।  
 णंदणि माणववंदहु ह्यइ ।  
 वारहमइ हुइ बहुयइं वरिसइं । 5  
 तेरहमेण वियप्पिय वित्ती ।  
 गयणलग्गगिरिवरसोवाणइं ।  
 कुसरि कुसायर कुकुहर दुग्गइं ।

२ MBP विग. ३ M सिंगि य णक्खि; B सिंगणक्खि. ४ MBP सोम. ५ B णियडयधरिया. ६ P चउथएण.  
 ७ MBP विगहिं. ८ MBP अणुयंथे. ९ P सत्तमइ. १० MBP भावियउ. ११ MBP दावियउ.

12. १ P जोएप्पिणु हियवर. २ P दहमइं. ३ MBP माणवविंदहु.

3 a °रि द्दुइं उत्पाताः. 4 b सा हि य साधिताः, मृगस्वरूपं कथितमित्यर्थः. 5 a °मे र इ मर्यादया; b सु णि-  
 रो हि य सुनिबद्धाः. 10 a अणु यं थे अनुबन्धेन आप्रहेण.

12 2 a सुयमुह° पुत्रमुह°. 3 a सो माल हुं सुकुमाराणाम्. 5 a जीउ जीवः. 6 a पया इ पुत्रा-  
 विभिः; b वि य प्पि य विकल्पिता रचिता, वि त्ती जीविका. 8 a णि म्म गा इं निश्चितमार्गाणि; कु सरि कुनदी;  
 कु कु हर कुपर्वत.

वसा—जीपं मणुणा बोईहमइण गरसिसुणालह संडियइं ॥

कसणम्मइं थियइं णहंगणइ खलसोदामणिमंडियइं ॥ १२ ॥

10

13

विसंकालिदिकालणवजलहरपिडियणहंतरालओ ।

धुयंगयगंडमंडलुडुवियचलमत्तालिमेलओ ॥

अविरलमुत्तलसरिसथिरधारावरिसभरंतभूयलो ।

हयरथियरपयावपसरुग्गयतरुतणणीलसहलो ॥

पडुतडिबंडणपडियथियडायलरुंजियसीहदारुणो ।

5

णथियमत्तमोरगलकलरवपूरियसयलकाणणो ॥

गिरिसरिदरिसरंतसरसरभयवाणरमुक्कणीसणो ।

महियलघुलियमिलियकुंदुंहुंसयवयसालूरपोसणो ॥

अणचिक्खंल्लखोल्लखणिल्लेइयहरिणसिलिंबकयवहो ।

वियसियणवर्कलंबकुसुमुग्गयरयपिंजरियदिसिवहो ॥

10

सुरवइचावतोरणालंकियघणकरिभरियणहहरो ।

विवरमुहोयरंतजलपवहारोसियसविसविसहरो ॥

पियपियपियलवंतबंप्पीहयमग्गियतोयबिंदुओ ।

सरतीरुल्लंतहंसावलिमुणिहलबोलसंजुओ ॥

चंपयचूयचारचंवचंदणच्चिचिणिपीणियाउसो ।

15

बुट्ठो झत्ति जस्स कालम्मि जण सुहयारि पाउसो ॥

४ MBP जायएं. ५ MBP चउदहमइण.

13. १ MBP विसिं and gloss in P सर्पः २ P धुव°. ३ P °तडिपडण°. ४ M डिडुह; P डेडुह; B हुंडुह. ५ MBP °विक्खल्ल°. ६ MBP °कयंब°. ७ MBP °वव्वीहय°. ८ P °विंदओ. ९ MBP °वव्व°.

10 क स ण न्म इं कृष्णमेघाः; °सो दा म णिं विद्युत्.

13. 1 वि सिं विषवत्कृष्णमेघः; °का लि दि का लं यमुनासदृशकृष्णमेघः २ °मेल ओ मेलापकः समूहः. 3 °थिर धा रां अखण्डवृष्टिः. 4 °स ह लो °पत्रयुक्तः. 5 °त डिं विद्युत्; वि य ड ा य लं विस्तीर्णपर्वतः; रुं जिय शब्दित. 7 °सर सरं °जलस्वरं. 8 हुं दु हं निर्विषः सर्पः. स य व य शतपदः सर्पः; सा लूर भेकः. 9 ख णि खे इ य गर्तायां निक्षिप्ताः; सि लिं ब शिशुः. 11 °घ ण क रिं मेघ एव हस्ती. 12 °रो सि यं कोपित. 13 °ब ष्पी ह यं चातकः. 14 °ह ल बो लं कोलाहलः. 15 पी णि या उ सो एषां वृक्षाणां प्राणसिम्बनं कृतम्. 16 ज स्स का ल म्मि यस्य नाभिराजस्य काले; सु ह या रि सुखकारी.

मुग्धाकुलस्थकंगुजवकलवतिलेसीधीहिमासया ।  
 फलभरणवियकणिसकणलंपडणिवद्वियसुर्यसहासया ॥  
 वयगयभोयभूमिभवभूरुह सिरिणरवहरमासही ।  
 जाया विविहधर्णंदुमवेल्लीगुम्मपसाहणा मही ॥ 20  
 घत्ता—तं पेक्खवि<sup>१</sup> जणवउ संचलित मउ भेहेप्पिणु झत्ति तर्हि ॥  
 लच्छीयणपेह्लियवच्छयलु अच्छइ णाहिणरिंदु जर्हि ॥ १३ ॥

14

किं तडयडइ पडइ फोडइ धर	विष्फुरंतु णिह भेसावइ णर ।
वंकउं हरियारुणु किं दीसइ	देव देव किं गज्जइ वरिसइ ।
गयकप्पहुम तेत्थु णिसण्णा	एवहिं अवर के वि उप्पण्णा ।
अण्णइं कणभरियइं णिप्फण्णइं	णिष्णमेव खगमूर्गसंचिण्णइं ।
अम्हइं जड उवायअवियाणा	दीहरभुक्खायासें रीणा ।
भोज्जाभोज्जु तेत्थु किं होसइ	तं णिसुणेप्पिणु महिवइ घोसइ ।
जो रसंतु वरिसइ सो णवघणु	जं वंकउं दीसइ तं सुरधणु ।
जा गिरि दलइ चलइ सा विञ्जुल	चंचरीयधुंबियकौमलदल ।
सुरतरुवरविणासि सुच्छया	कम्मभूमिभूरुह संजाया ।
कडुयगरलु णीरसु वंचिज्जइ	जं महुरउ सुसाउ तं विज्जैइ ।
खत्तियवंसत्थलथिरकंदे	एम भणेप्पिणु णाहिणरिंदे ।
णिवडमाणु अब्भुद्धरियउ जणु	हत्थिकुंभि किउ मट्टियभायणु ।

घत्ता—कणकंडणसिहिसंधुकणइं पयणविहाणइं भावियइं ॥

कप्पाससुत्तपरियंहुणइं पडपेरियम्मइं दावियइं ॥ १४ ॥

१० MBP सुयसमासया. ११ M °वण्ण°. १२ MBP पेक्खवि.

14. १ MBP °मिण°. MB सिवघणु. ३ P पिज्जइ. ४ MBP परियट्टणइं. ५ P °पडियम्मइं.

17 कल व कलमशालिः सुगन्धशालिः; तिलेसी तिला अलसी च 18 °सहासया °सहस्रकाः. 19 णर व इ-  
 रमासही राज्यलक्ष्मीसखी. 21 मउ मदम्.

14. 1 a तडयडइ शब्दं करोति; धर पर्वतान्. 4 a अण्णइं क्षेत्रे चान्यानि. 5 a उवायअवियाणा  
 उपायाज्ञानाः; b भुक्खायासें क्षुधाह्येन. 7 a रसंतु शब्दायमानः. 8 b चंचरीयं भ्रमराः. 10 a कडुय-  
 गरलु निम्बगुह्वांप्रसृतिः; b विज्जइ भुज्यते. 11 a थिरकंदे मूलभूतेन. 12 a णिवडमाणु निपतन् क्रिय-  
 माणः. 13 सिहिसंधुकणइं अग्निप्रज्वालनविधिः; भावियइं उत्पादितानि. 14 °परियहुणइं परिकर्षणानि;  
 °परियम्मइं निष्पादनानि.

## 15

तासु घरिणि मरुएवि भडारी  
 अमरहं पंतिह पयपणवंतिह  
 कमयलराएं काहं गधिदुड  
 पण्हिहं रत्तउ चिर्नु पदंसिउं  
 अंगुदुण्णहं जं गूढहं  
 णीरोमउ विसिरउ वट्टुलियउ  
 जंघउ कमहाणिह ओहरियउ  
 गूढहं णरवइमंताभासहं  
 णिविडुसंधिबंधहं णं कव्वहं  
 ऊरुयखंभ णराहिवदमणहु  
 जेण ससुरणरु तिहुयणु जित्तउ  
 दिण्ण थत्ति तहु सोणीविंबहु

जाहि रुवसिरि अइगरुयारी ।  
 लंधियाहं अमहं णंहयंतिह ।  
 पम णाहं णेउरहि पघुदुड ।  
 अंगुलियहि सरलणु पयासिउं ।  
 गुप्फहं तं किर पिसुणहं मूढहं । 5  
 मसिणउ सोहियाउ उज्जलियउ ।  
 दिट्टुं णं खलमित्तहं किरियउ ।  
 वायरणाहं व रइयसैमासहं ।  
 देधिहि जण्डुयाहं अइभव्वहं ।  
 नेरणखंभाहं व रइभवणहु । 10  
 कामतच्चु जं देवहिं वुत्तउ ।  
 किं वण्णमि गरुयणु णियंबहु ।

घत्ता—गंभीर णाहि तहि मज्झु कित्तु उयरु सतुच्छउ दिट्टु मरं ॥

संसग्गवसै गुणु कासु हुउ जो णवि जायउ जम्मि सइ ॥ १५ ॥

## 16

तिवलीसोवाणेहि चडेप्पिणु  
 सिहिणगिरिंदारोहणदोरइ  
 पियवसियरणु वसइ भुयमूलइ

रोमावलिक्कुहिणी लंधेप्पिणु ।  
 लग्गउ वम्महु मोसियहारइ ।  
 सुइसोहणु जाहि हत्थयलइ ।

15. १ T णहकंतीए but adds: णहयंतिह इति पाठे आकाशादागत्येत्यर्थः; २ MBP वित्तु पदरिखित्तु;  
 T वित्तु वृत्तत्वम्; ३ MBP गुंफहं. ४ P दिट्टा णं. ५ M °समाणहं ६ MBPK ऊरुखंभ. ७ MBP ससुरयणु.  
 ८ M सवित्थरु.

15. 2 b ण ह यं ति ह आकाशादेन्त्या, अथवा नखकान्त्या. 3 a कमयलत्यादि—नूपुरं इति हेतोः शब्दं  
 करोत्यस्माकमवज्ञां विधाय चरणतलरगे किं दृष्टं देवपंक्त्या; काहं किम्; ग धि द्दु उं दृष्टम्. 4 a रत्तउ वि तु  
 अर्तुरि रक्तं वित्तम्. 6 a वि सि र उ शिरारहिता; b म सि ण उ खिग्धा. 7 a ओ ह रि य उ अपकर्षं गता. 8 a  
 गूढहं प्रच्छन्नानि; ण र व इ मं ता भा स इं राजमन्त्रसदृशानि; b र इ य स मा स इं षट् समासाः कर्मधारयादयः, पक्षे  
 मांसयुक्तानि. 9 a णि वि ड सं धि बं ध इं सु श्लेषपदबन्धानि शरीरावयवबन्धानि च.

16. 1 a च डे प्पि णु आरुह्य; b °कु हि णी मार्गः. 2 a सि हि णं स्तन°; °वो र इ सूत्रे रज्ज्वाम्.  
 3 a पिय व सि य र णु प्रियवशीकरणम्; b सु इ° निर्मलम्.

गेहबंधु मंगिबंधि परिद्विउ  
जाहि तणउं तं जणियवियारउं  
कंठलीह णउ कंबू पावइ  
णियँडणिबिदुउ जियससिकंतिहि  
अहरबिबु रेहइ रायालउ  
अम्हं ठाइ कर्याइ ण संमुहु  
भउंहुउं बंकसणु वि ण सहियउ  
णिसिदिणि ससि रवि गयणविलंबिय  
कुंडलसिरि वहंति धवलच्छिहि  
कुडिलालय भालयलि गिरंतर  
अंवरु वि ताहं भारु विवरेरउ  
तरुणिहे पँट्टि पइडुँउं दीसइ

लायण्णे समुहु ण संठिउ ।  
महुरउ इयरहु केरउ खारउ । 5  
परसासाऊरिउ कँह जीवइ ।  
धोयहि धवलहि दंतहु पंतिहि ।  
मुत्तावलियहि णाई पवालउ ।  
उज्जुउ णासावंसु वि दुम्मुहु ।  
णयणहिं गंषि व कण्णहुं कहियउ । 10  
बिण्णि वि गंडयलइ पडिबिबिय ।  
जिणजणणियहि संलक्खणकुँच्छिहि ।  
मुहकमलहु घुलंति णं महुर ।  
मुहससहरमण णं तमरउ ।  
कुसुमरिक्खमीसियउ विहासइ । 15

घत्ता—पणवन्तिउ अमरविलासिणुउ छाहिणिहेण णिहीणियउ ॥

वारुत्तणकंखइ सुंदरिहि पयणहदप्पणलीणियउ ॥ १६ ॥

## 17

तियसमहीरुहपिहियदसासइ  
णं जियलोउ समुणायसंतिइ  
णं सज्जणु गुणिलोयपसंसइ

भारहवरिसहु मज्जुहेसइ ।  
सरयागमु णं छणससिकंतिइ ।  
णं आलिणुउ धम्मु अहिसइ ।

16. MBP मणिबंधु. २ BP समुहु णं. ३ MB कंबुउ; P कंबुउ and gloss शंखः. ४ M कहि.  
५ M णिविड° ६ P कयावि. ७ MBP सुलक्खण°. ८ P °कुक्खिहि. ९ MB अविरुवि. १० K पुट्टि. ११  
P बइच्छउ. १२ BP पणमंतिउ.

4 a म णि बंधि प्रकंठे; ला य ण्णे लावण्येन समुद्रः सहस्रो न. 5 a ज णि य वि यार उं जनितरोगादिकम्; b इय-  
रहु इतरस्य समुद्रस्य. 6 a कंठलीह कण्ठरेखा; b परसासाऊरिउ परश्वासपूरितः 7 a °ससिबंति हे  
बन्द्रकाम्या. 9 a ठाइ तिष्ठति; b दुम्मुहु द्विमुखो बुर्मुखश्च. 14 b तमरउ तमःप्रवाहः. 15 b °रिक्ख°  
तारागण°. 16 छाहिणिहेण प्रतिबिम्बच्छयनाः णिहीणियउ निहीनाः बयं देव्याः. 17 पयणहदप्पण-  
लीणियउ पद्मनखदर्पणे लीनाः.

17. 1 a तियसमहीरुह° कल्पवृक्षाः; °पिहियदसासइ °आच्छादितदशादिके. 2 a नमुणाय-  
संतिइ समुद्रतशान्त्या.

पीवरपीणपयोर्हरकयकर  
अच्छह णाहिणरेसरु जइयहं  
सुरणरखंदणिञ्चु जैंगि सारउ  
कामकंदकप्परणकुंडारउ  
इय संघितिवि पुणु परिच्छिण्णउं  
धणय धणय लहु करि णिरु भल्लउ  
ता तं पेसणु जक्खेँ लइयउं

ताइ समउ सो पच्छिमकुलयरु ।  
सुंयरइ सुरवइ णियमणि तइयहं । 6  
गुरुसंसारमैहण्णवतारउ ।  
होसर पयहुं भवणि भडारउ ।  
इदं धणयहु पेसणु विण्णउं ।  
पुरवरु चउदुवारु सोहिल्लउ ।  
खणि साकेयणयरु पविरइयउं । 10

घत्ता—जहिं पवैणाइरियवसेण णंदणवणहं सुपत्ताइं ॥

णखंति फुल्लमुहमुक्केण मयरंवेण व मत्ताइं ॥ १७ ॥

## 18

जहिं सरवरि मिरिपयसंफामे  
परभुसें विमुक्कतमदोसें  
तं तेहउ वि पीलु किं भंजइ  
सो तहु दाणु देइ किं भीयउ  
वडपारोहइ हिंदोलंतिहिं  
जहिं कई अइपहसनरसधारउ  
रत्तउ सारसियहिं जहिं सारसु  
सहइ तमालंधारयसारिउ

वियसइ कमलु णां संतोसें ।  
अहवा णंदिउ को वे ण कोसें ।  
महुयरउल्लु णं रोसें रंजइ ।  
भवरु वि गरुयउ होइ विणीयउ ।  
जोइउ जक्खिहिं दरपहसंतिहिं । 5  
सुइ णियदिट्ठि विवइ सवियारउ ।  
को वि परिट्ठिउ अहिर्णु सारसु ।  
जहिं कैलु कोइलु लवइ णिरारिउ ।

17. १ M पओरुह°. २ MPT सुमरइ; B सुभरइ and gloss स्मरति. ३ MBP जग° ४ B °समुण्णव°. ५ MB °कुडारउ; K °कुडारउ but corrects it to °कुडारउ. ६ MBP चउदुवारसोहिल्लउ. ७ MBP पवणायरिय°. ८ MBP °मुक्कएण.

18 १ M परिभुसें. २ P को वि. ३ P कइ. ४ BP कइवइ पइसण°. ५ M को ण, ६ MBP अहि-  
णव° ७ MBP कलु.

4 a °कयकर °कृतकरः; b समउ सह. 5 b सुयरइ स्मरति. 7 a°कप्परण° °उदन°. 8 a परिच्छिण्णउं  
ज्ञातम्, निश्चितम्. 10 a लइयउं गृहीतम्. 11 पवणाइरिय° वायुरेव आचार्यः.

18. 1 a सिरिपयसंफामे लक्ष्मीपदस्पर्शेन. 2 a परभुसें हंसैः जनैश्च भुज्यते; विमुक्कतमदोसें  
पापोच्छित्तेन, अथवा, तमः क्रोधः, पक्षे तिमिरयुक्तरात्रिरहितेन; b कोसें कर्मिकया द्रव्येण च. 3 a पीलु हस्ति-  
बालः; b रंजइ शब्दं करोति. 5 b दर° ईषत्. 6 a कइ कपिः; अइपहसनरसधारउ अतिप्रहसन-  
धारकः हासं कारवतीत्यर्थः; सुइ शुकैः. 8 a तमालंधारयसारिउ तमालवृक्षान्धकारस्य सा लक्ष्मीस्तस्वा  
रिपुः; b णिरारिउ अनिवारितम्.



पवरंभयकलियहि दोइयकर

महिलहि को न होइ बाइयकर ।

जहिं भाविणि न करइ परपरइ

बीउ धरिसिहि को उं न परइ । 10

अद्वारहवरसासविहसई

जहिं सयमेव सुपकां छेत्तई ।

घसा—जहिं धण्णइं कणभरपणींमियइं परिभमंति सच्छंद पसु ॥

घणमेरिहसिंगपहारचुउ महिसिहिं पिजइ उच्छुरसु ॥ १८ ॥

## 19

छुइ छुइ भोयभूमि जहिं वित्ती

रिद्धिसमिद्ध विमुद्ध धरिसी ।

चित्तिउ चित्तिउ दैति न थकइ

पुव्वम्भासु न मेल्लुं सकइ ।

जहिं थलि थलकमलोवरि सुप्पइ

पइ पइ पैंउमहु पंके लिप्पइ ।

दक्खारसु णरेहिं चक्खिज्जइ

फलु अउवु काइं मि भक्खिज्जइ ।

कुवलयधराणिउ णं णिवईहउ

जहिं परिहाउ वहांति पईहउ । 5

णं भविस्सजिणजम्मोयरियउ

णवणारंभहु णाणासरियउ ।

बहुमाणिकमऊहर्पहावहिं

णं गयणंगणु सुरवइचोवहिं ।

असियसियारुणवण्णवियारहिं

..६९..

जं सोहइ सत्तहिं पायारहिं ।

आ१९५५...

## 17

घसा—जं दियहि दिवायरकंत रविकिरणहिं सिहिभावहु गयउ ॥

तं णीवइ णिसि ससियरपुसियससिमणिजलधाराहयउ ॥ १९ ॥ 10

८ P गउ. ९ MBP खेतइ. १० MBP णणियइ.

19. १ BP °समिद्धिविसुद्ध. २ P मेल्लुं. ३ MB पउमैं पंकहु पिप्पइ; P पउमहु पंकेहिं पिप्पइ. ४ MB दक्खारसु णरेहिं जहिं पिजइ. ५ M adds after this line: मुहमहुराति भिरिय भक्खिज्जइ, and gloss सुखत्थ मधुरत्थे सति; P reads in its place मुहमहलति भिरिय भक्खिज्जइ, and after it reads किणरमिहुणिहिं लयहरिं गिज्जइ, फलु अउवु काइं मि भक्खिज्जइ. ६ MB add after this line किणरमिहुणिहिं लयहरिं गिज्जइ, जिणु गाइज्जइ जिणु पूइज्जइ. ७ M जहिं परिहा वहांति पयईहउ. ८ MBP °पहणैं. ९ MBP °जावैं.

9 a अं भय क लिय आमकलिका. 10 a परपरइ परपुपरतिम्; b बीउ बीजम्; पइइ प्रकिति; धरिस्यामकृष्टपचयानि धान्यानीत्यर्थः. 11 a °सास° सस्य. 13 °सेरिह° महिवः.  
19. 1 a छुइ छुइ यदा यदा, विती समाप्ता. 2 b पुव्वम्भासु कस्पवृक्षवद्वाञ्छितवस्तुप्रदानाभ्यासः.  
3 b पंके मकरन्दकर्ममे. 5 a णिव ईहउ नृपवाञ्छयेव. b परिहाउ खातकाः; पईहउ प्रदीर्घाः. 7 a °मऊह° °किरण° 8 a असियसियारुण° कृष्णश्वेतरक्त°. 9 दिवायरकंत सूर्यकान्तमणयः; सिहिभावहु अभिभावम्. 10 णीवइ विध्यापयति; °पुसिय° स्पृष्टाः; °ससिमणि° बन्दकान्तमणयः.

## 20

भरगयकयघरि पक्कविहसिउ  
 इंदणीलघरि णहविप्फुरणें  
 आणिज्जइ सामा पहसंती  
 कणयरइयमंदिरि वियरंती  
 करकंकेणु करैफरिसें जाणइ  
 दहिक्कुट्टिमयलि दइएं आणिउ  
 तहिं जि पडीवउं जहिं सियणिवसणु  
 फलिहसिलालयमज्झि णिधिट्टउ  
 पोमस्सयमंडवि आसीणी  
 घुसिणपिंडु ण णियंति विसूरइ  
 चंदणचिक्खिल्लें पडुं चिडुइ

जहिं चंचुइ लक्खिज्जइ पूसउ ।  
 धिमल्लें मोसियदामाहरणें ।  
 णाहें णवकुंडुज्जलदंती ।  
 अबरविसंझाराउ बहंती ।  
 णेउरु सदेण जि अहिणाणइ । 5  
 कलरावेण हंसु परियाणिउ ।  
 ठविउ ण पेच्छइ अहभोलउ जणु ।  
 पिहियकवाडु वि वहुवरु दिट्टउ ।  
 जंत्यु का वि हरिणच्छि पहाणी ।  
 जहि सोहाइ ण सग्गु वि पूरइ । 10  
 जहिं कप्पूरधूलि णहि उडुइ ।

घत्ता—ण कलागमु अक्खरु णेय गुरु णउ दासत्तणु संविहिउ ॥

वइसवणें एक्केडु जि भिडुणु जहिं आणिवि माणिवि णिहिउ ॥ २० ॥

## 21

मंदिरि मंदिरि सहसा भरियइं  
 गिज्जंतें मंगलसंघाएं  
 घरसंचारियं कलस वि दिट्टा  
 णिच्चुप्पाइयसुरयणहरिसहि  
 विडुतारावलिदिणयरपंगणु  
 गुरुअञ्जासणभयवसणडियउ

तोरणाइं रयणहिं विप्फुरियइं ।  
 देवदिण्णपडुपडहणियाएं ।  
 सरयब्भेसु वं चंद पइट्टा ।  
 संमज्जियदप्पणयलसरिसहि ।  
 दीसइ भूमिहि सयलु णहंगणु । 5  
 णं सोहाइ पायालइ पडियउ ।

20. १ B पंख°. २ MBP अवह वि. ३ MBP करकंसें. ४ M फलिहसिलालयमज्झि; BP °सिला-  
 यलि मज्झि. ५ MBP पउ but gloss in P पन्थाः.

21. १ MBP °संचारिम°. २ MBK य.

20. 1 a पक्ख वि हू सिउ पक्खयोर्विशिष्टा भूषा यस्य; b पूसउ शुकः. 5 b अ हि णा ण इ अभिजानाति.  
 6 a द हि कु ट्टि म य लि धवलशिलोपरि; दइएं मन्त्री. 7 a प डी व उं पतितम्. 8 a फ लि ह सि ला ल य° स्फटिक-  
 गृहम्; b व हु व र व धू व र म्. 9 b प हा णी चित्रकारिणी स्त्री. 10 a ण णि य न्ति रक्तवादपश्यन्ती; वि सूर इ  
 खिद्यते. 11 a प डु पन्थाः; वि डु इ आर्द्राभवति. 13 मा णि वि मानयित्वा.

21. 1 a सहसा शीघ्रम्; भरियइं बद्धानि. 5 a विडु° चन्द्रः. 6 a अञ्जासणं हीलना.

इह सो विदुः इह महारु  
 भवणसिहरवृष्टिं खे लंबिउ  
 णउ खोरउलु विरोहि ण राउलु  
 बंभणु वणिवरु ण हलु ण हाळिउ  
 धम्मु ण धणुहुं ण जिणैवइभासिउ  
 वेस ण कथइ वइसियजुत्ती  
 जहिं ण महव्वय पंचाणुव्वय  
 इय णं मण्णिवि णयणपियारु ।  
 जहिं णवजलहरु मोरं खुंबिउ ।  
 सुलमिण्णु णउ वीसर देउलु ।  
 णउ पासंदिउ को वि कर्वाळिउ । 10  
 पसुवह वार्हिं ण वेपं घोसिउ ।  
 अज्जव सव्वं णारि कुलउत्ती ।  
 कुच्छियकारिणि णउ कारुय पय ।

प्रस्ता—सामण्णइं सयलइं माणुसइं जहिं पकु वि सुविसेसिउ ॥

सियपुष्पयंतु सो णाहिणिउ जो भरहेण विदुसिउ ॥ २१ ॥

16

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकरपुष्पयंतविरहए  
 महाभव्वभरहाणुमण्णिणए महाकव्वे उज्ज्वाणयरीवर्णणं णाम  
 उइज्जो परिच्छेओ समत्तो ॥ २ ॥  
 ॥ संधि ॥ २ ॥

३ P विरोहु. ४ P कपालिउ. ५ MBP जिणवर°. ६ M पसुवह नहणु ण; B पसुवहु वहणु ण; P पसु  
 अहवाहणु. ७ MBP णारि सव्व. ८ K णाहिणिवु.

7 b° पि वार उ °प्रियतमः. 8 a खे आकाशे. 9 b सुल भिण्णु सुलं कलगमप्ये प्रोतं काष्ठं तेन युक्तं देवगृहं चैत्या-  
 ल्यादि न दुरयते. 11 b वा हिं न्याधेन. 12 a वे स वेदया; व इ सि य जु त्ती वेदयानां युक्तिर्वचनम्; b अज्ज व  
 आर्या. 13 b कुच्छि य कारिणि कुत्सितकारिणी; कारु य प य शिल्पजीविनां प्रजाः. 14 साम ण्ण इं समानविभूति-  
 युक्तानि, 15 सिय पुष्प यंतु सुअपुष्पतुल्यदन्तः; भरहेण भरतक्षेत्रेण, कारापकपक्षे भरतमहाभय्येन,

तर्हि जाम मणोज्जु भुंजइ रंज्जु णिच्चलु णाहिणरिंदु ॥  
मंडियसविमाणु कालपमाणु चित्तर ताम सुरिंदु ॥ भुवकं ॥

1

पेहहि महिणाहें माणियहे	उयरइ मरुपविहि राणियहे ।	
छैम्मासहिं होसइ परमजिणु	णासइ ण कम्मु भुत्तीइ विणु ।	
सम्मत्तसमत्तणु संभरमि	गब्भासयसोहणु लहु करमि ।	5
लइ एउं जि कज्जु महुं तणउं	इक्खालमि पेसणु घणघणउं ।	
इयं चित्तिवि पुणु हियवइ धरिय	छणससिमुहि पीणपयोहरिय ।	
सिरि हिरि दिहि देवी ललियकर	घर कंति कित्ति लच्छी य घर ।	
छ वि एयउ चारु चवंतिघउ	पणपण णपण णैवंतियउ ।	
इंदीवरदीहरणेत्तियउ	सुरणाहणिहेलणु पत्तियउ ।	10
वेळइललयाणिहगत्तियउ	देविंदे ज्ञप्ति पउत्तियउ ।	

घत्ता—आइवि णरलोउ भुंजियभोउ णाहिणरेसँहु गेहु ॥

जिणगम्भाणिवासु दुक्कियणासु सोहइ देविहि देहु ॥ १ ॥

GK give at the commencement of this samdhi आदित्योदयपर्वतादुत्तरात् for which see footnote on Second Samdhi; MBP give the following stanza:—

बलिजिमूतदधीन्निषु सर्वेषु स्वर्गितामुपगतेषु ।

संप्रत्यनन्यगतिकस्त्यागुणो भरतमावसति ॥

1. १ MBP भोज्जु. २ MP एयहि; B एवहि. ३ MBP छहिं मासहिं. ४ MBP इय चित्तेविणु हियवइ. ५ P णमंतियउ. ६ M °लयाणियवत्तियउ; BP °लयाणिब° ७ MBP °णरेसरगेहु.

1. 1 म णोउज्जु मनोज्जुम्; णिच्चलु निच्चलम्. 2 मंडियसविमाणु मण्डितस्वविमानः इन्द्रश्चिन्तयति; कालपमाणु तृतीयकालस्यान्तः कियान् वर्तते. 4 b णासइ ण कम्मु भुत्तीइ विणु सर्वाधीसिद्धेरप्यागत्य गर्भेऽ-तरिष्यति तेन ज्ञायते भुक्तिं विना कर्म न नश्यति. 5 a सम्मत्तसमत्तणु सम्मत्त्वस्य समग्रत्वम्; संभरमि संस्मरामि, दर्शयामीत्यर्थः; b °सो हणु °शोधनम्. 6 b घणघणउं सातिशयम्. 8 a ललियकर कोमलहस्ताः b वरपराः उत्कृष्टाः. 9 a छ वि एयउ एताःश्रयादियइदेवताः. 10 a इंदीवरेत्यादि-नीलोत्पलदीर्घनेत्राः; b सुर-णाहणिहेलणु इन्द्रमन्दिरं, इन्द्रालयम्. 11 a वेळइललयाणिहगत्तियउ कोमलतानिभगात्राः; b पउत्तियउ प्रयुक्ताः.

## 2

ता संबलियउ सुररमणियउ  
 कयसग्गालयणिग्गमणियउ  
 तेह्लोक्कमारमणदमणियउ  
 कुंडलैचैचइयकवोलियउ  
 जंतिउ जोयंति ण के सियउ  
 तणुतेउज्जोइयअंबरउ  
 णयसत्तभंगिविहिरसणियउ  
 णिरु सूहवदाणवारिरयउ

मेहलरंखोलिरैरमणियउ ।  
 मयमंयरसिंधुरगमणियउ ।  
 विरैयाहुं मि रयमणदमणियउ ।  
 णं मयणे बाणकओलियउ ।  
 अलिसंणिहमंगुरकेसियउ । 5  
 घोलंतविचित्तवरंबरउ ।  
 मिच्छोमयहेउणिरसणियउ ।  
 णं भमरिउ दाणवारिरयउ ।

घत्ता—एयउ अण्णाउ सुरकण्णाउ धरिवि णिकामिणिवेसु ॥

आर्याउ परेण भत्तिभरेण सिरिमरुपविहि पासु ॥ २ ॥

10

## 3

परमेसरि सुरवरलोयचुर्या  
 दीसइ सुरणारिहिं अज्जसुया  
 सब्वाग्गयवसुलक्कणिया  
 वंदारयवंदियपायजुया

कोमलमुणालवेह्लहलभुया ।  
 णं विहिविण्णोणसमात्तिहुया ।  
 फणिसुरणरमणमुसुमूरणिया ।  
 अइल्लियहिं थोत्तसपहिं थुया ।

2. १ T reads °रंखोलन° but adds: रंखोलिरेति पाठ मेखलया रंखोलनशीलया विलसनशीलया रमणीयाः. २ MBP विरयाहिं but gloss विरतानां यतीनाम्. ३ B कौंडलचैचइय°; M °विचइय°. ४ B बाणकम्मु लियउ; P बाणकवोलियउ and gloss बाणकुरेखाः. ५ K मिच्छायम°; P मिच्छामय° but gloss मिच्छायम°. ६ MBP आइयउ.

3. १ MBP °थुय. २ M विहिविण्णाण°.

2. 1 b मेहलेन्यादि—मेखलया रंखोलनशीलया विलसनशीलया रमणीयाः 2 a कयेति—कृतं स्वर्गालयाकिर्णमनं याभिः; b मयमंयरं मदेन मन्थरो मन्दः; °सिंधुर° हस्ती 3 a तेह्लोकेत्यादि—त्रैलोक्यस्य मारमणा लक्ष्मीपतयः तेषां दमनिकाः; b विरयाहुं यतीनाम्; रयमणदमणयउ रते सुरते मनः रतमनः तद्दातीति रतमनोर्दमणित यासाम्. 4 a °चचइय° भूषितौ. b मयणे बाणकओलियउ मदेनेन कृताः बाणपंकयः इव. 5 a जो यं ति ण के पयन्ति न के, अपि तु सर्वे मनुष्या देवा वा पयन्ति; सियउ प्रियः. 6 a अंबरउ आकाशम्; b °व रं ब रउ देवाङ्गवल्गम् 7 a णयेन्यादि—नया नैगमादयः सप्तभङ्गी च तेषां विधि. रसनायां जिह्वायां यासां ताः; b मिच्छेत्यादि—मिच्छामत तस्य हेतवः तेषां निरसनिकाः. 8 a दा ण वा रि° इन्द्रादयो देवाः; b दाण वा रि रयउ मदवारिणि रताः, अथवा मदजले रयो वेगो यासां ताः. 9 णि कामिणि° मनुष्यस्त्री ( नृकामिनी ).

3. 1 a °चुया °च्युता; b °वेह्लहल° कोमल°. 2 a अज्जसुया भोगभूमिजस्य पुत्री; b विहिविण्णाणसमात्तिहुया विधिविज्ञानसमाप्तिभूता उत्तररूपत्वात्. 3 b मणमुसुमूरणिया मनोद्राविका, 4 a वंदारय° देवाः.

अब्धो जय जय जगगुरुजगणि  
जय कम्मकाणणाणलभरणि  
पइं दिट्टइ णिट्टइ पावमलु  
पइं लद्धउं महिलाजम्मफलु

जय थणयलविलुलियहारमणि । 5  
जय धम्मविडवसंभवधरणि ।  
संपज्जइ संविंतिउ सयलु ।  
तुइ कुच्छिहि होसइ जिणधवलु ।

घत्ता—णिरु सरसु णडंतु पयहि पडंतु विरइयपंजलिहत्यु ॥

संपोइय पइ ईच्छइ सेव अमरविलासिणिसत्यु ॥ ३ ॥

10

4

क वि अलयतिलय देविहि करइ  
क वि अण्णइ वररयणाहरणु  
क वि णब्बइ गायइ महुरसरु  
क वि परिरक्खइ णिसियासिकरी  
अक्खाणउं का वि किं पि कहइ  
क वि चारचार विणपं णवइ  
क वि मालउ वेलिउ उज्जलउ  
छम्मासु जाम संजणियदिहि  
णिवप्रंगंति णिहिणिहियधणु

क वि आदंसणु अमाइ धरइ ।  
क वि लिप्पइ कुंकुमेण चरणु ।  
क वि पारंमइ विणोउ अवरु ।  
क वि वारि परिट्टिय दंडधरी ।  
दिण्णउं कणइलु का वि वइइ । 5  
क वि सुरसरिसरसलिलहिं णवइ ।  
ढोयइ संवलहणु सुपरिमलउ ।  
पयडंतु समीहिय सोक्खणिहि ।  
बुट्टउ रयणिहि वइसवणु घणु ।

घत्ता—हंसि वं सरपोमि रमि सुहमि उरविलुलियहारावलि ॥

10

सोचंति समग्गि सयणयलगि सइं पेच्छइ सिधिणावलि ॥ ४ ॥

३ P णट्टइ. ४ MBP विरइयअंजलि°. ५ MBP संपाइउ. ६ MBP इच्छिमसेव.

4. १ P कणयलु. २ P वेलउ. ३ M ढोइय. ४ MBP समलहणु. ५ MBP °पंगंति. ६ MB वइसवणघणु. ७ M हंसियवरपोमि; BP हंसि व वरपोमि. ८ MB पेच्छिवि. ९ MBP सुइणावलि.

5 a अब्धो हे मातः. 6 a °अरणि अग्न्युत्पादककाष्ठम्, कर्मदहनसमर्थकरदेवोत्पत्तिहेतुत्वात्; b °वि ड व° पादपः.  
7 a णिट्टइ नश्यति. 8 b जिण धवलु जिनवृषभः. 10 सेव सेवाम्; °स त्यु सार्थः समूहः.

4. 1 a अ ल य तिल य अलिके ललाटे तिलकम्; b आ दं स णु दर्पणः 3 b वि णो उ विनोदम्. 4 b वारि हारे. 5 a अक्खा णउं कथानकम्; b क ण इ लु क्रीडाशुकः. 7 a मालउ पुष्पमालाः; वे लि उ वल्लशाटी; b स व ल ह णु विलेपनम्. 9 a प्रं ग णं ति प्राङ्गणमध्ये; णि हि णि हि य ध णु निधिषु निहितं स्थापितं धनं येन; b र य- णि हिं रल्लैः; व इ स व णु घ णु धनद एव मेघः. 10 सर पो मि सरोवरपद्मे; सु ह म्मि शोभनप्रासादे; 11 स म गि ण सम्मं अगं उपरितनभागो यस्य; स य ण य ल गि ण शयनतले अग्ने प्रधाने.

5

पत्तिया	सणाहणेहरत्तिया ।	
सुत्तिया	णिमीलियाच्छिवत्तिया ।	
कामए	णिसाविरामजामए ।	
इच्छए	सुहावहं णियच्छए ।	
कंतयं	चउप्पयारदंतयं ।	5
णिम्भरं	झरंतदाणणिज्झरं ।	
संसयं	सरासणाहवंसयं ।	
तुंगयं	मिलंतमत्तभिगयं ।	
वारणं	गिरिंदमिस्सिद्वारणं ।	
पंतयं	बलेण डेक्करंतयं ।	10
गोवहं	अलद्धजुज्झगोवहं ।	
दुद्धरं	फुरंतणक्खपंजरं ।	
भासुरं	घुलंतकंधकेसरं ।	
कोवणं	जलंतपिगलोवणं ।	
भीसणं	मुँहा विमुक्कणीसणं ।	15
सीहयं	विलंबमाणजीहयं ।	
अंचियं	दिसागएहिं सिंचियं ।	
लच्छियं	विबुद्धपंकयच्छियं ।	
दंदयं	पहुल्लदामदंदयं ।	
संमुहं	समुग्गयं सुहारुहं ।	20
भाहरं	सुदूसहं तमीहरं ।	

5. १ PGT record a p अलट्ट and add: अलट्ट इति पाठे अलट्टो अशूरो युद्धे गोपतिर्यस्य. २ M कौशर्ण. ३ MB °लोअणं. ४ MBP मुद्धोविमुक्क° ५ M °सिंचय, ६ MPT °दुंदयं.

5. 1 a पत्तिया पत्नी; b सणाह° स्वनाय°. 2 b णिमीलियच्छिवत्तिया निमीलिताक्षिपक्ष्मा. 3 a कामए कामदे वाञ्छितप्रदे कामोद्रेकजनके वा; b °विरामजामए °पश्चिमयामे. 4 a इच्छए स्वेच्छया; b णियच्छए निरीक्षते. 5 b चउप्पयारदंतयं चतुर्दन्तमित्यर्थः. 7 a संसयं प्रशंसनीयम्; b सरासणाहवंसय भनुराकारपृष्ठम्. 11 b अलद्धजुज्झगोवहं अलब्धो युद्धार्थं गोपतिर्बलीवर्द्धो येन. 15 b मुँहा विमुक्क° मुखेन मुक्कः. 17 a अंचियं पूजितम्; b सिंचियं स्नातम्. 18 b विबुद्धपंकयच्छियं विकसितपद्मनेत्राम्. 19 a दंदयं गरिष्ठम्; b पहुल्ल° प्रफुल्ल°; °दंदयं °द्वन्द्वम्. 21 b तमीहरं रात्रिबिनाशकं चन्द्रम्.

हंसयं	खमाणसैकहंसयं ।	
रत्तयं	सरंतरे तरंतयं ।	
रम्मयं	चलं श्लाण जुम्मयं ।	
उम्भं	धियंभैकुंमसंघं ।	25
मायरं	पर्हुल्लपंकयायरं ।	
श्लायरं	रसेंतवारिभीयरं ।	
भासणं	मैयारिरुवभूर्संणं ।	
सुंदरं	पुरंदरस्स मंदिरं ।	
सोहणं	महाहिणो णिहेलणं ।	30
उंभेयं	अणेरंणसंचयं ।	
दित्तयं	इयासणं पलित्तयं ।	

घसा—इय जोइवि मुद्ध पुणु पडिबुद्ध सिबिणइ जं जिह दिट्ठु ॥  
उइयइ पच्चूहे अरुणमऊहे रायहु तं तिहँ सिट्ठु ॥ ५ ॥

6

ता णरबइ णारीसारियहे	अक्खइ मरुपविभट्टारियहे ।	
दिट्ठेण गइंवे गुरुहुं गुरु	होसइ णंदणु पयपणयसुरु ।	
गोणाहे गोमंडलु धरइ	सीहेण सविकमु वित्थरइ ।	
सिरिदंसणि लहइ तिलोयसिरि	दामेण वि जाणहि पुरिसहरि ।	
पावइ पविहररइयच्चणउं	जं दिट्ठुउ पइं मयलंछणउ ।	5

७ BT वियंभ and gloss in T वियंभोऽमृतजलम्. ८ P पफुल्ल°. ९ MBP सरंत°. १० M सवारि°. ११ MBP °भीसणं, १२ MBP उच्चयं. १३ B °रयण°. १४ B तिहे.

22 a हंसयं आक्षिप्यम्; b खमाणसैकहंसयं गगनमेव मानसरोवरं तस्य हंसम्. 23 a रत्तयं अन्योन्यकीडा-  
रत्तम्. 24 b जुम्मयं युग्मम्. 25 a उ उम्भं प्रकटम्; b धियंभं धृतजलकुम्भयुग्मम्. 26 a मायरं लक्ष्मी-  
करम्. 27 b रसेंतवारिभीयरं शब्दायमानजलमयानकम्. 28 b मयारि° सिंहः. 29 b पुरंदरस्स  
मंदिरं विमानम्. 30 b महाहिणो नागेन्द्रस्य; णिहेलणं गृहम्. 31 b रण° रत्न°. 32 b पलित्तयं प्रदीप्तम्.  
34 पच्चूहे आक्षिप्ये; अरुणमऊहे आरक्तकिरणे.

6. 1 a णारीसारियहे स्त्रीमध्ये उत्तमायाः. ४ a गोणाहे वृषभेण; गोमंडलु भूषण्डलम्. 4 b पुरिस-  
हरि पुरुषसिंहः. 5 a पविहर° इन्द्रः.



तं होसइ सुउ जणमणहरणु  
 तं मोहंधारविणासयरु  
 झसजुयल्ले होही सोक्खणिहि  
 कमलायरसायरेहि विहिं मि  
 सिंहासणेण पंचमिय गइ  
 दिट्ठेहिं तियसणायहं घरेहिं  
 रयणोहें जिणसंपत्तिफलु

जं पुणु वि पलोइउ सरकिरणु ।  
 भव्वयणणालिणवणद्विसयरु ।  
 कुंभेहिं वि सुरअहिसेयविहि ।  
 गुणवंतु गहिरु भुवणहं तिहिं मि ।  
 पावेसइ दंसणसुद्धमइ । 10  
 सेवेवुउ देविहिं विसहरेहिं ।  
 णिइइहर हुयासें कम्ममलु ।

घत्ता—सिविणयफलु अञ्जु णिरु णिरवञ्जु कहमि ण रक्खमि गुज्जु ॥

जगलग्गणखंभु धम्भारंभु होसइ णंदणु तुज्झै ॥ ६ ॥

## 7

ता तम्मि पत्तम्मि तइयम्मि कालम्मि  
 कप्पहुमच्छेयपयणियवियारम्मि  
 भवसाप्पिणीसप्पिणीसंपवेसम्मि  
 मायामहामोहबंधणइं लुंजेवि  
 सोलह वि तवभावणाभो पहावेवि  
 इंदियइं णिंदियइं णिग्घणइं भंजेवि  
 जम्मंतराबद्धसुंक्रियपहावेण  
 आसाढमासम्मि किण्हम्मि वीयम्मि  
 सव्वत्थसिद्धीविमाणउ ओयरइ

णक्खत्तसोहंतगयणंतरालम्मि ।  
 ससिबिंबरविबिंबधत्थंधयारम्मि ।  
 णरभोयपम्भारसुहभरियगासम्मि ।  
 साराइं पउराइं पुण्णाइं संचेवि ।  
 जगणमियतित्थयरणां समज्जेवि । 5  
 तेत्तीसजल्लणिहिसमाणाउ भुंजेवि ।  
 हिमहारणीहारसियवसहरुधेण ।  
 संपत्तप उत्तरासाढरिक्खम्मि ।  
 परमेसरो जणणिगम्भम्मि संवरइ ।

6. १ M पुलोइउ; P पलोयउ. २ MB सेवेवुउ.

7. १ B सुक्यं.

6 b सरकिरणु सूर्यः. 8 a झसजुयल्ले मत्स्यमुग्गेन, b सुरअहिसेयं देवाभिषेकं. 10 a पंचमियगइ मुक्तिः. 11 a णायहं णागानाम्. 14 जगलग्गणं जगदाधारं.

7. 2 a कप्पहुमच्छेयपयणियवियारम्मि कल्पद्रुमविच्छेदेन जनितविकारे; b धत्थंधयारम्मि व्यवस्था-  
 न्धकारे. 3 a अवसाप्पिणीसप्पिणीं अवसर्पिणीकाल एव नागिणी; b णासम्मि भोगप्राप्ते. 5 a सोलह दर्शन-  
 विनुद्धयादयः षोडश भावनाः; पहावेवि प्रभाव्य. 6 b णसमाणाउ णसमानं आयुः. 7 b हिमं अवश्यायी नीहारो  
 वा; णसियवसहं भवलवृषभः. 8 a किण्हम्मि वीयम्मि कृष्णाद्वितीयायाम्. 9 b संवरइ संवरणं प्रवेशं  
 करोति.

सरयभममज्जामि रुहंरुंदु व्व  
आया सुरा गम्भवासं णमंसेवि  
तव्वासराए व देवाहिवाणाइ  
जक्खेण माणिककुट्टी कया ताम

सयवसिणीपसए तोयविंदु व्व । 10  
सग्गं गया रीयदेवि पसंसेवि ।  
रिक्खवणाइंदपालिज्जमाणाइ ।  
मासेहिं तिहिं हीणु संवच्छरो जाम ।

घत्ता—उयरत्थु अवाहु वडुइ णाहु तणुकिरणइं पसरंति ॥

मरुदेविहिं देहे णं णवमेहे णवरवियर णिग्गंति ॥ ७ ॥

15

8

मासमि चइत्ते पक्खे कसणे  
उत्तरासाढारिक्खवरे  
जिणु तियसालावणीहिं झुणित  
उत्तत्तदित्ततवणीयछवि  
णं विष्फुरंतु अरणीइ सिहि  
णं जीवसहाउ सिद्धसहए  
णं अमयलवेहिं जि णिम्मविउ  
जगु णरयंपडंतउ णंवि सहिउ

अहिमयरवारि कुंडणवमिदिणे ।  
जोयमि वैमिह बहुसोक्खयरे ।  
मरुदेविइ णंदणु संजाणित ।  
सुरवइदिसाइ णं बालरवि ।  
णं दिक्खालित धरणीइ णिहि । 5  
णं अत्थु महाकइकयकहए ।  
णं गुणगणु पुंजेप्पिणु ठविउ ।  
णं धम्मं पुरिसरुवु गहिउ ।

घत्ता—जणतमणिणासु लोयपयासु कित्तिवेल्लिघरकंदु ॥

मयमलपम्भट्टु कुवलयइट्टु उइउ जिणाहिवचंदु ॥ ८ ॥

10

२ M °रुंदयंदु व्व; T °इदु व्व. ३ MBP रायदेवी. ४ MBP जक्खिद°, but T रक्खिद° राक्षसेन्द्राः.

8. १ B चइत्तहो; P चइत्ति. २ MBP फुडु. ३ MBP बंभि. ४ M मरुदेवि; B मरुदेवे; P मरुदेवी°. ५ P दिक्खालित and gloss दर्शितः. ६ MP णरइ पडंतउ. ७ MB णउ.

10 a रुहंरुंदु व्व महादीप्यमानचन्द्र इव. 12 a तव्वा सरा ए तद्दिनादारभ्य; देवा हि वा णा इ इन्द्रत्यासया. 14 अवाहु बाधारहितः. 12 णवरवियर बालार्करश्मयः.

8. 1 b अहिमयरवारि रविदिने. 3 a तियसालावणीहि त्रिदशबीणाभिः; झुणित गायितः. 4 a तवणीयछवि सुवर्णकान्तिः; b सुरवइदिसाइ पूर्वदिशा इव. 6 a सिद्धसहए सिद्धसभया श्रेण्या, यथा सिद्ध-  
भ्यानेनात्मा दृश्यते. 10 मयमल° मदाश्च मलाश्च, अन्यत्र मृगः एव मलः; कुवलय° पृथ्वीमण्डलं कुमुद-  
संघातश्च.

जाणतिपण णिपण णिरुंसें  
उप्यण्णे जाहे ह्यदणो  
कप्पेसुं ससहावे णाया  
उट्टिय णिण्णासियदिण्णाया  
वेंतरदेवावासवेपसुं  
संखरवो भावणभवणेसुं  
णाउं णाणेणं णिप्पावं  
बुद्धो चित्ते धम्मणंवे  
हत्थिदे एरावयणामो  
गलियकथोलमओलजलहो  
कच्छरिच्छमालाछुरियंगो  
पत्तो मत्तो मंदरमेत्तो  
कंतिपसाहियणहमित्ताइं  
पत्ते पत्ते सुरंतरुणीओ  
इय द्दूणं तमिहमलंघं  
सव्वत्थ वि धयच्छत्तरवण्णं  
सव्वत्थ वि गयणाणाजाणं  
सव्वत्थ वि पसरियउल्लोवं  
सव्वत्थ वि सरगेयरसालं  
तरुपल्लवियं पिव णहवलयं

लक्षणघंजणचक्षियगतं ।  
जाओ इंदस्सासणकंपो ।  
घंटाटंकारा संजाया ।  
ओइसवासे सीहणिणाया ।  
गजंते पडहा विवरेसुं । 5  
संपण्णो खोहो भुवणेसुं ।  
भूमीभाए ह्यं देवं ।  
चलिओ सक्को सक्को चंदो ।  
वेउत्थियसरीरपरिणामो ।  
रणझणंतगेजावलिसहो । 10  
कण्णचमरविणिवारियभिंणो ।  
लीलायंतो बहुविहदंतो ।  
दंति दंति सरसयवत्ताइं ।  
णच्चंतीओ थोरथणीओ ।  
चडिओ सोहम्मीसो सिग्घं । 15  
सव्वत्थ वि चामरसंछण्णं ।  
सव्वत्थ वि धावंतविमाणं ।  
सव्वत्थ वि जयदुंदुहिरावं ।  
सव्वत्थ वि उच्चाइयमालं ।  
सोहइ सुरवरपायाउलयं । 20

9. १ MBP णिउत्ते. २ P °पएमु. ३ MBP विपरेसुं but gloss in P विपरेसुं विवरेषु गगनेषु T परेषु उत्तमेषु. ४ MB सक्को सुक्को. ५ P अइरावय°. ६ MB पत्तो. ७ MBP सुरवरतरुणीओ.

9. पादा कुलकं छन्दः. 1 b लक्षणं शंखकुलिशादि; घंजणं तिलकमसकादि. 3 a णा या उपपजाः. 5 a °व ए सुं पदेषु स्थानेषु; b विवरे सुं विवरेषु गगनेषु. 7 a णिप्पावं निष्पापम्. 8 b सक्को शक्तः; सक्को सार्कः आदित्यसहितः. 10 a °म ओ ल ज ल हो मदप्रवाहजलेनार्द्रः. 11 a कच्छरिच्छमाला छुरियंगो कक्षया वरत्रया नक्षत्रमालया च स्फुरिताङ्गः. 13 a कंतिपसाहियणहमित्ताइं कान्त्या प्रसाधिता मण्डिता नभोभिन्ना आकाशादित्या येः; b सरसयवत्ताइं सरसः उच्छृतानि कमलानि. 15 a तमिहं तं ऐरावतम् ( तम्+इमम् ); अलंघं अलंघनीयमतीवोष्णम्. 18 a पसरियउल्लोवं प्रसृतोल्लोवं चन्द्रापकम्. 20 b सुरवरपायाउलयं देवेन्द्रपादैराकुलम्, अन्यत्र पादाकुलकं छन्दः.

घत्ता—णवतणुरोमंक्षु दावइ उंक्षु जिणमवि हरिसु वंहति ॥  
तर्ह चल्दलपाणि णडइ व खोणि भावें बहुरसवंति ॥ ९ ॥

10

महिसेहि मेसेहि	आसेहि भासेहि ।	
हंसेहि मोरेहि	कुररेहि कीरेहि ।	
सरहेहि करहेहि	दुरपहि वसहेहि ।	
दीधीतरच्छेहि	रिच्छेहि मच्छेहि ।	
सारंगसीहेहि	तरुगिरिहि मेहेहि ।	5
सिहि जम महाभीस	णेरिय समुहेस ।	
मारुय कुबेरक	ईसाण णीसंक ।	
मज्झाम्भि खामाहिं	मुद्धाहि सामाहिं ।	
छणयंदवैयणाहिं	णवणलिणर्णयणाहिं ।	
थणघुलियहाराहिं	पसरियवियाराहिं ।	10
धयरट्टगांमिणिहिं	सोहंतकामिणिहिं ।	
गयणोवडंतीहिं	सरसं णडंतीहिं ।	
वज्जंतवज्जेहिं	कीलंतखुज्जेहिं ।	
बाहुरविल्लेहिं	हुक्कंतमल्लेहिं ।	
बहुविहविलासेहिं	मंगलणिघोसेहिं ।	15
संचल्लिया एम्ब	णाणाविहा देव ।	

घत्ता—पावेवि अउज्झ परमदुगेज्झ परियंचेवि तिवार ॥

फणि दिणयर चंदु भणइ सुरिंदु जय णाहेय कुमार ॥ १० ॥

८ MBP उणु. ९ MBP तरु वरदलपाणि.

10. १ BP कुररेहि. २ MB दुरहेहि ३ MB रिच्छेहि. ४ B मारुव. ५ MBP °वगणेहि. ६ MBP °णयणेहि. ७ MBP गामणिहि. ८ MBP परदुग्गेज्झ. ९ MP °दिणयर.

10. 1 b भासेहि उल्लेः. 3 b दुरएहि द्विरदैर्गजैः. 6 b समुहेस वरुण. 7 b णीसंक इन्द्रः  
8 a खामाहिं तुच्छोदरीभिः. 11 a धयरट्टं हंसः, 12 a गयणोवडंतीहिं गगनादवतरन्तीभिः. 14 a  
बाहुरविल्लेहिं करास्फोटनशब्दैः 17 परियंचेवि प्रवक्षिणीकृत्य.

## II

गयणग्गलग्गहिमणिहसिहर  
 जंपिवि पियवयणं णिवपवरे  
 अमयासणगणसंमाणियए  
 सहसक्खे दिट्ठउ परमपर  
 छज्जइ अण्णाणतमोहहर  
 णं बद्धउ सिवसुहकणथरसु  
 णं सर्यलकलायर उग्गामिउ  
 देविइ दिज्जंतुं णियच्छियउ  
 वरवंदारयवंदहिं णंविउ  
 को ण गणइ पुण्णपरिप्फुरिउ  
 वमरइं धिवंति अमराहिबइ

पइसेप्पिणु णाहिणंरिंदघर ।  
 मायहि मायासिसु देवि करे ।  
 कड्डिउ देविइ इंदणियए ।  
 कर्मलसरे णं णवदिवसयर ।  
 णं अंकुरसि थिउ धम्मतर । 5  
 णं पुरिसरुवि संठियउ जसु ।  
 णं पक्कहिं लक्खणपुंजु किउ ।  
 सोहम्मिदेण पडिच्छियउ ।  
 पणवेप्पिणु अंकग्गइ ठविउ ।  
 ईसाणे धवलछसु धरिउ । 10  
 साणक्कुमारमाहिंदवइ ।

घत्ता—जगु जित्तउ जेहिं णिम्मिउ तेहिं अणुयहिं देवहु देहु ॥  
 तं सुइरु णियंतु वससयणेसु विभिइउं पुलइयदेहु ॥ ११ ॥

## 12

पुणु पभणइ महुं हयकम्ममलु  
 एहउं तिहुयणपरमेसरहो  
 इय घोसिवि पुणु पुणु जोइयउ  
 परमेट्टि लएप्पिणु भमियगहे  
 भयसयइं सणउयइं जोणयहं

बहुलोयणनु जायउ सहलु ।  
 जं दिट्ठउं रुवु जिणेसरहो ।  
 इंदे अइरावउ चोइयउ ।  
 सच्छरु सामरु संचलिउ णहे ।  
 महि मुइवि ठाणु तारायणहं । 5

11. १ M °णरिंदु घर. २ MB पेमसरे. ३ BP सयलु कलायर. ४ MB णिज्जतु. ५ MBP णमिउ.  
 ६ MB पुण्णपरिप्फुरिउ. ७ MBP विभिउ.

12. १ T p णयसयइं and explains it as णयसयइं इति पाठेऽप्ययमेवार्थः.

11. 1 a गयणग्गलग्ग° आकाशरूढ°; हिमणिह° हिमसदशम्. 2 a णिवपवरे नाभिराजे; b देवि  
 इत्वा. 3 a अमयासण° देवाः; b कड्डिउ आनीतः; 4 a सहसक्खे इन्द्रेण. 5 a छज्जइ शोमते. 8 a  
 दिज्जंतु दीयमानः; b पडिच्छियउ स्वीकृतः. 9 b अंकग्गइ उत्सङ्गाप्रे. 10 a पुण्णपरिप्फुरिउ पुण्यप्रभा-  
 वम्. 11 a धिवंति क्षिपन्ति. 12 जित्तउ जितम्; अणुयहिं परमाणुभिः. 13 सुइरु सुचिरम्.

12. 1 b बहुलोयणनु सहस्रनेत्रत्वम्. 4 a भमियगहे अमितप्रहे आकाशे; b सच्छरु साप्सराः  
 अप्सरोभिः सहितः; सामरु देवैः सहितः. 5 a भयसयइं सप्तशतानि; सणउयइं नवत्यधिकानि.

तेत्याउ सुदूसहकरपसर  
उप्परि दहहिं जि रधि परिभमइ  
चउडु जि रिक्खोडु गिरिक्खियउ  
तिहिं सुकु तिहिं जि सुरगुरु भणमि  
सउ एम दहुत्तरु लंघियउ  
सहसाइं गंपि अट्टणवइ  
पत्तेण जि सोहर दीहरिय  
अट्टेव समुण्णय हिमविमल  
जहिं तहिं पत्तेण पवित्ततणु  
देवाहिंविण तेल्लोकहिउ

जोयणहिं पसाहियसरयसर ।  
पुणु असियहिं ससि सइं संकमइ ।  
पुणु तेसिपहिं बुडु लक्खियउ ।  
तिहिं अंगारउ तिहिं सणि गणमि ।  
सुद्धायासु वि आसंघियउ । 10  
अवरु वि जोयणसउ तियसवइ ।  
जोयण पण्णास पँवित्थरिय ।  
अद्धिदुसरिच्छी पंडुसिल ।  
जय जय पभणते परमजिणु ।  
तहि उप्परि सीहासाणि णिहिउ । 15

घत्ता—पहु सहइ णिसण्णु कंचणवण्णु असहियतेयपसंगु ॥  
णं कुरुहकरेहिं वेल्लिहरेहिं मंदरु ढंकरु अंगु ॥ १२ ॥

13

जिणणाहहु भावें मेरुगिरि  
णं पर्णमइ फलभरणमियतरु  
णं कोइलकलरवेण चषइ  
पक्खालंतु व पहुकमकमलु  
लिपइ व सविणय पणयवसेण  
जोयइ व रुवु सु सियासियहिं  
णञ्चइ व पणच्चियणीलगलु

णं हरिसैं दावइ णिययसिरि ।  
णं घैल्लइ चमरीमय चमरु ।  
णं फलिहसिलासणाइं ठवइ ।  
आणइ जवेण णिज्जरणजलु ।  
करिणिहसणच्चुयचंदणरसेण । 5  
अहिणवणलिणच्छिहिं वियसियहिं ।  
गायइ व हणुणुणियरँणिय भसलु ।

२ P सुदूसहु. ३ B गिरेखियउ. ४ M सहसाइं गंपिणु; BP सहसा गंपिणु. ५ M सवित्थरय; BP सवित्थरिय.  
13. १ M पणवइ. २ M वल्लय. ३ M सुकुणिय<sup>०</sup>. ४ MBP <sup>०</sup>रुणिय.

6 a ते त्याउ तस्मादागतः; b <sup>०</sup>सरयसरु शरस्कालसरोवरम्, अथवा सरोजले जातानि सरजानि पद्मानि तैरुपलक्षितं सरः. 7 b सइं स्वयम्. 8 a रिक्खोडु अश्विन्यादिसप्तविंशतक्षत्राणि. 9 a तिहिं त्रिभिः; सुकु कुक्रः; सुरगुरु वृहस्पतिः; b अंगारउ अङ्गारकः कुजो भौमः; सणि शनैश्वरः. 10 b सुद्धायासु सुद्धमाकाशम्; आसंघियउ आश्रितम्. 11 a सहसाइं सहस्राणि. 13 b अद्धिदुसरिच्छी अर्धचन्द्राकारा. 15 a <sup>०</sup>हिउ हितः. 16 सहइ शोभते; 17 कुरुहकरेहिं वृक्षकरैः; वेल्लिहरेहिं वल्लीधारकैः; मंदरु ढंकरु अंगु मेरुर्निजाङ्गं प्रच्छादयति.

13. 1 b णिययसिरि निजश्रीः. 2 b चमरीमय चमरीमृगः. 4 b जवेण वेगेण. 5 b करिणिहसण<sup>०</sup> हस्तिनिघर्षण<sup>०</sup>. 7 a <sup>०</sup>णीलगलु मयूरः.

णं कुसुमामोयं णीससइ

णं रयणरयणपंतिहिं हसइ ।

घसा—संठिउ मणिरंणि मंदरसिणि चंपयवासविमीसे ॥

जिणु सासयसोकखु णावइ मोकखु यिउ तेलोकहु सीसे ॥ १३ ॥ 10

## 14

ता हयाइं भेरिअल्लरीमुइंगसंखतालकाहलीइं वज्जयाइं ।

खिम्भिसेहिं पाणिपायकुंचियाइं णच्चियाइं चामैणाइं खुज्जयाइं ॥

भूयजक्खकिंणरेहिं खेयरेहिं रक्खसेहिं णायणाइणीसपहिं ।

आयपहिं पूरियं णिरंतंरं णहंतंरं भवंतभावभाविपहिं ॥

बालहंसगामिणीहिं इंदचंदकामिणीहिं गाइयाइं मंगलाइं । 5

दम्भदोर्वपूयबीयमट्टियाकणेहिं ताइं णिमियाइं णिम्मलाइं ।

उद्धवद्धणिद्धचारुचीरमंडवे फुरंतमोसिपहिं मंडिऊण ।

लोयतावकारणाइं कुच्छियाइं वंछियाइं छंडिऊण ॥

सहिऊण णायरेण सायरेण सासणामरे वरे पओसिऊण ।

गंधधूवफुल्लदीवतोयतंदुलण्णजण्णभायए णिवेसिऊण ॥ 10

सक्खिच्चिकालणेरिअण्णवाणिले कुबेरसूलिणे समच्चिऊण ।

मंतपुव्वियं विहिं सुहावहं समागमे समासियं समासिऊण ॥

जीय देव णंद वद्ध सिद्ध बुद्ध सुद्धसील सामिसाल भाणिऊण ।

दोहएहिं दोधएहिं खंधएहिं चित्तवित्तसंथुइहिं माणिऊण ॥

14. GK mention at the beginning विंगलणंदो णाम वंडओ; MBP have विंगलणंदो णाम छंदो. १ M °मुयंग°. २ MB °काहलाइवज्जयाइं. ३ MB वावणाइं. ४ P °दोव्व° but gloss दूर्वा ५ K छंडिऊण. ६ M °जङ्ग°. ७ BP °सूलिणो, ८ KT दूहएहिं.

8 ७ रयण रयणपंतिहिं रत्तान्धेव वन्तास्तेषां पंक्तिभिः 9 मणि रंणि रत्नभूमौ.

14. 1 वज्जयाइं वाद्यानि. 2 खिम्भिसेहिं किंत्विषिकदेवैस्तूर्यवादिभिः; पाणिपायकुंचियाइं संकुचितहस्तपादाः. ३ णायणाइणीसपहिं नागनागिनीशतैः. 4 आयपहिं आगतैः; भवंतभावभाविपहिं संसारविनाशकपरिणामसहितैः उत्पद्यमानानुरागैर्वा. 6 °दोव्व° दूर्वा; °पूयं° अपूपधूर्वा; °बीयं° बीज. 8 कुच्छियाइं दुःखकारणानि; वंछियाइं मानमायादीनि. 9 णायरेण व्युत्पन्नेन इन्द्रेण; सासणामरे शासनदेवान्; पओसिऊण प्रतोष्य. 10 °जण्णभायए° यज्ञभागान्. 11 सक्केत्यादि—सक्कादीनष्टदिकपालान्; °विच्चिं° अग्निदेवः; °कालं° यमः; णेरि नैर्कत्यदेवः; °सूलिणे° ईशानान्; 12 समागमे समासियं समासिऊण जिनशास्त्रे प्रतिपादितं समाश्रित्य. 14 दोहएहिं दोहकदोषकावैः वृत्तैः; चित्तवित्तं चित्रवृत्तं.

मंदरं छिबंतियाद् बद्धदेवपंतियाद् खीरसायरंतियाद् । 15  
 वोमयं कमंतियाद् धंतियाद् थंतियाद् जंतियाद् पंतियाद् ॥  
 हारदोरं कंचिदामबंसुत्तकं कर्णालिकुंडलाहिं भूसिएहिं ।  
 आइबीयकप्पुंगमेहिं आसणासिएहिं सम्मयाहिलासिएहिं ॥  
 अट्टुजोयणोयरेहिं एककंठविन्थरंहिं अब्भयं णिसुंभएहिं ।  
 हुंदहोपयच्छिएहिं पाणिणा पडिच्छिएहिं उग्गयंबुधेभंएहिं ॥ 20  
 चंदणेण चोच्चिएहिं पुप्फदामवेडिएहिं णं घणेहिं संभएहिं ।  
 एकमेकढोएहिं पोमंपत्तछाएहिं सायकुंभकुंभएहिं ॥  
 सिचिआं पुणंत्रिआं णमंसिओ पसंसिओ पसाहिओ महाइवेओ ।  
 कामकोहमोहलोहमाणडंभचंफलत्तवज्जिओ हयावलेवो ॥

घत्ता—जां णाणविसुद्ध जिणु सइंबुद्ध सो ण्हायिउ लइ ण्हाइ ॥ 25  
 झमवासहु तोउ भत्तउ लोउ सूरहु दीवउ देइ ॥ १४ ॥

15

णिम्मलहु जि ण्हाणु विराइयउ	मंगलहु जि मंगलु गाइयउ ।
परमेट्टिहि जाणियसंवरहो	किं अबरु दिण्णु णिरंवरहो ।
किं भूसणु भूसणि संणिहिउ	किं जंगमंडणि मंडणु लिहिउ ।
पविसुइइ ववगयभवरिणहो	विधेप्पिणुं सवणजुयलु जिणहो ।
विच्छुट्टइं मणिमयकुंडलइं	णं ससहरदिणयरमंडलइं । 5
चवलच्चपिसायहु णट्टाइं	णाहेयहु सरणु पइट्टाइं ।
किं कोसिएण जगसेहरहो	सिरि सेहरु बद्धउ मणहरहो ।

१ MB मंदिरं; K मंदिरं but corrects it to मंदर. १० P °डोर.° ११ P कंणालि° १२ MBP °विभएहिं, but gloss in P उट्टतोच्छलितजलबिन्दुभिः. १३ P पोमवत्त°. १४ P °चप्पलत्त°.

15. १ P जगमंडणु मडणि. २ P विधेविणु.

16 वो म यं क मं ति या इ व्योम व्याप्नुवत्या, धं ति या इ धावन्त्या. 18 आइबीयेत्यादि—आद्यद्वितीयकल्पपुंगवाभ्याम्. 19 एक कं ठ विन्थ रे हिं मुखे एकयोजनविस्तीर्णैः; अब्भय णि सुं भ ए हि मेघपटलविष्वंसकैः. 20 हुं द हो-प य च्छिएहिं 'शुहाण भोः' इत्येव भणित्वा प्रदत्तैः; °धं भ ए हिं °बिन्दुभिः. 21 स भ ए हिं साम्भोभिर्जलयुक्तैः. 22 सा य कुं भं सुवर्ण°. 24 च फ ल त्त् बहुप्रलापित्वम्. 26 झ स वा स हु समुद्रस्य.

15. 2 a जा णि य सं व र हो ज्ञातसंवरस्य. 3 a भू स णि भूषणभूते, b ज ग मं ड णि त्रैलोक्यमण्डनस्य; मं ड णु तिलकः. 4 a प विसु इ इ वज्रसूचिकया. 5 a वि च्छु ट्ट इं परिधापिते. 6 a अब्भ पि मा य हु अन्नपिक्वात्रो राहुस्तस्मात्. 7 a को सि ए ण कौशिकेन इन्द्रेण.



मलरेहाजिसै वलियपण  
हियउल्लउ हारै सेवियउ

हेट्टामुहेण परिघुलियपण ।  
जडजाएं किं पि ण भाँवियउ ।

घत्ता—ओ सालंकारु किमलंकारु सुरवर तासु करंति ॥

10

महु हियवइ भंति णउ लज्जंति रूधु काइं ढंकंति ॥ १५ ॥

## 16

किं बुद्धि ण इई सुरयणहो  
कडिसुत्तउ कडियलि वलइयउ  
किं सीहंणियंबहु एह सिरि  
कमजुइ संणहियउ झणझणइ  
जं भव्वजीवसंतइसरणु  
कोमलसरलंगुलिदलकमलु  
मइं लद्धउ जिगवरपयजुयलु  
जं करणकालि सिहितावियउ

मणिबंधु महग्घउ कंकणहो ।  
किंकिणिसरु चवइ व पुलइयउ ।  
लइ अच्छइ तं सेवंतु गिरि ।  
मंजीरजुयलु इय णं भणइ ।  
संसारमहाजलणिहितरणु ।  
णहकिरणपसरहयतिमिरमलु ।  
महु जायंउ भूसणत्तु सहलु ।  
तं तवहलु णं विहिदावियउ ।

5

घत्ता—सुरसायरतोउ णाहविओउ ण सहइ विरइयण्हाणु ॥

मंदरगिरिगुज्झि महिरैहमज्झि णं घल्लइ अप्पाणु ॥ १६ ॥

10

## 17

दूराउ वहंतु णियच्छियउ  
वंदिज्जइ जिणतणु पैरिलुडिउ

सीसेण सुरेहिं पडिच्छियउ ।  
कक्करकंदरणिबंधणि सुडिउ ।

३ MBP जाणियउ. ४ BP ढकंति.

16. १ P सिंह°. २ M भूसणत्तु जायउ. ३ P महिरह°.

17. १ P सीसेहिं. 2 MBP परिदुलिउ. ३ K °णिवडणसुडिउ.

8 b हेट्टामुहेण अधोमुखेन. 9 b जडजाएं जलजन्मना मुक्ताफलेन. 11 भंति विस्मयः.

16. 1 b मणीत्यादि-प्रकोष्ठः कङ्कणान्महार्घ्य इत्यर्थः. 2 a वलइयउ बद्धम्, b पुलइयउ रेमाक्षितम्. 3 a एह एषा. b a °सतइ° °संततिः. 7 a सहलु सफलम्. 8 a सिहितावियउ अमितापितम्. 9 सुरसायर° क्षीरसमुद्रः. 10 घल्लइ अप्पाणु आन्मानं निपातयति.

17. 1 a णियच्छियउ निरीक्षितं ज्ञानजलं वन्दितं च. 2 a °परिलुडिउ पतितम्; b कक्कर° कठिन°; सुडिउ दुःखितम्.

गिञ्जह देवेहि करेण कर  
पंकयकेसररयधूसरिउ  
वणकुंजरकुंभत्यलसल्लिउ  
संचलियसिलिम्मूहविचल्लिउ  
परिघोलह सिहरिंदहु तणउं  
णहि णहयरेहि महियलि णरेहि  
धावंतु थंतु वियलंतु खलु

गुरुसंगे को णउ होइ गुरु ।  
कस्सीरयरायं पिञ्जरिउ ।  
करडयलगलियमयपरिमलिउ । 5  
णाणामणिकिरणहि संवल्लिउ ।  
णं पंचवण्णु उप्परियणउं ।  
पायालि पडंतउ विसहरेहि ।  
वंदिउ सव्वण्हुहि ण्हाणजलु । 10

घसा—इच्छियगुरुसेव चउविह देव हरिसे कैहि मि णमंति ॥

उट्टंत पडंत पुरउ णडंत वारवार षणवंति ॥ १७ ॥

## 18

केण वि वाइत्तउं वाइयउ  
केण वि बहुसुक्किउ संचियउ  
सवल्लहणउं केण वि ढोइयउ  
केण वि थोत्तहं पारद्धां  
पडिहारु को वि हुउ दंडधरु  
पडु पढइ का वि अणुराइयउ  
कासु वि आलावणि णिद्धतणु  
सरलंगुलिताडिय रणण्णह  
तहि अवसरि कयणाणावयणु  
आयासु जि आयासहु सरिस्सु

केण वि सुहमिट्टउ गाययउ ।  
केण वि भावालउ णच्चियउ ।  
केण वि आहरणु णिवेइयउ ।  
केण वि तोरणहं णिबद्धां ।  
कु वि पासि परिट्टिउ खगगरु । 5  
केण वि मालउ उच्चारयउ ।  
जहि छिप्पइ तहि तहि करइ मणु ।  
णिज्जीव वि जिणवरगुण थुणइ ।  
थुइ गुरुहि करइ दससयणयणु ।  
उवमाणु ण तुज्जु को वि पुरिस्सु 10

४ P करेहि. ५ PT कासीरय°. ६ MBP °सिलीमुह°. ७ MBP कहव. ८ MBP षणमंति.

18. १ B णाणावयणु तणु.

4 b कस्सीरय° काश्मीरजं कुङ्कुमम्. 5 b करडयल° गजकपोल°. 6 a °सिलिम्मूह° अमराः; वि त लि उ कर्णुरितम्. 7 a सिहरिंदहु मेरोः. 9 a थंतु तिष्ठत्; b सव्वण्हुहि आदिजिनस्य. 10 चउ वि ह देव भुवन-वासिभ्यन्तरज्योतिष्ककल्पवासिनो देवाः.

18. 1 a वाइत्तउं वादित्रम्; b सुहमिट्टउ कर्णाशृतम्. 2 b भावालउ भावयुक्तम्. 3 a सवल्लह-णउ विलेपनम्; b णिवेइयउ दत्तम्. 6 a अणुराइयउ धर्मानुरागयुक्तः. 7 a आलावणि तन्त्रीवाद्यविशेषः. 8 a कयणाणावयणु कृतानेकवक्त्रः; b दससयणयणु सहस्रलोचनः इन्द्रः. 10 a आयासु आकाशम्,

जइ पइं जि समाणउं पइं भणमि

ता परमेसर किं पइं थुणमि ।

वत्ता—जो कहइ कएण कह कब्बेण जिणवर तुह गुणरासि ॥

सो णिहं लहुएण करचुलुएण मूढु मवइ जलरासि ॥ १८ ॥

## 19

तुह थोत्तावित्तस्स चित्तं णंव देमि  
धणलाहंलोलेहिं संगहियसंगेहिं  
पसुमंसमज्जंबुधाराविलुद्धेहिं  
मयधुम्मिरच्छीहिं मिच्छसिरुद्धेहिं  
असिबत्तदुग्गंतराले घडंताण  
जमपासणिप्पीडियाणं सवाहीण  
इणं मो जयंजम्मवासं णिहंतूण  
जय कालकालमिजालावलीकंद  
जय घोरसंसारकंतराणित्थार  
जय मारसिगारपब्भारणिब्भेय  
जय दुब्बिणीयंतरंगाण दुण्णेय  
जय देव कंठीरबुब्बूढपीढत्थ

अहमसि धिट्ठत्तणेणेवं वंदेमि ।  
परणारिहिंसामुसाणंदियंगेहिं ।  
कुलजाइविण्णानं गावावरुद्धेहिं ।  
कह दीसस्से तं महामोहमूढेहिं ।  
णरयम्मि धंते महंते पडंताण । 5  
जिण को करालंबणं देइ देहीण ।  
परमं परं णेइ को तं पमोत्तूण ।  
जय इंदणाइंदलच्छीलयाकंद ।  
जय द्व्वपजायसंभावणासार ।  
जय दीहदालिहदोहग्गविच्छेय । 10  
जय णाह णीराय णीसल्ल णाहेय ।  
जय कूरचित्तेसु भत्तेसु मज्झत्थ ।

वत्ता—जय मंथरगामि तिहुयणसामि एत्तिउ मग्गिउ देहि ॥

जहिं जम्मु ण कम्मु पाउ ण धम्मु तहु देसहु महं णेहि ॥ १९ ॥

२ P णव.

19. १ K वदामि. २ MBP °लाहलोहेहि. ३ MBP °गारावलुद्धेहिं. ४ M मिच्छसि°. ५ B जयजम्म°.

12 क इ कविः. 13 ज ल रा सि समुद्रम्.

19. 1 a तुहेत्यादि—तव स्तोत्रमेव वृत्तमाचरणं तस्य स्तवनाचारस्य तव स्तोत्राचरणे नवान् चित्तमहं ददामी-  
त्यर्थः. 2 a संग हिय संगे हिं संगृहीतपरिमहै. 3 b °गा वा व रुद्धे हिं गवावरुद्धे. 5 a असि ब त्त दु ग्गं त रा ले  
असिपन्नरके; b धंते अन्धकारे. 7 a जयंजम्म वा सं जगज्जन्मपाशम 8 a कालेत्यादि—काले प्रलयकाले  
कालामिः प्रलयामिस्तस्य ज्वालानां कंदो मेघः. 9 a °णि त्थार पर्यन्तप्रापक; b °सं भा व णा° घटना. 11 a  
दु ब्बिणी यं त रं गा ण शठानाम्; दु ण्णे य ज्ञातुमशक्य. 12 a कं ठी र बु ब्बू ढ पी ढ त्थ सिंहासनस्थ. 13 म ग्गि उ  
वाचितम्.

देवं सुणहविऊण	भत्तीइ णविऊण ।	
पडुपडहणाएहिं	यंनिदुगिगघाएहिं ।	
दुंणिकिट्टिमटकेहिं	झंझंसधोकेहिं ।	
भंभंतंभंभाहिं	ढकाहुडुकाहिं ।	
करडाहिं काहलहिं	झल्लरिहिं मँदलहिं	5
तालेहिं संखेहिं	अण्णाहिं असंखेहिं	
बहिरियवसासेहिं	जयतूरघोसेहिं ।	
बहुवयणु बहुणयणु	करपिहियपिहुगयणु ।	
हरिसेण विच्छुरिउ	णियतरुणिपरियरिउ ।	
विचिहंगहारेहिं	रसभावसारेहिं ।	10
उप्पयइ परिबडइ	आहंडलो णडइ ।	
धम्माणुराएण	पयजुयणिवाएण ।	
सुरमहिहरो फुडइ	महिवीदु कडयडइ ।	
परिभ्रमइ थरहरइ	णियदेहु संवरइ ।	
रोसेण फुंफुवइ	फणि फरुसु विसु मुयइ ।	15
विसजलणु वित्थरइ	धगधगइ डुरुडुरइ ।	
तावेण कढकढइ	जलयरकुलं लुडइ ।	
जलही वि झलझलइ	सेरं <sup>१</sup> समुल्लसर ।	

घत्ता—रिक्खइं णिवडंति दिसउ मिलंति महिविचरइं फुट्टंति ॥

णच्चंते इदं णयणाणंदं गिरिसिहरइं तुट्टंति ॥ २० ॥

20

20. १ MB उगदुगिग°; P थगदुगिग°. २ MB दुणिकिट्टिमटकेहिं; P दुणिकिट्टिमटकेहिं. ३ MBP भंभंत°. ४ MBP मंदलहिं ५ MBP विच्छुरिउ. ६ P पडिबडइ. ७ MB पुंफुवइ. ८ MBP जलणिहिं वि. ९ MB सरसं.

20. 2 a पडु सर्वैरव्यक्तशब्दवादित्रैरित्यर्थः. 4 b हुडुक्का वाद्यविशेषः. 8 a बहुवयणु शेषनागः; बहुणयणु इन्द्रः; b °पि हु° पृथु. 10 a अंगहारे हिं अङ्गविशेषैः. 18 b सेरं स्वेच्छया.

## 21

इय णच्चिवि गिण्हिवि उसहसिरि  
 सच्छरु सविबुहु लहु संचलिउ  
 संगीयसहकोलाहलेण  
 तणुकंतिभारवारियविहुणा  
 दीसइ अहत्थु णक्खत्तगणु  
 णं मोत्तियमंडवु मेइणिहि  
 सियजलकणणियरु समुच्छलिउ  
 उज्झाउरि झत्ति पराइयउ  
 उत्तरिवि करिहि हरि आइयउ  
 तिहुयणपरिपालणपरमविहि  
 विसु धम्मू तेण भौइ ति पहु

आरुहु सवारणंभि हरि ।  
 पवणंकोलियधयवडलुलिउ ।  
 खे धावंते सुरवरबलेण ।  
 उंप्परि यंतेण देवपहुणा ।  
 णं णंहसरि फुल्लिउ कर्मलवणु । 5  
 जिणु ण्हाणंतिहि मंदाइणिहि ।  
 णं दीसइ दसदिसासु धुलिउ ।  
 रायंगणिलोउ ण माइयउ ।  
 मायापियरहुं सिसु ढोइयंउ ।  
 संगहिउ तेहि सो णाणणिहि । 10  
 भासियउ पुरंदरेण विसहु ।

घत्ता—जगभरहु समत्थु पुण्णपसत्थु णंदणु लेवि अदीण ॥

सुरसंथुयपाय हरिसिय माय पुष्पयंति आसीण ॥ २१ ॥

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरहय

महामव्वभरहाणुमण्णिणप महाकव्वे जिणजम्माहितैयकल्लणं णाम

तइओ परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ३ ॥

॥ संधि ॥ ३ ॥

21. १ P उप्परि यंतेण but gloss आगच्छता. २ B णहसरिफुल्लिउ; P णहसरफुल्लिउ. ३ K कुसुम-  
 वणु. ४ MBP add after this foot: संनोसवसेण पलोइयउ; G gives it in the margin in  
 second hand, but K does not give it at all. ५ M ताइ ति. ६ BP पुष्पयंतआसीण.

21. 1 a उ सहसिरि श्रीवृषभः, b सवारणं स्वकीयगजं; हरि इन्द्रः. 2 a सच्छरु सह अप्सरसां  
 गणेन, सविबुहु देवैः सहितः. 4 a कंतिभारवारियविहुणा कान्तिभारतिरस्कनचन्द्रेण. 5 a अहत्थु अधः-  
 स्थः 6 b मंदाइणिहे गह्वत्याः. 8 a उज्जाउरि अयोध्यायास्. 10 a °परमविहि °परमो विधाना. 11 a  
 भाइ शोभने; वृषो धर्मस्तेन शोभने प्रभुस्तेन कारणेन इन्द्रेण वृषभः इति कथितः; b विसु वृषभः. 12 अदीण  
 अदीना आनन्दिता मरुदेवी माता. 13 पुष्पयंति आसीण पुष्यैः पुष्पप्रकरैः कान्ते कमनीये स्थाने आसीना  
 उपविष्टा.

IV

घरि पुणरवि सयणहिं परियणहिं जिणजम्मुच्छु जो रइउ ॥  
तं पेच्छिवि विसंहरु णरु खयरु सुरवरु कोउ ण विमईउ ॥ धुवकं ॥

I

जंभेद्विया—तणुअणुरुवइं रंजियरूवइं ॥  
देवि पसत्थइं भूसणवत्थइं ॥ १ ॥

घोळंतउ मालइमालियाउ	थणथण्णामयधारालियाउ ।	5
कंकेल्लिपल्लवाइयकराउ	घाईउ समप्पिवि अच्छराउ ।	
किंकर गिव्वाण अणंत देवि	सिसुणाहइ गिरु भावें णवेवि ।	
तं गुरुजुयलुलउं विमलणाणि	पुज्जेवि पसंसिवि कुलिसपाणि ।	
पुंच्छिवि गउ सयमइ सघरु जाम	कोसलपुरि वइइ बालु ताम ।	
उत्ताणसेज्ज णिम्मुकगंथु	णं सिद्धिहि केरउ णियइ पंथु ।	10

GK have at the commencement of this Samdhi the following stanza:—

सौभाग्यं श्रुविता क्षमा भुजबलं शौर्यं वपुः सुन्दरं  
सत्यं सर्वजनोपकारकरणं वृत्तं स्वकं सन्मतम् ।  
हे विद्वन् भरतस्य भूतिजननं विद्यार्थिनामाशु य-  
स्वैकेकं गुणमङ्गमूर्जितधियां पुंसामचिन्त्यं भुवि ॥

MBP have the following stanza:—

आश्रयवशेन भवति प्रायः सर्वस्य वस्तुनोऽतिशयः ।  
भरताश्रयेण संप्रति पश्य गुणा मुख्यतां प्राप्ताः ॥

1. १ MBP पेच्छिवि. २ M विसिहरु. ३ MB विंभयउ, P विंभियउ. ४ MBP घाइयउ. ५ MB तग्गुर°. ६ P पुंछिवि. ७ P णिमुक°; K णिमुक° but corrects it to णिम्मुक°.

1. 3 a तणुअणुरुवइं शिशुशरीरयोग्यानि भूषावक्त्राणि; b रंजियरूवइं अनेकवर्णमुक्तानि. 4. a देवि इत्वा. 5 a घोळंतउ लोलायमानाः; b थणथण्णामय° स्तनदुग्धामृतम्. 6 a कंकेल्लि° अशोकः; b घाईउ चात्रीभ्यः. 8 a गुरुजुयलुलउं नाभिराजमहदेवीयुग्मम्. 9 a सयमइ शतमखाः; b कोसलपुरि अयोध्यायाम्. 10 a णिम्मुकगंथु नमो बालः; b णियइ पश्यति.

वहुते वहुइ हिरिविसेसु	खेलते खेलइ विहिधिलासु ।
बइसते बइसइ सिरि चलच्छि	रंगते रंगइ समउ लच्छि ।
पसरते पसरइ सुथिरकंति	उड्डीहोते उग्गमइ किति ।
भासंतपण खलियक्खराइं	बुद्धइं बावण वि अक्खराइं ।
विर धरियइं दरदेते पयाइं	संभरियइं पुब्बंगहं पयाइं ।
जिणससिणा लेते तणुकलाउ	विण्णायउ वउसट्ठि वि कलाउ ।

घसा—करणिट्ठिइ थिरसंभूयमइ मइइ सत्थु संमाणियउं ॥

तं चित्तं परमेसरेण ओहिइ जगु परियाणियउं ॥ १ ॥

## 2

जंभेट्टिया—समदममूलउ जमसाहालउ ॥

सुकयहलुग्गमो जिणकप्पहुमो ॥ १ ॥

अमरामयहिं सिचिज्जमाणु	सोहइ पुण्णेण पवड्ढमाणु ।
देहे णिष्णं चिय णिम्लत्तु	महिमंदरधरणु अणंतु सत्तु ।
णसियेविंदु सुरहित्तु पउरु	वणरुहु वि हारणीहारगउरु ।
वरवज्जरिसंहणारायणामु	संघट्टणु पहिल्लउ पवलंघामु ।
जहिं जहिं जि तहिं जि सोहाणिहाणु	तहु अवरु वि समचउरंसठाणु ।
जंगसारु सुरुउ सुलंक्खणत्तु	पियहियमियवर्यणु णिहित्तचित्तु ।

c MBP खेलते खेलइ. ९ MBP चरियइ. १० MBP णं चित्तं.

2. १ B जिणु. २ MBP अणंतसत्तु. ३ MBP णिस्सेय°. ४ MBP पवरु but gloss in P प्रचुरः. ५ MBP °विसह°. ६ MBP संहणणु. ७ MBP पवलंघामु but gloss in P प्रचुरतेजः बलं वा. c MB तह; P तहुं. ९ MB जगसारसुरुवु; P जगसारसुरुउ. १० MBP सलक्खणत्तु. ११ MB °वयणु विहत° and gloss in M निर्मलहृदयः P °वयणविहित्त° and gloss आरोपितचित्तः.

11 b दि हि° धृतिः संतोषः. 12 b समउ लच्छि लक्ष्मीदेव्या सह. 13 b उड्डीहोते उर्ध्वाभवता. 15 b पुब्बंगहं शास्त्राज्ञानि. 16 a लेते गृहता. 17 करणि ट्ठिइ इन्द्रियवृष्ट्या; थिरसंभूयमइ दृढबुद्धिः; सत्थु भूतज्ञानम्; संमाणियउ सिद्धिं नीतम्. 18 ओहिइ अवाधिशानेन.

2. 1 a सम° उपशमः; द म° इन्द्रियजयः; b जमसाहालउ यावजीवनियमशास्त्राकुलः. 2 a सुकयहलुग्गमो सुकृतफलपुष्पयुक्तः; b जिणकप्पहुमो जिण एव कल्पवृक्षः. 3 a °अमएहि अमृतैः. 4 b सत्तु धीर्बम्, अथवा सत्त्वं शक्तिः. 5 a णीसेय °निःस्वेद°; पउरु प्रचुरम्; b वणरुहु रुधिरम्; °गउरु शुक्लम्. 6 b पवलंघामु प्रकृष्टसामर्थ्यं प्रचुरतेजो वा. 8 a सुरुउ सौरुप्यम्; b °णिहित्तचित्तु आरोपितहृदयः.

आसय दह जासु परं पसिद्ध  
णं पुरिसरूपपरिमाणु लद्ध

जम्मेण समउ धम्मं णिबद्ध ।  
विहिकरणम्भासविसेसुं सिद्धु । 10

घत्ता—जसु को वि ण संगिहु भुवणयलि परमजिणिदहु गिरुवमहो ।  
सासि दिणयरु मंदरु मयरहरु किं उवमाणउं देमि तहो ॥ २ ॥

## 3

जंभेद्विया-गुणगणसण्णयं  
तोसियजणमणं

ववेगयदुण्णयं ।  
को वण्णइ जिणं ॥ १ ॥

जो मसहरु सो तहु कंतिपिंडु  
दिण्यैरु तहु तेणं जित्तु णाई  
जो सुरगिरि सो तहु णहवणवीदु  
जं जगु नं तहु जसपसरठाणु  
जो जलणिहि सो तहु कायकौंडु  
जो वरकरि सो वाहणु मयंधु  
पसु कामधेणु हयसहियहेउ  
जो कप्परुक्खु सो कट्टु कट्टु

चितंतु व हुउ सकलंकु खंडु ।  
णहैयालि भमेवि अत्थवणु जाइ ।  
जं महिमंडलु तं तेण गीदु । 5  
जं णहु तं तहु णाणप्पमाणु ।  
जो वम्महु सो भयमुक्ककंडु ।  
सीदु वि तहु सिंहासाणि णिबद्ध ।  
जो वग्धु सो वि पाविदु जीउ ।  
देवेण समाणु ण को वि दिदु । 10

घत्ता—सुर किंकर दासिउ अच्छरउ सुरवइ धरि वाचारि जहि ॥  
तिदुर्येणु कुडुंबु परमेसरहो सिरिविलासु किं भणमि तहि ॥ ३ ॥

१२ MBP विसेससिद्ध but gloss in P °विशेषः सिद्धः.

3. १ MBP °गुणयं but gloss in P सान्वयम्. २ MBP वज्जिय° but gloss in P व्यपगत°.

३ M णहयलु. ४ P तहु सो. ५ MBP ण्हाणपीदु. ६ MBT कायकंडु; P ण्हाणकुंडु. ७ P वरघु वि सो.  
८ M पाविदु°. ९ MBP तिदु षणपहुत्तु.

0 b ज म्मे ण सम उ सहजोपनीताः. 10 b वि हि क र ण म्भा स वि से सु ब्रह्मणः करणाभ्यासाविशेषः. 12 म य र-  
हरु समुद्रः.

3. 1 a गु ण ग ण स ण्ण यं गुणगणानामन्वययुक्तम्, b व व ग य दु ण्ण यं व्यपगतमिध्यानयम्. ३ b खंडु चन्द्रः  
4 b अत्थवणु अस्तमनम्. 5 b गीदु गृहीतं स्वीकृतम्. 7 a कायकौंडु गात्रप्रक्षालनकुण्डम्; b भयमुक्ककंडु  
तद्भयान्मुक्तधनुष्यः. 8 a मयंधु मदान्धः 6 a हयसहियहेउ हतस्वहितकारणम्. 10 a कट्टु कट्टु काष्ठं  
निकृष्टम्; कल्पवृक्षः रत्नमयः पृथ्वीकायः, परंतु लौकिकदृष्टान्तेन काष्ठं कथ्यते कष्टमेव.



५

जंभेद्विया—सेसवलीलिया  
पडुणा दाविया  
पविरहयुविविहकीलावियार  
तणुतेभोहामियतरणिबिबु  
धूलीधूसरु ववगयकडिलु  
णिवरमणिहिं लइउ महायरेण  
णिज्जइ चिरंसंचियसुकयरयणु  
सो तहिं जि णिबद्धउ केमं टाइ  
केण वि पहसाविउ हंसर्गामि  
केण वि काइं वि खेलणउं विण्णु  
गिन्वाणु को वि हुउ तंबचूलु  
कु वि मेसुं महिसु भुयबलमहलु  
सोवंतउ कु वि सुइहारएण

कीलणसीलिया ।  
केण ण भाविया ॥ १ ॥  
समयं रमंति सुरवरकुमार ।  
घग्घरमालालंकिर्यणियंबु ।  
सहजायकविलकौतलजडिलु । 5  
अमरिंदाणियहिं करंकरेण ।  
जेण जि अवलोइउ मुइवयणु ।  
णवकमलौलुद्धउ भमरं णाइ ।  
केण वि बोझाविउ भव्वसामि ।  
कइ कीरु मोरु अवरु वि रवण्णु । 10  
कु वि वरतुरंगु कु वि दिव्वु पीलु ।  
कुं वि अप्फोडइ होपवि मल्लु ।  
परियंदई अम्माहीरण ।

घसा—होहैलुरु जो<sup>१३</sup> जो सुहुं सुअहिं पइं पणवंतउ भूयगणु ॥  
णंदइ रिज्जइ दुक्कियमलेण कासु वि मलिणु ण होइ मणु ॥ ४ ॥

15

5

जंभेद्विया—धूलीधूसरो  
णिरुवमलीलउ

कडिकिकिणिसरो ।  
कीलइ बालउ ॥ १ ॥

4. १ MBP °लबिय°. २ P चिर. ३ MBP सुद्धवयणु. ४ M जेम. ५ MBP भसलु. ६ M हंस-  
गमणि. ७ MB खेलणउं. ८ MBP दिव्वु पीलु. ९ MBP महिसु मेसु. १० B omits this foot. ११ P  
परिइंदइ. १२ MB हुल्लर. १३ M जो हो; BP होहो.

4. 1 a से स व ली ली या शिशुत्वलीलाकेलिः. 3 a प वि र इ य° प्रविरचित°; b समयं सह. 4 a °ओ-  
हामिय° तिरस्कृतम्, °तरणि° सूर्यः, b °णियंबु° नितम्बः. 5 a क डिल्लु परिधानवस्त्रम्; b सहजाय° सहो-  
त्पन्न°; °जडिल्लु° जटासहितः मुण्डनकर्मरहितत्वात्. 6 b अ म रिं दा णि य हिं देवेन्द्रपत्नीभिः. 7 a णि जइ नीयते;  
°सुकयरयणु सुकृतमेव रत्नं येन सः 9 a हंसगामि मन्दगमनः. 10a खेलणउं क्रीडनवस्तु; b कइ कपिः.  
11 a तंबचूलु कुकुटः; b °पीलु गजबालः. 12 b अप्फोडइ करेण मुजं ताडयति. 13 a सोवंतउ सुतः  
सन्; सुइहारएण भोत्ररमणीयन; b परियंदइ आन्दोलयति; अम्माहीरण इवदेशास्त्रीबाळप्रसिद्धरामम्बनिना.  
14 होहल्लर जो जो 'होहो जय जय त्वम्' इति शब्दः. 15 रिज्जइ इव्याविविभूति प्राप्नोति.

रंगंतु संतु जं किं पि धरइ  
 धरणिदु वे चंदु व संवरेवि  
 बलु जोक्खइ को<sup>१</sup> जि जिणेसरासु  
 सो णीसासेण य जाइ तासु  
 पुणु चूलार्करणिज्जइ कयम्मि  
 संपुण्णचंदमंडलमूहेण  
 देवंगंबेरवरणिवसणेण  
 भुयहेलंदोलियदिग्गएण  
 हउ कंदुउ गयणे समुल्लंतु  
 णिम्मिक्कजीउ णिहिट्टमग्गु  
 णिवडंतउ संचारेवि णेइ  
 पहरें पहरें सो जाइ केम

इंदु वि ण इं तं यामेण हरइ ।  
 लहुयारी हत्थंगुलि धरेवि ।  
 कंपावियमेइणिमहिहरासु । 5  
 णहु लंघेवर किर सत्ति कासु ।  
 उम्मिल्लइ भल्लइ णववयम्मि ।  
 मरुपविमहासइतणुरुहेण ।  
 घोलंतविविहमणिभूसणेण ।  
 चलपाणिवेणुदंढंग्गएण । 10  
 णं दीसइ सयमहवरहु जंतु ।  
 गुणिसंगें को णउ लहेइ सम्मु ।  
 समवयसहुं तं छिवहुं मि ण देइ ।  
 विसलाणिहे संमुहु सूरु जेम ।

ग्रस्ता—पडिछंदउ पुरिसरूवकरणे णाइं विहापं संगहिउ ॥ 15

णवजोव्वणभावि जाम चड्डिउ णायणरामरेहिं महिउ ॥ ५ ॥

6

जंभेट्टिया—कंचणगोरउ

धीरो' गोरउ ।

परिरक्खियपउ

णिववंदियपउ ॥ १ ॥

सिरिरमणीरमणुद्दामरंगु

धरणिदुच्छंगे णिवेसियंगु ।

वरुणोवरि पाय परिट्टवंतु

पवणामरि करपेण्व विवंतु ।

5. १ MBP तं ण हु. २ P वि चंदु वि. ३ MBP जो जि. ४ MBP °करणुज्जइ. ५ MBP देवंगवत्त्वर°. ६ MBP भुयवलअंदोलिय°, but T हेला अनायासम्. ७ MBP दंदुग्गएण. ८ M गुणसंगें. ९ B लहुउ १० M जाय.

6 १ MBP धीरउ. २ MBP °पल्लउ.

5. 3 b इंदु इन्द्रः. 4 a सं व रे वि प्रगुणीभूय, b ल हु या री लघुतरा. 5 a जो क्व इ आकलयति. 7 a चूला°शौरम्; उ म्मि ल इ प्रकाशिते प्रकटीभूते; भ ल इ रस्ये. 10 a हे लं दो लि य° अनायासेन क्षिप्तः; b दं ड ग्गए ण दण्डायेण. 11 a हउ इतः; म मु ल्लं तु सम्यगुच्छलन्. 13 a सं चारे वि अग्रे गत्वा; b छि व हुं मि स्प्रष्टुमपि. 14 a प हरें प्रहारेण; सो कन्दुकः; b दि स ला णि हे दिग्मर्यादाया. 15 प डि छं द उ प्रतिविम्बम्; वि हा एं विधात्रा.

6. 1 a कंचण गोरउ सुवर्णवर्णः; b धीरो समर्थः; गोरउ ज्ञानरतः. 2 a परिरक्खियपउ प्रतिपाकित-प्रजः. 3 a र म णु द्दाम रं गु क्रीडार्थं विस्तीर्णा रत्नभूमिः.

पणवन्ति पुरंदरि दिट्टि दंतु 5 उव्वसिहि सरसु णाडउ णियंतु ।  
 जर्क्खिदचमरविज्जिज्जमाणु 5 समभाउत्तासियकुसुमबाणु ।  
 फणिदउवारियविणिरुद्धदोरु 5 आलोइयतियसत्थाणसारु ।  
 णं छणससि पवरूययायलत्थु 5 जर्हि अच्छइ पडु सिहासणत्थु ।  
 तर्हि पत्तउ कुलयरु भणइ एम्ब 5 भो णिसुणि णिसुणि देवाहिदेव ।  
 कि ण हवइ कहमि कमलसंडु 5 पाहाणपुंजि णवकणयपिंडु । 10  
 आसामुहि मिहिरु महामऊडु 5 सिापिउडि विमेलि मोत्तियसमूडु ।  
 हउं पिउ तुडु सुउ इर्यं किमहिमाणु 5 भुवणत्तइ किर णाणु जि पहाणु ।  
 णहभायडुं पासिउ को महंतु 5 को तुज्जवि अग्गाइ बुद्धिमंतु ।  
 णियणेहे अहव जडत्तणेण 5 हउं भणमि कि पि धिट्टत्तणेण ।

घत्ता—बालत्तणु दूरुज्जिउ जइ वि तो वि ण णारिहि उवरि मइ ॥ 15

किज्जइ विवाहु सुकुमार तुह जेण पवडुइ लोयगइ ॥ ६ ॥

## 7

जंभेट्टिया—पविमलबोहिणा मोहविरोहिणा ॥  
 लद्धसमाहिणा हयदप्पाहिणा ॥ १ ॥  
 विडुणा उत्तं ताय ण जुत्तं ।  
 मणियमयणं एयं वयणं ।  
 कयसंसारं मोहंधारं । 5  
 अट्टिणिछण्णं किमिउलपुण्णं ।  
 पयलियमुत्तं मंसविलित्तं ।  
 णाउणिबद्धं अइणोणद्धं ।

३ MB पणवन्तं, ४ MBP °वारु ५ MBP विमल°, ६ MBP इउ, ७ MP बुद्धिवंतु, ८ MBP पवत्तइ.

7 a °दउवारिय° दीवारिकः प्रतिहारः. 8 a उययायलत्थु उदयान्नलस्थः. 10 a °सडु° संघातः. 11 a आसामुहि दिङ्मुखं; मिहिरु सूर्यः. 13 a णहेत्यादि—नभोभागपार्श्वान् को महान्, न कश्चिदित्यर्थः. 16 लोयगइ लोकगतिः व्यवहारः.

7. 1 b मोहविरोहिणा मोहशत्रुणा. 2 a लद्धसमाहिणा प्राप्तपरमधर्मसमाधिना; °दप्पाहिणा गर्वः एव सर्पस्तेन. 3 a विडुणा प्रभुणा. 5 b मोहंधारं अज्ञानतिमिरजनकम्. 6 a अट्टिणिछण्णं अस्थिबद्धम्. 8 a णाउ° नहारु° (स्नायु°); b अइणोणद्धं अजिनावबद्ध चर्मणा वेष्टितम्.

लालागिह्लं	रुहिरजलोह्लं ।	
बहुमलकलुसं	धरियपुरीसं ।	10
कुच्छियगंधं	णवविहरंधं ।	
णिद्दासत्तं	पडइ पमत्तं ।	
णिसि णिद्दाणं	मडयसमाणं ।	
उट्टइ सुद्धं	धणकणलुद्धं ।	
पहसमसत्तं	कारिमजंतं ।	15
हिंडइ दियहे	णिवडइ विरहे ।	
तरुणियणकए	असुहरणहए ।	
वाहिविलीणं	भुक्खारीणं ।	
पित्तपलित्तं	संभपसित्तं ।	
पवणपहग्गं	माणवियंगं ।	20
सेवताणं	गुणवताणं ।	
होइ ण सोक्खं	वडइ दुक्खं ।	

यत्ता—परसंभउं वाहासयसहिउं विच्छिण्णउं रयबंधयरु ॥

इहं जं सुहुं लद्धउं इदियहिं तं कह सेवइ विउसु णरु ॥ ७ ॥

8

जंभेट्टिया—ता कुलकारिणा

णायवियारिणा ।

सुहहलसाहिणा

भणियं णाहिणा ॥ १ ॥

भो भो कयसुरणरखयरसेव

सच्चउ णरजम्मु ण रम्मु देव ।

वंछइ सुहुं भुंजइ णवर दुक्खु

वंडुंते विहडइ बुद्धिक्खु ।

7. १ MB णिद्दामत्त, २ MBP विद्दाणं and gloss in P ग्लानम्, ३ B पहसमसत्तं, ४ B कारिमजत्तं, ५ MBP ०हरणभए, ६ MP सिंभपसित्त; B सिंभपलित्तं, ७ MBP इय.

8. १ M बुद्धते; BP बुद्धते.

9 a ०गिह्लं ०भक्षकम्, 10 a ० कलुसं ०मलयुक्तम्, 13 a णिद्दाणं निद्रायुक्तम्, b मडय ० मृतक ०. 15 a पहसमसत्तं मार्गभ्रमश्रान्तम्; b कारिमजंतं कृत्रिमाश्वादियन्त्रसमानम्. 18 a वाहिविलीणं व्याधिभिर्नष्टम्, 19 b संभ ० श्लेष्मा, 20 a ०पहग्गं ०प्रभ्रमम्; b माणवियंगं मनुष्यस्त्रीणां शरीरम्, 23 परसंभउं परार्थीनम्; विच्छिण्णउं सान्तरं सच्छिद्रम्; रयबंधयरु अष्टविधकर्मबन्धकरम्. 24 विउसु विद्वान्.

8. 1 b णायवियारिणा न्यायविचारिणा, 2 a ०साहिणा ०वृक्षेण.

चुद्धइ ण कयंतहो मरणभीरु  
 सञ्जउ इंदियसुहुं सुहु ण होइ  
 सञ्जउ संसारु असारु जइ वि  
 कलहंसवाणि वरवयणकमलु  
 तं णिसुणिवि जिणु णियसीसु धुणिवि  
 चितइ परमेसरु अवहिवंतु  
 अज्ज वि महु चरियावरणु कम्म  
 ता जाणिवि णियतणयंतरंगु  
 सहसा कुलणाहें पेसिपहिं

सञ्जउ जि असुइसंभउ सरीरु । 6  
 सञ्जउ तुहुं परलोयावलोइ ।  
 लइ महु उवरोहें बप्प तइ वि ।  
 परिणहि सपणय पणइणिहिं जमलु ।  
 थिय हेट्टामुहु भवियव्हु मुणिवि ।  
 णयविर्णयचारि सिरिघरिणिकंतु । 10  
 तेसट्टिलक्खपुव्वहं अगम्मु ।  
 समहिच्छियरमणीरमणसंगु ।  
 रयणाहरणोहविहूसिपहिं ।

घत्ता—ता कच्छमहाकच्छाहिवइधूयउ थणभरभगियउ ॥

फलपत्तफुल्लपल्लवकरिहिं मंतिहिं जाइवि मगियउ ॥ ८ ॥ 15

9

जंभेट्टिया—कयमहिराहहो  
 दिज्जउ सवलयं

तिहुयणणाहहो ।  
 कण्णाजुयलयं ॥ १ ॥

ता कच्छमहाकच्छाहिवेहिं  
 दिण्णउ णाहेयहु सुंदरीउ  
 पारद्धहु परमेसहु विवाहु  
 गैय कुसुमंजलिहर लोयवाल  
 कुंअरिहि करि अंगुत्थलउ कूहु  
 गुसुगुमियभमियचलमहुयगेहु

घरु जाइवि सिरपणवियपपहिं ।  
 कामालवालरुहवैल्लरीउ ।  
 आयउ सुरयणु हरिकरिविवाहु । 5  
 सुहि बंधव पुण्णमणोहराल ।  
 पहिलउ पेमंकुरु णं विरूहु ।  
 कउ मंडउ विविहदुवारसोहु ।

२ MB सयणहं; P मयणइ. ३ MBP जुयलु. ३ MBP °विणयधारि. ४ MB चरियावरणु. ५ MBP °रमणरंगु.

9. १ P °पणामिय°. २ K °वेळरीउ. ३ MBP कय°. MP °कुसुमंजलियर. ४ MBP मणोरहाल  
 ५ MP कुवरिहिं, B कुबरेहिं.

6 b परलोयावलोइ परत्र बांछाकुशल°. 7 b उवरोहें आप्रहेण. 10 b सिरिघरिणिकंतु लक्ष्मीपति°. 11 b अगम्मु दुर्लध्यम्. 12 a °अंतरंगु मन°. b समहिच्छिय° समभिलषित°. 14 °धूयउ कन्ने; °भगियउ नम्रीभूते.

9. 1 a °राह शोभा. २ a सवलयं सकङ्कणम्. 4 b °आलवाल° वृक्षमूलजलस्थानम्. 5 b हरिकरि-  
 विवाहु अश्वाः गजाः पक्षिणश्च बाहु वाहनं यस्य सुरगणस्य. 7 b विरूहु प्रादुर्भूतः

माणिकमुकसुंभुक्फुरिउ  
चंदोवचीणपट्टेहिं छाउ

णवसायकुंभखंभेहिं धरिउ ।  
महिदेविह णावइ मउडु लइउ । 10

घस्ता—अमलिंदणीलमणिपंतियहिं णिविडकरोलिहिं भूसियउ ।  
णं तिमिरइ रवियरतासियहो सरणु णिवासु पयासियउ ॥ ९ ॥

10

जंभेद्विया—भम्मपसाहिउ विहुमसोहिउ ।  
संझामेहउ णं महिमागउ ॥ १ ॥

कत्थइ रूपपयभित्तिहिं सुहाइ  
कत्थ वि फलिहुज्जलु भूमिरंगु  
कत्थ वि मुत्ताहलदिण्णछाउ  
कत्थ वि हरियाहंणमणिवरिडु  
अहिववदुमपल्लवतोरणेहिं  
पवणुडुयणहयलघुलियकेउ  
पाडहियकरंगुलिणिहसणेण  
पडहुलउ कुंडुवें छित्तु तेम

सरयब्भखंड णिम्मविउ णाइ ।  
णं गंगतैरंगु पविसियंगु ।  
णं णक्खत्तंचिउ गयणभाउ । 5  
आहंडलघणुमंडलु व दिडु ।  
णावइ वसंतु माणिउ वणेहिं ।  
णरणिहयतूरमंगलणिणाउ ।  
दैककुंदकुंदकयणीसणेण ।  
झं धो सि दो सि रउ हुयउ जेम । 10

घस्ता—अंभाभेरीसरसंखुहिउ पडु पुण्णाणिलेण चलिउ ।  
आवेप्पिणु तहु मंडवहु तले णीसेसु वि तिहुयणु मिलिउ ॥ १० ॥

६ MBP सरण°.

10. १ M संझसमेहउ. २ MBP महि आगउ. ३ MB °तरंगपविसिय°. ४ MBP हरियारुणु. ५ MBP दकुकुंदिकुंदि. ६ MBPT कुंडवें.

9 a °युक्° मौक्तिकानि; झंबुक° स्तवका.. 11 अ म लि द णी ल° निर्मलः इन्द्रनीलमणिः; °क रो लि हिं किरणपंक्तिभिः.

10. 1 a भम्म° काञ्चनं सुवर्णम्. B b सरयब्भखंड चारन्मेषपटलम्. 4 a भूमिरंगु क्रीडार्थं विस्तीर्णः प्रवेशः; b पवि सियंगु पवित्रीकृतगात्रः 5 a °दिण्ण छा उ °दत्तशोभः 6 b °धणु मंडलु °धनुर्विस्तारः. 7 b मा णि उ अवतारितः 9 a पा ड हि य° पट्टवाद्दकः; °णि ह स णे ण °ताडनेन; b °णी स णे ण शब्देन. 10 a कु डु वें वादनकाष्ठेन; छि तु स्पृष्टः ताडितः.

## II

जंभेद्विया—हवइ सुहइउ  
रसइ मुइंगउ

करडासहउ ।  
हसइ अणंगउ ॥ १ ॥

दं दं दं दं टिविलाइ उँतु  
अणुहुँजिउ जं भवँसइ भमंतु  
संसारु जि वीणाणिकलत्तु  
वहुछिहवंसु जं विद्धु जेण  
किं महल्लु जो भोयणउ लहइ  
काहलवयणइं वित्थारियाइं  
आऊरिय णीसासेण संख  
कंसालइं तालइं सलसलंति  
आलगदोरँदँटुल्लयाइं

जिणु भणइ हउं मि दंदेण भुत्तु ।  
णं भासइ तं तं तं भणंतु ।  
मणि संजोर्यइ वल्लँहु कलत्तु । 5  
तं कहइ णाइं महुरँ रँवेण ।  
सो परु छि परस्स तलप्प सहइ ।  
णं मुहपवणेणोसारियाइं ।  
वहिरंध मूय पंगु वि असंख ।  
विहडेप्पिणु मिहुणा इव मिलंति । 10  
णं तूरिय णरतरुफुल्लयाइं ।

घसा—संणद्धइं पहरपडिच्छिरइं आउज्जइं गजंति किह ॥

जिणाणाहहु घरि रइरंगि हुए मयणरायसेण्णाइं जिह ॥ ११ ॥

## 12

जंभेद्विया—का वि णियाणणं  
मंडइ बहुवरं  
ता तियसपुरंधिहिं बहुचराहं

का वि सहीयणं ।  
का वि हु मंदिरं ॥ १ ॥  
णरणारीहिं मि पंकयकराहं ।

11. १ MBP हुवइ २ MBP वुत्तु. ३ MBP भवसयभमंतु. ४ BP संजोइय. ५ MBP वल्लह कलत्तु  
६ MBP सरेण. ७ M °दोरहिं दुल्लयाइं; BP °दोरदिंहुल्लयाइं.

11. 1 a सुहइउ सुभद्रो हुँडिवाब्दः. 2 a रसइ शब्द करोति. 3 b दंदेण नारीयुगलेन नित्तविक्षेपेण  
वा, 5 a °णि कलत्तु °शब्दः संसारमेव योजयति वल्लभ. कलत्रमिति कथयतीव. 6 a बहुछिहैत्यादि-यच्छिद्रं  
विद्धं कृतं रागवादानाभिप्रायेण, तेन कथयतीव वधुरेव छिद्रं रमणस्थानम्; अन्यत्र बहुच्छिद्रो वंशः. 7 b तलप्प  
करप्रहारम्. 8 a का हलवयणइं रणतूर्यमुस्त्तानि. 9 a णीसासेण निःश्वासेन, अथवा निःस्वाः दरिद्राः अस्वेन  
द्रव्येणापूरिताः 11 a दँटुल्लयाइं वृन्तानि. 12 पहरपडिच्छिरइं प्रहारप्रतीक्षणशीलानि; आउज्जइं आनोद्यानि.  
13 रइरंगि हुए रतौ अनुरागे संभूते सति.

12. 1 a णियाणणं निजाननम्.

पाडियउ संलोनहं काइं लोणु  
गाइज्जइ मंगलु अवरु धवलु  
सो सुत्तेण जि सुत्तिउ विहाइ  
तरुणिहिं उच्चोयवि कयउ ण्हाणु  
सोहइ लायण्णे विप्पुरंतु  
सियसुहुमइं वम्मइं परिहियाइं  
मंदारोमालिउ लइउ मउहु  
देवहु देवयठवणाइ काइं  
आणंदे णेच्चिउ सयणु बंधु

चामरु जि पडउ संजणियमाणु ।  
संणिहियउ कलसचउकु धवलु । 5  
णीसुत्तु ण जडसंगहु मुणइ ।  
गोरंगइ पाणिउ धावमाणु ।  
णावइ चामीयररसु गलंतु ।  
आहरणइं ससहररइहियाइं ।  
दीसइ णं सुरगिरिसिहरु वियहु । 10  
लोइयमग्गे णिहियाइं ताइं ।  
वद्धउ कंकणु णं णेहबंधु ।

ग्रन्था—भमरावलिजियारवमुहलु मणसंखोहणैपुलइयउ ॥

कंदणै रुसिवि जिणवरहो णिययसरासणु वलइयउ ॥ १२ ॥

13

जंभेट्टिया—विरइयटाणउ  
उग्गयरोमउ

अमुणंतियाइ पुरिमिल्लु भाउ  
हा वम्मह तुहुं मि णिवारिओ सि  
किं वग्गहु लग्गहु अच्चु ईसि  
णं गज्जिउ दुंदुहि भणइ एम्मव  
फणिसुरणरखयरकउच्छवेण

संधियवाणउ ।

विलसइ कामउ ॥ १ ॥

हा किं रईइ पयडियउ राउ ।  
हा हे वसंत किं पेरिओ सि ।  
णिवडेसहु कइहिं वि तवहुयासि । 6  
किं तुज्जु वि रिउ देवाहिदेव ।  
विरसंतनूरजयजयरवेण ।

12. १ M सलोयहुं; BP सलोनहुं. २ BP उच्चाइवि. ३ MB मदारमालउल्लइय°, P मंदारयमालउ लइय. ४ MBP णच्चिय सयणबंधु. ५ MBP मणसंखोहणु.

13. १ MB तुहुं वि णिवारिओ. २ MBPT कइयवि. ३ MBP विलसंत°; K विरसंतु.

4 a पा डिय उ दत्तम्; स लोण हं सलावण्ययोः; b संज णि य मा णु संजमितमाने चामरं पूर्वमुज्जनस्यान्ते नामि-  
मानयुक्तं दृश्यते. 6 a सुत्ते ण जि सुत्ति उ आवेष्टितेन सूत्रेण बद्ध इव; b णीसुत्तु भ्रुतरहितो मूर्खः जड संगं न  
त्यजति. 7 b गोरंगइ गौराङ्गे. 9 b स स हर र इ हि या इं चन्द्रदीप्त्यनुकारीणि. 11 a देव य ठ व णा इ का इं  
कुलदेवतास्थापनया किम्; b लो इ य म ग्गे लौकिकाचारानुसारेण. 13 जीयारव° ज्याशब्द°.

13. 1 a °टा ण उ मुष्टिबन्धः; धनुर्धराणामालीढप्रत्मालीढवैणवाषाढादीनि बाणमोचनावसरे स्थानानि भवन्ति;  
पक्षे वित्ते कृतस्थितिः. 3 a अमुणं तिया इ अज्ञातवत्या रत्या. 5 a ईसि जिने. 7 b विर संत° शब्दायमानः.



संचलितु परिणहुं जिणकुमार  
णं संसारहु घोसिउ णिसेहु  
तहि देवि णिबंधु चैवेवि चारु  
फेडिउ मुहवहु णं मेहपडलु  
कंपिउ कुंअरिहि णववरभयण  
कच्छाहिवेण भिंगारु लेवि

आवंतहु तहु तहिं धरिउ दारु ।  
हा किं तुहुं परिणहि चरमदेहु ।  
भवणंति पइदुउ भुवणसारु । 10  
दिदुउ मुहु णं छैणयंदु विमलु ।  
करु धरिउ णाहं तिलरिणकएण ।  
पालिज्जसु धवलच्छिउ भणेवि ।

घत्ता—जं पाणिउं झूढउं तासु करे विविहासासाहंचियउ ॥

णं तेण र्मणालवालणिलउ मोहमहातरु सिंचियउ ॥ १३ ॥ 15

## 14

जंभेट्टिया—कयसियसेविहे  
वरहु अणिदहे

जसवइदेविहे ।

अवि य सुणंदहे ॥ १ ॥

णयणेसु णयण लग्गा तिरिच्छ  
पियणेहाऊरिय वित्थरंति  
चित्ताहं चित्ति मिलियाहं केम  
कमणीयकामिणीबद्धणेहि  
दिदुउ पडिवक्खांसंकियाहिं  
एकेणुच्चाइय एक तरुणि  
बेणिण वि लेप्पिणु णीसरिउ णाहु  
आसीससयहिं संथुवमाणु  
उक्कोइयकामरसोल्लियाहिं

मच्छेहिं णाहं पडिखलिय मच्छ ।  
णावइ सुइसुसिरहिं पइसरंति ।  
गयवर णइसलिलहं सलिलि जेम । 5  
णियतणुपडिबिंबउ इइयदेहि ।  
तं कह व कह व बुज्जिउ पियाहिं ।  
बीएण भुएण दुइज्ज धरिणि ।  
णं कण्णरुक्खु वेल्लीसणाहु ।  
वेइयमणिबट्टि जगेकमाणु । 10  
आसीणउ समउं वहुल्लियाहिं ।

घत्ता—वरसाणरु जासु गहेहिं सहुं पणवइ पय महियलि शुलइ ॥

सो वरइउ जि कुलसंतियरु होमै<sup>३</sup> धूमु जि संभवइ ॥ १४ ॥

४ MBP वार. ५ MB चरेवि. ६ P छणइदु. ७ MB कुवरिहिं; P कुमरिहिं. ८ MB मुणालवाल<sup>०</sup>.

14. १ MB पडिबिंबउ. २ MBP आसीसएहिं. ३ M सोमै. ४ MBP संगिलइ.

8a परि ण हुं परिणेतुम्. 9 a णि सेहु निषेधः. 12 b तिल रिण क ए ण स्नेहकणकृतेन. 14 छू ड उं क्षिप्तम्; वि वि-  
हा सा सा हं चिय उ विविधा आशा वाञ्छा एव शास्त्रा तथा अश्रितः सहितः. 15 तेण भृङ्गारजलेन; म णा क वा ल-  
णिल उ मनः एवालवालं तदेव स्थानं यस्य मोहमहातरौः.

14. 4 b सुइसु सिर हिं कर्णविबरेषु. 7 a पडिवक्ख<sup>०</sup> सपत्नी. 10 a आ सी स स य हिं आशीर्वादस्यैः;  
b वेइय<sup>०</sup> वेदिका. 11 a उक्कोइय<sup>०</sup> प्रादुर्भूत<sup>०</sup>. 12 ग हे हिं सहुं आदित्यादिनवमहैः सहितः; शुल इ पतति.

## 15

जंभेद्विया—मत्साचारयं परिरक्खियजयं	विग्घणिवारयं । तह वि हु तं कयं ॥ १ ॥
देवासुरेहि संगीयमाणु रमणिहि सहुं रमणु णिविहुं जाम	अलचामरेहि विज्जिजमाणु । रवि अत्थसिहरि संपत्तु ताम ।
रत्तउ वीसइ णं रइहि णिलउ णं सग्गलच्छिमाणिकु ढैलित्त	णं वरुणासावहुघुसिणतिलउ । 5 रत्तुप्पलु णं णहसरहु सुँलित्त ।
णं मुक्कउ जिणगुणमुद्धरण अद्धउ जलणिहिजलि पइहु	णियरायपुंजु मयरद्धरण । णं विसिक्कुंजरकुंभयलु विहु ।
सुँउ णियल्लविरंजियसायरंभु आहिंदिवि भुवणु अलद्धवासु	णं विणसिरिणारिहि तणउ गम्भु । णं गयउ रयणु रयणायरसु । 10
लच्छीहि भरंतिहि कणयवणु वारिहिरहल्लिमालोवणीउ	णिच्छुट्टिवि कलसु व जलि णिमण्णु । णं उल्लाणउ जगभवणदीउ ।

घत्ता—पुणु संझादेवयसदिस महि रंजिवि रापं विष्फुरिय ॥

कोसुंभु चीरु णं पंगुरिवि णाहविवाहइ अवयरिय ॥ १५ ॥

## 16

जंभेद्विया—कज्जलसामलो पत्तउ भीयरो	उहुदसणुज्जलो । तमरयणीयरो ॥ १ ॥
धियलंतउ मुक्कचउत्थपहरु महिपंकयमयरंहु व घणेण	ते <sup>२</sup> पीयउ संझारायरुहिरु । आवंते <sup>१</sup> अलित्तलसंणिहेण ।

15. १ MBP मंतुच्चारयं, २ P णिवहु, ३ MBP घुलित्त, ४ MBP गलित्त, ५ MBP अरुणच्छवि-  
रंजियसारयम्भु, ६ MB णिच्छुट्टिवि; P णिच्छुट्टिवि, ७ MBP णिवणु, ८ MBP कोसुंभचीरु, ९ MBP °विवाहे.

16. १ MBP पत्तो, २ MBP तं.

15. 1 a म सा चा रयं यद्यपि जगत्स्वामी वर्तते तथापि मात्रा आचारः कृतः 5 b वरुणा सा वहु° पश्चि-  
माशैव स्त्री; °घु सि ण ति लउ कुक्कुमतिलकः. 6 a ढ लिउ पतितम्. 8 a अद्धउं अर्धविम्बं सूर्यस्य. 11 b  
णि च्छुट्टिवि स्वकित्वा. 12 a वारि हि र ह ल्लि मा° समुद्रलहरीलक्ष्मीः; °लो वणी उ लुप्तः; अथवा, वारिधिलहरी-  
मालयोपनीतः.

16. 1 b उहुदसणुज्जलो नक्षत्रदन्तोऽज्जलः.

पुणु भुवणु तिमिरछण्णउं विहाइ रविविरहें थियउ कालउं जि णाइ । 5  
हालिहु वत्थु णं परिहरेवि थकउ णीलंवरु पंगुरेवि ।  
ता उइउ चंदु सुरवरदिसाइ सिरिकलसु व पइसारिउ णिसाइ ।  
सइं भवणालउं पइसंतियाइ तारावंतुरउ हसंतियाइ ।  
णं पोमाकरयल्लहसिउ पोमु णं तिहुयणसिरिलायणधामु ।  
सुरउम्भवविसमसमावहारु तरुणीथणविलुलिय सेयहारु । 10  
णं अमयबिंदुसंदोहं रुंदु अँसेवेह्लिहि केरउ णाइं कंदु ।  
माणियतारासयवत्तफंसु णं णहसरि सुत्तउ रायहंसु ।  
आयासरंगि ससहावगीदु णं काम्मएवअहिसेयवीदु ।  
णं इंदहु धरियउ धवलछत्तु तदेविइ णं दप्पणु णिहित्तु ।  
घत्ता—वरतारातंदुल धिविधि सिरि ससि परिवट्टुलु रइणिलउ ॥ 15

दिसिरमाणिइ णिसिहि वयंसियहि णावइ दहिणं कउ तिलउ ॥ १६ ॥

## 17

जंमेट्टिया—ससहरकंतिइ दिसि पसरंगंतिइ ।  
सोहइ लोयउ दुँदुं व धोयउ ॥ १ ॥

ता णिसि पेक्खणउ विलासवंतु पारदु झसद्धयरिद्धि देंतु ।  
आउज्जहुं जेण मुहेण वासु सा पुब्बिलीदिसंमंडवासु ।  
तदाहिणि उत्तरसुहणिविदु गायणु तुंबरु देवेहिं दिदु । 5  
तहु संमुहियउ मउगाइयाउ उवइट्टउ सरसइआइयाउ ।  
तहु दाहिणेण संटियउ मुमिरु तव्वामएसि वेणइयणियरु ।

३ M सुरवरदिसाइ, ४ B सुरतुम्भव°, ५ P अमिय°, ६ MPT °संदोहंरुंदु, ७ BP जय°, ८ MB °षीदु, ९ MP दिसरमाणिइ.

17. १ M दुदु; BP दुद्धि. २ MB °दिसि°. ३ MBP उत्तरसुहु.

5 b कालउं कृष्णम्. 8 a भवणालउ भवणं मन्दिरम्. 9 a पोमा लक्ष्मीः. 10 a सुरउम्भव विसमसमावहारु सुरतोद्भवविषमभ्रमापहारो हारः; b सेयहारु स्वेद एव हारः. 11 a अमयबिंदुसंदोहु अमृतबिन्दुपुञ्जः; रुंदु विस्तीर्णः. 12 a तारासयवत्तफंसु तारा एव शतपत्र कमलं तस्य स्पर्शम्. 13 a ससहावगीदु स्वस्वभावयुक्तम्. 14 b तदेविइ इन्द्राण्या. 15 धिविधि क्षिप्त्वा. 16 दहिणं दक्षा.

17. 2 b दुदुं दुग्धेन. 4 a आउज्जहुं वादित्राणाम्; वासु वासः स्थितिः. 6 a मउगाइयाउ मृदु-मायिकाः. 7 a सुसि र शुषिरवांशिकवाद्यम्; b वेणइयणियरु वीणाकारनिकरः

इय एहउ अर्धाणिणिवेसु गणित  
वज्जहं मज्जिवि साहारणाइ  
सहसा सुइसोकबुल्लोलपण  
थिरवण्णछडयधाराविसेसु  
उव्वसिरंभाणामालियाहिं

पञ्चाहारु वि सो वेव भणित ।  
कम्मरवी य संमज्जणाइ ।  
उद्विक्खणु किउ हिंदोलपण । 10  
कउं णच्चणीहिं पुणु तहिं पवेसु ।  
आहल्लमेणइवालियाहिं ।

धत्ता—अमिहियणवकुसुमंजलिहिं देविहिं रंगिं परद्वियहिं ॥

मोहिउ जणु मग्गणमोयणिहिं णं वम्महधणुलद्वियहिं ॥ १७ ॥

## 18

जंभेद्विया-अहिणयकोच्छरो  
णच्चइ सुरवई

विरइय णडेहिं णाणावियार  
अण्णणदेहपरिठवणभिण्णु  
चोइह वि सीससंचालणाइ  
णव गीवउ णयणसुहावियाउ  
अंतिमरसविरहिय जणियह्वाव  
एकं उणा पण्णास भाव  
फुरणइं वलणइं अणिवारियाइं

भुवण्हियच्छरो ।  
डोल्लइ वसुमई ॥ १ ॥

चारी बत्तीस वि अंगहार ।  
करणहं अट्टोत्तरु सउ वि दिण्णु ।  
भूतंडवाइं रंजियमणाइं । 5  
छत्तीस वि दिट्टिउं दावियाउ ।  
अट्टु वि रस सच्चेयणसहाव ।  
अवर वि अउंव्व भावाणुभाव ।  
णच्चंतहिं तहि अवयोरियाइं ।

४ MBP कहव. ५ MBP किउ. ६ B रंग°.

18. १ MBPT अहिणव°. २ KT भुय°. ३ MB चउदइ. ४ BP गीवउ. ५ MBP दिट्टुड.  
६ MBPT °भाव. ७ P अपुव्व. ८ M करणइं. ९ MKT अवधारियाइं.

8 b पञ्चाहारु स एव प्रत्याहार इति अन्यत्र प्रसिद्धः 9 a मज्जिवि मृदादिभिर्मार्जयित्वा; साहारणाइ युगपत्सर्ववाद्यविषयाय; b कम्मरवी सर्ववाद्यानां मृदादिसंमार्जनं कर्मारवी नाम. 10 b उद्विक्खणु आलति-करणहिंदोलकरागविशेष 11 a °वण्ण छडयधारा वि सेसु वर्णच्छटकधारास्त्रमस्तालविशेषाः. 14 मग्गण-मोयणि हिं कामबाणमोचनिकाभिः प्रेक्षकजनप्रमोदजनिकाभिश्च.

18. 1 b अहिणयकोच्छरो अभिनयदक्षः; b भुवण्हियच्छरो भुजेषु निहिता अप्सरसो येन. 3 b चारी पदप्रचारः. 4 a अण्णणदेहपरिठवणभिण्णु परस्परं शरीरावयवेषु, यथा पादो हस्ते, हस्तः पादे; b करणहं शरीरमनेकधा प्रतिष्ठाप्य कियन्ते इति करणानि 5 b भूतंडवाइं भ्रूतृत्यानि. 6 a गीवउ ग्रीवाः; b दिट्टिउं प्रेक्षितानि. 7 a अंतिमरस° शान्तरस°; जणियहाव जनितस्थायिभावाः.

पुणु पत्तइं वंदियपयरयाइं  
मुसइं पेम्मंधइं रुसवंतु  
तारातारावइरइ हरंतु

छंडणंयपओएं णिग्गयाइं । 10  
णिण्णेहइं मिहुणइं तीसवंतु ।  
विहडियं चकउलइं मेलवंतु ।

घत्ता—उट्टिउ रविबिंबु दियहसिरिण अरुणकिरणमालाफुरिउ ॥

उर्यंयइरि महारायडु उवरि णवैरत्तउं छत्तु व धरिउ ॥ १८ ॥

## 19

जंभेट्टिया—ससिपायाहया  
अलिरवरसणिया  
वंसइ पविमेलं  
तं<sup>३</sup> पसरियकरो

दुक्खं पिव गया ।  
रुयइ व मिसिणिया ॥ १ ॥  
ओसंसुयजलं ।  
पुसइ व तमिहरो ॥ २ ॥

णं<sup>१</sup> सोहइ दीविये जंबुदीउ  
अशुग्गमंतु णं लोयणयणु  
णं वाडवग्गि णहसायरासु  
णं ताहि जि केरउ अहरबिंबु  
णं वासरविडवंकुरु विणित्तु  
ता तहिं सोहणि संसारसारु  
कासु वि हयगयवेलिउ रवण्णु

णहमहिस्संरावपुडि दिण्णु दीउ ।  
णं पंतडु सेसडु सीसरयणु । 5  
णं दिसिणिसियरिमुहमासंगासु ।  
णं णिसिवेहुवहि पयमग्गु तंबु ।  
णं जगंकरंडि पवलउ णिहित्तु ।  
कासु वि कडिसुत्तउ दोहं हारु । 10  
कासु वि धणुं धण्णु सुवण्णु अण्णु ।

१० MB छहुणयपओएं; PT छहुणयपओएं. ११ MBP रुसवंतु. १२ BP विहडियचकउ. १३ MBP उवरयइरि. १४ MBP णं रत्तउ.

19. १ MBP रुवइ. २ BP पविउलं. ३ MBP ते. ४ MBP जं. ५ MBP दीवइ. ६ MBP °सरावि पुडदिण्णु. ७ MB दिसि°. ८ MB °मंसगासु; P °मंसु गासु. ९ MBP °वहुयहि. १० M जग-करंडे विहुसु; B जगकरंडि पवलउ; P जगि करंडि विहुसु ११ MBP हारु दोह. १२ M धणधण्णु; P धण्णु सुवण्णु.

10 a °पयरयाइं पदरजांसि; b छंडणय° नृत्योपसंहारहेतुस्त्रालविशेषः छहुणकप्रयोगः. 12 a तारावइ° चन्द्रः.

19. 2 b रुयइ रुदति; मि सि णि या पथिनी. 3 b ओसंसुयजलं अवश्यायः एव अशुजलम्. 4 b पुसइ मारिं; तमिहरो आदित्यः. 5 a दीविय दीप्तम्; b सेसडु धरणेन्द्रस्य. 7 b वासगासु मांसमासः. 9 a वासरविडवंकुरु दिवस एव वृशस्तस्याङ्कुरः; विणित्तु विनिर्गतः. 10 a सोहणि शोभने महोत्सवे.

जो अं मग्गइ तं तीसु दिण्णु                      काणीणदीणदालिहु छिण्णु ।  
 संमाणियाइं सुहिपरियणाइं                      वोत्थइ दिणि मुक्कइं कंकणाइं ।  
 विसइ विवाहि विहवेण साहु                      थिउ रज्जु करंतु णएण जाहु ।

घत्ता—जसवइसुणंवरयाणियहिं पणयं हियवइ भावियउ ॥ 15  
 सियपुंफयंतु सो रिसइंपहु भरहखेत्तणिवसेवियउ ॥ १९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए  
 महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे कुमारविवाहकल्लाणं णाम  
 चउत्थओ परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ४ ॥  
 ॥ संधि ॥ ४ ॥

१३ M सो ताहु. १४ MBP सिरिपुप्फयंतु. १५ MBP रिसहु पहु.

14 b णएण न्यायेन. 16 धि यपुप्फयंतु शुक्कुन्दपुप्फवइन्ता यस्य.

V

पियमेलइ गयकालइ पक्कहिं दिणि सुहकारिणि ॥  
णिरुवमसइ सेंधुरंगइ णाहितणयमैणहारिणि ॥ ध्रुवकं ॥

1

रचिता—छणैसिसिरयरकिरणणिहदिहियरघरसर्यणयलि सुत्तिया ।  
पविमलसरलकमलदलवलयसुकोमललल्लियगत्तिया ॥ १ ॥

जँसवइ जसेणाहियं सोहमाणा	णवणलिणहंसी व णिहायमाणा । ४
सुरवडुपयालत्तयालित्तीरं	णिर्वडियदरीरंधगंभीरणीरं ।
हरिसरहओरालिपूरियसुसाणुं	सँसिकंतपब्भारणिज्जित्तभाणुं ।
करिदसणणिब्भिण्णसोवण्णरायं	सिधिणयगयं पेच्छप सेलरायं ।
ससहरमलंकारभूयं णिसाप	रविमवि मुहे णीहरंतं दिसाप ।

GK have at the commencement of this Samdhi the following stanza:—

भ्रूलीलां त्यज मुख संगतकुचद्वन्दादिकं वक्षसा  
मा त्वं दर्शय चारुमध्यलतिकां तन्वन्नि कामाहता ।  
मुग्धे श्रीमदानिन्यखण्डसुकवेर्बन्धुर्गुणैरुत्ततः  
स्वप्नेऽप्येष पराङ्गनां न भरतः शौचोदधिर्वाञ्छति ॥

MBP have the same stanza, but M reads °द्वन्दादिगर्वाक्षमा and BP read °द्वन्दादि-  
गर्वाक्षियां for द्वन्दादिकं वक्षसा and MBP read शौचाम्मुधिः for शौचोदधिः.

1. १ MBP सिधुर°. २ M °मयहारिणि. ३ M छणसिसिरयणकिरण°; B °सिसिरयर°. ४ MB °सय-  
णयल°. ५ MBP have before this line रमणीयलता नाम छंदो; GK have रमणीयलता. ६ M  
णिवडय°; P णिवडिय°. ७ MB ससिकंत°. ८ MB °णिब्भिण्णभाणुं.

1. 1 पि य मे ल इ श्रीआदिनाथमेलापके. 3 °सि सिर य र° बन्दः; सु त्तिया सुप्ता. 5a अ हियं अधिकम्.  
6 a °पयालत्तय° पादालक्तक°; b णिवडिय° निपतित°. 7 a °ओरालि° शब्दः; b ससिकंत° बन्द-  
कान्तमणिः. 8a णिब्भिण्णसोवण्णरायं तिरस्कृतसुवर्णवर्णम्; b सेलरायं मेरुम्. 6 b दिसाप पूर्वदिशायाः.

सयद्वलद्वलालंबिहंतंतीर्भंगं	सरवरमसारिच्छर्तिगिच्छंभिगं । 10
दसदिसि बहुपिच्छरंगंतभंगं	जलखलणपक्खालियहिंदासिगं ।
अमरिसप्तसफालणुद्वंतसदं	करिमयरमालारउदं समुदं ।
सयलमवि अलोयए संविसंतं	णियवयणपोमम्मि छोणीयलं तं ।

वत्ता—इय पेच्छिवि परिहंच्छिवि सुप्पहाइ सीमंतिणि ॥

कयरंहहो गय णाहहो धेरु पुरंधिचूडामणि ॥ १ ॥

15

2

रचिता—पभणइ सुणसु पुरिसहरि सुरगिरि ससि रवि सरवरोयही ।

मइ णिसि सिविणयम्मि दिट्ठा पिययम गिलिया इमी मही ॥ १ ॥

तं णिसुणेवि णराहिउ भोसइ	चक्कवट्टि तुह तणुरुहु होसइ ।
मंदरेण दिट्ठेण पियारउ	महिरायाहिराय गरुयारउ ।
ससहरेण सूहउ सोमाणु	कंतिवंतु कंतासुहमाणु । 8
सूरं सूरु पयावें दूसहु	सरवरेण पयडियसिरिसंगहु ।
रयणायरेण सवंसपहायरु	चंडि चारु चोदहरयणायरु ।
महिआहारें रिउ भंजेसइ	छक्कवंड वि भेइणि भुंजेसइ ।
कइहिं मि दियहहिं होइ णिरुत्तउ	देवि <sup>१</sup> ण चुक्कइ जं मइं बुत्तउ ।
तो सव्वत्थसिद्धिअहिहाणहु	सइं अहमिंदु चालिउ सविमाणहु । 10
पुव्वपुण्णसंपयसंपुण्णउ	जसवइदेविहि गग्भि णिसण्णउ ।

१ BP° हंतं°. १० M °तिगंछ°; BP °तिग्गिच्छि°. ११ B ममालोवए, P मालोयए. १२ MBP परि-  
यच्छिवि. १३ M कयरयहो. १४ M घर°.

2. १ MBP णिसुणे, २ MBP °वरोवही. ३ M देव. ४ MBP °अहिहाणहु.

10 a °हंतं° शब्दं कुर्वन्तः; b असा रि च्छ° अनुपमम्; ति गि च्छ° मकरन्दः. 11 a उ पि च्छ° उत्खण°,  
b अ हिं द° अशीन्द्र°. 12 a अ म रि स° अमर्षः क्रोधः; b क रि म य र° जलहस्ती. 13 a सं वि सं तं प्रविशत्,  
b व य ण पो म म्मि वदनकमले; छो णी य लं पृथ्वीमण्डलम्. 14 परि ह च्छिवि वितर्क्य; सु प्प हा इ सुप्रभाते.  
15 क य रा ह हो कृतशोभस्य; पुरं धि चू डाम णि यशोमती.

2. 4 a पि यार उ सर्वेषां प्रियतमः. 5 b कं ता सु ह मा ण णु कान्तायाः सुखं मानयति. 6 b प य डि य-  
सि रि खं ग हु प्रकटितलक्ष्मीसंग्रहः. 7 a स वं स प हा य र कुलप्रभाकरः, b च डि हे तरुणि.



घत्ता—भुवैणुम्भवि सिसुसंभवि जेहि कयउ कालउ मुहुं ॥  
ते दुज्जण अवरु वि थण णिवडिहिंति हेट्टामुहु ॥ २ ॥

## 3

रचिता—सुयभरपसरमाणेउउयरे वियलिययं वलित्तयं ।  
तिहुयणवइजयंकरेहारहियं व कयं जयत्तयं ॥ १ ॥

रापं गौंभि थिएण ण णायउ	पंडुरु तौंहुं कां संजायउ ।	
दियहि पसत्थि मुहुत्ति सुणिम्मलि	णियठाणुण्णं गइ गहमंडलि ।	
जसवइयहि वियलियपंकयमुहु	णवमासीहि उप्पण्णउ तणुरुहु ।	5
ता तहिं णहि सुरदुंदुहि वज्जइ	णं संतोसें सायरु गज्जइ ।	
दाणु देंति वारण वणि संठिय	कीस ण माणुस हरिसुकंठिय ।	
मेह सवंति सुगंधं सलिलं	दिम्मुहां णिरु जायं विमलं ।	
आयासु वि दीसइ मलवज्जिउ	णीलउ भायणु णं संमज्जिउ ।	
मंदरदंडएण विन्थेरियउ	एकच्छु णं कुयैरहु धरियउ ।	10
तारामोत्तियदामहिं भूसिउ	एहु जि राणउ सव्वहुं पासिउ ।	
महि सइं खल खलंति चउपासिहिं	णं वज्जइ महाणइघोसिहिं ।	

घत्ता—सरणलिणहिं णं णयणहिं पइ णियंति महु रुच्चइ ॥  
मरुचलियहिं परिघुलियहिं वेल्लीभुयहिं पणच्चइ ॥ ३ ॥

५ T records a p सुयणुम्भवि and adds: सुयणुम्भवि इति पाठे सुजनानामुत्कर्षस्य भवः.

3. 1 M छउभोयर°, BP छउउयर°, but gloss in P क्षामोदरे. २ MB गम्भित्थिएण; P गम्भित्थइ. ३ MBP तुहु \* MBPK वेच्छुरियउ ५ MBP कुमरहु.

12 भुवणुम्भवि भुवनस्य उद्भवः उत्कर्षस्य प्रादुर्भावो यस्मिन्. 13 णिवडिहिंति निपतिष्यन्ति.

3. 1 छउउयरे क्षामोदर, वियलिययं गल्लत विनष्टम्, वलित्रयापगमनेन उदरं समं जातमित्यर्थः. 2 तिहुयणवइ° त्रिभुवनपति°; जयकरेहा° जयचिह्नरेखा°. 3 a राए राणेण राज्ञा च. 12 a महीत्यादि—मही पृथ्वी खलान् वारयन्ती महानदीखलखलघोषेण वज्जइ कथयतीव यथा एष एव राजेति. 13 पइ पतिम्. 14 मरुचलियहिं वायुचालितैः.

4

रचिता—णियगुणरयणणियरकरमंजरिधवलियणिवइवंसओ ।

विसरिससुंकरयसाहिसाहासिउ वडुइ रायहंसओ ॥ १ ॥

णौमकरणचूँलाकरणाइउ

जणणीजोव्वणफल्लंणोँछो इव

सुँहिवयणामयविंदुपवेसु व

गुणसंसापयासमग्गो इव

पिउसहावसंचउ रुढो इव

किंकरयणमँणचिंतामणि विव

णिहिलणायसम्भावणिही विव

भारसोदु गरुययरं मही विव

दुणिहालउ मज्झण्णरवी विव

लायण्णंवुपवाहसरो इव

सव्वु वि कयउ विसेसविराइउ ।

विहँलियलोय कप्पवच्छो इव ।

मित्तचित्तसंगहणणिवेसु व ।

रोयसोयउज्झिउ सग्गो इव ।

बंधुणेहबंधणवेढो इव ।

अरिमहिहरसिररसोदामणि विव ।

हरणकरणउद्धरणविही विव ।

भूरिभोयभारिसु अही विव ।

वज्जदेहु जंभारिपवी विव ।

विलयावंदहुं कुसुमसरो इव ।

5

10

घत्ता—सिरि उरयलि महि असिदलि भुँइ जयसिरि जयकारिणि ॥

जसु णिवसइ मुहि सरसइ कित्ति तिलोयविहारिणि ॥ ४ ॥

15

5

रचिता—गिरिसरिकलसकुलिसकमलंकुसविसझसलक्खणाहिओ ।

सुरणरखयररमणिवीणारवगाइयजसपसाहिओ ॥ १ ॥

णं सोहग्गपुंजु णिव्वडियउ

जलिवि जलिवि उल्लाह ण जीवइ

णाइं पयावें विहिणा घडियउ ।

जासु भएण णाइं सिहि णीवइ ।

4. १ M सुकय°. २ MBP णामकरण. ३ P चूडा° ४ MBP °गुछो. ५ P विहासिय°. ६ MB बुह-  
वयणामय°; P बुहणयणामय°. ७ MBP धण°. ८ P °सिरि. ९ MBP गरुयय. १० MBP भुयजुइ.

4. 1 °कर मं ज रि° किरणसंघाताः; °णि व इ वं स ओ °राजवंशः. 2 वि स रि स° अद्वितीयम्; °सु क य-  
सा हि सा हा सि उ पुण्यवृक्षशास्त्राश्रितः. 5 b °णि वे सु स्थानम्. 7 a पि उ स हा व° प्रियः स्वभावः पितृस्वभावो  
वा; रुढो प्रसिद्धः. 9 a णा म° न्यायः; b °वि ही विघाता. 10 b °भो य° भोगाः फटाटोपश्च. 11 b जं भा रि°  
इन्द्रः. 12 a अं बु प वा इ स रो समुद्रः; b विल या वं द हुं वनितावृन्दस्य 13 अ सि द लि खण्डपत्रे; भु इ भुजे.

5. 1 वि स वृषभः; °अ हि ओ अधिकः. 2 °प सा हि ओ °मण्डित.. 3 a णि व्व डि उ कपोतीर्णः. 4 a  
अ लि वि ज लि वि प्रज्वल्य प्रज्वल्य; उ ल्ला इ ज्वालारूपतां परित्यजति, अङ्गारावस्थो भवति; ण जी व इ ज्वालारूप-  
येव नावतिष्ठति; b णी व इ विख्याति, अङ्गाररूपतामपि त्यजतीत्यर्थः

अह्रपर्मसु पुणरवि णासंघइ	जडसंगु वि मज्जाय ण लंघइ ।	5
पालियवेळउ जसु मयरालउ	जासु भएण जि <sup>१</sup> थिउ जैउ कालउ ।	
णायराउ खुल्लउ कीडुल्लउ	चंदु वि जायउ चंदगहिल्लउ ।	
पक्खि पक्खि सो दीसइ भग्गउ	पवणु वि गमणभासइ लग्गउ ।	
इंदु वि इदंघणुइ गुणिं णाणइ	अज्ज वि तं तेहउ जणु जाणइ ।	
णियकरि पहरणु कहिं मि ण दावइ	विणएण जि णवंतु घरु आवइ ।	10

घत्ता—अलिउलचल चुयमयजल महिहरभित्तिवियारण ॥

अविहियसर कुंचियकर जसु तसंति दिसिचौरण ॥ ५ ॥

## 6

गचिता—करिसिरदलियरत्तलित्तुग्गयमोत्तियखइयकेसरो ।

मिसुमभिकुडिलचडुलविज्जुज्जलदाढाजुयलभासुरो ॥ १ ॥

एहआं वि हग्गि विप्फुरियाणणु	जासु भएण व सेवइ काणणु ।	
णवजोव्वाणि चडंतु परमेसरु	सुरवरकरिकरथिरदीहरकरु ।	
सो सिक्खविउ मपिउणा सव्वइं	कालक्खरइं गणियगंधव्वइं ।	5
णाडयाइं बहुभावरसत्थइं	णरणांरिहिं लक्खणइं पसत्थइं ।	
तद्धूसायरणाइं विचित्तइं	वम्महचरियइं हियवहुचित्तइं ।	
गंधपउत्तिउ रयणपरिक्खउ	मंत तंत वरंहयगयसिक्खउ ।	
कौंतगयासिघायमंताणइं	चक्कचावपहरणविण्णाणइं ।	
देसदेसिभासालिचिठाणइं	कइवायालंकारविहाणइं ।	10

5 १ B पसुत्तु २ MBP व. ३ MP जसु ४ M इदधणुहि गुण; BP गुण. ५ MBP दिसवारण.

6 १ MBP णरणारी°, २ P हयवरगय°

5 b जडसंगु जडेन जलेन सह सगो यस्य; म जाय मर्यादाम् (i) a जसु यस्य भरतस्य, b जउ यमः. 9 a गुणिं णाणइ गुणं नारोपयति, प्रत्ययानां नानयति. 12 अविहियसर अकृतशब्दाः; कुंचियकर संकोचित-शुष्पादण्डाः.

6. 1 °रत्तेत्यादि-°रत्तलित्तोद्गतमौक्तिकजटिनकेसर.. 3 a एहओ ईदशः, हरिं सिहः 5 b कालक्खरइ मषीलिखिताक्षराणि. 7 a तद्धूसायरणाइ नरनारीभूषणकरणानि, b वम्महचरियइं कामशास्त्रम्; हियवहुचित्तइं हतस्त्रीचित्तानि. 10 a देसदेसिभासा° देशानां सबन्धिनी देशभाषा, लिचिलिपिः; b कइवायालंकारविहाणइ कविवागलकारविधानानि.

जोइसछंदतक्कावायरणं  
वेज्जिणिघंटोसहिबित्थारु वि  
चित्तलेप्पसिलवरतरुक्म्मइं

मल्लगाहजुज्जइं कयकरणइं ।  
बुज्जिउ सँव्वलोयवावारु वि ।  
एचमाइ अवरइं मि रम्मइं ।

घत्ता—पयणयसुरु तिहुयणगुरु जासु सइं जि वक्खाणइ ।

अइविमलउ सो सयलउ कलउ किं ण परियाणइ ॥ ६ ॥

15

7

रचिता—पुणरवि णियसुयस्स सो णिवरिसि णेहवसेण भासए ।

गिरिथणिघरणितरुणिपरिपालणविहिविसयं पयासए ॥ १ ॥

पभणइ पडु भो पढमणरेसर  
ववसाएं सुसहाएं मंपय  
अलसत्ते खलसंगे णामइ  
असहायहु जगि किं पि ण सिज्जइ  
जाइ णाव मारुइण विलग्गे  
मंति सुरु दुहसहु सुहि सहयरु  
जगि कज्जु जि मित्तारिहि कारणु  
तं पि बुद्धदारेण समुब्भइ

अत्थसत्थु णिसुणहि भरहेसर ।  
होइ णिरुत्तउ पयपाडियपय ।  
मा मइ एहउ तुह सुय सीसइ । 5  
हत्थि वं सुत्तसमूहे बज्जइ ।  
जलइ जलणु तासु जि संसग्गे ।  
तासु करेज्जसु कज्जि महायरु ।  
तेण ण किज्जइ तहिं अवहेरणु ।  
बुद्धि वि बुद्धेहं सेवइ लब्भइ । 10

घत्ता—सिरपलियहिं मुहवलियहिं मुइ जराइ णिब्भच्छिय ॥

जे सत्थइ कम्मत्थइ कुसला ते मइं इच्छिय ॥ ७ ॥

३ B वेज्ज. ४ MBP सयल

7. १ MBP णिसुणिहि २ MBP हत्थि वि. ३ MB सुहदुहसहु; P दुहसुहसहु. ४ MBP बुद्धि-  
चारेण. ५ B बुहसेवइ. ६ MP सिरि पलियहि, B सरे पलियहि. ७ MBP मुय.

11 b कय कर ण इं आवर्तननिवर्तनप्रवेशनादिकृतचेष्टानि. 12 a वेज्ज<sup>०</sup> वैयकम्; णि घं ट<sup>०</sup> कोशः. 13 a  
तरु कम्म इं काष्ठकर्माणि.

7. 1 णिवरिसि राजर्षिः. 2 गिरिथणि<sup>०</sup> गिरिः स्तनः यस्याः सा पृथ्वी. 3 b अत्थसत्थु नीतिशास्त्रम्.  
4 a सुसहाएं सुसहायेन. 5 b एहउ ईदृशम्; सीसइ कथ्यते. 7 a मारुइण विलग्गे वायुना पृष्ठतो लग्नेन.  
8 a सुरु सुभटः; दुहसहु दुःखस्य सोढा; सुहि सुहृत्; सहयरु मित्रम्; b महायरु महादरम्. 9 b अब-  
हेरणु अवगणनम्. 10 a समुब्भइ विचार्येन. 11 मुइ मुञ्च; णिब्भच्छिय तिरस्कृतस्वरूपाः. 12 कम्मत्थइ  
कर्मकरणे.

## 8

रचिता—णियमइणयणविहवपविलोइयपरणरछिइचारिणो ।

पहुविरहयविसालदोसेसु पिहाणय राहयारिणो ॥ १ ॥

बुद्धितुलातोलियमहिमंडल

बुद्धा जेहि ण सेविय भत्तिइ

ते सुंदर जाणसु दुवियद्धा

होति अबुह बुहसंगे बुद्धा

बुहसेवाए बुद्धि उप्पज्जइ

सुस्सूसा सवणु वि संधारणु

तिविह होइ मंतहु संबंधिणि

णिसुणिकखाउवंसमंडणधय

ताइ मंतु अवसें णिप्फज्जइ

मंतचारणिम्महियाहंडल ।

णउ मुञ्चंति कयाइ वि यत्तिइ ।

कुलबलसिरिमयजलणे द्वा । 5

चंपयवासं तिले वि सुयंधा ।

सा सत्तविह कुमार कहिज्जइ ।

मोयणु गहणु णाणु णिच्छयमणु ।

सा वि कैहवि तिजगचितामाणि ।

गुरुयणगय सुयगय णियमणगय । 10

मो पंचविहु कहंति महामइ ।

धत्ता—आढत्तइ कम्मत्तइ पढमुवाउ चितेवउ ॥

णरसत्ति वि धणजुत्ति वि देसु कालु जाणेवउ ॥ ८ ॥

## 9

रचिता—अवि य सहरिस पुरिस दंदपोरिस सुकयावायरक्खणं ।

अविरलमिलियविउलफलसिद्धि वि जाणसु मंतलक्खणं ॥ १ ॥

सुयणुद्धरणु दुट्ठणिग्गहणु वि

जणवयदोससमणु जा सुच्चइ

किसि पसुपालणु सहं वाणिज्जे

णाएं छट्टभायसंगहणु वि ।

दंदणीइ सा पुत्त पवुच्चइ ।

वत्त भणिज्जइ महियइपुज्जे । 5

8. १ MBP बहु°. २ MBP तिल व. ३ MBP कहंति. ४ MBP णिप्पज्जइ.

9. १ MBP दढपउरिस.

8. 1 °परणर° शत्रवः; °छिइचारिणो चारपुरुषा. 2 पहुविरहय° निजस्वामिविरचित°; पिहाणय पिधानभूता., राहयारिणो निजस्वामिशोभाकरिणः. 3 b यत्तिइ आर्त्या द्वन्द्वेन (च + अत्तिइ). 5 a दुवियद्धा अपण्डिताः; b °मय° °मदा.. 8 a संधारणु कालान्तराविस्मरणम्, b मोयणु दुर्षः; णिच्छयमणु ऊहापोहविज्ञानानि. 11 a ताइतया त्रिविधया बुद्ध्या. 12 आढत्तइ कम्मत्तइ आरब्धे कार्ये; पढमुवाउ कार्यनिर्धारः.

9. 1 °सुकयावायरक्खणं सुकृतापायरक्षणम्. 3 a छट्टभाय° षष्ठभागः करः. 5 b वत्त वार्ता नाम राजविद्या.

चउवण्णसमु धम्मु तइत्तिय  
ते अप्पणु परं पुरउ करेवा  
ताहं कम्मु जगसंतिपयासउ  
अय तिवरिस जव तेहिं हुणेवउ  
जं जि पढेवउ तं जि करेवउ  
दंसंणणाणचरित्तु कहेवउ  
बंभचेरु अहवा कुलउत्ती  
णिच्चणहाणु जिणपडिमापूयणु  
इय मज्जाय विलंघवि लंपड

अज्ज वि सुंदर होंति ण सोत्तिय ।  
हीण दीण दाणेण भरेवा ।  
जणियभूयर्गहयणसंतोसउ ।  
जणहु जीवदयवयणु भणेवउ ।  
अस्सि ण धरेवउ दाणु लपवउ । 10  
तिउणउं सुत्तु सरीरि उवेवउ ।  
अण्णणारि मइं ताहं ण उत्ती ।  
णिच्चहोमु णिच्चातिहिभोयणु ।  
ते खाहिति जीउ मारिवि जड ।

घत्ता—सुयसंगहु करुणावहु दाणु धरणिजणधारणु ॥ 15  
इय इट्टउ मइं सिट्टउ खत्तियकम्मवियारणु ॥ ९ ॥

10

रचिता—वियलियमलमईहिं मंतीहिं कुंमग्गयं परिक्खियं ।

पंसुसममिणमसेसमहिवलयमहो णरणाह रक्खियं ॥ १ ॥

पढेणहवणदाणइं वाणिज्जइं  
सुइहु भंणु वत्ताणुट्ठाणु वि  
अवरु कुसीलकारुजीवित्तणु  
कम्मरहिउ जगि भहु ण भुंजइ

इय वणियहु कम्मइं णिरवज्जइं ।  
वणत्तयपेसंणसंमाणु वि ।  
एम कम्मि संजोपवउ जणु । 5  
धम्मविवज्जिउ तं पि ण किज्जइ ।

२ MBP गहगण°. ३ K तं जि पढेवउ जं जि करेवउ. ४ MBP दंसणु णाणु चरित्तु. ५ MBP धरेवउं.

10. १ T reads कमग्गयं and explains it as पादाग्रे स्थितम्; it however records a p कुमग्गयं and explains it as कुत्सितमार्गे प्रवृत्तम्. २ M पसुसिमं. ३ MBP पडणइं धणदाणइं. ४ P पुणु. ५ MBP पेसणु संमाणु.

6 a आसमु आश्रमाः; तइत्तिय त्रयी विद्या; b सोत्तिय विप्राः. 7 a पुरउ करेवा अग्रे कर्तव्याः. 8 b भूय भूत°. 9 a अय अजाः त्रिवर्षववाः एव शेषामङ्करोत्पत्तिर्न विद्यते. 11 b तिउणउं सुत्तु त्रिगुणं यज्ञोपवीतम्. 15 सुय सं ग हु भुतसंग्रहः; क र णा व हु दयामार्गः. 16 इट्टउ इष्टम्.

10. 1 वि य लि य म ल म ई हिं विगलितपापमतिभिः; कु म ग्ग यं कुत्सितमार्गे प्रवृत्तम्. 2 प सु स म मि णं पञ्चसदशमेतत्, यथा गवादीनां पालनं क्रियते. 4 a व त्ता णु ट्ठा णु वार्तानुष्ठानम्.

मंतिठाणि कुल्लुबुद्धिइ चत्ता  
 अंतेउरि पमत्त कामाउर  
 ण थविज्जंति काइं वित्थारें  
 पड्वियणेण तासु मइपसरणु  
 सहवासेण सीलु जाणेवउ  
 जाणेवा रापं पेसिवि चर  
 सामभेयधणदंडसमागउ

तिक्ख पक्खपालणइ अभत्ता ।  
 लुद्ध धणाहियारि पसरियकर ।  
 णासइ पहु दुट्टें परिवारें ।  
 कलहे ण वि परियणपोरिसगुणु । 10  
 ववहारेण सउच्च मुणेवउ ।  
 कुद्ध लुद्ध माणिय भीरुय पर ।  
 झत्ति रइज्जइ जं जसु जोग्गउ ।

घत्ता—णियकज्जु वि परकज्जु वि कम्मदक्खसुइत्तणु ॥

जाणेवउ माणेवउ पत्तंउ पुत्त पहुत्तणु ॥ १० ॥

15

## II

रविता—कुणसु सकलुसवइरिणिवपोसियपणिहीपाडिविहाणयं ।

परियणसयणमित्तसंतोसयरं संमाणदाणयं ॥ १ ॥

दुविहु वि जणउवसग्गु हेरेज्जसु  
 भाक्खिउं उप्पेक्खिउं वि मुणिज्जसु  
 सत्तु मिसु मज्जत्थु वि भावहि  
 अवलंबेज्जसु गुरुहिययत्तणु  
 चवलत्तणु अयालगामित्तणु  
 णारि जूउ मइरा मयमारणु

तिविहसत्तिसम्भाउ करेज्जसु ।  
 णिग्गहु अवरु अणुग्गहु देज्जसु ।  
 सव्वणिओयसुद्धि संदावहि । 5  
 मुयसु दिट्ठकामुयकामित्तणु ।  
 खलसंगु वि दुव्वसणपवत्तणु ।  
 कामुप्पणउ चउविहु दारुणु ।

६ M मंतिट्टाणेषु सुबुद्धिए चत्ता, BP मंतिट्टाणि कुबुद्धिइ चत्ता, ७ MBP एणित्ठ.

11. १ MBP विहावहि. २ MBP धिट्ठ<sup>०</sup> but gloss in PT दृष्टे स्त्रीजने. ३ MBP अयाले.

7 a मंतीत्यादि-मान्त्रिस्थाने कुल्लुबुद्धिहीना न कर्तव्याः; b तिक्ख तीक्ष्णा हिंसा ये ते प्रामनगरादिरक्षणे न स्थापनीयाः 8 b धणाहियारि भाण्डागाराधिकारे. 10 b कलहे संप्रामकाले. 11 b सउच्चु निर्लोभिता. 12 b पर शत्रवः. 13 a °समागउ °प्राप्तम्. 14 कम्मदक्खसुइत्तणु कर्माध्यक्षणाधिकारिणां शुचित्वं निर्लोभत्वम्.

11. 1 °पणिहीपाडिविहाणय चारपुरुषप्रतिविधानकम्. 3 a दुविहु मराकदि देवकृतं धाटीप्रमुखं मनुष्यकृतम्; b ति वि ह स ति मन्त्रोत्साहप्रभुत्वशक्तयः 4 b णिग्गहु दण्डम्; अणुग्गहु प्रसादम्. 5 b णिओयसुद्धि संदावहि यत्कर्म येन नियोगिना कर्तव्यं तत्तरय दर्शय. 6 b दिट्ठकामुयकामित्तणु दृष्टे स्त्रीजने ये कामुकाः कामभेवोत्सुका. तेषु अभिलाषं मुञ्च. 8 a मयमारणु मृगया.

अण्णापं ण दधिणु णासेवउ  
रोसुप्पण्णउं वसणु तिहेयउं  
इय सत्तविहु भरेण ण किज्जइ

तिक्खदंढ सुंफरसु भासेवउ ।  
महं महिवइसासणि विण्णायउं । 10  
रिउच्छव्वग्गहु हियउं ण दिज्जइ ।

घृता—मुह कोडु वि मउ लोडु वि माणु हरिसु सहु कामे ।  
गुरु घोसइ सिरि होसइ पयडु खयपरिणामे ॥ ११ ॥

12

रचिता—एकंतरिउ मित्तु गिरंतरु सत्तु भणंति सूरिणो ।

तासु महंति मंतु पडुपेसिय गूढा लिंगधारिणो ॥ १ ॥

गूढ वि पडिगूढहिं जाणेवा  
कीरइ कालि गमणु ववगयमलि  
धिग्गहु हीणे अहव समाणे  
दुग्गासिएण समाणु वि किज्जइ  
एम अलद्धउ लब्भइ मंडलु  
उप्पाइज्जइ दव्वु पसत्थहं  
तित्थहिं धरिउ रज्जु थिरु अच्छइ  
सामि अमच्चु रट्टु धणु सुहि बलु  
इउ सत्तंगु जेम्ब णउ खिज्जइ

जे विरुद्ध ते तहिं गिहणेवा ।  
आसणु बहुकणतणजलमहियलि ।  
बलवंतेण संधि कयदाणे । 5  
मित्तु वि पडिवक्खत्तु ण णिज्जइ ।  
परिरक्खिज्जइ कय चित्तियफलु ।  
तं दिज्जइ अट्टारहतित्थहं ।  
रायाइल्लउ खयडु ण गच्छइ ।  
भणु सत्तमउं दुग्गु हयपडिबलु । 10  
तेम तणय वसुमइ पालिज्जइ ।

घृता—इय भाविउ सिक्खाविउ चक्खवट्टिलच्छीहरु ॥

णियज्जणणे णं तवणे वियसाविउ कमलायरु ॥ १२ ॥

४ MBP सुफरसु भासेवउ. ५ MBP रोसुप्पणु वसणु गिहणेवउ. ६ P adds after this line: णिच्छउ महं हियवइ संभाविउ. ७ MP वित्तु.

12. १ MBP गेरंतरु. २ MBPK दीणे. ३ M कयमाणे. ४ MBP दुग्गासिए संमाणु जि किज्जइ.

10 a रोसुप्पणु उं वसणु तिहेयउं अन्यायेन द्रव्यनाशः, तीक्ष्णदण्डः, परुषवचनं चेति रोषोत्पन्नं त्रिभेदं व्यसनम्. 11 a भरेण आतिशयेन. 12 मुह सुब.

12. 1 एकंतरिउ एकदेशान्तरस्थं राजानं मित्रम्; गिरंतरु समीपस्थं शत्रुम्. २ तासु महंति मंतु तस्य शत्रोः भिन्दन्ति मन्त्रम्; लिंगधारिणो विविधवेषधराः. 5 a धिग्गहु संग्रामः. 6 a दुग्गासिएण समाणु दुर्गाश्रितेन सह संधिः क्रियते; b पडिवक्खत्तु शत्रुत्वम्. 9 b रायाइल्लउ अनुरागशुक्लम्. 10 सुहि सुहृत्. 11 b वसुमइ पृथ्वी. 12 तवणे सूर्येण.



## 13

रचिता—गुणमणिकिरणपसरभरपसमियदुष्णयतिमिरभेलओ ।

हुउ वइसवणपवणजमससिरविहुयवहवरुणलीलओ ॥ १ ॥

धम्मत्येसु कुसलु तेयंसिउ  
अपिसुणु बद्धुच्छाहु अरुसणु  
मइदिहिहरु समत्थु जिस्तिदिउ  
दुरालोउ अदीहरसुत्तउ  
थिरु संभरणसीलु णिम्मलवउ  
थूललक्खु मेहावि सयाणउ  
पुणु सव्वत्थविमाणहु आयउ  
जसवइदेविहि बीयउ णंदणु  
अवरु अणंतवीरु पुणु अच्चउ

हियमियमडुरभासि णिवसंसिउ ।  
सुइ सुधीरु बलवंतु महासणु ।  
सहसुप्पण्णबुद्धि जगवंदिउ । 5  
पुरिसण्णउ पसण्णु गुरुभत्तउ ।  
सच्छु अजिभचित्तु अइसुहउ ।  
किं वण्णिज्जइ भारहराणउ ।  
वसहसेणु णामे संजायउ ।  
पुणु वि अणंतविजउ रिउमहणु । 10  
वीरु सुवीरु मत्तकारिकरभुउ ।

यत्ता—गयभंगहं चरिमंगहं पुष्णपहावपउष्णउं ॥

गुणजुत्तहं सउ पुत्तहं एवमाइ उप्पण्णउं ॥ १३ ॥

## 14

रचिता—घणथणणयणवयणकरकमयलसयलावयवसोहिया ।

समियसविसयविरसेविसवेइणि सीलेसिरीपसाहिया ॥ १ ॥

धीय सलक्खण कोमलगत्ती  
जसवइसइसरीरि संभूई

णक्खकंतिणिज्जियणक्खत्ती ।  
वंभी णामे अवर वि इई ।

13. १ GK have दुवई for रचिता from this Kadavaka onwards to the end of the Samdhi. २ P पयसमिय. ३ B मइदिहिहरु. ४ B संतरणसीलु. ५ MBP सक्कु. ६ B अजिभचित्तु. ७ BP अच्चउ but gloss in P अच्चुन. ८ MBP सुधीरु. ९ MBPT गयरंगहं.

14. MB °कणयवयण°. २ MB °विरसेवेइणि. ३ P सालसिरी°. ४ MB °पहासिया.

13. ३ a धम्म त्ये सु धर्मार्थयोः; तेयं सिउ तेजस्वी; 4 b महा सणु गम्भीरशब्द; 5 a मइ-दि हि ह ह मतिश्रुतियुहम्; 6 a दुरा लोउ दुरालोकी दीर्घदृष्टिः; अदीहरसुत्तउ शाघ्नकार्यकर्ता; ७ पुरि सण्णउ पुरुषविशेषज्ञः; 7 a संभरण सी लु स्मृतिशीलः; णि म्म ल व उ निर्मलव्रतो निर्मलवपुश्च; ८ a अजिभचित्तु अ-कुटिलचित्तः; 8 a थूल लक्खु बहुदाता वदान्यः; सयाणउ सज्ञानः 12 ग य भं ग हं गतभङ्गानामपराजितानाम्.

14. 2 समियेत्यादि—शमिता उपशमं नीता स्वविषयविरसविषय वेदना यथा सा.

वियलियसोयहि भुंजियमोयहि  
 खुड सव्वत्थसिद्धि परमेसरु  
 सिसु अविपिक्रवंससुच्छायउ  
 तुच्छुखुद्धि अप्पउ अवगण्णामि  
 गज्जमाणजलहरजलणिहिसरु  
 पुण्णमियं कवयणु जसहलतरु  
 पुरकवाडपविउलवच्छत्थलु  
 दलियासामयगलगलसंखलु  
 तणुमज्जप्पएसि रइरंगउ  
 विर्यइणियंबु तंबर्बिबाहरु

पुणु वि सुणंदहि गंदियलोयहि । 5  
 हुउ मणहरु णं मरगयमेहिहरु ।  
 बालउ अहुबलि वि तहि जायउ ।  
 पहिलउ कामएउ किं वण्णामि ।  
 फलिइपरईथोरकरपंजरु ।  
 सिरिकीलानिगिंदसमभुयसिरु । 10  
 विससइलखंधु अवियलबलु ।  
 णीलणिद्धमउपरिमियकुंतलु ।  
 अंगं सहु जि अउवु अणंगउ ।  
 उच्छुचावजीयासंधियसरु ।

घत्ता—णवजोव्वणि जायइ घणि पंचहिं तेहिं पयंडहिं ॥

15

पुरथीयणु कंपियमणु विद्धउ कोसुमकंडहिं ॥ १४ ॥

15

रचिता—पसरियमयणजलणहुयरसवससुसियंगेहिं कालिया ।

विलवइ चंलइ धुलइ सुहयस्स कए तहिं का वि बालिया ॥ १ ॥

का वि पलोयइ पयाणियतुट्टिहिं

मउलियललियहिं वैलियहिं विट्टिहिं ।

का वि पएसु पडंती दीसइ

का वि सविणय किं पि संभासइ ।

५ M °गिरिवरु. ६ MBP °सच्छायउ. ७ MBP कामदेउ. ८ M °गलगयसंखलु. ९ P °कोंतलु.

15, १ MBP चवइ. २ MPK चलियहिं.

7 a अ वि पि क्क वं स सु च्छाय उ अपक्कवंशवत्सुकान्ति. 9 b फ लि ह प ई ह° अर्गलावंत्प्रदीर्घ°. 10 a पुण्ण-  
 मियं क व य णु पूर्णचन्द्राननः; b गि रिं द स म भु य सि रु गिरीन्द्रसमानोन्नतांसः. 11 b विस° वृषभः; अ वि-  
 य ल ब लु स्थिरबलः. 13 a द ल ि या सा म य ग ल ग ल सं ख लु दलिता आशामदकलानां दिग्गजानां गलशंखला  
 येन. 13 a रे इ रं ग उ रतेः रङ्गभूमिः 14 a वि य ड° विकट°; तं ब र्बि बा ह रु ताम्रं रक्तं यद्विम्बीफलं तद्वद्रक्त  
 ओष्ठो यस्य; b उ च्छु चा व जी या सं धि य स रु इक्षुचापप्रत्यक्षासंधितशरः. 15 पंच हिं ते हिं तैः पञ्चभिः पुत्रैः,  
 कामपक्षे, स्तम्भनमोहनशोषणकर्षणवशीकरणैः. 16 को सु म कं ड हिं पुष्पमयैर्बाणैः.

15. 1 ° म य णे त्या दि- कामामिना जनितो यो रसः प्रेम तद्वशेन शोषितानि दग्धानि अज्ञानि यस्याः,  
 अत एव कालिया श्यामवर्णा. 2 धुल इ पतति; सुहयस्स कए सुभगस्य कृते. 3 b म उ ल ि यं मुकुलित°,  
 सलज्जतया किंचित्संकुचिताभिरित्यर्थः.

का वि भणइ दिञ्जउ आलिगणु	जइ भेलेसैइ मेरउ प्रंगणु ।	5
ता होसइ तुह तायहु केरी	आण सुरिदभयाइं जणेरी ।	
चंचलि चेलंचलइ विलगइ	क वि सोहगाभिकख तहिं मगइ ।	
कंठाहरणउं रयणणित्तउ	का वि देइ कंकणु कडिसुत्तउ ।	
तगायणयण णियइ अवाचित्ती	क वि जामायहु साइउं देंती ।	
क वि तेल्लेणें पाय पक्खालइ	धूवइ दुदु तक्कु ण णिहालइ ।	10
दोरि विलंबिउं कै वि भीभूयइ	घडु मण्णंति धिवइ सिसु कूवइ ।	
काइ वि जोयंतिइ मयरइउ	वच्छु भणिवि घरि मंडलु बइउ ।	
काहि वि णीवीबंधणु ढलियउ	पेम्मसाल्लु ऊरूयालि गलियउ ।	

घत्ता—पइ भल्लउं कडउल्लउं का वि देइ करि णेउरु ॥

उद्दामें इय कामें संताविउ सयलु वि पुरु ॥ १५ ॥

15

## 16

रचिता—कुलधणसयणमोहमाणुण्णइवीलाहरणववसियं ।

इसिवयमिव वंहंति रमणीयउ जस्स सिणेहविलसियं ॥ १ ॥

जिह जिह सुंदरु खेल्इ रच्छइ	तिह तिह हियवउ हरइ वरच्छहिं ।	
सोममु सुदंसणु पढमु कुमारउ	पेच्छंतिइ बाहुबलि कुमारउ ।	
काइ वि कउ कवोलि करु कोमलु	तणुतावेण कढइ सरकोमलु ।	5
काहि वि विरहसिहिं पउलिउ पलु	धवलु वि कमलु हुवउ णीलुण्णलु ।	
सहइ कामु महुसमयागमणें	णिहय का वि पियसमयागमणें ।	

३ MBP भेलेसहि. ४ MBP पणु. ५ M तिल्लेण. ६ MBP दोर°. ७ B कविणीभूयइ. ८ P उरूयायलि.

16 १ B हति. २ MBP सोमु. ३ P विरहसिहिहिं.

5 b भेलेसइ मुञ्चति. 6 b आण शपथः. 7 a चेलचलइ वन्नायले. 8 a रयण णित्तउं रत्नजडित्तम्. 9 a अवचित्ती उद्भ्रान्तमनाः; b साइउं आलिङ्गनम्. 10 b धूवइ वगधारयति प्रलेहनिमित्तं 'कढी' इति. 11 a भीभूयइ भयानके; b धिवइ क्षिपति. 12 b मंडलु कुक्कुरः श्वा प्रामशार्दूलः. 14 पइ पदे.

16. 1 ° वीलाहरणं व्रीडापारित्यागः. 2 इसिवयमिव वंहंति ऋषित्रतामिव, यथा मुनिदीक्षायां कुलधनादिकं न मन्यते. 3 b वरच्छहिं सुन्दरलोचनायाः. 4 b कुमारउ कौ पृथिव्यां मारः कामः. 5 b सरकोमलु सरोवरजलम्. 6 a विरहसिहिं विरहाग्निना; पउलिउ प्रज्वलित दग्धम्; पलु मांसम्. 7 a महुसमयागमणें वसन्तागमनेन; b पियसमयागमणें आगो दोषः; समय स्वमदेन प्रियविषये कृतमागस्तेनोपलक्षितं मनः तेन; प्रियसमये आगमनेन वा.

मउलिय फुल्लिय मल्लिय काणणि	मंडणु देह पुरंधि ण काणणि ।
णिग्गय पल्लव णवसाहारहु	मुयइ तत्ति विरहिणि साहारहु ।
पइ मेलेप्पिणु लवइ व कोइल	सुहयत्ते किर भूसइ को इल । 10
मुहमरुपरिमलमिलियसिलिम्मुह	जे ते णं कंदप्पसिलिम्मुह ।
का वि चवइ पिय हउं तुह रत्ती	अज्जु गइय महु दुक्कें रत्ती ।
का वि भणइ पिय करि केसग्गहु	वियलउ मालइकुसुमपरिग्गहु ।
का वि कहइ लइ खुंबहि वयणउं	अवर मं देहि किं पि पडिवयणउं ।

घत्ता—णउ मेल्लइ क वि बोल्लइ म करहि काइं वि विप्पिउ ॥ 15

॥ घरु वित्तु वि णियच्चित्तु वि सयलु वि तुज्जु समप्पिउ ॥ १६ ॥

17

रञ्जिता—क वि रुणुरुणइ किं पि सुइसुहयरु मणरुहविसिहसल्लिया ।

पिययमवयणकमलरसलंपडि तरुणीमहुयरुल्लिया ॥ १ ॥

जो सुहउ महिलहिं माणिज्जइ	कंदप्पु जि पुणु कहु उवमिज्जइ ।
गग्भि सुणंदहि रुवरवण्णी	तासु बहिणि अवर वि उप्पण्णी ।
णवजोव्वणि चडंति सा छज्जइ	चंदु कलंके वयणहु लज्जइ । 5
रत्तुप्पलु पयसोहइ जित्तउ	तेण वि अप्पउ सलिलि णिहित्तउ ।
भूवंकत्तणु थणथट्टत्तणु	अहरहु केरउ अइराइत्तणु ।
पडिआयहं दंतहं धवलत्तणु	जणमारण णयणहुं मि वलत्तणु ।

४ B मंडलु. ५ K सिलीमुह. ६ MBP म किं पि देहि.

17. १ M अइरत्तत्तणु; BP अइरायत्तणु.

8 ष ण का ण णि का स्त्री मण्डनं न ददाति भानने मुखे, अपि तु सर्वा ददाति. 9 ष सा हार हु स्वाहारस्य; अथवा सा हार हु हारस्य. 10 ष इल पृथ्वी. 11 a °सिलिम्मुहु भ्रमरः; b °सिलिम्मुहु बाणः. 15 विप्पिउ विप्रियमनिष्ठम्.

17. 1 रुणुरुणइ सकाममव्यक्तशब्दं करोति; मणरुहविसिह° कामबाणाः. 2 तरुणीमहुयरुल्लिया तरुण्येव मधुकरी भ्रमरी. 4 ष तासु बाहुबलेः. 6 a पयसोहइ पदकमलशोभया. 7 a थणथट्टत्तणु स्तनकठिनत्वम्; ष अहरहु अधरो दरिद्र ओष्ठश्च, तत्र दरिद्रेऽतिरागित्वं दोषः, ओष्ठे तु गुणः. 8 a पडि-आयहं पूर्वभेकवारं पतिताः पुनरुद्गतास्तेषां दन्तानाम्, पक्षे पराजयात्प्रत्यागतानां धवलत्वं कथम्.

तुच्छोयरवासिहि गंभीरिम  
कंचीदामण दढबंधहु  
सीसारूढकेसकुडिलत्तणु  
विट्टदोसु अवसे असमेहलु  
तुंगपयोहरविलुलियघणघण  
सिचिय तेहि णाहं मइ सीसइ  
इय रूवे जगणारिहि सुंदरि

णाहिहि अवरु णियंबहु वड्ढिम ।  
रहियंगहु परलोयविरुद्धहु । 10  
पुरिसोवरि माणसकटिणत्तणु ।  
मज्झु अमज्झत्थु व हुउ दुब्बलु ।  
चलहारावलिमोत्तिय जलकण ।  
रोमराइ णववेह्लि व दीसइ ।  
जाणिवि तांएं कोक्किय सुंदरि । 15

घत्ता—एकुत्तरु रणदुद्धरु सउ तणयहं तुइ धूर्युउ ॥

कयसेट्टिहिं परमेट्टिहिं जायउ अणुवमरूवउ ॥ १७ ॥

## 18

रचिता—जयवइजणणचरणमूलम्मि महारिउचंदंमइणा ।

बहुसुयणियरधरणपरिणयमइ जाया सयलणंदणा ॥ १ ॥

भावे णमसिद्धं पमणेप्पणु  
दोहिं मि णिम्मलकंचणवण्णहं  
अत्थे सहेण वि सोहिल्लउ  
सक्कउ पायउ पुणु अवहंसउ  
सत्थकलासिउ सर्गणिबद्धउ  
अणिबद्धउ गाहाइउ अक्खिउ  
बंभे सइ वक्खाणिउं जं जिह

दाहिणवामकरोहिं लिहेप्पिणु ।  
अक्खरगणियइं कहियइं कण्णहं ।  
गहु अगहु दुविहु कब्बुलउ । 5  
वित्तउ उप्पाइउ सपसंसउ ।  
णाडउ अक्खाइय कंहरिद्धउ ।  
गेयवज्जलक्खणु वि णिरिक्खिउ ।  
कुंअरीजुयलें बुज्झिउ तं तिह ।

२ M कंचीदामणएण. ३ B ताइएं. ४ MBP धीयउ.

18. १ MBP °विद°. २ MBP सगिग णिबद्धउ. ३ MBP कहरुद्धउ. ४ MBP गेयवज्जु लक्खणु.  
५ MBP कुमरी°.

9 a तुच्छो य र वा सि हि तुच्छं स्वल्पं यदुदरमथं तस्मिन्वसनशीलस्य गम्भीरिमा दोषो नाभेस्तु गुणः. 10 b  
रहियंगहु प्रच्छादितस्वरूपस्य; परलोयविरुद्धहु परलोकेन मोक्षेण परपुरुषावलोकनेन वा विरुद्धस्य. 12 a  
असमेहलु असमामीहां चेष्टां लातीति अमग्यस्थः पक्षपाती वा. 13 a विलुलियघणघण लुठितसघनमेघः.  
15 b तां एं पित्रा तातेन; कोक्किय नाम दत्तम्.

18. 1 जयवइ° जगत्पति°. 2 बहुसुयणियर° प्रचुरश्रुतसमूहः. 5 b अगहु पथम्. 6 a अव-  
हंसउ अपभ्रंशम्; b वित्तउ वृत्तम्. 7 a सत्थकलासिउ शास्त्राश्रितं द्वासप्ततिकलाप्रतिपादितम्; b कहरिद्धउ  
कथामृतम्. 8 a अणिबद्धउ सर्गबन्धेन अरचितं गाथादिकम्; b गेयवज्जलक्खणु गीतवाद्यलक्षणशास्त्रम्.  
9 a बंभे वृषभेण.

सुयहं महंतु कंहंतु अणेयहं विष्णाणहं णाणहं बहुमेयहं । 10  
 एम भद्दारउ अच्छइ जइयहुं भग्गी पय दुक्काले तइयहुं ।

घत्ता—अविवेइय घरु आइय चवइ जिणेण गिरिक्खिय ॥  
 पडु दहविह सुरमहिरुह अवसाप्पिणियइ भक्खिय ॥ १८ ॥

19

रचिता—सयमहवियडमउडतडमणिगणवियलियविमलवारिणा ।  
 धुयकमकमलजुयल परमेसर पइं मि महारिवारिणा ॥ १ ॥

कप्पंधिवविणासि संहारहु	णउ परिरक्खिय भुक्खामारहु ।
जिण्णहं अंबराहं मलमलिणहं	काले विहडियाहं आहरणहं ।
तणु लायणु वणु परिल्हसियउ	जडरहुयासें रुहिरु वि सुसियउ । 5
लग्गणखंभु अणु को अम्हहं	एवहिं सरणु पइट्टा तुम्हहं ।
असणवसणभूसणसंपत्तिहि	भवणजाणसयणासणजुत्तिहि ।
णिहिलकलाविसेससंपत्तिहि	करि णिच्चित्ते असेसहि विसिहि ।
तं णिसुणेवि जायकारुण्णे	देवे पउरणाणसंपण्णे ।
करिसणकरणु धरणु मयाणिवहहं	हरिकरिमेसमहिसविसकरहहं । 10
पडु घडु भोयणु भायणु रंजणु	घरु पर्यणविहि पीडु मणरंजणु ।
सेज्ज सरीरताणु जलंधारणु	हारु दोरु केऊरु सकंकणु ।
असि मसि सिणु वि जं जिह जेहउ	अक्खिउ लोयडु तं तिह तेहउ ।

घत्ता—परमेसरु सुंधरियघरु आइपुरिसु कमलासणु ॥

जगु पेसिवि संतोसिवि पालइ खत्तियसासणु ॥ १९ ॥ 15

19. १ MBP ° वारिणा. २ MB संघारहु but PGKT संहारहु. ३ MBP को वि ण उ अम्हहं. ४ K णिप्फत्तिहि. ५ P णिच्चित्त. ६ K °संपुण्णे. ७ M °वस°. ८ MBP परियणु वि. ९ MBT जलवारणु, but T records a p जलधारणु and remarks 'जलवारणु छत्रम्, अथवा जलधारणु वापीकूपतडागादिकम्'. १० MBP सुचरियघरु.

11 b प य प्रजा.

19. 2 पइंमि त्वयापि; महारिवारिणा महादुःखनिवारकेण. 3 a संहारहु प्रलयकालात्; b भुक्खामारहु क्षुधामरीसकाशात्. 5 a परिल्हसियउं हीनं जातम्; b जडरहुयासें जठरामिना. 6 b एवहिं इदानीम्. 8 b विसिहि जीविकायाम्. 11 a रंजणु अलंजलः अलिंजरो वा; b पयणविहि पचनविधिः 12 a सरीरताणु कवचादिकम्; जलंधारणु छत्रादिकम्; 14 सुंधरियघरु सुधृतभूमिः.

20

रचिता—अधर वि भणिय वणियवर हलहर सुयरियकहियकुलवहा ।

जड परिवडियधम्म चंडाल वि पयडियविहपैसुवहा ॥ १ ॥

लेहउ लोहयारु कुंभारु वि  
जेहिं जं जि णियकम्मु पयासिउ  
पल्लव सेंधव कौकण कोसल  
अंग कलिंग गंगै जालंधर  
दधिड गडड कण्णाड वराड वि  
सूर सुरट्टु धिवेहा लाड वि  
मागह जट्टं भोट्टु णेवाल वि  
देवमाउसासुम्भव ससलिल  
गिरितरुसरिदुग्गेहिं दुसंचर

तिलपीलउ मालिउ चम्मारु वि ।  
ताह तं जि कुलदेवें भासिउ ।  
टक्का हीर कीर खस केरल । 5  
वच्छ जवण कुरु गुज्जर वज्जर ।  
पारस पारियाय पुण्णाड वि ।  
कौंग वंग मालव पंचाल वि ।  
उड्ड पुंड हरि कुरु मंगाल वि ।  
साहारण अणूव पर जंगल । 10  
अडइदेस वसिकयधर ससबर ।

वत्ता—वइधरियहिं वणहरियहिं महि सोहइ चउपासिहिं ॥

कयैंगामहिं आरामहिं छेत्तहिं एकदुकोसहिं ॥ २० ॥

21

दुवई—चउविहगोउराइं चउदारइं णयरइं भूमिभूसणो ।

कारावइ पुराइं पुरुएवजिणो सुरैदिण्णपेसणो ॥ १ ॥

20. १ K पडिवडिय°. २ P °पसुविहा; MB °वसुवहा. ३ MBP वग. ४ MBP बन्बर.  
५ MBP भट्ट. ६ MBP वसिकयवर. ७ MB कयगामिहिं. ८ MBP खेत्तहिं.

21. १ MBP call this couplet रचिता; GK call it दुवई which it is. २ MB पुरएव°. ३ B सुरवरदिण्णपेसणो.

20. 1 सुय रिय° सुचरिता: सजनाः; °कुलवहा कुलमार्गाः. 2 परिवडियधम्म धर्मात्पतिताः;  
पयडियविहपसुवहा प्रकटितनानापशुवधाः. 3 a लेहउ विलकारो लेखकश्च. 10 a देवमाउसासुम्भव  
मेघवृष्टिजनितसस्याः; ससलिल नदीजलसेकादिना निष्पन्नसस्याः; b साहारण नदीजलसेकादिना मेघवृष्टया वा  
निष्पन्नसस्याः; 11 b ससबर शबरैः भिल्लैः सहिताः. 12 वइधरियहिं वृत्तियुक्तैः.

21. 1 भूमिभूसणो आदिनाथः.

खेडइं थियदुवासगिरिसरियइं  
 पंचगावसयसाहियमडंबइं  
 दोणामुहइं जलाहितीरत्थइं  
 सुणिरूवियसविणयसेवायर  
 पयणियरायसुरिदाणंदे  
 वण्णवउक्कमग्गु उवपसिउ  
 तिहुयणरायहु महिरायत्तणु  
 कम्मभूमिसंपय दरिसंतहु  
 पुव्वहुं वीस लक्ख गय जइयहुं  
 पाहिणरिंदामरसंघायहिं

कञ्चडाइं माहिहरपरियरियइं ।  
 रयणजोणिपट्टणइं अउव्वइं ।  
 संवाहणइं अहिसिहरत्थइं । 5  
 वइरायरपट्टइ जे आयर ।  
 ते रक्खाविय कुलयेरचंदे ।  
 दंढे दोसु असेसु पणासिउ ।  
 कवणु गहणु तहु मणुयपट्टसणु ।  
 कणयरयणधारहिं वरिसंतहु । 10  
 वज्जु पट्टु जगणाहहु तइयहुं ।  
 कच्छमहाकच्छाहिवरायहिं ।

घत्ता—सिंहासणि णिवसासणि आसीणउ परमेसरु ॥

जयसिरिसहि पालइ महि बहुहलहरउवणीयकरु ॥ २१ ॥

22

रचिता—हयमलचरणकमलजुयणिवडियविसहरस्त्रयरभूयरो ।

अकलुसतियसतरुणिकरपल्लवचालियचारुचामरो ॥ १ ॥

भोयविरामि छुहवेविरतणु  
 घरि उच्छुरसु पियहुं जेणायउ  
 सोमप्पहु कोक्किउ कुरुराणउ  
 हरि हरिकंतु कहि वि हरिवंसहु  
 कासवु मघवु भणेप्पिणु घोसिउ  
 भवरु अकंषणु सिरिहरु भाणिउ  
 चोइहमयकुलयरापियणंदणु

उड्डियकरयलु णीसेसु वि जणु ।  
 पहु इक्खाउवंसु ते जायउ ।  
 सो जायउ कुरुवंसपहाणउ । 5  
 कउ पुरिमिहु पुरसु सपससहु ।  
 उग्गवंसेमूलिहु पयासिउ ।  
 णाहवंसि सो पहिलउ जाणिउ ।  
 मरुएवीमणयणाणंदणु ।

४ MBP ° गाम°. ५ K कुवलयचंदे.

22. १ MBP पुरमिहु. २ MBP उग्गवंसु. ३ MBP चउवह°.

3 a दु वा स° द्विपार्श्व°. 5 b अ हि सि हर त्य इं पर्वतशिखरस्थानि. 6 b व इ रा य र प ट्ट इ वज्राकरप्रभृति;  
 a आ य र आकराः खनयः. 7 b ते आकररत्नानि. 14 उ व णी य° उपढौकित°.

22. 1 ह य म ल° हतमलः परमेश्वरः; °भूयरो मनुजः. 6 a हरि हरिनामा पुरुषः; हरि कं तु क हि वि  
 चन्द्रवत् कान्त इति भणित्वा, b पुरि मि हु आयः. 7 b °मूलि हु प्रथमपुरुषः.



फणिवरसिरमणिहयपयणेउरु  
कहियणरेसरकुलेहिं विराइउ

सकलत्तउ सपुत्तु संतेउरु ।  
अच्छइ रज्जु करंतु महाइउ ।

10

घत्ता—पय पालइ दक्खालइ णायमग्गु भाभासुरु ॥

सिरिअरुहें सहुं भरहें पुष्पयंतु रिसहेसरु ॥ २२ ॥

इय महापुगणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरहय

महाभवभरहाणुमणिए महाकव्वे आइदेवमहारायपट्टबंधो णाम

पंचमो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ५ ॥

॥ संधि ॥ ५ ॥

४ M °णरेसरकुलेहिं; K णरेसकुलेहिं

11 क हियण रे सर कु ल हिं पूर्वोक्तवृत्तप्रकारराजकुले : ७ महाइउ महार्थिकः 13 सिरि अ रुहें श्रीबोन्धेन.

## VI

अण्णहिं दिणि सभवाणि सुरवरहिं संथुउ संपयगारउ ॥  
फणिदणुयहिं मणुयहिं सेवियउ थिउ अत्थाणि भडारउ ॥ १ ॥ ध्रुवकं ॥

I

<p>मलयविलसिया—कंचणघडियइ हरिवरघरियइ</p>	<p>मणिगणजडियइ । पहविण्फुरियइ ॥ १ ॥</p>
<p>आस्सणि आसीणउ परमपहु दिण्णइं चाउरिपट्टासणइं रयणंचियाइं लोहासणइं एक्केक पहाणा खौणि मिलिय कु वि णरवइ घुसिणें समलहिउ कु वि दीसइ चंदणधूसरिउ मयणाहिविलित्तउ को वि णरुं णिवि कहिं मि घुलइ हारावलिय कासु वि पडंति चमरइं चलइं कप्परधूलिबहलुच्चलइं सो केण वि एंतु णिवारियउ</p>	<p>अमहहिं किं वणिज्जइ रिसहु । 5 सुंविचित्तदित्तवेत्तासणइं । दंडुण्णयाइं दंडासणइं । तहिं संणिसण्ण बहु मंडलिय । णं सिरिकामिणिराएं गहिउ । पंडुरु णं णियजसेण भरिउ । 10 ससिरविभीयउ धरइ व तिमिरु । कसणइ णं जलहरि विज्जुलिय । णं कित्तिसुभिसिणिहि सयदलइं । रुण्णुंरुंइ तहिं महुयरु घुलइ । तंबोलहु पाणि पसारियउ । 15</p>

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:

ध्रुवार्गदेव्यै कुप्यति वाग्देवी द्वेष्टि मनत लक्ष्म्यै ।

भरतमनुगम्य सांप्रनमनयोरत्यन्तिकं प्रेम ॥

GK do not.

1. १ MBP चाउरिवित्तासणइं. २ MBP सुविदित्तचित्तपट्टासणइं. ३ G खणमिलिय. ४ MBPT कु वि णिवरु.

1. 1 स भ व णि स्वप्रासादे; संपय गार उ सपत्तिकारकः. 2 अत्था णि आस्थाने सभायाम्. 4 a हरि-  
वरुं सिंहवरः; b प हं प्रभया. 6 a चा उ रिं गार्दति देशी. 7 b दंडु ण्ण याइं दण्डवदुन्नानि. 8 b सं णि-  
स ण्ण उपविष्टाः. 9 b सिरि का मि णि रा ए लक्ष्मीप्रमणा. 11 a मय णा हिं कस्तूरिका. 12 a णि वि नृपे;  
b क स ण इ कृष्णशरीरे मेधे. 13 b कि त्ति सु भि सि णि हि कीर्तिरेव शोभना पद्मिनी तस्याः; सय द ल इ पद्मानीव.  
14 b रु ण्णु रं ट इ शब्दं करोति. 15 a सो श्रमरः.

धत्ता—खगसामिहि काँमिहि सयलहि वि वंदारयबंधियणहिं ॥  
पणवतहिं संतहिं रईणिवहिं जहिं विरोहु मणिकिरणहिं ॥ १ ॥

## 2

मलयविलसिया—जत्थ गिसण्णो पणयपसण्णो ।  
सिंगारहरो रामाणियरो ॥ १ ॥

णियमंति जणं जहिं भस्सियर कट्टियहर परंपडिहारणर ।  
पहुअग्गइ सेबाडूसणउं णिट्ठीवणु जिंभणु पहसणउं ।  
कमकंपणु अहु णिहालणउं हिक्काण्ड भंउंहाचालणउं । 5  
खासणु धम्मिल्लामेळणउं करमोडि परासणपेळणउं ।  
अवठंभणु दप्पणदंसणउं अइजंपणु सगुणपसंसणउं ।  
सविचारउ कायणियच्छणउं इट्ठागमेवदुगुंछणउं ।  
संकेयवयणअवयारणउं पराणिदणु पायपसारणउं ।  
अवरु वि जं विणपं विरहियउं तं म कैरह गुरुयणगरहियउं । 10  
मण्णहु मॉणुसु सामिहि तणउं ढंकहु दीणत्तणु अप्पणउं ।

धत्ता—इय लक्खिउ अक्खिउ सेवयहो अहिमाँणिहि वणु वंगउ ।  
दउवारियपेरियदंडण मा छिप्पउ नहु अंगउं ॥ २ ॥

## 3

मलयविलसिया—सुरवरसारउ एम भडारउ ।  
अच्छइ जाँवहिं सुरवइ ताँवहिं ॥ १ ॥

५ MBP कामिहि कारिणहि. ६ P रुईणिवहि.

2. १ MBP वर°. २ M भउहा°. ३ M करहि. BP करहु. ४ MBP माणसु. ५ MB अहि-  
माणहि.

3. १ MBP जइयह. २ MBP तइयहु

16 कामिहि देशगजादीनां वाञ्छकै., वदारय° देवा. एव बन्दिजना. तै. 17 रइणिवहि प्रीतिसमूहेः.

2. 3 a णियमंति निषेधयन्ति, b कट्टियहर यष्टिधरा. 5 a अहु णिहालणउ वक्रावलीकनम्;  
b भंउंहा° श्रुः 9 a संकेय° सदेशः. 11 a मण्णहु मानयत. 12 अहिमाँणिहि वणुचेगउ अहंकारिणां  
वन चारु न तु सभा.

संखितइ अवहीणाणधर  
पुब्बहं परमेसरेण रमिय  
भुंजंतहु महि तेसद्धि गय  
अञ्जु वि मणि मण्णइ मत्त गय  
अञ्जु वि घैरि रहु किंकरणिबहि  
को हुयवहु इंधणेण धवइ  
को भोयं जीवहु करइ दिहि  
जाणंतु वि मुज्झइ देउं जहिं

बारहरविसंणिहकुलिसयह ।  
कुमरसें वीस लक्ख गमिय ।  
अञ्जु वि अवलोयइ चबल हय । 5  
इच्छइ अञ्जु वि संदण सधय ।  
अञ्जु वि ण विरप्पइ कामसुहि ।  
सरिसल्लिं सैरिणियराहिवइ ।  
वल्लवंतउ सव्वहुं कम्मविहि ।  
अण्णाणु अवरु किं भणमि तहिं । 10

घत्ता—रहराविउ भाविउ पंउं जगु किं पि णं याणइ जुत्तउ ॥  
सकलत्तहिं पुत्तहिं मोहियउ णिवडइ हेट्टोहुत्तउ ॥ ३ ॥

५

मलयविलसिया—दुट्टे धिट्टे  
ण तुह धणेणं

इज्जसु तिट्टे ।  
तिसि इमेणं ॥ १ ॥

अञ्जु वि णउ फिइइ भोयरइ  
अञ्जु वि पहुहियउ णउ उवसमइ  
सैरणिहिसमाहं मइ पयडियउ  
णट्टाहं धम्मकम्मतरहं  
आयारहं पंचमहव्वयइ  
ण पयासइ णवपयत्थसहिउ  
इय चित्तिवि इदं जाणियउं

अञ्जु वि णउ चितइ परम गइ ।  
माणवरमणीरमणउ रमइ ।  
अट्टारहकोडाकोडियउ । 5  
दंसणणाणइ चरियइं वरइं ।  
अणुवपगुणवयसिक्खावयइं ।  
सिद्धंतु अणाइ अेरुहैं कहिउ ।  
अवहिए भवियव्वु पमाणियउं ।

3 MBP रइ घरि. ४ B °णिवहो. ५ B कामसुहो. ६ M सरणियरा°. ७ MBP सव्वहं बलवंतउ. ८ MBP जाणतउ. ९ K एहु. १० MBPK एम. ११MP ण जाइ; B ण जाणइ. १२ MBP हेट्टाहुंतउ.

4. १ MBP ण उवसमइ. २ T सरिणिहि°. ३ B Omits this foot. ४ MBP °महावयइं.  
५ MB अरुहकहिउ.

3. 6 b संदण रथाः. 7 a किं कर णिवहि सेवकसमुहे. 8 a धवइ ध्मापयति; b सरिणि व रा-  
हि वइ समुद्रः. 9 b कम्मविहि कर्मप्रकारः, कर्मव विधाता. 11 राविउ रजितम्; भाविउ पुनः पुनः प्रकर्ष  
नीतम्.

4. 1 b तिट्टे हे तृष्णे. 5 a सरणिहिसमाहं सागरोपमानाम्.

णाहहु अञ्जु जि चरियावरणु	धुउ णिम्मह गेण्हइ तर्व्वरणु ।	10
पुण्णौउस णीलंजस णडइ	गयजीविय जइ अमाह पडइ ।	
र्ता होइ विरायहु कारणउं	इह दुविहु संजमुद्धारणउं ।	
जिणधम्मपवत्तणु होइ जणे	इय संभरेवि पुणु पुणु वि मणे ।	

घत्ता—णीलंजस रइवस मृंगणयण इदं भणिय आणिदहो ॥

तुहुं गच्छहि पेच्छहि कमजुयलु णच्चहि पुरउ जिणिदहो ॥ ४ ॥ 15

## 5

मलयविलसिया—ता तुंगथणी सयमहरमणी ।  
रयणमयघरं साकेयपुरं ॥ १ ॥

आया णहेण छउओयरिय	विञ्जुलिय णाहं चलविष्फुरिय ।	
पांडहियगाणसुरपरियरिय	णाहयणिहेलाणि अवयरिय ।	
पणवेप्पिणु पहु ओलगियउ	पेक्खणयहु अवसरु मग्गियउ ।	5
णाडयपारंभि पदमु भणिउं	वीसंगु वि पुव्वरंगु जणिउ ।	
वाइयउ तिपुक्खरु सुंदरउ	सुपसिद्धउ सोलहअक्खरउ ।	
चउमग्गु दुलेवणु छकरणु	तियनिह्लउ तिलयउ मणहरणु ।	
तिगैयउ तिपंचारु तिजोयैयरु	तिकरिह्लउ पंचपाणिपहरु ।	
तिपसारउ अवरु तिमज्जणउं	वीमालंकारसलक्खणउं ।	10
अट्टारहजाइहिं मंडियउ	एयहिं गुणेहिं अवरुंडियउ ।	
चच्चउहु भाणिउं पुणु चाचउहु	छंप्पियपुत्तु वि मणहारि फुहु ।	
इय तालैहिं तीहिं अलंकरिउ	बहुयहिं तम्भेयहिं परियरिउ ।	
वामुद्धालिगियसंणियउं	ओणद्धउं वज्जउं वणियउं ।	

६ MBP तवरणु ७ P पुव्वाउम. ८ P तो ९ MBPK इय but G इह with gloss संभरे. १० MBP मयणयण.

5. १ MBP पाडहिं गायण<sup>०</sup>. २ MB पेक्खणहो. ३ MB तिगइयउ. ४ MB तिचारु; P तिमचारु; T तियचारु. ५ MBP निजोयधरु. ६ MB छप्पिउ बुत्तु; P छप्पिउहु बुत्तु ७ MB ताडहिं.

10 b धुउ धुवं निश्चयेन; णिम्म इ क्षयोपशमं याति. 12 b दु वि हु स ज मु इन्द्रियसंयमः प्राणसंयमश्च; अथवा निश्चयव्यवहाररूपः. 13 b संभरे वि चिन्तयित्वा. 14 मृ ग ण य ण मृगनेत्री; अ णि द हो सर्वज्ञस्य.

5. 1 b सयमहरमणी इन्द्राणी. 3 a छउओयरिय क्षामोदरी. 5 a ओल गियउ सेवितः. 14 b ओणद्धेत्यादि—इत्थंभूतं यदवनद्ध वाथं तत त्विप्रकारं वर्णितं वाम ऊर्ध्वं आलिङ्गकसंज्ञितं चेति.

घत्ता—जहि लोयण तिहुअणु जलहिसम सुइसंखाइ सुललियहिं ॥  
चलबद्धहिं अद्धहिं मुक्कियहिं वत्तावत्तंगुलियहिं ॥ ५ ॥

6

मलयबिलसिया—विरईपुसिरे वंजे सुसिरे ।  
नृकयपसंसे जायउ वंसे ॥ १ ॥

सरु जेत्ये हुणंति सुअत्थसुइ  
कंपंतियाइ उग्गमु तिसुइ  
वत्तंगुलि मोक्खवसेण कय  
सरिसैहुं धेवंउ कंपंतियए  
गंधारणिसायविचलिययाइ  
पयणियवेणू णाणायेरेहिं  
पयडियउ जि देवागमि भणिउं  
घणु कंसतालजुयलाइयउ  
अमरहिं जिणंमणसंमाइयहिं  
उप्पणणउ उरठानंतरए  
कमरइयपमाणहिं संछिवइ  
सुइसु वि सरि ग म प धे णी यणाम

थिय मुक्कंगुलि व सुअट्टसुइ ।  
मुक्कंगुलियइ इयउ दुसुइ ।  
सैहुं सज्जे मज्झिमपंचमय । 5  
सामण्णसरंतरसंणियए ।  
अद्धइ मुक्कइ अंगुलिययाइ ।  
तुंबरुणारयसंणिहसुरेहिं ।  
णिक्कलु तेप्पु वि तंतीरणिउं ।  
समहत्थु देविं जैहिं चालियउ । 10  
पारद्धउ गेउ महाइयहिं ।  
बावीस सुइउ णहंतरए ।  
वडुंतु णाउ बुद्धिहिं धिवइ ।  
सर सत्त तेसु दोण्णि वि जि गाम ।

८ MBP चवलद्धहिं; T चवलद्धहिं but explains it as स्थितमुक्काभिः.

6. १ MBP विरइयपुसिरे. २ MBPT वजियसुसिरे. ३ MBP णिकयपसंसे. ४ MBP जाओ.  
५ MBP जेसु. ६ P सुअत्थवई. ७ BP कपंतियाउ. ८ MBP उग्गउ. ९ P सहुं मज्जे, १० MBP वेयउ  
T धइवउ. ११ M सामण्णे सरंतरसंणियए. B सरंतरसंणियए, सरंतरसंणियए. १२ M विचलियाइ; B विच-  
लियाइ, P णिचलियाइ. १३ MB अंगुलियाइ; P अंगुलियाइ. १४ P तिसुवि. १५ MB समहत्थ. १६ K  
सचालियउ. १७ P जिणसमण. १८ MBP बावीस वि सुइउ. १९ MP °पधणीसणाम; B °पधणिणाम.

16 वत्तावत्तंगुलियहिं उक्कविशेषणविशिष्टाभिरन्यक्तन्यक्काहुलिभिः.

6. 1 a विरईपुसिरे विरतिप्रोच्छके, अनुरागोत्पादक इत्यर्थ. 3 a सरु खरः. 5 b सज्जे षड्जेन  
सह. 6 b सामण्ण सरंतरसंणियए सामान्यस्वरत्वसंज्ञया युक्तः. 8 a णाणायेरेहिं नानादरैर्ज्ञानादरैर्बा. 6 b  
णिक्कलु तेप्पु वि तंतीरणिउं तन्त्रीवाद्य द्विविधं निष्कलं त्रिपंच (तेप्पु). 12 b णहतरए आकाशे. 13 b  
णाउ नादः.

घसा—सुरपुञ्जह सञ्जह किंनरहिं जाइउ सैंस पउत्तउ ॥

15

पयारह सुयरह मज्झिमह पीणियज्जणवयसोत्तउ ॥ ६ ॥

7

मलयविलसिया—सत्तेयारह  
जाइणिवञ्जहं

इय अट्टारह ।  
लंक्खविसुद्धहं ॥ १ ॥

अंसहं सउ चालीसाहियउ  
तहिं होंतउ सवणरवणियउ  
सुद्धा भिण्णा पुणु वेसरिय  
तहिं गामराय अवर वि भाणिया  
इय तीस कमेण जि संगहिय  
पहिलारउ टंकराउ कहिउ  
अट्टहिं पंचमु वि पयासियउ  
आवाहियमोहियजगविलउ  
मालविकेसिउ छहि बुक्कियउ  
सुद्धउ सञ्जु वि सत्तहिं कलिउ

एकुररु तं पि पसाहियउ ।  
गीइउं पंच उप्पणियउ ।  
गउडी-साहारणिया सँरिय । 5  
भयवयमयगुस्सितच्चणिया ।  
उडुमाण जि माणवसवणहिय ।  
अणुवेक्खासमभासहिं सहिउ ।  
“विहिं वि विहासहिं भूसियउ ।  
हिंदोलउ चउमासाणिलउ । 10  
अवराहिं मि दोहिं मि अंकियउ ।  
ककुहु मि तिहिं भासहिं संवल्लिउ ।

घसा—सुविहासहिं सरसहिं विहिं सहिउ सो गाइउ सुइलीणउ ॥

मणहरियउ किरियउ दावियउ जहिं परिणयपरिमाणउ ॥ ७ ॥

१० BP सुनपउत्तउ.

7. १ MBP लक्खु वि सुद्धह. २ MBP गायउ पचउ. ३ MBP भाणिय. ४ MBPT टंकराउ.  
५ MP विहिं नेय विहासहिं; B तिहिं नेय विहासहिं.

16 सुय रह स्पर्यताम्; °सोत्तउ °कर्णा.

7. 1 a सत्तेयारह सप्त एकादश च. 2 b लक्खु वि सुद्धहं गीतप्रयोगविशुद्धानाम्. 3 a अंसह अंसाम्; 4 a सवण रवणियउ श्रवणसुखदाः. 5 b सरिय स्मृताः. 8 b अणुवेक्खासमभासहिं द्वादश-मावासमन्वितः. 10 a आवाहिये व्यादि-आवाहिता आकारिता मोहिता विह्वलीकृता जगविलउ जगति क्लियो येन एतादृशो हिंदोलकरागः.

8

मलयविलासिया—दह चउगुणिया  
भासाणं सा

संखा भणिया ।  
छह वि विहासा ॥ १ ॥

भणियउ रंजियबुहयणमणउ  
एकुणवण्णास बिताण जहिं  
संजोय ताण बहुदिण्णरस  
भणु कासु ण सा दिट्ठिहि भरइ  
तेरहविहु सीसु पणच्चियउ  
णवतारिउ परिपालियरइउ  
तेत्तियविहु पुणरवि भावियउ  
भू सत्तभेय परहिययहर  
सत्तविहु चिबुंउ चउ मुहहु राय  
सोलहविहु तिविहु चउव्विहु वि  
उरु सरविहु पासजुयलु तिविहु  
कडियलु जंघा कमकमलाइं  
सउ करणहं वसुसंखाहियउ  
चउ रेयय णडगुरुकित्तिधय  
चारिउ सोलस दुअसंखियउ  
वीस वि मंडलइं पैयासियइं

एयारह दहवर मुच्छणउ ।  
किं वण्णमि गेयारंभु तहिं ।  
णीलंजस णच्चइ विमलजस । 5  
णच्चंती जणहियवउ हरइ ।  
छत्तीस दिट्ठि परियंचियउ ।  
अट्ट वि रइयउ दंसणगइउ ।  
णंदण्यारु फुड्ढ दावियउ ।  
छव्विह णासा कबोल अहर । 10  
णव गल चउसट्ठि वि करण भाय ।  
किउ करणमग्गु भुउ दहविहु वि ।  
पोट्टु वि पायच्चियउ तं तिविहु ।  
तव्विहइं जि णिहियइं विमलाइं ।  
चलवत्तीसंगहारमियउ । 15  
सत्तारह पिंडीबंध कय ।  
णच्चियउ जियक्खहिं अक्खियउ ।  
ठाणाइं तिण्णिण संदरिसियइं ।

अत्ता—संचरियहिं धरियहिं थौरियहिं भावहिं णडइ अणेयहिं ॥

भौसाइहिं जाइहिं णवरसहिं दावियणाणाभेयहिं ॥ ८ ॥ 20

8. १ MT विउउ; B चिवउ; GK चिउबु. २ M पसासियइं; P पसाहियइं. ३ MBP आइयहिं.  
४ K हासाइहिं.

8. 2 b विहासा विभाषा: षड् भवन्ति. 8 a परिपालियरइउ पोषितरागाः. 9 b णंदण्यारु नव  
नन्दास्तेषां प्रकारः. 10 a भू झुकुटी. 11 b करण भाय हस्तानां भेदाः. 12 b भुउ भुजः. 13 a सर-  
विहु पञ्चप्रकारम्. 16 a णडगुरुकित्तिधय नटानां गुर्व्याः कीर्तैर्ध्वजाः. 17 b जियक्खहिं जितेन्द्रियैर्गणधरे-  
दैवादिभिः. 19 थाइयहिं भावहिं स्थायिभावै रत्यादिभिः.



## 9

मलयविलासिया—वियलियहरिसं  
झत्ति धरंती

स हि णवमरसं ।  
दिट्ट मरंती ॥ १ ॥

जिणणाहें सा नीलंजसिय  
कंदप्पकंति णं पंमुसिय  
णं खाणि विद्धंसिय रइहि पुरि  
णं रंगसरोवरि पउमिणिय  
णं चंदरेह णहि अन्धामिय  
रसवाहिणि दिण्णरवण्णसुह  
णउ थण णञ्जणगुण णउ वयणु  
णउ केसभारु णउ हारलय  
सुण्णउं पंगणु हरिणीलयलु  
अमराहिवणारिरयणु मुयउ  
हा हा भणंतु सोपं लइउ

णं केण वि चित्ति लिहिवि पुंसिय ।  
लायण्णतरंगिणि णं सुंसिय ।  
णं हय जणणयणणिवाससिरि । 5  
कम्मेण कालरुवें लुणिय ।  
णं सुरअणुसिरि मरुणा समिय ।  
णं णासिय पिसुणें सुकइकह ।  
णउ विउल्लु रमणु संचियमयणु ।  
णउ जाणहुं सुंदरि कहिं मि गय । 10  
णं विञ्जुविवज्जिउ मेहउलु ।  
तं पेच्छिवि कोऊहलु हुयउ ।  
अत्थाणु असेसु वि विरुहइउ ।

घत्ता—तहि मरणें करुणें कंपियउ भरहजणणु सवियकउ ॥

तुण्हिक्कउ थक्कउ तिजगगुरु कुंसुमयंतु रइमुक्कउ ॥ ९ ॥ 15

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए  
महाभव्वभरहाणुमण्णिणए महाकव्वे नीलंजसाविणासो णाम  
छट्टओ परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ६ ॥

॥ संधि ॥ ६ ॥

9. १ MB फुमिय, २ MBP पयपुसिय, ३ MB सुसुय, ४ MBP सरोवर°, ५ MBP णउ कर-  
कम. ६ M विंभइउ, B विंभयउ, P विभियउ. ७ MBP करणें. ८ MBP कुसुमयंत° and gloss in  
P कुसुमवदन्ता या नीलंजसा तस्या रतेर्मुक्तः.

9. 1 b स सा नीलजसा, हि स्फुटम्, णवमरसं शान्तरमम्. 3 b पु सिय प्रोञ्छिता. 4 a पंमु सिय  
प्रमुषिता. 7 b म र णा पवनेन. 9 b जाणहुं ज्ञायते. 11 a ह रि णी ल य लु इन्द्रनीलमणिबद्धतलम्. 14 स-  
वि य क उ सविस्मयः. 15 कु सु म यं तु कुसुमवदन्ता यस्य तादृश आदिनाथः; र इ मु क उ रतेर्मुक्तः.

## VII

कयतिहुयणसेवें चित्तिउ देवें जगि धुउ किं पि ण दीसइ ।  
जिह दावियणवरस गय णीलंजस तिह अवरु वि जाणसइ ॥ १ ॥

I

खंड्यं—इह संसारदारुणे बहुसररीरसंधारणे ।  
वसिऊणं दो वासरा के के ण गया णरचरा ॥ १ ॥

पुणु परमेसरु सुसेमु पयासइ	धणु सुरधणु व खणैद्धे णासइ ।	5
हय णिय रह भड धवलइं छत्तइं	सासयाइं णउ पुत्तकलत्तइं ।	
जंपाणइं जाणइं धयचमरइं	रविउग्गामणे जंति णं तिमिरइं ।	
लच्छि विमल कमलालयवासिणि	णवजलहरचल बुहउवहासिणि ।	
तणु लायणु वणु खणि खिज्जइ	कालालिं मयरंदु व पिज्जइ ।	
वियलइ जोव्वणु णं करयलजलु	णिवडइ माणुसु णं पिक्कउ फलु ।	10
तुयहि लवणु जसु उत्तारिज्जइ	सो पुणरवि तणि उत्तारिज्जइ ।	
जो महिवइ महिवइहि णविज्जइ	सो मुउ घरदारेण ण णिज्जइ ।	

घत्ता—किर जित्तउ परबलु भुत्तउ महियलु पच्छइ तो वि मरिज्जइ ॥

इयं जाणिवि अद्दुउ अवलंबिवि तउ णिज्जणि वणि णिवासिज्जइ ॥ १ ॥

MBP have, at the commencement of this samdhi, the following stanza:-

हंहे भद्र प्रचण्डावनिपतिभवने त्यागसंख्यानकर्ता  
कोऽयं श्यामः प्रधानः प्रवरकरिकराकारबाहुः प्रसन्नः ।  
धन्यः प्रालेयपिण्डोपमधवलयशोधौतधात्रीतलान्तः  
ख्यातो बन्धुः कवीनां भरत इति कथं पान्थ जानासि नो त्वम् ॥

MB read हंहे for हंहे; प्रचण्डाधनि° for प्रचण्डावनि°; and °संख्यात° for °संख्यान°. GK do not give it.

1. १ M reads खंडियं throughout. २ T ससमु but adds सुसमु वा शोभनोपशमयुक्तः.  
३ P खण्डं. ४ MBP तियहिं. ५ B इउ. ६ B अधुवु, P अद्धउ. ७ MBP अवलंबियभुउ but gloss  
in P तपो गृहीत्वा.

1. 3 a संसारदारुणे दारुणे संसारे. 4 a वसिऊणं उषित्वा. 5 a सुसमु शोभनोपशमयुक्तः  
द्वादशानुप्रेक्षारूपं वा. 7 a जं पा ण इं पालखीति देशी. 8 b बुहउवहासिणि पण्डितद्वेषिणी. 9 b कालालिं  
कालभ्रमरेण यमभ्रमरेण. 11 a तुयहिं स्त्रीभिः; b तणि उत्तारिज्जइ तृणे तृणसंस्तारके तृणोपरि स्थाप्यते,  
सूते तृणोपरि स्थाप्यत इत्यर्थः. 13 जित्तउ जितम्. 14 अवलंबिवि गृहीत्वा.

## 2

खंडयं—चइरिरायदप्पहरणं किं जोयइ भुयपहरणं ।  
मण्णइ अप्पाणं घणं सरणविरहियं जयमिणं ॥ १ ॥

जइ वि धरंति वीर णर किंणर	अरुण वरुण सपवण वइसाणर ।
गरुड जक्ख रक्खस विज्जाहर	भूय पिसाय णाय ससि दिणयर ।
पडिबलकुलकाणणकालाणल	इंद पडिंदहमिंद महाबल । 5
पण्णारहखेत्तुम्भव जिणवर	कुलयर चक्खवट्टि हरि हलहर ।
जइ वि धरंति देहंभा भासुर	पवराउहपवीण देवासुर ।
जइ पइसइ मयरहरम्भंतरि	किंकरहरिकरिरहवूहंतरि ।
सरसरिगिरिदरिक्करकंदरि	दुप्पवेसकुलिम्मार्यंसि पंजरि ।
बहलतमंघंयारमहिमूलइ	जइ पइसरइ गंपि पायालइ । 10
तो वि जीउ कंठिजइ कालं	हरिणा हरिणु व मिउडिकरालं ।

घत्ता—इय बुज्झि वि असरणु रंभिवि तियरणु जेण चरिणु ण चिण्णउं ॥  
तं माणुसवेसें वायविसेसे भमइ कलेवरु सुण्णउं ॥ २ ॥

## 3

खंडयं—मित्तसयणसंजोयओ होउं होइ विओयओ ।  
एक्का थिय जगि जीयओ भमइ सकम्मविणीयओ ॥ १ ॥

एक्कु जि जइ जच्चंधु णउंसउ	दुग्गउ दुट्टु दुबुद्धि दुरासउ ।
हुयउ कुमाणुसात्ति दुणिहालउ	एक्कु जि जीउ चंडु चंडालउ ।
एक्कु जि धणुहरु सबरु वणंतरि	एक्कु जि सुरवरु मणिमयसुरहरि । 5

2, १ MBP पण्णारम°. २ MBP देव भाभामुर. ३ MBP कुलिसायस°. ४ MBP °तमभयारि.  
५ M कट्टिजइ.

3. १ P संजोयइ. २ P विओयइ.

2. 1 b भुयपहरणं भुज च प्रहरणं च. 2 a घणं समर्थ अत्यर्थ वा; b जयमिणं इदं जगत्. 3 b अरुण आदित्यसारथि. 8 a मयरहर° समुद्रः; b °वूहंतरि व्युहान्तरे. 11 b हरिणा हरिणु व सिंहेन मृग इव. 12 तियरणु मनोवाकायक्रिया; चिण्णउ अनुष्ठितम्. 13 वायविसेसें वाचाविशेषेण वायुप्रेरणेन वा.

3. 1 b होउं भूत्वा. 2 b °विणीयओ प्रेरितः. 3 a णउंसउ नपुंसकः; b दुग्गउ दरिद्रः; दुरासउ दुष्टचित्तः. 4 a दुणिहालउ दुष्प्रेक्ष्यः. 5 a धणुहरु सबरु धनुर्धारी भिल्लः; b °सुरहरि °विमाने.

अप्यउ पुण्णहीणु पडिबज्जइ सयमहविहवपल्लोयणि शिज्जइ ।  
 एकु जि णहि णहयर थलि थलयर एकु जि बिलि विसहर जलि जलयर ।  
 एकु जि मृंगजोणिहि उप्पज्जइ परिहि तलिवि पउलिवि खणि खज्जइ ।  
 एकु जि दूहउ दूसहु दुम्मइ णरयधिवरि णारइयहिं हम्मइ ।  
 एकु जि तरइ मरइ वइतरणिहि चरइ जलणपज्जलियहि धरणिहि । 10

घत्ता—एकु जि भवकइमि णिवडइ दुइमि रइसुहपंकयछप्पउ ॥

एकु जि तवताविउ णाणं भाविउ होइ जीउ परमप्पउ ॥ ३ ॥

4

खंडय—इय णिसुणिवि एयत्तणं गाढं णियमह णियमणं ।  
 एकु जि जीउ वरायओ सयलु वि अण्णु जि लोयओ ॥ १ ॥

अण्णहिं परमाणुयहिं णिवज्जइ अण्णु जि पिंडु गग्भि संबज्जइ ।  
 अण्णु जीउ अण्णु जि दुक्कियमलु अण्णु जि सुंक्कियउ अण्णु जि तहु फलु ।  
 अण्णहिं कुलि कलत्तु परिणिज्जइ अण्णु जि को वि पुत्तु णिप्फज्जइ । 5  
 अण्णु जि मित्तु मयैज्जि कयायर अण्णु जि होइ सण्णेहउ भायर ।  
 अण्णु जि भिच्चु होइ धणलोहं जीउ तइ वि मोहिज्जइ मोहं ।  
 अण्णु जि भणइ महारउ मत्तउ णउ जाणइ जिह सयलहिं चत्तउ ।  
 अण्णहिं जंति खण्णं रहवर हयवरगयवरविंध सच्चामर ।  
 परमत्थं ण को वि जगि कासु वि एकलउ जि जाइ पुहईसु वि । 10

घत्ता—राएण णिवद्धउ इंदियलुद्धउ सुहु अण्णु जि महुं भावइ ॥

ससहाउ ण पेक्खइ अण्णु जि कंखइ जीउ महावइ पावइ ॥ ४ ॥

३ MBP भिगजोणिहि. ४ M परिहि तलिज्जइ पउलिवि खज्जइ. ५ B खिज्जइ.

4. १ MBP सुक्किउ. २ MBP पुत्तु को वि उप्पज्जइ. ३ MBP सकज्जि. ४ M सण्णेहं. ५ MBP एकिल्लउ. ६ MB जणि; P मणि.

6 b शिज्जइ खियते. 8 b परि हि परैविप्रेः. 11 एकु जि असहाय एव; °पंकयछप्पउ कमले अमरः. 12 न व ता वि उ तपस्तापित..

4. 1 a एयत्तण एकत्वम्. 2 a वरायओ वराकः; b अण्णु जि भिन्न एव, लोयओ लोकश्वेत-  
 नाश्वेतनपदार्थसघातः. 3 b पिंडु देहः. 4 b सुक्कियउ सुकृतम्. 5 b पुत्ते त्यादि—आत्मा वै पुत्र इति वेदवाक्यं  
 वृथेत्यर्थः. 7 a भिच्चु भृत्यः. 8 a मत्तउ विवेकशून्यः. 10 a पुहईसु वि पृथ्वीशोऽपि. 12 ससहाउ  
 निजस्वरूपम्; महावइ महापतिं महतीमापदम्.

## 5

खंडयं—चउकसायरसरसियओ  
णाणाजेम्मु वियारण

मिच्छासंजमवसियओ ।  
आहिंडइ संसारण ॥ १ ॥

णरयगाइहि उप्पण्णउ जइयहुं  
तिलु तिलु छिदिवि दिसिहिं विहाइउ  
वारवार पच्चारिउ जूरिउ  
पक्कु जि बहुयहिं तहिं पारंभिउ  
ओहामिउ भामिउ ओणामिउ  
अच्छोडिउ मोडिउ महिं पाडिउ  
लूरियंतु कौंतेहिं विहिण्णउ  
ससिहिं हूलिउ जंतिहिं पीलिउ  
धम्मविहंठणेहिं दुब्बोलिउ  
पूयकुंडि उप्पेह्लिवि घल्लिउ

णारयणियरिहिं हंभिवि तइयहुं ।  
कवल्लिउ धुणिउ वणिउ विणिवाइउ ।  
विज्जुतरलतरवारिवियारिउ । 5  
खलिउ दलिउ पयमलिउ णिसुंभिउ ।  
सूलि कयंतदंति संकामिउ ।  
विरसमाणु करवत्तहिं फाडिउ ।  
रुंदोदूहलि मुंसलहिं लुण्णउ ।  
जलियजलणजालोलिहिं जालिउ । 10  
सेल्लभल्लिवावल्लहिं सल्लिउ ।  
रुहिरोगलियदेहु ओणल्लिउ ।

घत्ता—मणि रोसु धरंतहं रणि पहरंतहं लग्गइ गत्तु विहत्तु वि ॥

सुहु णन्थि तमंधं णारयसंदहं णयणणिर्मालणमेत्तु वि ॥ ५ ॥

## 6

खंडयं—सिंगीसु य पक्खीसु य  
भुंजंतो भवसंगमं

दाढीसु य णक्खीसु य ।  
ण लहइ जीवो णिग्गमं ॥ १ ॥

कायकंककोइलकारंडहिं  
सीहसरहसूयग्गालूरहिं

सारसचासभासभेरुंडहिं ।  
घारमोरमंडलमज्जारहिं ।

5. १ MBP संजमि वसियउ. २ MBP °जम्म° ३ MB दिसहि. ४ MBP मुसल्ले. ५ M °विहट्टणेण.

5. 1 a °रस° परिणतिः; °रसियओ आत्मक 4 a विहाइउ विभक्त. b धुणिउ कम्पितः, वणिउ वणितः, विणिवाइउ पातित. 5 a पच्चारिउ प्रचारित, जूरिउ दुर्वचनैर्निर्भन्सित. 6 b णिसुंभिउ प्रक्षिप्तः. 7 a ओहामिउ अभिभूत, ओणामिउ ऊर्ध्वमुरो नामित. 9 a लूरियंतु विदारितान्त्रः; विहिण्णउ विभिन्नः; b रुंदोदूहलि महोदूखल्ले. 10 a हूलिउ प्रोतः. ११ a दुब्बोल्लिउ दुर्वचनैरुक्त, b °वावल्लहिं सर्वलोहमयैः. 12 b रुहिरोगलियदेहु रुधिरप्रक्षालितशरीर, ओणल्लिउ अध. पातित. 13 विहत्तु विभक्तं खण्डीकृतम्.

6. 2 a भवसंगमं ससारसंबन्धम्. 3 a °कारड° चक्रवाकः.

कीरकुररकुंजरसारंगहिं	लौवयपारावयहिं तुरंगहिं ।	6
कुंकुडमकडमहिसमरालहिं	मेसवसहखरकरहसियालहिं ।	
सेढौसरढतरच्छहिं रिच्छहिं	मयरमहोरयकच्छवमच्छहिं ।	
तिक्खतिरिक्खदुक्खसंदाणहिं	संभवंतु णाणाविहजोणिहिं ।	
बलणिम्मथणु णियलणिबंधणु	भारारोहणु णौणाबंधणु ।	
छिंदणु भिंदणु ताडिणु तासणु	उक्कत्तणु सरीरविद्धंसणु ।	10
सरपाहाणसंधसंधट्टणु	लोदणु आवट्टणु परिवट्टणु ।	
दलणु मलणु मुसुमूरणु जूरणु	पीलणु पडलणु दारणु मारणु ।	
छुहतिण्हाकिलेससंतावणु	भारारूढदेसपुरगामणु ।	
पव दुक्खलक्खाइं सहेप्पिणु	जीउ तिरियगइ कह व मुपप्पिणु ।	
यत्ता—णियकम्मवसायउ होइ चिलायउ पारसु बब्बरु सिंहेलु ॥		15
दुणचीणाणिवासउ अमणुयभासउ णउ पावइ अज्जवकुलु ॥ ६ ॥		

## 7

खेडयं—मेच्छो ण कुर्णइ णियहियं	करइ दुलंघं दुक्कियं ।
विहुरावत्तरउदए	णिवडइ णरैयसमुदए ॥ १ ॥
जइ वि लहइ अवियलु पविमलु कुलु	हियइच्छियउ किं पि संपयफलु ।
खमदमसमसंजमसंजुत्तहं	तो वि ण लहइ संगु गुणवंतहं ।
कुगुरुकुदेवकुमग्गे मुज्झइ	जिणवरवयणु कया वि ण बुज्झइ ।
जडविडकहियहु मयवहधम्महु	लगाइ काइं मि कुच्छियकम्महु ।
लुद्ध मुद्ध चंडिइ मंडिवि मिसु	पियइ मज्जु कवलइ सरसामिसु ।

6. १ M लायय°. २ B कुकुड°. ३ MBP सेहा°. ४ MP °रिच्छहिं. ५ MBP णासाविधणु. ६ MBP छुहत्तण्हा°. ७ M °गावणु. ८ MBP सिंघलु. ९ MBP अमुणियभासउ, but gloss in P नरभाषारहितः.

7. १ MBP मुणइ. २ B णरइ समुदए. ३ P °कुसम्मै. ४ MBP °कम्महु. ५ MBP °धम्महु.

10 b उक्कत्तणु उत्कर्तनम्. 12 a मुसुमूरणु पिण्डीकरणम्. 15 ° वसायउ अधीनः. 16 अमणु य-भासउ नरभाषारहितः; अज्जवकुलु आर्यकुलम्.

7. 1 a मेच्छो म्लेच्छः. 2 a विहुरावत्तं दुःखावर्तः. 3 a अवियलु बन्धुजनादिपरिपूर्णम्. 6 a मयवह्मं मृगवधः. 7 a चंडिइ मंडिवि मिसु चण्डिकामिषं कृत्वा.

पसुबलि देंतहं ण खमइ वइवसु                      मारउ मरिवि होइ पुणरवि पसु ।  
 विरसंतहं सिरकमलु लुँणिजइ                      सो वि तहिं जि अण्णें मारिजइ ।  
 पुष्पणिबद्धउ अग्गइ धावइ                      जो जं करइ सो जि तं पावइ । 10

घत्ता—पसु फाडिवि खजइ वारुणि पिजइ सग्गु मोक्खु पाविजइ ॥  
 जइ एण जि कम्मं ता किं धम्मं पारद्धिउ सेविजइ ॥ ७ ॥

## 8

अंडयं—दुयवहहुणिया सग्गयं                      जंति परावरमग्गयं ।  
 जाया देवा जइ अया                      परिसया दिक्खरणया ॥ १ ॥

वेयकहियमंतहिं आयामइ                      तो अप्पाणउ कांस ण होमइ ।  
 सोत्तिउ सग्गसोक्खु किं णेच्छइ                      किं कुसरीरें बद्धउ अच्छइ ।  
 णियडिंभइ मुइ धाहहि कंदइ                      छार्यलु छावउ छम्मिउ छिंदइ । 5  
 ताडिजइ संरुज्झइ बज्झइ                      बच्छु णिरोहिवि अण्णें दुँज्झइ ।  
 खाइ पुरीसु विबुद्धि वराई                      दुरियहलेण सुरहि संभूरे ।  
 लोयहु देवि भणिवि वक्खाणइ                      धुत्तु अधुत्तं वंचहुं जाणइ ।  
 गाइ चउप्पय तणयरि जेही                      सुयरि हरिणि वि रोहिणि तेही ।  
 हा हा बंभणेण माराविय                      रायहु रायवित्ति दरिसाविय । 10  
 पियरपक्खु पच्चक्खु णिरिक्खइ                      मंसखंडु दियपंडिय भक्खइ ।  
 धोयंतउ दुद्धं पक्खालउ                      होइ कहिं मि इंगालु ण धवलउ ।  
 एहु देहु किं सलिलें धुप्पइ                      हिंसारंभे डंभे लिप्पइ ।

१ MBT विलुजइ.

8. १ P दुयवहु. २ M सग्गभोग्गु, B सग्गजोग्गु; P सग्गभोग्गु. ३ MBP छावलछावउ. ४ MB  
 दुग्गभइ. ५ MBP अधुत्तं वचइ. ६ MBP हरिणी रोहिणि. ७ MBP दिउ पंडिउ. ८ MBP हिंसारंभे डंभि  
 तो लिप्पइ.

8 a वइवसु यमः. 11 वारुणि मद्यम्.

8. 1 a दुयवहहुणिया अमौ होमिताः; b परावर<sup>०</sup> मोक्षः. 2 a अया अजाः; b दियवरणया  
 द्विजानामभिप्रायाः. 3 a आया मइ मुखमध्ये वस्त्रादिकं मुक्त्वा प्राणादिरोधं करोति. 5 b छम्मिउ वक्कः.  
 7 a विबुद्धि विगतबुद्धिः; b सुरहि गौ. 9 a चउप्पय चउप्पदीः तणयरि तृणचरी. 11 a पियरपक्ख  
 पितृपक्षः श्राद्धादिकम्, b दियपंडिय द्विजपण्डितः.

अण्णण्णे रंणे रंजिज्जइ परमागमरसेण णउ भिज्जइ ।  
 यूदु जिणिदसेव कहिं पावइ सवणु गहणु धरणु वि ण विहीवइ । 15  
 घत्ता—मायारउ मण्णइ मुणि अवगण्णइ जीवहिंस पडिवज्जइ ॥  
 माणुसु वि हवेप्पिणु पाउ करोप्पिणु पुणु संसारि णिमज्जइ ॥ ८ ॥

## 9

खंडयं—ईसिं णिउंवि य जोव्वणं कामकोहतवभावणं ।  
 काउं सेवइ जो वणं सो पावइ तं भावणं ॥ १ ॥

अवरुद्धि जायउ उववणठाणइ जोइसकप्पणिवासविमाणइ ।  
 वाहणु वेयालिउ छत्तियधरु वाइत्तयवायउ सम्भेयरु ।  
 णच्चणु गायणु सुइसुहदावउ अण्णु वि होइ असम्मयभावउ । 6  
 णवर मरंतु संतु उव्विज्जइ वेवइ चलैइ घुलइ परिखिज्जइ ।  
 हा कप्पइम हा माणमसर हा णीहारहारसंणिहघर ।  
 हा अच्छरउलमणसंमोहण हा परियणपडिवक्खणिरोहण ।  
 हर्यवल्लिपलियरोयसयसंचेय हा हा दिव्वदेह हा णववय ।  
 हल्लंकारसार सहसंभव हा गंधार मडुर वीणारव । 10  
 हा देवंगवत्थ णिच्चुज्जल हा मंदारदाम चल सभसल ।

घत्ता—सम्मत्तविमुक्कहु जिणपयचुकहु अवसें हियउ ण सुज्जइ ॥  
 सग्गाम्मु मुयंतहु पलयहु जंतहु कांसु सरीरु ण डज्जइ ॥ ९ ॥

१ M विभावइ.

9. १ MT इसी and gloss मुनिर्भूत्वा, P इसि. २ MP सुदुसुहदावउ. ३ MBP वलइ. ४ MBP हा वलि°. ५ MBP °सचुय but gloss in P देह. ६ सोलंकार°, ७ MB कासु ण हियवउ; P कासु वि हियउ ण.

15 b वि हा व इ विभावयति प्राप्नोति. 16 मा या र उ मातूरत्तं विप्रं सेमानयति.

9. 1 a ईसि ईषत्; णिउंवि य सवृतं कृत्वा. 2 b भा व णं भवनवासिदेवत्वम्. 4 a उ व व ण ठा ण इ व्यन्तरदेवस्थाने. 4 b स भ्ने य रु भण्डो भवति सभ्यादितरः. 6 a उ व्वि ज्ज इ चिन्ता करोति. 9 a °सं च य देह. 10 b गं धार गीतम्.



## 10

खंडयं—सुललियमइलियचेलयं  
भोयविरायणिबंधयं

अइओहुल्लियमालयं ।  
जायं मह खयच्चिंधयं ॥ १ ॥

सयलजिणाहिसेयधुयमंदर  
हा हे कुलिसपाणि जगसुंदर  
हा मह माणुसेण होएवउ  
सोणाधिणिग्गमि दुक्खु णिएवउ  
हा हा देवलोय केहिं पेच्छमि  
जाउ मसाणहु तं मणुयत्तणु  
अट्टरउइभावसंचोईय  
हा हा हा भणंतु उब्भिर्यकर

धूवधूमधूवियगिरिकंदर ।  
पइं मि ण रक्खिउ देव पुरंदर ।  
किमिमलभेरियइ गग्गि वसेवउ । 5  
णारिउरोरुहैछीरु पिएवउ ।  
कुहियक्खेवरि वासु ण इच्छमि ।  
वैर वणि होसमि चंदणु वंदणु ।  
मिच्छादिट्ठि सुदिट्ठिविओईय ।  
एम मरतं होंति सुर तरुवर । 10

वत्ता—जिणधम्मपरंमुहु दुण्णयसंमुहु खयकाले अच्छोडिउ ॥

बहुविहमयमत्ते ईयं मिच्छत्ते को भवगहाणि ण पाडिउ ॥ १० ॥

## 11

खंडयं—तिप्पयारसंठाणयं  
जीवाजीवसुसंकुलं

चोईहरज्जुपमाणयं ।  
विस्सं णिच्चं णिच्चलं ॥ १ ॥

थिउ आयासि अजंताणंतइ  
गाहु गाहु छहिं दव्वहिं भरियउ  
पुग्गलजीवभावकयभेयहिं

केवलणाणविलोयणखेत्तइ ।  
केण वि कियउ ण केण वि धरियेउ ।  
कालवसेण जाइ पजायहिं । 5

10. १ MBP °विरायं. २ B °भरियगग्गि. MK °खीरु. ४ MBP किं. ५ MBP वरि. ६ MBP °संचोइउ. ७ MBP °विओइउ. ८ MBP °करु. ९ M एम मरेवि होइ सुर तरुवर; BP एम मरेवि होइ सुरतरुवर; १० MBP इह.

11. १ MP चउदहं. २ P adds after this line: अच्छइ सयलु वि जीवहं भरियउ थियचउउल्लउ अिम तिम धरियउ.

10. 1 b अइओहुल्लियं अनिम्लानं. 2 a °णिबंधयं कारणम्; b महमम; खयच्चिंधयं क्षयच्चिंधं मरणविहम. 7 b कुहिय कुथितं. 8 b वदणु वृक्षविशेषः; पिप्पल इत्यन्ये. 10 b होंति सुरतरुवर देवा वृक्षा भवन्ति. 11 अच्छोडिउ कवलितः. 12 °मयमत्ते जाल्यादिमदमतैन.

11. 1 a तिप्पयारं शरावाद्याकृनिमांल्लोक.. २ b विस्सं विश्वं जगत.

पहिलउ द्वाणवणरयणिवासउ  
बीयउ मणुयतिरिक्खणिहेलणु  
कप्पाकप्पदेवणेवच्छउ  
मोक्खु वि आयवत्तसंणिहयरु  
परमाणुयपरमाणु ण पेक्खमि

पहलियसरावसंकासउ ।  
वज्जोवमु पयत्थपरिघोलणु ।  
तइयउ जगु मुइंगसारिच्छउ ।  
जो तं पत्तउ सो अजरामरु ।  
संसारियडु सोक्खु किं अक्खमि । 10

घसा—चउगाइहि मरंतं पुणु पुणु होंतं विहसिवि देवं वुत्तउ ॥

सुहदुक्खणिरंतरि तिजगम्भंतरि जीवें काइं ण भुत्तउ ॥ ११ ॥

## 12

खंडयं—सारमेयवुड्ढिगयं

सारमेयसिवजोगयं ।

एसो कम्मकले वरं

मण्णइ तहं वि कलेवरं ॥ १ ॥

अट्टिलाट्टिकुडुयलणित्तउ  
पांसुलियातुलाहिं घणघडियउ  
पट्टिवंसखंमुण्णयमाणउ  
मेज्झमंसन्निक्खिल्लविलित्तउ  
सेयसुकमेत्थिकुदुगंधउ  
वोक्कयंतकिमिउलमलपोट्टु  
अम्भंतरि किर केण पलोइउ  
णिच्चसुत्तलालाजलाधिप्पिरु

दीहरणाउणिबंधणवत्तउ ।  
संधिहि संधिहि खीलियजडियउ ।  
जंघाजुयलु सैमोडियथूणउ । 5  
णवदुर्धारु लोहियसंसित्तउ ।  
छिरंतुंदाहिजालसंरुद्धउ ।  
वियलियरसवसवीसंदु विट्टु ।  
बाहिरि चम्मपडलपच्छाइउ ।  
रोइ पूइ अन्दुउ संताविरु । 10

३ M भवतं; BP भमंतं.

12. १ MBP सारमेयवुड्ढिगयं. २ P तह व. ३ MBP णिबंधणवत्तउ. ४ MB पंसिलिया°, P पंसुलिया°. ५ MBP खीलिहिं. ६ BP समोडेय°. ७ P मज्ज° ८ MBP °दुवार°. ९ B °मथिक°. १० P थिर°; K थिर° but corrects it to थिर°. ११ MBP °वीजि and gloss in P बीभत्सं अपवित्तम्.

7 b पयत्थ परि घोल णु पदार्थानां जीवानां वा परिघोलनं प्रवृत्तिर्यस्मिन्. 8 a °णे व च्छउ मण्णनम्. 10 a परमाणु ये त्यादि- परमाणुमात्रमपि संसारिणां सुखं न.

12. 1 a सारमेयवुड्ढिगयं प्रचुरमेदसा वृद्धि गतम्; b सारमेयसिवजोगयं श्वानशिवादियोग्यम्. 2 a एसो जीवः; कम्मकले संसारे; b कलेवरं शरीरम्. 3 a °कुडुयल कुड्यतल°; b °णाउ ज्ञायु°. 4 a पासुलिया° पाश्चात्स्थिसंघातः. 5 b समोडियथूणउ भ्रमस्तम्भवत्. 7 b छिरंतुंदाहिजाल° शिरा एव गण्ड-पदास्तेषां समूहैर्भूतम्. 8 b °वीसदु बीभत्समपवित्तम्. 10 b रोइ सरोगम्.

सैभपित्तमारुयदोसायरु भूयगामदेहिहि देहु जि घर ।  
 रंमैणीरमणरायरहसुच्छु असुइ जि भक्खइ असुइसमुम्भु ।  
 घत्ता—करिमयरहिं माणिइ गंगावाणिइ णहाणिउ णहाणिउ मुज्झइ ॥  
 मयकामे कोंहें मायामोहें मइलिउ देहु ण सुज्झइ ॥ ११ ॥

## 13

खंडयं—दुविहतवस्मि सुलीणयं जइ करेह अप्पाणयं ।  
 असुइमिणं मणुयत्तयं ता हो होइ पवित्तयं ॥ १ ॥  
 पंविदियसुहि मणु चोयंतहु तहु आसवइ कम्म अतवंतहु ।  
 णाणावरणउ पंचपयारउ दावियपडपंगुरणवियारउ ।  
 णवविहदंसणु गुणविणिवारउ तं णिज्जियणिसिद्धिपडिहारउ । 6  
 दुविहु जि वेयणीउ गयसयणु व अमहु ममहु असिधागलिहणु व ।  
 मोहणीउ मइरा इव मोहइ अट्टावीसभेउं जिणु ईहइ ।  
 चउविहु चउगइगामिहिं दुक्कइ आउमु हडि व णिरंभिवि थक्कइ ।  
 दोचालीसणामु णामंकउ चित्तवण्णपरिणामासंकउ ।  
 दोविहु मइलसमुज्जललीलउ गोत्तु कुलालभाणभावालउ । 10  
 अंतराउ चउपक्कविहायउ लम्माइ कारिहिं वारियदायउ ।  
 पयडिट्ठिदिअणुभांगपरसहिं वज्झइ चणिवि बंधविसेम्महिं ।

१२ M रमणीरमणु रायरहसुम्भउ B °रहसुच्छु P °रहसुम्भउ but gloss उत्सव .

13. १ MBP णाणावरणउ. २ T दंसिय°. ३ MBP °भेय. ४ M ° अणुभाय°. ५ M बंधवसेसहिं.

11 b भूय गा म° पृथ्वीप्रमृत्तचतुर्विधभृत्समृद् एव देहो विद्यते यस्य. 12 a °उच्छु आनन्दः. 13 गं गा-  
 वा णि इ गङ्गाजलै

13. २ a मणु यत्त य मनुजत्वम, b हो हे नरा ४ b दा वि ये त्या दि- दर्शित. पटप्रावरण इव विकारो  
 येन; यथैव पटेन प्रच्छादनेन सत्यात्मनोऽर्थापरिज्ञानलभ्रणो विकारो भवति तथा ज्ञानावरणे प्रच्छादने. 5 b णि जि ये-  
 त्यादि- निर्जितनिषेधकरप्रतिहारमदशम. 6 a गय सय णु व रोगयुक्तस्य शयनीर्यामव. 8 b आ उ मु आयुष्कर्म;  
 इ डि व खोटक इव. 9 b चिं ते त्या दि- चित्रवर्णपरिणतिवपानारूपतया शङ्कयते. 10 a म इ ल स मु ज्ज ल ली ल उ  
 मल्लिनं समुज्ज्वलं चेति द्विप्रकारस्य, b कु लाल भा ण भा वा ल उ कुलालस्य कुम्भकारस्य भाणानां भाजनानां भावोऽ-  
 त्पमहत्त्वादिपरिणामः, तस्य आ ल उ आश्रय . 11 a च उ पक्क वि हा य उ पञ्चभेदम, b का रि हि कारकस्य;  
 वारि य दा य उ निवारितदातव्य दुष्टभाण्डागारिवत् 12 b चणिवि हटान्.

घत्ता—गुणवंतु अणाइउ सुहुमु विवेइउ तिगइ दुअंगणिबद्ध उ ॥  
जिउ कत्तउ भोत्तउ भवतणुमेत्तउ उड्डुगामि संसिद्धउ ॥ १३ ॥

14

खंडयं—यंतहु पावहु णिब्भरं जे विरयंति ण संवरं ॥  
ताणं दुक्खदं वक्कडी पडिही सीसे णं तडी ॥ १ ॥

रुज्झइ चित्तु ज्ञानवित्थारं	फासविलौस धरणिसंथारं ।
रसुं पसुपिडग्गहणायारं	दिट्ठि ण धेप्पइ कर्हि मि वियारं ।
सवणु सुसरि दुसरं सु वि सरिसउ	कीरइ पयलियरइआमरिसउ । 5
णाम्भारं धु गंधंअविहत्तिइ	मणवयकायदुरीह तिगुत्तिइ ।
दुरियहु सुयगिउ रक्खणु दिज्जइ	रोसु खमाइ होंतुं णियमिज्जइ ।
अविणयगारउ माणु मउत्ते	मायाभाउ समुज्जयचित्ते ।
लोहु सुपत्तदाणपविहापं	अहवा सब्बसंगपरिचापं ।
मर्यविब्भमु परगुणसंभरणं	जिप्पइ हरिसु होंतु सुथिरमणं । 10
देषु वि घोरवीरतवचरणं	राउ रंसियरामापरिहरणं ।

घत्ता—पिहियासवदारहु जुत्तायारहु अहिणउं कम्म ण पइसइ ॥  
जं विरु जीवासिउ तं पि अपोसिउ कायकिलेसें णासइ ॥ १४ ॥

15

खंडयं—मणमेत्ते वावारण एसो कीस ण कीरण ।  
सासयसुहओ संवरो होहं होमि वियंबरो ॥ १ ॥

६ MBP उद्धगामि.

14. १ P ए तहु and gloss ए आगमे प्रसिद्धः, तहु पावहु तस्य पापस्य. २ P °दुवक्कडी. ३ MBP °विलासु. ४ MB रसवसु, P रस पसु°. ५ MBP गंधु अ°. ६ MBP एंतु. ७ M समुज्जल°. ८ P मइविब्भमु. ९ B omits this foot. १० MBP रसिउ रामा°.

15. १ मणमेत्तए.

13 दुअंगणिबद्ध उ तैजसकार्मणशरीरबद्धः. 14 भवतणुमेत्तउ यद्भवे यच्छरीरं गृहीत तन्मात्रः.

14. 1 a एं तहु आगच्छतः, 2 a °दवक्कडी असत्याज्ञानिपातः; b तडी विद्युत्. 4 a रसु जिह्वाः पसुपिडग्गहणायारं पशुवत्पिण्डग्रहणेन मुन्याचारेण. 5 b पयलियरइआमरिसउ नष्टरागद्वेषम्. 6 a गंध-अविहत्तिइ सुरभिरसुरभिरिति गन्धविभागाकरणेन; b °दुरीह दुष्टेच्छा. 9 a °दाणपविहाएं अतिथिसंविभागेन. 10 a मय° मदः. 13 अपोसिउ अपुष्टम्.

15. 1 a मणमेत्ते मनोमात्रे. 2 a °सुहओ सुखदः.

पुणु परमेसरु सञ्चउ सुञ्चइ	काले अहव उघापं पिञ्चइ ।	
जिह धरणीरुहहलु तिह दुक्किउ	कामाकामियाणिज्जरतक्किउ ।	
तणयराहं सुसैहावे सोम्महं	बंधणदारणमारणगम्महं ।	5
दूसहदुक्खभावभयभरियहं	होइ अकामे णिज्जर तिरियहं ।	
विरइज्जइ वेरग्गपहाँणहिं	कामे णिज्जर रिसिसंताणहिं ।	
सिसिरायासणिवासायरणहिं	रुक्खमूलअत्तावणकरणहिं ।	
थियपलियंकाघित्तमहिदंडहिं	गोदुहआसणेहिं गयसौंडहिं ।	
पक्खमासवैरिसंतुववासहिं	देज्जवित्तिसंखाविण्णासहिं ।	10

घत्ता—ढोइयणीसासहि मुणितणुमूसहि खरतवज्जलणे तत्तउ ॥

जीविउ हेमुज्जलु थक्कइ केवलु बहुकम्ममले चत्तउ ॥ १५ ॥

## 16

खंडयं—कुंवेहे जंतं रंभए  
वयपायवणिल्लुरणं

णाणंकुसिण णिसुंभए ।  
साहू णियमणवारणं ॥ १ ॥

एक्कगासदोगासाहारहिं	विविहावग्गहरसपरिहारहिं ।	
दीहमंसुलोमहिं मलधरणहिं	आयंबिलच्चंदायणचरणहिं ।	
वोसट्टंगमुक्करइरंगहिं	वज्जियघरपुरदेसपसंगहिं ।	5
सुण्णावासमसाणागारहिं	हयणेहहिं अणियत्तिविहारहिं ।	
दंसमसयल्लुहतण्हासोसहिं	खलकयकण्णकडुयआकोसहिं ।	
चायवहलुकंपियकायहिं	सीउण्हहिं परपहरणिहायहिं ।	

२ P पञ्चइ. ३ MBP ससहावे. ४ BP सोमहं. ५ MBP °पहाणहं. ६ M सिरिसंताणह; BP रिसिसंताणहं.  
७ MBP °वरिसदुव°. ८ MB वेज°. ९ कम्ममले परि°.

16. १ MBP कुपहे. २ P एकग्गासदुगासा°. ३ M अणियट्टि°.

3 b पिञ्चइ पक्कं भवति. 4 b कामाकामियेत्यादि—कामो बुद्धिपूर्वको व्यापारस्तदभावोऽकामस्ती विद्येते यस्याः सा तथाविधा निर्जरा तर्किता कर्लता येन तादृशम्. 7 b रिसिसंताणहिं मुनिप्रवाहैः. 10 b देजे त्ति-देयाहारस्य श्रुति-सख्या तस्या विन्यासा विरचनास्ताभिः. 11 मुणितणुमूसहिं मुनिशरीरमेव मूषा तस्याम्. 12 जीविउ इत्यादि—जीवस्वरूप तदेव हेम सुवर्ण उज्ज्वलं निर्मलम्; सुवर्णं हि किट्टकालिकालक्षणमलरहितत्वा-दुज्ज्वलम्; जीवस्वरूपं तु द्रव्यभावकर्मलक्षणमलरहितत्वादिति.

16. 1 b णिसुंभए वर्यं करोति. 2 a °णिल्लुरणं °निर्मूलनम्. 5 b वोसट्टग° विसृष्टाङ्ग° कायोत्सर्गः.  
6 b अणियत्तिविहारहिं अनियतविहारैः. 8 b परपहरणिहायहिं परप्रहारनिर्घातैः.

केसालुंचणणिबेलसहिं	कंचणतणसुहिरिउसमचिसहिं ।	
विसमपरीसहसहणभासहिं	रोयातंकहिं कासहिं सासहिं ।	10
जम्मणमरणणिबंधुद्धाइउ	एम खविज्जइ कम्मु पुराइउ ।	

घत्ता—जिह हर्याणिज्जरणे बद्धे वरणे रविकरेहिं सरु सोसइ ॥

तिह गियमियकरणे रिसितवचरणे भवकिउ कम्मु पणासइ ॥ १६ ॥

17

खंडयं—इय काऊण गिज्जरं	जे हणंति भवपंजरं ।
णीरोयं अजरामरं	ते लहंति सोक्खं वरं ॥ १ ॥

जेण मोक्खफलु तं पाविज्जइ	सो धम्मंधिउ पइउ गिज्जइ ।	
खेमखमायलंतुग्गयदेहउ	मइवपल्लउ अज्जवसाहउ ।	
सच्चसउच्चमूलु संजमदलु	दुविहमहातवणवकुसुमाउलु ।	5
चउविहचायपसारियपरिमलु	पीणियभव्वलोयछप्पयउलु ।	
दियसंदोहसइकयकलयलु	सुरवरणरखेयरसुहसयफलु ।	
दीणाणाहदीहसमणिग्गहु	सुद्धु सोम्मं तणुमेत्तपरिग्गहु ।	
बंधवेरछायाइ सुहासिउ	रायहंसाणियरेहिं समासिउ ।	
पइउ धम्मरुक्खु लक्खिज्जइ	जीवदयावईइ रक्खिज्जइ ।	10
झाणु ठाणु भल्लारउ किज्जइ	मिच्छामयहुं पवेसु ण दिज्जइ ।	
सीलसलिलधारइ सिंचिज्जइ	एम पर्यत्ते वड्ढारिज्जइ ।	

४ MBP° तिण°, ५ MB णिबंधे आइउ; P °णिबंधइ आइउ, ६ K हर° and gloss हत°.

17. १ BPK परं. २ M खमखमायलंतुग्गयदेहउ, B खमखमायलु तुंगयदेहउ; P खमखमायलु-तुंगयदेहउ. ३ MBP सुरणवर°. ४ MBP सोमु. ५ MP झाणठाणु; B झाणट्टाणु. ६ B पवत्ते. ७ M पडारिज्जइ, B वड्ढाविज्जइ.

11 a णि बंधुद्धाइउ जन्ममरणप्रबन्धकरणे उद्धाइउ प्रवृत्तम्. 12 हय णिज्जरणे हतनिर्करणेन: वरणे पालिबन्धनेन.

17. 1 b भवपंजरं संसार एव बन्दिगृहं संसारसंघातश्च. 3 b धम्मंधिउ धर्मवृक्षः, गिज्जइ प्रतिपाद्यते. 4 a खमखमायलं तुग्गयदेहउ क्षमैव क्षमातलं पृथ्वीतलं तवन्तान्मध्यादुद्गतः प्रादुर्भूतो देहो यस्य. 6 a चउविहचाय° अणुव्रतं महाव्रतं धृतदानमभयदानं च. 7 a दियसंदोह° मुनिसमूहः पक्षिसंघातश्च. 8 a °दीहसमं वीर्यभ्रमा. 9 a सुहासिउ सुष्ठु शोभितः. 11 झाणु ठाणु ध्यानमेव स्थाणुम्; b मिच्छामयहुं मिथ्यात्वमृगाणाम्.

घत्ता—कोषाणलचुकुउ होइ गुरुकउ जाइं रिसिदहिं सिट्टइं ॥

जगि ताइं सुहंकरु धम्ममहातरु देइ फलाइं सुमिट्टइं ॥ १७ ॥

## 18

खंडयं—जहिं होहिम्मि भवे भवे  
दुक्खलक्खणिण्णासणे

तहिं देहम्मि णवे णवे ।  
होउं भत्ति जिणासासणे ॥ १ ॥

अवरु णिरंतरु उज्झियगव्वे  
चित्तु धुत्तसिद्धंतपरंमुहुं  
पंचिदियपडिभडबलु भज्जउ  
विसयकसायरायपरिचत्तउ  
आसापासाणिवंधणु तुट्टउ  
संजयसाहुंसंगसोहियमालि  
रयमूढह संबोहणगारा  
दीणि करुण उप्पेक्ख दयंतइ  
वयजोग्गउ सरीरु संपज्जउ  
धणु परियणु पुरु घरु मा दुक्कउ  
ण रमउ णारिरुवि हियउल्लउ  
ओसारियदहपंचपमापं  
दंसणणाणचरित्तपयासें

इयं मग्गेवउ मणुपं भव्वे ।  
भवि भवि होउ जिणागमि संमुहुं ।  
भवि भवि विमलबुद्धि उप्पज्जउ । 5  
भवि भवि होउ तिगुत्तिपुत्तउ ।  
भवि भवि मोहजालु ओहट्टउ ।  
भवि भवि होउं जम्मु सावयकुलि ।  
भवि भवि रिसि गुरु होतु भडारा ।  
भवि भवि रइ वड्डउ गुणवंतइ । 10  
भवि भवि तवसिहितावें शिज्जउ ।  
भवि भवि उरि उवसमसिरि थक्कउ ।  
भवि भवि हव्वंउ णिरहु णिसल्लउ ।  
भवि भवि दियह जंतु सज्झापं ।  
भवि भवि मरुणु होउ संणासें । 15

घत्ता—लज्जाइ समाहिइ भवि भवि बोहिइ जीवउ जीउ विरत्तउ ॥

संसारुत्तरणइं जिणवरचरणइं भवि भवि मणि सुमरंतउ ॥ १८ ॥

18. १ MBP होहिम्मि. २ B होइ. ३ P इउ. ४ MBP °पयत्तउ. ५ B °साहुसंगि. ६ MBP जम्मु होउ. ७ MBP रइमूढहु, T रयमूढहो. ८ MBP उप्पज्जउ. ९ M थक्किउ. १० MBP होउ. ११ MK मरण.

18. 8 a संजयेत्यादि—संयनाश्च ते साधवश्च तैः संगं संसर्गस्तेन शोधितः स्फोटितो मल पापं यस्मिन्. 9 a रयमूढह ज्ञानावरणादिरजःप्रच्छादितत्वेन विवेकशून्यस्य. 10 a दयतइ दयाशून्ये. 11 b तवसिहि-तावे तप एवाभिस्तस्य तापेन. 13 b णिरहु निष्पाप निर्वाच्छं वा. 16 समाहिइ रत्नत्रयैकाप्रतायाम्; बोहिइ रत्नत्रयप्राप्तौ.

## 19

खंडयं—इय जो चित्तइ णियमणे  
मोत्तूणं भवसंपयं

अणुवेक्खाओ थिय वणे ।  
सो पावइ परंमं पयं ॥ १ ॥

महु पुणु सरणउं सिद्ध भडारा  
अक्खसोक्खपक्खे णिरु णिच्छिहं  
इयं चित्तंति वहंति समत्तणु  
सक्के जिणमइ जाणिय जावहिं  
बंभसग्गालोयंतकयालय  
पुव्वजम्मिकयधम्मपहावण  
घल्लियकुसुमंजलिकेसररय-  
ते भणंति भावे मउलियकर  
पइ ण मुणुउं जं तं किर केहउ  
सुसिरु अणंतु तिलोयणिवासउ  
जीउ कम्मु पोग्गलंवित्थिण्णउ  
तुहं सैइंभु सैसमाहिविसुद्धउ  
इंदियपाणासंजमु छंडिवि

ददंकिम्मीरकम्मविणिवारा ।  
भवसिप्पीरभारइयवहसिह ।  
पउणंती रइभूमिणियत्तणु । 5  
लोयंतिय संपाइय तावहिं ।  
देहकंतिदीवियदिप्पालय ।  
अणुदिणु संभाविय सुहभावण ।  
रयमहुयरउलसवलियपहुपय ।  
जय देवाहिदेव परमेसर । 10  
किं गिरि किं परमाणुउ जेहउ ।  
किं आयासु अलक्खपपसउ ।  
भणु तुह णाणे काइं ण भिण्णउ ।  
चारु चारु जं सइं पडिबुद्धउ ।  
अण्णउ सीलगुणोहं मंडिवि । 15

घत्ता—उप्पाइवि केवलु अवियलु गयमलु तच्छु सुसच्चउ अक्खहि ॥

पायालि पडंतउ पलयहु जंतउ भुवणु भडारा रक्खहि ॥ १९ ॥

19. १ B परमपयं. २ P दिढ°. ३ MBP °पक्खइ. ४ M णिप्पिह. ५ MBPT चित्तंति, gloss in MT हृदयमध्ये, but in P चिन्तयति सति. ६ B संपावियभाविहिं; P संपाइय ताविहिं. ७ MBP °दिप्पालय and gloss in M1 दाताविमानाः, but T दिप्पालय दशदिक्पालाः. ८ P °केसररय°. ९ MBP परिमाणु. १० BP पोग्गलु. ११ MBP संयंभु. १२ MBP सुसमाहि°.

19. 3 b °कि म्मी र° विचिखम्. 4 a अक्ख सोक्ख पक्खे इन्द्रियजनितसौख्यवर्गे; णि च्छि ह नि-  
सृहाः; b °सिप्पीर भार° पलालसघात'. 5 a चित्तंति चिन्तयति सति; b पउ ण ती प्रकुर्वती, रइभूमिणि-  
यत्तणु रतेभूमेश्च निवर्तनम्. 9 a b केसररयेत्यादि-केसररजसि मकरन्दे रतानि यानि मधुकरकुलानि तैः  
कृत्वा शबलितानि प्रमुपदानि यैर्लोकान्तिकैर्देवैः. 12 a सुसिरु अलोकाकाशम्, b आयासु लोकाकाशम्.



## 20

खंड १—तुह वयणंसुपसाहिए जगकमले संबोहिए ।  
कुसमयखलखज्जोयया होंति देव हयतेयया ॥ १ ॥

मोहजलणजालावलि गिरसहि	धम्मामयअंबुहर पवरिसहि ।	
पाववज्जलेवंतणिहित्तं	जरकसरा इव कइवि खुत्तं ।	
उत्तारहि परमप्पय भूयं	रंगणडा इव णाणारूवं ।	5
एम भणेण्णिणु गय लोयंतिय	देवें परहियबुद्धि विचिंतिय ।	
तहि अवसरि बुहयणिहिं समत्थिउ	भरहु म्महीसरेण अब्भत्थिउ ।	
पुत्त पुत्त लइ पाल्लहि वसुमइ	मइ पुणु साहेवी पंचम गइ ।	
तं णिसुणेवि कुमारें वुत्तउं	देव देव किं भँणहि अजुत्तउं ।	
जं तुहं भुत्तुज्झियआहारें	तं ण सोक्खु भोयणचित्थारें ।	10
जं तुह णियडासणइ णिविद्धु	तं ण सोक्खु हरिवीढि बइट्टहु ।	
जं महु तुह अग्गइ धावंतहु	तं ण सोक्खु गयसंधहिं जंतहु ।	
जं पायडियउ तुह पर्यछाहिइ	तं ण सोक्खु महु छत्तहु छाँहिइ ।	
मंतिमहासेणावइपुज्जे	पइं रहिएण ताय किं रज्जे ।	

घत्ता—जंपियउ जिणेसें णाउ विसेसें जइ पहुपयहि ण जुज्जइ । 15  
तो लोउ रउहें जुज्जवि महे मच्छे मच्छु व खज्जइ ॥ २० ॥

## 21

खंडयं—कुरु कुरु धरणीपालणं णायाणायणिहालणं ।  
धरि धरि महिवइसासणं पयं चिय मह पेसणं ॥ १ ॥

तं णिसुणेवि णिरुत्तरु जायउ धिउ तणुरुहु संभूयविसायउ ।

20. १ MBP धम्ममहामयजलहर वरिसहि. २ MBP °वज्जलेवत्त°. ३ MBP कइमि, ४ MBP भाणेउं. ५ B तुह भुत्तु उज्झिय° ६ P पयछाण ७ P छाणं. ८ K जुंजइ.

20. 1 a वयणंसु° वचनकिरणै. 2 a कुसमय खलख ज्जोयया मिथ्यामतदुर्जनखद्योतकाः. 4 a पाववज्जलेव° पापमेव वज्जलेप. b जरकसरा जीर्णवलीवर्दा. कइवि कर्दमे. 11 b हरिवीढि सिंहासने. 15 णाउ ज्ञात्वा. 16 महे हठात्.

21. 3 b संभूय विसायउ उत्पन्नविषादः.

सोणंदेयडु दिण्णु सुहंकरु  
 अण्णेकडुं अण्णण्णहं दिण्णहं  
 पत्थंतारि संपेसिय राणा  
 छक्खंडावणिपसरियतेयडु  
 णरकरकोणाहयहिं गहीरहिं  
 धवलिहिं मंगलेहिं गिज्जंतिहिं  
 कौमिणिमित्तगतरोमंचहिं  
 ससहरमणिमपहिं णिकलुसिहिं  
 जय भूयाहिराय पभणंतहिं  
 हासससंककाससंकसाइं  
 कण्णहि कुंडलाइं आइइइं  
 करि कंक्कणु गालि हारु विलंबिउ  
 कडियलि रयणकिरणविंफुरियइ  
 बंभसुत्तु उरि चारु चडाविउ  
 हरिकरिससिरविरुवणिबद्धं  
 परिमुक्कमलइं धवलइं छत्तइं  
 मय मायंग तुरंग सलक्खण

पोयणवुरु पविहिण्णवसुंधरु ।  
 मंडलाइं डोइयधणधण्णइं । 5  
 देवै जे पक्केक पहाणा ।  
 लग्गा रायमहाअहिसेयडु ।  
 वज्जंतहिं चामीयरतूरहिं ।  
 खुज्जयवावणेहिं णञ्चंतिहिं ।  
 होमदाणपारंभपवंचहिं । 10  
 सयलतित्थजलभरियहिं कलसहिं ।  
 अहिसिचियउ भरु सामंतिहिं ।  
 पौरिहाविउ सुइसुब्भं वासइं ।  
 चंदाइच्चं तेयसामिद्धइं ।  
 सिरि सेहरु मडुयरमुहचुंविउ । 15  
 बद्धउ कडिसुत्तउ सडुं लुरियइ ।  
 तिलपं तइयउ णयणु व दाविउ ।  
 उब्भियाइं विमलइं कुलचिंधइं ।  
 णं जिणकित्तिभिसिणिसयवत्तइं ।  
 पुज्जिय गह काणीण वियक्खण । 20

यत्ता—उच्चाइउ आयहिं पइअणुरायहिं आसीवायणिशोसहिं ॥

सिरिभरहकुमारडु महिभत्तारडु बद्धउ पडु णरेसहिं ॥ २१ ॥

22

खंडयं—सीहासणसिहरासिओ सोहइ भुअणपसंसिओ ।

गिरिकडप धुयकेसरो केसरि व्व भरहेसरो ॥ १ ॥

21. १ MBP °वावणेहि. २ BMK कामिणिसित्त°. ३ MBP पहरिाविउ. ४ MBP °विच्छुरियइ.  
 ५ B पडु°.

4 a सो णं देय डु सुनन्दापुत्रस्य बाहुबले: 5 b मंडलाइं देशा: . 8 a कोण° वादनकाष्ठम्. 10 a °मित्त  
 मित्त°; b °पवंचहिं विस्तारै: . 11 a णिकलुसिहिं निर्मलै: . 16 b भिसिणिसयवत्तहिं कमलिनीकमलै: .

21 आयहिं एतै:; पइअणुरायहिं पत्यनुरागै: .

22. 2 b केसरिव्व सिंह इव.

दसदिसिवहसंप्राइयसुरवर  
बहुविमाणभारं णं णवियउ  
आयवत्तं फुल्लहिं णं फुल्लिउ  
थियन्नसहंसचासवाहणगणु  
णं तुरयहिं धावंतहिं धावइ  
कुंजरेहिं णं मेहहिं छइयउ  
हरियारुणरुइल्लु णं सुरधणु  
विहुणिकखवणपयासणयालइ  
गउ तहिं जहिं अच्छइ रंजियसहु

तहिं अवसरि दीसइ विउलंबरु ।  
धयवडेहिं णावइ पल्लवियउ ।  
तरुणीथणहलेहिं ओणल्लिउ । 5  
णावइ जिणवरपुण्णमहावणु ।  
संदणेहिं रविभरियउ णावइ ।  
असिवरेहिं णं विज्जुवलइयउ ।  
णं अवलंबइ णवपांसगुणु ।  
एम परायुउ सुरयणु लीलइ । 10  
रिसहणाहु णिण्णाहु महापहु ।

घत्ता—कमलासणु केसेवु ससहरु वासवु सिद्धु बुद्धु हरु दिणयरु ॥

चामीयरघडियइ रयणहि जडियइ पट्टि णिसण्णउ जिणवरु ॥ २२ ॥

## 23

खंडयं—केण वि गहिरं वाइयं  
केण वि सरसं णच्चियं

केण वि महुरं गाइयं ।  
पहुपयजुयलं अंचियं ॥ १ ॥

अमरविलासिणिकरसंगहियहिं  
इंदजलणजमणेरियवरुणहिं  
णल्लिणबंधुणाइंदहिं चंदहिं

णहविउ देहुं थियदुद्धहिं दहियहिं ।  
पवणकुबेरतिसुलुद्धरणहिं ।  
रुंदाणंदहेरेहिं णरिंदहिं । 5

22. १ B °दिसिवह°. २ MBP सपाइय. ३ M धयवडेण ४ MBP आयवत्त ५ M तरुणीथणहरेहिं ओहुल्लिउ; B थणहारोहि ओहुल्लिउ, P थणहलेहि सुफलिउ, but T ओणल्लिउ. ६ B भावइ. ७ P °पावस घणु. ८ M रजियसहु. ९ MBP केसउ.

23. १ MBP देउ. K देहु but corrects it to देउ. २ M घय°. ३ T तिसुलधरण. ४ M °भरेहिं.

3 a °दिसिवह° दिधु मार्गा, b विउलंबरु विस्तीर्णमम्बरम. 9 a °रुइल्लु दीप्पियुक्कम् 11 रजियसहु रजितसभः, b णिण्णाहु निर्नाथः, अयमेव सर्वेषां नाथ इत्यर्थः. 12 कमलासणु कमलाया लक्ष्म्या निवासस्थान-त्वान्; केसवु हितोपायदर्शकत्वेन जगतां रक्षाहेतुत्वान्, ससहरु ससारदुःखस्फोटकत्वाज्जगतकुवलयप्रबोधकत्वाच्च; वासवु परमर्दिसपत्तित्वाच्चतुर्निकायदेवस्वामित्वाच्च, सिद्धु कृतकृत्यत्वान्; बुद्धु हेयोगोदेयविवेकसम्यक्त्वाच्च; हरु कर्मणां तत्प्रभवसत्तारस्य प्रलयविधायकत्वान्; दिणयरु भव्यपद्मप्रबोधकत्वादन्यतमोविध्वंसकत्वाच्च.

23. 4 b तिसुलुद्धरणु ईशानः. 5 a णल्लिणबंधु आदित्यः; b रुंदाणंद° महानानन्दः.

वयणुर्गीरियथोत्तवमालहिं  
 कंचणकुंभसहासाहिं सिक्तउ  
 सण्हउं तिहुयणसामिहि जोग्माउ  
 ढोइउ णिवसणु पुणु पंगुरणउं  
 भूसणाइं दिण्णाइं ण मण्णइ  
 संतहु किहं रुञ्चति रसोल्लइं  
 होउ पहुच्चइ संभावइ जिणु

णिग्मायस्त्रीरवारिधारालहिं ।  
 दैससयट्टलक्खणसंजुत्तउ ।  
 किं वणिणज्जइ अंगि वै लग्माउ ।  
 तणुतावइ णं णाणावरणउं ।  
 मोहणिबंधणाइं अवगण्णइ । 10  
 वम्महपहरणाइं फुइ फुल्लइं ।  
 मलविलेवसारिच्छु विलेवणु ।

घत्ता—पज्जलियपईवहुं ससिरविभावहुं धूयंगारयधूमउ ॥

२३ णिग्मांतउ दीसइ सुकइ समासइ णं मलपडलविलेर्वउ ॥ २३ ॥

## 24

खंडयं—दहिदूवंकुरचंदणं

वंदिवि मयणावियारओ

सियसिद्धत्थयचंदणं ।

सिवियारूदु भडारओ ॥ १ ॥

सत्त पयाइं जाम जयचंदहिं  
 तेत्तियइं जि भावेण णवंतहिं  
 उट्टियदेवमहाकुलकलयलि  
 चल्लिउ अणुमग्गो सियसेविइ  
 आरणालणवदलललियंगउ  
 दोत्तेण वि णावइ मोहणवेल्लिउ  
 पियविच्छोयसोयखिज्जंतउ  
 वरकंचीकलावगुप्पंतउ  
 तुरिउ चलंतु खंठंतु विसंठुलु  
 घणथणजुयलणिवेसियकरयलु

पढमुच्चाइय सिविय णरिंदहिं ।  
 वरविज्जाहरेहिं विहसंतहिं ।  
 पुणु वंदारपहिं णिय णहयलि । 5  
 णाहिणराहिउ सहुं मरुपविइ ।  
 जसवइणंदउ पच्छइ लग्माउ ।  
 णं कामेण विमुक्कउ भल्लिउ ।  
 णयणंजणमलमइलिज्जंतउ ।  
 तणुपासेयविदुथिप्पंतउ । 10  
 णीससंतु वलमोक्कलकौंतलु ।  
 णिवडैमाणअणिहालियमेहलु ।

१ MBP दह°, ६ P विलग्गउ. ७ MBP किं. ८ M °विलेविउ.

24. M दूवंकुरवदणं; BPK दूवंकुरवदणं. २ M वसंतु व सबुलु; B खलतु व सठुलु. ३ M णिवड-  
 भाणु; P णिविडमाणु.

५ a °वमाल° कोलाहल, 13 ससिरविभावहुं शशिरवीणां भां दीप्तिमावहन्ति अनुकुर्वन्ति ये तेषाम्.

24. 1 a °चंदण रक्तचन्दनम्. 7 a आरणाल° कमलम्. 9 a विच्छोय° वियोगः. 11 a  
 विसठुलु शिथिलम्.

पयचालणझंकारियणेउरु  
पक्कवार णिउ णिअरभावहिं  
पुणु तेण जि कमेण आवेसइ

धाइउ णिरवसेसु अंतेउरु ।  
मंदरि ण्हाणिवि आणिउ देवहिं ।  
णैरवइ पत्थु जि पुरि णिवसेसइ । 15

धत्ता—पउरयणें वुत्तउ मुणिउ णिरुत्तउ एवहिं दुक्करु आवइ ॥

जँडमइलकुचेली धराणिमहेली णाहें विणु किह जीवइ ॥ २४ ॥

## 25

खंडयं—भरहबाहुवलिसंणिहं  
चालियं चोइयहयगयं

गालियंसुयधारामुहं ।  
पक्कणं णंदणसयं ॥ १ ॥

पराइओ जिणेसरो घणंवणालयं  
विसालवेह्लिजालरुद्धभाणुभावहं  
फलोवडंतवुक्करंतवालवाणरं  
लयाहरत्थकिणरीसुरत्तमाणवं  
परुढबालकंदकंदलेहिं कोमलं  
दिसुच्छलंतदंतिदाणवारिवासयं  
महूहिं थिप्पिरं पस्सोमियावणीरयं  
महीरुहगसंणिसण्णमोरसारसं  
वहंतमंदगंधवाहकंपमाणयं

सुपोमसंपयार्जसोघणं वणालयं ।  
महासुणिदजोग्गयं सपावभावहं ।  
पियाविबज्जियाण कामुयाण बाणरं । 5  
असायत्रंपयाइरम्मरुक्खमाणवं ।  
पँसूणरेणुपिंगपँज्झरंतकोमलं ।  
रमंतणायरायदाणवारिवासयं ।  
समाणियामरिंदचंदभाविणीरयं ।  
पपहिं इच्छिणहिं लोयदिण्णसारसं । 10  
जलम्मि पोमिणीण जत्थ कं पमाणयं ।

४ MP णरवइ इत्थ णयरि, B णरवइत्थ णयरे, ५ MP जड°, B जर°.

25. १ P °पसोहणं, २ P विलासवेह्लि°, ३ MB पसूय°, ४ MB °पअरत°, ५ P पसम्मिया°.

14 a णिउ नीत .

25. 3 a घण वणालय घना निरन्तरा आम्रा नालकाथ वृक्षविशेषा यत्र, b सुपोमेत्यादि—शोभन-  
पदानां सपया सपत्तिस्तया यशः श्रव्यातिस्तया घनम्, अथवा, सुपोमसंपयायसोहणं सुपत्रलक्ष्मीवृक्षैः शोभनम्;  
वणालय वन जलमाममत्ता लताश्च यत्र. 4 a °भाणुभावह आदित्यप्रभापथमः; b सपावभावहं स्वपापभाव-  
घातकम्, 5 b बाणर बाणवेधम्, 6 b °रुक्खमाणवं °वृक्षाणा मा लक्ष्मीस्तया नव प्रत्यग्रम्, 7 b पसूणे-  
त्यादि—प्रसुरेणुना पुष्पमकरन्देन पिङ्ग पीतवर्णं प्रझरन्त् कोमल पानीय यत्र. 8 a दाणवारिवासय मदजलेन  
सुगन्धि, b °दाणवारिवासय दानवानामरीणां च वसतिर्यत्र, 9 a °अवर्णारय भूमिधृत्तिः, b समाणिय°  
कृतम्, °भाविणीरय स्त्रीरत्नम्. 10 b °सारस लक्ष्मीरसम्, अथवा सारस्व द्रव्यम्. 11 a °गंधवाहकप-  
माणयं वायुना कम्पमानम्; b जलम्मीत्यादि—यत्र वनालये जलमध्ये पद्मिनीनां कं ( किं ) प्रमाणम्, नास्ति  
प्रमाणमित्यर्थः, अथवा, कं जलं पमाणय परिमितमित्यर्थः.

अलीहिं चंचलेहिं छण्णकंजकेसरे तरंति णो सुरासुरा वि जत्थ के सरे ।  
 पलोइऊण तं सरीतुसारसीयलं णहंगणावइण्णओ रिसी वसी यलं ।  
 घत्ता—तहिं हियइ पसण्णउ सिलहि णिसण्णउ णिव्विण्णउ णरजोणिहे ॥  
 ससिबिं वसमाणहि मलपरिहीणहि सिद्धु व सिवपयखोणिहे ॥ २५ ॥ 15

## 26

खंडयं—विविहण्णविहिकारिणा विप्फुरंतपविधारिणा ।  
 अहरावयकरिगामिणा पुणु पुज्जिउ सुरसामिणा ॥ १ ॥

परमस्किणियचित्ति धरेप्पिणु मुट्टिउ पंच झडत्ति भरेविणु ।  
 जाइं ताइं ससहावें कुडिलइं धुत्तविलासिणिकुलइं व कुडिलइं ।  
 आलुं चेविणु घित्तइं केसइं एम मुणंति धम्मु जगि के सइं । 5  
 चिहुर लुक्कं जे हयतमपडलें लेवि पुरंदरेण मणिपडलें ।  
 जणवयसंदरिसियझसमुइइ धित्त तुरंतें खीरसमुइइ ।  
 परिसेसियउ मउहु रइरंगउ णं वम्महसिहरेहि सिहैरमाउ ।  
 मुकइं कुंडलाइं मणिजडियइं रविससिबिं वइं णं णिव्वैडियइं ।  
 कंकणु मुक्कउ मोत्तियहारें सहुं णिज्जिय मियं कुं णीहारें । 10  
 मुक्कउ कडिसुत्तउ सहुं लुरियइ विज्जुलैया इव णहविप्फुरियइ ।  
 अंबगाइं मुक्काइं अमोलइं जाइं सरीरहु सुट्टु सुहिलइं ।  
 संसारासारत्तु मुणेषिणु पंचमहव्वय चित्ति धरेप्पिणु ।  
 किमलंकारें देहहु भारें अप्पउ भूसिउ वयपम्भारें ।  
 मोहजालु जिह मेल्लिवि अंबरु झत्ति महामुणि हुवउ दियंबरु । 15

26. १ MBP मुक्क. २ MB सिहरंगउ. ३ BP णिव्विडियइं. ४ MB मियं कुं. ५ BP विज्जुलदा.  
 ६ MB अहविप्फुरियइ. ७ M सुद्ध.

12 a छ ण कं ज के सरे प्रच्छादितपद्मकेसरे; b तरंती त्या दि—यत्र वनालये सुरासुराः के न तरन्ति, सर्वेऽपि तरन्त्येव; सरे सरोवरे. 13 सरीतुसारसीयल नदीजलविपुषा शीतलम्; b रिसी ऋषिः, वसी जितेन्द्रियः; यल च+अल अत्यर्थम्. 14 णिव्विण्णउ विरक्तः 15 सिवपयखोणिहे मोक्षस्थानपृथिव्याम्.

26. 1 b °पविधारिणा इन्द्रेण. 5 b केसइ के स्वयम्. 6 a लुक्क लुक्का. 7 a जणवये त्या दि—  
 लोकाणामसदार्शितमत्स्यमुद्रके, लवणकालोदाभ्यामन्यसमुद्रेषु मत्स्यादयो न सन्तीत्यागमात्, अथवा झसकुमत्स्यमुक्कं उदकं यत्.

उत्तरसाढरिक्खि णवमिइ दिणि	महुमासहं पक्खम्मि सिंयचंदिणि ।
दुविहु वि मणि पड्डिवणउ संजमु	गउ णियवासहु हरि ह्यवहु जमु ।
परियंचिवि सामिउ णियमन्थउ	अवरु वि जणु णामियणियमन्थउ ।
रायहं णेहालोइयवइयइं	खणि चालीससयइं पावइयइं ।
अजयमल्लु महुणयरु पराइउ	णियपुरवरु बाहुबलि पराइउ । 20
गय णियगेहहु णयणाणंदण	अवर वसहसेणाइय णंदण ।
पियविरहाणलेण अइतंतउ	णारीयणु असेसु परियत्तउ ।
जो वण्णहुं सक्किउ णाहीसैं	समउं तेण ताएं णाहीसैं ।

घत्ता—रणवडहहु केरउ जगभयगारउ देंतु दिसहिं भरहे सरु ॥

थिउ गंपि अउज्झहि वैहरिदुसज्झहि पुष्पयंतु भरहेसरु ॥ २६ ॥ 25

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरहय

महाभवभरहाणुमणिय महाकव्वे जिणणिकखवणकल्लाणं णाम

सत्तमो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ७ ॥

॥ संधि ॥ ७ ॥

८ MBP णवमइ. ९ MBP अचदिणि and gloss in P कृणे १० MBP पवइयइ. ११ MBK अइअत्तउ. १२ M वहरिदुगेज्झहि.

16 ७ सि य च दि णि श्वेततारके, कृष्णपक्षे इत्यर्थः. 18 a परि यं चि वि प्रदक्षिणीकृत्य. 19 a णे हा लो इ य-  
व इ य इं ञेहालोकितपतिकामि, ७ पा व इ य इ प्रव्रजिनानि. 22 a अ इ त त्त उ अतीव तप्तः. 23 a ण अ ही सैं  
सर्पराजेन वर्णयित्तुशक्य इत्यर्थः. ७ णा ही सैं नाभिराजेन. 24 भरहे भरतक्षेत्रे, सरु श्रेष्ठम्.

## VIII

सीर्हासणु णरवइसासणु महियलु तणु अवियप्पिवि ॥  
गुणवंतहे तवसिरिकंतहे थिउ अप्पाणु समप्पिवि ॥ १ ॥ धुवकं ॥

### I

आवली—धरिऊणं इसी सुणिगंधवेसयं  
दूरविमुक्कसंगयं जणियतोसयं ।  
तिस्सां रइकएण परिसंसियंगओ  
पर्यत्तं भरणं ज्ञाणालयं गओ ॥ १ ॥

5

चिरु चरियइं चरियइं संभरेवि	जगसाभिणि गोभिणि परिहरेवि ।
मणमारहु मारहु करिवि छेउ	अइसच्चहु तच्चहु मुणिवि भेउ ।
तणुभरणइं करणइं णिज्जिणेवि	मयासिमिरइं तिमिरइं णिद्धुणेवि ।
घरवासहु पासहु णीसरेवि	विहडंतउ जंतउ मणु धरेवि ।
सहु लोहें मोहें बहिवि खेरि	णियज्जणणि व बहिणि व गणिवि णारि ।
संकुज्झिवि बुज्झिवि सइं जि सिक्ख	सुइवइणी जइणी लेवि दिक्ख ।

10

(GK give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

एको दिव्यकथाविचारचतुरः श्रोता बुधोऽन्यः प्रियः  
एकः काव्यपदार्थसगतमतिश्चान्यः परार्थोद्यतः ।  
एकः सत्कविरन्य एष महताभाधारभूतो विदा  
द्रावेतौ सखि पुष्पदन्तभरतौ भद्रे भुवो भूषणम् ॥

MBP, however, give this stanza at the beginning of IX with variants जनाः for विदाम् and भूषणौ for भूषणम्. At the commencement of this Samdhi they read the following:—

मातर्वसुधरि कुतूहलिनो ममैत-  
दापृच्छत. कथय सत्यमपास्य साव्यम् ( शाक्यम् ? ) ।  
त्यागी गुणी प्रियतमः सुभगोऽतिमानी  
किं वास्ति नास्ति सदृशो भरतार्यदुल्यः ॥

1. १ MBP सिर्हासणु. २ MBP तणु व वियप्पिवि and gloss तणुमिव गणयित्वा. ३ P गुण-  
वतहो. ४ P कंतहो. ५ M तस्सा. ६ MBP एयन and gloss in P एकान्तम्. ७ MB जयणी.

1. 1 तणु अ विय प्पि वि शरीरमार्विगणय्य. 5 ति स्सा र इ क ए ण तस्यास्तपःकान्तायाः सभोगार्थम्;  
परि से सियं ग ओ त्यक्तकायः. 6 ए य तं एकत्वम्, 7 b ज ग सा मि णि लक्ष्मीः; गो मि णि पृथ्वी. 9 b म य-  
सि मिर इं मदस्य सैन्यानि. 11 a खेरि वैरम्. 12 a सकुज्झिवि शङ्कामुज्झित्वा; b ज इ णी जैती.



छम्मासमेरु मुणि मेरुधीरु	अणसणु अवसणु गेण्हवि गहीरु ।
कमजुयलि पाविमलि विहत्थिमेत्तु	णेरंतरु अंतरु करिवि जुत्तु ।
ओट्टुउडणित्तुडसंपुडियवयणु	आसासियणासियणिसियणयणु । 15
भूमंगावंगपसंगराहितु	खयरिंदफणिंदणरिंदमहितु ।
णिहंदु नृयंदु विमुक्कतंदु	लंबियभुउ सुरथुउ जिणवरिंदु ।

घत्ता—वरतणुसिरि णं कंचणगिरि जगगुरु दुक्कियमंथउ ॥

थिउ सग्गहु अवि थपवग्गहु णं आरोहणपंथउ ॥ १ ॥

## 2

आवली—विसयवसा तिसाद्धुहातावसोसिया

भासणवग्घसिंघसरहेहिं तासिया ।

जे समयं वयभिंम लगा महारहा

ते भग्गा दिणेहिंमसहियपरीसहा ॥ १ ॥

अणब्भत्थसत्था महामंदमेहा	पयंपंति एवं समोरुद्धदेहा । 5
ण ण्हाणं ण फुल्लं ण भूसा ण वासं	पहू पाणियं लेइ णाहारगासं ।
ण सीउण्हवापण जित्तो महंतो	ण णिहाइ भुक्खाइ तण्हाइ संतो ।
ण जंपेइ णालोत्थए कं पि भिच्चं	णिउब्भो थिरं संठिआं एम णिच्चं ।
ण याणंमि किं चित्तए चित्तमज्जे	मइं कम्मि संजोयए संदुसंज्जे ।
ण दुक्खंति पाया फुल्लं वज्जकाओ	ण ओमिज्जए केम रायाहिराओ । 10

c MBP ओट्टुउडणिविड°, १. MB °सपुरिय°, १० MBP णियदु

2. १ MBP दिणेहिं असाहिय°, २ GK have before this line मुजंगप्पयावो णाम छंदो, MB have भुअंगप्पयावो णाम छंदो P सुयगापयाणाम छंदो. ३ MBP T समं रुद्धदेहा. ४ MBP कं पि भिच्चं. ५ T संदुगेज्जे, ६. MB उब्बिजए, P उब्धिजई

13 a छम्मासमेरु षम्मासमयादिम्. b अवसणु अव्ययन दु सक्किप्रमित्यर्थ. 14 a विहत्थिमेत्तु वितस्ति-मात्रम्. 15 a ओट्टुउडणित्तुड° निपुट निःछद्रसल्लमोष्ठपुटं कृत्वा सकोचितवदनः. b आसेति-आस्या-विश्रान्तिसिकान्यस्यनयनः. 16 a अवंग° अपाङ्ग 17 a नृयदु नृचन्द्रः विमुक्कतदु आलस्यरहितः.

2. 1 विसयवसा विषयवगान्. 3 समयसह महारहा महाग्थाः उत्तमसत्त्वाः. 5 a अणब्भत्थ-सत्था अनभ्यस्तशास्त्राः, b समोरुद्धदेहा श्रेणेण अवरुद्धदेहा व्याप्तशरीराः. 6 a वासं वल्लम्. 7 b संतो श्रान्तः. 8 b णिउब्भो नियमेनोर्ध्वः. 10 b ओमिज्जए उन्मृज्यते.

अहो हो किमेयस्स एएण होही  
पुणो पट्टणं किं व जाही ण जाही  
ण कंताकुहुंबेण मोहं विणीओ  
जडाजालधारी सपारोहसोहो  
मणूमण्णणिजो णियारी णिसुंभो  
इमस्सरिसो धीरधीरावहारो

यणंते कहं वा णिसाहाइं णेही ।  
मणोहारि रज्जं पि काही ण काही ।  
ण सहूलपंचाणणणं पि भीओ ।  
घुलंनंगसप्पो वडो णं कुरोहो ।  
इमो देवदेवो परो आइबंभो । 15  
परं दुव्वहो चारुचारित्तभारो ।

घत्ता—जं घवलें अइअतुलवलें दुग्गुं खुरेहिं णिभिण्णउं ॥

तेहिं कसरहिं विहुणियसिसिरहिं एक्कु वि पउ णंउ दिण्णउं ॥ २ ॥

## 3

आवली—उब्भियघवलचिंधमहिमावसारओ

करिवरजूहणाहपल्लाणभारओ ।

परजम्मंतरे वि परिरूढतेयओ

पियसहि रासहाण कह होइ णेयओ ॥ १ ॥

गयगंडकंडुंकंडुयणवाह

को वि सहइ फणिमुहचुंबियाइं

को वि सहइ द्सह दंस मसय

को वि सहइ णग्गत्तणु गिरासु

पाउसजलधाराविप्पियाइं

को वि सहइ सिसिरि पडंतु सिसिरु

को वि सहइ किडिदाढावलेह । 5

ताणं चिय कंठोलंबियाइं ।

पोसियकसाय दुव्वार विसय ।

णिच्चं णिरसणु गिरिदुग्गवासु ।

को वि सहइ विज्जुझडप्पियाइं ।

उण्हालइ दिणयराकिरणपसरु । 10

७. B णीही. ८ MBT धीरवीरावहारो, but gloss in T धीराणां धैर्यापहारकः; P वीरधीरावराहो, but gloss धीराणामपि धैर्यापहार. ९ MB जं. १० MB खुरहिं णिभिण्णउ. ११ P जरकसरहिं. १२ M सुसिरहिं. १३ MBP ण वि.

3. १ P किह. २ MBP °चंड°. ३ B कंठालंबियाइ. ४ MB सिसिरि but gloss in M शीतकाले.

11 b णि सा हाइं अहोरात्राणि. 13 a विणीओ विनीत. प्रापितः. 14 b कुरोहो वृक्षः. 15 a मणूमण्ण-णिजो मनुभिरपि पूज्यः. 16 a धीरधीरावहारो धीराणामपि धैर्यापहारः. 17 घवलें धुव्वेव्वभेण. 18 कसरहिं वत्सतरेः.

3. 3 परिरूढतेयओ प्रख्यातप्रभावः. 4 रासहाण गर्दभानाम्. 3 a बाह बाधा, b किडिदाढाव-लेह सूकरदंष्ट्राविदारणम्. 8 a गिरासु फलानपेक्षम्. 9 b °झ ड प्पियाइं पतनानि. 10 a सिसिरि शीतकाले; सिसिरु शीतम्.

परलोयकहाणी केण दिट्ठ	को वि सहइ एयहु तणिय णिट्ठ ।	
अण्णेण उच्चु किं एत्थु मरमि	घरु जाइवि तं णियरज्जु करमि ।	
अण्णेण उच्चु संभरमि पुत्तु	घरु जाइवि आलिंगमि कलत्तु ।	
अण्णेण उच्चु अलिच्चुंवियाइं	सलिलइं मयरंदकरंवियाइं ।	
सरवरि पइसेप्पिणु पियमि ताम	तण्हाइ ण वंच्चइ जीउ जाम ।	15

घत्ता—अण्णेके माणगुरुके विहंसिवि एहउ वुच्चइ ॥

परमेसरु ओलंविचकरु एकल्लउ वणि किह मुच्चइ ॥ ३ ॥

## 4

आवली—झिज्जंते ससिम्मि झिज्जइ ससो सयं

वडुंतम्मि जाइ वुड्डीपयं पियं ।

अच्छामो वणम्मि सहिऊण दंडणं

णरवइत्तरियमेव भिच्चाण मंडणं ॥ १ ॥

विंसमे वियणे	तरुगिरिगहणे ।	5
परलोयैरइं	मोत्तूण पइं ।	
गंतूण पुरं	नं चिविहघरं ।	
भरहस्स मुहं	पेच्छामु कहं ।	
सव्वेहि घणं	पडिवण्णमिणं ।	
सुरणंविचयपयं	दहंपंचमयं ।	10
उत्तुंगतणुं	पणवंति मणुं ।	
रंजियअलिहिं	कुसुमंजलिहिं ।	

५ B वंचइ. ६ MB वियंसिवि. ७ MBP एकु जि.

4. १ MB झिज्जेते; K सिज्जेते, but corrects it to झिज्जेते. २ MBP have before this line ललियलया णाम छंदो, GK have ललिया णाम छंदो. ३ MBPT °गइ. ४ MBP पेच्छामि. ५ MBP °णमिय°. ६ M adds this foot in the margin and MB read after it णाहेयसुयं घणुपंचसयं सो दिव्वमयं; after दहंपंचमयं P reads परिगलियमयं घणुपंचसयं.

11 b णिट्ठ अनुष्ठानपरमकाष्ठाम्.

4. 1 स सो शशः. 2 वुड्डी पय उच्चैः पदम्. 3 दंडण लुञ्जनादिकम्. 4 a वियणे विज्जेते. 6 b पइं पतिम्.

गयजम्मरिणं	पुञ्जंति जिणं ।	
जंपंति इमं	धीरो सि तुमं ।	
ण मुणसि कमं	गहियं णियमं ।	15
अग्हे चवला	पविलीणबला ।	
तुह मुग्गचुया	हा किं ण मुया ।	
मणैधरियगई	इय भणिवि जई ।	
अज्जवसवणा	णिम्मियभवणा ।	
थियहरिणगणे	णिवसंति वणे ।	20
कंदं पवरं	मूलं मडुरं ।	
मानूरदलं	भक्खंति फलं ।	
सीयं विमलं	पपियंति जलं ।	
सिग्घुलियजडा	वियरंति जडा ।	
किर ते वि मुणी	ता दिव्वज्जुणी ।	25
ससिरविसयणे	उग्गय गयणे ।	
मा लुणह तरं	मा धुणह मरं ।	
मा खणह महिं	मा कुणह सिहिं ।	
मा विसह सरं	मा हणह परं ।	
एसा ण विही	जइ णत्थि दिही ।	30
ता णिवसणयं	तणुभूसणयं ।	
गेणहह तुरियं	दुट्ठं दुरियं ।	
असुविहवणे	भवसंकमणे ।	
जं आसि कयं	तं जाइ खयं ।	

धत्ता—जिणालिंणं उज्झियसंगं जं किउ पाउ दुरासें ॥ 35

तं तुट्ठइ केह वि ण फिट्ठइ जीवहु जम्मसहासें ॥ ४ ॥

७ P मणि. ८ MBP °हरिणयणे. ९ MP विरयंति. १० MBP कह व.

19 b °भवणा गृहाणि. 20 a थियहरिणगणे स्थिता हरिणानां गणा यत्र. 23 a मा लूरदलं वित्त्व-  
पत्रम्. 26 a स सिर विसयणे आकाशे. 27 b मरं पवनम्. 29 a सरं सरोवरं पानीयम्. 35 पाउ पापम्.  
36 जम्म स हासें जन्मसहस्रेण.

## 5

आवली—ता लम्मा णराहिवा भासियक्खरे  
 द्दुमदलमोगपिच्छैवक्कलधरा परे ।  
 थियजिणवरणिगेहणिट्ठोहयट्टिया  
 णाणाविहवियारंवेसेहिं संठिया ॥ १ ॥

तो <sup>३</sup> कच्छमहाकच्छहं तणूय	पडिकूलपिसुणसिगसूलभूय ।	5
कामियकामिणियणकामकील	मयमत्तचंडसोडाललील ।	
परबलबलगैलहन्थणसमन्थ	दंणिण वि भायर करवालहन्थ ।	
आया तहिं जहि णिम्मुकुंडंभु	थिउ पडिमाजोएं सइं सयंभु ।	
पासाहिं परिभमिवि महारिजूर	णं जंबूदावहु चंद्रसूर ।	
णामं णमि विणमि णिवडणेह	णं मिहरिहि णिर्यडणिसण मेह ।	10
जैयकारिवि तेहिं पवुत्तु एव	णियसुयहं विहंजिवि पुहइ देव ।	
दिण्णी अम्हहुं दिण्णउ ण किं पि	महिमंडलु गोप्पयमेत्तु जं पि ।	
पइं पालियखत्तियसासणेण	पेसणयरपेसियपेसणेण ।	
एवहिं पञ्चत्तरु किं ण देमि	भणु कवणु दोसु गुणरयणरासि ।	
परमेट्टि पियामह तिर्जगताय	अम्हारउ दुट्टु ण होइ राय ।	15

घत्ता—तुह चलणहं णं णवणलिणहं मणमहुयरु रुणुरुंइ ॥

उम्मेल्लहि काइं ण वोल्लहि जाम ण हियवउ फुट्टइ ॥ ५ ॥

## 6

आवली—पुणु पुणु पहुपसायदाणुग्गमे रथा  
 पाण्णुं पडंति गाढं कुमारया ।

5. १ MBP °विळ°. २ M°णिट्टपहट्टिया, B णिट्टाहपठिया ३ MBP ता. ४ M °गलघलण; B °गल-  
 त्यल्लण°. ५ P °णमुक्क°. ६ MBP णियडणिविट्ट ७ MBP पणवेप्पणु ८ M तिजगभाय.

5. 3 थिये त्यादि- स्थितस्य जिनस्य निरोधनिष्ठा निश्चलस्थितिस्तया हत स्थित स्थान येषां ते. 5 a  
 तणूय पुत्रौ. 6 b °सोडाल° हस्ती 8 b सयमु आदिनाथ . 16 रुणु रुट्टइ अनुराग करोति. 17 उ म्मेल्ल हि  
 अवलोकय.

6. 1 रथा रता.

सोहइ गुरुयणम्मि कयमाणवज्जणं  
गिरिवरदारणम्मि करिदसणभंजणं ॥ १ ॥

रयणमयमइंदासणसमेउ	पोमावइपरमाणंदहेउ ।	5
जिणपुण्णपवणपरिछित्तकाउ	ताहिं अवसरि कंपिउ णायराउ ।	
णियणाणु पउंजिवि तेण मुणिउं	जं साल्लपहिं जिणु पुरउ भणिउं ।	
मगंति बाल किं भुअणभाणु	जइ देइ देई ता तिजगदाणु ।	
पर तेण विमुक्कु घरत्थकम्मु	पारद्धउ विमल्लु मुणिंदधम्मु ।	
सामंतमंतिसंविउ णरेसु	महिवइ संतोसिउ देइ देसु ।	10
देसवइ म्मुसु गामवइ छेत्तै	छेत्तैवइ किं पि कुडैएण भत्तु ।	
घरवइ पुणु ढोवइ कूरमुट्ठि	तिहुयणवइ पाडइ पयाहिं सिट्ठि ।	
जइ पत्थिज्जइ ता को वि गरुउ	लहुपत्थणाइ पर होइ चरुउ ।	
लइ कयउ कुमारहिं जुत्तु साहु	सो पत्थिउ जो तेलोक्कणाहु ।	
सो पत्थिउ जसु जसु जगपयासु	सो पत्थिउ जसु सुरवइ वि दासु ।	15

घत्ता—णिञ्चलमणु समतणकंचणु जेण वित्तु पडिवण्णउं ॥

मोक्खत्थिउ सो जं पत्थिउ तं हउं करामि अंसुण्णउं ॥ ६ ॥

7

आवली—णरलंयम्मि ते हमिह खोहकारणं

जायं किं भणांमि सुकयावयारणं ।

अचवंता वि देंति तरुणा महाहलं

सुपुरिसदंमणं पि ण हु होइ णिप्फलं ॥ १ ॥

6. १ MBP मुंदरेहिं जिणपुरउ. २ MBP देउ. ३ P सेत्तु. ५ P खेत्तवइ. ५ MB कुलएण, P कुडएण in second hand. ६ MB तइलोक°. ७ MBP ण मुण्णउ

7. १ MBP भणेमि.

6 b णायराउ नागराजो धरणेन्द्र. 10 a णरेसु नराणामीश\*, अथवा, पुरुपेषु. 11 b कुडएण प्रस्थेन. 12 b सिट्ठि जीवसुट्ठि: विभुवनम. 13 b चरुउ हितकर..

7. 1 णरेत्यादि- नरलोके तौ नभिविनमी तिष्ठतः, हमिह अहं तु पाताले तिष्ठामि, तथापि एतौ मम क्षोभकारणं जातौ

दुवर्ष—तां णिग्गमणमेव धरणेण कयं संभरियजिणवरं ।	5
फारफणौकडप्पफुक्कारुल्लौलियसमहिमहिहरं ॥ १ ॥	
महिहरुंदकंदरायंपणणिग्गयकूरहरिवरं ।	
हरिओरालिरोलवित्तासियणासियमत्तकुंजरं ॥ २ ॥	
कुंजरचडुलचरणपंडिपेल्लणपाडियपयडभूरुहं ।	
भूरुहखंधुंधुंधखरणिहसणरुहपज्जलियहुयवहं ॥ ३ ॥	10
हुयवहविप्फुल्लिगजालावलिजलियसैमत्तकाणणं ।	
काणणसंणिसण्णमुणितांवासंक्रियसयलसुरयणं ॥ ४ ॥	
सुरयणभरियजलयजलधाराऊरियसुविउल्लंवरं ।	
अंबरयलफुरंततडिदंडाहंडलचावकब्बुरं ॥ ५ ॥	
कब्बुरदिव्ववन्थवित्थिण्णुल्लोवयल्लइयसंदणं ।	15
संदणयलविलेग्गविसहरमुहलालियविंझचंदणं ॥ ६ ॥	
चंदणकुसुमघुसिणफलदलजलतंदुलउवणियञ्चणं ।	
अञ्चणकामसामफणिरामारंभियसरसणञ्चणं ॥ ७ ॥	
णञ्चणमिलियललियलीलामरललणालुलियमेहलं ।	
मेहलियाविलंविचलकिंकिणिक्कलकलयलसुपेसलं ॥ ८ ॥	20
इय वरविवरकुहरतरुणहयलजलथलकंपकारिणा ।	
वियडफणाहिरूढचूडामणिकुवलयभारधारिणा ॥ ९ ॥	
पहुक्कमकमलणमियणमिविणमिणराहिवचोञ्जदाइणा ।	
झत्ति समागएण दिट्ठो रिसहो गरलहरराइणा ॥ १० ॥	

२ P तो. ३ MBP °फडा°. ४ P °उल्लामिय°. ५ MBP °परिपेण°. ६ MBP °समत°. ७ M °ताव-  
ससंक्रिय°, B °तावसरसक्रिय°; P °तावमक्रिय° and gloss तापशाङ्कित, K °तावासक्रिय°, but in  
second hand °तावससंक्रिय°. ८ MBP °सविउल° ९ MBP °वलग्ग°. १० MBP अंचण°.

6 °कडप्प° सघात°. 7 °आयंपण° आकम्पनम्. 8 हरिओरालि° मिहध्वनिस्तस्य रोल कोलाहल°. 10 °खरणिहसणरुह° अत्यन्तनिघर्षणप्रादुर्भूत°. 12 °तावासक्रिय° तापशाङ्कित°. 13 °भरियजलय°  
भूतमेघा. 14 °कब्बुरं चिववर्णं गधा भवति. 15 °उल्लोवयं चन्द्रोपकम्, °णं दणं देवविमानम्. 16 °लालि-  
यं चुम्बिता :. 18 °सामं इयामा. 21 °कुहरं पर्वतः. 22 °अहिरूढं स्थितः. 23 °चोञ्ज° आश्चर्यम्.  
24 गरलहरराइणा नामराजेन धरणेन्द्रेण.

घस्ता—आवेपिणु कर मउलेपिणु थुउ मुणिदु थुइलक्खहिं ॥ 25  
 मुईंघुलियहिं अक्खरलींलियहिं जीहहिं दसैंसयसंखहिं ॥ ७ ॥

8

आवली—कंतामुहपलोइरं भोयलालसं  
 भुवणवणं डहेइ मोहो मलीमसं ।  
 जइ तुह वयणवारिणा णेय सित्तयं  
 ता कह जियइ मयणसिहिणा पलित्तयं ॥ १ ॥

दृंसियघरासमो	भूसियणियागमो ।	5
सोंसियमईमलां	पोसियमहीयलो ।	
मयगयणियत्तओ	कयवयपयत्तओ ।	
भावियजयत्तओ	तावियसैयत्तओ ।	
खंचियविसायओ	संचियविरायओ ।	
लुंचियसिरोरुहो	वंचियदुरग्गहो ।	10
कुंचियगईवहो	अंचियजसावहो ।	
माघईखोहओ	आघईरोहओ ।	
छंडियकुसंगओ	खंडियअणंगओ ।	
दंडियसइंदिओ	पंडियपवंदिओ ।	
तवयरणपरियरो	जमकरणभयहरो ।	16
समसरणजोयओ	भवतरणपोयओ ।	
सज्जणाणग्गणी	सिद्धचिंतामणी ।	
संपयासंगमो	धम्मैकप्पहुमो ।	

११ P मुहि. १२ MBP °वलियहिं. १३ P दुसहससस्तहि.

8. १ GK have before this line:—अमरपुरां छंदो, MBP have अमरपुरी नाम छंदो.  
 २ M °सगत्तओ. ३ B omits this foot.

8. 1 लालस लम्पटम्. 4 मयण सि हि णा प लि त्त य कामाग्निना प्रदीप्तम्. 5 b °घ रा स मो युहस्था-  
 श्रमः. 7 b °प य त्त ओ प्रयत्नः. 8 b °स य त्त ओ °स्वगात्रः. 11 a °ग ई व हो °गतिमार्गः, b अं चि य ज सा व हो  
 श्लाघितयशोधारकः. 12 a मा व ई° लक्ष्मीपतिः. 15 a °प रि य रो सामग्रीः b ज म क र ण° मरणं रोगो वा.  
 16 a स म स र ण °उपशमगृहम्, b °पो य ओ प्रवहणम्.



भवविणासी भवो	सिवपयासी सिवो ।	
चित्ततमहो इणो	दोसविजई जिणो ।	20
पावहारी हरो	तं पराणं परो ।	
देवदेवो तुमं	ताहि दीणं ममं ।	
णिग्गुणो णिद्धेणो	दुम्मई णिग्घिणो ।	
परहरावासओ	गहियपरगासओ <sup>१</sup> ।	
माणओ मेच्छओ	रोहिओ रिंछओ ।	25
जायओ हं भवे	णारओ रउरवे ।	
तुम्ह पडिकूलिमा	जा कया सौ कमा ।	
एम भुत्ता मए	आसि काले गए ।	

घत्ता—जिणु वंदिवि अप्पउ णिंदिवि णाणं तमु पक्खालिउ ॥

णमिरायहु विणमिसहायहु मुहससिर्बिबु णिहालिउ ॥ ८ ॥ 30

## 9

आवली—तेहि पयंपियं सया सुहावणं

महिमहि दारिऊण पत्तो सि किं वणं ।

कस्स तुमं सुसील अम्हाण संमुहं

अणिमिसलोयणेहिं किं पेच्छसे मुहं ॥ १ ॥

णीसेमतामियामियणरिंदु	तं णिसुंणिवि पडिजंपइ फणिंदु ।	5
हउं भुवणि पसिउउ णायराउ	जंभारिणमंसिउ तिजगताउ ।	
लोउत्तमु कुसुमसरंतयालु	इहु देउ महारउ सामिसालु ।	
जइयहुं णिव्वेइउ मुक्कंरज्जु	तइयहुं जि एण महु कहिउ कज्जु ।	
तं पेस्सिय केण वि कारणेण	विहलियजडजीउद्धारेणेण ।	

४ MB णिद्धुणो ५ MP add after this जीवआमागओ करणबलपोसओ, B adds only जीवआसासओ.

9. १ MBP णीमाम<sup>०</sup>. २ B णिमणवि ३ MB मुक्कु रज्जु. ४ MBP संपेसिय.

20 a चित्ततमहो चित्ततमोघानक ; इणो आदिन्य अथवा, चित्तस्य तमोऽन्धकारस्तस्य सूर्यः. 22 b ताहि रक्ष. 27 b कमा कमात्. 29 णाणं धरणेन्द्रेण.

9. 1 सया सुहावणं सदा सुखकरम्. 2 महिमहि दारिऊण हे अहे, महीं विदार्य. 5 a<sup>०</sup>अमिय<sup>०</sup> अमित<sup>०</sup>. 6 b जंभारि<sup>०</sup> इन्द्रः. 7 a कुसुमसरंतयालु कामघातकः. 8 a णिव्वेइउ वैराग्यं गतः.

एहिंति बे वि णमिविणमिणाम  
तुहुं देजसु ताहं णयासणाउ  
आसणथरहरणें ढल्लिउ संचु  
पायालु मुइवि अवयरिउ पत्थु  
जो खंडइ लिंपइ सुरहिणण  
एवहिं सो दीसइ ध्रुवु समाणु

मइं मग्गिहिंति सिरिसोक्खकाम । 10  
खगसेट्ठिउ उत्तरदाहिणाउ ।  
मइं जाणिउ तुम्हारउ पवंचु ।  
हउं अरुहदेवपेसणसमत्थु ।  
देवें णिज्झाइयणियहिणण ।  
परिचत्तउ पुब्बिल्लउ विहाणु । 15

घत्ता—लहु आवहं काइं चिरावहं जोइ मुएवि सखयरइं ।

मइं सिट्ठइं पहुउवइट्ठइं भुंजह णाणाणयरइं ॥ ९ ॥

10

आवली—इय वयणं कुमारवीरेहिं इच्छियं

णवर णहयले विमाणं णियच्छियं ।

मारुयधावमाणधुयधयवडंचियं

गुणिणा झत्ति णायणाहेण णिम्मियं ॥ १ ॥

र्णविऊण सद्दोसारंभहरं  
जुंज्झियहिंडियविसहरिणउलं  
गयणंगणलग्गसिरं गरुयं  
उक्खयपुलिंदकंदारुणयं  
सीहाणुलग्गभीयरसरहं

सुरवरभवणेण सरंभहरं । 5  
द्वैवंकुरपीणियहरिणउलं ।  
ओसहिहयसत्तसिरंगरुयं ।  
हरिणहहयकरिकंदारुणयं ।  
सुररमणीवाहियहंसरहं ।

५ MBP अरुहदासपेसण°. ६ MBP धुउ.

10. १ All Mss. have before this line: मात्रासमक. २ MBP जुज्झिरहिंडिर°. ३ MBP दुव्वंकुर°.

11 a ण यासणाउ नगाश्रिते द्वे श्रेण्यौ, b खगसेट्ठिउ विद्याधरश्रेण्यौ. 12 a °थरहरणें कम्पनेन; संचु शरीरबन्धः. 14 b °णियहिणण मोक्षेण. 16 चिरावहं चिरं कुहताम्; सखयरइं विद्याधरसहितानि.

10. 5 a सद्दोसारंभहरं स्वदोषारम्भविनाशकम्, b सुरवरभवणेण विमानेन, सरंभहरं सरोवर-जलधारकं विजयार्थं रम्भायुक्तशृहं वा. 6 a °विसहुरिणउल वृषसिंहनकुलम्; b °हरिणउलं मृगसंघातम्. 7 a गरुयं महान्तम्. b सत्तसिरंगरुयं सत्त्वानां शिरसि शरीरे च रुजं व्याधिम् 8 a °कंदारुणय कन्दै-मुलैरुणं रक्तम्; b कंदारुणयं मस्तकैः कृत्वा दारुणं रौद्रम्. 9 a °सरहं अष्टापदम्; b °वाहियहंसरहं वाहितौ हंसयुक्तौ रयो यस्मिन्.

तीरासियखयरीवाहणयं	दुमघट्टणहुयहुयवाहणयं ।	10
जेउररवभरियलयाहरयं	वरखेयरपीयपियाँहरयं ।	
संदरिसियवहुरत्तामरसं	रवियरवियसावियतामरसं ।	
वीसरियहारभारियमहियं	जिणपडिमाकयमहिमामहियं ।	
चारणमुणिद्रेसियधम्मसुइं	झरझरियणिज्झरावाहसुइं ।	
फणिवयणविमुक्कविसग्गिवहं	दरिदाँवियविहिविसग्गिवहं ।	15
णरजुयलमलद्धपियालवणं	णीयं संलं सपियालवणं ।	
पुव्वावरजलहिविलग्गसिरो	कंदरमुहेहिं वणयरगसिरो ।	

घत्ता—भडभीसहिं णमिषिणमीसहिं गिरि वेयडु पलोइउ ॥

रयणालए सायरवेलेए तुलदंडु व संजोइउ ॥ १० ॥

## 11

आवली—वियसियविडविकुसुमकिंजकपिंजरो

मणिमयकडयमंडिओ णं महीकरो ।

रयणायरपसारिओ सहइ सोहणो

रयणायरविलुद्धओ हवइ थीयणो ॥ १ ॥

णं जगसिरिणट्टाधारवंसु	अहवा गोगाइसगीरवंसु ।	5
गंगासिंधूहिं विहिण्णदेहु	पडिगयसंकिरगयणिहयमेहु ।	
रुक्खहुं णावइ रुक्खाउवेउ	देवहुं वल्लहु णं सग्गलोउ ।	

४ M °लयाहरह. ५ M °पियाहरय ६ P सदरसिय°. ७ MBP दरिसाविय°.

10 a ° खयरीवाहणय वियाधरत्ताणा वाहन यस्मिन्, b ° हुय° उत्पन्न, b ° हुयवाहणय हुतवाहनमभिम्.  
11 a ° लयाहरय लनाग्रहम्, b ° पियाहरय ° प्रियाधरम्. 12 a मदरिसियेत्यादि—सदर्शितं वधुरक्ता-  
नाममराणां स मुखे येन b नामरगं पद्मम्. 13 a ° महिय महीज वृक्षम्; b ° महिमा महियं माहिम्ना पूजि-  
तम्. 15 a फणीयादि—फणिवदनैर्विमुक्ताद्विपात्रैर्वधो मरणयत्न. b दरित्यादि—दरीषु दर्शितो विविधैर्विभिः  
पक्षिभिः स्वर्गिणां पन्था यत्न. 16 a णरजुयल नमिबिनमियुमम्. अलद्धपियालवणं लब्धं वृषभनाथस्य  
प्रियं आलपनं येन. b सपियालवणं प्रियालाश्वरवृक्षास्तद्वनैः सहितम्. 17 b ° गसिरो प्रसनशीलः. 19 रयणा-  
लए रत्नस्थानके.

11. 1 ° किंजक° मकरन्द. 2 कडय° कङ्कणं गिरितट च. 4 रयणायरविलुद्धओ रत्नानामाकरे  
आश्रये पुरुषे विशेषेण लुब्धः, अथवा रते नागरे विदग्धपुरुषे विशेषेण लुब्धः. 5 b गोगाई° पृथ्वी एव धेनुः.  
7 a रुक्खाउवेउ वृक्षायुर्वेदः वृक्षाणां वृक्षुपायप्रदर्शक शास्त्रम्.

उघलोसहिरससिहिजोयवणु  
णिसि चंदयंतसलिलेहिं गलइ  
माणिक्रपहादिण्णावलोउ  
रययमउ सव्वु रयाणियरभासु  
गंयणंगणलग्गविच्चित्तसिंमुं  
दोवासहिं तासु थियाउ ताम  
उत्तरदाहिणियउ मणहराहं

रसवाइ व सइं णिवडियसुवणु ।  
वासरि रविमणिजलणेण जलइ ।  
जहिं चक्रवाय ण मुणंति सोउ । 10  
पण्णास मूलि वित्थारु जासु ।  
जो पंचवीसजोयणइं तुंगु ।  
दीहत्ते लवणसमुद्दु जाम ।  
सेढीउं दोणिण विज्जाहराहं । 15

घत्ता—महि मोइवि दह वरि जाइवि द्रहजोयणवित्थिणी ॥

एकैकी विहवगुरुकी णाणारयणरवणी ॥ ११ ॥

## 12

आवली—तत्थ चउत्थकालटिदिसंविहाणयं

पंचधणूसयाइं मुणिरयणिमाणयं ।

णीणं कम्मभूमिपरिणामजोयओ

परविज्जाहलेण अहिओ विहोयओ ॥ १ ॥

कुलजाइकमेण समागयाउ  
पुव्वाउ ताउ णिच्चं हियाउ  
सैहिउवसग्गे धीरे समेण  
पारंभियमुद्दामंडलेण  
विज्जाहराहं णियमं वएण

दूसहतवताववसंगयाउ । 5  
अवराउ पयत्ते साहियाउ ।  
सुइदेहे होमे संजमेण ।  
चरुगंधधूवफुल्लञ्चणेण ।  
विज्जाउ हौंति ससहावएण ।

11. १ MBP गयणग्गलग्गमुविचित्त°. २ B °सेंगु. ३ MB भेट्टिउ दोणिण वि, P सेडिउ बेणिण वि.  
४ MBP णाणाणयर°.

12. १ P °कालट्टिदि°. २ T भयरणिमाणयं, but notes a p मुणिरयणाति पाठेऽप्ययमेवार्थः.  
३ MBP कम्मभूमिणाम°, ४ MBP सहिओवसग्गधीरे. ५ MP °पुप्फञ्चणेण, B पुप्फचणेण. ६ MBP कमेण.

8 a उ व ल° धातुपाषाण . 11 a र य णि य र भा सु चन्द्रकान्ति.. 13 a दो वा स हिं द्वयोः पार्श्वयोः. 15 मो इ वि  
मुक्त्वा; व रि उपरि.

12. 1 च उ त्थे त्या दि—चतुर्थकालस्थितेः शरीरेत्सेधादिलक्षणायाः सम्यक्विधानम्. २ मु णि र य णि-  
मा ण य मत्तहस्तप्रमाणम्. 3 णी ण ट्टणा मनुष्यानाम्; क म्म भू मि प रि णा म जो य ओ कृष्यादिकर्मयोगजः. 7 a  
स हि उ व स ग्गे सोढोपसर्गेण. 9 a व ए ण व्रतेन.

सिद्धउ पण्णत्तिपहूइयाउ	आणत्तु करिति पराइयाउ ।	10
जहिं धम्मा इव संदिण्णकाम	णीरंतरसीमाराम गाम ।	
जहिं दक्खामंडवयलि सुयंति	पहि पंथिय दक्खारसु पियंति ।	
धवलूढजंतपीलिज्जमाणु	पुंडच्छुखंडरंसु पवहमाणु ।	
कइकच्चरसु व जणु पियइ ताम	तित्तीइ होइ सिरकंपु जाम ।	
जहिं पिक्ककलमकणिसइं चरंति	सुय दूयत्तणु हलिणिहि करंति ।	15

घत्ता—सिरिसयणहिं णं बहुवयणहिं विलंसंती दिणि रायइ ॥

जहिं पोमिणि कलमहुयरञ्जुणि णं भाणुहि गुण गायइ ॥ १२ ॥

## 13

आवली—कंकणहारदोरकडिसुत्तभूसिया

णिच्चं गंधधूर्वमल्लोहवासिया ।

लच्छि भुंजिउं णरा देवयाणियं

सोक्खं जं लहंति तं केण माणियं ॥ १ ॥

कुसुमियणंदणवणसंकडाइं	कीलागिरिंदसिहरुम्भडाइं ।	5
परिहातिपहिं परियंचियाइं	पवणुधुयधयमालंचियाइं ।	
बहुदारगोउरट्टालयाइं	सोवण्णरयणरइयालयाइं ।	
मुहसालातोरणसोहियाइं	दाहिणसेटिइ जसाहियाइं ।	
सोहासमूहमोहियसुराइं	एयइं पण्णास जि पुरचराइं ।	
पहिलउ किंणर णरगीउ बीउ	बहुकेउ पुणु वि पुरु पुंडरीउ ।	10
हरिकेउ सेयकेउ वि रवण्णु	सण्पारिकेउ णीहारवण्णु ।	
सिरिवहु सिरिहरु लोहगालोलु	अण्णेक्कु अरिंजउ सग्गालीलु ।	

७ MBP सुइयाउ. ८ MBP णेरतर°. ९ M जहिं १० MBP रसपवहमाणु. ११ M °कलमकणसइं; BP कलवकणिसइं. १२ MBPK विसयती.

13. १ MBP °मल्लेहिं वासिया; T °मल्लोह° and gloss पुष्पसमूह. २ P °गोउरहालयाइं. ३ MBP सेउकेउ. ४ MB लोयगालीलु. P लोहगालु and gloss लोहार्गलायुक्तम्.

10 a प ण्णत्तिपहूइयाउ प्रजतिप्रभृतयः; b आणत्तु आज्ञाम्. 12 b पहि मार्गे. 13 a धवलूढ° वृषभवाहितानि. 15 b सुय शुकाः; हलिणिहि कर्पकस्त्रियाः. 16 सिरिसयणहिं पद्मैः; रायइ शोभते.

13. 2 मल्लोह° पुष्पसमूहः. ४ देवयाणियं विद्यासंपादिताम्. 6 a परियंचियाइं परिवेष्टितानि.

वज्रगालु वज्रविमोड अवरु  
सोलहमी पुरि सयडंमुहि होइ  
रयविरयपउरखगजम्मखोणि  
अपरज्जिउ कंचीदामु दोणिण  
झसइंध कुसुमपुरि संजयंति  
विजया खेमंकरु चंदेभासु  
सुविचित्त महाघण चित्तकूड  
ससिरविपुरि विमुही वाहिणी वि  
मज्झइ रहणेउरंचकवालु  
जार्थेउ जयमंगलजयरवेण

महिसारु पुरं जयपुंरु वि पवरु ।  
चउमुहि बहुमुहि जाणंति जोइ ।  
आहंडलणयरि विलासजोणि । 15  
सविणय णहु खेमैयरीउ तिणिण ।  
सुर्कउरु जयंती वइजयंति ।  
रविभासु सत्तभूयलणिवासु ।  
अण्णु वि तिकूड वइसवणकूड ।  
सुमुहीपुरि णिञ्चुजोइणी वि । 20  
तहिं सयलखयरकुलसामिसालु ।  
णमि फणिणा णिहिउ कउच्छवेण ।

घत्ता—एकेकी पुरंहिं विरिक्की गामकोडिपाडिबद्धी ॥

णामिरायहु थुयणाहेयहु धम्मं संपय सिद्धी ॥ १३ ॥

14

आवली—पुरिसा भूयलम्मि विरला सुधीरया

परउवयारचावडा हौंति धीरया ।

एको अहव दोणिण पायालराइणा

सरिसा णैत्थि भइ धरणिंदमोइणा ॥ १ ॥

वारुणासामुहाओ फुडं जाणिमो

अज्जुणी वारुणी वइरिसंधारिणी

विज्जुदित्तं पुरं गिलिगिलं पट्टणं

वंसवंत्तं पुरं कुसुमचूलं पुरं

वामसेठीपुराणावलिं भाणिमो । 6

अवि य केलासपुव्विल्लया वारुणी ।

चारुचूडामणी चंदभाभूसणं ।

इंसगच्चं पुरं मेहणामं पुरं ।

५ B जरुपुर. ६ B सयडंमुहि ७ M खेपुरीउ; BP खेमपुरीउ. ८ MBP सुकउरि ९ P वइवसण<sup>०</sup>.  
१० P णेउरु चकवालु. ११ MBP जोयउ. १२ M विहवगुरुक्की; BP पुरहिं गुरुक्की.

14. १ M सरसा. २ MBP भइ णत्थि. ३ MBP पुराणावली. ४ P विज्जदत्तं. ५ MBP किलि-  
किलं. ६ MP वंसवंत्तं; B वंसवंत्तं.

28 पुर हिं विरिक्की पुरैः विभक्ता.

14. 1 सुधीरया सुबुद्धिरताः. 2 चावडा व्यापृताः. 5 a वारुणासामुहाओ पश्चिमदिशामुखतः  
प्रारभ्य.

संकरं लच्छिहम्मं पुरं चामरं	विमलमसुमङ्कयं सिवसमं मंदिरं ।
वसुमईणामयं सव्वसिद्धत्थयं	सूरसन्तुजयं केउमालं कयं । 10
इंदकंतं णहाणं दणासोययं	वीयसोयं विसोयं सुहालोययं ।
अलयतिलयं च णहतिलययं मंदिरं	कुमुदकुंदं च णहवल्लहं सुंदरं ।
जुहुतिलयमवणितिलयं सगंधव्वयं	मुक्कहारं पुरं अणामिसं दिव्वयं ।
अग्गिजालापुंरं गरुयंजालापुंरं	सिरिणिकेयं च जयसिरिणिवासं पुरं ।
रयणकुलिसं वरिट्ठं विसिद्धासयं	दविणजयमवि सभहं च भद्दासयं । 15
फेणसिहरं पि गोखीरवरसिहरयं	वेरिअक्खोहसिहरं च गिरिसिहरयं ।
धरणि धारणि सुदंसणपुरं रुंदेयं	दुग्गयं दुद्धं हारिमाहिंदयं ।
विजयणामं पुरं पुणु सुगंधिणिपुरं	सुरयंणायरपुरं रयणपुरमवि पुरं ।
सट्ठिगामाण कोडीहिं सहुं हारिणा	सेट्ठि तुट्ठेण सुविसिट्ठसुहयारिणा ।

घत्ता—इय णयरइं णिवसियखयरइं धणकणजणपरिपुण्णइं ॥ २० ॥

अणुरायं रिसहपसायं णायं विणमिहि दिण्णइं ॥ १४ ॥

## 15

आवालि—जाओ सो णहय राणं पहू पिओ  
 णेहणिवद्धओ ससुहिणा समं थिओ ।  
 सुयणुद्धारभारधरेणुज्जुयंगओ  
 ते आउच्छिऊण धरणो धरं गओ ॥ १ ॥

भुवणहु मंडणु अरहंतु देउ	माणिणिमुहमंडणु मयरंकउ । 6
वेसहि मंडणु वइसिउ णिरुत्तु	ववहारहु मंडणु चायवित्तु ।
कुलमंडणु सीलु सुयस्स बुद्धि	तवचरणहु मंडणु मणविसुद्धि ।

७ MBP मूरसंतुजयं. ८ MBP महा°. ९ MBP कुमुदकुंद व्व. १० M जुवइतिलय सवणियं; P जुवइतिलयं सविणिय. ११ MBP गरुयआलापुर. १२ P रुहय. १३ M सुरयणारय° १४ MBP सुट्ठ. १५ P सुविसुद्ध° but gloss सुविशिष्ट.

15. १ B सुसुहिणा. २ P धरणुज्जयगओ, but gloss ऋजुशरीरः. ३ BP वायवित्तु, and gloss in P वचनप्रतिपालनम्.

19 a हारिणा मनोज्ञेन. 21 णाय धरणेन्द्रेण.

15. 6 a वइसिउ वैशिकं वेद्यावृत्तिः.

कुलवहुमंडणु भत्तारभत्ति  
 माणहु मंडणु अदीणवयणु  
 कइमंडणु णिव्वाहियणिबंधु  
 पियपेम्महु मंडणु पणयकोउ  
 किंकरमंडणु पहुकज्जकरणु  
 सिरिमंडणु पंडिययणु णिरुत्तु  
 पुरिसहु मंडणउ परोवयारु  
 उद्धरिय वे वि णमि विणमि भाय  
 अहव्वा किं होसइ किर परेण

असि रायहु मंडणु मंतसत्ति ।  
 भवणहु मंडणु वरणारिरयणु ।  
 गयणहु मंडणु ससि कमलबंधु ।  
 आरंभहु मंडणु खलविओउ ।  
 णरवइमंडणु पाइकभरणु ।  
 पंडियमंडणु णिम्मच्छरत्तु ।  
 धरणिंदे पालिउ णिव्वियारु ।  
 को पावइ एयहु तणिय छाय ।  
 परिणवइ दइउ सव्वायरेण ।

15

घत्ता—किं किज्जइ अण्णे दिज्जइ सव्वहु पुण्णु जि सामिउ ॥

ते कित्तणु भरंहपहुत्तणु पुप्फयंतर्गयगामिउ ॥ १५ ॥

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए

महाभवभरहाणुमण्णिए महाकव्वे णमिविणमिरज्जलंभो णाम

अट्टमो परिच्छेओ सम्मत्तो ॥ ८ ॥

॥ संधि ॥ ८ ॥

४ M सोहइ. ५ MBP होइ. ६ MBP °गइ°.

10 a °णिबंधु काव्यम्; b कमलबंधु सूर्यः. 18 ते पुण्येन, कित्तणु कीर्तिर्यशः; पुप्फयंतगयगामिउ  
 आक्काशगामि सर्वलोकाकाशव्यापि कीर्तनम्.



## IX

ता झाइउ णिण्णेहु णियमणर्पसरु परज्जिउ ॥  
पुण्णइ छट्ठइ मासि णाहँ जोउ विसज्जिउ ॥ १ ॥

### I

हेला—परिचितइ जिणेसरो दुक्कियं खवंता ।  
महिमापारमासिओ सुद्धही महंतो ॥ १ ॥

<p>जिह तेहेण दीवु तरु णीरँ आहारु वि जो परह णिमित्तँ उज्झिउ आहाकम्मुद्देसहिँ अज्झोवज्झहिँ पृईकम्महिँ लिंणिणीसणरसँत्तुगारहिँ जीववहाइअसंजममीसहिँ गणहरगणियहिँ छायालीसहिँ णीरसु सरसु ण किं पि भणेवउ रुवतेयबलचित्तचत्तउ</p>	<p>तिह माणुँससरीरु आहारँ । 5 सिद्धउ लद्धउ काँल भँवतँ । पुव्वं पच्छा संथुँइभासहिँ । देवयचरुयहिँ वियलियधम्माहिँ । चोईहमलवित्थारवियारहिँ । परंभयवसउच्चाइयगासहिँ । 10 चज्जिउ अवरोहिँ मि बहुदोसहिँ । रसणु रसँ रँसंतु णिहणेवउ । संजमजत्तामेत्तुँ समत्तउ ।</p>
---	---

MBP give, at the beginning of this Samdhi, the stanza एको दिव्यकथाविचारचतुरः etc. for which see notes on page 121.

1. १ BP °पसरपरज्जिउ. २ GK call this couplet हेलादुवई only at this place; throughout the rest of the Samdhi they call it हेला. ३ MBP सुद्धही. ४ MBP कालि. ५ P भमतँ. ६ B शुइसंभासहिँ. ७ M °सत्तुगारहिँ. B सत्तुउगारहिँ, P सत्तुगारहिँ. ८ MP चउदह°. ९ M पयभर°. १० MBP रसे रमतु. ११ MBPT °मेत्तसमत्तउ.

1. 1 झा इउ ध्मातः, परज्जिउ पराजितो निर्जितः. 2 जोउ षण्मासकायोत्सर्गः. 4 सुद्ध ही शुद्धबुद्धिः. 6 b काल युक्तं कालम्. 7 a आहाकम्मुद्देसहिँ अथ कर्म नीच कर्म स्वयंपाकादिकम्, उद्देशिकं कर्म मुनि-मुद्दिदय पाककरणम्. 8 a अज्झोवज्झहिँ मुनिं दृष्ट्वा अधिश्रयणे अधिकजलस्य तंदुलानां वा निक्षेपैः. 9 a णीस निस्वो दरिद्रः; b चोइहमलं चतुर्दशमलविस्तारविकारैर्वर्जितम्, ते च मलाः—नहरोमजन्तुअट्टिकणकुंड-पूयहदिरमसत्त्वम्माणि । फलफुल्लबीयमूलाछण्ण मला चउदस भवन्ति 11 a छायालीसहिँ षोडश उद्गमदोषाः, षोडश उत्पादनदोषाः, दश एषणादोषाः, सयोजनदोषाः, इंगालदोष, धर्मदोषाः, प्रमाणदोषश्चेति षट्चत्वारिंश-दोषाः. 13 b संजमजत्तामेत्तु सयमयात्रार्थमेव.

सुकुलु लुकुलु सउवीरभुक्खिउ  
पाणिपत्ति सइं मइं भुंजेवउ

णवकोडीविसुधु सुपरिक्खिउ ।  
चरियाचरणु जगहु दरिसेवउ । 15

यत्ता—जइ हउं अच्छमि अज्जु केम वि ण करमि भोयणु ॥  
तो जिह ष णर भग्गीं तिह भज्जिहइ तवोवणु ॥ १ ॥

## 2

हेला—आहारें वओ तिणा तवो तिणां जियक्खो ।  
अक्खाणं जए समो होइ तेण मोक्खो ॥ १ ॥

इय हियइ घेत्तूण	जोयं पमोत्तूण ।	
सिद्धत्थणामाउ	तम्हा वणंताउ ।	
विहरेइ परमेट्टि	जुयंमेत्ति गयदिट्टि ।	5
जीवे <sup>३</sup> ण दुस्सेइ	पेच्छंतु पउ देइ ।	
रमणीयथामेसु	णयरेसु गामेसु ।	
तं विणयणयभरिय	पणमंति णायरिय ।	
अब्भुवरसालीण	जोयंति <sup>१</sup> गामीण ।	
भइयाइ कंपंति	अण्णे पयंपंति ।	10
एसो महीराउ	एसो महादेउ ।	
धणकणयधण्णाइं	एएण दिण्णाइं ।	
मंडैलिय महियलइं	काऊण बहुइलइं ।	
एयस्स पडिवत्ति	उवयरह सहस ति ।	
इय भणिवि सहलइं	विविहाइं फलदलइं ।	15

१२ MBP सउवीरं भुक्खिउ; K सउवीरम्भक्खिउ. १३ M परिक्खिउ. १४ MBP भग्ग.

2. १ MBP तवें. २ MBP जुयमेत्तु. ३ MB जीव ण दुस्सेइ; PT जीवं ण दुस्सेइ; ४ MBP जोयंत. ५ MBP मंडलइं.

14 a सउवीरभुक्खिउ काञ्जिकेनाभ्युक्षितम्; b णवकोडीविसुधु मनोवाक्कायैः कृतकारितानुमतसंयुक्तैर्वि-  
शुद्धम्. 17 तवोवणु तपोवनं मुनिसंघातः.

2. 1 वओ वपुः; तिणा तेन; जियक्खो जितेन्द्रियः. २ समो कर्मक्षयः. 5 b जुयमेत्ति चतुर्हस्त-  
मात्रे. 10 a भइयाइ भयेन. 15 a सहलइं आर्द्राणि.

भमराहिरामाहं	णवकुसुमदामाहं ।	
कुंकुमहं चंदणहं	भायणहं भोयणहं ।	
सुरहियहं सीलयहं	भिगारवरजलहं ।	
सीसेण गहिऊण	पंथम्मि णिहिऊण ।	
णाहस्स ते दैति	बाला ण याणांति ।	20
अण्णे पसत्थाहं	देवंगवत्थाहं ।	
कडिसुत्तकेऊरु	मँणिहारु मंजीरु ।	
कंकणहं कुंडलहं	णं सूरमंडलहं ।	
गलियावलेवस्स	उवणँति देवस्स ।	
अण्णे कुलीणाउ	मज्झम्मि खीणाउ ।	25
लायण्णपुण्णाउ	ढोयंति कण्णाउ ।	
णररहतुरंगाहं	मायंगेहुंगाहं ।	
णिसियाहं पहरणहं	उववणहं पट्टणहं ।	
वाइत्तजुत्ताहं	खमरायवत्ताहं ।	
सँसिसंखपंडुरहं	खिधाहं मंदिरहं ।	30
अण्णे सम्पपंति	अण्णे पँभासंति ।	
भो मयणमयवाह	भो णाणजलवाह ।	
भो तरुणमिहिरीह	भो तवसिरीणाह ।	
भो देवदेवस	भो परम परमेस ।	
णिण्णगवसेण	णिर्यँदेहसँसेण ।	35
णालवसि किं भवँसि	णउ हससि णउ रमसि ।	
इय भाणिवि अज्जेहि	चहुयँम्मसज्जेहि ।	

६ MB करिसुत्तकेऊर; P कडिसुत्तकेऊर. ७ MBP मणिहार मंजीर. ८ Mp वररह°. ९ MBPT मायंग-  
हुंगाह and gloss in T समूहा. १० B omits णिसियाह पहरणहं; P adds it in the margin in  
second hand. ११ M adds after this: जोयेति किंकरह; P adds it in the margin in  
second hand. १२ MBP add after this. पणयाहं परियणहं. १३ MBP ससिखंड°. १४ MBP  
पहासंति. १५ MBPT °मिहराह. १६ B णिव°. १७ MBP भमसि. १८ M चहुयम्मसहेहि.

27 b °हुंगाह वृन्दानि समूहा. 32 मयण मयवाह कामसृगस्य व्याध. 28 a तरुणमिहि राह बालसूर्यसमान.  
37 b चहुयम्मसज्जेहि चाटुकारसज्जेः.

बोलाविओ जइ वि पडु चवइ णउ तइ वि ।  
परणिहियणियच्चिउ महिवीदु विहरंतु ।

घत्ता—हिंइइ जाम जिणिहु चरियामग्नि पइट्टु ॥ 40  
ता सेयंसणिवेण गयउरि सिविणैउं दिट्टु ॥ २ ॥

3

हेला—पल्लंकासिएण मउलंतणेत्तएणं ।  
रयणिविरामजामए संपसुत्तएणं ॥ १ ॥

ससिप्पहाणुजम्मिणा	भवाणुबद्धधम्मिणा ।	
णिसायरो दिवायरो	करीसरो सरोवरो ।	
महण्णघो सुरंधिओ	बलुद्धरो मयाहिओ ।	5
सबाहुजित्तसंगरो	रिऊण छेयणंकरो ।	
भेरक्खमेक्कंधरो	महाभडो धणुद्धरो ।	
घुलंतपुच्छपच्छलो	विसो विसाणउज्जलो ।	
णियच्छिओ सकंदरो	घरे विसंतु मंदरो ।	
इमो सुदंसणोहओ	पणट्टुदिट्टिमोहओ ।	10
णिसंतए पलोइओ	समाणसे विवेइओ ।	
पहायए महाउणो	समासिओ समाउणो ।	

घत्ता—तं णिसुणिवि कुरुणाहु सिविणयहँलु आहासइ ॥  
को वि जगुत्तमु देउ तुह मंदिरु आवेसइ ॥ ३ ॥

१९ BP सुइणउं.

3. १ M बलदुरो. २ MBP भरेक्खमेक्कंधरो. ३ MPK °पुछ. ४ MBP °फलु.

3. 3a ससिप्पहाणुजम्मिणा सोमप्रभस्य लघुभ्रात्रा. 5 b बलुद्धरो मदोत्कटः; मयाहिओ मृगाधिपः.  
7 a भेरक्खमेक्कंधरो भरक्षमैकस्कन्धप्रदेशः. 9 b विसंतु प्रविशन्. 10 a सुदंसणोहओ शोभनस्वप्न-  
संघातः. 12 a पहायए प्रभाते; महाउणो महायुषः. 13 कुरुणाहु सोमप्रभः.

## 4

हेला—ससिरविसुहडसीहसरसरहिगोगुणालो ।

जंगममंदरु व्व गइहसियपीलुलीलो ॥ १ ॥

णीलजडाकलावओमालिउ  
 परौवयकैरसंणिहबाहउ  
 तावण्णहिं दिणि णयरि पइट्टुउ  
 धावमाणजणपयसंमहे  
 को वि भणइ अवलोयहि एत्तहि  
 को वि भणइ सामिय दय किज्जउ  
 को वि भणइ मेरउ घरु आवहि  
 चंदु व रिक्खि रिक्खि वियरंतउ  
 घरिणिहि घरंपंगणु संप्राइउ  
 णिग्गयाउ मणि तोरुं वहतितउ  
 मज्जणु मज्जणहरि संजोइउ  
 णहाहि णाह लइ तणुउवयरणउं  
 बइसहि पट्टि सुसरससमग्गउ  
 बोलावियउ ण किं पि वि भासहि

सिहरि व जलहरमालइ कालिउ ।  
 णग्गोहु व ललंतपारोहुउ ।  
 णारीणरहिं णिरंजणु दिट्टुउ । 5  
 उट्टिउ कलयलु जयजयसहे ।  
 हउं पंजलियरु अरुळमि जेत्तहि ।  
 एक्कवार पञ्चत्तरु दिज्जउ ।  
 भिच्चभत्ति पहु किं ण विहावहि ।  
 जइवइ गेहि गेहि पइसंतउ । 10  
 ताउ व भाउ व देउ पलोइउ ।  
 एम चवंति ताउ पणवंतिउ ।  
 पोत्ति तेल्लु आसणु वि पढोइउ ।  
 चंगउ चेळिउ हेमाहरणउं ।  
 भुंजहि भोग्यणु तुज्जु जि जोग्गउ ।  
 भुर्वणुबंधु किं अप्पउ सोसहि । 15

यत्ता—पुरि कलयलु णिसुणेवि ससिभासें अहियारिउ ॥

कंचणदंडविहत्यु पुच्छिउ णियदउवारिउ ॥ ४ ॥

4. १ M °सरभूरुहगुणालओ; B सरसरेणे गुणालओ, P सरसरहिणा गुणालओ; T सरहि समुद्रः.  
 २ MBP °पीलुलीलोओ. ३ MBP अइरावय°. ४ M °करि°. ५ M घरपंगणु सपाइउ, B घरिणिघरपंगणु  
 संपाइउ; P घरु पंगणु सपाइउ. ६ MBP हरिसु. ७ M सरसु सुसमुग्गउ, B सरसु समुग्गउ. ८ M  
 सुयणबंधु.

4. 1 °सर हि° समुद्रः, °गो° वृषभः. 3 b का लि उ कलितः कल्लसः. 9 b विहा व हि चित्ते किं न रोच-  
 यस्सि. 15 a सु सरससमग्गउ षट्ठरसयुक्तं भोजन समग्रं च. 17 ससिभासें सोमप्रभेण. 19 कंचणदंड-  
 विहत्यु काञ्चनदण्डविशिष्टकरः.

5

हेला—ता पडिहारण भौणियं भवावहारो ।

जो लच्छीकडक्खविक्खेवे वि णिव्वियारो ॥ १ ॥

सिरेण णवेवि सुरायलि ठवियउ	जो तियसेसरेण सइं ण्हवियउ ।
जेण पयासियाइं मइगम्मइं	बहुभेयइं जणजीवणकम्मइं ।
भरहहु तुम्हहुं मेइणि दिण्णी	जेण णवल्लविसि पडिवण्णी । 5
सो आयउ तेलोक्कपियामहु	तं णिसुणिवि उट्टिउ सोमप्पहु ।
सहुं सेयंसकुमारो णिग्गउ	ताम पलंबपाणि णं दिग्गउ ।
संमुहुं <sup>५</sup> पंतु णिहालिउ जिणवरु	णं वसुहंगणाए पसरिउ करु ।
णहसरि रवि सररुहहु कयग्गहु	णं जगभवणखंभु भयंमयमहु ।
सामि सणेहेभरेण भरेप्पिणु	कर मउलेवि पणामु करेप्पिणु । 10
सोमप्पहेण पलद्धपसंसे	देवि पयाहिण तहु सेयंसे ।
मुहुं जोइयउ णेत्तसयवत्तहिं	हरिसंसुयओसाकणसित्तहिं ।

घत्ता—अइपसण्णमुहु होइ संभासणु पडिवज्जइ ॥

पुव्वभवंतरणेहु जणदिट्ठिए जाणिज्जइ ॥ ५ ॥

6

हेला—जिणमवलोइऊण कुंर्यरेण लोयसारो ।

सिरिमइवज्जजंघजम्मंतरावयारो ॥ १ ॥

पउद्धो असेसो	सवासो दैसेसो ।
मुणीणं पहाणं	बराहारदाणं ।

5. १ MBP भणियं. २ MBP °विकखेवणिव्वियारो. ३ MBP पसरियकर. ४ MBP भयमयवहु. ५ MB सणेहु भरेण. ६ BP अइपसण्ण. ७ P जणदिट्ठे.

6. १ MBP कुमरेण. २ M has before this line सोमराई छंद; BPGK have सोमराई; MBPK पबुद्धो. ३ MBP सदेसो.

5 3 a सुरायलि मेरौ. 4 a मइगम्मइं मतिगम्यानि लोकजीवनकर्माणि. 9 b भयमयमहु भयानां मदानां च विनाशकः. 12 हरिसंसुयओसाकणसित्तहिं हर्षाश्रुमिहिकाकणसिक्तैः.

6. 3 a पउद्धो प्रबुद्धः.

अवे जं विद्वणं	कयाणंतपुण्णं ।	5
समाह्वयसकं	मणे तं पि थकं ।	
पुणो तेण उक्तं	अहो हो णिरुत्तं ।	
इयं मज्झ णाणं	पणायं पुराणं ।	
असूई अराई	अमाई अणाई ।	
अमाणो अमोहो	अकोहो अलोहो ।	10
अछेओ अमेओ	अणेओ वि णेओ ।	
विमुक्कंधयारो	अणंगावहारो ।	
पविस्सो महंतो	अणंतो रुहंतो ।	
असंगो अभंगो	जहाजायलिंगो ।	
बुहाणं विहाओ	सुहाणं उवाओ ।	15
अहाणं विणासो	महाणं णिवासो ।	
अभावो असावो	इमो देवदेवो ।	
कयत्थो विवत्थो	समत्थो पसत्थो ।	
सया वंदणिज्जो	ईमो पुज्जणिज्जो ।	
परो मोक्खगामी	इमो मज्झ सामी ।	20
सुराहिंदपूओ	इमो पत्तभूओ ।	

असा—जगगुरु गुरुयणपुज्जु मोणव्वइ दिव्वासउ ॥

एहु आहारणिमित्तु भमेइ समग्गपयासउ ॥ ६ ॥

४ M अजाई अमाई and adds: अणाई; B reads अजाई अमाई. ५ P वि एओ and gloss एकः.  
६ M अताओ अमाओ and adds: अराओ असोओ; P अताओ अमाओ अराओ असाओ. ७ M सया.  
८ MBP पद्दु; ९ B भणइ.

8 a प णायं प्रज्ञातम्; पुराणं वृत्तान्तम्. 9 a असूई अस्तवकः; b अणाई आगो दोषस्तेन रहितः. 11 b अणेओ वि णेओ गुणपर्यायपेक्षयानेकोऽपि द्रव्यपर्यायपेक्षयैकः. 14 b जहाजायलिंगो नमः. 15 a विहाओ विधाता. 16 a अहाणं पापानाम्; b महाणं तेजसाम्. 17 a अभावो क्रोधादिभावरहितः; असाओ सातरहितः. 21 b पत्तभूओ पात्रभूतः. 22 दिव्वासउ शुद्धहृदयः दिशावल्लभारको वा. 28 एहु एषः; समग्गपयासउ स्वमार्गो यतिमार्गस्तस्य प्रकाशकः.

7

हेला—अंबरमणिपसंडिदाणाइं देंति लोया ।

ताइं इमे ण लेंति परिमुक्ककामभोया ॥ १ ॥

कण्ण लेइ जो कामे गंत्यउ  
 मंचयसेज्जायलईं कभवणाइं  
 गाइ देहि देहि त्ति पघोसइ  
 विचु लेइ जो इंदिय पुज्जइ  
 बंभण तावस सँवसणभग्गा  
 दुद्धरजौहोवत्थहिं दंडिय  
 दुक्कियभरपरियंहुणरीणा  
 जे लेंता ते विड विड देंता  
 पत्थरणाव ण पत्थरु तारइ  
 जासु अबंभारंभंपरिग्गाहु  
 धम्माभासु पाउ जो भावइ  
 कत्थइ मिच्छामग्नि पइट्टउ  
 सीलें सम्मत्तेण वि उज्झिउ  
 सहहाणु णव पंचहुं सत्तहुं  
 ईसीसि वि वउ जेण ण पालिउ  
 मज्झिमु देसचरित्तालंकिउ  
 दूरुंहुयसदप्पकंदप्पहिं  
 भूसिउ संचियसासयसोक्खहिं  
 उत्तमु पत्तु एउ पणविज्जइ

भूमि लेइ जो लोहें घंत्यउ ।  
 गेण्हइ जो माणइ रहरमणइं ।  
 जो घपण अप्पाणउं पोसइ । 6  
 मंसुं खाइ जो पुट्टि समज्जइ ।  
 पावयम्म संसारहु लग्गा ।  
 अप्पउ पँरु वि हणिवि पासंडिय ।  
 सुईमुहि णिवडंति अयाणा ।  
 णँउ जाणहुं के गुणहिं महंता । 10  
 अवस कुपत्तु भवण्णवि मारइ ।  
 सरइ कया वि ण इंदियणिग्गाहु ।  
 अण्णु वि अण्णाणिय कारावइ ।  
 कुच्छियपत्त रितीसहिं सिट्ठँउ ।  
 हवइ अवत्तु सइं जि मइं बुज्झिउ । 15  
 करइ पयाहुं जिणेसपवुत्तहुं ।  
 तं जँघण्णु मइं पत्तु णिहालिउ ।  
 सम्मइंसाणि कहिं मि ण संकिउ ।  
 णाणचरियसम्मत्तवियप्पहिं ।  
 सीलगुणहिं चउरासीलक्खहिं । 20  
 एयहु पाँसुयभोयणु दिज्जइ ।

7. १ MBP घत्थउ. २ MB गुत्थउ; P गत्थउ. ३ P पेय खाइ. ४ MBT अवसण°. ५ MBP परु हणेवि. ६ M °परियट्ठण°; P °परिवहुण° but gloss परिकर्षण°. ७ B णं जाणहु. ८ MBP किं. ९ MB °रंसु परिग्गाहु. १० MP दिट्टउ. ११ MBP जहण्ण. १२ MBP दूरुज्झिय. १३ MB फासुय.

7. 1 °प सं डि सुवर्णम्. 2 b घत्थउ प्रस्तः. 6 a पुज्जइ पोषयति. 7 a सव सण भग्गा स्वव्यसन-भग्गाः. 10 a वि डे त्या दि— विटाः ये ददति तेऽपि विटाः. 15 b अवत्तु अपाश्रम्; 16 a णव तत्त्वानि; पंचहुं पञ्चास्त्रिकायानासु; सत्तहुं सप्तानां पदार्थानाम्. b पयाहुं पदार्थानाम्. 19 a दूरुहुय° दूरोद्भूत°.



घत्ता—कुच्छियवत्ति कुभोउ दिण्णु अवत्तइ णासइ ॥

तेहिं पत्तहिं फलु तिविहु इय सुंदरु आहासइ ॥ ७ ॥

## 8

हेला—मज्झिमु मज्झिमेण अहमो अहमेण णेओ ।

उत्तमु उत्तमेण दाणेण डोइ भोओ ॥ १ ॥

णिल्लोहत्ते चापं भत्तिइ	खंमविण्णाणं सुद्धइ भत्तिइ ।
पहिं गुणेहिं जुत्तु दायारउ	मज्झण्णइ अवलोयइ दारउ ।
मउलियकरयलु अइअवमत्तउ	अच्छइ तिविहपत्तगयचित्तउ । 5
गुणवंतउ परलोयासत्तउ	सो पडिगाहइ प्रंगणपत्तउ ।
ठाहं भणिवि पणावियसिरु भासइ	उच्चठाणि गउरविइ णिवेसइ ।
करइ चाडु संतहुं धण्णउं जणु	चरणधुवणु अच्चणु पुणु पणमणु ।
मणवयतणुसुद्धिइ सुद्धासणु	देइ भरंतु जिणिंदहु सासणु ।
भेसहु सत्थु अभयदाणं सहुं	देइ सजीविउ च्लु मण्णिवि लहु । 10
बहिरंघलयहं मूयहं लल्लहं	काणकुंटमंटहं वाहिल्लहं ।
सन्वभूयहियकार्णं गण्णं	असणु वसणु दीणहं कारुण्णं ।
परमारा पाविट्टु सुपप्पिणु	णियदच्चाणुसारु सुर्यरेप्पिणु ।
देइ ण जो घरत्थु सो केहउ	घरयारउ चिडउल्लउ जेहउ ।
णिर्यंदिंभउं णियपोट्टु जि पोसइ	मुवउ ण जाणहुं कहिं जाएसइ । 15

घत्ता—माणसु जं णिद्धममउ तहिं उप्पेक्ख रइज्जइ ॥

दुत्थिन्नम्मि अणुकंप गुणवंतउ पणाविज्जइ ॥ ८ ॥

१४ MB कुच्छियपत्ति. १५ MBP तिहिं.

8. १ M णओ; BP णओ. २ MBP खमविण्णाणइ सद्धइ भत्तिइ. ३ MBP add after this सीलवतु जिणपेगणयारउ सारासारसहववियारउ. ४ MBP अवलोयइ दारउ. ५ T अपमत्तउ; ६ MP पंगणु पत्तउ; B पगणे पत्तउ. ७ MBP ठाहु. ८ MBP °कारणगण्णं. ९ MP सुर्यरेप्पिणु. १० MBP णिय-दिंभहं. ११ MBP णिद्धम्म. १२ MBPK दुत्थियम्मि.

22 कुच्छिये त्या दि—कुपात्रे दत्त कुभोग ददाति, अपात्रे दत्त नश्यति.

8. 1 णेओ ज्ञेय.. 6 a °अवमत्तउ निरहंकार.. 10 b भरंतु स्मरन्. 12 a लल्लहं अस्फुट-वाचाम्; b मटहं निरुद्यमिनः. 13 a गण्णं परिज्ञानेन. 14 a परमारा परमारकान्. 15 b घरयारउ गृहकारकः; चिडउल्लउ चटक..

## 9

हेला—इय कहिऊण तेण जुवराइणा समगं ।

दाययदेज्जपत्तववहारसारमगं ॥ १ ॥

सुइधोयदेवंगणिवसणणियत्थेण	जलभरियदलपिहियभिंमारहत्थेण ।	
परिदिण्णधाराजलुद्धूअतावेण	सद्धम्मसंद्धावसुप्पण्णभावेण ।	
भवेभरणसंभरियमुणिदानैयम्भेण	वरचरमदेहेण विच्छिण्णजम्भेण ।	5
पियजंपणालोयणुब्भयणेहेण	धरणीसतांसेण गुणरयणगेहेण ।	
इसिक्हियसुयसूइसंभिण्णसोत्तेण	चंदक्कारित्तच्चैचइयगंसेण ।	
कुरुजंगलार्वाणिवइलहुयभाएण	मउमहुरणाएण सेयंसराएण ।	
आओ गुरू सो जि णंतेण सीसेण	ठाभणित्त जिणु णमित्त पणवंतसीसेण ।	
ता सरइ हिययम्मि रइकुमुइणीजूरु	तूसविय जगणालिणु हयमलिणु रिसिसूरु 10	
असणेण तणु ताइ णिव्वहइ तवयरणु	तवयरणतावेण खंतीइ मलहरणु ।	
मलहरणि संभवइ केवलु महाणाणु	लयविरमु सुहुं परमु जइ जाइ णिव्वाणु ।	

ग्रत्ता—इय चित्तिवि सो थक्कु पत्तु तवेण विसुद्धउ ॥

चिरु सेयंसवसेण सेयंसं पर लद्धउ ॥ ९ ॥

## 10

हेला—एवं कस्स ठाइ भवणम्मि भुअणणाहो ।

केण भवंतरम्मि चिण्णो तवो अमोहो ॥ १ ॥

णवकलहोयकुंभगम्भाणिउं

कुरुणाहं पल्हत्थिय पाणिउं ।

9. १ BP °सच्भावसुपसण्ण°. २ MBP भवदिण्ण° ३ P °दानधम्भेण. ४ MBP °सुइसूइ°. ५ MB °गोत्तेण but gloss in M भूषितं गात्रम्. ६ MBP °वणिवणिव°. ७ M सुइपरमु.

9. 3 a °णियत्थेण नेपथ्येन. 5 a भवभरण° भवस्सरणम्. 6 b धरणीस° राजानः. 7 a °सुयसूइ° भुतज्ञानसूचि. 9 a णतेण नन्नेण. 10 a °जूरु सकोचकः. 11 a ताइ तथा तन्वा; b खतीइ मलहरणु क्षमया पापनाशो भवति. 12 b लयविरमु अविनश्चरम्. 14 सेयसवसेण पुण्यविशेषवशेन; सेयंसं श्रेयसा, पर भोक्षः.

10. 2 अमोहो सफलं परिपूर्णम्.

जसससियरधवलियकुरुवंसें	पंथ पक्खालिय सिरिसेयंसें ।	
वंदिउ पायतोउ सुहगारउ	जम्मजरामरणावइहारउ ।	5
इंदचंदणाइदपियारउ	उच्चासणि संणिहिउ भडारउ ।	
कुसधारहि उच्छलियनुसारेहिं	चंपयसिंदूरहिं मंदारहिं ।	
फुल्लहिं फुल्लधुयझंकाराह	अक्खयाहिं बहुगंधपयारहिं ।	
दीवैयचरुयहिं धूवंगारहिं	करमरमाहुलिंगमालूरहिं ।	
अंबयहलहिं जंबुजंबीरहिं	पण्णहिं पूयप्फलकप्पूरहिं ।	10
णेउरणिहचुयवम्महणियलउ	पुज्जिउ पूरमेट्टिहि पयजुयलउ ।	
पुणु पणिघाउ करेप्पिणु भावें	जो छंडिउ णं वम्महचावें ।	
जइवरतवसंदरिसियभंगें	जो पुणु धणुहि ण णिहिउ अणंगें ।	
सो उच्छुरसु णिवारियदोसहु	णं सैम्महुं णिउ सुतवहुयासहु ।	
जुवरायं घडेण करि ढोइउ	वारवार जिणणाहें जोइउ ।	15

घत्ता—देहालइ मणकुंडे रसु पिजंतउ भाणियउ ॥

मयणसरासणसारु झार्णजलणि णं हुणियउ ॥ १० ॥

## II

हेला—ता दुंदुहिरवेण भरियं दिसावसाणं ।

भणियं सुरवेरेहिं भो साहु साहु दाणं ॥ १ ॥

पंचवण्णमाणिक्कविस्मिटी

घरंप्रंगणि वसुहार वरिट्टी ।

णं दीसइ सस्मिरविंबिबच्छिहि

कंठभट्ट कंठिय णहलच्छिहि ।

10. १ P पाय. २ M reads after this line. चदणकुकुमेहिं घणसारहिं, पयसंमलियइं तेहिं कुमारहिं, B also reads चदणकुकुमेहिं घणसारहिं, पयसमलियइं तेहिं कुमारहिं; P reads चदणकुकुमेण घणसारहिं, चंपयसिंदूरहिं मंदारहिं, फुल्लहिं फुल्लधुवझंकारहिं, पय समलहियइं तेहिं कुमारहिं. ३ MBT फुल्लधुव<sup>०</sup>; P फुल्लधुव<sup>०</sup>. ४ MBP अक्खणहिं. ५ P चरुवहिं दीवय<sup>०</sup>. ६ MP छंडिउ ण वम्महु; B छंडिउ णं वम्महु. ७ MB संमुहं. P समुहु. ७ P ज्ञाणजले but gloss ध्यानामौ.

11. १ M भाणिय. २ MBP घरपगणि.

5 a पाय तोउ पादजलम्. 7 a कुसधारहिं जलधाराभिः. 8 a फुल्लधुय भ्रमराः. 10 b पण्णहिं पत्रैः. 12 a <sup>०</sup>णिहं व्याजेन. 12 b जो रसः. 13 a जइवरेत्यादि—यतिवरतपमा सदक्षितो भङ्गो यस्य तेन, 14 b सम्महुं णिउ उपशमं नीतः.

मोहैबद्धणवपेम्महिरी विव  
रयणसमुज्जलवरगयपंति व  
सेयंसहु धणएण णिउंजिय  
पूरियसंवच्छरउववासै  
तहु दिवसहु अत्थेण समायउ  
घरु जायवि भरहे अहिणंदिउ  
पइं मुपवि को गुरु संमाणइ  
पइं मुपवि को चितहुं सकइ  
पइं मुपवि दिसिपसरियजसैयरु  
जय सेयंसदेव पभणंतहिं

सग्गसरोयहु णालसिरी विव । 5  
दाणमहातरुहलसंपत्ति व ।  
एक्कहिं उडुमाला इव पुंजिय ।  
अक्खयदाणु भाणिउं परमेसै ।  
अक्खयतइय णाउं संजायउ ।  
पढंमु दाणतित्थंकरु वंदिउ । 10  
पत्तविसेसदाणविहि जाणइ ।  
परमपउ कहु मंदिरि थक्कइ ।  
अण्णु कवणु कुरुकुलणहदिणयरु ।  
संथुउ सुरणरवरसामंतहिं ।

घत्ता—महियालि धम्मरहासु एयइं तोसियसक्कइं ॥ 15  
जिणसेयंसकयाइं वर्यदाणइं वरचक्कइं ॥ ११ ॥

12

हेला—धम्ममहारहो विलंबियदयावडाओ ।

एयहिं बिहिं मि वहइ णिहयंगयारिराओ ॥ १ ॥

एम भणेप्पिणु गउ भरहेसरु  
तिहिं णाणिहिं सुद्धं परिणामं  
अड्ढाइज्जहिं दीवहिं जं जं  
उज्जुयवंकहिययमुणियत्थउ  
पंचवीसवयमायउ भावइ

एत्तहि महि विहरंतु जिणेसरु ।  
अचलच्चित्तु मणपज्जवणामं ।  
माणसु चितइ जाणइ तं तं । 5  
देउ पराइउ णाणु चउत्थउ ।  
तिहिं गुत्तिहिं अप्पाणउं गोवइ ।

३ MBPT मोहणिद्धं. ४ M adds after this line:—अहिय पक्ख तिण्ण सविसेसं । किंचूणे दिण कहिय जिणेसं । भोगणवित्ती लहीय तमणसं । दाणतित्थु घोसिउ देवीसं. ५ MBP पढमं. ६ MBP पत्ताविसेसु. ७ MB °जयसरु. ८ MBP तवदाणइं.

12. १ M माणस; BP माणसु.

11. 5 a मो हे त्या दि—मोहेन बद्धा नवप्रेमणि सति स्वपतौ हीरिव लजेव. 9 a अत्थेण समायउ अन्वर्थकम्; b णाउं नाम. 15 धम्मरहासु धर्मरथस्य.

12. 1 विलंबियदयावडाओ अवलम्बदयापताकः. 2 णिहयंगयारिराओ निहताज्ञारिराजः. 7 a पंचवीसेत्यादि—एकैकस्य हि व्रतस्य स्थैर्यार्थं पञ्च पञ्च भावनाः पञ्चविंशतिव्रतमातरः.

इरियादाणु किं पि णिकखेवणु  
रोसु लोहु भउ हासु पणासइ  
मिउ जोग्गउ अणुणायउ गेण्हइ  
णारीकहदंसणसंसग्गहु  
भुंजइ कर्हि मि सुणिव्वियडिल्लउ

करइ कर्हि मि कयसुकयालोयणु ।  
संगं विवज्जइ सुत्तु जि भासइ ।  
भात्ति पाणि संतोसु जि मण्णइ । 10  
करइ णिवित्ति पुव्वरइरंगहु ।  
बंभचेरु थिरु धरइ गुणिल्लउ ।

घत्ता—इंदियखलहं मिलंतु परमजोइ मेलौवइ ॥

खुब्भंतउ मणडिंभु रिसि णाणं खेलौवइ ॥ १२ ॥

## 13

हेला—हो हे चित्तडिंभ मा रमसु णारिरुवे ।

भमिऊणं दड सि पडिहीसि मोहकूवे ॥ १ ॥

जीयांजीयवत्थुभेयालइ  
संजमवायवुड्डुजमैसिहिसिहु  
दिहिखमग्गणजोयकयसंगहु  
दंसण णाण चरिय तव वीरिय  
तेहिं भडारउ अणुदिणु वड्डइ  
अर्णसण वुंसिसंख ओमोयरु  
इय बाहिरतर्हु चरइ सुदारुणु  
वेज्जावच्चि विणइ सज्झायइ  
अब्भंतरतवि अण्णउ जोर्यइ

करणपोसणान्थि विरसालइ ।  
णिद्धंघंसु णित्तामसु णिप्पिहु ।  
वीसदुसंखपरीसहभरसहु । 5  
आयार वि जे पंच समीरिय ।  
हियर्यहु तिण्णि वि सल्लइं कड्डइ ।  
रसपरिचाउ कालजोयायरु ।  
अंतरंगसुद्धिहि सो कारणु ।  
तणुविसग्गि पच्छित्तणिओयइ । 10  
धम्मग्गणु चउविहु णिज्झायइ ।

२ MBP सग. ३ B भेदावइ. ४ BP खेलावइ.

13. १ MBB भमिऊण. २ MBP जीवाजीव°. ३ MBP °जमसिर्हि सदुं. ४ P णिद्धवत्सु; T णिद्धंघंसु and gloss निष्परिग्रह°. ५ P हियर्यहि. ६ P अणसणु. ७ MBP विसिसंख ओमोयरु. ८ MP तव. ९ MBP जोवइ.

9 b सुत्तु जि भा सइ आगममेवान्तर्जन्येन परामृशति. 10 a मि उ मित परिमितम्; अणुणायउ अनुज्ञातम्. 12 a सु णि व्विय डि ल्ल उ सुष्ठु निर्विकृताहारम्. 13 मेलवइ ध्याने मेलयति.

13. 3 a °भेयालइ °भेदाधये, b करण° पञ्चकुलमिन्द्रियाणि च, विरसालइ कुलपक्षे विशिष्टो रसो विरसः, नारीपक्षे विरामविरसता. 4 a संजमेत्यादि-संयमवातेन वृद्धा वृद्धिं नीता यमशिखिशिखा व्रतामि-ज्वाला येन; b णिद्धघसु निष्परीषह°. 8 b कालजोयायरु त्रिकालयोगादरः. 10 b तणुविसग्गि कार्यात्सर्वै.

आणाविचउ णामणिग्गंथउ  
अवरु विवायविचउ वित्थारइ

पुणु अवांयविचयं पि महत्थउ ।  
थिरु संठाणविचउ अवहारइ ।

यत्ता—इय विहरंतु धरमि सिद्धिवरंगणरत्तउ ॥  
वरिससहासें णाहु पुरिमतालु संपत्तउ ॥ १५ ॥

14

हेला—तां दिट्ठं लवंगलवलीलयाहरालं ।  
अलियालं पियालमालूरसायसालं ॥ १ ॥

वणु विडंगणेवत्थहि छइयउ	पियेमाणुसु व सरसकंटइयउ ।	
णिच्चांसोयउ कंचणवंतउ	बंधुपुत्तजीवेहि महंतउ ।	
रेहइ कुलु व समुण्णइपत्तउ	रक्खसपुरु व पलासणित्तउ ।	5
सुरभवणु व रंभाइ पसाहिउ	उज्जाउ व सुयसत्थहि सोहिउ ।	
सुइवयणु व चंगउ णिच्चप्फलु	संगामु व वणवियसियउप्पलु ।	
णयणु व अंजणेण सोहिल्लउ	थणजुयलु व चंदणिण पियल्लउ ।	
रमंणिणिडालु व तिलयालंकिउ	बहुवाहु व करवंदहि संकिउ ।	
तालें तूरु व सज्जे गेउ व	महे सोहर णिवइणिकेउ व ।	10

१० B अवायविरयं.

14. १ B तो. २ M विडगणे कत्थहि, B विणंगणेवच्छहि. ३ MBP °माणुसु. ४ P सरसु. ५ MB णिच्चांसोय. ५ P समुण्णय°. ६ MBP सुयसत्थे. ७ MP रमणिणिलाहु. ८ P महे.

12 a आ णा वि च उ आजाया द्वादशाज्ञायागमस्य विचयस्तदर्थानां चेतसि स्वरूपपरिभावनम्, णामणिग्गंथउ शब्दोच्चारणरहितम्, b अ वा य वि च य मिथ्यादर्शनज्ञानचार्ित्रेभ्यः कथं जीवस्यापायः स्यादिति चिन्तनमपायविचयः; महत्थउ संवरनिर्जैरालक्षणमहाप्रयोजनप्रसाधकम्. 13 a वि वा य वि च उ कर्मविपाकपरिचिन्तनम्; b सं ठा ण-वि च उ लोकसंस्थानपरिचिन्तनम्. 14 धरमि धराप्रे.

14. 2 अ लियालं भ्रमरयुक्तम्. 3 a वि डं गणे वत्थ हि वनपक्षे, विडङ्गवृक्षा एव नेपथ्यं आभरणानि तैः; प्रियमनुष्यपक्षे, विटानां कामुकानामङ्गनेपथ्यैराभरणैर्नखादिव्रणैर्वा. 6 b सु य स त्थ हि शुकसमुहैराकर्णित-शालैश्च, अथवा, श्रुतानि शास्त्राणि यैश्चात्रैस्तैः. 7 b वणवियसियउप्पलु जले विकासितं पद्म, अन्यत्र व्रणे विकासितमूर्ध्वमुच्छासितं पलं मांस यत्र. 9 b बहुवाहु सहस्रबाहुः; करवंदे हस्तवृन्देन करवंदीवृक्षैर्वा; सं कि उ संकीर्णं सेवितम्. 10 a सज्जे सर्जरसवृक्षेण षड्जेन च; b महे बलात्काररणेन.

गायवेह्लिरुद्धउ पायालु व  
अवसहु व करेवंदे लुक्कउ  
महिमाणिणिमुंहुं व महुलित्तउ

रत्तयंददाविरउ वियालु व ।  
असि व सुणीरें णेय विमुक्कउ ।  
सरयणभमियभुयंगहिं भुत्तउ ।

घत्ता—कुसुमामोयमिसेण जं संमुहंउं पर्वच्चइ ॥

णाणापक्खिसरेहिं पट्टुहि थोत्तु णं सुच्चइ ॥ १४ ॥

15

## 15

हेला—तहिं णंदणवणम्मि णग्गोहरुक्खमूले ।

आसीणो सिलायले णिम्मले विसाले ॥ १ ॥

णवकणियारकुसुमरयवण्णउ  
णत्थि सोक्खु संसारि विसिट्ठउ  
णेट्टु अजिण्णणासु णउ चंगउ  
कामु देहघट्टेणु रीणत्तणु  
तं सिवसारु किं पि भाविज्जइ  
सोवंगाहु वीरिउ सुहुमत्तणु  
अर्ग्हयलहुयउ अच्चाबाहउ  
एम सामि संभावियमग्गउ  
तहिं दहपयाडिहिं मुक्कउ जावहिं  
लग्गउ सुक्कणाणि पहिलारइ  
इसिणा संठिएण सविहत्तउ

सुंयरइ पट्टु पलियंकाणिसण्णउ ।  
सोक्खायारु दुक्खु महं दिट्ठउ ।  
आहरणे भारिज्जइ अंगउ । 5  
गेयमिसेण र्हयइ मूढउ जणु ।  
जेण ण जीउ गग्गि उप्पज्जइ ।  
सहुं समत्ते णाणु सदंसणु ।  
झायइ वसुविहु सिद्धगुणोहउ ।  
अप्पमत्ति गुणठाणि व लग्गउ । 10  
खणि अउच्चु आरुढउ तावहिं ।  
भेयवंति ससुए सवियारइ ।  
अणियैट्ठिहि छत्तीस जि जित्तउ ।

१. MBP कइवंदहिं. १० MBP °मुह इव. ११ M समुहउ. १२ B परच्चइ.

15. १ MP सुमरइ. २ M णट्टु व जिण्ण°. B णट्टु अजिण्ण°. ३ MBP °चट्टण°. ४ MBP रुवइ.  
५ P सोवग्गहु. ६ MBP अगुरुग्ग°. ७ MP अणियट्ठिहि.

13 b °भुयंगहिं सपैविंटेथ.

15. 4 b सोक्खायारु सौख्याकारम्. 2 a णट्टु अजिण्णणासु नाख्यं अजीर्णस्य नाशकम्. 7 a सिवसारु सौख्यसारम्. 9 b वसुविहु सिद्धगुणो हउ अष्टविधः सिद्धगुणसमूहः—अवगाहः, वीर्यम्, सूक्ष्मत्वम्, समत्वम्, ज्ञानम्, दर्शनम्, अगुरुलघुत्वम्, अच्चाबाधः इति. 10 a संभावियमग्गउ सम्यक्परिभाषितमोक्षप्राप्त्युपायः. 11 a दहपयाडिहिं अनन्तानुबन्धितुष्कादिदशप्रकृतिभिः. 12 b भेयवंति वितर्कविचारलक्षणभेदयुक्ते; ससुए श्रुतज्ञानबलेन.

सुहुमसंपरायउ पावेष्पिणु  
पुणु जीयउ उवसंतकसायउ  
खीणकसायवेरिउ पडिवणुणउं  
तं सवियकु एकु सँवियारउ

तेण जि झाणें लोहु हणेष्पिणु ।  
कययहलेण जलु व मुणिरायउ । 15  
बीयउ सुकझाणु अवइणुणउं ।  
सोलहपयइरयकखयगारउ ।

घत्ता—इय तेसट्टिपर्इहिं पहयहिं णाणसरूवउ ॥

परमप्पयहु सहाउ अमणु आणिदिउ हूवउ ॥ १५ ॥

16

हेला—ता दिट्ठं जिणेण तिज्जं पि एक्खंधं ।

तिमिरुज्जोयवज्जियं गयणमभियरंधं<sup>१</sup> ॥ १ ॥

कमसाहणपडिखलणविहीणं  
सुहुमइं दुरंतरियइं दव्वइं  
भाणु व भूरिकिरणसंताणं  
तहिं अवसरि जिणणाहभएण व  
असहंताइं व गव्वु अणिंदहं  
सुरतरु साहाकर णच्चंति व  
सँजायहिं दसदिसिवहपूरहिं  
कण्णवडिउ णउ काइं धि सुम्मइ  
णिग्गाय सीहणाय गयविग्गाय  
संखझुणीहिं णाय संखोहिय

एक्कं भावाभावपमाणं ।  
पेक्खइ जाणइ सहसा सव्वइं ।  
सोहइ केवलि केवलणणं । 5  
वीस तिण्णि अवरइं भणियइं णव ।  
आसणाइं कंपियइं सुरिंदहं ।  
कुसुमइं संतोसेण मुयंति व ।  
कप्पि कप्पि घंटाटंकारहिं ।  
जोइसवासहिं विणिहयदुम्मइ । 10  
वंतरेहिं पडुपडह समाहय ।  
अणं अण्ण देव संबोहिय ।

८ P छंडिवि. ९ MBP °चडिउ. १० MBP अवियारउ.

16. १ MBP तिज्जं. २ MBP add after this: फग्गणमासि किण्हण्यारसि, उत्तराढरिक्खि ( P उत्तरसादि रिक्खि ) जइ जाणसि । तहिं उप्पणु णाणु परमेट्टिदि, लोयालोयपयासणसेट्टिदि. ३ MBP जाणइ पेच्छइ. ४ MB जिणु णाह°. ५ MB गव्व. ६ MB सइ जायहिं. P सहजायहिं. ७ P विणिहिय° but gloss विनिहत°. ८ MBP वितरेहिं. ९ MBP अण्णहिं.

15 b कययहलेण कतकफलेन; मुणिरायउ मुनिराजः. 17 a सविमकु सवितर्कम्; b सोलहेत्यादि-बौद्धशप्रकृतिरजःक्षयकारकम्.

16. 2 अभियरंध अलोकाकाशम्. 5 a कमेति—कमेणार्थसाधनानीन्द्रियाणि तैः प्रतिस्खलन् युग-पदशेषार्थपरिच्छिन्तिप्रतिबन्धस्तेन विहीनेन रहितेन. 6 b वीसेत्यादि—द्वात्रिंशदिन्द्रा इत्यर्थः.



घत्ता—उगाइ णाणससंकि अंभियगुणेहिं पंडंजिउ ॥

बहुविहत्तरवेण जगसमुहु णं गज्जिउ ॥ १६ ॥

## 17

हेला—ता सक्केण चिंतिओ पीणियालिर्विदो ।

संपत्तो जवेण परावओ गइंदो ॥ १ ॥

हारणीहारसुरसरितुसारण्पहो  
गलियकरड्यैलमयकसणगंडत्थलो  
कामचिंतागई कामरूवी चलो  
कंडकंदलपपसम्मि परिवट्टुलो  
तंबताल्लुमुहो चारुतुच्छोयरो  
दीहयरमेहणो दीहउट्टासओ  
सर्वणपल्लवपवणपडियमहुलिहउलो  
चाववंसो महारावदुंदुहिसरो  
मुक्कसिक्कारकणासित्तसुरमेलओ  
धित्तिसिदूरधूलीरयालोहिओ  
लक्खजोयणमहाबद्धिमावड्ढिओ  
इत्ति कल्लाणपयई समुद्धाइओ

अद्वयंदाहविहुमविहाणिहणहो ।  
अमरगिरिसिहरसंकासकुंभत्थलो ।  
पवलपडिक्खबलदलणदुम्महबलो । 6  
दसणजुयलेहिं णयणेहिं महुपिंगलो ।  
दीहैरकरंगुलि सैरो व्व वरपुक्खरो ।  
दीहयरवालही दीहणीसासओ ।  
चलणपडिक्खलणखलखलियपयसंखलो ।  
घुलियघंटाण्णणी तसियदिसकुंजरो ॥10  
लक्खणसुव्वंजणणिरंजणगुणालओ ।  
कक्खणक्खत्तगेज्जावलीसोहिओ ।  
दंसियारेहिं वीरेहिं परियड्ढिओ ।  
जत्थ संकंदणो तत्थ संप्राइओ ।

घत्ता—मयणिज्जरण झरंतु चमरहंसकुलसुंदर ॥

15

णं मायंगमिसेण आयउ वीयउ मंदरु ॥ १७ ॥

१० MBP अमय°.

17. १ P अद्दइदाह°. २ P °करडयलकसण°. ३ MB दीहरंगुलि°. ४ MBP सरो व्व वरपुक्खरो, ५ MBPT °मेट्टुणो. ६ M सवणपवणाहयपडियमहुलिहउलो; B सवणपडिक्खणहयपडिय°; P सवणपवणाहय-पाडियमहु°. ७ B °पडिचलणखलिय°. ८ M °दिसिकुजरो. ९ MP सुव्वंजण°; B °सुव्वंजण°. १० MBP सपाइओ.

13 अ मिय गु णे हिं अमृतगुणैरत्तन्तगुणैश्च.

17. 2 ज वे ण वे गे ण. 3 b वि हु म वि हा णि ह ण हो विद्रुमप्रभामदशनखः. 4 b °सं का स° सट्टशः. 7 b °पुक्ख र° शुण्डामम्. 8 a °मेहणो शिश्रम्, °उट्टा स ओ ओछाअथाश्विबुकम्; b °वा ल ही पुच्छम्. 14 b संकंदणो इन्द्र, संप्राइओ संप्राप्तः.

18

हेला—बत्तीसवरवयणसोहिद्धओ रसंतो ।

वयणविवरविणिग्यर्यद्वृद्धंतवतो ॥ १ ॥

दंति दंति सह सरि सरि पोमिणि	पोमिणि जा तूसावियगोमिणि ।	
पोमिणियहि पोमिणियहि पोमइं	तीस दोणिण छडैयणरवरम्मइं ।	
णलिणि णलिणि तेत्तियइं जि पत्तइं	णावइ जिणवरलच्छिहि णेत्तइं ।	5
पत्ति पत्ति एकैक्की अच्छर	णच्चइ हावभावरसकोच्छैर ।	
तं पेच्छिवि सुच्छायउ सैंधुरु	सच्छरु सामरु चडिउ पुरंदरु ।	
इंदंसमिदसमाण जि साहिय	तायतिस किर मंति पुरोहिय ।	
परिसदेव देवेसकुमारा	आदरक्ख पुणु असिवरधारा ।	
चलिय अणीयतियससेणा इव	लोयवाल दुग्गंतणिवा इव ।	10
खिम्भिससुर पाडहिय पियारा	अभिओय वि चलियि कम्मारा ।	
अवर पइण्णय पउर पयाणिह	रिक्ख मियंक्क सूर तारा गह ।	
जक्ख रक्ख गंधव्व महोरय	किणर किंपुरिसा वि पिसायय ।	
भूयगरुडदीवुवहिकुमार वि	अग्गिवाउताडियणियकुमार वि ।	
दिक्कुमार तवणीयकुमार वि	णायकुमार वि असुरकुमार वि ।	15
आइय आँवेतहं सविमाणहुं	पेलावेह्लि जाय णहि जाणहुं ।	

घत्ता—संदाणियउ गण्हिं हरिणकलंकु अजुत्तउ ॥

ससि करडयलणिहहु मयंविक्खल्ले लित्तउ ॥ १८ ॥

18. १ MBP °द्वृद्धंतो. २ MB छडयणरवि रम्मइं. ३ MB °कुच्छर. ४ MBP सिंधुरु. ५ MB इंदमहिंदसमाण. ६ MBP °सेणावइ. ७ MB णिवावइ; P णिवासइं. ८ MBP मयंक. ९ MB आवतै; P आवैतहुं and gloss आगच्छताम्. १० K °विक्खल्ले.

18. 3 b °गो मि णि लक्ष्मीः. 4 b छ ड य ण° षट्चरणो भ्रमरः. 6 b °को च्छर दक्षा मनोज्ञा वा. 8 a इंदसम इन्द्रसमाः; इंदसमाण इन्द्रस्य सामानिकाः. 9 b आदरक्ख आत्मरक्षकाः. 14 a उवहि-कुमारा; उवहिकुमाराः. b षणिय कुमारा भेषकुमाराः. 16 a पेलावेह्लि ठेलाठेळीति देशी; b जाणहुं यानानाम्. 17 संदाणियउ संघटितः.

## 19

हेला—अञ्जि वि सो सुहाइ तेणं यं कालियंगो ।

जिणजत्ताहलेण मलिणो वि को ण तुंगो ॥ १ ॥

को वि भणइ मृंगु किं पहि ढोयहि  
को वि भणइ भो हत्थि म चोयहि  
को वि भणइ लइ अच्छमि लमाउ  
को वि भणइ किं मूसउ चालहि  
को वि भणइ मा वाहहि विसहरु  
को वि भणइ भो सणियउ चल्लहि  
को वि भणइ संकडि किं पइसहि  
को वि भणइ आवेहि समिच्छउ  
मोरे मोरु सवक्खीइए  
को वि भणइ वेसाणरदुरे  
को वि भणइ मारुय तुहुं ओसरु  
को वि भणइ वोळउ आहंडलु  
पच्छइ पुणु अम्हइं जाएसहुं

वग्घु महारउ पंतु ण जोयहि ।  
जाँउ सीहु किं मुँहुं अवलोयहि ।  
हंसहु पक्खु बलहें भग्गउ । 5  
महु मज्जारु पंतु ण णिहालहि ।  
पेक्खहि किं ण णउलु कररुहकरु ।  
चल्लउ रिंछु गवणण म पेल्लहि ।  
सरहें महुं सारंगु म तासहि ।  
पूसउ पूसणण सहुं गच्छउ । 10  
जाउ उलूवउ समउ उलूए ।  
वहउ वरुणु किं एत्थ वियारें ।  
मा भंजहि मेरउ जलहरतरु ।  
पविरलतियसु होउ णहमंडलु ।  
जिणचरणारविंदु पणवेसहुं । 15

घत्ता—काइ वि देविइ लइयउ करि णीलुप्पलु दीसइ ॥

मउहुग्गयहिं सिएहिं ससिमणिकिरणहिं विहसइ ॥ १९ ॥

## 20

हेला—अवरा सुरविलासिणी गहियकुसुममाला ।

णं वालासूरुविणी मयणसन्थसाला ॥ १ ॥

19. १ MBP अज्ज. २ MB तेणेय. ३ MBP मिगु. ४ MB जासु. ५ M महुं. ६ MBP मज्जारु. ७ MBP चरउ. ८ MB समुच्छउ, P सइमुच्छउ, but gloss सम्यगिच्छामि. ९ MBP अम्हइं पुणु.

20. १ MBP सूरुविणी.

19. 1 तेणं यं तेन गजमदेनेव. 8 a मणियउ शनैः, 16 a समिच्छउ अहं सम्यगिच्छामि. 17 सिएहिं सितैः शुद्धैः.

अवरुकरा वि सवदण दीसइ	णं मलयैरिणियंबवणासइ ।	
सुहइ अवर वि कुकुमर्पिडे	पुवदिसा इव सिसुमसंडे ।	
अवर सदप्यण णं सुणिवरमइ	अवर मयरविधे सरि णं रइ ।	5
अक्खयघारिणि णं मोकखहु सहि	थणदुहडी णं सुहघणणिहि महि ।	
अवर सुसेयदेह णं सुरसरि	अवर सहंसमोर णं गिरिदरि ।	
मलविरहिय अवर वि विज्जा इव	अवर सुरहि पप्फुल्लियजाइ व ।	
णक्खइ अवर सरसु भावालउ	गायइ अवर कूडतार्णालउ ।	
वायइ अवर तंतिवज्जंतरु	वण्णइ अवर परमतित्थंकरु ।	10
एमसण्णपसाहियवयणहि	अच्छरकोडिहिं चलमृंगणयणहिं ।	
सुहम्माहिउ सत्तावीसहि	ईसाणु वि परिमिउ चउवीसहि ।	
एम देव संबल्लिय जावहिं	घणपं समवसरणु किउ तावहिं ।	
इंदाणइ तं णिमिउं जेहउ	मइं जडेण किं सीसइ तेहउ ।	15

घत्ता—बारहजोयणरुंदु हरिणिले तलु बद्धउ ॥

परिवट्टलउ विसुधु धूलीसालउ णंद्धउ ॥ २० ॥

## 21

हेला—मोत्तियदसणहसियसुरणाहचावलीलो ।

रयणपंसुंविणिमिओ सहइ धूलिसालो ॥ १ ॥

सुयपिच्छेच्छवि काहिं मि विरेहइ	कथइ अंजणपुंजु व सुहइ ।	
कथइ लोहिउं संझाराउ व	कथइ पंडुरु कुंदणिहाउ व ।	
अभंतारि जगईउ पहाणउ	ताउ हौति सोलह सोवाणउ ।	5

२ MB मलयगिरि°. ३ MBPT add after this line: का वि गहियकथूरय ( P कथूरिय ) वरइ, सामलंगि णावइ घणघणतइ ( B घणघणतइ ); T also notes a p: घणघणतइ ति पाठे निविडमेघपंकिः. ४ MP °तालालउ. ५ MBP °मिग°. ६ B णट्टउ.

21. १ P पसुणिमिओ. २ MB °पिंछ; P पुंछ. ३ MBP सुहइ.

20. 3 b °वणासइ वनस्पतिः. 6 b थणदुहडी उन्नतस्तनी. 8 b सुरहि सुरभिः. 9 b कूड-  
ताणालउ कूडतानालयं विस्मृतनानमाना. 10 a वजं तरु वायविशेषः. 14 a इंदाणइ इन्द्रादेशेन.  
16 °सालउ प्राकारः; णद्धउ बेष्टितः.

21. 2 रयणपसुं रत्नधूलिः. 4 b °णिहाउ निवहः. 5 a जगईउ उपर्युपरि वीणि पीठानि.

चउगोउरभूसियउ तिसालउ  
 माणखंम ताहुप्परि संगय  
 चउहुं मि दिसहिं चयारि समुण्णय  
 अरुहणाहपडिमापरिवारिय  
 पुणु वावीउ सकमल ससलिलउ  
 तीररयणकरमंजरिदित्तउ  
 कुवलयधारिउ णं णिवसत्तिउ  
 दिसधाइयपाणियकल्लोलउ

पसरियणाणामणियरज्जालउ ।  
 संधय संचामर सघंटा णं गय ।  
 वंसणमेत्तेण जि हयजयमय ।  
 फणिदाणवमाणवजयकारिय ।  
 खगमाणियउ णाहं खगमहिलउ । 10  
 चउपइयापरियम्मविचित्तउ ।  
 भमियरहंगउ णं रहजुंसिउ ।  
 पुणु खाइयउ रमियससमालउ ।

घत्ता—पहसियसररुहपहिं वाउगर्ग्यतिर्गिच्छिहिं ॥

परिहउ णाहं णियंति देवागमणु चलच्छिहिं ॥ २१ ॥ 15

## 22

हेला—जहिं महिउ रईय हंसीहिं मत्तहंसो ।

सुरवहुकैरिणियाहिं सुरहत्थिहत्थफंसो ॥ १ ॥

पुणरवि अंतरि णवदुमवेल्लिउ  
 पंसिहिं रत्तउ णं वरवेसउ  
 कंठइयउ णं पिययममिलियउ  
 णं वरकइवायउ कोमलियउ  
 वित्थरियउ अहिणवरसस्मारउ  
 का वि वेल्लि तहिं वेढइ कंचणु  
 लम्मी का वि ललंति असोयइ

कुसुमालउ णं वम्महभल्लिउ ।  
 फलणमियउ णं सुहिपरिहासउ ।  
 णच्चंति व मारुयसंचलियउ । 5  
 लाडालावहुं पासिउ ललियउ ।  
 णं कामुयमईउ सवियारउ ।  
 सयल वि णारि समीहइ कंचणु ।  
 जिहै त्थ तिह किर रमइ असोयइ ।

४ B मवय. ५ MBK मवमर. ६ MBP वावियउ. ७ M णिवजुसिउ; B °जोसिउ. ८ M तिग्गिच्छिहिं; B तिग्गिच्छिहिं; P तिग्गिच्छिहिं.

22. १ P जाहिं and gloss यामु खानिकासु. २ M हंसहिं. ३ MBP करणियाहिं. ४ MBP पत्तहिं. ५ MB जिह तिह किर; P जिह तिय तिह and gloss यथा स्त्री; K त्थ but corrects it to तिय.

10 a वावीउ वाप्यः. 11 a °क रमंजरि° किरणसंघातः; b चउपइया° चतुष्पथिकाः चतुर्दिकसोपानाः.  
 12 b °रहंगउ रथाङ्गचक्रं चक्रवाकश्च; रहजुसिउ रथयुक्तयः. 15 णियंति पठन्ति.

22. 1 महिउ वाच्छित्तः; रईए रतिनिमित्तम्. 6 b लाडालावहुं लाटालंकारालापमिव. 7 b सवियारउ विचारसहिताः, अन्यत्र सविकाराः. 8 a कंचणु चम्पकवृक्षः.

लम्बी का वि गंपि पुण्णायहु  
क वि मायंदहुं संगु ण खंचेइ

होई गियंबिणि फुहु पुण्णायहु । 10  
णिवरोहिणिहि लील णं संचंइ ।

घत्ता—किसलयदलफलगोहूँ चलचंचुइ णिलूरइ ॥  
अंमरु कीरवेसेण तेत्थु को वि रइ पूरइ ॥ २२ ॥

23

हेला—चितियवेसधारिणो जणियकामभावा ।  
वेह्ठीर्वणलयाहरे जहिं रमंति देवा ॥ १ ॥

पुणु हिरण्णरइयउ रुइरिउउ  
अप्पवेसु णं कामकडक्खहु  
जहिं चउगोउराइं संविहियइं  
अट्टोत्तरसयसंखासइं  
तहिं वितर पडिहारसमत्था  
पुणु पंणिहिउ उहयम्मि विसालउ  
ताउ तिभूमिउ णवरसजुत्तउ  
बहुवज्जउ वइरायरभूमिउ

णं जिणेण वयपरियरु बद्धउ ।  
गुरुपायारु पारु णं दुक्खहु ।  
जहिं बहुमंगलदच्चइं णिहियइं । 5  
णव वि णिहाणइं हयदालिइं ।  
भीयरकुलिसगयासणिहत्था ।  
चउदिसु दो दो णाडयसालउ ।  
णाइं पउत्तिउ सुँकइपउत्तउ ।  
आयउ णं ओलगाहुं सामिउ । 10

घत्ता—उहयदिसहिं कुहिणीहि पुणु वि कया वि ण णिट्ठिय ॥  
दो दो दिण्णसंधूव तहिं धूवहँड परिट्ठिय ॥ २३ ॥

६ MBP अवसें गारि होइ पुण्णायहु. ७ BP खचइ. ८ M अंचइ. ९ B गोच्छु. १० MBP अमरु वि कीरमिसेण.

23. १ B बलीवण°. २ MT पणिही; BP पणहीउ. ३ MBP सुकहाणिउत्तउ. ४ MB सुधूय; P सुधूवा. ५ M धूवहडण.

10 b पुण्णायहु पुरुषप्रधानस्य. 11 a मायंदहुं बलीपक्षे आम्राणाम्, अन्यत्र मा लक्ष्मीश्वन्द्रश्च तयोः; b णिव° चन्द्रः.

23. 4a अप्पवेसु अप्रवेशः. 8 a पणिहिउ मार्गाः. 9 a तिभूमिउ त्रिभूमियुक्ता. 10 a बहु-वज्जउ बहुवादित्रा बहुहीरकाश्च. 11 कुहिणीहि मार्गस्य. 12 दिण्णसंधूव दत्तखधूपाः; धूवहड धूपवटाः.

## 24

हेला—दीसइ गयणमंडले णीलधूमरेहा ।

णं जिणकम्मकालिया भमइ मुक्कदेहा ॥ १ ॥

पुणु खयरामररामारमियइं	चउणंदणवणाइं परिभमियइं ।	
वणि वणि विमलइं सरिसरपुलिणइं	कीलागिरिवरकेलीभवणइं ।	
चउगोउरतिसालपरियरियउ	पीदु तिमेल्लु मणिविप्फुरियउ ।	5
तित्थु असोउ असोयवणंतरि	तहु पडिमाउ चयारि दियंतरि ।	
कोहमोहमयमाणे चत्तउ	सीहासणल्लत्तसयजुत्तउ ।	
अत्थि अणेयदेवकयपुज्जउ	णिहयणिरंगउ णिरु णिरवज्जउ ।	
संज्ञा इव सुवण्णरुइरौइय	पुणरवि चउदुवारवणवेइय ।	
पुणु दिसि दिसि दह धय सुरसंथुय	थिय गयणयल्लग्ग पवणुधुय ।	10
मालावत्थमोरकमलंकहिं	हंसगरुडहरिविसकरिचक्कहिं ।	
भूसियपडिधयपहपइरिक्कहु	अट्टोत्तरु सउ सउ पक्केक्कहु ।	

घत्ता—अण्णहु कासु तिलोए सोहइ णहि घोळंतउ ॥

कुसुममालघउ तासु कुसुमाउहु जे जित्तउ ॥ २४ ॥

## 25

हेला—कहइ व किंकिणीण घोसेण घोळमाणो ।

अहमिह सकुसुमो वि ण हु होमि कुसुमबाणो ॥ १ ॥

देव देव मा महु रुसेज्जसु	कुसुमकरालहु करुण करेज्जसु ।	
जो अंबरु तवचराणि ण भावइ	अंबरचिंधु तासु धुंनु आवइ ।	
जो सिहिवेसु कया वि ण इच्छइ	सिहिजयंति सो अवसें पेच्छइ ।	5
जो णिवकमलहि होइ परंमुहु	तहु कमलद्धउ णिच्छउ संमुहु ।	

24. १ MBPT add after this: ककेलीचपयसत्तयलहिं, संछण्णहिं साहारहिं सरलहिं.  
२ MBP राइउ. ३ MBP वेइउ.

25. १ MBP धुउ.

24. 12 a °पइरिक्कहु प्रचुरतरस्य.

25. 5 a सि हि वे सु क्रिया: वेप: b °जयंति पताका ध्वज:.

परमहंसु जो सञ्चउ बुज्झइ  
अमयबंभपउ जो जइ दावइ  
सीहिणेव जेण वणु सेविउ  
जेण ण पसु घाइउ णियमग्गइ  
पसुवइ सो जि भडारउ बुज्झइ  
जो पंचिदिय दुइम पीलइ  
मोहचक्कु जें चण्णिवि चूरिउ

हंसु तासु धइ केम विरुज्झइ ।  
विणयासुयवडाय सो पावइ ।  
सीहर्विधु तहु केण ण भाविउ ।  
तासु जि वसइ थार विधग्गइ । 10  
दुइ अवरु किं अप्पउ सुञ्चइ ।  
पीलु तासु धयवइ अणुसीलइ ।  
चक्के विधु तहु होइ अवारिउ ।

घत्ता—पुणु पायारु विचित्तु चउदुवार सुपसत्थ ॥

\* जहिं थिय णायकुमार मरगयदंडविहत्थ ॥ २५ ॥ 15

26

हेला—पुणु वि धूवदोहडी पवरणट्टसाला ।

अहिणवभावसांहिया ताउ णवरसाला ॥ १ ॥

उव्वसिरंभतिलोत्तिमणामउ  
पुणु दीहर दहविह कण्यहुम  
पुणु वेइय कल्लहोयहु केरी  
पुणु वि दुवारइं पुण्णपवित्तइं  
णिञ्चु जि कीलियसुरसंघायहं  
पुणु पओलि लंघिवि पासायहं  
पुणु थूहइं मंणितोरणमालउ  
मणुउत्तरगिरि व्व गरुयारउ  
सुद्धायासफलिहसंपत्तिउ

जहिं णडंति नियसाहिवरामउ ।  
दरिसियभोयसार णिरु णिरुवम ।  
पियकंता इव सुहइं जणेरी । 5  
दरिसावियवहुमंगलवत्तइं ।  
भंभाभेरिपडहणिणायहं ।  
पंति हारतारासुच्छायहं ।  
पुणु फलिहमउ सालु सुविसालउ ।  
कण्यदेवपरिरक्खियदारउ । 10  
तहु आलग्गिवि सोलह भित्तिउं ।

१ MBP चक्कविधु.

26. १ MBP पुणरवि धूयदोउटी. २ B कलहोइय. ३ MBP णिण्णायहं. ४ MBP पुणु तोरण°, ५ B तित्तिउ.

8 b वि ण या सुय° गरुडः. 11 a प सु वइ पशुपति. शिवः.

26. 1 °दो ह डी द्विघटी घटद्वयम्. 2 अ हि ण वे त्या दि उव्वसिरंभादीनां विशेषणम्. 5 a क ल हो य हु सुवर्णस्य. 9 a थू ह इ रत्नस्तूपाः;



घत्ता—तहिं मंडवमज्जत्थु वेरुलिपहिं समारिउ ॥

सोलहपयठवणेहिं पीदु सुहाइ णिरारिउ ॥ २६ ॥

## 27

हेला—वउदिसु तासु उवरि कल्लाणदविणसार।

जक्खसुराहिवा वि सिरिधम्मचक्रधारा ॥ १ ॥

अवरु हिरण्णवीदु तहु उप्परि  
रयणरहंगदुरयगोधारिहिं  
उरयवइरिदामयतणुअंकहिं  
पुणु वि तितीरु रइउ पीदुल्लउ  
जंबुण्णयचामीयरघडियउ  
मरगयणिम्मियदीहरदिब्बहिं  
छत्तइं तिण्णि ताइं उद्धरियइं  
दिसिगयपंडुरकरणिउरुंबइं  
भामंडलु मंडलु णं भाणुहि  
णिण्णासियदुइंसणदिट्ठिहि  
रत्तपुष्पयवपहिं पसाहिउ  
कंकेलि वं पल्लवसोहिल्लउ  
जिह जिह देवहुं दुंदुहि वज्जइ

अट्टकेउपरिमिउ पयडियसिरि ।  
आरणालसुंसिचयहरिणारिहिं ।  
सोहइ ध्ययहिं गलियमलपंकहिं । 5  
तासुप्परि सीहासंणु भल्लउ ।  
विमंलु समंतभइमणिजडियउ ।  
सहइ लट्ठि कक्रेयणपव्वहिं ।  
णिम्मलाइं णं णाहहु चरियइं ।  
तिण्णि वि णावइ ससहरविंबइं । 10  
अइ आसंकेप्पिणु सँब्भाणुहि ।  
सरणु पइट्टउ णं परमेट्ठिहि ।  
जिर्णमणणिग्गउ राउ व राइँउ ।  
मत्तंसकुंतमिहुणु रमियल्लउ ।  
तिह तिह धम्मजलहि णं गज्जइ । 16

घत्ता—णं आघोसइ एम दुंदुहिसरेण गहीरें ॥

पणंवहो तिहुयणणाहु जें मुच्चहु संसारें ॥ २७ ॥

27. १ M सुसिवय°; B ससिवय°. २ MPK सिंहामणु, B सिंघामणु. ३ MB विमल°. ४ B सुब्भाणुहि. ५ B रत्तउ पुष्प°. ६ MBP जिणमय°. ७ MBPT राहिउ. ८ MBP वि. ९ M मत्तसुकुंभ-सिहु णरमियल्लउ, BP मत्तसकोत्तमिहुणु रमियल्लउ, but T सकुंता पक्षिणः. १० MBP पणवइ.

12 समा रिउ वृत्तम्.

27. 4 a रयणरहंग रत्तचक्रवाक°, दुरय हस्ती, गोधारि वृषभः; b आरणाल कमलम्; सुसिचय क्षीभावक्षम्. 5 a उरयवइरि गड्डः, दामय पुष्पमाला. 6 a तितीरुउपर्युपरि त्रिभिस्तीरैर्युक्तम्. 7 a जंबुण्णय° सुवर्णम्; चामीयर° रूप्यम्. 8 b कक्रेयण° स्फटिकः. 11 b अइ आसंकेप्पिणु अतीव भीत्वा; सँब्भाणु हि स्वर्भानो राहोः. 13 b राइउ शोभितः. 14 b मत्तसकुंतमिहुणु दृष्टपक्षियुग्मम्; रमियल्लउ कीडनयुक्तम्.

28

हेला—अविरलकुंदकुडयमंदारपंकयाइं ।

सभसलसिंदुवारकणियारचंपयाइं ॥ १ ॥

जिह जिह कुसुमाइं पडियाइं गयणहु  
णवपसंडिदंडइं सपसंसइं  
जक्खकरयलंदोलणचवलइं  
खीरतरंगा इव परिघुलियाइं  
पंडुरीइं चमरइं सुविसिट्टइं  
जं जं सुंदरु लच्छिहि अंगउ  
तं तं मयन्नु वि तहिं जि समप्पिउ  
णियपहणित्तेइयचंदक्कउ  
पंचसहसधणुउच्छयमाणइं

तिह तिह करसरणिवडियमयणहु ।  
पीयपासपडियाइं व हंसइं ।  
गुणठाणारुहणाइं व विमलइं । 5  
किच्चिहि अंगा इव संचलियाइं ।  
दयवेल्लिहि फुल्लाइं व दिट्टइं ।  
जं जं काइं मि तिहुयणि चंगउ ।  
को वण्णइ जंमारिवियप्पिउ ।  
समवसरणु गयणंगणि थक्कउ । 10  
सेणियं कहियउ जिणवरणाणइ ।

घत्ता—जो उच्छेहु जिणिंदे धणुपंचसपहिं धल्लिउ ॥

तरुघरगिरिखंभाहं सो बारहगुणु बोह्लिउ ॥ २८ ॥

29

हेला—अट्टगुणेण रंदभावेण संपउत्तो ।

गाढं थूहवेइयाणं पि सो पउत्तो ॥ १ ॥

इय धणपं वेउव्विउ जायहिं  
जय जिण कण्ह रुइ चउराणण

इंदे णविउ भडारउ तावहिं ।  
जय तवरामारइसुहमाणण ।

28. १ MB पियपायसपडियाइः P पियपासपडियाइ. २ MBP तिहुयणि काइं मि. ३ MBP उण्णय-  
माणे. ४ MP add after this: विससहससोवाणविहाणे, चउदिसविरइयहत्यपमाणे; B adds these after  
सेणिय कहियउ जिणवरणाणइ. ५ MBP सेणिय कहिउ जिणे वरणणे. ६ MBP पचल्लिउ; T पक्कल्लिउ. ७ P  
पब्बुल्लिउ and gloss कथितम्.

29. MBPK अट्टउणेण.

28. 4 a °प सं डि दंड इं कनकमया दण्डाः; b पीय पा स प डि याइं पीतपाशबन्धकनकदण्डैः पाशरूप  
उपमा धृता. 12. उ च्छेहु उत्सेधः; घ ल्लिउ कथितः.

जय कैलिकलिलसलिलसोसणरवि	जय वासरईसरदेहच्छवि ।	5
जय मणतिमिरभारहरणस्रम	तियसकिरीडमउडमंडियकम ।	
जय तिसल्लेवेल्लीवणाछिंदण	जय कंदप्पदप्पभडमइण ।	
कोहकलंकपंकओसारण	जय माणइरिसिहरमुसुमूरण ।	
मायापावभावाँविहावण	जय लोहंधयोरउड्ढावण ।	
तिट्टारयणीयरिसंधारण	जय सत्तभयकुरंगवियारण ।	10
जय मयमयगलकुलकंठीरव	जय जगबंधव महियतिगारव ।	
पढमपुरिस परमप्पय संकर	जय जय रिसहणाह तित्थंकर ।	

घत्ता—वंदिउ एम जिणंदु तहिं वत्तीसहि सक्हिं ॥

उज्जाइयभरहेहिं पुष्पयंतणामंकहिं ॥ २९ ॥

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरहए

महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे रिसहकेवलणाणुप्पत्ती णाम

णवमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ९ ॥

॥ संधि ॥ ९ ॥

२ M कयकलिल°. ३ M तिसल्लवल्ली°. ४ MBP °भावउड्ढावण ५ MBP °धयारविहावण, P लोहंधयारि विहावण.

29. 5 a °क लिल° पापम्. b वासरईसरदेहच्छवि वामरो दिवसस्तस्य ईश्वर आदित्यः तस्य देहस्य छविः कान्तिराकारो वा यस्य. G b °किरीड° त्रिशेखरो मुकुटविशेष. 10 a तिट्टारयणीयरि° तृष्णैव रजनीचरी राक्षसी. 11 b महियं मथितानि.

X

परमेसरु थुणित पुरंदरेण परिसोसियर्भवभयमरणरिण ॥  
परमप्पय महु पसीय सुसम सँमवसरणपरियरिय जिण ॥ १ ॥ भ्रुवकं ॥

I

दुवई—तुह पहु वंदणाइ संतोसु ण णिंदइ वहसि मच्छरं ।  
तह वि हु कुणसि अणयपणयाण दुहोहसुहोहवित्थरं ॥ १ ॥

तुलंवीयराउ णिध्दयकम्मु	तुहुं हिंसावज्जिउ परमधम्मु ।	5
जो पइं सेवइ तहु होइ सोक्खु	तुह पडिकूलहु संभवइ दुक्खु ।	
तुहुं पुणु दोहिं मि मज्झत्थभाउ	इहं एहउ फुडु वन्थुहि सहाउ ।	
णिंदिज्जइ रवि पित्ताहिण्हिं	चंदु वि वापण णिवाइएहिं ।	
ने द्रोणिण वि एयहं किं करंति	ससहावें णहयलि संचरंति ।	
ससिसूरोसहिसंघाउ जेम	भुवणोवयारि जिण तुहुं मि तेम ।	10
सरु दूसिवि जो ण वि पियइ वारि	तहु तण्हइ णिवडइ तिन्वमारि ।	
जो रसइ तासु तिसणासु सज्जु	सरवरहु ण एण णे तेण कज्जु ।	
जिह गरुलमंतु गरलंतयारि	तिह तुहुं वि सहावें दुरियहारि ।	
अणवरउ भडारा भूयसामि	जहिं तुम्हइं तहिं हउं समउ जामि ।	

All Mss. have, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

जगं रम्मं हम्म दीवओ चंदविंबं  
धरत्ती पल्लको दो वि हत्था सुवत्था ।  
पिया णिदा णिच्च कव्वकीला विणोओ  
अदीणत्त वित्तं ईसरो पुप्फयंतो ॥

MBP however read धरित्ती for धरत्ती; सुवत्थं for सुवत्था; and पुप्फदंतो for पुप्फयंतो in the above stanza.

1. १ MB ° भवभयणरिण; P ° भवभयमरणरिण, २ MBP सिद्ध महामइ पढम जिण. ३ MBP पडिकूलहं. ४ M इय. ५ K णं तेण. ६ B तुम्हइं तहिं हउं सउं; P तुम्हइं हउ समउ.

1. 4 अणयपणयाण अनतानां प्रणतानां च. 8 a पि ता हि ए हिं पिताधिकैर्नरेः; b णि वा इ ए हिं पीडितैः 12 a रसइ आस्वादयति, तिसणासु नृषानाशः; सज्जु सयः. 13 a गरुलमंतु गरुडमन्त्रः; गरलंतयारि विषविनाशकः.

जहिं तुहुं तहिं ससुरु समगु सगु जइं हउं तहिं मणिमउ भूमिमर्गु । 15

घत्ता—तहिं समवसरणि जंभारिकण परंहियबुद्धिइ संचरइ ॥

सुरंणरतिरियहं सुहयरणु धम्मु भडारउ वज्जरइ ॥ १ ॥

## 2

दुवई—आरुढो वरम्मि उवयहिसिरम्मि व हरिणलंछणो ।

सोहइ सेंधुरारिवीढम्मि विहट्टियकम्मबंधणो ॥ १ ॥

अइसय दह जाया सह भवेण  
जगि अरहंतहु पर संभवन्ति  
गव्वइसैयाइं चयारि जाम  
ण वि कासु वि प्राणिहि प्राणणासु  
णउं भुत्ति पवत्तइ णोवसगु  
छाहियइ विवज्जिउ होइ गनु  
परिमिय थिय कररुह णील केस  
भास वि णीसेससरीरिगम्म  
महु तित्त कइय परिणइवसेहिं

चउवीस अवर णाणुब्भवेण ।  
जं ते एहा गणहर कंहति ।  
वित्थरइ सुंहिकखु सुखेउ ताम । 5  
गयणयालि गमणु परमेसरासु ।  
सरलक्खिपक्खणपक्खेउ भग्गु ।  
अवरु वि असेसुं विज्जेसरत्तु ।  
भूपसु मेत्ति पिसुण वि ण वेस ।  
णाणाभासहिं परिणवइ रम्म । 10  
जलधारा इव बहुदुमरसेहिं ।

७ MBP जहिं तुहुं तहिं, K जइं हउं but corrects it to जहिं; ८ MBP add after this the following line: पइं दिष्णाणइ वइसरमि जामि, तुह वयणामइ तित्ति ण जामि. ९ MBPT परिचितिय-सुवियारसहु and gloss in T भव्यैश्चिन्तितार्थानां शोभनो विचारः सभाया यस्य, शोभन विचारं वा सहते क्षमते यः स तथोक्तः, but P records in the margin a p परहियबुद्धिइ संचरइ. १० MBP चउ-देवणिकायहिं ( M °णिकायह ) परियरिउ आसणसठिउ दिट्ठु पहु, but P records in the margin a p सुरणरतिरियहं सुहयरणु धम्मु भडारउ वज्जरइ.

2. १ MBP मिधुरारि°. २ B णाणुब्भवेण. ३ I, °चयारि सयाइं. ४ MBP सुभिकखु. ५ MBP पाणिहि पाण°. ६ M ण व. ७ MBP °विकखेउ. ८ MBPT अरोस°. ९ P °दुमसरेहिं.

15 a ससुरु देवैः सह.

2. 1 उवयहिं सिरम्मि उदयाडिश्चिखरे. २ सेंधुरारि वीढम्मि सिंहासने; विहट्टिय° विघटित°. 4 a पर केवलसु. 5 a गव्वइ° गव्युतिः. 7 b °पक्ख पक्खेउ पक्ष्मणां प्रक्षेपो मेषोन्मेषगतः. 8 b असेसु विज्जेसरत्तु परिपूर्ण विधेश्वरत्वं केवलज्ञानभागमो वा. 9 b वेस द्वेष्याः. 10 a °गम्म परिच्छेया.

छक्कालसमयसंपयकरेण  
आदंसणसंगिह महि विहाइ  
मंथरु सीयलु तरुसुरहिसारु  
अणुर्गच्छंतउ णाहहु सुहाइ

महिरुह णमंति गुरुफलभरेण ।  
परमाणंदे जणु जगि ण माइ ।  
जोयणपमाणु वियरइ समीरु ।  
पच्छइ लग्गउ णेहेण णाइ । 16

घप्ता—जलं दुधु बहंति तरंगिणित सामित विहरइ जहिं जि जहिं ॥  
तणं कंटय कीडय पत्थर वि धूलि पणासइ तहिं जि तहिं ॥ २ ॥

## 3

दुवई—सुरवइपेसणेण परिमलमिलियालिकुलेहिं माणियं ।  
थणियकुमार मेह वरिसंति महावरगंधवाणियं ॥ १ ॥

पहुअग्गइ पच्छइ परिघुलंति  
जहिं देइ पाउ तहिं कणयकमलु  
एवहु पहुत्तणु भुवणि कासु  
अट्टारह वरधण्णइ धरंति  
णहु सादिसु वि रेहइ मलविहीणु  
दिन्वह्णुणि पचियंभइ पवित्ति  
जक्खिदसिरारुडउ विचिचु  
लीलासंबोहियभव्वच्चकु  
जो पेच्छइ दूरहु माणु खंभु  
णिज्जियबहुसमयणयंतराई

णलिणाइं सत्त सत्त जि चलंति ।  
सुरसंजोइउ संवरइ विमलु ।  
हरि कुलिसधारि घरि जोसु दासु ।  
रोमंचिय णच्चइ णं धरिसि । 5  
धोयंबणीलमाणिकभाणु ।  
वसुसमसहासधणुमाणुलेत्ति ।  
रयणाररत्तु रविबिबु दित्तु ।  
तहु अग्गइ गच्छइ धम्मचकु । 10  
तहु विहडइ माणकसायडंभु ।  
परवाइ वि देति ण उत्तराई ।

१० MBP अणुगच्छंतहु. ११ MB जलु दुधु. १२ B तिण.

3. १ P वरिसत्त. २ MBP महारव°. ३ P सचलइ. ४ B एवहु° ५ MBP कासु. ६ MBP रयणारादंतुरदिव्वदित्तु. ७ MB °चक्खु. ८ MBP अग्गइ. ९ MB माणखंभु.

12 a छक्काल° षड्कृतवः. 14 a मंथरु मन्दः; तरुसुरहिसारु तरूणां सुरभिः सौरभं तेन सार उत्कृष्टः.  
15 a सुहाइ सुखायते.

3. 3 a परिघुलंति विलसन्ति. 6 a अट्टारहवरधण्णइ गोधूमशालियवसर्षपमाषमुद्गरयामाक-  
ककुतिलकोद्रवराजमाषाः । कानाशनालमथ वैणवमाढकी च शिम्बा कुलत्थचणकादि सुबीजधान्यम्. 7 a सदि सु  
दिशासहितम्; b °भाणु भाजनम्. 9 b रयणाररत्तु रत्नमयैररैः सहितं अत एव रक्तम्; 12 a णिज्जियबहु-  
समयणयंतराई निजितानि बहुसमयानामनेकमतानां नयान्तराणि युक्तिविशेषा यैः.

पंडिहाहय भईयइ थरहरंति      अविहंडिउ मोणव्वउ वहांति ।  
 अवियारु पहादुसियळणिंदु      दीसइ चउदिसहिं मुहारविंदु ।  
 बारहकोट्टेसु वि जे वसंति      ते ते मुहुं महु संमुहु भणंति ।      15

घत्ता—मउलियकरुंउ पणावियसिरउ सच्छंउ गव्वविमुक्कियउ ॥

परिवांडिइ कोट्टि णिविट्ठियंउ तहिं पयाउ हयदुक्कियउ ॥ ३ ॥

## 4

दुवई—गणहर कप्पवासिसुररमणिउ अज्जियसंघं गइरई ।

देविउ वणणिवासदेवाण वि भावणतरुणीसंतई ॥ १ ॥

पुणु दह कुमार वेंतरसुरिंद	पुणु जोइस कप्पामर णरिंद ।	
पुणु तिरिय विंयंडदाढाकराल	केसरि कुंजर सहूल कोल ।	
बैइसंति गणेसाइ व क्रमेण	जिणभत्तिवंत भूसिय समेण ।	5
णव णव पंचविहहिं रुढपहिं	सव्वहिं सविमाणारुढपहिं ।	
सीहासणु मेळ्ळिवि खइयभाउ	अहमिंदहिं थुंउ विद्धत्थराउ ।	
जसरवितोसियजगपंकपहिं	उग्घोसियकुलर्णांमंकपहिं ।	
मउडावलिचुंवियमाहियलेहिं	घोलंतकुसुममालाचलेहिं ।	
उवगीईगाहाखंधपहिं	उच्चारियललियथुईसपहिं ।	10
संथुउ सोहम्मीसाणपहिं	अवरेहिं मि तियसपहाणपहिं ।	

१० MBP पडिभा°; T परिहा° and gloss प्रतिभा. ११ B भइए. १२ MB अवियारपहा°, B अविहारपिया°. १३ MBP महु महु समुहु. १४ MBP °करउ. १५ BP सव्वउ. १६ MP परिवारिए. १७ MB णिविट्ठु.

4. १ MBPK °सधु. २ MBP फुरिय°. ३ M वइरंत. ४ MBP गणेसाइय. ५ M संथुउ. ६ P °णामंकिएहिं.

13 a पडिहाहय आसूत्रप्रतिपत्तिः प्रतिभा सा हता येषाम्, b अविहंडिउ परिपूर्णम्. 14 a अवियारु अविकारः. 17 परिवाडिइ परिपाटिकया क्रमेण, पयाउ प्रजाः.

4. 1 गइरई ज्योतिष्कस्त्री. 2 वणणिवास° व्यन्तरा देवाः; भावण° भवनवामिनो देवाः; संतई श्रेणी. 5 a गणेसाइ गणधरादयः. 6 a रुढएहिं प्रसिद्धैः. 7 a खइयभाउ क्षायिकभावो जिनेश्वरः. 10 a °खंधएहिं स्कन्धकवृत्तैः.

घसा—जय दुम्महवम्महणिम्महण दोसरोसपसुपाससिहि ॥

जय सयलविमलकेवलणिलय हरणकरणउद्धरणविहि ॥ ४ ॥

## 5

दुवई—जय कंकालसूलणरकंदलविसहरविलयविरहिया ।

जयै भगवंत संत सिव सकिव णिवंचियचरण परहिया ॥ १ ॥

जय सुकईकहियणीसेसणाम

वामाविमुक्क संसारवाम

जयपयडियधुयससैयंभुभाव

जय संकर संकर विहियसंति

जय रुह रउहृतवग्गामि

महपव महागुणगणजसाल

जय जय गणेस गणवइजणे

वेयंगवाइ जय कमलजोणि

सहिरणविट्ठिपडिवणगम्भ

जय परमाणंतचउकसोह

जय जणपुरिस पसुजणणासि

भीमंथण णियरिउवग्गभीम ।

जय तिउरहारि हर हीरधाम ।

जय जय सयंभु परिगणियभाव । 5

जय ससहर कुवलयदिणकंति ।

जय जय भवसामि भवोवसामि ।

महकाल पलयकालुग्गकाल ।

जय बंभ पसाहियबंभचेर ।

आइवराह उद्धरियखोणि । 10

जय दुणयणिहणण हिरणणगम्भ ।

भावंधयारहर दिवसणाह ।

रिसिसंससिहिंसाधम्मभासि ।

5. १ MBP वलय°. २ P सुकय°. ३ MBT हीरवाम and gloss in T धीरप्रसन्न, अथवा हीरो रत्नविशेषस्तद्वन्मनोज्ञ. ४ MBP °ससईभु°. ५ B परिगलिय°. ६ P °गणविसाल. ७ M पावधपारहर; BP पावंधयारहर. ८ M रिससंस अहिंसा°, BP रिसिसंस अहिंसा°.

12 °पसुपाससिहि पशुप्राशः पलालं तस्य शिखी अग्निः. 13 हरण करणउद्धरणविहि हरणं मिथ्या-दर्शनादेः; करणं सम्यग्दर्शनादीनाम्, उद्धरणं दुर्गतिकूपे पतनामुधृत्य स्वर्गापवर्गप्रापणं तेषां विधिर्विधानं यस्मात्.

5. 1 °कंदलं कपालम्; °विलयं विलयावनिता स्त्री. 3 b भीमंथण भयहारक. 4 a वामाविमुक्क स्त्रीविमुक्क; संसारवाम संसारप्रतिकूल; b तिउरहारि जातिजरामरणस्य मिथ्यादर्शनादेर्वा त्रिपुरस्य विनाशक; हीरधाम धैर्यस्य धाम. 5 b परिगणियभाव ज्ञातपदार्थ. 6 a संकर संकरः सुखंकरः. 7 a रउहृतवग्गामि उग्रतपसामप्रणामी, b भवोवसामि ससारोपशमकः. 9 b गणवइजणे वृषभसेनादीनां शिष्याणां जनक. 10 b वेयंगवाइ सिद्धान्तवादिन्. 12 a °अणंतचउकं अनन्तचतुष्टयम्, b भावंधयारं अज्ञानम्. 13 b रिसिसंस + अहिंसाधम्मभासि ऋषिभिः प्रशस्य अहिंसाधर्मस्य च प्रतिपादक.



जय माहव तिहुवणमाहवेस	महुसूयण दूसियमहुविलेस ।	
जय लोयणिओइय परमहंस	गोवद्धण केसव परमहंस ।	15
जगि सो केसउ जो रायवंतु	तुह णीरायहु कहिं केसवत्तु ।	
के सव ते सव जे पइं हसंति	जड पावपिंड रउरावि वसंति ।	
जय कासव का सवविहि तुमम्मि	णेरंतरु चित्ति णिरोहु जम्मि ।	

घत्ता—जय गयण हुयासण चंद्र रवि जीवय महि माहय सलिल ॥

अट्टंगमहेसर जय सयल पक्खालियकलिमलकलिल ॥ ५ ॥ 20

## 6

दुवई—जय जय सिद्ध बुद्ध सुद्धोयणि सुगय कुमग्गणासणा ।

जय वइकुंड विट्टु दामोयर हयपरवाइवासणा ॥ १ ॥

णामाइं पसिद्धइं जाइं जाइं	तुह देव अवंझइं ताइं ताइं ।	
इंइं चंइं उरयाहिवेण	तुह णामहु लक्खिउ छेउ केण ।	
मंइविहवविहीणाहिं आरिसेहिं	किं थुव्वसि तुहुं अम्हारिसेहिं ।	5
तौवेत्तहिं पउरजसालपहिं	कंसुइधम्माउहवाँलपहिं ।	
एकहिं खणि भरहहु कहिय वत्त	भुंजहि महि महिवइ एकैछत्त ।	
सयरायरवत्थुवियप्पजाणु	परमेट्टिहि अचलु अणंतु णाणु ।	
राणियहि पुत्तु पप्फुल्लवयणु	आउहसाँलहि वरचक्करयणु ।	
उप्पणु भडारा पुण्णवंतु	तुहुं जासु जणणु अरहंतु संतु ।	10
ता रायं अवरेहिं मि णरेहिं	पणाविउ जिणवरु सिरकयकरोहिं ।	

१ MBP चित्तणिरोहु. १० MBP जाव मन्नी.

6. १ MBP मइं विभव°. २ MBP ता एत्तहि. ३ P पवर°. ४ MB °वालएहिं, P °पालएहिं  
५ MBP एयत्त. ६ MBP °सालइ

14 b दूसिय महु विसेस मधु मयं शौद्रं दानवश्च 15 b गोवद्धण ज्ञानवर्धक 16 a सो केसउ जो राय-  
वंतु यः केशेषु रागवान् म केशव. b केसवत्तु केशवत्वम्. 17 a केसवेत्यादि— के शवा? ते शवा; ये त्वां  
हसन्ति. 18 a सव वि हि मृतकाचार. 19 जीवय यजमान. 20 अट्टंगमहेसर गगनाद्यष्टाभिस्तनूभिर्भुक्तो  
महेश्वर; सयल परमौदारिकगरीरयुक्त.

6. 3 b अवंझइं सफलानि. 4 b छेउ प्रान्त. 5 a आरिसेहिं अव्युत्पन्नैः. 8 a सयरायर-  
वत्थुवियप्प° सचराचरस्य सक्रियनिष्क्रियस्य चेतनाचेतनस्य च वस्तुनो विकल्पा भेदाः.

पुणु चिनिउ किं जोयमि रहंगु	किं तणयतौंई दरियारिभंगु ।	
मज्झन्थु सच्छु णिम्मुकसंगु	किं वंदमि मुणि सुद्धंतरंगु ।	
धम्मणे सुरत्तु कलत्तु पुत्तु	पहरणु वि होइ णिहलियसत्तु ।	
धम्मं संपज्जइ पुहविरज्जु	करणज्जु पहिल्लउं धम्मकज्जु ।	15
गंभीरणायणिम्महियवेरि	देवाविय लहु आणंदभेरि ।	

घत्ता—मायंगतुरंगहिं णरवरहिं रहधयचमरहिं परियरिउ ॥

वेयालियकयकलयलमुहलु भरहणराहिउ णीसरिउ ॥ ६ ॥

## 7

दुवई—पत्तो समवसरणमसुहहरणं खयकालवारणं ।

मयराणणविणित्तमुत्ताहलमालालुलियतोरणं ॥ १ ॥

हरिणाहिवात्मणास्मीणगत्तु	तिउणियससिसमसेयायवत्तु ।	
पउल्लोमीपियसेविज्जमाणु	चउसट्टिचमरविज्जिज्जमाणु ।	
जिणणाहु दिट्ठु भरहेसरेण	णं णेसरु णवपंकयसरेण ।	5
णं मत्तमऊरं वारिवाहु	णं वाइएण रससिद्धिलाहु ।	
णं सिद्धं संभावियउ मोक्खु	णं हंसं माणसु जणियसोक्खु ।	
कंपावियदिच्चक्काहिवेण	पारज्जु थुणहुं चक्काहिवेण ।	
जय भुवणभवणतिभिग्हरदीव	जय सुइसंबोहियभव्वजीव ।	
जय भासियपयाणेयभेय	जय णग्ग णिरंजण णिरुवमेय ।	10
सकयत्थइं कमकमलाइं ताइं	तुह तित्थु पसत्थु गयाइं जाइं ।	
णयणाइं ताइं दिट्ठो सि जेहिं	सां कंठु जेण गायउ सरेहिं ।	
ते धण्ण कण जे पइं सुणंति	ते कर जे तुहं पेसणु करंति ।	

७ MBP °तुंडु. ८ MP भरहु णराहिउ, B भरहणराहिउ.

7. १ MBP °सरण असुहहरण; K'T °सरणमसुहरसरण. २ B °विलित्त°. ३ BK °ललिय°.

४ M तुव.

12 b दरियारि° दत्ताः शत्रवः. 16 a °णाय° नादः. 18 वेयालिय° भट्टचारणादिकाः.

7. 1 असुहहरण असुभनाशकम्. 2 °विणित्त° विनिर्गतः. 3 b तिउणिय° त्रिगुणितः. 4 a पउ-लोमी° इन्द्राणी. 5 b णेसरु सूर्यः. 6 a वारिवाहु मेघः; b वाइएण रसायनकारकेण. 8 a दिच्चक्काहिउ लोकपालाः. 9 b सुइ° श्रुतिरागमः. 11 b तित्थु समवसरण निष्कमणादिस्थानं वा.

ते णाणवंत जे पइं मुणंति  
 तं कच्चु देव जं तुज्जु रइउ  
 तं मणु जं तुह पयपोमलीणु  
 तं सीसु जेण तुहुं पणविओ सि  
 तं मुहुं जं तुह संसुहुं थाइ  
 तेहोक्कंताय तुहुं मज्जु ताउ  
 णिट्ठवियदुंढकम्मट्ट सिट्ठ

ते सुकर सुयण जे पइं थुणंति ।  
 सा जीह जाइ तुह णांउं लइउ । 15  
 तं धणु जं तुह पूयाइ खीणु ।  
 ते जोइ जेहिं तुहुं झाइओ सि ।  
 विवरंसुहुं कुच्छियगुरुहुं जाइ ।  
 धण्णेहिं कहिं मि कह कह व णाउ ।  
 दुट्ठेवसग्गणिहणेकणिट्ठ । 20

घत्ता—पंचाणणकुंजरजलजलणविसविसहररुयपय्यजुयणिर्यला ॥

पइं संभरिण जि परमजिण उवसमंति कयकलह खंला ॥ ७ ॥

## 8

दुवई—जय वईसमणचमरवेरोयणअसुरामरपसंसिया ।

सुरगुरुसुकसवुहअंगारयगहणहयरणमंसिया ॥ १ ॥

चरणइं तेरहगइभाविराई  
 पयारह सिंगइं उण्णयाइं  
 सीसाइं पंच अह भणमि एक्कु  
 बारह चोईह देकारियाइं  
 रोमइं चउरासीलक्ख जासु

णयणाइं पंच पहदाविराई ।  
 उज्झयइं तिण्णि किर णिण्णयाइं ।  
 चउहुं मि परियरियउ तं जि थक्कु । 5  
 अंगेइं दह विउसवियारियाइं ।  
 दुग्गोवइकुल संजणिय तासु ।

५ MBP णामु. ६ MBP तइलोक°. ७ BPKT °कट्टकम्मट्ट. ८ MB °विसहरपय°; T रुय रोगाः.  
 ९ MBPK °णियल. १० MBPK खल.

8. १ MBP वइसवण°. २ MBP °वइरोयण°; K वैरोयण. ३ MB परियरिउ. ४ MPK चउदह.  
 ५ MBP अगाइं.

19 a °ताय रक्क; ताउ पिता. 20 a मिट्ट हे श्रेष्ठ. 21 °रुय° रोगाः.

8. 1 °चमरवेरोयण° चमरवैरोचनो असुरेन्द्रो. 3 a तेरहगइं पञ्चव्रतानि, पञ्च समितयस्तिष्ठो शुसयः; b णयणाइं पंच मतिश्रुतावधिमनपर्यायकेवलानि. 4 a एयारहसिंगइं सन्यक्त्वाद्येकादशगुणस्थानि शृङ्गाणि; b तिण्णि णिण्णयाइं मायामिथ्यानिदानानि शल्यानि, मिथ्यादर्शनज्ञानचारित्र्याणि वा क्षीणि निम्नानि, वृषभपक्षे, स्कन्धकुटीमस्तकानि निम्नानि. 5 a सीसाइं पंच साम्याधिकच्छेदोपस्थापनापरिहारविशुद्धिसूक्ष्मसांपराययथाख्यातानि पञ्च चारित्र्याणि, पञ्च महाव्रतानि वा; अहभणमि एक्कु अथवा एकं अहिंसाव्रतम्, सर्वसावययोगविदतोऽस्मीति सामायिकं वा. 6 a बारह द्वादश अङ्गानि; चोईह चउदश पूर्वाणि वा; देकारियाइं शब्दाः; 7 b दुग्गोवइ दुग्ग गोपतयः सर्वथैकान्तवादिनः.

जो कामधेणु सेविउ सुधामु  
दुद्धरवयभारधुरगु धरिवि  
णित्थरिवि पराइउ णाणतीरु  
जें लंघिउ भवदुर्प्पहु दुलंघु  
तहुं वसहहु कयुपणिर्वाउ भाउ

जें तोडिवि घल्लिउ मोहदामु ।  
अपवत्तियतित्थवहेण चरिवि ।  
वीसमिउ असोयहु मूलि धीरु ।  
जो धवलु धवैलवुंदहु महग्घु । 10  
णियणिलह णिसण्णउ भरहराउ ।

घत्ता—कयपंजलियरु पणमंतसिरु भत्तिहरिसवियसियवयणु ॥

संसारदुक्खणिव्वेइयउ जोर्यवि मिलियउ भव्वयणु ॥ ८ ॥

9

दुवई—ता णिग्गंतधीरदिव्वद्ध्युणितोसियफणिणरामरो ।

जीवाजीवणामकयभेयइं तच्चइं कहइ जिणवरो ॥ १ ॥

सभेवाभव जीव दुभेय होंति  
चउंरासीजोणिहिं परिभमंति  
वियल्लिदिय सयल्लिदिय अणेय  
आहारसरीरिदियमणाहं  
जं कारणु णिव्वत्तणसमत्थु  
तं छव्विहु परमेसें पउत्तु  
जिह णारपसु तिह सुरवरेसु  
परमे तित्तीस सायरसमाइं  
पइंदिपसु चत्तारि होंति  
ता जाम असण्णउ पंचकरणु

ते सभव सकम्मं परिभमंति ।  
अण्णण्णदेहरापं रमंति ।  
एक्किदिय भासिय पंचभेय । 5  
आणाभासापरमाणुयाहं ।  
तं पज्जत्ति स्ति भणंति एत्थु ।  
अहमेण ठाइ अंतोमुहुत्तु ।  
दसैवरिससहासइं वसइ तेसु ।  
मणुपसु तिण्णि पलिओवमाइं । 10  
वियल्लिदिपसु पंच जि कहंति ।  
सण्णउ पज्जत्तीछक्कधरणु ।

६ MB ° दुप्पउ. ७ M धवलचदहु; B धवलवंदहु; P धवलविदहु and gloss समूहस्य. ८ MBPK कयपणिवायभाउ. ९ MB जाएवि.

9. १ B °तासिय°. २ M भव वाभव. ३ MBP परिणवति. ४ MBP चउरासिलक्खजोणिहिं भमंति. ५ BP दहवरिस°.

8 b °दामु बन्धनम्. 9 b अपवत्तियतित्थवहेण अवसर्पिणीचतुर्थकाले केनाप्यप्रवर्तिततीर्थमार्गेण.  
11 a °दुप्पहु दुर्मागः. 14 जोयवि दृष्ट्वा.

9. 11 a चत्तारि आहारशरीरोन्द्रियोच्छ्वासानिश्वासलक्षणाः पर्याप्तयः.

एयहिं जे पज्जप्पंति णेय ते जंति अपज्जत्ता अणेय ।  
 पँज्जप्पंतहु लग्गइ खणालु जगि सव्वहु भिण्णमुहुत्तु कालु ।

घत्ता—ओरालिउ तिरियहुं माणवहुं सुरणारयहुं विउँव्वियउ ॥ 15

आहारअंगु कासु वि मुणिहि कम्मु तेउ सयलहं वि थियुउ ॥ ९ ॥

## 10

हुवई—तिरिय हवंति दुविह तस थावर थावर पंचभेयया ॥  
 पुहवी आउ तेय वाऊ वि थ बहुविह हरियकायया ॥ १ ॥

मसुरिय कुसजल सूईकलाव	परिधाविरधयसंठाण भाव ।	
तोरणतरुवेइयगिरियलेसु	सुरहरवसुसंखामहियलेसु ।	
णाणाविहसोयरि सरिसरेसु	पण्णारह जिणभँवभूयलेसु ।	5
अवरेसु वि बहुछेत्तंतरेसु	वंभंतपरिट्टियणहयलेसु ।	
अइसरसरसातोयासपसु	एयाण कमेण जि होइ वासु ।	
खरजलिण ण भिज्जइ वालुयाइ	सण्णी सिंन्धियँ खणि बंधु लेइ ।	
दुविह वि मट्टिय किर पंचवण्ण	जइ होइ होउ संकिण्ण अण्ण ।	

घत्ता—कसिँणारुण हरिय सुपीयलिय पंडुर अवर वि धूसरिय ॥ 10

पँही महिकायहुं मउय महि पंचवण्ण मइं वज्जरिय ॥ १० ॥

## 11

दुवई—कंचण तेउंय तंव मणि रुप्पय खरपुहई पयासिया ।

वारुणिखीरखारघयमहुसम जलजाई वि भासिया ॥ १ ॥

६ MBP पज्जत्तहु लग्गइ इय खणालु. ७ MBP विउँव्वियउ. ८ MBP थियउ.

10. १ K पुहई. २ MBP सायर°. ३ MBP जिणवरमहियलेसु. ४ MB सिन्धिय; P सिन्धिय.  
 ५ MBP कसणारुण. ६ P महिकायहुं जीवहुं मउय मही.

11. १ MBP तउय.

14 b भिण्णमुहुत्तु अन्तर्मुहूतः. 15 ओरालिउ औदारिकम्.

10. 4 a तोरण° द्वारादितोरणम्; b वमुसखामहियलेसु अष्टपृथिवीषु. 6 b वंभंत° लोकान्तः.  
 8 b सण्णी मृदुः; b संकिण्ण मिश्रा.

दूरहु दरिसावियधूममलिणु	असणी तडि रवि मणि जोई जलणु ।
उकलि मंडलि गुंजाणिणाउ	दिसैविदिसाभेपं भिण्णु वाउ ।
गुच्छेसु गुम्मवल्लीतणेसु	पव्वेसु रुक्खसाहायणेसु ।
सुपसिद्धु वणासइकाउ पसु	उप्पज्जइ जई घोसइ जईसु ।
पज्जत्तेयर सुहुमेयूरा वि	दुमसाहारण पत्तेय के वि ।
साहारणाहं साहारणाइं	आणापाणाइं आहारणाइं ।
पत्तेयहुं पत्तेयइं गँथाइं	छिंदणभिदणणिहणं गयाइं ।
बारहसहाससंवच्छराहुं	सुहुमाहुं दह जि दह दो खराहुं ।
आउहि परमाउसु सत्त झुणइ	अहरत्तइं निच्चिहि तिण्णि भणइ ।
तइयइसहासइं गंधवाहु	दहसहसाइं जि वणसइसमूहु ।
परमेण जि अइअवरेण उत्तु	सव्वहं जीविउ अंतोमुहुत्तु ।
तुंदाहि कुक्खि किमि खुब्ब संख	बीइंदियं मइं भासिय असंख ।
तीइंदियं गोभिपिपीलियाइं	चउरिंदिय मच्छियमहुयराइं ।

घत्ता—परिवाडिण किं पि णाणभवणु एयहं जुत्तिइ सावडइ ।

रसु गंधु णयणु फासहु उवरि एक्केकउं इंदिउ चडइ ॥ ११ ॥

## 12

दुवई—पज्जत्तीउ पंच कमसंठिय छह सत्तट्ट प्राणया ।

तेसिं हौंति एम पभणंति महामुणि विमलणाणया ॥ १ ॥

पंचिदिय सण्णि असण्णि दोण्णि

भणवज्जिय जे ते धुवु असण्णि ।

२ MB °मणिजाइ. ३ M'BP दिसि°. ४ M दिण्णु; P भिण्णवाउ; ५ M सुवासिद्ध°; BP सुपसिद्ध°. ६ M जिइ, P जिउ. ७ MBPT पत्तेयगयाइं. ८ MBP णिहणइं. ९ M रुदाहि सुक्खि, रुंदाहि कुक्खि; T तुंदाहि गण्डूपदः. १० MBM बेइदिय. ११ MBP तेइदिय.

12. १ M मणि.

11. 4 a °गु जा णि णा उ घोषशब्दयुक्तः. 6 b जइ जगति. 9 b णि हण विनाशम्. 10 b दह जि-दह दो द्वाविंशतिसहस्राणि; 11 a आउ हि अपाम्; b निच्चि हि अग्नेः. 12 a तइयइसहासइ त्रीणि वर्षसहस्राणि. 13 a अइअवरेण अतिजघन्येन. 14 a तुदाहि गण्डूपदः. 16 णाणभवणु ज्ञानाश्रयम्; सावडइ संपद्यते.

सिक्खालावाइं ण लेंति पाव	अण्णाणगूढेदढमूढभाव ।
असु णव जि समात्तिउ पंच ताहं	वज्जरइ जिणिंदु अस्सण्णियाहं । 5
छहिं पज्जत्तिहिं पज्जत्तपहिं	संफासणल्लोयणसोत्तपहिं ।
मणवयणकायरसघाणपहिं	आणाप्रौणाउ अप्राणपहिं ।
दहहिं मि जियंति साण्णिय तिरिक्ख	अक्खमि णाणाविह दुण्णिरिक्ख ।
जलयर झसाइ पंचप्पयार	कच्छव मयरोहर सुंसुयार ।
णहयर समुग्ग कुंडवियडपक्ख	अण्णेक्क चम्मघणल्लोमपक्ख । 10
थलयर चउपय चउविह अमेय	पक्खुक्खु दुक्खुर करिसुणहपाय ।
उरसप्प महोरर्य अजगराइ	किं ताहं गइंदु वि कवल्लु होइ ।
भुर्यसप्प वि वक्ख्खाणिय सभेय	सरहुंदुरगोघाणामधेय ।

घत्ता—जलयर जलेसु खग तरुगिरिसु थलयर गामपुरेसु वणे ॥

दीवोयहिमंडलमज्झि तहिं पंदमु दीवु भासंति जिणे ॥ १२ ॥ 15

## 13

दुवई—जोयणलक्खु लक्ख बहुपविउल पुणु गयगणियमेरया ।

अत्थि असंखदीववरसायरवलयायारधारया ॥ १ ॥

जंबूदीवो धार्दइसंडो	पुक्खरवरदीवो मृगचंडो ।
मइरो खीरो घयमहुणामो	णंदीसो अरुणोरुणधामो ।
कुंडलसण्णो संखो रुजगो	भुजगवरो अवरो वि इ कुसगो । 5

१ MB मूढ धणगूढभाव, K मूढ घणगूढभाव but corrects it to गूढ धणमूढभाव. ३ MBP °पाणाउ.  
 ४ MBP अपाणपहिं. ५ M अहयर. ६ M पड°; BP फड; ७ MBP दुक्खुर. ८ M महोयर.  
 ९ MBP किर. १० MBP सरिसाप. ११ MBP पढमदीउ. १२ M जिणे; K जिणे but corrects  
 it to जणे.

13. १ MBP तह. २ P धाइयसंडो. ३ MBP मिगचंडो. ४ MBP णामे. ५ MBP धामे.

12. 4 b अण्णाणे त्यादि—न विद्यते ज्ञान यस्मात्तदज्ञानं तेन गूढं प्रच्छादनं तस्माद् दृढा मुग्धभावा  
 वेषाम्. 5 a समत्तिउ पर्याप्तय. 6 a पज्जत्तपहिं परिपूर्णैः. 9 b उहर जलचरविशेषः.

13. 1 गयगणियमेरया गतगणितमर्यादाः. 4 b अरुणधामो रक्तच्छविः. 5 a रुजगो रुक्कः.

कोंचो एवं दीवसमुहा	दूणपिहूँ दावियणियमुहाँ ।	
एयसुं तिरियाणं ठाणं	जलयरथलयरणहयरयाणं ।	
वियल्लिदियपंचिदिययाणं	एण्हि वोच्छं कायपमाणं ।	
साहियजोयणसहसुच्छेहं	पउमं दीसइ वड्डियदेहं ।	
अवि य दुकरणो को वि वरिट्ठो	बारहजोयणदीहो दिट्ठो ।	10
होइ तिकोसो तिकरणवंतो	चउकराणिल्लो जोयणमेत्तो ।	

घत्ता—लवणणवि कालणवि विउले हौंति सयंभूरमणि झस ॥

सेसेसु णत्थि जिणभासियउ सेणिय णउ चुक्कइ अवस ॥ १३ ॥

## 14

दुवई—जाणसु जोयणाइं अट्टारह लवणसमुद्दमच्छया ।

णव वरसरीमुहेसु छत्तीस जि कालोए दिसच्छया ॥ १ ॥

अवसाणमहण्णवि जे वंहंति	ते जोयण पंचसयाइं हौंति ।	
गयणंगणचरहं थलंभचरहं	संमुच्छिमगम्भसरीरघरहं ।	
कइवयचावइं काहँ मि गणंति	तणुमाणु एम मुणिवर भणंति ।	6
कासु वि संमुच्छिमजलयरासु	पज्जत्तिल्लहु जोयणसहासु ।	
जलगम्भजम्मि भवियाइं ताइं	पंचं जि जोयणइं सयाहयाइं ।	
एयहं तीहिं मि संमुच्छिमाहं	परिवज्जियपज्जत्तीकमाहं ।	
अक्खिउ जिणेण दीसइ विअत्थि	परमेणोगाहण णरविहँत्थि ।	
थलगम्भयदेहि तिगाउयाइं	परमेण माणभावहु गयाइं ।	10
सुहुमहु बायरहं मि धुवुं पवण्णु	अंगुलअसंखभायउ जहण्णु ।	

६ MBP दूण पि हु. ७ MB add after this: लवणोवहि कालोवहि सामें, सेस समुद् (B सो समुद् वि) वि दीवहु नामें.

14. १ M णवर सरी<sup>०</sup>; BP णव जि सरी<sup>०</sup>. २ BP वसंति. ३ P काहिं. ४ MBP पंच वि. ५ M विहत्थि; BP वियत्थि. ६ MPT विअत्थि. ७ MB धुउ; P धुव<sup>०</sup>; K धुवु.

6 दूण पि हु द्विगुणपृथवः; दा वि य णि य मु हा दशितनिजाकाराः. 10 a दुकरणो को वि शंखः. 11 a तिकरणवंतो खज्जरकः; b चउकराणिल्लो भ्रमरः.

14. 1 सरी मुहेसु गङ्गादीनां समुद्रप्रवेशस्थानेषु. 2 दिसच्छया दिशां प्रच्छावकाः. 5 a काह मि केषां चित्. 7 b सयाहयाइं शतगुणितानि. 9 a विअत्थि विगतात्थि. 10 a तिगाउयाइं तिस्त्रो गव्यूतयः.



घत्ता—जगि सुद्धमणिगोयसमुच्चवहं अवि यसमत्तहुं ण वि रहिउ ॥

णिकिद्धु कुसुमयंतं पडुणा उंत्तिमु जलयराहुं कहिउ ॥ १४ ॥

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरह्य

महाभच्चभरहाणुमण्णिण्य महाकव्वे तिरिक्खोगाहणो णाम

दसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १० ॥

॥ संधि ॥ १० ॥

८ M णिकिद्धुकुसुमयत्तं. ९ M उत्तम°; P उत्तमु. १० MBP तिरिक्खोगाहणा.

12 य स म त हुं य + असमत्तहुं अपर्याप्तानाम्. 13 णि कि द्दु सर्वजघन्यम्.

XI

पुणु इंदियभेउ वम्महपसरणिवारणण ॥

भासियउ असेसु लोयहु रिसहभडारणण ॥ ध्रुवकं ॥

I

जाणइ सण्णिउ जो पज्जत्तउ  
णिल्लोयेणतिउ पुट्टुपविट्टुउ  
फासु गंधु रसु णवहि जि भावइ  
संसेतालसहस्सइं दिट्ठिइं  
चक्खिदियहु विसउ वक्खवाणिउ  
गंधगहणु अइं वत्तसमाणउं  
दिट्ठिइं पडिम णिपज्ज मसूरी  
संहरियतसंदेहेसु पयासउ

पुट्टुउ सुणइ सहु गयसोसिउ ।  
रुखुं णियच्छइ अप्परिमट्टुउ ।  
बारहजोयणेहिं सुइ पावइ । 5  
अवरु वि दोण्णिं सयइं तेसट्टुइं ।  
जेहउ केवलणार्णे जाणिउ ।  
सवणु वि जवणालीसंठाणउं ।  
अक्खिय जीहं खुहप्पायारी ।  
फासु अणेयरूवविण्णायउ । 10

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

सूर्योत्तेज गभीरिमा जलनिधेः स्थैर्यं सुरादेर्विधोः  
सौम्यत्वं कुसुमायुधाच्च सुभगं त्यागं बलेः संब्रमात् ।  
एकीकृत्य विनिर्मितोऽतिचतुरो धात्रा सखे सांप्रतं  
भरतार्यो गुणवान् सुलब्धयशसः खण्डकवेर्वल्लभः ॥

M reads विधौ for विधोः; MB read कुसुमायुधात्सुभगता for कुसुमायुधाच्च सुभग, and खण्डः कवेर्वल्लभः for खण्डकवेर्वल्लभः.

GK do not give it.

1. १ MP गयसुत्तउ; B गयसोत्तउ. २ MB णिल्लोयणु. ३ B तितपुट्टु. ४ MBP रुउ. ५ MBP सत्तेचालीससहसइं. ६ MBP विण्णि. ७ MBP अइसुत्त°. ८ MBP दिट्ठिहि. ९ M जीय. १० BT सुहरिय°. ११ MB तसदेवेसु.

1. 3 a स णि उ समनत्कः, b पुट्टु उ स्पृष्टः; गयसोसि उ श्रोत्रगतः. 4 a णिल्लोयणतिउ नेत्रं विना त्रीणि स्पर्शनरसनघ्राणानि, पुट्टुपविट्टुउ नासिकादौ प्रविष्टमतिमुक्तकायाकारघ्राणेन्द्रियप्रदेशैः स्पृष्टं गन्धादिकं जानाति; b अप्परिमट्टुउ अस्पृष्टम्. 5 a णवहिं जि भावइ नवयोजनात् स्पर्शं गन्धं रसं जानाति. 6 a दिट्ठिइं चक्षुर्दर्शनस्येष्टानि. 8 a अइं वत्तसमाणउं अतिमुक्तकपुष्पाकारम्; b जवणालीसंठाणउं यवकणसाम्बनालिकासदृशम्. 10 a °हरिय° वनस्पतिकायः.

समचैउरंसु ठाणु सुरसत्थहु  
मणुयतिरिक्खहु छे प्पि पवुत्तइं  
सुँज्जउ वावणंगु णग्गोहउ  
एइंदिय णारंइय सुसंपुड-  
वियलिंदिय वि वियडजोणीहव  
पासुँयजोणि देवणारइयहं  
सीयलुण्ह उण्हेव हुयासहं  
मंथरगमणहं ससहरवयणहं

हुंडु वि णारयगणहु अहत्यहु ।  
भोयभूमिवियलहु पढमंतइं ।  
उब्भासिउ तिरिक्खणररोहउ ।  
जोणिहिं होंति सकम्मसमुब्भड ।  
संपुड वियड होंति गब्भुब्भव । 15  
मीसा गब्भणिवासं लइयहं ।  
ताहं विहि मि तिविहा पुणु सेसहं ।  
संखावत्तजोणि थीरयणहं ।

घत्ता—तहिं जीव अणेय णउ लहंति संपुण्ण तणु ॥

णियकम्मवसेण होंति मरेप्पिणु जंति पुणु ॥ १ ॥

20

## 2

होंति अरुह कुम्मुण्णयजोणिहिं  
अवरहि जोणिहि रुहिरावत्तहि  
इंदियजुयल जियंति सहरिसइं  
तीइंदियहु मि राइविमीसइं  
चउरिंदियहु आउ छम्मासिउ  
मच्छहु पुव्वकोडि उवइट्ठी  
वासहं बायालीससहासइं  
पक्खिहिं ताइं दुसत्तरि भणियइं

केसव राम चक्कि सुहखोणिहिं ।  
पायडजणवयवसावत्तहि ।  
मइं विण्णायउ बारहवरिसइं ।  
एक्कणवण्णास जि किर दिवसइं ।  
णिसुणहि पंचिंदियहु वि भासिउ । 5  
कम्मभूमिभूयरहं मि दिट्ठी ।  
उरय जियंति जायजीयांसइं ।  
पालिओवमइं तिण्णि परिगणियइं ।

१२ MB °चउरंम°. १३ MBP छ प्पि य उत्तइं. १४ K reads this line before line 12. १५ MBP णारयसुरसंपुड. १६ MBP फासुय°.

2. १ P °जणवइ. २ MBP एकुण°. ३ P °जीवासइ. ४ M °ओवम्मइ.

11 b अ ह त्थ उ अधोलोकवर्तिनः. 12 b भो य भू मि विय लहु प ड मं त इ अत्र यथाकमसंबन्धो भोगभूमिजानं प्रथमं समचतुरस्रसंस्थानं विकलेन्द्रियाणामन्त्य हुंडसस्थानम्, 14 a-b सु संपु ड जो णि हिं सवृत्तयोनी. 16 a पा सु य अचित्ता; b मी सा सचित्ताचित्ता. 17 a सी य लु ण्ह केषांचिच्छीता केषांचिदुष्णा, उ ण्हे व हु या स हं तेजस्कायिकानामुष्णैव योनिः; b ता हं वि हिं मि देवनारकाणाम्, ति वि हा शीता उष्णा मिश्रा च; से स हं देवनारकतेजस्कायेभ्योऽन्येषाम्.

2. 3 a इं दि य जु य ल द्वीन्द्रियाः. 4 a रा इ वि मी स इं रात्रिविमिश्रितानि. 6 b भू य र हं भूचरणाम्. 7 b जा य जी या स इं जाता जीविताशा येषु तानि.

खेत्तावेकखइ कर्हि मि तिरिक्खहं एहउ उत्तमाउ पंक्खहं ।  
 मायाविय कुपत्तदाणेण वि एए होंति अट्टहाणेण वि । 10

घत्ता—इय कहिय तिरिक्ख एवर्हि माणव वज्जरमि ॥  
 पण्णारह तीस णवइ छ भेय वि संभरमि ॥ २ ॥

3

तिरियलोयमज्झत्थु सुहासिउ	मणुउत्तरगिरिवलयविहूसिउ ।
जोयणाहं णरखेत्तु रवण्णउ	पणयालीसलक्खवित्थिण्णउ ।
जंबूदीउ सव्वदीवेसरु	एक्कु लक्खु जोयणपरिवित्थरु ।
छावीसाइं पंच अहिययरइं	जोयणसयइं विहियणरणयरइं ।
दाहिणभरहु तेत्थु वित्थारं	एँरावउ भणु तेणायारं । 5
उत्तरदाहिणाहं वेयडुहं	पण्णास जि पिहुलत्तु गुणडुहं ।
पंचवीस उच्छेहु समासिउ	एक्कु सहसु हिमवंतहु भासिउ ।
सहुं वावण्णहुं वित्थरु साहिउ	सउ तुंगत्तं सिहरि वि सीहिउ ।
पंचुत्तरसएण सहुं लक्खिय	दोणिण सहस हिमँवइयहु अक्खिय ।
अर्वरहिरण्णचंतु तम्माणउ	साहिउ दोर्हि मि एँक्कु पमाणउ । 10
होइ महाहिमवहु रुंदत्तणु	चउसहासअहियउ उच्चत्तणु ।
दोणिण दहोत्तराइं धुंत्तु सिट्टउ	हँम्मियगिरिदि वि तेत्तिउ दिट्टउ ।

घत्ता—खेत्तहुं गुरु खेत्तु गिरि गरुयारउ गिरिवरहो ॥

मा भंति करेज्ज वयणु ण चुक्कइ जिणवरहो ॥ ३ ॥

3. १ MBP तिरियलोउ, २ MBP एकलक्खु जोयणहं पवित्थरु, ३ MBP छावीसाइं, ४ MBP अइरावउ, ५ MB तेणुपयारं; P तेण पयारं, ६ MB पयासिउ; T पसाहिउ, ७ MB हइमवयहु, ८ MBP अवरु, ९ MBP एकं, १० MBP धुउ, ११ MBP हम्मिहि दुविहु वि, १२ P खेत्तहु चउगुणु खेत्तु गिरि वि चउगुणु गिरिवरहो, T seems to have the same reading: खेत्तेत्यादि- क्षेत्राद्गुरुःगुणं (?) क्षेत्रं गिरेगिरिश्चतुर्गुणः.

12 ण व इ छ षण्णवतिः, तथाहि- लवणोदकस्योभयोस्तटयोश्चतुर्विंशतिश्चतुर्विंशतिरन्तरद्वीपास्तथा कालोदसापि.

3. 4 a अ हिय य र इ अधिकतराणि. 5 b ते णा या रं तेन आकारेण. 6 a वेय डुहं विजयार्थानाम्. 8 a सा हि उ साधिकः, b सा हि उ कथितः. 10 a तम्माणउ तत्प्रमाणम्; b दोर्हि मि द्वयोरपि हैमवत-हिरण्यवतोः.

## 4

चउसयाइं दिहंतिसहासइं  
अहियइं किं पि होंति हरिवरिसहु  
अट्टसयाइं सोलहसहसालइं  
साहियाइं णिसिहँहु पिहुलत्तणु  
णीलिहिं तं जि ण कोइ णिवारइ  
परमेसरु तेत्तीसँसहासइं  
अट्टसयाइं सबायालीसइं  
उत्तरकुरुसुरकुरुहुं पउत्तउ

एकवीस जोजणइं पयासइं ।  
तं जि माणु रँम्मयहु सहरिसहु ।  
ताइं जि जाणहि बाँपतालइं ।  
सायरसयइं भणिउं तुंगत्तणु ।  
विहिं मि विदेहहं रुंदिम ईरइ ।  
उडुसयाइं चउरासीमीसइं । 5  
अण्णु विं भणु पयारहसहसइं ।  
एउ माणु णउ ल्हसइ णिरुत्तउ ।

घत्ता—छह खेत्तइं एम भोजभुत्तिसंतोसियइं ॥

इह जंबूदीवि तिण्णि जि कम्मविहूसियइं ॥ ४ ॥

10

## 5

पोमुं णाम हिमवंतंसरोवरु  
एकु सहसु दीहत्तणु सुच्चइ  
एयहु अक्खिउ आगमि जेत्तिउ  
अवरु महाहिमवंतु वरिल्लउ  
तिविहेण वि गुणेण उवँलक्खिउ  
तिंगिँसुरु वि णिसहासीणउं

पंचसयाइं तासु परिवित्थरु ।  
दहजोजणइं गहीरिम वुच्चइ ।  
सिहरिमहापुंडरियहु तेत्तिउ ।  
ओईल्लहु बिउणारउ भल्लउ ।  
णामु महापोमु जि मइं अक्खिउ । 5  
हंइ महापोमँक्खहु बिउणउं ।

4. १ MBP होंति किं पि. २ MB रुम्मयहु. ३ MBP बाइतालइ. ४ MBP णिसहहु. ५ MBP णीलहु. ६ BP तेत्तीस°.

5. १ MBP पोमणामु. २ MBP हिमवंति. ३ MBP उवरिल्लहु. ४ MBP ओलक्खिउ. ५ MB तिग्गिच्छि वि सरु; P तिग्गिच्छि वि सरु. ६ MBP महापउमक्खहु.

4. 1 a दि इ ति सहा सइ अष्टसहस्राणि. 2 a अहियइ तथोजनभागेनैकेनाधिकानि. 3 b बा ए ता-  
लइं द्विचत्वारिंशत्. 4 a सा हियाइ तथोजनभागद्वयेनाधिकानि; b सा य र स य इं चत्वारि शतानि. 6 b उडु-  
सयाइं षट्शतानि; °मी सइं युक्तानि. 8 a °सुरकुरु° देवकुरव; b ल्हसइ चलति न्यूनं भवति.

5. 4 b ओइल्लहु उपरितनस्य. 5 a ति वि हे ण विस्तारदीर्घत्वावगाहेन.

णिद्धणीलणयरायणिविद्धु  
सोहइ रम्मरुम्मिकयटाणं

तेवडु जि केसरिसरु विद्धु ।  
पुंडरीउ तहु अद्धपमाणं ।

घत्ता—सिरिहिरिदिहिकंतिर्कित्तिलच्छिणामालियउ ॥

देवीउ वसंति सरवरि सुंकयकीलियउ ॥ ५ ॥

10

6

पोममहापोमहं तिग्गिच्छंहं  
जलपूरियगिरिकंदरदरियउ  
गंगासिंधु रोहि भंगाली  
हेरि हरिकंत सीय सीओयय  
कणयकूल रूपयकूलाली  
एयउ भणियउ चोहंह सरियउ  
अड्डाइज्जहं पंच जि मंदर

केसरिदोपुंडरियहं सच्छंहं ।  
सुणसु महाणईउ णीसरियउ ।  
रोहियास मंथरगइ लीली ।  
णारी णरकंता वि महोयय ।  
रत्ता रत्तोया वि झसाली ।  
वयगुणियउ सत्तरि वित्थरियउ ।  
बहुवेयइखयरकुलसुंदर ।

6

घत्ता—वक्खारगिरिंद कुंडलरुजगिरि सुकारगिरि ॥

खेत्तंतिहि अत्थि बहुविहसिहरुद्धरियसिरि ॥ ६ ॥

7

जंबूदीवहु बाहिरि थक्कइं  
पढम सुसंकिण्णइं पुणु रंदइं  
कयतिहेयगुणणे संजुत्तइं

ठाणइं जाइं सहावामुक्कइं ।  
ताइं होंति मल्लयपडिच्छंदइं ।  
कम्मभोयभावेण विहत्तइं ।

७ P महापुंडरीउ तह अद्ध°. ८ MK °दिहिकित्तिबुद्धिलच्छि°. ९ M सुहकयकीलउ; BP सुहकयकीलियउ.

6. १ MBP तिग्गिच्छंहं. २ B omits this line. ३ B omits this line. ४ P कसयकूल,  
५ MP चउदह.

7. १ M सल्लइपडि°. २ B कयतिहेण गुणणे; P कयतिभेयगुणणे.

7 a °णयराय° नगराजः पर्वतः.

6. 3 a भंगाली कल्लोलयुक्ता. 9 खेत्तंतिहि क्षेत्राभ्यन्तरेषु.

7. 1 b ठाणइ अन्तर्वापाः; सहावामुक्कइं अपरित्यक्तस्वरूपाणि. 2 b मल्लयपडिच्छंदइं शारावा-  
काराणि. 3 a °तिहेय° उत्तममध्यमजघन्याः, अधोमध्योर्ध्वविस्तारविभिन्नानि वा; b कम्मभोयभावेण कर्म-  
भूमिभावः स्वच्छेद्या फलाहारदिग्रहणं तेन.

लवणसमुहि अट्टचालीसइं  
बहुजोयणसयमाणविसेसइं  
थीपुरिसइं दो दो रहरत्तइं  
विगयाहरणइं णिच्चेलक्कइं  
रम्मइं सोमइं णिच्चपहिट्टइं

कालोयइ तेत्तियइं जि देसइं ।  
संति कुभोयभूमिआवासइं । 5  
भइसहावइं मणहरगत्तइं ।  
कण्हइं धवलइं हरियइं सकइं ।  
जिर्णणाहेहिं जिणागमि सिट्ठइं ।

यत्ता—एक्को रुयधारि पुंळंधारि तहिं सिंगधर ॥

पुव्वादिसु होंति उत्तरदिसि णिच्चमास णर ॥ ७ ॥

10

## 8

सक्कुलिकण्ण कण्णपावरण वि  
हरिसुह करिसुह झससामलमुह  
सइलाणण मेसाविसाणण  
सयल वि उज्जय पंकयलोयण  
अट्टारहजार्हिं रवण्णा  
एक्कु जि पैलिओवमु जीवेप्पिणु  
हरिहिमलोहियपीयलवण्णा  
हारदोरेकंकणकुंडलधर  
मइरंगहिं वीणापडहंगहिं  
भायणभोयणंगभवणंगहिं  
एर्यहिं कप्परुक्खहिं महि छज्जइं  
अहममज्झिंसुत्तिमसुहसंगइं

लंबकण्ण ससकण्ण कुमणुय वि ।  
आदंसणमुह जलहर कइमुह ।  
सत्तारहतरुहलरसमाणण ।  
एक्कोरुय गिरिमट्टियभोयण ।  
छण्णवइहिं खेत्तेहिं विहिण्णा । 5  
होंति भवणवणवासि मरेप्पिणु ।  
तीससुभोयभूमिवित्थिण्णा ।  
दिब्बवत्थ सिरवलइयसेहर ।  
विविहविहूसणंगजुइअंगहिं ।  
अंबरदीवकुसुममालंगहिं । 10  
भोउं गिरंतरु मणुयहिं भुज्जइं ।  
ललियसहावइं गिरु ललियंगइं ।

३ MBP किण्हइं, ४ MBP जिणणाहेण, ५ MBB दिट्ठइं, ६ MBP पुच्छधारि.

8. १ P जलहरमुह कइं. २ MPK पलियओवमु. ३ MBP उण्णणा. ४ P डोरं. ५ MBP भोयणभायणंगं. ६ MBP एहिं, ७ MBP रज्जइं. ८ B भाउ, ९ P भुज्जइं, १० BBP भुत्तमं.

6 b भइसहावइं स्वभावमार्दवादियुक्तानि. 7 b सकइं रक्तवर्णानि.

8. 3 b सत्तारहतरुहलरसमाणण सप्तदशप्रकारास्तरुफलरसाहाराः. 4 b एक्को रुय एकपादाः. 9 a मइरंगहिं मयाज्ञैः.

एकं तु तिणिण पल्ल जीवेप्पिणु

होति कण्ववासेसु वैएप्पिणु ।

घत्ता—तीसँविह पउत्त भोयभूमि धुअ मणुय जिह ॥

सइं कालवसेण अँद्रुव दहविह होति तिह ॥ ८ ॥

15

9

दहपंचविह कम्मभूमाणुस  
मेच्छ चीण हुण पारस बर्बर  
इड्डिअणिड्डिवंत अज्जणवर  
वासुअरव बलपव महाबल  
होति अणिड्डिवंत णाणाविह  
जिणु अहमेण जियइ वाहत्तरि  
तहु अहिययग्उ सीरि पउत्तउ  
पुव्वहं चउरासीलक्खेयहं  
पुव्वकोडिसामणु वि थिरकरु  
पक्खु मासु अयणइं संवच्छर  
णर णिसँद्वद्वियंगकउग्गम  
गब्भेसु वि गलंति तणु लेप्पिणु  
उत्तमेण धणुँलयहं णिसीहा  
सत्तहत्थ चउहत्थ तिहत्थ वि  
तम्हाओ वि होति लहुययरा

अज्ज मेच्छ इच्छामाणियरस ।  
भासारहिय णिरूह णिरंवर ।  
इड्डिवंत जिणवर चक्केसर ।  
चारण विज्जाहर उज्जलकुल ।  
लिविदेसीभासावत्तण बुह । 5  
अँहिउ सहसु वरिसँइं जीवइ हरि ।  
सत्तसयाइं चक्कि णिक्खुत्तउ ।  
परमाउसु जिणहरिबँलरायहं ।  
जीवइ कम्मभूमिजायउ णर ।  
के वि जियंति कईवय वासर । 10  
ते सज्जो मरंति संमुच्छिम ।  
अवर वि कईवय दियह जिपप्पिणु ।  
पंच सँवायइं सयइं पईहा ।  
णिक्किट्टेण पउत्त दुहत्थ वि ।  
अइरहस्स वामण खुज्जयरा । 15

घत्ता—मणुपसु ण होति सत्तममहिर्णारय विसम ॥

जिह ए तिह ते उ वाउकायकयभावतम ॥ ९ ॥

११ MBP मरेप्पिणु, १२ P तीस वि इह उत्त, १३ MBP अद्रुय.

9. १ P वच्छर; but it records a p ववर, २ M अहउ, ३ M वरिसँइं, ४ MBP °बल-  
एवह, ५ B णिसइं; P विसइं, ६ M धणुणयइं, ७ MB सवाइं सयाइं; P सयाइं सवाइं, ८ MB णाराय.

9 2 b णि रूह परस्परविवादरहिता निर्विचारा.. 7 b णि क्खुत्तउ निश्चितम्. 8 a एयहं एतेषाम्.  
11 a णि सइइ वियंगकउग्गम निस्सुटं प्रस्वेदादिद्रव्यं तस्मादुत्पन्ना.. 13 a णि सीहा नृसिंहाः, b पईहा  
प्रदीर्घाः. 15 b अइरहस्स अतिलघवः.



## 10

हौति के वि दूसहणिद्वारस  
 चरयपरिवायय बंभामर  
 जंति<sup>१</sup>तिरिक्ख वि तं जि जि वयहर  
 सावयवयहलेण सोलहमउ  
 रिसिवणहिं विणु पुणु तहु उप्परि  
 सत्तुमिच्चुतणमणिसमच्चित्तं  
 जिणल्लिगेण हौति वयभरधर  
 आ सव्वत्थसिद्धि णिगंथहं  
 णारउ मरिवि ण णारउ जायइ  
 अमरु ण णरयहु णारउ सग्गहु  
 होइ तिरिक्खु वि चउग्गामिउ  
 पमियाउहुं तिरियहुं तिरियत्तणु

जोइसवणभवणंतहिं तावस ।  
 आजीव वि सहसारालय सुर ।  
 णर सम्मत्ताराहणतप्पर ।  
 सग्गु लहइ माणुसु दुहविरमउ ।  
 को वि ण भुंजइ अहमिदहं सिरि ।  
 संजमेण सुद्धे चारित्तं । 5  
 अभविय उवरिमगेवज्जामर ।  
 होइ सूइ सम्मत्तपसत्थहं ।  
 सुरु वि ण सुरु मुणिणाहु विवेयइ ।  
 वच्चइ सविहिविहंसियमग्गहु ।  
 जिह तिह माणउ दुक्खार्योमिउ 10  
 अविरुद्धउ मणुयहुं मणुयत्तणु ।

यत्ता—तिहिं गरहिं ण हौति मणुय तिरिक्ख सोक्खचुरयहिं ॥

पलिआवमजीवि सग्गु लहंति सईभुवहिं ॥ १० ॥

## 11

संखाउस जे जीवाहारिय  
 सैरिसव जंति पढम बीयावणि  
 पुहइ चउत्थी जंति महोरय

अण्णोण्णेण वियारिय मारिय ।  
 पक्खि तइय वालुप्पह दुहखणि ।  
 पंचमियहि केसरि मयमारय ।

<sup>10</sup> १ MBPT चारय. २ MP जंत तिरिक्ख त जि जि. ३ MBP वयधर. ४ MBP सव्वट्ट°. ५ दुक्खार्यामिउ. ६ MT सयभुवहिं.

11. १ P विमणस सरह पढम°. २ K वालुयपह. ३ P महोरय. ४ MP मियमारय, B मियमारय.

10. २ a चरय परि वा य य आहिडिकपरिवाजकाः, b आ जी व काजिकाहाराः, 8 b सूइ सूति-  
 क्त्यात्ति. 10 b स वि हि वि ट सिय म ग हु स्वविधिना हिंसादिविधानेन विध्वंसितः स्वर्गप्रापको धर्मलक्षणो मार्गो  
 यस्य, देवैस्तु नरकाप्रापकधर्मात्मकचेष्टितविधानेन नरकमार्गो विध्वंसितः. 11 b °आ या सि उ पीडितः. 12 a  
 प मि या उ हु प्रमितायुषाम्. 14 स इ भु व हिं स्वोपार्जितपुण्यैः.

महिलउ छेट्टहि वि हुरकमियहि  
 आयउ मघविहि लहर णरत्तणु  
 णिग्गउ अंजणाहि किर णिव्वुइ  
 सेलहि वंसहि घम्महि आइउ  
 णर तिरिया सलायपुरिसत्तणु  
 सव्वत्थ वि माणुसु उप्पज्जइ  
 राम उड्डगइ सोक्खइ सामिय

होंति मणुय मेच्छ वि सत्तमियहि ।  
 को वि अरिट्टहि देसँवयत्तणु । 5  
 को वि कर्हि मि पावइ पंचमगइ ।  
 होइ को वि नित्थयर मर्हाइउ ।  
 णउ लहंति णिम्मलु जसकित्तणु ।  
 एम पउत्तइ सुत्तु पउंजइ ।  
 केसव सव्व अहोगइगामिय । 10

घत्ता—पडिसत्तु कर्यंत णउ णारायण पीणकर ॥

णरयहु णिग्गिवि होंति ण हलहर चक्रहर ॥ ११ ॥

## 12

तिहिं कायहिं णरत्तु ण विरुद्धउ  
 वायरपुहइ तोय पत्तेयहं  
 णउ लहंनि सुरणियर सतामस  
 अक्खमि णरयवासु भीसावणु  
 पढमासीयहिं सिट्ठुं सहासहिं  
 चउवीसहिं वीसहिं विहिं अट्टहिं  
 एम सहससंखाहिउ घणु भणु  
 आयामु वि असंखु संखेवें  
 रयणसक्करप्पह वालुयपह

तिरियत्तु वि जिणबुद्धे बुद्धउ ।  
 देवे चवेवि होंति किर एयहं ।  
 पुण्णसिलोयत्तणु आजोइस ।  
 णाणादुक्कलक्खदरिसावणु ।  
 पुणु बत्तीसहिं अट्टावीसहिं । 5  
 अट्टेहिं णाणसहाउवइट्टहिं ।  
 खरपंकयलक्खु जि मंदत्तणु ।  
 पुहइहि पुहइहि अक्खिउ देवे ।  
 पंकप्पह धूमप्पह तमपह ।

५ MBP छट्टिहि. ६ MP हुरकमियहि. ७ K देसवइत्तणु; P सव्वइवइत्तणु. ८ P महावउ. ९ K माणउ सु.

12. १ B पत्तेय वि. २ M देवत्तणु वि होइ किर एयहुं; B होति समागय देवत्तहु कि वि; P देवत्तणु ण होइ किर एयहं. ३ MBPT पुण्णसलायत्तणु. ४ B सिद्धु समासहि. ५ MB केवलणण°; M records a p अट्टहिं for केवल°. ६ B omits this foot; P reads it after 8 b; MBP add after this. सोलह चोरासी सहस जि गुणु, एक्केकउ जि लक्खु रंदत्तणु. ८ MBP रयणप्पह सक्कर वालुपह.

11. 4 a हुरकमियहि दुःखव्यासायाम्. 5 a मघविहि षष्ठ्याः; b अरिट्टहि पञ्चम्या. 6 a अंजणाहि चतुर्थ्याः. 7 a सेलहि तृतीयायाः; वंसहि द्वितीयायाः, घम्महि प्रथमस्याः.

12. 1 a तिहिं कायहिं पृथिव्यवनस्पतिभिः. 2 a पत्तेयहं प्रत्येकवनस्पतिकायानाम्. 3 b पुण्णसिलोयत्तणु पुण्यश्लोकत्वं शलाकापुष्पत्वं च. 6 a विहिं अट्टहिं षोडशभिः. 7 a घणु पिण्डः; b खरपंकयलक्खु खरभागे षोडश सहस्राणि पङ्कभागे चतुरशीतिसहस्राणि; मंदत्तणु पिण्डत्वम्.

अथर वि अंतिमिल्ल तमतमपह  
पयउ घणतमजालणिरुद्धउ

णिच्चपउंजियबहुणारयवह । 10  
सत्त णरयधरणीउ पसिद्धउ ।

घत्ता—पुहईसु विलाहं होंति सहावभयंकरहं ॥

घणतिमिरहराहं अगणियजोयणवित्थरंहं ॥ १२ ॥

## 13

तीन पुणु वि पणवीम जि लक्खइं  
दह पुणु निण्णि पक्कु पंचूणउं  
णरइयहं तहिं भत्थायगइं  
मंहिमयाइं परिमउलियवत्तइं  
लोहकीलकंटांलिकगालइं  
एसु मुकिण्हणीलंसावस  
लेंति देहु सहमत्ति मुहुत्ते  
हवइ विहंगणाणु तहिं मेच्छहं  
कालिगालपुंजसंणिहयर  
विरइयमीमभिउडि रोसुब्भड  
जिह जिह ते मुणंति अप्पाणउं  
दादाभीमणु मुहुं णिव्वायइ

पुणु पण्णारह दावियदुक्खइं ।  
लक्खवु विलाहं पंच अंहिठाणउं ।  
दंसियहंहरिकरिक्खवियारइं ।  
हेट्टामुहओलंवियगत्तइं ।  
दुग्गंधइं दुग्गमतिमिरालइं । 5  
उप्पजंति तिरिय अह माणुस ।  
वेउव्विउ णिउत्तु हुंडत्ते ।  
अवहिसहावे जिणमयदच्छहं ।  
पयडियदंतपंति दट्टाहर ।  
कविलकेस परमारणकक्खड । 10  
तिह तिह तं तं संभैवठाणउं ।  
अहवा पाउ किं ण किर घायइ ।

घत्ता—हेट्टामुह झत्ति ते पडंति असिपत्तवणे ॥

सइं अण्णु हणंति अण्णाहिं पडिहम्मंति रणे ॥ १३ ॥

१ B °भयकरइं १० MB °वित्थरइ

13. १ P विलागइ. २ MPT अहठाणउ, B अंहिठाणइ. ३ M णरइयइ, BP णेरइयहिं. ४ B omits this foot. ५ B omits this line. ६ P °कटाल°. ७ P मुमरइ ठाणउं. ८ P कं ण ९MB अण्ण.

13 विलाह विलानाम्

13. २ b अंहिठाणउ सप्तमनरक 3 a भत्थायारइ भस्त्राकाराणि. 4 a महिमयाइं पार्थिवानि. 5 a °कटालि° कण्टकपक्तिः. 8 a विहंगणाणु विभङ्गज्ञानम्, b जिणमयदच्छहं जिनमतोच्छेदकानाम्. 9 a कालिगाल° कृष्णाङ्गारः. 10 b °कक्खड निष्ठुरहृदया.

14

णउ मज्जत्थु मित्तु उवयारिउ  
 खेत्तसहाउ तेत्थु किं भण्णइ  
 सूइणिह तणु दुब्बरु भूयलु  
 जं करेण लेंतहुं जि मरिज्जइ  
 खंडियकरचरणणणगसइं  
 फलइं वज्जमुट्ठि व्व कटोरैइं  
 महिहरकुहरहिं विप्फुरियाणण  
 कुहिणिउ जलणजालपज्जलियउ  
 ण्हाइ जहिं जि तहिं दूमियपिंडइं  
 बिहिं तिहिं पंचहिं पीडिवि धरियहु

जो जो दीसइ सो सो वहरिउ ।  
 जं सुयकेवलिसमु वि ण वण्णइ ।  
 उण्हु सीउ दुब्बरु चंडाणिलु ।  
 वइतरणीविसु विसु किं पिज्जइ ।  
 रुक्खहं खग्गसमाणइं पत्तइं । 5  
 वरि पडंति णिहलियसरीरइं ।  
 खंति विउव्वणाइ पंचाणण ।  
 जहिं वच्चइ तहिं खलयणु मिलियउ ।  
 पूयरुहिरकिमिभरियइं कौडैइं ।  
 ण्हायहु पूयदहहु णीसरियहु । 10

धत्ता—उक्कत्तिवि तासु दिज्जइ कंत्ति णियासणउं ॥

आयसवलयाइं सिहितोवियइं विहूसणउं ॥ १४ ॥

15

पेच्छइ जहिं जि तहिं जि जमसासणु  
 भुंजइ जहिं जि तहिं जि दुग्गंधइं  
 आहरियइं पुग्गलइं अकामहु  
 णिसुणइ जहिं जि तहिं जि दुव्वयणइं  
 जं चक्खइ तं तं विरसिल्लउ  
 जं अग्घायइ तं कुंणिमंगउ  
 उद्धसासु अइखासु जलोयरु

वइसइ जहिं जि तहिं जि सूलासणु ।  
 णरस्ताइं फरुसाइं विरुद्धइं ।  
 असुहत्तेण जंति परिणामहु ।  
 फंसइ जहिं जि तहिं जि खरसयणइं ।  
 जं चिंतइ तं तं मणसल्लउ । 5  
 णारैयखेत्ति णउ काइं मि चंगउ ।  
 अच्छिक्कुच्छिसिरवियण महाजरु ।

14. १ P दुत्तर. २ MBP जं. ३ MBP कटोरइं. ४ M वर; P उवरि. ५ MBP महिकुहरंतरि.  
 ६ MBPT दुम्मिय°. ७ MBP कुंडइं. ८ MBP किति. ९ MBP °तावियउं.

15. १ P जहिं तहिं जि. २ MBP कुणियंगउ. ३ MB णरयखेत्ति. ४ MBP उद्धखासु.

14 8 a सूइणिह सूचीसदृशम्. 8 a कुहिणिउ मार्गाः. 9 a दूमियपिंडइं पीडितस्य शरीराणि.  
 11 कलि चर्म; णियासणउं परिधानम्. 12 सिहितोवियइं अभिना तापितानि.

15. 7 b °वियण वेदना.

संभवंति दुक्कियहलगेहइ

सव्वउ वाहिउ णारयदेहइ ।

घत्ता—अणुमीलणु कालु सोक्खु ण लब्भइ किं पि जहिं ॥

सारीरुं दुक्खु काइं कहिज्जइ राय तहिं ॥ १५ ॥

10

## 16

हउं णारायणु पडिणारायणु

हउं महिवइ हौतउ सुहभायणु ।

एम भणंतु कयंतु व कुप्पइ

माणसिपं दुक्खं संतप्पइ ।

दाणवणिवहहिं पडिचोइज्जइ

जुज्जमाणु सो एम भणिज्जइ ।

तुहुं अणेण चिरभवि सरदारिउ

वरमहिमहिलाकारणि मारिउ ।

विंझमहागिरिगेरुयपिंजरु

सोहं एण हयउ तुहुं कुंजरु ।

5

पक्खि एण गिलिउ तुहुं विसहरु

महिसें णेण दलिय तुहुं हयवरु ।

अविरलखरणहरेहिं गिरुद्धउ

वग्घेणेण हरिणु तुहुं खद्धउ ।

हणु हणु एहु एम पच्चारिउ

णं वाएण जलणु संचारिउ ।

जुज्जइ णारउ णारय गोदलि

णिवडमाणु कौतासाणि सव्वलि ।

घत्ता—कंपणकणएहिं लंगलमुसलहिं रिउ दलइ ॥

10

णियदेहु जि ताहं पहरणरूवहिं परिणमइ ॥ १६ ॥

## 17

अण्णे अण्णु सुंसल्ले सल्लिउ

अण्णे अण्णु सुंसुंदिइ पेल्लिउ ।

अण्णे अण्णु तिसूले भिण्णउ

अण्णे अण्णु रहंगे छिण्णउ ।

अण्णे अण्णु हुआसाणि घित्तउ

अण्णे अण्णु पसु व्व विहित्तंउ ।

अण्णे अण्णु खुरुप्पे खंडिउ

अण्णे अण्णु वियारिवि छंडिउ ।

५ BP अणुमीलणकालु. ६ MBP सारीरिउ

16. १ MBP कुंतामणि. २ MBPK कपण°, but GT कपण°. ३ MP परिणवइ.

17. १ MBP सुसेल्ले. २ MBP सुसुंदिइ. ३ MBP read this line as अण्णे अण्णु रहंगे छिण्णउ, अण्णे अण्णु तिसूले भग्गउ. ४ MBP विहत्तउ

16. 3 a दा ण व णि व ह हिं दैत्यसमुहैः पडिचोइज्जइ प्रेर्यते. 8 b संचारिउ उद्दीपितः. 9 a गौं द लि संग्रामे मेलापके वा; b सव्वलि सर्वलोहमयी घाणा (?) तस्याम्.

अण्णहु अण्णो खग्गु विहाइउ  
लंइ लइ एवहिं काइं णिरिक्खहि  
तउ अउ तंबउ सीसउ ताविउ  
पिवसु पिवसु अरहंतु ण याणइ

तहु केरउ जि मासु तहु ढोइउ । 5  
सुंग वराय मारिवि किं भक्खहि ।  
अण्णहु मज्जु भणेप्पिणु दाविउ ।  
चंगउ कउलु तुज्जु वक्खाणइ ।

घत्ता—उम्मगो जंति ण णिवारिय णिद्धम्मइ ॥

परघरिणि रमंति जिह पइं रमिय णिवद्धरइ ॥ १७ ॥ 10

18

अग्गिबण्ण तत्तिय अइरत्ती  
तिह एवहिं आलिंगहि माणिणि  
मणिवि णवज्जोव्वण परवाली  
खेत्तुम्भउ माणसु तणुजायउ  
एउ एम पावोहं लइयहं  
तेत्थु ण णारि ण पुरिसु सुयंसउ  
पढमहि पुंढविहि णारयगत्तइं  
बीयहि पण्णारस दोवारहं

लोहविणिम्मिय णं तुह रत्ती ।  
एह करिदकुंभपीणत्थणि ।  
अवरुंडहि सामरि कंटाळी ।  
असुरोईरिउ अण्णोण्णायउ ।  
पंवपयारु दुक्खु णारइयहं । 6  
णग्गउ णिंदु असेसु णउंसउ ।  
भयघणुतिरयणिउंगुलमेत्तइं ।  
घणुरयणिउ अंगुलइं विवारहं ।

घत्ता—भवहरदेहाउ पहरंतहु रणि रणरणइ ॥

गरुयारउ होइ णारयदेहु विउव्वणइ ॥ १८ ॥ 10

19

तइयहि एकतीसधणुतुंगइं  
चोत्थियाहि रयणीदुयजुत्तइं  
पंचामियहि धणुसउ पणवीसउ

एकरयणि भणु कयदुरियंगइं ।  
धुउ चावइं बासट्ठि पउत्तइं ।  
वड्डिउ वउ आवइ आभीसउ ।

५ MP लइ तइ एवहिं. ६ MBP भिग.

18. १ MBP तत्ती. २ MBP माणुस. ३ MBP पुहरहि. ४ MBP पण्णारइ.

19. १ B रयणीअजुत्तइं.

17. ८ a विहा इउ विभक्ताः. 8 b कउ लु चार्वाकः.

18. 3 a परवाली परत्ती, b साम लि कूटशात्मलीतरुः. 4 a माणसु मानसिकम्. 6 b सुयंसउ शोभनशरीरावयवः. 9 रणरणइ अरतिजनके.

छट्टियाहि चार्बहं जिणभणियइं  
 देहुच्छेहु दुहोहदुंगमियहि  
 एकु पहिल्लइ दुक्कियदुज्जइ  
 तिज्जइ णरइ सत्त चोत्थइ दह  
 छट्टइ पुणु बावीस ण रहियइं

दोण्णि सयइं पण्णास जि गणियइं ।  
 पंचसयाइं होंति<sup>१</sup> सत्तमियहि । 5  
 जलहिपमाणइं तिण्णि दुइज्जइ ।  
 सायराइं पंचमि सत्तारइ ।  
 सत्तमि तीस तिअहियइं कहियइं ।

घत्ता—कंदंत कणंत महिहि घुलंत सुहंतरिय ॥

जीवंति हयास णारय तिलु तिलु कप्परिय ॥ १९ ॥

10

## 20

ते जियंति अहमेण अरम्महि  
 जं घम्महि उत्तिमु तं वंसहि  
 जं वंसहि उत्तिमु तं सेलहि  
 जं सेलहि उत्तिमु णिदिट्टउ  
 जं अंजणाहि परमु पवियप्पिउ  
 जं जि अरिट्टहि किर परमाउसु  
 जं पूरउ मघविहि दुहतावियहि  
 विकिरियासरीरविण्णासइं  
 होंति<sup>२</sup> अहोहो रुंदइं विवरइं  
 होंति अहोहो रणइं दुवेक्खइं

फुडु दहवरिससहासइं घम्महि ।  
 आउ जहण्णउं दलियसुहंसहि ।  
 आउ जहण्णउं रउरवरोलहि ।  
 अंजणाहि तं किर णिकिट्टउ ।  
 तं जि अरिट्टहि अहमु विर्येप्पिउ । 5  
 तं मघविहि देसिउ अचिराउसु ।  
 तं आसण्णु मरणु माघवियहि ।  
 होंति<sup>३</sup> अहोहो दीहाउस्सइं ।  
 होंति अहोहो मंदइं तिमिरइं ।  
 होंति अहोहो तिक्खइं दुक्खइं । 10

घत्ता--जुज्झंतहं ताहं पहरणकोडिहि णिहलिय ॥

तणुलव लग्गंति स्यूलवा इव संमिलिय ॥ २० ॥

२ MBP चावइ ३ B °दुग्गमियहि. ४ PK होइ.

20. १ MBP उत्तमु and also elsewhere in this kadavaka. २ P °लोलहि. ३ MBP पयपिउ, ४ B omits this foot. ५ B omits this line. ६ MBP दुपेक्खइं. ७P पारलवा.

19. 9 सुहंत रिय मुखरहिताः.

20. 2b °सुहंसहि °सुखाशायाम्. 8 b दीहाउस्सइं दीर्घाणि आयुषि. 12 स्यूलवा पारदस्य कणा..

21

अक्खमि सुर दहवसुपंचविह वि  
 एयहि रयणप्पहहि धरिस्सिहि  
 असुरवरहं चउसट्ठि समक्खइं  
 बाहत्तरि लक्खइं सुवण्णहं  
 दीवसमुहथणियतडिणामहं  
 एक्केकहु लक्खइं छहत्तरि  
 लक्ख णवइ लेसाहिय धीरहं  
 कोड्डिउ सत्त दुँहत्तरि लक्खइं  
 भावणभवणइं एम पउत्तइं  
 भूयरक्खसावासविसेमइं  
 अवरइं मि पँविमलसिरिहारइ  
 वेँतेरणयरइं अँयरमणयिइं

सोलह दु णव पंचविह पुणरवि ।  
 विवरंतरि बहुरइरसथसिहि ।  
 गायघरहं चउरासीलक्खइं ।  
 भवणहं भूरिभासमाँइण्णहं ।  
 आसाणलकुमारवरधामहं । 5  
 अक्खइ एम मयणमयकेसरि ।  
 आवासाहं समीरकुमारहं ।  
 पिँडीकयइं होंति पक्खक्खइं ।  
 चउँदह सोलह सहस णिँहत्तइं ।  
 वीणावेणुपणवणिग्घोसइं । 10  
 वणगयणयलजलहिँसरतीरइ ।  
 होंति गणंतहं संखाँयइं ।

घत्ता—जोयण सय सत्त अण्णु वि णवइ मुएवि धर ॥

णहि जोइसवास ते णरलोयहु उवरिचर ॥ २१ ॥

22

अद्धकविट्टसरिससंठाणइं  
 पंचवण्णरयणावल्लिखइयइं  
 जोयणसइ खेत्तम्मि दहोत्तरि

संखारहियइं होंति विमाणइं ।  
 बीहल्लत्ते पुणरवि रइयइं ।  
 अयलइ माणुसलोयहु बाहिरि ।

21. १ MBP धगत्तिहि. २ MBP असुरघरइं. ३ MBP °भाइण्ह. ४ M बहत्तरि. ५ K चोइह. ६ K णउत्तइं. ७ MB परिमल°. ८ MBP सरितीरइ. ९ MBP वितर°. १० MBP अइ°; K अय° but corrects it to अइ°.

22. १ MBPT वाहालत्ते पर ण वि and gloss in T परेण न विरचितानि केनापि. २ MBP जोयणसय°.

21. 3 a समक्खइं सर्वज्ञस्यावधिज्ञानिना वा प्रत्यक्षाणि. 4 a सुवण्णहं सुपर्णकुमाराणाम्; b भूरि-  
 मासमाइण्हं प्रनुरप्रभासमाकीर्णानाम्. 5 b आसाणलकुमार° दिक्कुमाराणामभिकुमाराणां च. 7 a लेसा-  
 हिय पक्खिकाः. 10 b °पणव° पटहः. 11 a पविमलसिरिहारइ प्रविमलश्रीधारके.

22. 3 a जोयणसइ खेत्तम्मि भोजनशतक्षेत्रे.



अवरैरं लंबियघंटायारे  
 बत्तीस जि लकबइ सोहम्मइ  
 दुदई सणकुमारि माहिंदइ  
 अत्थि विमाणहं उवाणियसोक्खइं  
 पण्णास जि लंतवि काँविट्टइ  
 सुकमहासुक्कइ चालीस जि  
 भाणय पाणय आरण अञ्जुय  
 हेट्ठिमगेवज्जइ पयारह  
 सत्तुत्तरं मज्झिमहि भाणिज्जइ  
 णव जि णउत्तरि पंचाणुत्तरि  
 चउरासीलक्खइं णिकेयहं  
 एक्कीकयइं ण लेक्खिं विरुद्धइं

थियइ असंखदीववित्थारै ।  
 अट्ठावीसीसाणि सुरम्मइ । 5  
 अट्टलक्ख परिभामियसुरिंदइ ।  
 बंभि संबंभुत्तरि चउलक्खइं ।  
 सहसइं होंति जिणाहिवसिट्ठइ ।  
 छह सयारसहसाराहिं सहस जि ।  
 चउकप्पहिं सत्तैसय संथुय । 10  
 अवरु वि सउ सुरपवरागारहं ।  
 णवइ ऐक्कु उवरिमहि गणिज्जइ ।  
 पंच विमाणइं सोक्खणिरंतरि ।  
 सत्ताणउदिसहासइं पयहं ।  
 अण्णु वि तेवीसैइं लइ लद्धइं । 15

बत्ता—गेहहं तुंगत्तु बिहिं कप्पहिं कवडेण विणु ॥

जोयणहं सयाइं उडुमाणइं वज्जरइं जिणु ॥ २२ ॥

### 23

पंचसयाइं बिहिं मि उवरिल्लहिं  
 उप्परि बिहिं चत्तारि मउद्धइं  
 पण्णासयइं तिण्णि बिहिं अक्खमि  
 पुणु चउकप्पहं हम्मुच्छेहउ  
 पुणु इइ दुई दियड्डे पुणरवि सउ  
 पुणु उद्धसै उवरि विमाणइं

चउ अड्डे जि बिहि ताहं पैहिल्लहिं ।  
 धरइं वरइं णाणामणिणिद्धइं ।  
 सयइं तिण्णि पुणु बिहिं जि णिरिक्खमि  
 अड्डाइज्जसयाइं सरेहउ ।  
 पुणु पण्णास समीरिउ उच्छउ । 5  
 पंचवीसजोयणइं पहाणइं ।

३ K अवरे. ४ MBP दोदह सणकुमारि ५ MBP सुवंभोत्तरि. ६ P कापिट्टइ. ७ MBP सत्तसवइं.  
 ८ MP सत्ताणवदि°. ९ MBP लेक्खविरुद्धइ. १० P अण्णु वि पुणु तेवीसइ लद्धइ. ११ K तेवीस जि लइ.  
 १२ K वज्जरइ.

23 १ MBP अड्ड. २ MBP पइल्लहिं ३ MBP सुरेहउ, K सुरेहउ but corrects it to  
 सुरेहउ. ४ MBP पुणु. ५ MBP दिवट्टु.

6 a दुदह द्वादश.

23. 2 a चत्तारि सउ दइं चतुःशतौर्ध्वानि, 4 a हम्मुच्छेहउ गृहस्योच्छ्रयः; b सरेहउ सप्तोभः.

सव्वट्टु कुलिय लंघेप्पिणु	वारहजोयणाइं जायप्पिणु ।	
तम्मि तिलोयहु सिहरि निसण्णी	पणयालीसलक्खवित्थिण्णी ।	
ससहरहिमणिहच्छत्तायारी	सिद्धयत्ति भव्वयणपियारी ।	
जोयणाइं जोइय णीसल्लें	मट्टमपुहइ अट्ट बाँहल्लें ।	10

घत्ता—सविमाणहु मज्झि संयणि महारुहि समयमणु ॥  
उववाइसहावे भिण्णमुहुत्तें लेंति तणु ॥ २३ ॥

24

मउडेहि हारेहिं	केऊरंदोरेहिं ।	
कंचीकलावेहिं	मंजीररावेहिं ।	
भूसार्यहासेहिं	अइसुरहिसासेहिं ।	
वेउव्वियंगेहिं	लक्खणपसंगेहिं ।	
चउरंसठाणेहिं	माणवणिवाणेहिं ।	5
अणमिसहिं णयणेहिं	ससिसोम्मवयणेहिं ।	
विच्छिण्णतौवेण	पुण्णप्पह्वेण ।	
कणयं व गयलेव	जायंति खणि देव ।	
णक्खाइं चम्माइं	ण सिराउ रोमाइं ।	
रत्ताइं पित्ताइं	ण पुरीसमुत्ताइं ।	10
मीसियउ मासाइं	ण वलासकेसाइं ।	
मत्थिकसुक्काइं	णउ अत्थि वोक्काइं ।	
सोहग्गगेहम्मि	देवाण देहम्मि ।	

६ MBP बाहुल्लें. ७ MPT सयणु.

24. १ P °डोरेहिं. २ P °पसाहेहिं. ३ MBP अणमिसहिं. ४ MBP °सोम°. ५ MBP °तावेहिं.  
६ MBP °प्पहावेहिं. ७ MK जायत.

11 स य णि म हा रु हि शयने चित्रशालिकायां महोहै; समय म णु समयमनुकृत्य प्रतिसमयं समयधारभ्य विज-  
मुहूर्तं वाचसावत्कालेन परिपूर्णं शरीरं गृह्णातीत्यर्थः.

24. 5 a च उ रं स ठा णे हिं समचतुरस्रसंस्थानैः; b मा ण व णि वा णे हिं मानवाकारैः. 8 a क ण सं व  
सुवर्णमिव. 11 a मी सि य उ इमधुः दाडिका; b व ला स श्लेष्मा. 12 b वो क्का इं कलिजा (?).

उवहरकवाडां	सहं होंति वियडां ।	
हरिसेण वग्गंति	सहस त्ति णिग्गंति ।	15
सुरजोगिसंपुडहु	मणिकिरणपायडहु ।	
जय देव देविंद	जय णाह चिर्हं णंद ।	
एवं पधोसंति	परियणहं तूसंति ।	
सव्वहिं मि तणुमाणु	उद्दिट्टु जिणणाणु ।	
यत्ता—असुरहं पणवीस दह सेसाहं सव्वंतरहं ॥		
देहहु दीहत्तु सत्त जि धणु जोइमसुरहं ॥ २४ ॥		20

## 25

विहिं रयणीउ सत्त विहिं छह भणु	पुणुं विहिं पंच समुण्णउ सुरयणु ।	
पुणु चउहुं मि चत्तारि जि गीयउ	पुणगवि आहुट्टु जि विहिं णीयउ ।	
तिण्णेव य रयणिउ सवियप्पहिं	दहपंचमसोलहमयकप्पहिं ।	
दो पुण अट्टु पढमगेवज्जहि	मज्झत्थियहि दोणिण जंगपुज्जहि ।	
होइ दिपडु रयणि उवरिल्लहि	अमग्गोदिपरिमाणु सुहिल्लहि ।	5
णव पंचाणुत्तरहं मि सारउ	पक्कं जि रयणि पउत्तु सरीरउ ।	
अणिमामहिमालधिमापत्तिहिं	ईसत्तणवसिन्नगईसत्तिहिं ।	
जुत्तकामरूवें कामाउर	कीलालोललील सयरीमर ।	
णउ खुज्जय वामेण वड हुंडय	णारी पुग्गिस्स जि णउ ते पंडेय ।	
आईसाणकप्पसंभवणउं	जावत्तु ता देविहिं गमणउं ।	10
भावणां णाणातणुधारा	आईसाण कप्पपाडिचारा ।	

८ M णिह.

25. १ MBP पुणु चहुं, T पुणु विहिं २ MBP जगि पुज्जहि. ३ MBP परमाणु. ४ MBP एक. ५ MB °मइसत्तिहिं ६ MBP मयलामर. ७ MBP वावण. ८ M संढय. ९ MBP कायपडि°.

14 a उवहर° वासगृहम्. 19 b उद्दिट्टु जिणणाणु कथितं जिनज्ञानेन.

25. 1 b पुणु विहिं पंच ब्रह्मब्रह्मोत्तरयोर्लोन्तवकापिष्ठयोर्द्वयोर्द्वयो. कल्पयुगलयोः पञ्च रत्नयः. 2 a चउहुं मि शुक्रमडाशुकशतारसहसारेषु कल्पेषु, b आहुट्टु अर्धचतुर्थे. 7 b गइ प्राकाम्यम्. 8 b सयरीमर सकलामराः. 9 a वड न्यप्रोधसस्थाना., हुंड विकलावयवा; b पंडेय नपुंसकाः. 10 a °संभवणउं उत्पत्तिः.

घत्ता—फासैं पडिचार सणकुमारमार्हिदरुह ॥

रूवेण करंति उवरिम चउकप्पय विबुह ॥ २५ ॥

26

पुणु चउकप्पसमुम्भव सुरवर  
वरि चउकप्पहिं मणपडियारा  
सप्पडियार णिपवि अणिदहु  
अहमिदहु पासाउ जिणिदहु  
कहमि आउ तियसहं सुहसंगमु  
णायहुं पल्लइं तिण्णि वियाणसु  
अट्टाइज्ज पल्ल सोवण्णहं  
सेसहं होइ दिवहुं णिरुत्तउ  
एकु पल्लु सहुं सहसैं वरिसहुं  
एकु जि सुकु सएण समेयउ  
पंच सत्त पुणु णव एयारह  
एकुण एक्कवीस तेवीस वि  
चउँत्तीसेकताल अडदौल वि  
सोहम्माइहिं भणइ सतिलयहं

होंति सहपडिचार सुहंकर ।  
एत्तो उवरिम णिप्पडियारा ।  
अनुँलसोक्खु णिहिलहु अहमिदहु ।  
गयरायहुं तिरायवइवंदहु ।  
असुर जियंति एक्कु सायरसमु । 5  
वणदेवहुं पल्लु जि परमाउसु ।  
दीवहं दोण्णि पुँण्णपरिपुण्णहं ।  
चंदु जियइ लक्खें संजुत्तउ ।  
जीवइ दिणयरु वड्डियहरिसहुं ।  
तारारिक्खहुं ऊणउ णेयउ । 10  
तेरह पण्णारह सत्तारह ।  
पंचवीस भणु सत्तावीस वि ।  
पंचावण्ण जि पल्लइं जगरवि ।  
आउ अरुँयंतहं सुरविलयहं ।

घत्ता—वे सत्त दसेव चोईहठारह वि ॥

15

वीस जि बावीस उँडु एकु वड्डिमु कैह वि ॥ २६ ॥

26. १ MBPK अट्टलु. २ MB णिराय°. ३ MBP पल्ल परिपुण्णहं. ४ MBP चउतीसे°. ५ MBP अडताल. ६ P सञ्चयंतहं. ७ MBP चउदह छइह अट्टारह. ८ MBP उडु एकु. ९ K कहमि.

26. 2 a वरि उपरि. 4 b तिरायवइवंदहुं त्रिभुवनपतिवन्द्यानाम्, त्रिराज्यपतिवन्द्यानाम्. 8 a से सहं विशुदमिवातस्तानितोदधिदिकुमाराणाम्. 10 a सएण समेयउ स्रतवर्षाधिकं पल्लमेकं शुक्रो जीवति; b ऊणउं किञ्चिदूनम्. 13 b जगरवि जगन्नास्करः. 14 a सतिलयहं सतिलकानां देवीनाम्; b सुरविलयहं सुरवनितानाम्.

## 27

ताम जाम तेत्तीससमुहं  
 कप्पहं कप्पाईयहं प्पहउ  
 सक्कीसाणहं अवहि प्पभावइ  
 पुणु दोसग्ग देव बीयहि तलु  
 भणु चउकप्प तियस तइयावणि  
 आणयपाणय सुर पंचमियहि  
 णव गेवज्ज मुणंति महंतउ  
 सुद्धइ ओहिइ अणुदिस सुंदर  
 उप्परि णियविमाणचूडामणि  
 पंचवीस जोयणइं वणेसहं  
 अर्वरु वि हवई ओहि कयसमरहं  
 जिह असुरहं तिह रिक्खहं तारहं  
 सुक्कइ पुणु मेइं अक्खिउ भल्लउ

सव्वट्टम्मि आउ कयमइं ।  
 अक्खमि णाणविसेसु वि जेहउ ।  
 जाम पढममैहिमंतु विहावइ ।  
 पेच्छंति वि जाणंति वि णिम्मलु ।  
 चउसंभूय चउत्थी मेइणि । 5  
 आरण्णुयामर उट्टमियहि ।  
 ताम जीम सत्तमणरयंतउ ।  
 तिज्जगणाडि पेक्खंति अणुत्तर ।  
 जा ता देव मुणंति महागुणि ।  
 संखाजुत्तइं जोइसवासहं । 10  
 गणियउ जोयणकोडिउ असुरहं ।  
 चंदहं सुरहं गुरुअंगारहं ।  
 संखांहिउ ओहिविसउल्लउ ।

पत्ता—णारय वि मुणंति जोयणेक्कं रयणप्पहहि ॥

गाउय अद्धउ होइ हाणि सेसैहि महिहि ॥ २६ ॥ 15

## 28

कम्माहारु असेसहं जीवहं  
 लेवाहारु वि दीसइ रुक्खहं

णोकम्माहारु वि भवभावहं ।  
 कवलाहारु णरोहतिरिक्खहं ।

27. १ MBP तेत्तीस<sup>०</sup>. २ MBPT सव्वट्टहमि. ३ MBP <sup>०</sup>महिअंतु. ४ K छमियहि. ५ P ते जि-  
 गणाडी. ६ MBP अवर. ७ P वहइ. ८ MB तिक्खहं. ९ MBP सइ. १० MP सखाई ओहीविसयल्लउ;  
 B संखाईउ ओहिविसयल्लउ. ११ MBP जोयणेक्क. १२ M णीसेसहि.

28. १ B लेवाहारु.

27. 1 b सव्वट्टम्मि सर्वार्थसिद्धौ; कयमइइ कृतसौख्यानि कृतकल्याणानि वा. 3 a प्पभावइ प्रवर्तते; b <sup>०</sup>महिमंतु पृथिव्या अन्तः. विहावइ विभावयति जानाति. 8 a अणुदिस नव अनुदिशदेवाः. b अणुत्तर पञ्च अणुत्तरदेवाः. 10 a वणेसह व्यन्तराणाम्. 11 a कयसमरहं नारकसुद्धकारिणाम्. 13 b ओहिविसउल्लउ अवधिज्ञानविषयः.

28. 1 b णोकम्माहारु वण्णां पर्याप्तानां तयाणां शरीराणां योगपुद्गलादानं णोकम्माहारः; भवभावइ शरीरयुक्तानाम्.

ओजाहार पक्खिसंघायहं  
अहमिद वि करंति तेत्तीसहिं  
वचीसेकंतीस पुणु तीसहिं  
एकेकउ जि एम पडिहम्मह  
आउंणिबंध महोवाहिसंघाहिं  
पल्लजीवि पुणु भिण्णमुहुत्ते  
ऊससंति केइ वि पक्खेण जि  
सरसइं सुरहियाइं अइमिदुइं  
आहुरंति दवियाइं सइत्ते

मणभोयणु चउदेवणिकायहं ।  
बोलीणहिं वरवरिससहासहिं ।  
एकुणतीसहिं अट्टावीसहिं । 8  
सोळ्हमे बावीसहिं जिम्मह ।  
णीससंति तेत्तियाहिं जि पक्खहिं ।  
णीससंति अह ताहं पुहत्ते ।  
असुर असंति अहिय सहसेणं जि ।  
सुहुमरं सुद्धरं णिद्धरं इट्टरं । 10  
परिणमंति सहस सि तणुत्ते ।

घत्ता—संसारिय जीव चउविह चउगइभिण्ण जिह ॥

इंदियमेएण पंचपयार पउत्त तिह ॥ २८ ॥

29

काएं छंविह चवलथिरेण वि  
जलणिहिंविहं वि कंसायं जाया  
संजमदंसणेण तिचउविह  
भव्वसेण विविह सम्मत्ते  
आहारं आहारिय जे जे

तिविह तिविहजोएं वेएण वि ।  
अट्टमेय णाणं विण्णाया ।  
लेसापरिणामेण वि छंविह ।  
सण्णि असंणी दो सण्णित्ते ।  
अउसु वि गइसु परिट्टिय ते ते । 5

१ MBPK ओजाहार. २ MBP तेतीसहिं. ४ MBP ०सेकतीस. ५ MBP पविहम्मह. ६ MBPK सोलहमह. ७ MBP आउ णिबदु. ८ MBP पुणु. ९ MBP केइ जि पक्खेण वि. १० MBP सहसेण वि.

29. १ MBP छंविह थिरेण तसेण वि; T चवलछिरेण अपलस्वभावानां स्थिरपृथिव्यादीनाम्. २ MBP ०विह व. ३ MB कसायं. ४ MBP असण्णि दोण्णि.

8 b मण भो यणु मानसाहारः. 4 b बो ली ण हिं व्यतिक्रान्तेः. 6 a प डि ह म्म इ प्रतिहन्यते. 8 b अह ता इं पुहत्ते अथवा तेषां भिन्नपुहुत्तीनां पृथक्त्वेन आगमभाषया क्षयाणामुपरि नवानामधः निश्चसन्ति. 9 b असं ति अश्रन्ति भोजनं कुर्वन्ति. 11 a दवि या इं पुद्गलद्रव्याणि; सइत्ते त्वचित्तेन; b तणुत्ते तणुरुपेण.

29. 1 a का एं छं वि ह षड्जीवनिकामेन; च व ल थि रे ण चपलस्वभावेन पृथिव्यादिस्थिरस्वभावेन च. 2 a ज ल णि हि वि ह चट्टविंघाः; b अ ट्ट मे य णा णं पञ्चज्ञानानि त्रीण्यज्ञानानि तैरष्टभेदः. 3 a सं ज मे त्वा दि— त्रयः संयमासंयमसंयमासंयमाः; तथा चत्वारः क्षायिकौपशमिकासंयमाः अथवा सामायिकच्छेदोपस्थापनसूक्ष्मसं- राययथाख्याताः परिहारविशुद्धेरभावात्; दंसणेत्त्यादि त्रीणि दर्शनानि क्षायिकौपशमिकक्षायोपशमिकानि; तथा चत्वारि चक्षुरचक्षुरवधिकेवलानि. 4 a भ व्व से ण विविह भव्याभव्यौ द्विविधौ.

केवलिसमुहय विग्गाहगद्गय  
ते ण लैति आहारु वियारिय  
मग्गाणठाणं चोहंभेयं  
मिच्छादिट्टि पहिल्लउं गीयउं  
अविरयसम्माइट्टि चउत्थउं  
छट्टउ पुणु पमत्तसंजमधरु  
अट्टमु होइ अउव्वु अउव्वउं  
दहमउं सुहुमराउ जाणिज्जइ  
वारहमउं परिखीणकसायउ  
उज्झियतिविहसरीरभरंतरु

अरुह अजोइ सिद्ध परमप्य ।  
सेस जीव जाणहि आहारिय ।  
णिसुणहि गुणठाणां मि पयइं ।  
सासणु बीयउं मीसु वि तीयउं ।  
पंचमु विरयाविरउ पसत्थउ । 10  
सत्तमु अप्पमत्तु गुणसुंदरु ।  
अणिर्यत्तिल्लउ णवमु अगव्वउं ।  
पयारहमुवसंतु भणिज्जइ ।  
तेरहमउं सजोइजिणु जायउ ।  
उवरिल्लउं अजोइ परु अक्खरु । 15

घत्ता—णारय चत्तारि चत्तारि जि पुणु सुरपवर ॥

तिरियंच वि पंच णीसेसंमि चडंति णर ॥ २९ ॥

30

कम्मविहम्ममाण ससरीरा  
वंसणणाणसहावपहट्टा  
ताहं चेट्ट जा होइ समासम  
जेम तेल्लु सिहिसिहपरिणामहु  
जीवें लइयउ जाइ जियत्तहु

सासयकरणुज्जय विवरेरा ।  
होति जीव उक्किट्टाणिकिट्टा ।  
सा तहलियगहणभावक्खम ।  
तेम कम्मपोग्गलु वि णिसामहु ।  
तिव्वकसायरसेहि पमत्तहु । 5

५ MBPK चउदह° ६ MBPK मिच्छाइट्टि. ७ MBP °सजमहरु. ८ MBP अणियट्टिल्लउ णवउं.  
९ MBP परिहीण°. १० MBP णीसेसह मि.

30. १ MBP कम्म पोग्गलु. २ MB जाय जियत्तहु; P जियंतहु.

6 a केवलीत्यादि—केवलिनो यदा समुद्रघात कुर्वन्ति दण्डकपाटप्रतरपूरणत्वेन त्रैलोक्यं भरन्ति तदाष्टसम-  
थादनाहारकाः. अन्यदा आहारका एव. 10 b विरयाविरउ विरताविरतो देशसंयतः. 12 a अउव्वउं  
अनुपमम्, b अणियत्तिल्लउ अनिवृत्तिकरणम्. 13 a सुहुमराउ सूक्ष्मसांपरायम्; b उव्वसतु उपशान्त-  
कषायम्. 15 a °तिविहसरीर° औदारिक तैजसं कार्मणं च; b अक्खरु अविनश्वरं सिद्धस्वरूपम्.

30. 1 a ससरीरा ससारिणः; b सासयकरणुज्जय शाश्वतकरणाः शाश्वतपरिणामास्तेषुथताः; वि-  
वरेरा विपरीताः; सिद्धा इत्यर्थः. 3 a चेट्ट चेष्टा मनोवाक्यव्यापारः; समासम प्रशस्ता अप्रशस्ता च; b तह-  
लियेत्यादि—तया शुभाशुभचैष्टया दलितो विभक्तः अनेकप्रकारः योसौ ग्रहणभावः कर्मादानपरिणामः तत्र क्षमाः  
समर्थाः. 5 a जाइ जियत्तहु जीवत्त्व गच्छति.

जिह सिहिभावहु वञ्चइ इंधणु  
 असुहें असुहु सुहें सुहु संघइ  
 अमव जीव जिणणाहें इच्छिय  
 मइसुंओहिमणपजव केवल  
 णिहाणिहा पयलापयला  
 चक्खुअचक्खुदंसैणावरणउ  
 तेहिं विणासिउ णवसंखायउ  
 दंसणमोहणीउ सम्मत्तु वि  
 दुविद्धु चरित्तमोहु विक्खायउ  
 तं कसायजायउ सोलहविहु  
 पढमकसायचउक्कु सुभीसणु

तिह कम्मेण जि कम्महु बंधणु ।  
 सिद्धैभडारउ किं पि ण बंधइ ।  
 पक्कु ण ते वि अणंत णियच्छिय ।  
 णाणावरणविमुक्क सुंणिक्कल ।  
 थीणगिद्धि णिहा पुणु पयला । 10  
 अवही केवलदंसैणवरणउ ।  
 वेयणीयदुगु सायासायउं ।  
 मिच्छत्तु वि सम्मामिच्छत्तु वि ।  
 णोकसाउ णामेण कसायउ ।  
 इयर भणेसमि पच्छइ णवविहु । 15  
 सत्तमणरयगामि दिहिदूसणु ।

घत्ता—अइकोहु समाणु माया लोहु वि दुत्थयर ॥

उवसमहुं ण जाइ जइ वि पबोहइ तित्थयर ॥ ३० ॥

31

अवरु अपञ्चक्खाणु गुरुक्कउ  
 संजलणु वि जलंतु उच्छांविउ  
 भंयरइयरइदुगुंछउ जित्तउ  
 सुर णर णंरय तिरिय चउआउ वि  
 गइणामउ वि जइणामु वि भणु  
 तणुसंघाउ तणुहि संठाणउं

पञ्चक्खाणु चउक्कु विमुक्कउ ।  
 थीपुंसंदराउ उइवाविउ ।  
 हासु वि सेंहुं सोएण णिहिसेंउ ।  
 बायालीसविहेयउं णाउं वि ।  
 तणुणामउं पुणु तणुहि णिबंधणु । 5  
 तणुअंगोअंगु वि णामाणउं ।

३ MBP सिद्ध भडारउ; K सिद्धभडारउ but corrects it to सिद्ध. ४ MBP °सुइओहि°. ५ MBP सुणिम्मल. ६ MBP °दसणहरणउ. ७ K दुक्खयर but corrects it to दुत्थयर.

31. १ MBP चउक्क. २ P उण्हाविउ. ३ MBPT उइवाविउ. ४ MBP भइरइवरइ°. ५ MBP सर. ६ P विहित्तउ. ७ P णिरय. ८ MBP जाइणाउ. ९ MBP तणुअंगोअंगु वि णिम्मणउ.

7 a संघइ उपार्जेयति. 17 दुत्थयर दुःखतरः.

31. 1 b विमुक्कउ विमुक्क सिद्धैः. 2b °राउउक्का विउ °भाववेदः क्षयितः. 3 b णिहिणउ विनि-  
 क्षितः. 4 b बायाली से त्या दि—पिण्डत्वेन द्वाचत्वारिंशत्तामप्रकृतयः. 5 a गइणामउ नरकतिर्यङ्मनुष्यादि-  
 गतिनाम. 6b णामाणउं निर्माणम्.



तणुसंधंङणु वण्णंगंधिल्लउं  
 अणुपुव्वि अगुरुलहु लक्खिउ  
 ऊसासु वि आदाउज्जोयउ  
 थावरु थूलुसुहुसु पज्जत्तउ  
 पत्तेयंगणाउं साहारणु  
 असुहु सुभगु दुब्भगु सुसरिल्लउ  
 णाउं अणादेज्जउ जसकित्ति वि

रसणामउं अवरु वि फासिल्लउं ।  
 उवघाउ वि परघाउ वि अक्खिउ ।  
 अणु विहायगइ वि तसकायउ ।  
 अणु वि मण्णिउं अण्णत्तउ । 10  
 थिरु अथिरु वि सुहणाउं सकारणु ।  
 दुस्सरु आदेज्जउ जगि भल्लउ ।  
 तिथ्यरत्तु णिमिणु मलकित्ति वि ।

घत्ता—चउगइजम्मेण गइणामउं अट्टइविहु ॥

इंदियइं गणेवि जाइणामु भणु पंचविहु ॥ ३१ ॥

15

### 32

हणिवि पंच णामइं पंचविहइं  
 दो छह पुणु दो चउ अट्टविहइं  
 समलामलइं दोणिण जगि गोत्तइं  
 दाणभोयउवभोयणिवारउ  
 अंतराउ पंचविहु धुणेप्पिणु

एकु तिभेयउ दों दो दुविहइं ।  
 उच्चारुयइं जाइं एक्कविहइं ।  
 ताइं मि जेहिं दूरि परिचत्तइं ।  
 वीरियलाहु हेउसंघारउ ।  
 अडयालीसउं सउ विहुंणेप्पिणु । 5

१० K संघदणु. ११ P वणु गंधिल्लउ. १२ MBP अणुपुव्विय अगुरुलहु. १३ MBP आदाउज्जोयउ. १४ MB अण्णत्तउ.

32. १ M दो पुणु दुविहइं. २ MBP °लाह°, K लाहु but corrects it to लाह. ३ MBP विहुंणेप्पिणु.

9 a आ दाउ आनाप. 12 b आ दे ज्जउ दीप्पिसहितम्. 13 a अणा दे ज्जउ अनादेयम्; b णि मि णु निन्नं नीचम्; मलकित्ति अयश.कीर्ति 14 अट्टविहइं चतुर्भेदं चतुर्गतिरित्यर्थः. 15 जाइणामु एकद्वित्रिचतुः-पञ्चेन्द्रियजातिनाम, पंचविहु पञ्चप्रकारम्—तथाहि, औदारिकवैक्रियकाहारकतैजसकर्मणशरीरनाम पञ्चविधम्.

32. 1 a पंच णामइं पंचविहइं औदारिकादिशरीरनिबन्धननामानि पञ्च, तथा औदारिकादिशरीराणां संघातनामानि पञ्च, तथा कृष्णनीलश्वेतरत्तर्पातवर्णनामानि पञ्च, तथा कटुतिक्तकषायाम्लमधुररसनामानि पञ्च; इति पञ्च नामानि पञ्चविधानि, b एकु तिभेयउ औदारिकवैक्रियकाहारकशरीराङ्गोपाङ्गनाम त्रिभेदम्; दो दो दुविहइं सुरभिदुरभिगन्धनाम प्रशस्ताप्रशस्तविहायोगतिनाम च. 2 a दो छह समचतुरस्रवर्त्माकन्यग्रोधकुब्जवामनहुंढस्थाननाम षड्विधम्, वज्रर्षभनाराचवन्नाराचनाराचअसंप्राप्तास्पृष्टादिकाइंसांघटननाम च षड्विधम्; दो चउ नरकगत्यादिनाम नरकगत्याद्यानुपूर्वीनाम च चतुर्भेदम्, अट्टविहइं कर्कशमृदुगुरुलघुशातोष्णस्निग्धसूक्ष्मस्पर्शनामान्यष्टविधानि.

पयडिहि माणवंगु मेलेपिणु  
जे गर्य जीव परमणिष्वाणहु  
चरमसररीमाण किंचूणा  
णिम्मल गिरुवम गिरहंकारा  
उडुंगमणसहावे रंपिणु  
अट्टेमपुहईवट्टि णिविट्टा

सुद्धंसहाउ सैंभु लहेपिणु ।  
डुहविरहिडु सासयठाणहु ।  
घवगयरोयसोय अविलीणा ।  
जीवदव्वघण णाणसरीरा ।  
उडुलोउ सयलु वि लंघेपिणु । 10  
अभव जीव जिणदेवे दिट्टा ।

घत्ता—ते साइ अणाइ दुविह अणंत जि विविहदुहे ॥

ते पुणु ण मरंति णउ पडंति संसारमुहे ॥ ३२ ॥

33

णउ वाल णउ वुडु  
णीसाव णित्ताव  
णाणंग णिम्मेह  
णिकोह णिल्लोह  
णिव्वेय णिज्जोय  
णिद्धम्म णिकम्म  
णीराम णिकाम  
णिव्वेस णिल्लेस  
णीरस महाभाव  
अव्वत्त चिम्मेत्त  
ण लुहाइ धेप्पंति  
ण रूयाइ सिज्जंति

णउ मुक्ख सुवियडु ।  
णिग्गाव णिप्पाव ।  
णिण्णेह णिद्देह ।  
णिम्माण णिम्मोह ।  
णीराय णिच्चोय । 5  
णिच्छम्म णिज्जम्म ।  
णिब्बाह णिद्धाम ।  
णिग्गंध णिप्पास ।  
णीसइ णीरुव ।  
णिच्चित्त णिव्वित्त । 10  
ण तिसाइ छिप्पंति ।  
ण रईइ सिज्जंति ।

४ B मिद्धसहाउ. ५ MBP सयमु. ६ MB गय परम जीव. ७ MBP दुक्खविमुक्कहु. ८ K उडुं गमणु. ९ K अट्टमि.

33. १ P णीसास. २ MBP णीताव. ३ MBP रुवाइ.

6 a मा ण वंगु नरशरीरम्, b स इ भु सहजः. 8 b अ विली णा कदाप्यपरित्यक्तसिद्धस्वरूपाः. 11 a °व ट्टि °पृष्ठे. 12 सा इ अणा इ अनादिसादिकालद्रयापेक्षया पर्यायार्थिकद्रव्यार्थिकनयापेक्षया वा.

33. 3a णि म्मे ह निर्मेषसः पञ्चेन्द्रियज्ञानरहिताः केवलज्ञानिनः. 8a णि व्वे स निर्देषाः. 12 b सि ज्जंति पीब्बन्ते.

णाहारु भुंजति	ओसहु ण जुंजति ।	
ण मलेण लिप्पंति	ण जलेण धुप्पंति ।	
णिहं ण गच्छंति	अणंथेणा वि पेच्छंति ।	15
अमणा वि जाणंति	सयरायरं ज्ञस्ति ।	
सिद्धाण जं सोक्खु	तं कहइ चम्मक्खु ।	
किं माणवो को वि	सुरं खयरु देवो वि ।	

घत्ता—पंचिन्द्रियमुक्क परमप्पइ हूयँउ विमले ॥

जं सिद्धहं सोक्खु तं ण वि कासु वि भुवणयले ॥ ३३ ॥ 20

## 34

एहा दुविह जीव मइं अक्खिय	कहमि अजीव वि जेम णिरिक्खिय ।	
धम्मु अधम्मु दो वि रूडुज्झिय	आयासें काले सहुं बुज्झिय ।	
गइठाणोग्गहवत्तणलक्खण	के वि सुणंति सुणाण वियक्खण ।	
संतु अणाइ समउ वट्टंतउ	तीउं कालु अगामि अणंतउ ।	
तासु ठाणु भण्णइ णरलोयउ	धम्ममाधम्महं सव्वतिलोयउ ।	5
बिहिं मि लोयणहमांण वियप्पउ	आयासु वि अणंतु सुसिरप्पउ ।	
तं जि अलोउ जोइपणत्तउ	पोगलु होइ पंचगुणवंतउ ।	
सहै गंधे रुवै फासें	जुत्तउ भिण्णवण्णविण्णासें ।	
खंधु देसु अर्द्धद्वपपसु वि	परमाणुउ अविहाइ असेसु वि ।	

घत्ता—तं सुहुमु वि थूलु थूलुसुहुमु पुणु थूलु भणु ॥ 10

थूलाण वि थूलु चँउपयारु महुं सुणइ मणु ॥ ३२ ॥

४ B भुजति, P हुजति and gloss योजयन्ति. ५ MBP अणयण जि. ६ MBP सुर. ७ MBP हूयइ. ८ MBP णउ.

34, १ MBP रुडुज्झिय. = P वट्टंतउ. ३ MB तीयउ, P तइयउ. ४ MBP धम्ममाधम्महं सयलु. ५ MBPK माणु वि अप्पउ, T लोयणमाणु. ६ MBP अद्धदु. ७ M सुहुमुसुहुमु तह सुहुमु वि पुणु; B चउ-पयारु सुहु मुणइ मणु, P सुहुमु सुहुमु तह सुहुमु पुणु

19 परम प्पइ परमपदे मोक्षस्थाने.

34. 4 a सतु मान्तः, अणाइ अनादिः; समउ वट्टंतउ वर्तमान. कालः समयः. 5 a तासु उक्त-व्यवहारसमयस्य. 6 a लोयणह मा ण लोकाकाशपरिमाणम्; b सुमिरप्पउ शुभिरस्वरूपम्. 9 b अविहाइ अविभाज्यः.

35

गंधु वण्णु रसु फासु संसहउ  
 थूलसुहुमु जोण्हाछायाइउ  
 थूलथूल पुणु धरणीमंडलु  
 सुहुमइं कम्माइयइं सणामइं  
 घण्णाइयहिं रसेहिं अणेयहिं  
 पूरणगलणसहावणिउत्तइं  
 भम्मसिजंतउ परमजिणिंदे  
 वसहसेणु सुहभावें लइयउ  
 सोमप्पहु सेयंसणरेसरु  
 इय रिसहहु परिमुक्कविसाया  
 बैम्ही सुंदरि अज्जिय संघहु  
 दंसणमोहणीयपंडिरुद्धउ  
 तावस कंदाहारु मुपप्पिणु  
 मोक्खमग्गामिहि परमेसरु

सुहुमु थूलु वज्जरइ समइउ ।  
 थूलु सलिलु वीरेण णिवेइउ ।  
 सग्गविमाणपडलु मणिणिम्मलु ।  
 मणभासावग्गणपरिणामइं ।  
 परिणमंति संजोयविओयहिं । 6  
 पोग्गलाइं विविहाइं पउत्तइं ।  
 णिसुणिवि धम्मु सुधम्मणंदे ।  
 पुरिमतालपुरवइ पावइयउ ।  
 थिय पव्वज्ज लेवि हयमयजरु ।  
 णिव चउरासी गणहर जाया । 10  
 कंतियाउ जायाउ महग्घहु ।  
 एक्कु मरीइ णेय पडिबुद्धउ ।  
 थिय कच्छाइय रिसिब्बउ लेप्पिणु ।  
 हुयउ अणंतवीरु अग्गेसरु ।

घत्ता—सावउ सुयकित्ति सावइ देवि पियंवइय ॥ 16

भरहेण वि पुज्ज पुप्फयंत एह जिणि रइय ॥ ३५ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए  
 महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे महावत्थुणिहेसो णाम  
 एयारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ११ ॥

॥ संधि ॥ ११ ॥

35. १ M सुसहउ. २ MBP add after this: सुहुमुसुहुमु परिमाणुविसेसइं; लग्गहिं णिवडवि  
 अप्पपएसइं. ३ P पव्वइयउ, ४ MBP सेयसु णरेसरु. ५ MBP बंभी. ६ K परिबुद्धउ. ७ MBP पइ; K  
 पइ but corrects it to एह and gloss एतास्मिन् जिने.

35. 1 b स म इ उ मार्ववयुक्तः उपशमाद्रौ वा, 4 a स णा म इं ज्ञानावरणादिनामयुक्तानि. 12 b एक्कु  
 मरी इ एको भरतपुत्री मरीचिनामा प्रतिबोधं न प्राप्तः, 16 एह जिणि एतास्मिन् जिने.

## XII

अरिवराणिद्वारणि खर्तुद्धारणि तिजगलच्छिविजयाणउं ॥  
विहलियसाहारणि मेइणिकारणि भरहे दिण्णे पयाणउ ॥ १ ॥

### I

खुड खुड सरयागमि अप्पमाणु  
णं दीसइ ओमैत्थिउ अप्पण  
णं जगहरि णीलुल्लोउ वद्धु  
अइ दसें वि दिसा सइ गयरयाइं  
समिकुंभगालियजोणहाजलेण  
णिडुहैइ कमलु सरण ससंकु  
सो अज्ज वि दीसइ मलविरुद्धु  
तेण जि रोसें रवि तिच्चु तवइ  
पंकवखइ सुंक्कइ णलिणणालु  
कुवलयदिहिर्गारउ णाइं राउ  
तरु कुसुमामोणं महमहंति  
अलि रुणुरुणंति पाँवाहपिंड

णहु णाइं धोयहरिणीलभाणु ।  
सरयब्भद्धहियखंडहुं कपण ।  
तारामोत्तियञ्चुवुक्कणिद्धु । 5  
णं चारित्तइं सज्जणकयाइं ।  
पयम्वालियाइं णं णिम्मलेण ।  
तहु तेण जि लग्गउ पिंडपंक्कु ।  
णियडिंभपराहवि को ण कुद्धु ।  
सररुहसुहि किं चिक्खिल्लु खवइ । 10  
अइउग्गत्तणु बंधवहं कालु ।  
कयबंधुजीवसुंच्छायभाउ ।  
रयकविलइं सलिलइं वणि वहंति ।  
महुमत्ता णं गायंति सोँड ।

घत्ता—सागयमयलंछणु रुइरंजियजणु जैइ मयमलिणु ण हांतउ ॥ 15  
तो हँउं कयसंतिहि जिणजसयंतिहि गहु जि उप्पउं देंतउ ॥ १ ॥

1. १ MPT खर्तुद्धारणि but gloss क्षत्रियधर्मप्रकटने. २ MBP दिण्णु. ३ P ओम्मत्थिउ. ४ P अइदिस°. ५ MBP णिद्धइ. ६ MBP विवि पंकु. ७ MBP सुक्खइ. ८ T दिहिहारउ धृतेरपहारको धरकश्च. ९ MBP °सच्छाय°. १० P पावोह°. T पायोह°. ११ MP जइय. १२ MBP ह.

1. 1 अरिवराणिद्वारणि प्रचण्डशत्रुन्मूलने, खर्तुद्धारणि दृष्टनिग्रहांशप्रतिपालनलक्षणक्षत्रियधर्म-  
प्रकटने, °लच्छिविजयाणउ °लक्ष्मीविजययो प्रापकम्. 4 a अप्पण भजेन ब्रह्मणा, 5 a णीलुल्लोउ नील-  
चन्द्रोपकम्. 10 b गररुहसुहि सूर्ये. कमलबान्धवः, खवइ महने विनाशयति वा. 12 a राउ राजा चन्द्रो  
वा. 14 a पावाहपिंड पापसदृशशरीराः, कृष्णवर्णा इत्यर्थः ; b सोँड मद्यपाः. 16 उप्पउ उपमा.

2

पणवेप्पिणु लेप्पिणु सिद्ध सेस  
 आवेप्पिणु पइसेप्पिणु अउज्झ  
 मणु ढोयवि जोयवि तणयवयणु  
 दालिहु रउहु पूवासियाहं  
 णिहणिवि चरेण चामीयरेण  
 मंतिवि अहंगु पंचंगु मंतु  
 परियाणिवि माणिवि बुडु चारु  
 अईवग्गिउ मग्गिउ को ण कप्पु  
 भुयदंडचंडविक्रममरण  
 गंभीरतूरलक्खइं हयाइं  
 कयसमरहं अमरहं थरहरंति  
 असुरिंदहं णाइंदहं पियाइं  
 तुट्टइं फुट्टइं गिरिमहियलाइं  
 थिरभावहं देवहं जाय संक

अवठंभिवि रंभिवि सयल देस ।  
 परचक्कमुक्कपहरणदुगेज्झ ।  
 परियंचिवि अंचिवि चक्करयणु ।  
 काणीणहं दीणहं देसियाहं ।  
 णाणाविलासतोसायरेण । 5  
 को सत्तु मित्तु को तव्विरत्तु ।  
 ओहारिवि धारिवि रज्जभारु ।  
 भणु केण ण केण वि मुक्क दप्पु ।  
 छक्खंडमंडलावणिकरण ।  
 दुप्पेक्खइं रक्खइं हयमयाइं । 10  
 गत्तइं सोत्तइं बहिरत्तु जंति ।  
 पायालइं विउलइं कंपियाइं ।  
 झल्लल्लियइं वैलियइं सरिजलाइं ।  
 रवपेल्लिय डोल्लियै रवि ससंक ।

घत्ता—तहु तिजगविमद्दहु तूरणिणइहु मिलिउ दुग्गणिव्वाहणु ॥ 15  
 परमंडलसाहणु गहियपसाहणु खाणि चउरंगु वि साहणु ॥ २ ॥

3

णिग्गयं णिववलं  
 कणयकुंतुज्जलं

धरियहलसव्वलं  
 चंदणसुपरिमलं ।

2. १ MBP भयगयाइ. २ MB झल्लिल्लियइं. ३ MBP चलियइं. ४ MBP रह°. ५ MP जेल्लिय. ६ M परमंडलु.

3. १ MB °कंतुज्जलं.

2. 1 b अवठं भिवि हठादाकम्य; रं भिवि प्रतिप्राहयित्वा. 4 d देसियाहं परदेशजनानाम्. 6 a अहंगु अभङ्गोऽविकल.; पचगु मंतु सहायाः साधनोपायो देशकालबलाबलौ । विपत्तेश्च प्रतीकार. पञ्चाङ्गो मन्त्र इष्यते. 7 b ओहारिवि अवधार्य. 8 a अइवग्गिउ अतिगर्वित.. 15 दुग्गणिव्वाहणु दुस्तरे प्रदेशे निस्तारणसमर्थम्.

3. 1 b °सव्वलं तिलपीडनायुधं घाणी.

सरसधुसिणारुणं	खर्यंतरणिदारुणं ।	
तुरुतुरियकाहलं	सुहडकोलाहलं ।	
मुकहुंकारयं	फुंसियभसिधारयं ।	5
बद्धतोणीरयं	अहियखोणीरयं ।	
गहियसंणाहयं	णवियणियणाहयं ।	
वलइयसरासणं	परिहियविहूसणं ।	
वृद्धंजंपाणयं	चोइयविमाणयं ।	
जंतजक्खामरं	चलियचलचामरं ।	10
खुहियणाणाणिवं	जणियगमणुच्छवं ।	
कामिणीसुललियं	किंकिणीमुहलियं ।	
रहियवाहियरहं	छत्तछाइयणहं ।	
वंदिवणियगुणं	दिण्णामणिककंणं ।	
पवणधुयधयवडं	गिरिगरुयगयघडं ।	15
गहियमयगारवं	रणियघंटारवं ।	
परिभमियमहुयरं	मुकढक्कासरं ।	
मलियफणिसेहरं	काललीलाहरं ।	
णडियसुंरणणडं	चडुलहयवरयडं ।	
बहलधूलिरयं	घुलियमणिहारयं ।	20

घन्ता—कयरिउवहुविरहं जगजसंभरहं चलियण पध्दाइउ ॥

वररहमायंगहिं भडहिं तुरंगहिं सेण्णु ण कथ्यइ माइउ ॥ ३ ॥

## 4

भणी कागणी कामिणी दंडरणं

णिसीसक्कमाणिकभाभारभिण्णं ।

रहंगं णरिंदंगतुंगं पहारं

अजेयं सुतेयं करालं किवाणं ।

२ MBP खर्यतरणि° . ३ MP फुरिय° . ४ M रुट° ५ MBP °कचणं . ६ MBP °सुरवरणइं . ७ MBP °जयभरहं चलतेण , T जगजसभरहं , but records a p जगजयेति पाठे जगति जयेनोपलक्षितो भरतस्तेन . ८ P पधाइयउ . ९ MBP वररहवरमायंगहिं . १० P माइयउ .

३ b ख य त र णि द ा र णं प्रलयकालसूर्यसदृशम् . 6 a °तो णी र यं तुर्णार , b अ ह्नि य खो णी र यं क्षत्रुभूम्यासक्तम् .

4. 1 b णि सी त्या दि—चन्द्रकान्तसूर्यकान्तमाणिक्यानां भासस्तासा भारेण भिन्नं कर्तुरिताङ्गम् . 2 a ण रि दं ग तुं गं चक्रवर्तिशरीरप्रमाणम् .

पियं छत्तचम्मं सुरम्मं महंतं	महावीरखंधारवित्थारवंतं ।
हरीकीरपिंछोर्हकंतिह्णकाओ	करी णिज्जियाणिंदेविंदणाओ ।
पुरोहो णिरोहो व्व भीमावयाणं	णिवासो पयासो पयासंपयाणं । 5
समे वेसमं वेसमे सामकारी	चमूपुंगवो दुग्गमग्गावहारी ।
गिही <sup>३</sup> को वि देवो मैहिड्डीसमिद्धो	महंतेण पुण्णेण रायस्स सिद्धो ।
सुरागारकिम्मीरकम्मावयारो	परो को वि अण्णो णिकेऊहकारो ।

घत्ता—इय साहियभुवणहिं चोर्हहरयणहिं सहुं णरणाहहु इच्छइ ॥

हयगयरहवाहणु चळ्ळिउ साहणु सयलु रहंगडु पच्छइ ॥ ४ ॥ 10

5

मणिरहवरे चडिउ	णं इंदु ण्हि वडिउ ।
दढकढिणभुयजुयलु	अइवियडवच्छयलु ।
किं भणमि पुरिसहरि	बलतुलियकुलसिहरि ।
सद्वलवरखंधु	बहिरंधजणबंधु ।
अलिणीलधम्मेल्लु	तेलोकपडिमल्लु । 5
द्वंकुरालेण	दहिचंदणालेण ।
उक्खित्तसेसेण	मंगलणिघोसेण ।
संचलिउ भरहेसु	णं मयणु णरवेसु ।
धउ धइण पडिखलिउ	णरु हरिहिं वैरमलिउ ।
भेसिउ अहहेण	करहस्स सहेण । 10
करि धुणइ णियकंडु	महि णिवडिओ मैहुं ।
भरओ रउहेण	धित्तो बलहेण ।
भग्गाइं भायणइं	चुण्णाइं गोहणइं ।

4. १ B °विच्छोह°. २ M गिरी. ३ MBP महदी. ४ MP चउदह°.

5. १ MB णहवडिउ. २ MBP °धम्मिल्लु. ३ P दलमलिउ. ४ MBP भेहु.

3 ष दे विं द णा ओ ऐरावणो हस्ती. 5 a भी मा व या णं भीमानामापवाम्; ष प या सो प्रकटम्; प या सं प या णं प्रजानां संपदाम्. 6 a वे स मं विषमम्. 7 a गि ही गृही भाण्डागारिकः. 8 a °कि म्मी र° विचित्तम्; ष णि के ऊ ह का रो सूतधारः स्थपतिः.

5. 10 a भे सि उ भयं नीतः; अ ह हे ण अभहेण.



णवणलिनणेत्ताइ	वेसैरि णिहित्ताइ ।	
परिगालियचेलाइ	हा भणित् बालाइ ।	15
सैरवडणपडियाइ	महुसीहुयडियाइ ।	
रसवणिय जूरंति	कह कह व वियरंति ।	
अषंतपोडेण	तेल्लोकरुडेण ।	
थिरथोरवाहेण	सेणाहिणाहेणै ।	
पफुल्लुवयणेण	दददंडरयणेण ।	20
गिरिणो दलिज्जंति	मग्गा रइज्जंति ।	
दूरं समग्गेण	चक्काणुमग्गेण ।	
संतोसपुण्णाइं	गच्छंति सेण्णाइं ।	
णयणाहिरामाइं	गामाइं सीमाइं ।	
विसमाइं मंठाइं	विंझेवकंठाइं ।	25
हलहरणिवासाइं	लंघंतु देसाइं ।	
पविसंतु रोहंतुं	अहिणो विरोहंतु ।	
णिकववियणियसत्तु	सुरवरसरिं पत्तु ।	

घत्ता—पंडुर गंगाणइ महियालि घोळइ किंणरसरसुहभंतंतेहो ॥

अवलोइय रापं छुडु छुडु आपं साडी णं हिमवंतहो ॥ ५ ॥ 30

## 6

णं सिहरिघरारोहणणिसेणि	णं रिसहणाहजसरयणखाणि ।
णिम्मल णावइ जिणणाहवाय	मयरंक्रिय णं वम्महवडाय ।
णं विसमविडेप्पभउत्तसंति	घरणीयलि लीणी चंदकंति ।
णं णिडेधोयकलहोयकुहिणि	णं कित्तिहि केरी लहुय बहिणि ।

५ MBPK वेसर°. ६ MBPT खरचडुल°. ७ MBP add after this: णवणलिनणयणेण. ८ MP add after this. वज्जेण घडिण. ९ MBP सठाइ. १० MB रोहंतु. ११ P °भत्तहो.

6. १ MBP वम्महपडाय. २ P विडणइ भउ तसंति. ३ G सिद्ध° but gloss जिग्घ.

16 a खर° गर्दभ. 25 a मंठाइं निम्नोक्तानि. 27 b अ हि णो वि रो ह तु नागान् विरोधयन्. 30 सा डी परिधानवन्नम्.

6. 3 a °वि ड प्प भ उ त्त सं ति राहुभयादुत्त्रस्यन्ती. 4 a °धो य क ल हो य° अतिनिर्मलं रूप्यम्.

गिरिरायसिहरपीवरथणाहि  
विर्यैलियकंदरद्वरिबडिय सच्छ  
सिय कुडिल तहु जि णं भूइरेह  
आयासहु पडिय धरिसियाइ  
पक्खलइ वलइ परिभमइ ठाइ  
णिग्गय णयवम्मीयहु सवेय  
हंसावलिवलयविइण्णसोह

णं हारावलि वसुहंगणाहि । 5  
धरणिहरकारिंदहु णां कच्छ ।  
णं चक्रवट्टिजयविजयलीह ।  
सुपडिच्छिय णं पियसहि पियाइ ।  
णियठाणभंसविताइ णां ।  
विसपउर णां णाइणि सुसेय । 10  
उत्तरदिसिणारिहि णां बाह ।

घत्ता—बहुरयणणिहाणहु सुट्टु सुलोणहु धवलविमलमंथरगइ ॥

सायरभत्तारहु सहं गंभीरहु मिलिय गंपि गंगाणइ ॥ ६ ॥

7

जहिं मच्छंपुच्छपरियसियाइं  
घेष्पंति तिसाहयगीयएहिं  
जलरिट्टहिं पिज्जइ जलु सुसेउ  
सोहइ रत्तुप्पलदलरुईइ  
जहिं कीरउलइं कीलारयाइं  
जहिं कंकहारणीहारछाय  
जहिं पाणइ पंडुरु अच्छराइ  
परिहाणु सहत्थे धरिउ ताइ  
मायंगहुं दाणे वइइ णेहु  
जडसंगे विउसु वि जहु जि होइ

सिण्णियउहुच्छलियइं मोत्तियाइं ।  
जलविंदु भाणिवि बप्पीहएहिं ।  
तमपुंजहिं णावइं चंदतेउ ।  
पुणु सो जि णां संझारुईइ ।  
दहिकुट्टिमि णावइ मरगयाइं । 5  
कल्लोल हंसपक्ख वि ण णाय ।  
उप्परियणु दिट्टुं ण जंतु जाइ ।  
जंपिउ हो ण्हाणे पत्थु माइ ।  
जा तहु धिवंति तवसि वि सुवेहु ।  
कमलावासेसु सुयंति भोइ । 10

४ MBP विवरिय<sup>०</sup>. ५ MBP उत्तरदिस<sup>०</sup>. ६ MBP सलोणहु.

7. १ MBPK <sup>०</sup>पुंछ<sup>०</sup>. २ B <sup>०</sup>उडच्छलियइ. ३ MBP वप्पीहएहिं. ४ MBP जंतु ण दिट्टु.  
५ MBPK सदेहु.

6 b कच्छ कक्षा. 7 a भूइरेह भस्मरेषा. 10 a णयवम्मीयहु पर्वतवल्मीकात्; b विसपउर नदीपक्षे जलप्रचुरा, नागिणीपक्षे विषप्रचुरा. 11 b बाह बाहुः.

7. 1 a परियसियाइं अभिहतानि. 2 a तिसाहयगीयएहिं तृषया शुष्ककण्ठेः; b वप्पीहएहिं चातकैः. 3 a जलरिट्टहिं जलककैः. 9 a मायंगहुं हस्तिना चाण्डालानां च; णेहु चिकणत्वं रागश्च. 10 b भोइ सर्पाः.

सिररयण धणास्तइ धरइ ते वि  
दिव्वंगणघणथणजुयलखलिय  
उच्छलियबहलसीयलतुसार

धणवंत बहुप्पिय सविस जेवि ।  
जिणणहवणारंभदिणम्मि गलिय ।  
णं खीरमहोवहिखीरधार ।

घसा—एयँहि महिणारिहि भुवणजणेरिहि ससिमणिरइयपहुज्जल ॥

सायरगिरिरायहिं धरिवि सरायहिं णाइं णिबद्धी मेहल ॥ ७ ॥ 15

## 8

सरि पेच्छिवि महिपरमेसरेण  
झसणयणी विब्भमणाहिगहिर  
मज्जंतकुंभिकुंभत्थणाल  
तडविडविगलियमहुधुसिणपिंग  
सियधोलमाणडिंडीरचीर  
वित्थिण्णमणोहरपुलिणरमण  
कवणेह भणसु सियकोमलंगि  
तं णिसुणिवि रहियं वुत्तु एम  
धरणीसमउडमणिकिरणराइ  
दालिद्वपंकसोसणदिणेस  
पणईयणपयणियपरमपणय  
सुंधराधरिंदभेयणसमत्थ  
गंभीर पसण्ण सुलक्खणाल  
रहवरसिरि व्व दरिसियरहंग  
हिमवंतपोमसरणिग्गयंगि

पुच्छिउ सारहि भँरहेसरेण ।  
णवकुसुमविमीसियममरचिहुर ।  
सेवालणीलणेत्तंचलाल ।  
चलजलभंगावलिवलितरंग ।  
पवणुंइयनारतुसारहार । 5  
णइ णाइं विलासिणि मंदगमण ।  
रइ जणइ विहंगहं णं विहंगि ।  
कर्मणीयसुकामिणिकामएव ।  
रुइरंजियचरणणरेसरइ ।  
भुयबलकंपावियतिहुयणेस । 10  
णिसुणसु णरिंद णाहेयतणय ।  
णं मंतिहि केरी मइ महत्थ ।  
णं सुकइहि केरी कव्वेलील ।  
किं ण वियाणहि णामेण गंग ।  
णं महिवहुयहि परिर्याणभंगि । 15

६ MBPT बहुप्पिय. ७ MBP एत्तहि.

8. १ M परमेसरेण २ MBP पवणुइय°. ३ MBP कर्मणीयकामिणी°. ४ MB सधरा°. ५ MBP कव्वमाल. ६ MBPK परिहाण° an l gloss in PK परिधानं.

11 a सिररयण सर्पा, b बहुप्पिय वधूनां प्रिया., अथवा, बहूनां प्रियाः.

8. 2 a °विब्भम° जलावर्तः. 5 a °डिंडीर° फेन. 9 b णरेसराइ नरेध्वराणामादिः प्रथमचक्र-वर्तात्पर्यः. 12 a सुंधराधरिंद° धराधराः पर्वता राजानश्च, शोभनाश्च ते धराधराः, तेषामिन्द्रः प्रधानः. 14 a °इहंग चक्रवाकः. 15 b परि याण भंगि गमनप्रकारः.

घन्ता—गिरिणहधराणियलहिं जलणिहिविर्वैरहिं वहइ छा य ससिदिसिहि ॥  
भुवणत्तयगामिणि जणमणरामिणि एह सरिस तुह कित्तिहि ॥ ८ ॥

9

घणे जक्खणी जक्खकीलावियारे  
पधावंतमायंगदाणंबुगंधं  
विसंकं जंसंकं कयारिंदसंकं  
पकीरंति दूरं समा भूमि एसा  
गवक्खंतणिग्गंतधूमोहवासा  
विमुच्चंनि पल्लाणभारा हयाणं  
भरम्मुकुदेहा जहिच्छं वल्लहा  
तरूणं तणाणं पधावंनि दासा  
पइज्जंति णाणाविहा भक्खभेया  
सरिच्छेण दीहेण पंथेण भग्गा  
बलिज्जंति दिज्जंति गासा करीणं  
पपेच्छंति अण्णे धयं साहिणाणं  
णं संसंति अण्णे णरिंदस्स कामं  
इमो वेसरो वेसरी लेउ चारं  
कंडुद्धुग्गीवा वणंते पयट्टा  
हले होउ जत्ताइ पत्ता णिविग्घं  
ईणं जत्थ केणावि रीणेण बुत्तं  
सहट्टं सट्टं सदेवं समिद्धं

तओ तम्मि गंगाणईचारुतीरे ।  
घुलंतुद्धपालिद्धयं चारुविंधं ।  
बलं रायसेणाहिवाणाइ थक्कं ।  
तडिज्जंति दूसाइ चंदोवहासा ।  
रइज्जंति संचारिमा भूरिवासा । ४  
गयाणं पि ढक्कारवेणागयाणं ।  
गया रासहा रासहीदिण्णसदा ।  
पलिप्पंति चुल्लीणिहिच्चा हुयासा ।  
णरा के वि भुंजेवि णिसंगसेया ।  
पसुत्ता सुहं गेहिणीकंठलगा । 10  
तणं भोयणं ख्वाणलोणं हरीणं ।  
पयंपंति अण्णे पईहं पयाणं ।  
भमामो कहं णिच्च गामाउ गामं ।  
परेणेव बुत्तो परो वारवारं ।  
लयापल्लवं पाणियं लेत्ति उट्टी । 15  
पिए पेच्छ दूसाइ आगच्छ सिग्घं ।  
सवेसाणिवासं सविधोवउत्तं ।  
इमं एव राएण ठाणं णिबैद्धं ।

७ MBPT °षिवलहिं.

9. १ MBP जसंकं, २ MB णिग्गंति, ३ MB वलिहा, ४ MBP पवत्तंति, ५ M खाणपाणं, ६ K ण पेच्छंति, ७ वयसाहिणाणं, ८ M णमंसंति, ९ MBP णरिंद सकामं, १० MB कओउद्धुग्गीवा; P कओउद्धु°, ११ PK उंटा, १२ MBP इम, १३ BP विबद्धं.

16 वहइ छा य शोभां धरति.

9. 2 b °पालिद्धयं वशवेष्टितपताका, 4 b चंदोवहासा मण्डपिका, 5 a °वा सा गन्धाः, 9 b णिसंगसेया निर्गताङ्गस्वेदाः, 11 a बलिज्जंति बलिदानेन तोष्यन्ते, 13 a कामं पट्खण्डपृथ्वीप्रभावना-मिलाषम्, 14 a चारं जीवन तृणं वा, 17 b सवेसाणिवासं वेर्याग्रहसहितम्.

घत्ता—णियथवइ विरइयइ मणिगणसइयइ सहं सग्गहु उवइण्णउ ॥  
णं सुँरवरसुंदरु देउ पुरंदरु पहु सउहयलि णिसँण्णउ ॥ ९ ॥

20

10

सामंत महासामंत जेवि  
सेणाहिवसिद्धेसणिलइ  
हुय रयणि पुणु वि उग्गामिउ भाणु  
गयमयमलेण मइलिज्जमाणु  
छत्तंधयारछाइज्जमाणु  
मल्लरिभेरीरवगज्जमाणु  
णग्गोरेणुधवल्लिज्जमाणु  
मग्गयपहाइ णील्लिज्जमाणु  
अँसहंतिइ भडयणभरु महंतु  
अर्णइहवज्जरखरमाणिण  
णाणावाहणरहसंकडेण  
चक्कीसच्चमूवइपेरियंगु  
आरुहिवि विजयगिरिचरकरिदि  
खंधोवबद्धतोणीरजुयलु  
संचलितु विजयदुंदुहिणिणाउ

मंडलिय महामंडलिय तेवि ।  
थिय रायपसायविइण्णपुलइ ।  
सगमत्थिजालज्जल्लमाणु ।  
हरिलालाणीरँ धुप्पमाणु ।  
पहरणँधिप्फुरणहिँ दीसमाणु । 5  
मणहरकामिणियणगिज्जमाणु ।  
वँणधूलियाइ कवल्लिज्जमाणु ।  
सौणंदु सविक्रमु साहिमाणु ।  
णं वसुहावणियइ पित्तु वंतु ।  
णरणियरकरहसंदाणिण । 10  
चल्लियउ तुरिउ गंगार्तडेण ।  
चक्कहु पच्छइ बलु चाउरंगु ।  
केसरिकिसोरु णं गिरिवरिदि ।  
करँणिहियचावगुणरावमुहलु ।  
सुरवइदिसाइ रायाहिराउ । 15

घत्ता—उल्लंघिवि भीयरु उवरयणायरु पुणु थलमग्गँ आइउ ॥

महिहरदँरिवासइं गोहणघोसइं पहु गोउलइ पराइउ ॥ १० ॥

१४ MBP सुरवरु सुंदरु देव पुरंदरु. १५ MP णिसाण्णउ.

10. १ MBP णव°. २ B omits णील्लिज्जमाणु. ३ B omits this foot. ४ B omits this line. ५ MP पित्तु वंतु. ६ B omits अणडुइ. ७ MBP गंगायडेण. ८ MP केसरिकिसोरु. ९ MB करि णिहिय°. १० MBPT °दरवासइं.

10. ३ b सग मत्थि जाल° निजकिरणसघातः. 7 a णग्गो र° कर्पूरः. 9 b वसु हा व णि य इ वसुधा-  
वनितया; पित्तु वंतु पित्तं वान्तम्. 10 a °वजर° वेगसरोऽश्वतरः. 13 a विजय गि रि हस्तिनामेदम्.  
15 b सुरवइदिसाइ पूर्वादिशि. 16 उवरयणायरु उपसमुद्रः.

11

जहि मंथिज्जइ अइथद्दु दहिउं  
जहि कड्डिउ मंथउ गोवियाइ  
चप्पेवि धरिउ मंदीरैएण  
हो हो हलि गोविणि मइं जि रमइ  
मा कड्डहि केयाकड्डणीइ  
अइमहणें सिद्धिलीहूउं देहु  
तक्कइं पमेव जि जहिं धिवंति  
घयट्टेइइं जैहिं पंथिय पियंति  
जहिं गोविइ पेच्छिवि णरपहाणु  
मूरंविउ तक्कु अविचित्तियाइ  
महिवइमुहपंकयरमणतण्ह  
जहिं कुणरिंदहं रिद्धीउ जेम  
काहलियवंससहं सुणंति  
वच्चइ संकेयद्दु गोवि का वि  
जहिं देंति तालु कीलीपयासु  
जहिं सिंगसमुक्खयतरुवरेहिं

थंद्धत्तणु कासु वि होइ ण हिउं ।  
दीहें गुणेण णं पिउ पियाइ ।  
परिभमइ णाहं घणथणकएण ।  
मंथाणु ण तुह कामग्गि समइ ।  
इय गज्जिउ जहिं णं मंथणीइ । 5  
किं दहिउं ण अण्णु वि मुयइ णेहु ।  
गामीयैण तक्कहिं किं करंति ।  
गयपहसम सुहु णिइइ सुयंति ।  
वच्चुल्लउ मेल्लिवि बद्दु साणु ।  
घिउ छड्डिउं तग्गयणेत्तियाइ । 10  
जहिं संठिय णीसासुण्ह सुण्ह ।  
मीहिसिउ खलोहिं दुंज्जंति तेम ।  
ण करइ घरकंमु वि सिरु धुणंति ।  
मज्झप्पयासि बहुडिभया वि ।  
मंडलिय 'गोव गायंति रासु । 16  
ढक्कैरिउ धीरु धुरंधरेहिं ।

घत्ता—तं गोट्टु मुयंतें गहाणि चरंतें हरिणासिगखयकंदहिं ॥

मयमासाहारइं कुहरागारइं दिट्टइं सर्वैरपुलिंदहिं ॥ ११ ॥

11. १ MBP अइथद्दु. २ MBP थद्दत्तणु. ३ B मीदीरएण. ४ MBP गोविणि. ५ MBP सिद्धिलीहूय. ६ B गामीणय. ७ MBP पंथिय जहिं. ८ B सुहणिइइ. ९ MBP मण्णिवि. १० MBP सूर-विउ. ११ MBP अवचित्तियाइ. १२ M छड्डिउ. १३ MBP महिसीउ खलहिं. १४ MBPK दुब्भंति. १५ M घरकंमु वि सिरं; BP घरकंमु सिरं. १६ MBP कीलावयासु. १७ M गीय. १८ MBP ढेक्कैरिउ वाह. १९ M समरपुरिंदहिं.

11. 1 a अइथद्दु अतिघनम्. 2 a मंथउ रविका; b णं पिउ पियाइ प्रियः प्रियया इव. 3 a मं दीरएण रविकानिरोधकलोहवलयदिना, प्रियपक्षे, मन्दरतेन. 5 a के या कड्डणीइ वरत्राकर्षिण्या. 7 b तक्कहिं तत्त्वविचारणे तर्कैः. 9 b सा णु श्वा. 10 a मूरविउ उत्कालितं तापितम्. 11 b णी सा सुण्ह निश्वासै-वग्गा; सुण्ह वधुः. 16 b धुरंधरेहिं वृषभैः. 18 मयमासाहारइं मृगमांसाहारैः.

## 12

दुवई—वामणथद्वैथोरवैलवलियकलेवरसंधिबंधणा ।

कढिणतिकंडचंडकोदंडकमागयजणकुलहणा ॥ १ ॥

सुमडहथूलविरलदसणुज्जलमुहसिहिपिच्छणिवसणा ।

गयमयपउरपंकचैच्चिक्रियगुंजादामभूसणा ॥ २ ॥

झंपडकविलकेसरुहिरारुणदारुणतंबणयणया ।

5

तिक्खखुरुप्पपहरपविर्यारियमारियमोरहरिणया ॥ ३ ॥

इसुहयदंतिदंतकयमंदिरसंचियचारबोरया ।

तल्लंतखत्तरत्तणीलुप्पलविरइयकण्णपूरया ॥ ४ ॥

दिसिपसरंतविमलससियरणिहणरवइजसभयंगया ।

वंसविसेसजायमुत्ताहलचमरीरुहकरग्गया ॥ ५ ॥

10

पीयसुसीयकुसुमरयसुरहियमहिहरकंदरंभया ।

सबरीवयणकमलरसलंपडखंधुद्धरियाडिंभया ॥ ६ ॥

हरगलगरलमलिणणवजलहरछविसारिच्छकायया ।

आया पहुसमीवि मउलियकर विविहकिरायरायया ॥ ७ ॥

गुरुभयवसणिहित्तणियदेहमहीयललग्गभालया ।

15

ते अवलोइऊण करुणेण णवंतवणंतवालया ॥ ८ ॥

ण्हंततरंतजक्खिथणघुसिणामोयमिलंतमहुयरं ।

चंचलसंगलंतकल्लोलगलस्थियखयरवहुवरं ॥ ९ ॥

कच्छवसुंसुयारमयरोहरपुंलुच्छालियणिरयं ।

पत्तो परियणेण सह महिवइ सुरवरसरिदुवारयं ॥ १० ॥

20

घत्ता—आवासिउ साहणु वणि सुपसाहणु णिसि पणाविवि परमेसरु ॥

णं जिणु जिणसासणि थिउं दच्चासणि उबवासेण णरेसरु ॥ १२ ॥

12. १ M has before this. उद पथटिका. २ MBP थडु. ३ MBP °चलवलिय°. ४ MBP °पिठ°. ५ P °विच्चिक्रय°. ६ MBP °यारियतित्तिरमोर°. ७ M तिलतरु; I तिलतरु but gloss ताड-वृक्ष°. ८ MBP ठिउ.

12. २ °जणण° पिता; °कुलहणा कुलधनाः. ४ तलतरुवत्त° तालवृक्षपत्रम्. ११ °कंदरंभया °कन्दरजलाः. १४ °किराय° भिलाः. २० °दुवारयं गङ्गायाः समुद्रानुप्रवेशस्थानम्.

13

अहिवासिउं रापं चक्ररयणु  
सुयवणु अहंगु तुरंगरयणु  
उग्गमिउ णहंगणि दुमणिरयणु  
कइवयणरेहिं सह सूरसंसु  
पहरणपरिपुणु महामहंतु  
चलपंचवणधयवडललंतु  
ओलंबियकिंकिणिरणणंतु  
सालिणिहिंसालिलंधोइयपएहिं  
तकारिचम्मलट्टीहएहिं  
छक्खंडपुहइवलयाहिवेण

जिह तं तिह अवरु वि दंडरयणु ।  
करिरयणु लोहवलयंकरयणु ।  
आरूढउ संदणि पुरिसरयणु ।  
णं माणसपंकइ रायहंसु ।  
परिभमियचक्रचिक्कारु दंतु । 5  
णाणामणिकिरणहिं पज्जलंतु ।  
तियसिंदह मणि विभूहउ जणंतु ।  
मुहसंमुहघुलियतरंगएहिं ।  
रहु कङ्कितु मारुयजवहएहिं ।  
अवलोइउ जलणिहि पत्थिवेण । 10

घत्ता—हरिसेण व गज्जइ भरहु ण भज्जइ पहु ण कासु किर रुच्चइ ॥  
मरुहयकल्लोलहिं चलभुयडालहिं रयणायरु णं णच्चइ ॥ १३ ॥

14

उक्खिखवइ व मोत्तियतंदुलाइं  
भीपण व रायहु लइय वेल  
णं दोयइ जलमयगल सरंत  
माणिकइं पवरपवालायाइं  
णं बोहइ चडवाणलपईवु  
संखाऊरउ जिह संखु धरइ  
उम्मुक्कविहजलयरसणेहिं

तोयइं णं अग्घंजलिजलाइं ।  
दावइ व विउलसालिलंतसेल ।  
जलणरकिंकरकररुहफुरंत ।  
णं दरिसई तीरलयालयाइं ।  
णं वेढिवि रक्खइ जंबुदीवु । 5  
पहुआणइ किंकरु किं ण करइ ।  
णं जंपइ पायालाणणेहिं ।

13. १ P °वलियंक°. २ MP °परिपुणु°. ३ MBP विभउ. ४ MBP °सलिलसुणिहियपएहिं.

14. १ P दोयइ. २ MBP रसत; K सरंत but corrects it to रसंत. ३ BP दरसइ.  
४ MBP °पईउ. ५ MBP जंबुदीउ. ६ MBP संखाऊरिउ.

13. 1 a अ हि वा सि उं पूजितम्. 2 a सुयवणु शुक्रवर्णम्; अहंगु अभङ्गम्; b लोहवलयंकरयणु लोहवलयनद्धदन्तम्. 3 a दुमणि° आदित्यः. 9 a तकारि सारथिः; चम्मलट्टी° कशा.

14. 7 a °सणे हिं शङ्खैः; b पायालाणणे हिं वडवामुखैः.



किं विहुमरापं तुहुं जि राउ  
मा जोयहि महिवइ तिक्खभल्लि  
होर्पिणु अच्छउं पत्थु ताम  
तुह मुहइ अंकिउ हउं समुहु

तेल्लोकपियामहु जासु ताउ ।  
तउ तणिय वाय मज्जायवेल्लि ।  
णउं लंघमि महियलि वसमि जाम । 10  
मा किं पि करहि मच्छरु रउहु ।

घत्ता—खारसु ण मेलइ जणु किं बोलइ णत्थि सहावहु ओसहु ॥

जसु णामु जि सायरु अवसें सायरु सो संभासइ णिययपहु ॥ १४ ॥

## 15

तरुणीअंगाहं व सलवणाहं  
लंघेपिणु रथणायरवणाहं  
डापिणु पुणु तेसियहिं तेहिं  
रिउभवणु पलोइवि णिववरेण  
अंदोलिय तारागहपयंग  
अच्छोडियबंधण विवलियंग  
थरहरिय धराहंर धरण वरुण  
संचालिय सरिसरसायरंभ  
णिवडिय पुरवर पायार गेह  
वर्ग्वाराहिं खग्गहु दिण्ण दिट्ठिं  
इप्पिट्ठु दुट्ठु भुयवलविमहु  
किं मंदरसिहरु सठाणल्हंसिउ

अहिंसिचियतीरलयावणाहं ।  
पइसेपिणु वारहजोयणाहं ।  
तंबेहिं सरोसहिं लोयणेहिं ।  
अप्फालिउ धणुहुं धणुद्धरेण ।  
महिं चलिय विवरणिग्गयभुयंग । 5  
णिण्णासिय तासिय रवितुरंग ।  
आसंकिर्यं जम वइसवण पवण ।  
गय मयगल मुडियालाणखंभ ।  
मुय कायर णर भयंभंतदेह ।  
अवर वि चवंति हा णट्टु सिट्ठि । 10  
भडभीयरु भावइ भीमुं सहु ।  
किं जगुं कवलिवि कालेण हसिउ ।

घत्ता—पायालि फणिदहिं महिहि णरिंदहिं सग्गि सुरिंदहिं कंपिउं ॥

अणुगुणटंकारे अइगंभीरे क्कासु ण इयउं विप्पिउं ॥ १५ ॥

७ MBP तेल्लोकं. ८ MBP. होएविणु अच्छमि. ९ ण हु.

15. १ MBP धराधर. २ M आसंकय, BP आसकइ. ३ P भयवंत. ४ MBP मुट्ठि. ५ MBP भीमसहु. ६ B °ण्हसिउ. ७ MBP ण जगु. ८ PK कंपियउ. ९ P विपियउ.

10 सायरु सागरः, सायरु सादरः

15. 2 a °वणाइं जलानि. 8 b मुट्ठियं अमः. 11a भावइ चमत्करोति. 14 विप्पिउ भयम्.

16

धणुवेयजाणु परिछिण्णमाणु  
 णं कालं भासुरु कालदंडु  
 धम्मज्झिउ पलयहुयासलीलु  
 पिच्छंविउ चंचलु णं विहंगु  
 अइदूरगामि णं परमणाणु  
 अइदीहायारउ णं भुयंगु  
 अइगुणिहि परंमुहुं होवि गयउं  
 अइलोहघडिउ णं तुद्धंविचु  
 अइमोक्खगामि णं चरमदेहु  
 णावालउ णं तश्चिय महंतु

बंधेप्पिणु णिरुवमु किं पि ठाणु ।  
 णरणाहं पेसिउ वज्जकंडु ।  
 गुणकोडिविमुक्कउ णं कुसीलु ।  
 उज्जयगइ णं सुयणंतरंगु ।  
 अइसुद्धिवंतु णं सुक्कशाणु । 5  
 अइप्राणहारि णं खलपसंगु ।  
 णं माणुसु कुसमयमंत्तिहयउ ।  
 अइगयणगमणु णं खेररुत्तु ।  
 अइकडिणभेइ णं णइपवाहु ।  
 हुंकारं चोइउ णं सुमंतु । 10

घत्ता—मागहहु णिहेलाणि हरिणीलंगणि खुत्तु कणयपुंखुज्जलु ॥  
 रुइणिज्जियकज्जलि जउंणाणइजलि णं पण्फुल्लिउ सयदलु ॥ १६ ॥

17

भूमंगभीसभिउडीहरेण  
 सुरसमरसहासभयंकरेण  
 देवेण समुहपरिग्गहेण  
 भणु केणुप्पाडिय जमहु जीह  
 णायउलघलयधिलुंलंतु गीदु  
 भणु केण कलिउ मंदरु करेण  
 भणु केण खलिउ णहि भाणु जंतु  
 भणु कासु करोडिहि रिद्धं रसिउ

विण्फुरियदसणइसियाहरेण ।  
 दुणिरिक्खविक्खसयंकरेण ।  
 तं पेक्खिवि गज्जिउं मागहेण ।  
 भणु केण लुहिय खयकाललीह ।  
 भणु केण णिसुंभिउ धरणिवीदु । 5  
 उट्टाविउ सुत्तउ सीदु केण ।  
 णिव्विण्णउ प्राणहं को जियंतु ।  
 भणु को कयंतैदंतंति वसिउ ।

16. १ MB °जाण. २ MBP उज्जुय°. ३ MBP अइसिद्धिवंतु. ४ MBP °पाण°. ५ MBP होइ. ६ MBP °मंति°. ७ B लुद्धरत्तु.

17. १ MBP विलुलंत. २ M धरणिपीदु. ३ MBP पाणहं. ४ B रिद्ध. ५ P दंतंतवसिउ.

16. 4 b उ ज य ग इ सरलगतिः. 7 a गु णि हि शरासनान्मुनेश्च. 10 a णा वालउ नौयुक्तः, पक्षे नमनशीलः. त श्चिय नदीप्रवाहः तात्त्विकश्च; b सु मं तु परममन्त्रः. 12 जउंणा ण इ° यमुनानदी.

17. 4b लु हिय प्रोञ्छिता. 5 a गीदु गृहीतम्. 8 करोडिहि शिरोस्थानि; रिद्धु काकः.

भणु केण विहंङ्गिउ मज्जु माणु

केणेहु विसज्जिउ कुलिसबाणु ।

घत्ता—जेणेउं वियंभिउं रणु पारंभिउं सो महु अज्जु ण चुक्कइ ॥

10

णिब्भंगु जमाणु भीयउ काणणु विहिं वि एकु धुंहु दुक्कइ ॥ १७ ॥

## 18

इय भणिवि तेण कङ्गिउ करालु

धारालु णावइ मेहजालु ।

पहुताडणखंडियभडवमालु

असि अरि करिमोत्तियदंतुरालु ।

दढमुट्टिणिवीडिउ वहइ वारि

दासु व विझइरि व वंसधारि ।

वसुणंदउ ससिमंडलसरिच्छु

उरि चप्पिवि उट्टिउ लोहियच्छु ।

पहु पेच्छिवि केण वि लइउ कौंते

आरुट्टु को वि हणु हणु भणंतु । 5

मोगगरु मुसुंदि परँसु वि तिसूलु

केण वि करि लइयउ भिडिंमालु ।

वावंलु सेलु झसु सत्ति मुसलु

हलु सव्वलु कंपणु जुज्जकुसलु ।

केण वि भुयंगु केण वि विहंगु

केण वि तुरंगु केण वि मयंगु ।

केण वि अलियल्लि घुलंतजीहु

केण वि खरणहरुक्केरु सीहु ।

केण वि संचोइउ करहु सरहु

कु वि आहवि धाइउ जाम सरहु । 10

घत्ता—ता मागहमंतिहिं कयकुलसंतिहिं पणवेप्पिणु उच्चाइउ ॥

छणससहरवयणहिं तारहिं णयणहिं रायसिलिम्मुहु जोइउ ॥ १८ ॥

## 19

तंहिं लिहियेइं विट्टुं अयस्वराइं

सुरमणुयस्वयरदेसंतराइं ।

जिणतणयहु विविहणिहीसरासु

णियकालवैट्टसंधियसरासु ।

रायहु भरहुहु ण णवंति जाइं

णिच्छउ दोहाइं मरंति तांइं ।

६ MBP धुउ.

18. १ MBP °कवालु. २ MBP कुंतु. ३ MBPK पट्टिसु तिसूलु. ४ P भिडमालु. ५ MBP वावल. ६ MBP कप्पणु.

19. १ P तिहिं and gloss बाणे. २ MBP लेहियइ. ३ M °कालवट्टि. ४ M जे वि. ५ M ते वि.

11 णिब्भंगु अनिष्टम्.

18. 4 b लो हि य च्छु रक्कलोचनः. 6 b भिं डि मा लु गोलगोफणी (?). 7 b कं प णु सर्वलोहमयः कुन्तः 9 a अ लिय ल्लि व्याघ्रः.

19. 2 b काल वट्ट° कालपृष्ठ नाम धनुः. 3 b दो हा इं द्विखण्डानि.

मणु रंजिवि जुंजिवि अवहिणाणु	दक्खविउ ससामिहि गंपि बाणु ।	
पुणु अक्खिउ खलयणमइयवट्ठि	उप्पण्णउ महियलि चक्खवट्ठि ।	5
भो मागह किं जुज्झग्गहेण	मुइ पहरणु किं विणडिउ गहेण ।	
जइ अज्जु ण इच्छहि तासु सेव	तो तुम्हं णउ अम्हं मि देव ।	
तुहुं एक्कु ण अइरइं सुरसयाइं	तहु मंदिरि दासत्तणु गयाइं ।	
लिहियहु किं किर् ई कीरइ विसाउ	दीसइ पणविवि रायाहिराउ ।	
ते वयणे सो पैरिमुक्कदप्पु	थिउ मंतपहावे णांइ सप्पु ।	10
अवलोयवि सरलिपिपंतियाउ	भावेप्पिणु मंतिपउत्तियाउं ।	

घत्ता—मागहिण अगावे सविर्णयभावे चक्केण व दिवसेसरु ॥

पणविवि थुइवयणहिं णाणारयणहिं पूइवि दिट्ठु णरेसरु ॥ १९ ॥

20

सविहवविम्हावियसयमहेण	विहसेप्पिणु बोळ्ठिउ मागहेण ।	
जय भरह महागयलीलगामि	तुहुं इह जम्महु महु परमसामि ।	
तुहुं इंदु इंदरिद्धीसणाहु	तुहुं हुयवहु अरिवरदिण्णडांहु ।	
तुहुं जमु जमकरणु ण का वि भंति	तुहुं वरुणु सयलजणविहियसंति ।	
तुहुं धणउ धंणउ सुहिणिहियकामु	तुहुं पवणु पबलक्कलदलणथामु ।	5
ईसाणु महेसरणवियपाउ	तुहुं एक्कु जि जगि रायाहिराउ ।	
तुंहु असिजलधारइ हरियछाय	अरिर्णरवइ तरु के के ण जाय ।	
तुंहु असिजलधारइ उद्धसासु	वड्ढारिउ भुवणंतरि ण कासु ।	

६ B किंकर. ७ K पविमुक्क°. ८ MBP सरलियपंतियाउ. ९ MP add after this: भरहेसरायणाम-  
कियाउ, सुरणरखेयरभय( M सय )गारियाउ, ता तेण वि चित्ति चमक्कियाउ, वाएप्पिणु अक्खरपंतियाउ,  
B adds: भरहेसरायणामंकियाउ, जुज्झणिजियरवियरकतियाउ, ता तेण वि चित्ति चमक्कियाउ, चक्खवइभरहणाम-  
कियाउ. १० M अकुडिल°.

20. १ MBP विभाविय°. २ MBP °दाहु. ३ MBP धणइं. ४ MBP महीसर°. ५ B omits  
this line. ६ MPK अहिणरवइ. ७ B omits this line. ८ MP उद्धसासु

5 a °मइय वट्ठि सचूरक°. 6 b मुइ मुख; गहेण पिशाचेन. 9 a लिहियहु भवितव्यतायाः. 11 a  
सर लि वि पं ति या उ बाणलिखिताक्षरपंक्तयः.

20. 5 a धणउ लक्ष्मीदायकः कुबेरः. 7 a हरियछाय हतमहातमसः, अन्यत्र नीलवर्णाः. 8 a  
°सा सु उच्छ्वासः सस्यं च.

तुह असिजलधारइ परिल्लसंति	बहुसलिल वि रयणायर तसंति ।	
तुह असिजलधारइ अइहुयाइं	रिउवहुणयणंसुयबिहुयाइं ।	10
तुह असिजलधारइ कुलि असोउ	इयउ णिच्चं चिय भुत्तभोउ ।	

घत्ता—तुहुं भरह पयावइ पढेममहीवइ महिणाहहिं मणि भाविउ ॥  
 ताराणक्खत्तहिं पय पणवंतहिं पुष्पदंतु जिह सेविउ ॥ २० ॥

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरहए  
 मद्भाभवभरहाणुमणिय महाकव्वे मागहपसाहणं णाम  
 बारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १२ ॥  
 ॥ संधि ॥ १२ ॥

९ MBP पठमु. १० M पुष्पयंतु, BP पुष्पयंत.

9 a परि न्ह संति गर्व मुञ्चन्ति. 10 a अ इ हु या इं अतीव भूतानि. 13 पुष्पदंतु जिनश्चन्द्रादित्यौ च.

### XIII

साहिवि मागहु गेहविसमु णविवि पसिद्धसिद्धिण्यारहो ॥  
 संजिवि सीहु व वरतणुहि भरहराउ गउ दाहिणदारहो ॥ धुवकं ॥

1

धरणीसरो चलइ	गरुडदओ घुलइ ।	
सिमिरं समुल्लइ	धूली णहे मिलइ ।	
सुरसिरिहरं कमइ	पडिबलइ उवसमइ ।	5
हरिवयणलालाइ	करिदाणवेलाइ ।	
जणज्जणियसंकेण	तंबोलपंकेण ।	
चरणाइं लिप्पंति	हारेहिं गुप्पंति ।	
भइगरुयभारेण	सामंतचारेण ।	
इसदिसिबहं भमइ	पुहईयलं णमइ ।	10
णाइणिहिं णउ रमइ	विसवाणियं वमइ ।	
कह कइ व भरु सहइ	मउ मुयइ गरु महइ ।	
फणिपुंगमो तसइ	लवणचो रसइ ।	
णरचइभुप वसइ	रणजयसिरी हसइ ।	
परणिवबलं गसइ	विसमत्थलिं कसइ ।	15
वरवाहिणी चरइ	दुंमं पि पइसरइ ।	

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

तीव्रापदिवमेषु बन्धुरहितेनैकेन तेजस्विना  
 संतानक्रमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभोः मेवया ।  
 बस्यान्वारपदं वदन्ति कवयः सौजन्यसत्यास्पदं  
 सौज्यं श्रीभरतो जयस्यनुपमः काले कलौ सांप्रतम् ॥

GK do not give it.

1. १ P साहेप्पिणु. २ MB गहिवि समु; P महिवि समु. ३ P सुरसिरिहरि संकमइ. ४ MBP कह वि. ५ M दुमो पि.

1. 1 गह वि स मु प्रहे आक्रमणे विषमः; °णे या र हो° प्रापकस्य. 5 b पडि ब ल इं धात्रुसैन्यानि; 6 b °वे ला इ प्रवाहेण. 11 b वा णि यं जलम्. 12 b ग इ म ह इ कुत्रापि गन्तुं वाञ्छति. 15 b क स इ चूर्णाकरोति.

जलदुग्गमं तरइ	तरुदुग्गमं हरइ ।	
गिरिदुग्गमं समइ	गयणंगणं कमइ ।	
भडथडहिं तुरएहिं	संदणदिं दुरएहिं ।	
अमरेहिं खयरेहिं	रिउवग्गखयरेहिं ।	20
छव्विह वि संकमइ	अरिपत्थिवे दमइ ।	
रायस्स वसि करइ	अवसो भिसं रमइ ।	

घत्ता—काणणि वईजयंतिणियडे बलु आवासिउ परगहणायरु ॥

गज्जइ गज्जंतहिं गयाहिं पलयकालि णं खुहियउ सायरु ॥ १ ॥

## 2

उवजलहिजलहिनीराइयउ	गिरिगेरुयरेणुयराइयउ ।	
सालालइ णैट्टसालसहिउ	तालालइ तूरतालमहिउ ।	
उँत्तुंगमड्ढि कयमँडुवरु	रत्तासोयंकि असोयधरु ।	
कंचणवंतइ कंचणफुरिउ	पुण्णायपउरि पुण्णायरिउ ।	
ससिरीसि सिरीसपसाहियउ	बहुवंसि णिवंसविराइयउ ।	5
संठियँसुवेसि वेसाभवणु	सभुयंगइ भमियभुयंगगणु ।	
सिहिगलरवि मंगलरवगहिरु	सरियहरिसु कूरवइरिवहिरु ।	
सविसायइ अघिसायउ सविहु	माइंदथइइ मायंदणिहु ।	

६ MBP परपत्थिवे. ७ MBP मरइ, K रमइ, but writes above it मरइ. ८ MPT वइजयत°; B वइजयते.

2. १ M मेरुय°, but records a p °मेरुय°. २ P °रेणुविराइयउ. ३ दूसामाल°, ४ MB छत्तुंग-  
मड्ढि. ५ MB °मडुवरु, P मडवरु. ६ P रत्तासोयकियसोय°. ७ MP सठिउ. ८ MBP सरिवहिरिसु; K  
°वहरिसु but corrects it to वहरिसु

19 a °थड हिं समइ. 21 a छव्विह पडव्विध सैन्यम्. 22 b अवसो भिस र म इ यो वश नागच्छति सोऽ-  
वश्यं प्राणैर्वियुज्यते. 23 वइजयति णिय डि धीणसमुद्धानुप्रवेशद्वारममीपे.

2. 3 a कयमडुवरु कृतबलात्कारवर बन्म. 4 b पुण्णायरिउ पुष्पमाचरित येन. 5 a ससिरीसि  
शिरीषपुष्पयुक्ते, सिरीसपसाहियउ शिरीषैर्मुकुटबद्धैः प्रसाधितमलकृतम्. 7 b सरिवहरिसु सरितां नदीनां  
कूटतटसहितैः कूरवइरिवहि ६ कूराणां शत्रूणा वधे आदृतम्. 8 a सविसायइ पक्षिभिः शाकवृक्षैश्च सहितैः;  
सविहु प्रभुसहितम्; b माइंदथइइ आम्रस्थगिते, मायंदणिहु लक्ष्मीचन्द्रसदृशम्, अथवा, मासि चन्द्रो  
माश्वन्द्र. सकल पूर्णश्चन्द्रस्तेन सदृशम्.

कइलुकइ कइहिं पसंसियउ  
परलच्छीगहणुकंठियउ  
अथामिउ सूरु तमभरियदिसि

थिय हंरिवरि हरिवरभूसियउ ।  
वणि साहणु सयलु वि संठियउ । 10  
थिय णिसि उववासै रायरिसि ।

घत्ता—महिणाहेण समच्चियइं णियकुलविंघइं चावइं चक्कइं ॥

झइउ मंतु महारिहरु दीवकंवाडइं विहडिवि थक्कइं ॥ २ ॥

3

तहिं अवसरि दिणयरु उग्गामिउ  
रहु धाहिउ सहसा तेण किह  
कसपहरतुरियपेरियतुरउ  
विरसियग्रहंगरोसियउरउ  
मणिघंटाजालहिं झणझणइ  
कइवयजोयणइं महासरहो  
पव्वालंकरियउ णं वरिसु  
सुविसुद्धवंसु गुणणमियतणु  
गुणु काडुवि लीलइ जे णियेउ  
रेहइ सरु दिणयरणिम्मलहो

भरहेसैं जिणवरिंदु णामिउ ।  
संपुण्णमणोहरुं पुण्ण जिह ।  
मरुफंसफारफरहरियघउ ।  
पहरणपरिपुण्णसुवण्णमउ ।  
भडभारकंतउ णं कणइ । 5  
जलु लंघिवि पुणरवि सायरहो ।  
कोडीसरु किं ण जणइ हरिसु ।  
सुकलत्तु व पट्टुणा लइउ धणु ।  
करु सवणि ससि व्व सहइ थियउ ।  
णवणालु व कुंडलसयदलहो । 10

घत्ता—कइइ व जाइवि णरवइहि महु संगेण वि वइइ खलत्तणु ॥

गुणथिरकरपरियडुवियउ कण्णालगुं चावकुडिलत्तणु ॥ ३ ॥

4

जीयाविमुक्कु जीवियहरणु  
बहुलक्खगाहि सो मग्गणउ

णं दिणयरु खरपसरियकिरणु ।  
णं पेसिउ दुर्येउ अप्पणउ ।

१ MBP हरिकेहिं हरि भूसियउ. १० MBP दो वि.

३. १ MBP ° मणोरह. २ MBP जोजियउ. ३ MBP ° लग्गचाव°.

४. १ MBP जीयाइ मुक्क. २ MBP दूवउ.

18 दी व क वा ड इं जम्बूद्वीपकपाटानि.

३. 3 a क स° चर्मयष्टिका; b म रु फं स° वातस्पर्शः. 6 a महा सरहो महान् सरः शब्दो जलं च बस्य स समुद्रः. 7 a पव्वालं क रियउ पर्वभिरमावास्यादिभिः ग्रन्थिभिश्च अलंकृतम्. 9 a णियउ नीतः; सवणि कर्णे भ्रवणनक्षत्रे च.

४. 1 a जी या वि मुक्कु प्रत्यक्षया विमुक्तः. 2 a मग्गणउ मार्गणो नाणो याचकश्च.



णिवडिउ सहमंडवि वरतणुहि	कह कह व ण लग्गउ तँहु तणुहि ।	
कंचणपुंक्खेणुज्जोइयउ	सो तेण लपवि पलोइयउ ।	
सुरदणुयदप्पलीलाहरइं	दिट्ठइं णरवइणामक्खरइं ।	5
अरविंदचंदविमलाणणहो	महु आइजिणेसरणंदणहो ।	
भरहहु जो जो ण सेव करइ	सो सो अहि णरु अमरु वि मरइ ।	
ता तेण जि तं जि समिच्छियउ	थोवउ णियपुण्णु दुगुंछियउ ।	
गउ तहिं जहिं सइं अच्छइ भरहु	मयरहरमज्झि खंचियसरहु ।	
घत्ता—अभिखवि णाउं सगोसु कुलु पणविउ सो म्हिवँइभत्तारहु ।		10
सुरहं मि तुच्छधम्मफलिण लग्गइ सिरि करु परपडिहारहु ॥ ४ ॥		

## 5

इंदीवरलोयणु सच्छमणु	पभणइ वरतणुमहिलुलियतणु ।	
तुह विग्गहु णिग्गहु विग्गहहो	तुह संधाणु जि कारणु महहो ।	
पइं सामिय संधिउं जासु सरु	वैउसंधिउ भक्खइ तहु खयरु ।	
पिउ जासु अणिंदु जिणिंदु सइं	पुण्णहिं विणु पहु को लहइ पइं ।	
लइ लइ पयउ हारावल्लिउ	णं महिणुलियउ तारावल्लिउ ।	5
लइ सुरधरणीरुहसंभवइं	कुसुमइं णिखं चिय णवणवइं ।	
लइ णेउराइं लइ कंकणइं	लइ दिव्वइं सत्थइं घणघणइं ।	
लइ दिव्वंगंइं वत्थइं वरइं	लइ खीरतरंगइं चामरइं ।	
धम्मु व जीवहु अब्भुद्धरणु	परमेसर तुहं जि मज्झु सरणु ।	
तं णिसुणिवि भरहें बोह्लियउ	पउ वि अवरु वि मोक्कल्लियउ ।	10
जज्जाहि लपप्पिणु णिययघरु	अच्छहि महु होइवि आणयरु ।	

३ M तउ. ४ MP °पुखेणु°. ५ MBP माहिवहुभत्तारहु. ६ MBP सुरहम्मि धम्मतुच्छफलिण.

5. १ MBP तुहु. २ B संधिय ३ M चउसंधिउ. ४ MBP देवंगइं. ५ MP मोक्कल्लियउ.

9 b °सरहु स्वरथः. 11 सुरहं मि देवानामपि.

5. 2 a विग्गहहो शरीरस्य, q महहो पूजायाः. 3 b वउसंधिउ वपुषः शरीरस्य संधयः संधि-  
बन्धनानि, खयरु गृध्रः.

घत्ता—पूरइ महु महिवइ जसेण दविणविलींसु वासु किं वण्णिउ ॥

उत्तमु जगि अहिमाँणु धणु एउ वयणु किं पइं णायण्णिउ ॥ ५ ॥

6

पप्फुल्लियदुमरसदावणिय  
वरतणु सुरु जिणैवि सुहावणिय  
पुणु जयदुंदुहिसहहु मिलिउ  
पच्छिमैदिसि संमुहु धाइयउ  
हयमूहपयलियफेणुज्जलउ  
सव्वत्थ जि गयमयसिंचियउ  
सव्वत्थ जि गेज्जावलिरणिउ  
सव्वत्थ जि छत्तणिरुद्धदिसु  
सव्वत्थ जि भमियभैमिरभमरु  
सव्वत्थ जि परिधाँइयअमरु  
सव्वत्थ जि कामिणिगीयसरु

सुंयपिँछरिँछकोड्ढावणिय ।  
वेइय धरेवि दाँवहु तणिय ।  
सहुं रापं साहणु संचलिउ ।  
सव्वत्थ जि काँहि मि ण माइयउ ।  
सव्वत्थ जि भँडथडसंकुलउ । 5  
सव्वत्थ जि धयमालंचियउ ।  
सव्वत्थ जि वँदिविँदण्णिउ ।  
सव्वत्थ जि सुरहिगंधँसरसु ।  
सव्वत्थ जि चलियचवलचमरु ।  
सव्वत्थ जि संचरंतखयरु । 10  
सव्वत्थ जि विलसियकुसुमसरु ।

घत्ता—रुक्ख मलंतु दलंतु गिरि जलु सोसंतु णिवेण णिवेइउ ॥

साहणु एम चलंतु पहे सिंधुमहाणइदारु पराइउ ॥ ६ ॥

7

अवलोइय रापं सिंधु किह  
दावियमय णावइ हत्थिहँड  
गिरितवसिहि णं परिघुलियजड

विब्भमधारिणि वरवेस जिह ।  
विबुहासिया वि संगहियजड ।  
रणवित्ति व सोहइ झसपयड ।

६ M विलास. ७ MBP अहिमाण°. ८ MBP पइं किं.

6. १ MP सुयरिँछपिँछ°; B सुयरिँछपिँछ°. २ B °दिससंमुहु. ३ B णडथड°. ४ M वंदविँद°. ५ MBP °गंधरसु. ६ MBP °भमरिभमरु. ७ M परिधाविय°. ८ B विओइउ, P णिवोइउ.

7. १ B हत्थिघड.

12 वा सु व्यासो विस्तरः.

6. 1 a पप्फु ल्लिये त्यादि—प्रफुल्लितैर्दुमैरुपलक्षिता रसायाः पृथिव्या दा व णि या वेदिका; b °को ड्ढा-व णिय कौडकोत्यादिका. 8 b °सर सु शुभारादियुक्तम्. 9 a °भ मिर° भ्रमणशीलाः.

7. 1 b वरवेस वरा वेइया.

अइकुडिल णाहं सुरंमंतिमइ	मलणौसणि णं पंचमिय गइ ।	
धणुलट्टि व दीसइ मुकसर	बहुरायहंसपिय णाहं धर ।	5
कमलेण कोसलच्छि व धरइ	जा महिवइसप्तिहि अणुहरइ ।	
चलसारसजुयलपयोहरिय	कणइल्लपक्खिपंतिहि हरिय ।	
रंगंतवयावलिपंडुरिय	पवहंतकुसुमरयपिजरिय ।	
णं गहियविचित्तवहेत्तरिय	अहवा णं मंडणकब्भुरिय ।	
गयहयचंद्रणरसपरिमलिय	चंदकवकलावसुकोत्तलिय ।	10
जा मिलिय गंपि रयणायरहो	रत्ती धुत्ति व रय णायरहो ।	

घच्चा—ताहि तीरि मुकउ सिमिरु तामत्थइरिसिहंरु संपत्तउ ॥

णं वारुणिदिसिकाभिणिहि णिवडिउ भित्तु णिरारिउ रत्तउ ॥ ७ ॥

## 8

अत्थमिइ दिणेसरि जिह सउणा	तिह पंथिय थिय माणियसउणा ।	
जिह फुरियउ दीवियदित्तियउ	तिह कंताहरणहदित्तियउ ।	
जिह संझाराणं रंजियउ	तिह वेसाराणं रंजियउ ।	
जिह भुवणुल्लउ संतावियउ	तिहं वक्कउल्लु वि संतावियउ ।	
जिह दिसि दिसि तिमिरइं मिलियाइं	तिह दिसि दिसि जारइं मिलियाइं ।	5
जिह रयणिहि कमलइं मउलियइं	तिह विरहिणिवयणइं मउलियइं ।	
जिह घरहं कवाडइं दिण्णाइं	तिह वल्लहखेवैइं दिण्णाइं ।	
जिह चंदेणियकरपसरु किउ	तिह पियकेसहिं करपसरु किउ ।	
जिह कुवलयकुसुमइं वियसियइं	तिह कीलियमिहुणइं वियसियइं ।	
जिह पीयइं पाणइं महुराइं	तिह अंहरइं महुरसमहुराइं ।	10

२ P सुरमंतमइ. ३ MP °णासिणि पंचमिय°. ४ MBP कोसु. ५ P °बहुत्तरिय. ६ MBP चंदक°. ७ MBP °सिह्ति. ८ MBP वारुणदिसि°.

8. १ P दीवउ. २ B omits this foot. ३ MBP° खेमइं. ४ MB अवरइं महरइं; M records a p महरइं for महरइं; P अहरइं महरइं.

7 b कणइल्ल° शुकाः. 8 a °बयावलि° बकपत्ति°. 10 b चंदकवकलावसुकोत्तलिय मयूरपिच्छकुन्तला.

11 a रयणायरहो समुद्रम्; b णायरहो नागरपुरुष प्रति. 13 भित्तु सूर्यः; णिरारिउ अतिशयेन.

8: 1 b °सउणा निमित्तानि. 7 b °खेवइं आलिङ्गनानि.

जिह जिह गलंति जामिणिपहर  
जिह णहि सुक्कुंगमु दरिसियउ

तिह तिह विहण्ण मउरइपहर ।  
तिह विडि सुक्कुंगमु दरिसियउ ।

घसा—ता चक्कउलहं पंकयहं तंबकिरणपूरियभुवणोयरु ॥

विरयहं णरणारीयणहं जीविउ देतु समुग्गउ दिणयरु ॥ ८ ॥

9

सिंधूसरिदारइ सुरहिसमीरइ सुरभवणे  
कोइलकुलकलयलि वियसियसयदलि रंभवणे ।  
उववासु करेप्पिणु जिणु पणवेप्पिणु पीणभुउ  
णरवइ जयमायरु कयणियमायरु रिसहसुउ ।  
जंमभउंहाभावइं चक्कइं चावइं जियरणइं 6  
अहिअंचिवि दिव्वइं हयरिउगव्वइं पहरणइं ।  
णं भूरिपहायरु चंडु दिवायरु णहवडिउ  
मणिगणवेयडियइ कंवणघडियइ रहि चडिउ ।  
पेरिय जोत्तारै हरि हुंकारै तिक्खमइ 10  
मणपवणमहाजव अमुणियखुररव गयणगइ ।  
कयभडकडवंदंणु वाहियसंदणु चैवलधउ  
करिमयररउइहु लवणसमुइहु मज्झि गउ ।  
ता खंचिउं रहवरु भेसियजलयरु सलिलवहे  
जोयंति सुरासुर किंणर खेयर जर्क्ख णहे ।  
रापं सुइसोक्खर णियणामक्खरभूसियउ 15  
थिरु ठाणु णिबंधिवि सरु गुंणि संघिवि पेसियउ ।  
अवरणवणाहहु लच्छिसणाहहु पडिउ घरे  
तडिदंहु व भीसणु काणणणासणु गिरिसिहरे ।

५ MP सुक्कगमु. ६ MP सुक्कगमु.

9. १ M चिकमइ; B चिकमइ. २ P °मइणु. ३ MBP धवल°. ४ MBP मज्झि समुइहु सो जि गउ. ५ MBP खंचिय°. ६ MBP थक्क. ७ P गुणु.

12 b वि डि विटे.

9. 4 जयमायरु विजयलक्ष्मीकरः. 8 °वेय डियइ खाचिते. 9 जोत्तारै साराथिना. 15 सुइ-सोक्खर श्रुतिसुखदानि. 17 अवरणव° पश्चिमसमुद्रः.

सो णिवडिउ महियलि सहसा करयलि ढोइयउ  
 सुरखइसंकासें बाणु पहासें जोइयउ । 20  
 ता तम्मि विसिट्टइं लिहियइं दिट्टइं अक्खरइं  
 णं मत्तावित्तइं मत्ताजुत्तइं णायरइं ।  
 हउं दाणवमहणु कासवणंदणु चक्कवइ  
 महु भरहहु केरी जगभयगारी सेव जइ ।  
 तुहुं करहि पियारी परिहवगारी तो जियहि 25  
 णं तो असिवाणुज जयसिरिमाणुज धुंठु पियहि ।  
 इय तेण पवाइउ कज्जु विवेइउ गयउ तहिं  
 अमरिंदसमाणउ पुहइहि राणउ थियउ जहिं ।  
 पविमुक्कपंहासें दिट्टु पहासें भरहु किह  
 भविणं सपणामें सुहपरिणामें अरहुं जिह । 30

घत्ता—कुसुमइं कप्परुक्खफलइं वार्हणैइं मि वरवाहणवाहहो ॥  
 रयणइं वत्थइं भूसणइं दिण्णइं तेण वसुंधरिणाहहो ॥ ९ ॥

## 10

सुरसिंधुसरिहिं देहलिय धरिवि	पइसरणु करिवि ।	
पुव्वावरेसु परिसंठियाइं	वइरट्टियाइं ।	
वेयडुगिरिहि ओइल्लयाइं	सुधेणिल्लयाइं ।	
चंडाइ मेच्छखंडाइं ताइं	दोसाहियाइं ।	
करवालें णिज्जिउ अज्जखंडु	पट्टुविवि दंडु ।	5

८ MBPK सुरवर°. ९ MBP ता. १० MBP धुउ. ११ MBP °सहासें and T स्वोपहासेन स्वमाहात्म्येन  
 वा. १२ MBP अरहु १३ P वाहणाइ वर°.

10. १ M देहल, BPT देहलि. २ MBP सुवणिळयाइं.

20 पहासें प्रभासनात्रा नृपेण. 22 मत्ता वित्तइं मात्रावृत्तानि आर्यादीनि; मत्ताजुत्तइं माता गुरुलघु  
 गलअभाइइत्यादिस्वराश्च.

10. 1 सुरसिंधुसरिहिं गङ्गासिंधुनयोः; देहलिय मर्यादाम्; ० पइसरणु करिवि पुव्वावरेसु पूर्व-  
 दिग्भागे प्रवेशनं कृत्वा. 2 ० वइरट्टियाइं वैरेणामर्षेण स्थितानि.

मालव मागह वंगंग गंग	कार्लिंग कौर्ग ।	
पारस बम्बर गुज्जर वराड	कण्णाड लाड ।	
आहीर कीर गंधार गउड	णेवाल चोड ।	
वेईस वेर मरु दुँहरंडि	पंचाल पंडि ।	
कौकण केरल कुरु कामरुव	सिंहल पड्डय ।	10
जालंधर जायव पारियाय	णिज्जिणिबि राय ।	
पञ्चतवासि णीसेस लेवि	णियमुह देवि ।	
हेलाइ तिखंडावणि हरेवि	असि करि करेवि ।	
विजयद्दहु संमुहु चलिउ राउ	सेणासहाउ ।	
दियहिहिं पत्तु तं <sup>f</sup> सिहरि केम	मंणि मोक्खु जेम ।	15
दिट्टउ महिहरु सुंसरेण सुसरु	कुहरेण कुहरु ।	
सरहेण विहंडिय भीमसरहु	समहेण समहु ।	
कडयंकिपण कडयंकियंगु	तुंगेण तुंगु ।	
गुरुवंसु गरुयवंसुभवेण	थावरु थिरेण ।	
गज्जियगउ पडिगज्जियगपणं	उम्भियधपण ।	20
हिसियतुंरंगु सतुरंगपण	सरओरण ।	
अञ्चंतससावउ सावपण	पालियवपण ।	
आसंधिउ पत्थिउ पत्थिवेण	विजयहु कपण ।	

घत्ता—गिरि सोहइ दीहत्तणेण पुञ्जावरसमुहु संपत्तउ ॥

तिहिं तिहिं खंडहिं मेइणिहि मेरादंडु व दइवे घित्तउ ॥ १० ॥ 25

१ MBP कुंग. ४ MBP ददुरडि. ५ M हेलाइ वि खडावाणि. ६ MBP तहुं. ७ MBP मुणि; K मणि but corrects it to मुणि. ८ MB ससुरेण समुरु. ९ B कडियंकियंगु. १० GK add after it उम्भयधउ. ११ MBPT सतुरगवयणु. १२ MB समुहु<sup>o</sup>.

16 a सुसरेण शोभनस्वरेण; सुसरु शोभनं सरः पानीयं सरोवरो वा यत्, b कुहरेण पृथिवीधरेण पर्वतेन; कुहरु नृपः. 17 b समहेण पूजनया सहितेन; समहु मधुमुक्तः. 21 b सरओरण सरजतो गिरिः तत्रानुरफेन. 22 a सावएण लक्ष्मीपदेन; b पालियवएण पालितप्रतिज्ञेन. 23 a पत्थिउ पृथ्वीविकारः. 25 मेरादंडु मर्यादाकरणो दण्डः.

## II

तहिं अंबसरि गुहदारहु दूरें  
 आवासिउ गहणि सैडंगु बलु  
 महिसडलमहकईविउ सरु  
 आलुंखियाइं पिकइं फलइं  
 गोमंडलेहिं चिण्णइं तणइं  
 उड्ढावियाइं कोइलकुलइं  
 गिल्लुकइं मुँकइं सयदलइं  
 मयवंदइं रंदइं गिगयइं  
 सुत्तइं रत्ताइं रँइंहरहिं  
 णिवकरिहिं वियारिय विञ्जकरि

सुरतरुवरकरडंकिर्येसूरें ।  
 करिदसणपहरकलुसियउ जलु ।  
 कम्मयरकुदारहिं छिण्ण तरु ।  
 गिल्लूरियाइं सइलदलइं ।  
 मुसुमूरियाइं अंबयवणइं । 5  
 भयतसियइं रसियइं णाहलइं ।  
 दसदिल्लु गयाइं सडणयकुलइं ।  
 एत्तहिं तेत्तहिं रँहसा गयाइं ।  
 णरमिहुणइं णववेल्लीहरहिं ।  
 सुहडेहिं णिहय रुंजंति<sup>१</sup> हरि । 10

घत्ता—घणसिरि उव्वासिय सुइरु एवहिं जणवएण णिरु णिवसइ ॥

पेच्छिवि भरहाहिवणिवइ कुंदपुँप्फयंतहिं णं विहसइ ॥ ११ ॥

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरहए

महाभव्वभरहाणुमणिणए महाकव्ये तिखंडवसुंधरापसाहणं णाम

तेरहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १३ ॥

॥ संधि ॥ १३ ॥

11. १ MBP अवरगुहादारहु सदूरि. २ MBP °डकियइ सूरि. ३ MB सडग°. ४ MBP कइमिउं.  
 ५ MBPK सुकइं. ६ MBP सहसइ. ७ MBP रईयरेहि. ८ MBP °वल्लीहरेहि. ९ MB रुंजंत; P रुंजंति.  
 १० BPK पुष्पवंतहि.

11. 4 a आ लुं खि या इं आस्वादितानि; 4 b सइल° सार्दाणि, 5 a °मंडलेहिं संघातैः. 7 a णि-  
 हु कइं खोटितानि.

## XIV

धरतणुमयमहेण जियमागहेण भुयबलणिइलियपहासैं ॥  
हयपरमहिवइहि सेणावइहि आपसु दिण्णु भरहेसैं ॥ धुवकं ॥

### I

दुवई—संसिविरु जाम तेत्थु पट्टु णिवसइ सिद्धतिखंडमंडलो ।  
ता पत्तो मयासि मणिसेहरु सवणविलंबिकुंडलो ॥ १ ॥

<p>सो पमैणइ पणबियसिरु संहरिसु णवर्षणथणियमइरमणहरेगिरु भो कयविजयविजयगिरि उत्तर- सा वि तिखंड चंडरिउखंडण सिहरिगुहादुवारु उग्घाडहि जइ तो मग्गु भंडारा होसइ जयगिरिवरसिहरग्गणिकेयउ ता चमुपमुहहु वयणु गिरिक्खिउ भो मेहेसर करहि महुत्तउ णिविहु विहंडिवि पडउ विसइउ स पट्टुमणोरइकरणुकंडिउ</p>	<p>मुहससिकिरणपसरधवलियदिसु । 5 सुयणु भुयणभरधरु णिरुवमु णिरु । दिसि अवर वि सुर णर रवि तुह धर । भो णाहेयतणय कुलमंडण । कुलिसदंडखरपहरे ताडहि । पुण्णु तुहारउ गरुयउ दीसइ । 10 जासु अहं पि दासु संजायउ । जसवइपुत्ते पेसणु अक्खिउ । हणहि गिरिंदकवाडु णिरुत्तउ । जिह हयदुज्जणमणु तिह फुट्टउ । सो पसाउ पभणंतु समुट्टिउ । 15</p>
--	---

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

केलासुब्भासिकन्दा धवलदिसिगउभिण्णवन्तङ्करोहा  
ससाहीबद्धमूला जलहिजससमुब्भूयाडिण्डीरवत्ता ।  
बम्भण्डे वित्थरन्ती अमयरसमय चन्दबिम्बं फलन्ती  
फुलन्ती तारओह जयइ णवलया तुज्ज भरहेस किती ॥

M however reads °पिण्डीर° for °डिण्डीर°. GK do not give it.

1. १ MB संपइ जाम; P एतहि जाम. २ P सुहरिसु. ३ B °पसरि°. ४ MBPT °वण्णुणियम्°. ५ K °मणहरि. ६ MBP साधि. ७ MBP तउ. ८ P °सिहरणिकेयउ. ९ MBP करि महु वुत्तउ.

1. 1 °मयमहेण °मइमयनेन. 4 मयासि अमृताशी देवः. 11 a जयगिरिवर° विजयार्थः. 13 a महुत्तउ मया उक्कम्. 14 a पडउ पतट्टु गच्छट्टु; विसइउ विकसितः.



परिणयसुयतणुमरगवहरियद्  
वरभडसंगरपहरणपोडउ  
जापवि पट्टि देवि गिरिवारद्

जाणागमणविलासहुं भरियद् ।  
चडलतुरंगरंयणि आरुडउ ।  
धरिवि तुरउ संमुहुं खंधारद् ।

घसा—अवहत्थिवि छलेण णियभुयबलेण हुंकारिवि णिरु रसच्छे ॥  
परणरंपंडिसलणु महिहरदलणु उम्मुकु दंड परिहच्छे ॥ १ ॥

20

## 2

दुधई—मुकइ पहरणम्मि हरि णिग्गउ खुरदरमलियकाणणो ।

बलपुंगसु वि णविउ णरणियरहिं जगजयपहसियाणणो ॥ १ ॥

ता दंडरयणणिट्टुरपहारविहडियकवाडकिंकारसइसंमइखुइविहवियसप्पमुह-  
मुकफारफुकारजाालियविसंसिहिजालं ।

जालामालाकलावहेलापलित्तणासंतमत्तकरिचरणपेह्लणुल्लियमणिसिलावडैण-  
कुद्धरंजंतसहूलरोलमीमं ।

भीमुंभापम्भारभरियकुहरंतणिग्गयाहिंदसुंदरीमुकसिचयपयडियपयोहरुल्लिहियं- 5  
हिययरहरसियतावसुद्धरियं चरियभारहारं ।

हौरवमुयंतसवरीपुल्लिदसिसुदीसमाणकेसरिकिसोरणहकुलिसकोडिदारिय-  
कुरंगरुहिरंभवाहर्दुग्गं जायं गुहादुवारं ।

घसा—इज्जंतहं खगहं महिहरमृगहं घोसेणप्पाणउं णिदइ ॥

अमुणियवेयणु वि णिञ्चेयणु वि णं दंडे ताडिउ कंदइ ॥ २ ॥

१० M परिण° . ११ MB °रयणआरुडउ . १२ P °परिखलणु महिहरंदलमलणु .

2. १ MBP °जणिय° . २ M विसग्गिसिहि° . ३ MBP °वडणरुट्टुरंजंत ( P रुजंत ) मत्तसहूल° .  
४ MBP भीमुण्हा° . ५ B °ल्लिहियरइ° . ६ B °रियभार° . ७ P हाहारव° . ८ G °दुग्गं . ९ MBP °भिगइ° .

16 a परिणयसुयतणु° तरुणशुकशरीरवन्नीलः . 18 a पट्टि देवि वृष्टे दत्त्वा . 19 छलेण हननविशानकुञ्ज-  
लेन . 20 परिहच्छे वेगेन .

2. ३ °संमहं कोलाहलः . 4 °विहवियं उपजुताः . 5 °हेलापलित्तं युगपत्प्रज्वलितः . 7 भी-  
मुम्भा प्रचण्डस्तापः . 8 °पयडिये त्यादि-प्रकटितौ च तौ पयोभरौ ताभ्यामुल्लिखितं विदारितं हृदयं येषां ते ;  
°रहरसिय रतिरसिकाः ; °चरियभारहार चारित्रभारस्य हारो हरणं यत्र .

3

दुर्वा—ता मंजीरहारकेऊरकिरीडफुरंतभूसणो ।

अमरो अमरसमरसंघट्टविहट्टियवहरिसासणो ॥ १ ॥

छड्डियावलेवो	इच्छियंघिसेवो ।	
रिद्धिबुद्धिवंतो	आगधो नुरंतो ।	
भूयंभक्तिकामो	तग्गिरिंणामो ।	5
सेलसिगवासो	सुद्धसेयवासो ।	
वंदिओ णरिंदो	तेण वीरंवंदो ।	
हारमिंदुधामं	दिव्वपुप्फदामं ।	
कंकणं किरीडं	कुंभमंभणीडं ।	
पंडुरं पसत्थं	चारु हारि वत्थं ।	10
कुंजरारिवूढं	हेमरण्णवीढं ।	
हित्तकंजलीलं	भम्मदंडणालं ।	
सव्वल्लोयमोल्लं	किसिधेल्लिफुल्लं ।	
चामरेण जुत्तं	णिम्मलायवत्तं ।	
हासहंसवण्णं	राह्णो विहण्णं ।	15
मंगलं पहाणं	तित्थतोयण्हाणं ।	
रुक्खरोहियासे	तम्मि भूपपसे ।	
अच्छिओ छमासं	देवदारुवासं ।	
वल्लरीललंतं	माणियं वणंतं ।	
णिम्मायग्गिजालं	मंदधूममालं ।	20

3. १ MB °संहट्ट°. २ MB छड्डिया°. ३ P भूप°. ४ MB वीरवंदो. ५ MB °मंडणीडं. ६ MBP हेमवण्ण°.

3. 1 °केयूर° बाहुरक्षः. 2 °सं घट्ट° मेलापक. संमदीं वा; °सा सणो सा लक्ष्मीस्तस्याः स्वनः आज्ञावचनं वा. 3 b इच्छियंघिसेवो इष्टा पादसेवा यस्य सः. 5 a भूयं भूपः; b तग्गिरिंणामो विजयार्थनामा. 9 b अंभणीडं जलसूतम्. 11 b हेमरण्णवीढं हेमरत्नपीठम्. 12 a हित्तकंजलीलं हृता अनुकृता कजस्य पद्मस्य लीला शोभा येन; b भम्मं सुवर्णम्. 17 a °रोहियासे °प्रच्छादितदिशि. 19 a वल्लरी° वल्ली,

मुकदीहसासं	णं महीहरासं ।
दावियंधयारं	तं गुहादुवारं ।
णट्टताववेयं	सिद्धमग्गभेयं ।
लग्गसीयवायं	सीयलं च जायं ।

घत्ता—चंदणचच्चियउ कुसुमंचियउ ता पेसिउ पालियखत्तं ॥ 25  
 आरासयफुरियउ सुरपरियरिउ संबलियउ ऋकु पयत्तं ॥ ३ ॥

4

दुवई—पुणु चक्काणुममालंमांतमहाभडकरितुरंगयं ।  
 चलियं साहणं पि रहभमियरहंगाहयभुयंगयं ॥ १ ॥

वसहकरहखेरवरवलइयभरु	हरिखुरदलियमलियवणतणतरु ।
मयगलमयजलपसमियरयमलु	दसदिसिमिलियमणुयकयकलयलु ।
कसन्नसमुसलकुलिससरकरयलु	जणवयपयभरपैणवियमहियलु । 5
असिवरसलिलपवहधुंयपरिहवु	सनिलयविलयवलयखणखणरु ।
मसिणघुसिणरससुपुसियउरयलु	पवणपहयधैयचयचियणहयलु ।
चवलचमरावियैलणपसरियकरु	परिमललुलियललियमहुलिहसरु ।
मरुवहविगयखयरसुरवरघरु	अमरिसकसणपिसुणजयसिरिहरु ।
सहपरिभमियजिमियसुरमियसहु	पैहुसुहजणणकहियमणहरकहु । 10
पहरविहुंरु सुमरिवि मयभययरु	णिववलु गिलइ व गुहमुहगारिवरु ।

घत्ता—तेण जि रिउमहहो मग्गियपहहो धेरु आयहु फणिवहुलालिउ ॥

भरहहु भयवसेण सगुहामिसेण णियहिर्यवउं दक्खालिउ ॥ ४ ॥

७ MBP सिद्धमग्ग°.

4. १ B °मग्गलग्ग महा°. २ B °खरखुरवलइय°. ३ MBP °पणमिय°. ४ B °चुवपरि°. ५ M  
 धयचयवियणहलु; P °धयचुवियणहयलु. ६ P °वियलिण. ७ MBP पहसुह°. ८ MBP °विदुर. ९ MBP  
 घर. १० MBP °दियवउं ण दक्खालिउं.

21 b महीहरास पर्वतमुखम्. 23 b सिद्धमग्गभेद शिष्टमार्गभेदम्.

4. 7 a °विय° प्रच्छादितम्. 9 a मरुवह° पवनमार्गः आकाशम्; °सुरवरघरु देवविमानम्.  
 10 a °सहु सत्ता.

5

दुवई—कज्जलणीलबहलतमपडलविणासियणयणमग्ग ।

वच्चइ वाहिणीह ण सुहेण महीहरकुहरदुग्गय ॥ १ ॥

इय चित्तिवि कप्पि ढोइवि कागणि	चमुपमुहेण लिहिय ससि दिणमणि ।
ते सोहंति विवरघरभित्तिहि	णावइं णयणइं णरवइकित्तिहि ।
करणियरेण ताहं तमु सारिउ	णिसि दिवसइं सोहंति णिरारिउ । 5
वहइ सेण्णु जयदुंदुहि वज्जइ	पलयकालि णं जलणिहि गज्जइ ।
उग्गभंतपडिरवग्गभीरहिं	दुरयघडाघंटाटंकारहिं ।
संदणमुक्कचक्कच्चिकारहिं	धाविरवीरंधीरहुंकारहिं ।
महिहरविवरमग्गु णं फुट्टइ	रोलें तिहुयणु णाइं विसट्टइ ।
इंदु वरुणु वइसवणु विसूरइ	मेइणि कह व भारु साहारइ । 10
सायरु कह व ण महीयलु रेल्लइ	मंदरु कह व ण ठाणहु चल्लइ ।
चंदाइच्चजुयलु णहि झुल्लइ	णील्लु णिसहु केलासु वि हल्लइ ।
पम सेण्णु गच्छंतउ दिट्टउ	अद्दगुहार्धरणियलि पइट्टउ ।

घत्ता—रायहु केरण परिवारपण पहि जंतं परमयसाडें ॥

मणि आसंकिउ मुहुं वंकिउ फणिसंखकुलियकंकोडें ॥ ५ ॥ 15

6

दुवई—किंणरगरुडभूयकिंपुरिसमहोरयजक्खरक्खसा ।

पहुणो तण्णिवासि संजाया वेंतंर के ण के वसा ॥ १ ॥

तओ दोणि भूमीहरंते णईओ	सुकारंडभेरंडलीलारईओ ।
समुम्मग्गणिम्मग्गणामालियाओ	जलावत्तकीलंतमीणालियाओ ।
तडालग्गडिंडीरपिहुग्गयाओ	गिरिंदस्स गुज्झंतरा णिग्गयाओ । 5

5. १ MBP °धीरवीर°. २ MBP वि जूरइ. ३ B णील्लि णिसहु; K णील्लिणिसहु. ४ K धरणियलु. ५ P कंकोडें.

6. १ MBP वितर.

5. 2 वा हि णी ह सेनासंनाहः. 12 a झुल्लइ कम्पते. 14 परमयसाडें शत्रुमदविध्वंसकेन.

6. 2 के ण के के न के, अपि तु सर्वे. 3 a भूमीहरंते पर्वतमये.

विसुल्लोलवेलावलीवंकियाओ	पहस्संतरे राइणो थक्कियाओ ।	
महाणायराथस्स णं गाइणीओ	झसुप्पिच्छसिंधुस्सरीजाइणीओ ।	
अमग्गाइं दुग्गाइं णिन्धारणं	सविण्णाणिणा संकमेणं क्कणं ।	
सरीसारतीराइं संदाणिऊणं	पुरो भिच्चसंचारयं जाणिऊणं ।	
दरीमाणियं पाणियं लंघिऊणं	परं पारमाधारमासंघिऊणं ।	10

घत्ता—गिरिकुहरंतरहो रमियामरहो णिग्गंतउ सालंकारउ ॥

सहइ महारुहहो वियलिउ मुहहो बलु कव्वु व सुकइहि केरउ ॥ ६ ॥

7

दुवई—ता णिग्गंति भरहि भेरीरवकंपियमेच्छमंडलं ।

परबलदलणवीरकोलाहलमिच्छियसमरगोंदलं ॥ १ ॥

जं गुत्तुगुलंतचोइयमयंगपयभूरिभारभारिज्जमाणभूकंपणमियणाइंदमुक्क-  
पुक्काररावघोरं ।

जं हिल्लिहिलंतवाहियतुरंगखरखुरैखयावणीचलियधूलिणासंततियसतरुणी-  
विचित्तघोलंतचेलचित्तं ।

जं हणुभणंतपक्कलपदुक्कपाइक्कमुक्कल्लेक्कहक्करिउसुहडविहडणुग्घुट्टरोलफुट्टंत-  
गयणभायं ।

जं रहियमुक्कपग्गहविसेसरंगंतरहरसाचलणपैडियगुरुसिहरिसिहरचुण्णजाय-  
चंदणकुचंदणोहं ।

२ M पहासतरे; B पहामंतरे. ३ MB झसुप्पत्तिसिंधूसरी°; P झसोपित्थ सिंधूसरी°; T उपित्थ उल्लण.  
४ BP पारमावार°.

7. १ MBPK °णविय°. २ MP °फुकार°, B °सुंकार, K °पुकार°. ३ MP °खुरखरखयावणी°. ४ MBP हणुहणुभणंत°. ५ MBP °ललक्क°. ६ P °रगततुरयरह°. ७ MP °चलणवडिय°; B °चलण-  
चडिय°. ८ MBP °सिहरसयचुण्ण°.

6 a वि सु ल्लो ल° जलकल्लोला°. 7 b झ सु प्पि च्छ° मत्स्योत्त्वणा सिंधु., °जा इ णी ओ °गामिन्यः. 8 b स वि-  
ण्णा णि णा कुशल्लेन स्यपातिरत्तेन, सं क मे ण जलरोधार्थं कृतेन सेतुबन्धेन. 9 a सं दा णि ऊ णं रुद्धा. 12 म हा-  
रु ह हो अतिमहतः कवेः.

7. 2 'गोंदल मेलापक.. 2 °प क ल° समर्था°, °ल ल क° रौद्रः. 6 °प ग्ग ह° रइमयः; °कु चं द ण°  
रफचन्दनादि.

जं हारदोरकेऊरकड्यकंचीकलावमउडावलंबिमंदारदामसोमंतजक्ख-  
जक्खीविमाणछणं ।

जं भीयरं वराराकरालचक्राणुगामिमंडलियसूरसामंतकौतकरवालचाव-  
संघायसंकडिल्लं ।

जं दंतिदाणधारापवाहपसमंतरेणुदीसंतदसदिसाणणभरंतसेणाणरुद्धरिय-  
विविहछत्तचिंधं ।

जं भिञ्चदेहपरियलियसेयणीसंदर्बिंदुहयफेणसलिलचिक्खंल्लंतल्लुखुप्पंत-  
सयडसंकिण्णकुहिणिदेसं ।

10

यत्तौ—तं पेच्छिवि पबलु उत्थरिउ बलु बोह्लिञ्जैइ मेच्छकुलेसहिं ॥

एवहिं को सरणु दुक्कउ मरणु रिउ धाइय चउहुं मि पासहिं ॥ ७ ॥

8

दुवई—गिरिदरिसरिमुहाइं जो लंघइ पडु सामत्यवंतओ ।

सो अम्हारिसेहिं किं जिप्पइ णिज्जियदहंदिद्यंतओ ॥ १ ॥

बहुकालहु दइवेण णिवेइउ

वयणु सुणिवि आवत्तचिलायहं

धीरं मंतं पउ पवुच्चइ

सव्वु सहिज्जइ जं जिह दुक्कइ

जहिं भंडणु तहिं अवसें खंडणु

विसहर परणरसेण्णवियारा

धुमरहु सामिसाल सन्भावें

तेहिं मि प आलाव विवेइय

हा हा पलयकालु संप्रोइउ ।

मेच्छमहामंडलमहिरायहं ।

आवइकालइ धाह ण मुच्चइ । 8

इयविविहिविहियहु को वि ण चुक्कइ ।

धीरत्तणु जि मणूसहु मंडणु ।

ते तुम्हहं कुलदेव भडारा ।

किं भएण किं किर बलगावें ।

णाय मेहमुह मणि णिज्जाइय । 10

१ MB भीयरंबदाढाकराल°; P भीयरावदाढाकराल°. १० MBP °चिक्खिल्ल°. ११ MBP बोह्लिज्जइ.

8. १ MBP °दहदिहंतओ. २ MBP संपाइउ. ३ MBP आवइकालि धाह णउ मुच्चइ. ४ MBP णिवेइय. ५ °मेहमुहु.

8 वरारा° श्रेष्ठा आरा. 10 °णी संद° निष्पन्दः.

8. 4 a आवत्तचिलायहं आवर्तकिरातनामोः भ्लेच्छराजयोः. 9 b बलगावें बलगवें.

वियडफडाकडप्पदप्पुम्भड  
उल्लंततर्तद्धूममलीमस  
अग्घकुसुमरसवासुद्धाइय

गरलाणलपल्लित्तगिरितडवड ।  
सिरमणिगणमऊहवीवियदिस ।  
चल्लंवलंत ते झसि पराइय ।

घत्ता—बोल्लिउ उरगइणा विसहरवइणा किं पाडमि गहणक्खत्तइं ॥

कीलियसुरवरहो माणससरहो णिल्लूरमि किं सयवत्तइं ॥ ८ ॥

15

## 9

दुवई—ता मेच्छाहिवेण भणिया फणिणो गज्जंतगायवरं ।

णिहणह वेरिसेण्णमिणमो तरुणीकरचलियचामरं ॥ १ ॥

खंधावारहु उप्परि अहणिसु  
मयउलु तसइ रसइ वरिसइ घणु  
महिणीहरिउ हरिउ वड्डइ तणु  
फुल्लकलंबंतवु दीसइ वणु  
तडि तडयडइ पडइ रुंजइ हरि  
जलु परियलइ घुलइ घुम्मइ दरि  
जलु थलु सयलु जलु जि संजायउ  
सरु कुसुमसरु णिरारिउ संघइ

ता णायहिं वेउव्विउ पाउसु ।  
पीयलु सामलु विलसइ सुरघणु ।  
पवसियपियहि पियहि तप्पइ मणुं । 6  
तिम्मइ तम्मइ मणि जूरइ जणु ।  
तरु कडयडइ फुडइ विहडइ गिरि ।  
अइरय सरइ भरइ पूरें सरि ।  
मग्गु अमग्गु ण किं पि वि णायउ ।  
विरहैं मंथिय पंथिय विंघइ । 10

घत्ता—पाणिउ णीयगइ विज्जु वि डहइ धणु णिग्गुणु कुडिलु सुरिंदहो ।

पाउसु हयमणहो समु दुज्जणहो जो वरिसइ उवरि णरिंदहो ॥ ९ ॥

६ MBP उल्लंततबहुभूम°, ७ K चलचलंत.

9. १ MB णिहणिवि. २ MBP तणु. ३ BP °कलंबु तब. ४ MBP अमग्गु वि किं पि ण णायउ.

12 a °तद्धूममलीमस वटवृक्षसमुद्धूतधूमवन्मलिनाः. 13 a °वासुद्धाइय °गन्धेन सत्वरमागताः. 14 उर-  
गइणा सपेण.

9. 2 इणमो इदम्. 3 a अहणिसु अहनिंशम्, b पाउसु वेघः. 6 b तिम्मइ तम्मइ जलाद्री-  
भवति खियते च. 8 b अइरय शीघ्रवेगा; सरइ वहति. 11 णीयगइ निन्नेन गच्छतीति.

10

दुवई—सलिलुत्थल्लरेल्लपडिपेळणहयदुमविगयारिंछओ ।

णवघणरावमुइयचंदककलाबुद्धसियपिंछओ ॥ १ ॥

दीसइ लग्गउ वासारत्तउ	सेणामहिलहि णावइ रत्तउ ।
असिजलि णिवडि वि जलु पुणु धावइ	भडभुयदंडइ संमृहुं आवइ ।
ताहिं तं ण मिलइ गमणु जि मग्गइ	लोहं गिलियहु को किर लग्गइ । 5
धुवइ किं पि अलिपिंछहिं वलियउ	वहुमुहलिहियउ पत्तावलियउ ।
क्के मंडणु विसहइ रिउघरिणिहि	ढालइ सिरसिंदरइं करिणिहिं ।
वंस वंस तुहुं मइं वड्डारिउ	एवहिं परचिंधं वेयारिउ ।
महु सरु प्रैणहारि णावइ सरु	इय गजंतु व पभणइ जलहरु ।
घोयइ मयमायंगहं दाणइं	दुम्मेहहं रुचंति ण दाणइं । 10
थक सचक्कवाय रह णं सर	तोइ तरंति ण के के किर णर ।
तां पभणइ णरणाहपुरोहिउ	लोउ देव उवसमो रोहिउ ।
एयहु पडिविहाणु लहु किज्जइ	अईणु वारिवारणु चित्तिज्जइ ।
ता रापं बलवइमुहुं जोइउ	तेण वि पेसणु झत्ति विवेइउ ।

अत्ता—णियमणि चित्तियउ तैलि चित्तियउं तं चम्मरयणु जणभरधरु ॥

उप्परि पुणु थविउ जगगउरविउ धवलीयवत्तु जियससहरु ॥ १० ॥ 15

11

दुवई—बारहजोयणाई वित्थारं सिविरु कुलीरमाणिण ।

पविउलछत्तचम्मकयसंपुडि थिउ वरिसंतु पाणिण ॥ १ ॥

10. १ K सलिलुत्थल्ल<sup>०</sup>. २ MB पाणहारि; P पाणिहारि. ३ MBP ताम भणइ. ४ M अयणुं, ५ MBP घत्तियउ. ६ K<sup>०</sup>आयपत्तु जिह ससहरु.

11. १ MBP वरिसंत.

10. 1 सलिलुत्थल्ल<sup>०</sup> जलेनोत्पादितः; रेळ<sup>०</sup> चालितः. २<sup>०</sup>चंदककलाबुद्धसियपिंछओ मुक्त-चन्द्रकाणां मयूराणां कलापाः उद्ध्वसिताः. 3 a वासारत्तउ वर्षाकालः. 6 a धुवइ क्षालयति. 8 a वंस वंस हे ध्वजदण्ड. 10 b दुम्मेहहं दुष्टमेघानां दुर्मेघसां च. 13 b अइणु चर्मरत्नम्; वारिवारणु छत्ररत्नम्. 16 जियससहरु निर्जितः चन्द्रः येन तादृशम्.

11. 1 कुलीरमाणिण मत्स्थानं प्रीतिकरे.



गयणयलु धरणियलु गिरिसिहर रेळियउ पडियण पउरेण तोएण पेळियउ ।  
 अइणायवत्तेहिं रइए समुग्गम्मि णिवसंति णरवइणरा णां सम्गम्मि ।  
 ते दोण वरिसंति ते णेय जाणंति इट्ठां मिट्ठां सोक्खां माणंति । 5  
 रयणोयरे साहणं जाम संचरइ अरविंदगम्भम्मि अलिउलु व रइ करइ ।  
 खलबलहरोवाय हिययम्मि संभरइ कागणिकयाइच्चससियरहिं वावरइ ।  
 सत्ताहरत्ते गए णवर कुद्धेहिं चूडामणिहेहिं मारणविरेद्धेहिं ।  
 इंगालहरिणीलकालिंदिकालेहिं मुहकुहरणिम्मुक्कगरलग्गिजालेहिं ।  
 उच्चुंगभूमंगभंगुरियमालेहिं सिसुससहरायारदाढाकरालेहिं । 10  
 णिट्ठवियपरदंडजमदंडदीहेहिं आरत्तलोलंतंचलजमलजीहेहिं ।  
 गरुयाहिमाणेहिं परिगहियमेच्छेहिं कलहिच्छदुप्येच्छरोसारुणच्छेहिं ।  
 णीसासविसलवमलोलित्तचंदेहिं मरु मरु भणंतेहिं मरुगांसिचंदेहिं ।  
 हरिकरिमहाजोहसामंतपम्मारु विउणयरु तितुणयरु वेडियउ खंधारु ।  
 रामाहिरामेण संगामधुत्तेण रूसेवि देवाहिदेवैस्स पुत्तेण । 16

घत्ता—परणरदुज्जयहो रापं जयहो वीरपट्टु सइं बद्धउ ॥

सो विसहरवैरहं णवजलहरहं जुगीखयकयंतु णं कुद्धउ ॥ ११ ॥

## 12

दुवई—ता सोलहसहासजक्खामरविरइयगंधवाहिणं ।

भग्गा सलिलवाह पीलू विव चलयरहरिणणाहिणं ॥ १ ॥

चक्के वइरिमहाभड छिण्णा दइवें णां दिसाबलि दिण्णा ।  
 तं अवलोयवि गय भयवस फाणि गय णवघण गय सा सोदामणि ।  
 मेच्छणारिंदहिं सकरुणु रुण्णउं दोजीयहुं किं किरं पडिबण्णउं । 6

१ MBP °विलुद्धेहिं. ३ B °ससिहरापाए°. ४ MBPK °घोलत°. ५ MBP °मलालित्तदेहेहिं. ६ MBP मरुगासिमंडेहिं. ७ P °देवैसपुत्तेण. ८ MBP सइं वीरपट्टु सिरि बद्धउ. ९ MB °धरहं; P °धारहं. १० °हारहं; GK omit णवजलधरहं. ११ MBP जुगखइ कयतु.

12. १ MBP सोलस°. २ MBP दोजीइहिं. ३ MB किकर.

4 a अइणायवत्तेहिं चर्मातपत्राभ्याम्; समुग्गम्मि संपुटे. 5 a दोण द्रोणमेवाः. 7 b खलबलहरोवाय बुधानां बलापहारिण उपायान्. 13 b मरुगासिं सर्पाः. 14 b विउणयरु द्विगुणतरम्.

विसेभरियहं किं किर सुयणत्तणु	वंकगइल्लहं किं गुणकित्तणु ।	
छिहण्णेसिहिं को रंजिजइ	अणिलासिहिं किं परु पोसिजइ ।	
चरणविवाज्जिउ को जसु पावइ	णिच्चभुयंगहं णिच्चु जि आवइ ।	
रणजइ जउ गज्जिउ घणणापं	घणणाउ जि सो <sup>१</sup> कोक्किउ रापं ।	
सिरचूलाचुंभियभूभायहिं	दूरंतरहु णमंसियपायहिं ।	10
दिण्णहिरण्णवत्थसंघायहिं	दिट्ठु राउ आवत्तचिलायहिं ।	
साहिवि मेच्छराउ गंजोल्लिउ	अणुतीरें सिंधुहि पुणु चल्लिउ ।	
पहु हिमवंतु पराइउ जावहिं	आइय सिंधु भड्ढारी तावहिं ।	
देथि दिव्वदेह णउ सा सरि	सिंधुकूडवासिणि परमेसरि ।	
राउ णिहालिवि कलसविहत्यइ	लहु भदासणि णिहिउ पसत्थइ ।	15

घत्ता—सिंधूदेवयण जलयरघयण अहिसिंचिवि थुउ मउलिवि कर ॥

दिण्णी माल तहो भरहाहिवहो णवपुप्फयंतथिर्यमहुयर ॥ १२ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइण

महाभवभरहाणुमण्णिण महाकव्वे आवत्तचिलायपसाहणं णाम

चोद्दहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १४ ॥

॥ संधि ॥ १४ ॥

४ P विसहरियहं. ५ P छिहाणेसिहिं. ६ MBP कोक्किउ सो. ७ P सिंधुवदेवइ. ८ B <sup>१</sup>पियमहुयर.

12. 7 b अ णि ला सि हिं वायुभक्षैः सर्पैः. 8 a चरण<sup>०</sup> चारित्रं पादाश्च. 12 a गंजो ल्लिउ रोमा-  
चित्तः उल्लसितः प्रभुः. 17 ण व पु प्फ यं त<sup>०</sup> नवानि पुष्पाणि कान्तानि यस्याम्; नवपुष्पाणां वा अन्तो मध्यम्.



2

णिक्खित्तसुरासुररहणियले  
णवचंपयकुसुमावासियउ  
बहुदोरहिं दूसइं ताडियइं  
करिसालाणडक्षालाहरइं  
हरिवरमंदुरउ समुंडियउ  
ठवियइं मणिमंडवियासयइं  
दुव्वारवइरिमयपहरणइं  
दक्खालियसैसहररयणियहि  
कुससयणि पसुत्तउ सइं भरहु  
करि धरिउ सरासणु राणएण  
आरुहिवि रईगि ण संकियउ  
जो लोहवंतु परमग्गणउ  
किं अच्छइ णवर उँद्धु गयउ

हिमवंतकूडतलधरणियले ।  
साहणु सडंगु आवासियउ ।  
रणवडहसहासइं ताडियइं ।  
उब्भियइं पउरसालाहरइं ।  
णं घडदासीउ सुमुंडियउ । 5  
अवराइं मि दिव्वइं आसयइं ।  
अहिवासिवि भूसिवि पहरणइं ।  
पोसहु पडिवज्जिवि रयणियहि ।  
उग्गमिउ दिणाहिवु णहि भरहु ।  
बहु विहरिउ मंडलराणएण । 10  
वइसाहटाणु सइं संकियउ ।  
सो गुणि संगिहियउ मग्गणउ ।  
हिमवंतकुमारहु णं गयउ ।

घत्ता—पडिउ संपंगणए उँप्पुंखु बाणु अवलोइउ ॥

चित्तिउ तेण मणे को एहउ काले चोइउ ॥ २ ॥

15

3

किं पाणि पसारिउ फणिमणिहे  
दीहरजालामालाजलिउ  
केसरिकेसरु उल्लुरियउ

तडयडिहे णहि सोदामणिहे ।  
पलयाणल्लु केण पडिक्खलिउ ।  
कालाणिण्लु केण विधारियउ ।

2. १ P read after this: मिहुणइ रमंति रत्तासयइ, अवराइं मि दिव्वइं आसयइं, णियपहाणिज्जय-  
देवासयहिं. २ MB read after this. मिहुणइं रमंति रत्तासयइं, णियपहाणिज्जियदेवासयइं. ३ BP ससिहर-  
रयणियहि. ४ P रईगि. ५ MBP उद्धगयउ. ६ M पपगणए; B पसंगणए. ७ MB उप्पंखु.

3. १ MBPK पाडिखलिउ. २ MBP कालाणल्लु.

2. 5 a स मुं डिय उ मन्दुरोभयपार्श्वनिष्ठातकाष्ठद्वयेन सहिताः. 6 b आ स य इं आश्रया गृहाणि. 8 a  
दक्खालिये स्या दि-दर्शितः शशधरश्चन्द्र एव रत्नं चूडामणिरत्नं यया रजन्या; b र य णिय हि रजन्याम्. 9 b  
भरहु नक्षत्रप्रच्छादकः. 10 a राणए ण राः द्रव्य तस्य आनयनप्रहृणकारिणा राज्ञा. 11 b व इ सा ह टा णु  
वामपदजानुं भुवि मुक्त्वा अपरमूर्ध्वांकृत्य वैशाखस्थानमुच्यते; सं किय उं सम्यक् कृतम्. 13 b ग य उ गदो रोगः.

3. 3 b कालाणि लु प्रलयवातः.

किउ केण गरुडपक्खाहरणु	भणु केण गिसुंभिउ जमकरणु ।	
दलवट्टिउ माणु पुरंदरहो	किं सिहरु पलोट्टिउ मंदरहो ।	5
णियहत्थे णिम्मंथिउ जलहि	पडिक्कल्लिउ केण हवत्तुं विहि ।	
दिट्ठीविसवयणु णिरिक्खियउ	केँ हालाहल्लु विखु भक्खियउ ।	
जगि केण भाणु णिचेइयउ	महु केण रोसु उप्पाइयउ ।	
को पारु पराइउ णहयलहो	को सुपहुत्तउ णियभुयबलहो ।	
किं ण मरइ करवालेण हउ	ण वियाणहुं किं सो वज्जमउ ।	10
सरु मज्झु वि केण विसज्जियउ	ख्यंयडिड्डमु कासु पवज्जियउ ।	

घत्ता—जेण विमुक्कु सरु अइदीहु समाणु फणिदहो ॥

सो महु मरइ रणे जइ पइसइ सरणु सुरिंदहो ॥ ३ ॥

## 4

इय तेण गज्जियउं	पुणु कज्जु सज्जियउं ।	
पिंछेहिं पत्तियउ	दित्तीइ दित्तियउ ।	
चित्तेण चित्तिर्यउ	मंतेण मंतियउ ।	
हिययम्मि चित्तियउ	राएण घत्तियउ ।	
गंघेहिं चच्चियउ	फुल्लेहिं अंचियउ ।	5
पुण्णेहिं संचियउ	केण वि ण वंचियउ ।	
हयवेरिसंताणु	अवल्लोओ बाणु ।	
ता तम्मि लिहियाइं	सुरणियरमहियाइं ।	
णिज्जियदियंताइं	परिच्छेयवंताइं ।	
वाइंसिअंगाइं	छंदाणुलगाइं ।	10
विंदुयहिं चप्पियइं	मत्ताधियप्पियइं ।	

३ M णिमत्थियउ, BP णिम्मत्थियउ, ४ P हणत्तु, ५ MBP किं, ६ MBP ख्यंयडिड्डमु, ७ M विमुक्कु सरु.

4. १ MK चित्तियउ, २ M अच्चियउ, ३ MP परिच्छेयवत्ताइं.

5 a दलवट्टिउ खण्डितः. 9 b सुपहुत्तउ अतीव पर्याप्तः. 11 खयडिड्डमु यमपटहः.

4. 1 b सज्जियउ प्रगुणीकृतम्. 6 a संचियउ उपाजितः. 10 a वाईसिं सरस्वती. 11 b मत्ताधियप्पियइं मात्तारचितानि.

बेङ्गीहिं बलियाइं	अक्खरइं ललियाइं ।	
गाढं विसिद्धां	सरसाइं मिद्धां ।	
इद्धां दिद्धां	हियए पर्यद्धां ।	
अरिसीहसरहस्स	आणाइ भरहस्स ।	15
ओ जियइ सो जियइ	इयरस्स खयणियइ ।	
अइरेण अवयरइ	वइवसु वि धुवुं मरइ ।	
पुणु पुणु वि जोपवि	इय तेण वापवि ।	
सह समियसमरेहिं	अव्वरहिं मि अमरेहिं ।	

घत्ता—दिट्ठउ चक्कवइ चमरहिं चामीयरदंडहिं ॥ 20  
रयणहिं मोत्तियहिं पणवंतं गियभुयदंडहिं ॥ ४ ॥

5

णरणाहं रयणाहिं पुज्जियउ	हिमवंतु कुमारु विसज्जियउ ।	
सो किंकरत्तु मणि धरिवि गउ	राणउ पुणु तिहुयणलद्धजउ ।	
हरिसइसुभीमगुहाहरहो	सइं आइउ वसहमहीहरहो ।	
दीसइ गिरिमेहलघुलियघणु	णं धरणिहि केरउ एक्कुं थणु ।	
णिज्जरजलदुद्धपवाहधरु	णिरु णाहलडिभइं सोक्खयरु ।	6
रइगारउ णावइ कुसुमसरु	मयवंतु णाइ कुपुरिसपसरु ।	
रसवंतु णां णञ्चणु पवरु	बहुणावालंकिउ बहुविवरु ।	
बहुविहुमोहु णं मयरहरु	बहुफलपयासि णं पुण्णभरु ।	
बहुकंकणु णं महिमाहिलियरु	बहुओसहिलु णं भिसयवरु ।	
हरिसेविउ णं जिणु परमपरु ।		10

४ MBP पइद्धां. ५ MBP धुउ. ६ MBP अवरेहिं अमरेहिं. ७ MBP पणवंतहिं.

5. १ MBP हिमवंत°. २ B किं करंडु. ३ MBP आयउ. ४ M एक. ५ MBP णञ्चण°, ६ MBP महिलयरु.

12 a वेङ्गी हिं आवलीभिः. 16 b ख य णि य इ क्षयकाल . 17 a अइरेण अचिरेण, क्षीघ्रम्. 18 b वा ए वि वाचयित्वा.

5. 7 b बहुविवरु बहुच्छिद्र. बहुपक्षी च. 8 a विहुमोहु प्रवालौघः; मयरहरु समुद्रः. 9 a भ हि म हि लिय रु पृथ्वीमहिलायाः करः; b भिसय° वैद्यः. 10 a हरिसेविउ इन्द्रेण सिंहेश्व सेवितः.

करिदसणमुसलणिभिण्णतणु  
सुरदाणवरमणीम्रीणपिउ

णं को वि महाभडु रइयरणु ।  
णं णिवजससासणखंभु थिउ ।

घत्ता—तहु महिहरहु तहु पच्छाइउ चउहुं मि पासहिं ॥

णरलिहियक्खरहिं गयपत्थिवणामसहासहिं ॥ ५ ॥

## 6

जहिं दीसइ तहिं अक्खरसहिउ  
चितइ भरहाहिउ बहुगुणउ  
अण्णणहिं रायहिं भुत्तियइ  
बोलाविय के के णउ णिवइ  
धण्णउ परमेसरु एकु पर  
बहुणरवइकरयललालियइ  
सत्तंगरज्जभारेण हय  
धारागलंतलीलावयहिं  
जा विज्जिय च्चलचमरहिं जियइ  
असिषाणियककसत्तु महइ  
चवलत्तणु कुलधयवडंवरहो  
सिक्खियउ जाइ तहि गोमिणिहि  
णिवडंति महंत वि ह्यत्ति किह

मोक्खु व गिरिंदु मुणिगणमहिउ ।  
कहिं णामु लिहिज्जइ महु तणउ ।  
इह एयइ वसुमइधुत्तियइ ।  
मोहंधहु मुज्झइ तो वि मइ ।  
जो हुउ पन्वइयउ मुण्वि धर । 5  
हउं विणडिउ सिरिपुण्णालियइ ।  
मयमइरइ मत्ती मुच्छ गय ।  
अहिसिचिय मंगलघडसयहिं ।  
जा छत्तें छाइय णउ णियइ ।  
अंकुससंगे बंकिम वहइ । 10  
गुणु मेह्लिवि गमणु पासि संरहो ।  
आसत्तंपुरिस णरयावणिहि ।  
वारिहि करिणीरय पीलु जिह ।

घत्ता—तापं भुत्त चिरु णुणु पुत्तें सहुं सुहुं अच्छइ ॥

वसुमइ खेंदुलिय जगि केण वि समउ ण गच्छइ ॥ ६ ॥ 15

७ MBP °पाणपिउ.

6. १ MBP इय. २ MB °रजहारेण. ३ MBP असिषाणिय°. ४ MBP °वडधरहो. ५ MBP परहो. ६ MP आसत्तु पुरिसु, B आसत्तपुरिसु. ७ MBPT क्षिंदुलिय.

6. 4 a बोला विय अतिक्रामिताः त्यक्ताः. 6 b पुण्णालिय इ पुंश्वल्या 8 a °लीलावयइ °लीला-  
पयोभिः. 9 a विज्जिय वीजिता. 10 a मइइ वाञ्छति. 11 b गुणे त्यादि—गुणं मुक्त्वा गच्छति शर-  
पाश्चात्. 12 b णरयावणिहि नरकभूमे. 13 b वारिहि गजबन्धनगर्तायाम्. 15 खेंदुलिय पुंश्वली  
वेद्यावृत्तिः.

7

णक्खहु वि ण लम्भइ थत्ति जहिं  
मइ जेहा पत्थिव को गणइ  
परमेस महायणु जेण गउ  
परु फेडवि किइ घेण्णइ पुहइ  
ता बालमराललीलगइणा  
रापं रायहु ओहारियउ  
करकागणिरेहादावियउ  
रिसैहहु रइरमणखयंकरहो  
णामेण भरहु भरहाहिवइ  
हिमवंतजलहिपेरंत सइं  
ता तियसहिं साहुकारियउ  
पइं जेहउ को वि ण चक्कवइ  
केंहु अग्गइ धावइ कमलकरि  
दालिइहारि किर कासु वसु  
असि कासु वइरिविइंसयरु  
पइं मेल्लिवि णाणहु कवणु घरु

किं णाउं लिहिज्जइ पत्थु तहिं ।  
जे जे गय ते पुरोहु भणइ ।  
सो पंथु जयम्मि ण केण केंउ ।  
तिह णामु वि फेडिज्जइ णिवइ ।  
वीलामलमेलिणेण वि पइणा । 5  
अण्णहु कासु वि उत्तारियउ ।  
णियणाउं गिरिदि चडावियउ ।  
हउं पुत्तु पढमतिथंकरहो ।  
बोल्लउ परु महियलि अत्थि जइ ।  
छक्खंड वि णिज्जिय वसुह मइं । 10  
भरहेसरु जयजयकारियउ ।  
को एम ससंकि णाउं थवइ ।  
कमलालय कमलाणिय सिरि ।  
तिजगंतगामि किर कासु जसु ।  
पइं मेल्लिवि को किर कप्पयरु । 15  
परमंणु कासु देउ पियरु ।

यत्ता—रुवें विक्रमेण गोत्ते बलेणं णंयजुयत्ते ॥

तुज्जु समाणु तुइं किं अण्णे माणुसमेत्ते ॥ ७ ॥

8

सरवरजलकीलियसारसयं

वरिसावियचंपयसारसयं ।

7. १ P किउ. २ MB °मलिणाणण वि पइणा, P ° मलिणाणणपइणा. ३ MBP णिवंणामु. ४ MB पढमु. ५ P बहुअग्गइ. ६ M दारिइहरि. ७ MBP तिजगंत°. ८ MBP वइरिवीरतयरु. ९ MBP परमंणु. १० MB कुलेण. ११ MBP णयजुत्ते.

7. 5 b वीले त्या दि—लज्जामलमलिनेन स्वामिना. 6 a ओहारियउं कित्ते अवधारितम्. 10 a °पेरंत पर्यन्ता.

8. 1 b °चंपयसारसयं चम्पकशृक्षाणां मध्ये सारास्तेषां क्षतानि, चम्पकलक्ष्म्या रसो वा यत्र.



काणणपरिहिंडियकुंजरयं	गयणंगणविगयणिकुंजरयं ।
फलभारोणयसुरतवविडवं	रइयरंणिलयहिं खेयरविडवं ।
ओसहिओसारियविसहरयं	वणसुरहिसमीहियविसहरंयं ।
मोक्षेण तममलं धरणिहरं	सधयं सेण्णं परंधरणिहरं । 5
चलियं सह पडुणा पउरहयं	सारहिकरकसचोइयरहयं ।
अहिमाणवंतु णीसंकमइ	पुव्वदिसभायं संकमइ ।
हिमवंततलेण जि चिकमइ	दियेहेहिं जंतु वस्तुहं कमइ ।
गोगइहरिकरिमहिसयल	अवठंभिवि कंभिवि महि सयल ।
णियवइहि णिहालिवि चंदवल्लु	मंदाइणिपुलिणइ थियउ बल्लु । 10
जगसंसियअसिधारासियहिं	अणुयहिं णिवखंधारासियहिं ।

घसा—दीसइ पंडुरउ हिमवंतसिहरि सिंगग्गउं ॥

णं भरहडु तणउं जसविलसिउं सग्गि विलग्गउं ॥ ८ ॥

9

ससिरयणमय	परिभमियमय ।
उववणगहिरे	घणविडुरहरे ।
खगणियरहरे	सुरसारिसिहरे ।
णिवसइ गुणिणी	अमरंवरइरमणी ।
चलहारमणी	जणमणदमणी । 5
छणससिवयणा	कुवल्लयणयणा ।

8. १ MBPT °णिलएहिं. २ MP add after this: सिंगग्गवत्तु धुयविसहरय, ज सहइ चक्कि-जसविसहरय; सह सेवियविसहरसेहरयं, महिवट्टुसिरि ण मणिसेहरय, B adds after this. सह सेवियविसहर-सेहरयं, सिंगग्गवत्तु धुयविसहरयं, ज सहइ चक्किजसविसहरयं, महिवट्टुसिरि णं मणिसेहरय. ३ MBP मोक्षेण तममलधरणिहरं. ४ MP परंयरणिहरं. ५ MBP मणुयहिं.

9. १ MK अमरवररमणी but T अमरवरइरमणी.

2b °णि कुं ज र यं वृक्षसमूहपुष्परजः. 3 a °वि ड व शाखा. b र इ य रे त्या दि-रतिकरस्थानैः कृत्वा खेचरविटपालकम्. 4 b ब ये स्या दि-वनसुरभिभिर्वनगोभिः समीहित वृषभाणां रतं सुरतं यत्र. 5 b पर ध र णि ह रं शत्रुभूमिदारकम्. 7 a णी सं क म इ निशङ्कमतिः; b सं क म इ स्थानात्स्थानान्तरं चरति. 8 b क म इ लङ्घयति. 11 a अ सि धा रा सि य हिं असिधारावजिर्मलैः; b अ णु य हिं अनुगैः; °खंधा रा सि य हिं स्कन्धावारस्थितैः.

धरगयगमणा	कयजिणहवणा ।	
पविडलरमणा	पीवरसिहिणा ।	
पंकयचलणा	सिरकयसुमणा ।	
पसरियपुलया	वणसुरकुलया ।	10
विरइयतिलया	मणसियणिलया ।	
णरणवियपया	चलमयरघया ।	
मुणिमइविमला	हिमकरघवला ।	

घत्ता—गंगा णाम सइ सुरसुंदरि णयणपियारी ॥

रूवें जोव्वणेण देवाहं मि विरुइयगारी ॥ ९ ॥ 15

10

णरवइच्चरियं	गुणविष्फुरियं ।	
हियं धरियं	चलिया तुरियं ।	
तिवलितरंगा	देवी गंगा ।	
णिवसामीवं	पीणियभावं ।	
पत्ता धीरा	सालंकारा ।	8
भुवणपसस्था	मंगलहत्या ।	
दुत्थियमित्तो	परहियजुत्तो ।	
जगगुरुपुत्तो	पंकयणेत्तो ।	
उत्तमसत्तो	गुरुयणभत्तो ।	
जायविवेओ	भावियभेओ ।	10
दोइयदाणो	कयसंमाणो ।	
खलकुलचंडो	दावियदंडो ।	

२ K omits पीवरसिहिणा. ३ K omits पंकयचलणा. ४ MBP विभय°.

10. १ MBP हियवइ. २ K गुणयणभत्तो.

9. १ b °सु म णा पुजाणि. 10 a °पु ल या पुलको रोमाशः; b व ण सुर कु ल या व्यन्तरदेवकुले जाता. 11 म ण सि य° मदनः.

10. 4 a °सा मी व °समीपम्; b पी णि य भा वं हृष्टचित्तम्.

भासियसामो	ससिरविधामो ।	
रामाकामो	पायडणामो ।	
हयसिरिविरहो	दिद्वो भरहो ।	16
भक्तिभराए	कुसुमकराए ।	
थोत्तगिराए	णवियसिराए ।	
दिण्णासीए	पुणरवि तीए ।	

घत्ता—वरुणदिसासियहो णं पुण्णिमाइ ससिकंदहो ॥

अमयभरिउ कलसु पल्हत्थिउ सीसि<sup>१</sup>णरिंदहो ॥ १० ॥ 20

## 11

कडउल्लउ कडर्याणंदु करे	कर मउल्लिवि मँउल्लु वि णिहिउ सिरे ।	
मणहारु हारु णीहारणिहु	उरबंधु बंधु माणिक्कसिहु ।	
हिमवंतसिंहरिसिहरेसरिए	दिण्णउ देविइ सुरवरसरिए ।	
जिह बंसुत्तु तिह बंसुत्तु	ण सहइ परम्मि आयारत्तुए ।	
रसणा महुरसणा घंटियहि	माला अलिमालाहंटियहिं ।	5
सोहंती दिण्णी णरवइहि	उल्लंघियेत्तादि— उल्लंघिता	
पंतीउ विइण्णउ सुरयणहं	रंजिउ हियउल्लउ सुरयणहं ।	
छत्तइं सयवत्तइं सिरिलयहे	वत्थइं णेवत्थइं भणमि तहे ।	

घत्ता—इय गेण्हिवि णिवेण मणहरमराललीलागइ ॥

पुज्जिवि पट्टविय णियभवणहु गय गंगाणइ ॥ ११ ॥ 10

11. १ MBP कडयाणंद. २ B मउल्लिवि. ३ MB मणहार. ४ MB °सिहरसिहरे°. ५ B मालह. ६ B पंतीउ.

18 b ससिरविधामो मौम्यस्तेजस्वी च. 19 वरुणदिसासियहो पश्चिमदिगवस्थितस्य; पुण्णिमाइ पूर्णिमया कर्त्या. 20 पल्हत्थिउ सीसि मस्तकोपरि विसर्जित.

11. 1 b मउल्लु मुकुट. 2 b उरबंधु बंधु उरोबन्धस्य ब्रह्मसूत्रस्य बन्ध. 4 a बंसुत्तु वृषभनाथ-पुत्रे, अन्यत्र ब्राह्मणे. 5 a महुरसणा मधुरशब्दाः, b °हं टिय हिं शब्देः. 6 b उल्लंघियेत्त्यादि— उल्लंघिता पादाक्रान्ता या चतुःसागरा चतुःसमुद्रा पृथ्वी तस्याः पतिः तस्मै. 7 a पंतीउ मालाः; सुरयणहं शोभनरजानाम्; b सुरयणहं देवसंघातानाम्. 8 b तहे गङ्गायाः.

## 12

पहु विजयलच्छिआलंगियउ  
 सुरसरि सोहेप्पिणु णीसरइ  
 सरितीरेण जि पुणु संचरइ  
 जहिं धूलि होँति गिरिं तरुवर वि  
 सरि छजइ उग्गयपंकयहिं  
 सरि छजइ हंसहिं जलयरहिं  
 सरि छजइ संचरंतझसहिं  
 सरि छजइ चक्कहिं संगयहिं  
 सरि छजइ सरतरंगभरहिं  
 सरि छजइ कीलियजलकरिहिं  
 सरि छजइ बहुजलमाणुसहिं  
 सरि छजइ सयडहिं सोहियहिं

भणु केण ण दंसणु मग्गियउ ।  
 बलु दिण्णदाणु कयणीसरइ ।  
 हा हरिणैवंदु तहिं किं चरइ ।  
 उल्लियरओहें रहिउ रवि ।  
 बलु छजइ चित्तैछत्तसयहिं । 5  
 बलु छजइ धवलहिं चामरहिं ।  
 बलु छजइ करवालहिं झसहिं ।  
 बलु छजइ रहचक्कहिं गयहिं ।  
 बलु छजइ जलतुरंगवरहिं ।  
 बलु छजइ चलियमयकरिहिं । 10  
 बलु छजइ किंकरमाणुसहिं ।  
 बलु छजइ सयडहिं वाहियहिं ।

घत्ता—जिह जलवाहिणिय तिह मँहिवइवाहिणि सोहइ ॥

महिहरभेयणिहिं एँयहिं किं किर को णउ बीहइ ॥ १२ ॥

## 13

अक्खिउ णिग्गमणपवेसु जहिं  
 वेयडुगिरिंदहु पच्छिमहे  
 मृगमग्गलग्गअलियलियहि

पत्तउ णरणाहु दिणेहिं तहिं ।  
 जिह आसि तिमीसहि दुग्गमहे ।  
 कडयगुहाहि पुव्विलियहि ।

12. १ MBI °आलंगियउ. २ MBP दिण्णदाण. ३ MBP हरिणविंदु किं तहिं. ४ MBP गय.  
 ५ MBP विघच्छत्त°. ६ M चक्कहिं हंसगयहिं. ७ P °तरंगतरहिं, but gloss तरङ्गसमूहै. ८ M adds  
 after this: बलु छजइ कीलियजलकरिहिं, which obviously is the scribe's mistake. ९ MB  
 किं किर. १० MBP णिववर°. ११ M महिहरभेयणिहिं. १२ MBP एयहं किर.

13. १ M णिग्गमणु. २ MBP मिग°.

12. 2 b कयणी सरइ कृता निःस्वानां दरिद्राणां रतिर्येन. 4 b उल्लिये त्यादि—उच्छलितो यो  
 रजःसघातस्तेन रहिओ आच्छादितो रविः. 9 a सरतरङ्ग° जलस्य तरङ्गाः. 12 a सयडहिं स्वतटैः; b स-  
 यडहिं शकटैः. 13 जलवाहिणिय जलवाहिनी नदी; °वाहिणिसेना. 14 महिहर° पर्वता राजानश्च.

13. 2 b तिमीसहि तिमीससंज्ञायां सिन्धुगुहायाम्. 3 a अलियलि° व्याघ्रः.

तैहि णियडड सेणु णिसणु किह	ण विलग्गाइ गिरिकुहुरुम्ह जिह ।
णिहिणाहै भणित बलाहिवइ	तुहु जोग्गाउ पेसणु दिणु लइ । ॐ
इणु दंहे पुँणु वि कवाड तिह	विहडेपिणु बच्चइ झत्ति जिह ।
पच्चंतु पसाहिवि एहि लहु	जज्जाहि तुँरयसेण्णेण सहु ।
छम्मास वसेवउ एत्थु मइ	जाएसमि पडिआएण पइं ।
असिजलघाराधुयजसवडेण	ता चमुपमुहेण महाभडेण ।

घत्ता—पुष्पकमेण पुणु हरिरयण चडेवि पयंहे ॥ 10  
आरुसिवि हयउ गिरिगुहकवाडु पविदेहे ॥ १३ ॥

## 14

जिणदंसणि जिह दुक्कियपडलु	जिह दिवसवरुग्गामि तिमिरमलु ।
जिह सुद्धसहावे मयणसरु	जिह पिसुणे दूसिउ णेहभरु ।
सुकइंदसमागमि कुकइ जिह	विहडिउ कवाडु कुडु झत्ति तिह ।
तहिं सहु भीमु जो णीहरिउ	तहु भइयइ को वि ण थरहरिउ ।
तेत्थु जि सिहरत्थलि रइयपुरु	सिरिणट्टमालि णामेण सुरु । 5
पडिहारै रायहु दरिसियउ	कमकमलालोयैणहरिसियउ ।
बलवइणा साहिय मेच्छमहि	वसि हई तहु जयलच्छिस्तहि ।
आवेवि णमंसिय पडुहि पय	तहिं णिवंसंतहुं छम्मास गय ।

घत्ता—ण वर गुहाकुहरु णरवइगइजोग्गौउ जायउ ॥  
सव्वहं सीयलउ णं दीसइ कज्जु परायउ ॥ १४ ॥ 10

३ MBPK तिह. ८ MB °कुहरुम, P कुहरुभु, K कुहरुम्ह. ५ MBP पुष्पकवाडु. ६ P जाजाहि.  
७ MBP दुरिय सेण्णेण ८ MBP हरिरयणि.

14. १ MBP णीसरिउ. २ MBP को व ण. ३ MBP °लोयणि. ४ MBP णिवसतहिं. ५ P °जोग्गा.

4 b गिरि कु ह रु म्ह गिरिकुहरत्योष्मा.

14. 6 b कमेत्था दि- पदकमलयोरालोकनेन दर्शितः. 7 b जयलच्छिस्तहि जयलक्ष्म्याः सखी,

## 15

ता मंतिहिं गुज्जं ण रक्खियउ  
 तुह माउयाहि मंथरगइहि  
 णामें णमि विणमि कुमारवर  
 णहयरवइ हूक्क अवियलहे  
 हल्लियसाहाफुल्लियवणइं  
 उहामहं गामहं तेत्तियउ  
 भुंजंति रमंति गमंति दिणु  
 तं णिसुणिवि भूसियसमरधुर  
 गय तेहिं भणिय खयरहिवइ  
 महियलि उप्पणउ चक्कवइ  
 तइ पुत्तु भरइ लइ अणुसरहो

परमप्पयतणयहु अक्खियउ ।  
 ते दोण्णि वि भायर जसवइहि ।  
 गंभीर धीर रणमारधर ।  
 णिवसंति पत्थु गिरिमेहलहे ।  
 पण्णास सट्ठि खगपट्टणइं । 5  
 कोडिउ धरणेण विहत्तियउ ।  
 पणवंति तुहारउ जणणु जिणु ।  
 पट्टुणा पेसिय गणबद्ध सुर ।  
 छक्खंडमंडलावणिविजइ ।  
 जो रिसहणाहु भुवणाहिवइ । 10  
 अहिमाणु मडप्फरु परिहरहो ।

अत्ता—पत्थिववित्ति जइ णउ सयणवित्ति पडिवज्जइ ॥

गुरुहुं सडिभंहं मि दोसिल्लहं दंड पउंजइ ॥ १५ ॥

## 16

तो' बंधुणेहभउ भावियउ  
 हियउल्लउ धीरु वि कंपियउ  
 तणुतेयपूरपिंगलियणइ  
 अम्हहं आराहणिज्जु हवर  
 भणु जलणइ उप्परि को जलइ  
 भणु मोक्कइ उप्परि कवण गइ  
 ह्य घोसिवि ताइं विसज्जियइं

खयरिदहिं कज्जु विहावियउ ।  
 पणएण णएण परंपियउ ।  
 जिह देवदेउ तिह पुणु भरइ ।  
 भणु तवणइ उप्परि को तवइ ।  
 भणु पवणइ उप्परि को चलइ । 5  
 भणु भरहइ उप्परि को नृवइ ।  
 आयइं अमरउलइं पुज्जियइं ।

15. १ MBP गुज्जु. २ P सडिभरहं.

16. १ MBP ता. २ MBP णिवइ.

15. २ a b माउ याइ भा यर तव मातुर्यशोमत्या आतरौ. 5 a हल्लिय सा हा° वलितसासाः. 8 b गण बद्ध सुर अङ्गरसका देवाः. 11 b मडप्फरु मिथ्यागर्बः.

16. 3 a तणु तेये त्यादि-तनुतेजसो देहप्रभाया भरेण पिङ्गलितं नभो येन.

तूरुं गुरुरवइं वियंभियइं      कुलचिधसयाइं समुभियइं ।  
 चोइय हरिकरिवरसंदैणइं      आइयइं गियणियपरियणइं ।  
 खणि बे वि सहोयर णीहैरिय      दिभिंत्तिचित्तजाणहिं भरिय ।      10

घत्ता—खेयरकिंकरहिं परिवारिय देव समाणहिं ॥

जहिं णिवसइ णिवइ तहिं आइय रैयणविमाणहिं ॥ १६ ॥

## 17

मउलियकरेहिं पणवियसिरेहिं      पइ बोळ्ळिउ णमिविणमीसरेहिं ।  
 अम्हारउ णिव कुलसामि तुहुं      पइं दिट्ठइ णयणहं होइ सुहुं ।  
 पइं दिट्ठइ आवइ ओसरइ      पइं दिट्ठइ घरि सिरि पइसरइ ।  
 तुह तायहु हयवस्मीसरहो      आपसें परमजिणेसरहो ।  
 चामीयरमणिणिम्मियघरइं      अइरम्मइं खेयरपुरवरइं ।      5  
 अहिरापं आसि विइण्णाइं      जइ एवहिं पइं पड्डिवण्णाइं ।  
 तो भुंजहुं णं तो तुहुं जि लइ      अम्हं पुणु दैइयंवरिय गइ ।  
 तं णिसुणिवि रापं भासियउ      अप्पाणउं जं ण विणासियउ ।  
 मैहु आणावयणु ण णिरसियउ      तं तुम्हहिं चंगउ ववसियउ ।  
 जिह मउहुगयचूडामणिणा      चिरयालि महायरेण फणिणा ।      10  
 तिह एवहिं मइ वि समप्पियइं      पालहि खेयरणयरइं पियइं ।

घत्ता—जिणवरणंदणहो बलवंतहु रिद्धिमणाहहो ॥

णमिविणमीसरेहिं पड्डिवण्ण सेव णरणाहहो ॥ १७ ॥

## 18

रायहु कपावियतिहुयणहो      पणवेप्पिणु गय सणिहेलणहो ।

३ P °दंसणइं. ४ MBP णीसरिय. ५ M दिहिंभित्तिचित्त°, B दिहिंत्तिचित्त°; P दिभिंत्तिहि. ६ MBP अमरविमाणहिं.

17. १ M आवय. २ MBP तुहु मि लइ. ३ MB दैइयंवरिय. ४ B णु. ५ B पहु°.

18. १ P कपाविउ.

10 b दि भिंत्ति चित्त जा ण हिं दिश एव भित्तय. ता एव नानायानानि तैः.

17. 6 a अ हिरापं सर्पराजेन धरणेन्द्रेण. 7 a दैइयंवरिय दिगंबराणां गतिः.

ते बंधव सिरिधव पट्टविवि  
संचल्लइ डोल्लइ धरणियलु  
मरुचलियलुलियचलचिंधबलु  
णउ जंपइ कंपइ फणिणिवहु  
पउ गुप्पइ विप्पइ आहरणु  
अइमल्हइ मेल्हइ सहु करि  
तहु दाणे फेणे समिय रय

रणधीरइं वहरइं णिट्टविवि ।  
उद्धरियसूलकरवालहलु ।  
गुहदारि उदांरि ण माइ बलु ।  
पहु वच्चेइ णच्चइ तियसवहु । 5  
परिबोलइ लोलइ पंगुरणु ।  
रहु थक्कइ वंकइ कंठुं हरि ।  
चिक्खल्लैइ खोल्लइ खुत्त पय ।

घत्ता—बंधिण पट्टिपहिं जयणंदर्वडुणिग्घोसहिं ॥

गज्जइ गिरिविवरु वज्जंतहिं पडहसहासहिं ॥ १८ ॥

10

19

जणु जूरइ पूरइ मग्गु ण वि  
कांगिणियइ घणियइ मट्टियइ  
उज्जोयउ जायउ उज्जलउ  
संकमेण कमेण जि संचरइ  
तहु कुहरहु कुहरहु णिग्गयउ  
सुराणियरहिं खयरहिं परियरिउ  
गंधव्वहिं भव्वहिं सेवियउ  
तरुजालहिं णीलहिं छाइयउ

णरलिहियउ णिहियउ चंदु रवि ।  
अंधारवियारविहट्टियइ ।  
खंधारु वीरु धारियपुलउ ।  
सैरभरियउ सरियउ उत्तरइ ।  
केलासागिरीसहु लहु गयउ । 5  
णिज्झरझरंतवारिहिं भरिउ ।  
सिहिजालहिं चवलहिं तावियउ ।  
कइबुक्कारेहिं णिणाइयउ ।

घत्ता—सो महिहरपवरु दीसइ गयणंगणि लग्गउ ॥

णं महिकामिणिहिं भुयदंहु पदंसियसग्गउ ॥ १९ ॥

10

२ MBP रणवीरइं, ३ P<sup>०</sup>विधउलु, ४ MBT उयारि; P उयरि, ५ B वंचइ णंचइ, ६ M खंधु, BP कंधु, ७ MBP चिक्खल्लइ, ८ MBP वद्ध, ९ P णिज्जइ.

19. १ MBP कागणियइ मणिमइ, २ MB संकमेण, ३ MBP जलभरियउ, ४ MB णिष्णाइयउ.

18. 2 a सिरिधव लक्ष्म्या भर्तारौ. 7 a अइमल्हइ मन्दगमनं करोति.

19. 1 a पूरइ मग्गु ण वि परिपूर्णां मार्गो दृष्टिविषमो न भवति. 2 a घ णियइ कठिनया, 4 a संक-  
मेण सेह्वबन्धेन; b सरभरियउ जलपूर्णाः. 5 a कुहरहु पर्वतस्थ, कुहरहु गुहायाः.



## 20

जो मच्छरचित्तालिहियासिलु  
जो दरिसियसीहसिलिबसुंहु  
जहि दिहुंहुं द्रुमसाहागयइं  
अलि संकौरेहिं ण रडि मुयइ  
जहिं सलहिजंति अमच्छरहिं  
जहिं मणिभिसिहि पेच्छिवि सयणु  
जहिं दोर्मवीदु मणिणि तरुणु  
जहिं चंदणमहिंहुं परिहरिवि  
मुहसासवासु विसहरु पियइ

विसहरसिररयणारुणियबिहु ।  
सहूलपसाहियसंदगुहु ।  
किंणरवीसरियहारसयइं ।  
जहिं णाहलकिंभउ सुहुं सुअइ ।  
सवरीकेवाइं वि अच्छरहिं । 5  
महिसिहिं कीरइ पडिवक्खमणु ।  
मरुणयवदुहु धावइ हरिणु ।  
णहयरवहु सुत्ती संभरिवि ।  
अवरहु वि भुयंगहु एह मइ ।

घत्ता—पेच्छिवि जममहिसु जहिं जक्खिणिसीहु ण रूसइ ॥

10

जिणमाहण्यण पडिवक्खपक्खि खम दीसइ ॥ २० ॥

## 21

जहिं इवणीलरुइरंजियउ  
किं मोसिउ किं वं तुसारकणु  
जहिं ओसहिदीवउ पज्जलइ  
जहिं जायउ गुणगणमंडियउ  
जिणणाहें घोसिये जीवदय  
सुरहत्थिणि सेवइ जासु तइ

सिहि मंजारेणं ण विमंजियेउ ।  
जहिं संकइ संजउ सीलहणु ।  
रयणिहिं पुलिंदु सुहुं संचलइ ।  
मुणिसंगे सुयउलु पंडियउ ।  
जहिं पसु वि विलाय वि धम्मरय । 5  
जहिं हिंइइ चकेसरिगरुहु ।

20. १ MBP °मुहु. २ MBP दीसहिं दुम°. ३ M °संकारेण णं रडि, B °संकारण णं रडि; P °संकारेण ण रडि. ४ MB अमरच्छरहिं. ५ MBP °रुवाइं वरच्छरहिं. ६ MBP दोवपीठ. ७ MBP °महिरुहु.

21. १ B मजारेण. २ MBPT विहंजियउ and gloss in T विवेचितः. ३ P व. ४ MBP पोसिय.

20. 2 a °सीहसिलिं b° सिंहशावकः. 4 a ण रडि मुयइ न रटनं मुञ्चति, गानमेव करोतीव अलि-  
शेद्धारैः. 6 a सयणु स्वशरीरम्, b पडिवक्खमणु मपत्तीबुद्धिः. 7 a दोमवीदु दुर्वासंघातः; b ° वट्टुहु एक-  
खण्डपाषाणम्. 8 b संभरिवि ज्ञात्वा. 9 b भुयंगहु विटस्य. 11 पडिवक्खपक्खि खम दीसइ प्रतिपक्षपक्षे  
शत्रौ अपि क्षमा दृश्यते.

21. 1 b ण विमंजियउ न ज्ञातः. 2 b संकइ शङ्कते; संजउ संघतो मुनिः. 4 b सुयउलु शुक्-  
कुलम्.

पोमावइहंसु कडक्खियउ  
जसु तीरइ पवणहु तणउ मउ  
वारइकोट्टेहि अहिट्टियउ

जहि वरुणहु मयरु गिरिक्खियउ ।  
सिहि भेसें सहं कीलाणिरउ ।  
जहि समवसरणु सइं संठियउ ।

घत्ता—तहु गिरिवरहु तले घरणीसें सिविरुं विमुक्कंउं ॥  
णावइ मंदरहो चउदिसु तारायणु थक्कंउं ॥ २१ ॥

10

22

मणिमउडपट्टभूसणहरिहिं  
कंठीलियमुत्तावलिहिं  
तणुतेउज्जलियवणत्थलिहिं  
कइवयणिवेहिं सैहुं सुद्धमइ  
आवंतहु रायहु सो सिहरि  
सीहाँसणचमरीचामरइं  
मयणिम्भर वर गज्जंत गय  
णं दरिसणु अग्गाइ ठवइ

सुरवरकरिकरदीहरकरहिं ।  
उच्चाइयणवकुसुमंजलिहिं ।  
उवसमवंतहिं पसामियकलिहिं ।  
पहु गिरिसिहारोहणु करइ ।  
णिज्जरजलधाराभरियदरि । 5  
छायादुमच्छत्तइं सुंदरं ।  
घणयर किंकर गंडय गवय ।  
णं कोइल कलरवेण लवइ ।

घत्ता—तरेवत्ते गिरिणा फलु फुल्लु पत्तु णं दिण्णउं ॥  
महिहरु महिहरहु अवसें पालइ पडिवण्णउं ॥ २२ ॥

10

23

आरुहिवि घरांहरवरसिहरु  
परमप्यय पयपइ पइसरइ

अइकंदचंदकररासिहरु ।  
जिणसमवसरणि तहिं पइसरइ ।

५ P सिमिरुं ६ MBP पमुक्कउं, ७ B थक्कइ.

22. १ MBP °हरहिं, २ B °णउकुसुमं°. ३ MBP सह, ४ MBP सिहासण°. ५ MB तक्कंतें.

23. १ MBP घराधर°, २ MB परमप्यय पइपइ पयसरइ; T पयपइ प्रजापतिः; P परमप्यय पयवइ पइसरइ and gloss परमात्मपादौ प्रजापतिर्भरतः स्मरति.

9 a अहि ट्टियउ सहितम्.

22. 8 a दरिसणु प्राभृतम्. 9 तरवत्ते तरुपात्रेण, वृक्षभाजनेन. 10 महिहरु पर्वतः; महिहरहु वृपस्य.

23. 1 b °कररासिहरु किरणसमूहाभिभावकम्. 2 a परमप्यय परमात्मानम्; पयपइ प्रजापति-भरतः.

दिट्टु परमेसरु णिहयसरु	तिसिपण व हरिणे कमलसरु ।
भरहे बहुछंदपसंगिरए	थुउ सुट्टु सलक्खणाइ गिरए ।
अरहंत अणंत भव्वभवइ	तुह सेवइ सोक्खु समुम्भवइ । ४
तिट्टासरितीरु पराइयउ	तुहुं कामे पर ण पराइयउ ।
पइ रोसेजलणु उवसामियउ	तुहुं रिसि भुवणत्तयसामियउ ।
पइ पेच्छिवि देउ अहिसवरु	ण हणइ दंडेण अहिं सवरु ।
णे वि भक्खइ तं कया वि णउलु	महिसंतयारि वग्घहं ण उलु ।

घत्ता—पइ संबोहियइं केलासवासिअउ लेप्पिणु ॥ 10

थक्कइं खेयरइं केलासवास मेहेप्पिणु ॥ २३ ॥

## 24

तुह वयणु विणीसिउ काणणए	णिसुणेप्पिणु इह गिरिकाणणए ।
ण पवत्तइ कत्थ वि जीववह	जय संदरिसियपरलोयपह ।
सीहु वि सरहु वि एक्कहिं वसइ	सिहियुयपिच्छइं सवरी वसइ ।
कल्लु गेउ ण गायइ सावयहो	सामिय पइ लाइय सा वयहो ।
पइ मंसगिअि मज्जारयहं	सोडत्तणु महुमज्जारयहं । 5

३ BP णिहयसरु, ४ MBP सुलक्खणाइ, ५ K रोसु जलणु, ६ K णउ, ७ MBP °वासवउ,

24. १ MBP तुहु, २ K ° लोयवह, ३ MBPK °पिछइ, ४ MBP कल्लुगेउ, ५ B सा विय; P सा विय; T साविय स्वामिन्, अथवा साविय थाविका; K सा मि य and gloss सा शबरी, ६ P मजारयहं.

3 a णिहयसरु निर्जितकामः. 4 a °छंदपसगिरए छन्दोऽभिप्रायः मात्राप्रस्तारश्च तेन पसंगिरए संबन्धक्या वाण्या. 5 a भव्वभवइ भव्या एव भानि नक्षत्राणि तेषा पतिश्चन्द्रः. 6 a तिट्टा° तृष्णा. 8 a अ हिं स वरु अहिसा वरा यस्य, b अहिं सवरु अहिं सर्प शबरो दण्डेन न हन्ति. उपलक्षणमेतत्; न कोऽपि किमपि केनापि हन्तीत्यर्थः. 9 a तं सर्पम्, ण उलु नकुलः, b महिसतयारि महिषाणामन्तकारि न व्याघ्राणां कुलं समूहो भवति. 10 केलासवास हे देव कैलासपर्वतवासिनः; त्रउ लेप्पिणु व्रतं गृहीत्वा. 11 केलासवास मेहेप्पिणु केल मद्यभाजनं अत्र आसवो मद्य तस्य आशां त्यक्त्वा; अथवा के मस्तके लसन्तीति केलासा केशाः वासो वज्रं तानि मुक्त्वा.

24. 1 a विणीसिउ विनिर्गतम्, काणणए हे ब्रह्मन्, b गिरिकाणणए पर्वताटव्याम्. 3 b सिहियुयपिच्छइं सवरी वसइ शबरी पुलिन्दन्त्री परिधानं करोति, मयूरपिच्छैर्निजशरीरमाच्छादयतीत्यर्थः. 4 a सा वयहो श्वापदस्य वधार्थम्, b सा शबरी, वयहो लाइय व्रतं ग्राहिता.

परैयारु वि वारिउ आरयहं  
जं अणुहरियउ अलियंजणहो  
मुहणिगंतउ पइं खंचियउ

तुष्टुं णाहु सुट्टु विज्जारयहं ।  
तं गाहु पाउ अलियं जणहो ।  
तुह संभवि देवहिं खं चियउ ।

घत्ता—इय भरहेण थुउ परमेसरु जिर्यपंचिदिउ ॥

अमरासुरमणुयखगपुष्फदंतफणिवंदिउ ॥ २४ ॥

10

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्फयंतविरइए  
महाभव्वभरहाणुमण्णिणं महाकव्वे उत्तरभरहपसाहणं णाम

पण्णरहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १५ ॥

॥ संधि ॥ १५ ॥

७ MBP परदारु णिवारिउ. ८ B जिउ पवि°, ९ MBP °पुष्फयंत°.

6 ष वि आ र य हं रत्नत्रयविद्यारतानाम्. 7 अ अणु हरि म उ अ लियं ज ण हो भ्रमरस्य कज्जलस्य च अनुकृतं, स्रष्टशमित्यर्थः; 8 खं चियउ आकाशं व्याप्तम्.

XVI

षण्णवेपिणु जिणवरकमकमलु ओयरेवि कइलासहो ॥  
साकेयडु संमुडुं संबलिउ धराणिणाडु णियवासहो ॥ धुवकं ॥

1

आरणालं—रविणिहकण्णकुंडला रयणमेहला मउडपट्टघारा ।

बलिया मंडलेसरा कयरसुरणरा कंडुवज्झारा ॥ १ ॥

होइ गिरित्थलु णिविसें समथलु  
किं ण किं ण किर संचूरिउ षणु  
किं ण किं ण देसंतरु लंघिउ  
किं ण किं ण पहरणु अबलोइउ  
किं ण किं ण वरवाहणु वाहिउ  
कणयदंडमंडियपडिहारें  
पुरणारिहिं आहरणु लइज्जइ  
कुंकुमेण छडउल्लउ दिज्जइ  
धिप्पइ कुसुमकरंडु ससंडयणु  
घरि घरि गाइज्जइ जिणणंदणु  
दप्पणं कलसु धरिज्जइ अण्णहिं  
सलहिज्जंतु महंतु सुरिंदहिं  
करिचरकंधरत्थु मण्हारिहिं

किं ण किं ण किर कैहमियउं जलु । 5  
किं ण किं ण धूली जायउ तणु ।  
किं ण किं ण दुग्गु वि आसंघिउ ।  
किं ण किं ण पडिसेणु णिवाइउ ।  
किं ण किं ण परमंडलु साहिउ ।  
आवेंते पडुखंधावारें । 10  
मउ देवंगवत्थु परिहिज्जइ ।  
कप्पूरें रंगावलि किज्जइ ।  
बज्झइ सुरतरुपल्लवतोरणु ।  
दोवैदहियसिद्धत्थयचंदणु ।  
उग्घोसिउ मंगलु सुरकण्णहिं । 15  
सहुं जक्खिखदखगिंदणरिंदहिं ।  
विज्जिज्जंतउ चामरधरिहिं ।

GMBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

प्रतिगृहमटति ययेष्टं बन्दिजनैः स्वैरसंगता वसति ।

भरतस्य बलभा सा कीर्तिस्तदपीह चित्रतरम् ॥

MBP read स्वैरसंगमा for स्वैरसंगता; and बलभासौ for बलभा सा. K does not give it.

1. १ MBP खयरणरसुरा. २ M अबसें; B णिवसें; P णिवसिं and gloss निमेषेण; T णिविसें.  
३ B कहवियउं. ४ M संचूलिउ. ५ MBP आवेंते. ६ M देवंगु वत्थु. ७ P ससयडणु but gloss सषट्चरणः.  
८ MBP घाइज्जइ. ९ MB दुव्व°; P दोव्व°. १० MP दप्पण. ११ M मणिहारिहिं. १२ MBP °धारहिं.

1. 2 णियवासहो निजगृहं प्रति. 5 a णिविसें अक्षिनिमीलनमाक्षेण. 6 b तणु तृणम्. 13 a धिप्पइ क्षिपति; कुसुमकरंडु नानावर्णकुसुमानां समूहः; ससंडयणु षट्चरणैर्भ्रमैः सहितः.

घत्ता—महि सयल वि कर्णो णिञ्जिणिवि कयदिव्विजयविहीसहिं ॥  
उज्झहि भैरहाडिउ पइसरइ सट्ठिहिं वरिससहासहिं ॥ १ ॥

2

भारणालं—णउ पइसरइ पुरवरे रयणमयहरे जयसिरीवरंणं ॥  
भंगुरैभासुरारयं णिसियधारयं राइणो रहंणं ॥ १ ॥

थकउ चकू ण पुरि परिसकइ	कुकरइ कव्वु व णउ विम्मकइ ।
णं कोवाणलजालामंडलु	णं पुरलच्छिइ परिहिउ कुंडलु ।
भरुपयावे कार्यरिजायउ	भाणुबिबु णं छजइ आयउ । 5
इंदचंदपडिकूलणसीलउ	धगधगंतु सयहुयवहलीलउ ।
एहु जि चकवट्टि अवलोयहु	णयरं दीहुं धरिउ णं लोयहु ।
मणिमऊहमालावेलाउलु	रायदिघायरपुण्णयरुज्जलु ।
सुरहिगंधु सिरिसेविउ सभसलु	णं णहसरि विहींसिउ रत्तुण्णलु ।
वलयायारहु णिरु सच्छायहु	अवसें देइ धरणि करं आयहु । 10

घत्ता—तं चकू ण णयरिहि पइसरइ वेसहि जणियविथारउ ॥  
हिर्यउल्लउ कवडसयहं भरिउ णावइ धुत्तहं केरउ ॥ २ ॥

१३ MBP विलासिहिं. १४ MBP भरहेसरु.

2. १ MBP ° मयहरे. २ MB भासुराययं. ३ MBP कावइ जायउ. ४ MBP धरिउ दीउ.  
५ K °वेलाजलु. ६ MBP वियसिउ. ७ MBPKT करु. ८ M हियहुल्लउ.

19 पइसरइ प्रतिसरति.

2. 3 b चि म्मकइ चमत्कृतिं करोति. 5 a का य रि जा य उ कातरीभूतम्; b आ य उ आगतम्. 6 a °प डि कूल ण सी ल उ अभिभवं कर्तुं समर्थम्. 7 b दीहु दीपो दिव्यं वा. 8 b रा वे त्या दि—रत्तोत्पलं राजमानै-  
विवाकरस्य पुण्यैः प्रगल्भैः करैरुज्ज्वलं विकसितं भवति, चक्रं तु राजदिवाकरस्य चक्रवर्तिनः पुण्यान्वेव करास्तै-  
इज्ज्वले भवति. 10 a वलयायारहु वृत्ताकारस्य चूडाकारस्य च; b धरणि भूमिः क्षी च; कर दण्डो हस्तश्च;  
आ य हु अस्य चक्रस्य. 11-12 ज णि ये त्या दि—यथा धूर्तस्य हृदयं वेद्यायां न प्रविशति तथा चक्रं नगरां न  
प्रविशति.

## 3

आरणालं—फणिणरसुरपसंसियं जसविह्वसियं गुणगणोहदिसं ।

णं दुविणीयमाणसे पिसुणमाणसे सुयणसच्छविसं ॥ १ ॥

अकमियेकउ बाहिरि थकउ  
णउ पइसइ पुरि चकु णिहंसउ  
परपुरिसाणुराइ सइविचु व  
मायाणेहणिबंधणि मिचु व  
चुणयविलीणइ दिण्णउ भचु व  
सुद्धसिद्धमंडलि जमकरणु व  
णिच्चैलणीसणिहेलणि सरणु व  
उवसामिह्लि सामरिसायरणु व  
णिसिसमयागमि रविउग्गमणु व  
पुण्णहीणि जिणगुणसंभरणु व

णावइ दइवें खीलिवि मुकउ ।  
सुईघरि णं अण्णायविदत्तउ ।  
परदासत्तणम्मि सवसिचु व । 5  
पत्तदाणि पाविट्टहु चिचु व ।  
रइरसंतुरियइ णवउ कलचु व ।  
पत्थणिसेविरि रुयवित्थरणु व ।  
दुरियमलिणमणि पंडियमरणु व ।  
णिच्चियारि तणुभूसीयरणु व । 10  
बुद्धत्तणि तरुणीयरमणु व ।  
णिद्धणि णिग्गुणि विहलुद्धरणु व ।

घत्ता—थिउ चकु ण पुरवरि पइसरइ णावइ केण वि धरियउ ॥

ससिर्बिबु व णहि तारायणहि सुरवरोहिं परियरियउ ॥ ३ ॥

## 4

आरणालं—ता भणियं णिराइणा रुढराइणा चंडवाउवेयं ।

किं थियमिह रहंगयं णिच्चलंगयं तरुणतरणितेयं ॥ १ ॥

तं णिसुणेप्पिणु भणइ पुरोहिउ  
अक्खमि तं णिसुणहि परमेसर

जेणेयहु गइपसरु णिरोहिउ ।  
देवदेव दुज्जय भरहेसर ।

3. १ M °माणसे. २ B पिसुणु माणसे. ३ M °चित्तं. ४ B °मियंकओ. ५ MP णिरुत्तह. ६ M सुइघणि. ७ M णिच्चल°; BP णिव्वल°. ८ B reads this foot after 11a. ९ K भूसाकरणु. १० MBP तारामयहिं सुरणरेहिं.

3. 2 दु वि णीय अगृहीतगुणशिक्षम्; सुयणसत्यवित्ते महामुनिसार्थस्य वृत्तं चरितम्, अथवा सज्जन-सार्थः सत्पात्रसमूहस्तत्र वित्तं दानार्थम्. 3 a अकमियेकउ आक्रमितार्कम्, अभिभूतादित्यम्. 4 b सुइघरि पवित्रगृहे. 5 b सबसिसु स्ववशित्वं स्वातन्त्र्यम्. 7 a चुणयविलीणइ अरोचकपीडिते. 8 b रुयवित्थरणु रोगविस्तारः. 9 a °णीसं दरिद्रः.

4. 1 णिराइणा वृत्ताजेनः रुढराइणा रुढप्रसिद्धं यथा भवत्येवं राजते.

भुयञ्जुयबलपडिबलविह्वणहं  
तेओहामियचंददिणेसहं  
किसिसत्तिजणमेत्तिसहायहं  
सेव करंति ण णहभाईवइं  
दैंति ण करभरु क्केसरिकंधर  
अज्ज वि ते सिज्झंति ण जेण जि

पयभरंथिरमहियलकंपवणहं । 5  
जणणदिण्णमहिलच्छिविलासहं ।  
को पडिमल्लु एत्थु तुह भायहं ।  
णउ णवंति तुह पयराईवइं ।  
पर मुहियइ भुंजंति वसुंधर ।  
पइसइ पट्टणि चह्हु ण तेण जि । 10

घत्ता—रइवर परमेसरु उच्छुधणु धरणिहरणरणपरियरु ॥

कासवतणुरुहु णवणल्लिणमुहु भुवणुद्धरणधुरंधर ॥ ४ ॥

## 5

आरणालं—विलसियकुसुममग्गणो गरुयगुणगणो तरुणिहिययथेणो ।

असरिसविसमसाहसो वसि हयालसो णिहयवेरिसेणो ॥ १ ॥

अण्णु वि जसवइतणयहं जेट्टउ  
सायरु जिह तिह मयरधयालउ  
पंचसयाइं सवायइं तुंगउ  
बालुं बंभसुंदरिहि सहोयरु  
हरियेदेहु णं मरगयगिरिवरु  
विमलकुलालवालसुरतरुवरु  
गुरुचरणारविंदरइरसवसु  
दुत्थियदीणाणाहहं दिहियरु  
लीलादल्लियमहायलमयगल्लु

पुत्तु सुणंदहि तुज्झु कणिट्टउ ।  
चावहं चारुवयणु चरियालउ ।  
भण्णइ संपैहिं सो जि अणंगउ । 5  
पिउंपयपयरुहरयरउ महुयरु ।  
अरिक्करिदसणमुसलपसरियकरु ।  
चरुमदेहु सासयसुहसिरिहरु ।  
मंदरकंदरंतगाइयजसु ।  
णरहरिसरणागयपविपंजरु । 10  
कटिणबाहु बाहुबलि महाबल्लु ।

4. १ MBP पयाथेरभर°.

5. १ MBP °वयण. २ MBP संपइ. ३ M बाल. ४ B पिउंपयरुह°. ५ MBP हरियवणुं.  
६ K चरिम°. ७ BPK °महियलु.

8 a ण ह भा ई व इं नखप्रभादीप्तानि, b प य रा ई व इं पदपद्मानि. 9 a कर भ र वण्डस्य भारः प्राचुर्यम्; b मु हि-  
वइ मुधा इथैव. 11 °रण प रिय र संग्रामसामग्रीकः.

5. 2 अ स रि स वि स म सा ह सो असदृशान्यद्वितीयानि विषमाणि मनसोऽप्यगोचराणि साहसानि अद्भुत-  
कर्माणि यस्य; वसि जितेन्द्रियः. 4 b च रि या ल उ परनारीसहोदरः, चरितस्य वा काव्यविशेषस्याश्रयः. 5 b  
संपहिं संप्रति. 11 a °महायल° महापर्वतः.



घत्ता—सो अच्छइ उवसमु धरिवि मणे जइ राणि कई वि वियंभइ ॥  
तो सहं चकें सहं साहणेण पइं मि णरिंद णिसुंभइ ॥ ५ ॥

## 6

आरणाळं—ओ जिप्पइ ण हारिणा कुलिसधारिणा पयडसुहडरोले ।  
सो णिम्महइ माणवे जिणइ दाणवे देव कलहकाले ॥ १ ॥

हित्तभिण्णमहिवइसामंतें	दसदिसिवहपेसियसामंतें ।
रूवरिद्धिरंजियरामोहें	अइपरिवद्धियसुधरामोहें ।
णियभुयसत्तिपरज्जियभरहें	तं णिसुणेवि पयंपिउ भरहें । 5
जमहु जमत्तणु को दरिसावइ	मइं मुपवि किर कवणु रसावइ ।
पम को वि किं जगि संतावइ	को किर सिहिसिहाहि सं तावइ ।
कहु महु तणउं पहुत्तु ण भावइ	कें पडिक्खलिउ जंतु णैहि भावइ ।
केर महारी को णावज्जइ	पह पुहइ को किर णावज्जइ ।
आसमुइमेइणिकरवालहु	को णासंकइ महु करवालहु । 10
को किर भिच्च महारा मारइ	को विणिवारइ मज्जु वि मारइ ।
किं किरै वणिणपण कंदप्पें	अणवंतहु णिवडइ कं दप्पें ।

घत्ता—इय जंपिवि रायं णिकरुणु अविणयविहियमणोज्जहं ॥  
सयलहं मि सयलसंपयघरहं लेहु दिण्णु दाइज्जहं ॥ ६ ॥

६ MBP कह व.

6. १ MB °सेहाहि. २ MBP किं. ३ P णहु. ४ MBP किर को. ५ M करि. ६ MBP °संपयहरहं.

6. 1 हारिणा उत्तमेण. 3 a हि त्ते न्या दि—हित्तौ गृहीतौ भिक्षौ उदाहितौ महीपतीनां सामंतौ लक्ष्मीश्च मन्त्रश्च येन तादृशेन भरतेन. 4 b ° सुधरामो हें शोभनायाः पृथिव्या मोहेन. 5 a भरहें भरतक्षेत्रेण. 6 b रसावइ पृथ्वीपतिः. 7 b सि हि सि हा हि सं तावइ अग्निज्वालाभिः स्वमात्मानं तापयति; 8 b भा वइ आदित्यः. 9 a णावज्जइ न गृह्णाति; b णावज्जइ न अर्जयति. 10 a °मे इ णि कर वाल हु मेदिनीकरप्राहकस्य. 12 b णिवडइ कं दप्पें कं मस्तकं दर्पेण सह निपतति. 13 अविणयविहियमणोज्जहं अविनयविधिना विनयाकरणेण भमनोशानां द्वेष्याणाम्.

## 7

आरणालं—ता विगया बँहुयरा जणमणोहरा णिवकुमारवासं ।

दुमदललैलियतोरणं रसियवारणं छिण्णभूमिदेसं ॥ १ ॥

तेहि भणिय ते विणउ करेपिणु  
सुरणरविसहरभयइं जणेरी  
पणवहु किं बँहुवेण पलावें  
तं णिसुणेवि कुमारगणु घोसइ  
तोभणवहु जइ सुंसुइ कलेवरु  
तो पणवहु जइ जरइ ण शिज्जइ  
तो पणवहु जइ बलु णोहट्टइ  
तो पणवहु जइ मयणु ण तुट्टई  
कंठि कयंतवासु ण चुँहुट्टइ

सामिसालतणुरुह पणवेपिणु ।  
करहु केर णरणाहहु केरी ।  
पुहइ ण लब्भइ मिच्छागावें । 5  
तो पणवहुं जइ वाहि ण दीसइ ।  
तो पणवहु जइ जीविउ सुंदरु ।  
तो पणवहु जइ पुट्टि ण भज्जइ ।  
तो पणवहु जइ सुइ ण विहट्टइ ।  
तो पणवहु जइ कालुँ ण खुट्टइ ।  
तो पणवहु जइ रिद्धि ण तुट्टइ । 10

घत्ता—जइ जम्मजरामरणइं हरइ चउगइदुँकवु णिवारइ ॥

तो पणवहु तासु णरेसँहो जइ संसारहु तारइ ॥ ७ ॥

## 8

आरणालं—पुणरवि तेहि गहिरयं सवणमहुरयं परिसं पउत्तं ।

आणापसरधारणे धरणिकारणे पणाविउं ण जुत्तं ॥ १ ॥

पिंडिखंडु महिखंडु महेपिणु  
वक्कलणिवसणु कंदरमंदिरु

किह पणाविज्जइ माणु मुएपिणु ।  
वणहलभोयणु वैर तं सुंदरु ।

7. १ MBP वओहरा; T वउहरा वूताः. २ BPK °लुलिय°. ३ MBP बहुएण. ४ MBP तइ and throughout elsewhere in this Kadavaka. ५ MBP सुथिरु but T सुसुइ. ६ MBP किइइ. ७ MBP आउ. ८ MBP कयंतपासु. ९ MBP चहुट्टइ. १० MPB °दुक्खइं वारइ. ११ MP ता; B तहो. १२ MBPK णरेसरहो.

8. १ B omits धरणिकारणे; P महिहि कारणे. २ MBP वरि.

7. 1 बहुयरा बहुतरा वओधरा वूताः. 7 a सुसुइ सुष्ठु शुचि. 9 b विहट्टइ विनश्यति. 11 a उहुट्टइ लगति; b कालु आयुः.

8. 1 गहिरयं गभीरम्. 3 a पिंडिखंडु खलखण्डम्.; महेपिणु अमिलप्य.

वैर दौलिहु सरीरहु दंडणु  
परपरयधूसर किंकरसैरि  
णिवपडिहारदंडसंघट्टणु  
को जोयइ मुहुं भूंभंगालउ  
पहु आसणु लहइ धिट्टणु  
मोणें<sup>१</sup> जहु भहु खंतिइ कायरु  
अमुणियहियथचारुगरुत्तें  
महुरपयंपिरु चाहुयगारउ

णैउ पुरिसहु अहिमाणविहंडणु । 5  
असुंहाविणि णं पाउससिरिहिरि ।  
को विसहइ करेण उरलोट्टणु ।  
किं हरिसिउ किं रोसैं कालउ ।  
पविरलदंसणु णिण्णेहत्तणु ।  
अंजवु पसु पंडियउ पलाविरु । 10  
कलहसीलु भण्णइ सुहडसैं ।  
केम वि गुणि ण होइ सेवारउ ।

घत्ता—अइतिक्वहं धम्मगुणुज्झियहं वर्म्मवियारणवसणहं ॥

को बाणहं संमुहुं थाइ रणे को महिवइघरि पिसुणहं ॥ ८ ॥

## 9

आरणालं—अहवा तेहिं किं हयं जं समागयं दुल्लहं णरत्तं ।

तं जो विसयविसरसे धिवइ परवसे तस्स किं बुहत्तं ॥ १ ॥

कंचणकंडें जंबुउ विंधइ  
खील्यकारणि देउलु मोडइ  
कप्पूरायरुक्खु णिसुंभइ  
तिलखलु पयइ डहिवि चंदणतरु  
पीयइ कसणइं लोहियसुक्कइं

मोत्तियदामें मंकेहु बंधइ ।  
सुत्तणिमित्तु दिंसे मणि फोडइ ।  
कोइवछेत्तहु वइ पारंभइ । 5  
विसु गेण्हइ सप्पहु ढोर्यवि करु ।  
तक्कं विकइ सो माणिकइं ।

३ MBP वरि. ४ M दारिहु ५ MBP णहि. ६ MBP °सिरि and a long note in M. यथा वर्षा-  
कालनदी परः अन्यहीनस्थाना क्षिल्लादिपयैः (?) मल्लिने रजोभिः धूसरिता मलिना प्रवहति हिरि अतिलज्जाकारिणी,  
तथा किंकरथी. शोभा परपदरजोभिः धूसरिता. ७ MBP असुहावाणि. ८ MBP °हिरि; K °हिरि but  
corrects it to °हरि. ९ P भूसंगा°. १० MBP मउणें. ११ MBP अजउ. १२ KBP मम्म°.

9. १ P °रसो. २ P परवसो. ३ MBP मक्कहु. ४ MBP दित्तमणि. ५ MBP कप्पूरायरुक्ख.  
६ MBP अण्ह पर.

6 a-b परे त्या दि—यथा वर्षाश्रीधारिणी नदी सरजस्का सकर्दमा असुखावहा भवति, एवं किं कर स रि किंकरा एव  
नदी परस्य स्वामिनः पदरजसा धूसरा मलिना भवति. 13 °व स ण हं °शीलानाम्. 14 पि सु ण हं बाणानां खलानां च.

9. 1 ते हिं बाणैः पिशुनैश्च. 3 a ज बु उ शृगालः. 5 a क प्पू रा य रु क्खु कर्पूरवृक्षं अशुक्लवृक्षं  
च; b वइ वृत्तिः.

जो मणुयत्तणु भोपं णासइ	तेण समणु हीणु को सीसइ ।	
चित्तु समत्तणि णेय णियत्तइ	पुत्तु कलत्तु वित्तु संबितइ ।	
मरइ रसणफंसणरसदडुउ	मे मे मे करंतु जिह मँडु ।	10
खज्जइ पलयकालसडूले	डज्जइ दुक्खहुयासणजाले ।	
मंजर कुंजर ऋहिसउ मंडलु	होइ जीउ मकडु माहुंडलु ।	

घत्ता—केलासहु जाइवि तवयरणु तापं भासिउ किज्जइ ॥

जेणेह सुदूसहतावयरि संसारिणि तिस छिज्जइ ॥ ९ ॥

## 10

आरणालं—इय भंणियं कुमारया मारमारया समरमा पसण्णा ।

दरिवियरियवराहयं सवररौहयं काणणं पवण्णा ॥ १ ॥

दिट्टु तेहिं केलांसि जिणेसरु	संथुउ रिसहणाहु परमेसरु ।	
जय रिसिणाह वसह वसहद्वय	जय तियसिंदमउलिलालियपय ।	
जय जाणियपरमक्खरकारण	जय जिण मोहमहातरुवारण ।	5
जय सुहवास दुरासावारण	जय ससहरसियवारिणिवारण ।	
पुणु वि पंच परमेट्टि णवेप्पिणु	पंचमुट्टि सिरि लोउ करेप्पिणु ।	
पंचमहारिसिवयइं लंपिणु	पंचासवदारीइं पिहेप्पिणु ।	
पंचिदियपमाउ वज्जेप्पिणु	पंच वि सर मयणहु तज्जेप्पिणु ।	
पंचायारसारु पावेप्पिणु	पंचपंचविहु धम्मु धरेप्पिणु ।	10

७ M सिद्धउ; BP मेदउ, c MBP मंकडु.

10. १ MBP भणिओ, २ MBP समरमापवण्णा and gloss in MP उपशमलक्ष्मीं प्राप्ताः, ३ MP सवररायइं, but T सवरराहयं शबरारणां भासो भा यत्र. ४ MP केलास°. ५ B लहेप्पिणु. ६ B °दारइं संमेप्पिणु.

9 a णेय णियत्तइ नैव नियन्त्रयति. 12 b माहुंडलु सर्पविशेषः. 14 संसारिणि तिस संसारलुण्णा विषयाकांक्षा.

10. 1 समरमा उपशमलक्ष्मीकाः, पसण्णा प्रसन्नाः. 2 °दियरिय° विचरिताः; सवरराहयं शबरारणां राहा शोभा यत्. 5 a परमक्खर° भोजः. 6 a सुहवास शुभस्य सुखस्य वा गृहरूप. 6 b ससहरे त्यादि—शाश्वरक्षन्त्रः तत्तुन्यं सितं शुक्लं वारिणिवारणं छत्रं यस्य. 8 b पंचासवदारीइं मिथ्यात्वाविरतिप्रमादकषाययोगाः. 10 b पंचपंचविहु दशविधः.

घत्ता—दृढगुणि मणमग्गणु संणिहिउ मोक्खहु संमुहुं पेसिउँ ॥  
संतहि अरहंतहु तणुरुहहिं अप्पउ चरिणं भूसिउँ ॥ १० ॥

## 11

आरणालं—ता पत्तो चरो पुरं णिवइणो घंरं भणइ सुणसु राया ।  
इसिणो तुह सहोयरा सीलसायरा अज्जु देव जाया ॥ १ ॥

पक्कु जि पर बाहुबलि सुंदुम्मइ	णउ तउ करइ ण तुम्हहं पणवइ ।	
तं णिसुणेवि पुरोहँ उत्तँ	भडसूमंतमंतिसंजुत्तउं ।	
कोसु देसुं परियँणु पयभत्तउ	मणहरु अंतेउरु अणुरत्तउ ।	5
कुलु छलु बलु सामत्थु सुइत्तणु	णिहिलजणाणुराउ जसकित्तणु ।	
विणउ वियारहारि ब्रुहँसंगमु	पोरिसु बुद्धि रिद्धि दइवुज्जमु ।	
कुंजर णावइ महिहर जंगमु	अत्थि तासु रह करह तुरंगमु ।	
अत्थसत्थु जावज्ज वि ण सरइ	जाम सहायसहासइं ण करइ ।	
जाम ण लग्गइ खलसंसग्गे	खत्तधम्मणिम्महणुम्मग्गे ।	10

घत्ता—जावज्ज वि चाउ ण करि घरइ तोणाजुयलु ण बंधइ ॥  
णिर्मज्जिए भालसेयलवहि जाम ण गुणि सरु संघइ ॥ ११ ॥

## 12

आरणालं—ण हु मारइ महाहवे जा महाहवे दाइओ समत्थो ।  
जा ण हरइ णिराउलं तुह महीयलं तिक्खस्वग्गहत्थो ॥ १ ॥

ताम तासु दूर्यउ पेसिज्जइ	जइ पइं पणवइ तो पालिज्जइ ।	
णं तो पुणु बाहुबलि धरिज्जइ	बंधिवि कारागारि णिहिज्जइ ।	
एम मंतु जं तेण पउंजिउ	ता रायं तहु दूउ विसज्जिउ ।	5

७ MBP पेसियउ. ८ MBP भूसियउ.

11. १ MBP हरं. २ MBP म दुम्मइ. ३ MBP बुत्तउ. ४ MBP दोसु. ५ MB परयणु.

६ MBP बुहं. ७ M रिद्धि बुद्धिदइउज्जमु. ८ MBP णिम्मज्जियं.

12. १ MBP दूवउ.

11. 6 b ज स कि त्त णु यशोवर्णनम्. 7 a ब्रु ह सं ग मु बुधसंगमः. 11 चा उ चापम्.

12. 1 महा ह वे महासंग्रामे, महा ह वे महाधवान्, महाभटान्.

णियवहरत्तु सत्तुविद्धंसणु  
 देसजाइकुलसुधु पसिद्धउ  
 विविहविसयभासाभासिल्लउ  
 तेयवंतु रक्खियपहुतेयउ  
 गैउ दूयउ परिच्छेइयपत्तउ  
 जहि वणतरुसाहहिं महु वियलइ  
 अइदीहरपवाससममहियहिं  
 रसविसेसधारामहमहियइं  
 पुण्फहिं गुण्फइ माल विहिंडिरं

सुहड सुलक्खणु सोमु सुदंसणु ।  
 पंडिउ पडु पडुलच्छिसमिद्धउ ।  
 दिट्टुत्तरु महिमाइ महल्लउ ।  
 महुरवाणि औदेउ अजेयउ ।  
 पोयणपुरु बहुदिर्वसहिं पत्तउ । 10  
 चलकंकेलीपल्लवु विल्लइ ।  
 पइसंतहिं वि सैमंतहिं पहियहिं ।  
 जहिं खज्जंति फलाइं सुरहियइं ।  
 चउदिसु रुणुरुणंति इंदिर ।

घत्ता—सरु मेल्लिवि करेण णियडियउ रत्तु पवडुल्लु रसियउ । 15  
 विवीफल्लु अहरु व वणसिरिहे जहिं कणइल्ले डसियउ ॥ १२ ॥

13

आरणालं—वरंकेदारदारए सालिसारए कसणधवलपिच्छां ।  
 अणुइणगणणियघणकणं कणिसमणुदिणं जहिं चुणंति रिच्छा ॥ १ ॥

णिद्धणत्तु जहिं चंदे दाविउ माणुसि कत्थइ नेय विहाविउ ।  
 जहिं विहार पासाउ पियारउ णउ णारियेणकंठु रइगारउ ।  
 उववासु वि चडएण रइज्जइ णउ रोपं दुक्कालि किज्जइ । 5  
 जहिं केण वि कीरइ ण सुरागमु होइ गुणीण गुणेहिं सुरागमु ।

२ M पत्तु विद्धंसणु. ३ MBP आदेय. ४ MBP गयउ वूउ. ५ MBP °दियहहिं. ६ MBP पल्लउ. ७ MBP समत्तहिं. ८ MP add after this. ण कामिणिवयणइं अइसरसइं, पुणु पिज्जहिं जलाइं सरिसरसहिं. ९ MBP गुण्फइ. १० MBP विहडिर. ११ MBP पवडुल्लु. १२ MBP विवीहल्लु.

13. १ MBP वरं; T केयार°. २ MBP °पिच्छा. ३ MBP चरति. ४ MBP णारियणदेहु.

6 a णियवहरत्तु निजस्वाम्यनुरक्तः. 9 b आदेउ आदरवान्. 10 a परिचोइयपत्तउ वाहितवाहनः. 12 b समंतहिं समन्तात्. 13 b सुरहियइं देवहितानि सुगन्धानि वा. 14 a विहिंडिर पर्यटनशीलाः; b इंदिर भयराः. 15 सरु मेल्लिवि शब्दं कृत्वा. 16 कणइल्ले लुकेन.

13. 1 केदारदारए वप्रमार्गे. 2 अणु स्तोकम्. 3 a-b णिद्धणत्तु श्लिग्धं ज्योत्स्नायुक्तं नक्तं रात्रिः, न पुनर्मनुष्ये निर्धनत्वम्. 4 a-b विहार पासाउ विहारशब्दवाच्यः प्रासादः, अथवा वीनां पक्षिणां धारकः प्रासादः, न तु नारीजनो विगतहारः. 5 a उववासु गृहमन्थे वासः आहारस्वागथः, चडएण चटकेन पक्षिणा. 6 a सुरागमु मद्यगमः मद्यपानम्, b सुरागमु देवागमनम्.

दिदु सिहाछेउ वि रिसिदिक्खहि  
असिलाहवैरुं जहिं लेप्पइ  
वहइ सया णवत्तु वैणु जोवणुं  
जेत्थु कुसादूसणु णीसंगंइ  
धेत्तणु णिवडणु धणउल्लइ

णउ माणिकमऊहपरिक्खहि ।  
णउ विसिदुमारणसंकप्पइ ।  
णउ णिरुवइउ णिवसंतउ जणु ।  
णासवारि णउ रायवयं गइ । 10  
धरणु णिवीडणु जहिं अहरुल्लइ ।

घत्ता—पुक्खरिणिहिं कीलागिरिवरहिं जलखाइयपायारहिं ॥

जं सोहइ मोत्तियतोरणहिं मंडिउ चउहुं मि दारहिं ॥ १३ ॥

## 14

आरणालं—तहिं सुरगुरुसुरयओ रायदूयओ पट्टणे पइट्टो ।

रायालैयदुवारए हिययहारए णायरेहिं दिट्टो ॥ १ ॥

कणयदंडैयरु भल्लउ भाविउ  
बुद्धिवंतु अच्चम्भुयभूयउ  
तं णिसुणिवि गउ लट्ठिविहत्थउ  
अच्छइ दैरि णरिंदवओहरु  
ता कंदप्पे भणितं म वारहि  
ता कट्ठियहरेण जसणिम्मलु  
बाहुबलीसु देउ कयमंडलु  
संयुउ मउलियपंजलिपोमे

तहिं पडिहारु तेण बोलाविउ ।  
भणु अच्छइ दुवारि पइदूयउ ।  
कहइ कुमारइ पणमियमत्थउ । 5  
अत्थि णत्थि भणु सामिय अवसर ।  
भायरकिंकरु लहु पइसारहि ।  
पइसारिउ पसणणुमुहमंडलु ।  
दपं दिट्टुउ णं आहंडलु ।  
को वसि ण कियउ तुह परिणामे । 10

घत्ता—तुह धणुगुणटंकारिण केषं ण माणु णिहित्तउ ॥

पइं वम्मह पंचहिं मग्गणहिं सयलु वि तिहुयणु जित्तउ ॥ १४ ॥

५ MBP °हवरुवउं, K °हवरुवउं but corrects it to °रुं. ६ MBPT धणु. ७ MBP जोवणु.  
८ MT कुसादूसण. ९ P णीसंगइ. १० MBP थट्टणु.

14. MBPT सरुयओ. २ MB रायालए. ३ MBP °दंडकरु. ४ MBP पणमिय°. ५ MBP  
वारि. ६ M °टंकारेण. ७ MBP केषहिमाणु ण चत्तउ; T णिहित्तउ त्यक्तः.

8 a असिलाहवरुं अशिलाभव रूपम्. 9 a वइइत्यादि—वहति धरति णवत्तु अभिनवत्वं वनं यौवनं  
च, न तु जनो नवत्व निरतनव्यवस्थात्यागं धरति. 10 कुसादूसणु कुः पृथ्वी, सा लक्ष्मीस्तयोर्दूषणम्; णीसंगइ  
मुनौ; ष णउ रायवयं गइ राज्यपद प्राप्ते न, णासवारि अश्ववारेऽपि न.

14. 1 °सुरयओ सदृशः. 4 a अच्चम्भुयभूयउ आश्चर्यभूतः. 8 a कट्ठियहरेण द्वारपालेन.  
9 a कयमंडलु रचितसमः.

15

आरणाळं—पियवयणं पि भासियं सुइसुहासियं भुक्तकामभोया ।

तुह जयवडहसहेणं जगविमहेणं णउ सुणंति लोया ॥ १ ॥

जय कुसुमाउह रहरमणीवर  
पइं पेच्छिवि घोळइ उप्परियणु  
चिहुरभारु दढबंधु वि पसिदिल्ले  
बलइ बलइ लोयणजुयलुल्लउ  
रंभाणघरंभा इव डोल्लइ  
देवै तिलोत्तिम तिलु तिलु खिज्जइ  
मेणइ मीणि व थोवइ पाणिइ  
एम थुणंतहु दिण्णउं आसणु  
हिमइरिजलहिमज्झि महिरायहु  
कुसलु खेउं कुरुवंसणरेसहु  
कुसलु खेमु णमिविणमिकुमारहु  
द्वै वुत्तउ कुसलु णरिंदहु  
एकु जि अकुसलु सुहियकंठिउ

अलिमालाजीयासंधियसर ।  
वियलइ णारिहि णीवीबंधणु ।  
हवइ रयंबु सवइ सोणीयलु । 5  
दीसइ अंगु वूढसेउल्लउ ।  
रइवापं आहल्ल वि हल्लइ ।  
विरहं उव्वंसि उव्वेइज्जइ ।  
पिय संतप्पइ रवियरमाणिइ ।  
णिवसणु भूसणु किउ संभासणु । 10  
कुसलु खेउं भरहहु महु भायहु ।  
कुसलु खेमु जलहरणिग्घोसहु ।  
कुसलु खेउं पत्थिवपरिवारहु ।  
कुसलु णाह णिहिलहु णिवविदहु ।  
जं तुहुं देवै दूरि परिसंठिउ । 15

घत्ता—दूरत्थहं बंधुहुं णेहु जइ णासइ पिसुणकयंतरु ॥

रवि मेल्लइ किरणइं पंकयहं ताइं णिवारइ जलहरु ॥ १५ ॥

16

आरणाळं—भो भो दणुयणिम्महा सुणसु वम्महा कुणसु चारु चित्तं ।

सह गुरहेण णाइणा तिजगताइणा रुसिउं ण जुत्तं ॥ १ ॥

15. १ MB जयवडसहेण. २ B सिदिल्लु. ३ P देवि. ४ MBP उव्वस. ५ MBP मीणइ.  
६ MBP दूरि देव

16. १ M °णिम्महा. २ MBP गरुण.

15. 5 b रयंबु शुक्रम्. 6 b वूढसेउल्लउ उत्पन्नत्वेदार्यम्. 9 b पिय प्रभो; रवियरमाणिइ सूर्य-  
करसंतापेन. 16 पिसुणकयंतरु पिसुणकृतचित्तभेदः.

16. 2 ° ताइणा रक्षकेन.



को ससहर को किर करमेलउ	को समुह को जलकल्लोलउ ।
को तुहुं भरहु कवणु किर बुधर	पहउ बुहं वियप्पु ण रुधर ।
कप्परुक्खु किं कुसुमहिं अंचमि	रयणायरु करसलिले सिंचमि । 5
सरहु अमाइ दीवउ बोहमि	हैंउं णिहीणु किं पइं संबोहमि ।
तायहु पच्छर भरहु जि राणउ	तुहुं जुयराउ जगेकपहाणउ ।
माणे मरट्ट विसट्टु मुपप्पिणु	जीवहु एकमेक अणुणेप्पिणु ।
तरुणिकंठकंठइयपर्वट्टहिं	अरिवरदंतिदंतपरिहट्टहिं ।
आयडियपैरैहकोदंढहिं	अलिंणियउ जेहिं भुयदंढहिं । 10
तेहिं ण पुणरावि रणि जुज्जिज्जइ	गुरैर्यणि अविणपण लज्जिज्जइ ।

यत्ता—कुलसामि महाबलु सुयणु गुणि णउ णवंति जे राणउ ॥

धरि ताहं होइ दालिइइउ अह जमपुरिहि पयाणउं ॥ १६ ॥

## 17

आरणुं बुद्धिबलुं अचंचुयभूयउ  
तं गिसुणिविं न निनिज्जलुं  
जो वरवरमकुलयरो पढमाणववरो पकयच्छियाप ।  
जिणवंसो पयासिओ जेण भूसिओ रायलच्छियाप ॥ १ ॥

जासु चकु रिउचकु गिसुंभइ  
जासु पुरोडु पुराइउ पेच्छइ  
कागणि दिणमणि ससि वि दुगुंछइ  
छायइ छत्तु होंतु विवरेरउ  
चम्पु चमू धरंतु अइभासइ  
मागहु वरतणु जेण पहासु वि  
जेण तिमीसकवाइ विहट्टिउ

जासु दंड परदंड णिंभइ ।  
तुरउ तुरिउ हियपं सहुं गच्छइ ।  
थवइ थवइ तिहुयणु जइ इच्छइ । 6  
असि असु कडुइ सत्तुं केरउ ।  
सेणावइ सेणावइ णासर ।  
णिज्जिउ सुरु वेयडुणिवासु वि ।  
सिंधुदेविअहिमाणु पलोट्टिउ ।

३ MB हउं मि हीणु. ४ MP जगेकु पहाणउ. ५ MBPK माणु मरट्टु विसट्टु. ६ P परिवहहिं and gloss परिचट्टे. ७ MBP 'पयठ'. ८ MBP 'गुरयण'.

17. १ MBP अइहासइ.

8 a मरट्टु र्पं; विसट्टु विसट्टे. 8 b अणुणेप्पिणु अनुकूलं कृत्वा. 13 पया णउं प्रयाणं गमनम्.  
17. 3 b णिंभइ प्रतिबभ्राति. 4 a पुराइउ पश्चाद्भावि वस्तु. 5 b थवइ रचयति. 6 a छायइ  
आच्छादयति; ७ अ सु प्राणाः. 7 a अइभासइ अतिशयेन शोभते; ७ सेणावइ सेनाया आपदः.

दिष्ण केर हिमवंतकुमारहु  
तहिं अप्पणउं णाउं सणिहियउ  
तं तहिं दीसइ ण उण कलंकउ  
विसहरउलइं सविसहरवरिसइं  
णं पालेययसेलकिरीडहु

पुणु आइउ वसहइरिसुतीरहु । 10  
छाहिछलेण व ससिणा गहियउ ।  
णिवणामंकिउ भमइ ससंकउ ।  
जित्तइं मेच्छंउलइं सामरिसइं ।  
पुणु भउ जणियउं गंगाकूडहु ।

घत्ता—डुकी मंदाइणि कलसकर लोपं दीसइ केही ॥

15

थिय णहाणकरणमणणिवणियडि मज्जणवालिणि जेही ॥ १७ ॥

18

आरणालं—जस्सायासगामिणो खयरसामिणो विहिर्यंहिययसह्ला ।

णमिविणमीसणामया णिरह णिम्मया जायया वसिह्ला ॥ १ ॥

पुणु वेयडुहु कुलिसं ताडिउ  
णट्टमालि साहिउ मालायरु  
असमु वइरु किं तेण समाणउं  
पिंछकमंडलुमंडियहत्यहु  
चक्कवट्टि गुणमणिरयणायरु  
मा पज्जलउ तासु कोघाणलु  
हा मा दुरयरपहिं विहिज्जउ  
मा उच्छलउ छइयदिसमेरउ  
मा धावंतु महंत महारह

पुव्वंकवाडु जेण उग्घाडिउ ।  
पयसुइ पाडिउ णं पायडणरु ।  
जं माणुसु रिउउ उत्ताणउं । 6  
रोसु जणइ तं मुणिवरसत्थहु ।  
आउ जाहुं अवलोयहि भायरु ।  
मा णिडुहंउे तुहारउ भुयबलु ।  
पोयणपुरपायारु वलिज्जउ ।  
हंरिसुरखयखोणीधूलीरउ । 10  
मा पिसुणहं पूरंतु मणोरह ।

२ MPB वसहइरिउ तीरहु. ३ MBP °णामंकउ. ४ MBP मिच्छाउलइं. ५ M records a p राएं for लोएं.

18. १ MB विहय°, २ M पुव्विकवाडु. ३ MP णं माणसु; B माणुसु. ४ MBP °कमंडलु°. ५ MBP णिह्लउ. ६ B वहिज्जउ. ७ BP हयसुर°.

10 a केर आहा. 11 b छा हि छ लेण छायाव्याजेन. 13 a स विसहरवरिसइं विसहरा मेघाल्लेषां वर्षणेन सहितानि. 14 a पालेययसेल° हिमपर्वतो हिमवान्. 16 मज्जणवालिणि ज्ञानपालिका दासी.

18. 2 णिरह निष्पापाः; णिम्मया निर्मदाः. 4 b पायडणरु सामान्यमनुष्यसदशः. 9 a दुरयरपहिं इत्सिनां दन्तैः; विहिज्जउ विभज्यताम्. 10 a छइयदिसमेरउ आच्छादितदिङ्मर्यादम्.

काउ कंदलावलिहि म विरसउ  
 देहि कप्पु गिहप्पुं हवेप्पिणु  
 तं गिसुणेप्पिणु बाहुबल्लिं  
 पलयकालु सोणिउं मा करिसउ ।  
 पेक्खु भरहु भावें पणवेप्पिणु ।  
 पडिजंपिउं भूमंगविहील्लें ।

घत्ता—कंदप्पु अदप्पु ण होमि हउं दूययकरउ गिवारिउ ॥ 15  
 संकप्पे सो महु केरण पहु डज्झिहइ गिरारिउ ॥ १८ ॥

## 19

आरणालं—जं दिण्णं महेसिणा दुरियणासिणा णर्यैरदेसमेत्तं ।  
 तं मेह लिहियसासनं कुलविह्वसनं हरइ को पहुत्तं ॥ १ ॥

केसरिकेसरु वरैसइथणयलु  
 जो हत्थेण छिवइ सो केहउ  
 हउं सो णवमि को सो भण्णइ  
 किं जम्मणि देवहिं अहिंसिचिउ  
 किं तहु अग्गइ सुरवइ णच्चिउ  
 खल्लु दंडु तं तासु जि सारउ  
 करिस्यररहवरडिभयरहं  
 भरहु हरइं किं मज्झु भुर्याभरु  
 सुहडहु सरणु मज्झु धरणीयलु ।  
 किं कयंतु कालाणलु जेहउ ।  
 महिखंडेण कवण परमुण्णइ । 5  
 किं मंदरगिरिसिहरि समच्चिउ ।  
 सिरिसंइरिणियइ किं रोमच्चिउ ।  
 महु पुणु णं कुंभारहु केरउ ।  
 णर गिहणमि रणि जे वि महारह ।  
 तइं चुक्कइ जइ सुंयरइ जिणवरु । 10

घत्ता—तहु मेइणि महु पोयणणयरु आइजिणिंदे दिण्णउं ॥  
 अग्गिउउ पडउ असि सिहिसिहहिं जइ ण सरइ पडिपवण्णउं ॥ १९ ॥

८ MBP वरिसउ. ९ MBP गियदप्पु हरेप्पिणु.

19. १ MBP दिण्णउं. २ B omits त महु लिहियसासन. ३ M वरहइ, but records a p वरसइ°. ४ MBP पणवउ. ५ MBP °सइरिणियइ सो रोमच्चिउ. ६ BP add after this: हरिगइहकिंकर-  
 छेलयणिइ. ७ MBPT भरइ. ८ M भुयातरु, T भुयाहरु बाहुसामर्थ्यम्. ९ MBP ता. १० M सुमरइ.  
 ११ MBP पडिवण्णउं.

12 a कंदलावलिहि मनुष्यकपालपंतौ; विरसउ रटठ; b करिसउ कृषट. 14 b भूमंगविहील्लें भूमंग-  
 मयानकेन.

19. 3 a वरसइथणयलु वराया: सत्या: स्तनतलम्. 4 a छिवइ स्पृशति. 7 b °सइरिणियइ  
 सैरिण्णा पुंश्ल्या. 9 b महारह महारथाः. 10 a भुयाभरु भुजसामर्थ्यम्.

## 20

आरणालं—ता दूषण जंपियं किं सुविप्पियं भणसि भो कुमारा ।

बाणा भरहपेसिया पिंछभूसिया होंति दुण्णिवारा ॥ १ ॥

पत्थरेण किं मेरु दलिज्जइ

खज्जोपं रवि णित्तेइज्जइ

गोप्पण किं णहु मणिज्जइ

वायसेण किं गरुड णिरुज्जइ

कौरिणा किं मयारि मारिज्जइ

किं हंसं ससंकु धवलिज्जइ

डंडुहेणं किं सप्पु डसिज्जइ

किं णीमासें लोउ णिहिप्पइ

किं खरेण मायंगु खलिज्जइ ।

किं घुट्टेण जलहि सोसिंज्जइ ।

अण्णाणं किं जिणु जाणिज्जइ । 5

णवकमलेण कुलिसु किं विज्जइ ।

किं वसहेण वग्घु दारिज्जइ ।

किं मणुएण कालु कवलिज्जइ ।

किं कम्मेण सिद्धु वसि किज्जइ ।

किं पइं भरहेणराहिउ जिप्पइ । 10

घत्ता—हो होउ पहुप्पइ जंपिण राउ तुहुप्परि वग्गइ ॥

करवालहिं सुलहिं सब्बलहिं परइ रंणंगणि लग्गइ ॥ २० ॥

## 21

आरणालं—ता भणियं सहेउणा मयरकेउणा एत्थ कहिं मि जाया ।

जे परदविणहारिणो कलहकारिणो ते जयम्मि राया ॥ १ ॥

वुड्डु जंबुउ सिर्वं सहिज्जइ

जो बलवंतु चोरु सो राणउ

हिप्पइ मृगंहु मृगेण जि आमिसु

रक्खाकंखइ जूहुं रपप्पिणु

एण णाइं महु हासउ विज्जइ ।

णिब्बल्लु पुणु किज्जइ णिप्रौणउ ।

हिप्पइ मणुयहु मणुएण जि वसु । 5

एक्कहु केरी आण लएप्पिणु ।

20. १ MBPK किं खज्जोपं. २ P सोखिज्जइ. ३ P मणिज्जइ. ४ MBP डिंडुहेण. ५ MBP भरहु. ६ MBP पहुप्पइ. ७ K रंणंगणु मग्गइ.

21. १ MBP सिउ. २ M णिब्बल. ३ MBP णिप्पाणउ. ४ MBP म्गिहु म्गिणेण. ५ P वुड्डु.

20. 5 a मा णि ज्जइ उपमीयते. 10 a णि हिप्पइ निक्षिप्यते. 11 वग्गइ विग्रहाय वेदते. 12 परइ प्रभाते.

21. 1 सहेउणा सयुक्तिकेन. 3 b एण णाइं अनेन न्यायेन. 5 b वसु धनम्.

ते णिवसन्ति तिलोईगविट्टउ  
माणमंगि बरं मरणु ण जीविउ  
आवउ माउं घाउ तहु दंसमि  
सिहिसिंहहं देविदु वि ण सहइ  
पकु जि परउव्वारु णरिंदहु

सीहहु केरउ वंहुं ण विट्टउ ।  
एहउ दूय सुट्टु मरं भाविउं ।  
संझाराउ व लणि विडंसमि ।  
महु मणसियहु विसिंहं को विसहइ । 10  
जइ पइसरइ सरणु जिणैयंदहु ।

घत्ता—संघट्टमि लुट्टमि गयघडहु दलमि सुहड रणमग्गइ ॥

पहु आवउ दावउ बाहुबलु महु बाहुबलिहि अग्गइ ॥ २१ ॥

## 22

आरणाळं—ता दूउं विणिग्गओ णियपुरं गओ तम्मि णिवणिवासं ।

सो विण्णयइ सायरं सारसायरं पणविउं महीसं ॥ १ ॥

विसमु देव बाहुबलि णरेसरु  
कज्जु ण बंधइ बंधइ परियरु  
पइं णउ पेच्छइ पेच्छइ भुयबलु  
माणु ण छंडइ छंडइ भयरसु  
सन्ति ण मण्णइ मण्णइ कुलकलि  
तुज्जु ण णवइ णवइ मुणितंडउ  
देव ण देइ भाइ तुह पोयणु  
ढोयइ रयणइं णउ करिरयणइं

णेहु ण संघइ संघइ गुणि सरु ।  
संधि ण इच्छइ इच्छइ संगरु ।  
आण ण पालइ पालइ णियच्छु । 5  
दयैवु ण चितइ चितइ पोरिसु ।  
पुहइ ण देइ देइ बाणाबलि ।  
अंगु ण कडुइ कडुइ खंडउ ।  
पर जाणमि देसइ रणभोयणु ।  
ढोपसइ भुवुं णरउररयणइं । 10

घत्ता— संताणु कुलकमु गुरुकहिउ खत्तधम्मु णउ बुज्झइ ॥

मज्जायविषज्जिउ सामरिसु अवसें दाइउ जुज्झइ ॥ २२ ॥

६ B तिलोउ°. ७ MBP विदु. ८ MBP वरि. ९ M भामिउ. १० MBPK राउ; G भाउ but writes adove it राउ in second hand. ११ M सिहिसिंहहि देविदु ण वि ण सहइ. १२ MT विसइ. १३ MBPK जिणइंदहु.

22. १ MBP दूवउ. ३ MB पणवउ; P पणविओ. ३ MBP दइउ. ४ BPP मग्गइ मग्गइ. ५ MBP भुउ.

10 b वि सिह बाणाः. 11 a परउ व्वा रु परोद्धरणं रक्षणम्.

22. 1 सायरं सादरम्; सा र सायरं सा लक्ष्मीः रसा पृथिवी, तयोः आकरम्. 8 a मुणितंडउ मुनिसमूहः. 10 b णरउररयणइं नरवक्षःस्थलविदारकानि. 12 दाइउ दायादः सपत्नीजातभ्राता.

## 23

आरणाळं—ता परिहसिउ दिणमणी णं सिरोमणी गयणकामिणीय ।

अत्थं पडि णिवेइओ रुइविराइओ णाइ जाभिणीय ॥ १ ॥

मावेसहि भणेवि अइरत्तउ  
णं चउपहरहि वणु अहिकंतिहि  
णाइं पवालकुंभुं दिसणारिइ  
पउलिवि तलिवि दलिवि दलवट्टिवि  
दंडहियजणलोहियलिस्ती  
उग्घाडिधि ससहरमुह णिद्धहि  
णं सिदूरकरंड झसच्छिइ  
मयरंदुल्लोलु व जगकमलहु  
गोमिणीइ हरिरइरसभैरिउं  
अत्थमियउ जाइवि अवरासइ

दिवसहु दिण्णु दीउं सिहितत्तउ ।  
जायउ लोहियहु णहदंतिहि ।  
घरिवि मुक्के दिक्करिगणियारिइ । 5  
जीवरासि जगभायणि घट्टिवि ।  
कालेडो विव दिसिर्वहि धिस्ती ।  
संमुहियहि तियसासामुद्धहि ।  
दाविउ लवणजलहिजललच्छिइ ।  
णिउ वापण वरुणमुहकमलहु । 10  
पोमरार्यवत्तु व वीसरिउं ।  
रत्तु मित्तु णं गिलियउ वेसइ ।

वत्ता—पुणु दीसइ संझारायपण भुवणु असेसु वि रत्तउ ॥

सहुं गिरिदंसरिणंदणवणहिं लक्खारसि णं धित्तउ ॥ २३ ॥

## 24

आरणाळं—आसोसियस्समारसो खवियतावसो तरुणिदंसणाओ ।

णं णरमणि ण माइओ दिसहिं धाइओ सहइ मयणराओ ॥ १ ॥

संझारायजलणु जो भमियउ  
संझारायधुसिणु जं संकिउ

सो तमजलकल्लोलहिं समियउ ।  
तं तमोहमयणाहं डंकिउ ।

23. १ MBP दीउ. २ MBP कुंभ. ३ MBP मुक्क. ४ MBP मलिवि. ५ B कालिं दाविय. ६ MB दिसवहि; P दिवसहिः. ७ MBP °भरियउ. ८ MBP °पत्तु. ९ MBP वीसरियउ. १० MBP गिरिसरसिः.

23. 2 अत्थं पडि णिवेइओ अस्तपर्वतं प्रति समर्पितः; रुइविराइओ दीसिविराजितः; णाइ तथा यामिन्या. 3 a मावेसहि मा आवेसहि मा प्रवेशं कुरु. 5 b दिक्करिगणियारिइ दिक्करिहस्तिन्या. 7 b कालेडो विव दिसिर्वहि धिस्ती कालेन अण्डमिव दिशु क्षिप्तम्. 11 a हरिरइरसं कृष्णक्रीडारसः; b पोम-रा ववत्तु पद्मरागभाजनम्. 12 a अवरासइ अपरदिशा.

24. 3 b समियउ पीडितः. 4 b °मयणाहं मृगेन्द्रेण.

संझारायविडवि जो<sup>१</sup> फुल्लिउ  
 चंदमइंवे तमकरि भग्गउ  
 मयणिहेण दीसइ सुहयारउ  
 विसइ गवक्खहिं थणयलि घोळइ  
 रंधायाहै थियउ अंधारइ  
 रइपासेयबिंदु तेणुज्जलु  
 दिट्ठउ कत्थइ दीहायारउ  
 मोरें पंडुरु सण्णु वियण्णिवि

सो तमतंवेरमवइपेछिउ । 5  
 किं जाणहुं सो तासु जि लग्गउ ।  
 तप्पवेसु वइरिहिं भल्लारउ ।  
 वहुहारु व सँसितेउ णिहालइ ।  
 उद्धसंक पयणइ मज्जारइ ।  
 दिट्ठु भुयंगहि णं मुत्ताहलु । 10  
 धरि पइसंतउ किरणुक्केरउ ।  
 मुद्धे कैह व ण गहिउ झडप्पिवि ।

घत्ता—गंगासरि हंसपक्खदलइं पियविरहिणिगंडयलइं ॥

जायइं ससियरपक्खालियइं धवलाइं जि णिरु धवलाइं ॥ २४ ॥

## 25

आरणालं—मम्मणमणियजंपिरं मयणकंपिरं पणयविणयवंतं ।

रहरसरहंसरंजियं पिययमा पियं रमइ णिसि रमंतं ॥ १ ॥

केण वि घणथणि णिहियउ करयलु  
 काइ वि को वि सुँहउ आलिगिउ  
 णीहरंति पडिबहुरोसुब्भवि  
 पणयकलहि रमणीचरणंगउ  
 सोहर विडु अहरा रिउ संकिउ  
 हारें बद्ध का वि सयणालइ  
 बिबाहररसघयसंसित्तउ  
 उल्हाविउ रइसलिलपवाहें

कणयकलसि णावइ रत्तुप्पलु ।  
 मँडुमडुमुहचुंबणु मग्गिउ ।  
 केण वि का वि धरिय करपल्लवि । 5  
 को वि सकुंकुमेण पायं हउ ।  
 णं मयरद्धयमुइइ अंकिउ ।  
 ताडिय णाहें चंपयमालइ ।  
 काहं वि मयणहुयासु पलित्तउ ।  
 काइ वि किलिक्किचिउ उच्छाहें । 10

24. १ MBP जं. २ P बेरिहि. ३ M सियतेउ. ४ B omits this foot. ५ M रंधायार. ६ M पियविरहिणं.

25. १ B °रहसजपिय. २ MBPK सुहहुः ३ MBP मडमंड. ४ MBP कासु.

5 b °तंवेरम° इस्ती. 7 a मय णि हेण मृगमिषेण. 9 a रंधायारु छिद्राकारः; b पयणइ प्रजनयति.  
 11 a दीहायारउ सर्पाकारः; b °उक्केरउ समूहः. 13 °पक्खदलइं पक्षयुगलानि.

25. 6 a °चरणगउ पादयोः पतितः. 7 a अइरा अचिरात्.

का वि रयावसाणसमरीणी  
को वि का वि सवर्हहिं रंजइ गुणि  
जाम एहु वेसाणरु अच्छइ  
जणणि महेली मणि अवहारमि

चंदणकइमवाविहि लीणी ।  
अकसमाण मज्जु परपणइणि ।  
तावण्णहि को वयणु णियच्छइ ।  
गुरुपय छिवमि ण पइं अवहेरमि ।

घत्ता—इयं कवडकूडमउजंपियहिं दाणेण वं वसिन्ध्यउ ॥

15

णारीयणु रमिउ विडाहिवहिं वेढिवि णिरुवमरूवउ ॥ २५ ॥

26

आरिणालं—दीहा वि रयमिहुणहं चक्कवियणहं पहियवंदयाणं ।

मडहा हवइ रयणिया चंदवयाणिया रयविडिंदियाणं ॥ १ ॥

ता उग्गामिउ सूरु पुव्वासइ  
किंसुयकुसुमपुंजु णं सोहिउ  
चारु सूरु वंसहु णं कंदउ  
मज्जु परोक्कइ आवइ पाविय  
एम भणंतु व गयणि व लग्गउ  
तंभुं करोहउ रूहिरु णिसाडें  
कुंकुमलोलु व मण्णिउं घरिणिइ  
मिलियउ सोहइ विहुममहियलि  
मिलियउ सोहइ रत्तइ सयदलि  
मिलियउ सोहइ जण अहरुल्लइ  
राउ मुयंतु जि गुणसंजुत्तउ

रइरंगु व दरिसिउ कामासइ ।  
णं जगभवणि पईवुं पबोहिउ ।  
लोहिउ ससि रोसेण दिणिंदउ । 5  
कमलिणि वेळ्ळि भाणिवि संताविय ।  
णं रयणियरहु पच्छइ लग्गउ ।  
चित्तिउ पंतु सछिहकवाडें ।  
रत्तु दुवंकुरु कंदरहरिणिइ ।  
मिलियउ सोहइ कंकेल्लीदालि । 10  
मिलियउ सोहइ रमणीकरयलि ।  
महिहरतीर धाउ जलरेल्लइ ।  
अरहंतु व रवि उण्णइं पत्तउ ।

५ P °रयावसाणे, ६ MBP वि.

26. १ MBP रइ°. २ MBP पईवउ बोहिउ. ३ MBP सूर°, ४ MBP दिणंदउं. ५ MB तंब. ६ M रुहिर. ७ MBP कंकेलिहि दलि.

11 a °समरीणी °श्रमेण क्लान्ता. 12 b अकसमाण मातृत्वन्या. 14 b गुरुपय छिवमि गुरुपादौ स्पृशामि; ण पइं अवहेरमि त्वां न वन्नयामि. 16 वेढिवि आलिङ्ग्य.

26. 1 दीहा वि दीर्घावि; चक्कवियणहं चक्रवाकानां एव विगणानां पक्षिगणानाम्. 2 मडहा लज्जी, रयविडिंदियाणं रतानां विटेन्द्राणाम्. 8 a णिसाडें निशाचरेण.



घत्ता— ह्यतिमिरे भरहपयासपण रविणा किं ण वि दाविउ ॥

सिरिरामासेवियसच्छसरपुष्कयंतु विर्यसाविउ ॥ २६ ॥

15

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्कयंतधिरइय

महाभव्वभरहाणुमणिय महाकव्वे बाहुबलिदूयसंपेसणं णाम

सोलहमो परिच्छेथो सम्मत्तो ॥ १६ ॥

॥ संधि ॥ १६ ॥

८ MBP दावियउ. ९ MB वियसावियउ.

15 सि री ह्या दि—स्त्रीसेवितानां स्वच्छसरोवरपद्मानां मध्ये विकासितम्.

## XVII

दूषागमि रविउग्गमि चलकरवालललाधियजीहहो ॥  
 जाइवि गंदाणंदणहो भिडिउ भरहु रणि सीहु व सीहहो ॥ धुवकं ॥

I

<p>ता समरचित्तु विसरिसु विरुद्धु          कढिणयरपाणिपीडियकिवाणु          तिथैलीतरंगभंगुरियभालु          अरुणच्छिओहरंजियदियंतु          दूययवयणहिं वडियकसाउ          सुंयरेपिणु तायहु तणउं चारु          तो धरिवि गिरुंभैवि करमि तेम          महु कुद्धहु रणि देव वि अदेव          इय गज्जिवि असितासियसुरिंदु          तां मउडवद्ध मंडलिय चलय          महिवडियकणयकंचीकलाव          पकेक पहाण गिरिंदैधीर</p>	<p>विष्फुरियदसणडसियाहद्धु ।          उंद्ध्यमीसियहयभउंहकोणु ।          णं सीहु कुडिलदाढाकरालु । 5          णं पलयजलणु धगधगधगंतु ।          जंपइ सरोसु रायाहिराउ ।          जइ कहँ व ण मारमि रणि कुमारु ।          अच्छइ करि जिह गियलत्थु जेम ।          सो ण करइ किं महु तणिय सेध । 10          जा उट्टिउ भरहु महानरिंदु ।          केऊरसकंठाहरणघुलिय ।          अइमीसण थिय णं कालभाध ।          सहं रापं लहु संगणद्ध वीरँ ।</p>
--	--

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

वलिभङ्गकम्पिततनु भरतयश. सकलपाण्डुरितकेशम् ।  
 अत्यन्तवृद्धगतमपि भुवनं बम्भ्रमति तच्चित्तम् ॥

M reads °तनुवरं and B reads कम्पितवर for कम्पिततनु; MP read विभ्रमति for बम्भ्रमति. GK do not give it.

1. १ MBP दूयागमि रविउग्गमणे. २ MBP विष्फुरियडसणु डसिया°. ३ M records a p for this foot: धणुगुणे रोवि दिढवज्जबाणु. ४ MBP दूयहि वयणे. ५ MBP सुमरेपिणु. ६ P कह वि. ७ MB गिरुंभिवि; B गिरुंजिवि. ८ P करिवरु गियलत्थु. ९ MBP तो. १० MBP चलिय. ११ MBP गरिंद. १२ B धीर.

1. 3 a विसरिसु अद्वितीयम्; b अहद्धु अधरोपरितनभाग.. 6 a °ओ ह° विक्षेपः. 8 a चारु आचारः. 12 a चलय उत्थिताः. 13 b काल भाव यमस्वरूपाः.

घत्ता—संणंज्झंतहु तहु भडयणहु का वि णारि पभणइ जइ जाणहि ॥ 15  
किं पि महारउ उवर्यरिउ तो पिययम सुररमणि म माणहि ॥ १ ॥

## 2

वहु का वि भणइ हत्थागएण	किं कीरइ मणिकंकणसएण ।	
अरि करिदंतुम्भउ एक्कु जइ वि	बलउल्लउ सोहइ हत्थि तइ वि ।	
तं धवलउ तुह पोरिसजसेण	आणेज्जसु पिय महु रइवसेण ।	
वहु का वि भणइ एहु वि सुतारु	किं तुज्ज पसाएं णत्थि हारु ।	
तुह करणित्तिसुक्कत्तिएहिं	परकुंभिकुंभसुयमोत्तिएहिं ।	5
हउं कित्तिलया इव कुसुमियंगि	छंज्जमि दाविज्जसु एह भंगि ।	
वहु का वि भणइ महिमाहरेण	मइं विज्जहि किं वीरं करेण ।	
रिउच्चारं पिय उवयारकारि	आणेज्जसु रयसमसेयहारि ।	
वहु का वि भणइ अहिमाणगाहि	लग्गिज्जसु पिय पडिवक्खणाहि ।	
ऊणेण हएण वि णत्थि लाहु	उडुगणहु ण रूसइ तेण राहु ।	10
जिम मिहरहु जिम हिमयरहु भिडइ	बलिणा हएण जसु चंदि चडइ ।	
वहु का वि भणइ णीसंकयाइं	तावियपिसुणइं पावियजयाइं ।	

घत्ता—कइणा कव्वे मणोहरए जेण भडेण महाभडगौदलि ॥

दिण्णइं पयइं सुउल्लयइं तासु कित्ति भमंइ महिमंडलि ॥ २ ॥

१३ MBP संणज्झंतहु भडयणहु. १४ K उवरिउ but gloss उपकृतम्.

2. १ MBP अरि कुमि°. २ P पहिरेसमि सामिय एत्थ भंगि, but records a *p* छिज्जमि दाविज्जसु. ३ MBP दाविज्जसि. B वीरं करेण. ५ MBP रिउच्चारं. ६ MBP किं जणेण हएण. ७ MBP मिहरहु. ८ MBP इय णाहाण, but M records a *p* in the margin: बलिणा हएण. ९ M कव्वेण. १० MBP हिडइ.

16 उ व य रि य उपकृतम्.

2. 5 *a* करणि त्तिसुक्कत्ति एहिं करानिच्छिशोत्कर्तित्ते. 6 *b* छज्जमि शोभे. 7 *a* महिमाहरेण माहात्म्यस्फेटकेन; *b* विज्जहि वीजय. 8 *a* उ व यार कारि माहात्म्यजनकम्. 9 *b* पडि वक्खणाहि प्रतिपक्षनाथे प्रधाने. 10 *a* ऊणेण पदातिपुरुषेण.

## 3

ता रायवयेण रणतूरलफ्खाइं	किंकरकैराहयइं तासियविवफ्खाइं ।
सुरदंतिखयजलयजलणिहिणिणायाइं	थंगिथगिगिदुगिदुगिगि संदिण्णघायाइं ।
पडुपडहमहलमहारावरोलाइं	किंकरकैरब्भमियसल्लसलियतालाइं ।
मुहपवेणतुरुतुरियिकाहलवमालाइं	गजंतभेरीहिं हल्लमुहलबोलाइं ।
तडिवडणतडयडियगुरुकरडटिविलाइं	विरसंतझल्लरिसरोसरियसेलाइं । 5
णीसासभारेण पूरियइं विमलाइं	हृहृहुयंताइं वरसंखर्जमलाइं ।
अवूरुइं वि पहयाइं परियलियसंखाइं	जयविजयसिरिकामिणीसोक्खकंखाइं ।
हंजंतहंजाइं भंभंतभंभाइं	हल्लावियाहिंदमहिर्सीयरब्भाइं ।
चलियाइं सेण्णाइं संणाहसोहाइं	वरकुंजरारुढरणरुढजोहाइं ।
णरकरविमुक्कासखुरखयधरग्गाइं	चलधूलिकविलींइं विप्फुरियखग्गाइं । 10
परिमिलियमंडलियबलसारवंताइं	धीवंतपाइक्ककरधरियकौंतीं ।
रहचक्कचिक्कारभेसियभुयंग्गाइं	णिवल्लत्तछाहीहिं छाइयपयंग्गाइं ।
जक्खिखदखयरिंदभूमिंदभीमाइं	खयकार्लकीलाहि कीलींविरामाइं ।

घत्ता—इय भर्हहाहिउ णीसरिउ जाम समउ मंतिहिं सामंतहिं ॥

ता वेयालियचरणहिं विण्णवियउ बाहुबलि णवंताहिं ॥ ३ ॥ 15

## 4

परियणजलेण णहु महि पिहंतु	उत्तुंगतुरंगतरंगवंतु ।
करिमयरपसारियचंडसौंड	सियपुंडरीयडिंडीरपिहु ।
लायण्णपउरगंभीरघोसु	दुग्गउं चोइहरयणाहिवासु ।

3. १ B °करहयइं. २ MBP ठगिदुगिगिठगिदुगिगि. ३ MBP °करब्भमिय°. ४ B °सललिय°. ५ MBP °पवणहयकुहर ( P कुहय ) तुरुतुरियिकाहलइं. ६ P °हलमुसल°. ७ MBP °खरकरड°. ८ MBP °जुयलाइं. ९ MBP अवराइं पहयाइं. १० MBP भंभंतभंभाहिं. ११ MBP °सायरभाइं. १२ BP °कवलाइ. १३ MBP विप्फुरिय° K विप्फुरिय° but corrects it to विप्फुरिय°. १४ P धावति. १५ MBP °कुंताइं. १६ MBK °कालकालाहि. १७ B कीराहिरामाइं. १८ भरहणराहिउ.

4. १ MB महि णहु. २ MB दुग्गमु. ३ MBP चउदह°.

3. 5 b स रो स रि य से ला इं °शब्देनोत्सारितपर्वतानि. 8 a °हंजाइं वादित्रविशेषाः; b सा य रब्भा इं सागराः अजाणि मेघाश्च. 10 a °विमुक्का स विमुक्काः अश्वाः. 15 वेयालिय° वैतालिकाः.

संदणबोहित्यसमूहचवलु  
जसमोत्तियमंडियतिजगतीरु  
धयवडजलयरपरिर्धुलणरंगु  
तुज्जुवरि देव असिद्धसरउहु  
सुविचित्तर्पत्तपत्तियसरेण  
हउं एक्कु वहरि किं पउर भणहि  
किं डज्जइ हुयवहु तरुवरेहिं  
किं कुसुमबाण जिणमणु हरंति  
छाइज्जइ किं भयणेहिं भाणु

पंचगमंतपायालविउलु ।  
आणंदियणियकुलं कुइहीरु । 5  
दूरयरणिहित्तमलोहसंगु ।  
उत्थंल्लिउ णरवइ बलसमुहु ।  
ता बुच्चइ बाहुबलीसरेण ।  
किं कालहु अग्गइ जीव गणहि ।  
किं खज्जइ खगवइ विसहरेहिं । 10  
गोमीउ मइंदहु किं करंति ।  
पउर वि रिउ महु ण मलंति माणु ।

घस्ता—एक्कु वि पउ ण समोसरमि णायायारहिं पंथु णिरुंभेमि ॥

आवंतहु णिवसार्थरहो सरवरपंतिहिं वरंणु णिवंधेमि ॥ ४ ॥

## 5

गज्जंतु एम पलयक्कतेउ  
जोयंतहु णियभुयथामसंचुं  
हियवइ संणाहु ण माइ केम  
केण वि बद्धी जयकामएण  
केण वि इच्छिय संगामदिक्ख  
केण वि गुणु वल्लइउ कहिं वि चावि  
केण वि णिवद्धु तोणीरजुयलु  
केण वि कड्डिउ करवालु चंड

संणज्जइ सिरिवाहुबलिदेउ ।  
कासु वि वड्डिउ रोमंचु उंचुं ।  
वहुलोहवंतु काउरिसु जेम ।  
असिधेणुंय रसणादामएण ।  
सरमोक्खहु केरी परमसिक्ख । 5  
चंप्पिवि णं खलयणि कुडिलभावि ।  
णं गरुडं दाविउ पक्खजमलु ।  
णं मेहं देरिसिउ विज्जुदंड ।

४ P पायालि. ५ MB °कुलकुइहीरु, P °कुलु कुइहीरु, K °कुलकुइहीरु but corrects it to °कुइहीरु  
T चइहीरु चंद्रारंगुस्थानम्. ६ MBP °घुलियरगु. ७ K उत्थल्लउ. ८ MBP °वत्तपत्तिय°. ९ MBP  
जणहि. १० BP णिरुंभिवि. ११ MRP °सायरबलहो. १२ MB वरुण. १३ B णिवधिमि; K णिरुंभिमि.

5. १ G सवु; K थावसचु. २ MP उचु. ३ MBP असिधेणुन. ४ MBP लाविउ. ५ MBP  
चप्पेविणु खलयणकुडिलभावि. ६ Mपक्खजुयलु, BP पक्खजुयलु. ७ P दाविउ.

4. 4 a °बोहित्य° नौः. 5 कुइहीरु चन्द्रः. 6 b °मलोहसंगु अन्यायमलसंगः. 11 b गोमाउ  
शृगालः. 12 a भयणेहिं नक्षत्रसमूहैः. 13 णायायारहिं सर्पाकारैः. 14 वरणं तटं सैन्यसमुद्रस्य.

5. 1 a पलयक्कतेउ प्रलयाकंतेजाः. 2 a थामसंचु सामर्थ्यसंचयः. 4 b असिधेणुय कुरिका.

भङ्गु को वि भणइ परु ह्णमि अञ्जु      णिकंठउ सामिहि देमि रञ्जु ।  
 पङ्गु तुच्छु पउर रिउ हउं वि धीरु      भणु सुंदरि किं कीरइ वियारु । 10  
 अवहंडहि लहु दे देहि हत्थु  
 आयङ्गिउ पङ्गुहि पसाउ जेहि      राणि जुञ्जामि अञ्जु भुपरि तेहि ।

घत्ता— भासइ को वि महासुहड मुइ मुइ कंति ण एवहि मंज्जमि ॥

णिग्गवि रायहु तणउ रिणु अञ्जु सीसदाणेण विसुञ्जमि ॥ ५ ॥

6

भङ्गु को वि भणइ कयवणमुहेहि      जइ भिज्जइ उरु करिमुहरहेहि ।  
 जइ खज्जइ आमिसु रक्खसेहि      जइ पिज्जइ सोणिउं वायसेहि ।  
 जइ अंतइं गिद्धंइं लइवि जंति      तो मरणमणोरइ मंहु सरंति ।  
 भङ्गु को वि भणइ हलि हत्थु देमि      गयदंतमुसँलु कडुवि लेमि ।  
 कंडवि णरकण अवर वि करेणु      उड्ढावमि अयसतुसोहरेणु । 5  
 भङ्गु को वि भणइ हुइ खंडखंडि      महु करु पेक्खेज्जसु पेक्खित्तोडि ।  
 सुंदरि गयणंगणि लंबमाणु      अविमुक्कवेरि दावियकिवाणु ।  
 अह धरणिघुलिउ लइ रिउ विहत्तु      तुह मंगलंसुकज्जलविलिणु ।  
 जं पेच्छहि बहुरुहिरें किलिणु      पैरिमुक्कदीहणारायभिणु ।  
 वच्छयलु महारउ तं जि लेहि      सघुसिणु करयलु अँहिणाणु देहि ।  
 हलि सामलंगि उर्णुल्लवयणु      जँइ णिवडिउं पेच्छहि तंबणयणु । 10

घत्ता—तो' मेरउ सिरु तरुणि तुहुं चित्ततुलारोहेण विवेयहि ॥

सहुं पत्थिवर्परिवालिणण सरिसउ किं व ण सरिसउ जोयहि ॥ ६ ॥

८ K इणिवि. ९ MBP करमि. १० MBP मुञ्जमि and gloss in MP मोह करोमि; K मञ्जमि but मुञ्जमि in second hand.

6. १ MBP गिद्ध. २ B मय. ३ K °मुसल. ४ M पेक्खिज्जहि. ५ MBP पेक्खित्तुडि. ६ MBP परमुक्क°; M records a p सरु मुक्क°. ७ M अहिणाहु. ८ MBP ओफुल्ल°. ९ M जं णियडउ; BP जं णियडिउं. १० MBP सो. ११ MBP परिपालिणण.

12 म ज्जमि मनोहरं करोमि.

6. 5 a कंडवि चूर्णाकृत्य; b अयस° अपयशः.

7

छुड गज्जिय गुरु संगामभेरि  
 छुड णिग्गउ भुयबलि साहिमाणि  
 छुड काले णीणिय दीह जीह  
 थिय लोयवाल जीवियणिरीह  
 छुड भडभारे दल्लहलिय धरणि  
 छुड चंदेबलाइं पलोइयाइं  
 छुड मच्छरचरियइं वड्डियाइं  
 छुड चक्रइं हत्थुग्गामियाइं  
 छुड कौतइं धरियइं संमुहाइं  
 छुड मुट्ठिणिवेसियं लउडिदंडं  
 छुड गय कायर थरहरियप्राणं  
 छुड मेढेचरणचोइयमयंग

णं भुक्खिय तिहुयणु गिलिवि मारि ।  
 छुड पत्तहि पत्तउ चक्कपाणि ।  
 पसरिय माणुसमंसासणीह ।  
 डोल्लिय गिरि रंजिय गंहणि सीह ।  
 छुड पहरणफुरणं हसिउ तरणि । 5  
 छुड उँहयबलाइं पधावियाइं ।  
 छुड कोसडु खगारं कड्डियाइं ।  
 छुड सेल्लइं भिच्चहिं भामियाइं ।  
 धूमंघइं जायइं दिम्मुहाइं ।  
 छुड पुंखुंजल गुणि णिहियं कंइं । 10  
 छुड दोइय संदण णं विमाण ।  
 छुड आसवारवाहियतुरंग ।

धत्ता—छुड छुड कारणि वसुमइहि सेण्णइं जाम हणंति परोप्परु ॥  
 अंतरि ताम पइडु तहिं मंति चवंति समुब्भिवि णियंकेरु ॥ ७ ॥

8

बिहिं बलहं मज्झि जो मुर्यइ बाण  
 तं णिसुणिवि सेण्णइं सारियाइं  
 तं णिसुणिवि रहसाऊरियाइं  
 तं णिसुणिवि धारापहसियाइं  
 तं णिसुणिवि णिद्धंगइं घणाइं

तहु होसइ रिसहहु तणिय आण ।  
 चडियइं चावइं उत्तारियाइं ।  
 वज्जंतइं तूरइं वारियाइं ।  
 करेवालइं कोसि णिवेसियाइं ।  
 णिम्मुकुइं कवयणिबंधणाइं । 6

7. १ MB °मसाण सीह. २ MBP गहणसीह. ३ MBP दल्लहलिय. ४ MBP चंद°, ५ MBP उँहय°, ६ MBP °चडियइ. ७ MB धूमंघइ. ८ M °णिवेसिउ. ९ M °दंडु. १० MBP पखुज्जु. ११ M णिहिय. १२ M कंडु. १३ MBP °पाण. १४ P दोमइ. १५ MBP मेढु°. १६ M वरकर; BP वरकर.

8. १ MBP मुवइ. २ MBP खगारं पडियारि. ३ MBP णद्धंगइं; T णिद्धंगइं दीप्राणि णद्धंगइं वा धत्तानि.

7. 1 a छुडु शीघ्रम्. B b °मंसा सणीह मांसाशनेच्छा 4 b गह णि वने.

8. 5 a णिद्धंगइं भास्वराणि.

तं णिसुणिवि मय मायंग रुद्ध	पडिगयवरगंधालुद्ध कुद्ध ।
तं णिसुणिवि मच्छरभावभरिय	हरि फुरुरुरंत धावंत धरिय ।
रह खंचिय कडिय पग्गहोह	वारिय विंधंत अण्येय जोह ।

घत्ता—परिसेसियरणपरियरइं गुरुयणचरैणसवहसंणिहियइं ॥

सैण्णइं उज्झियकलयलइं थक्कइं कुड्ढि णाइं आलिहियइं ॥ ८ ॥ 10

9

पणमियसिरेहिं मउलियकरेहिं	बाहुबलि भरहु महुरक्खरेहिं ।
उग्गमियरोसपसमंतएहिं	बिण्णि वि विण्णविय महंतएहिं ।
तुम्हइं बिण्णि वि जण चरमदेह	तुम्हइं बिण्णि वि जयलच्छिगेह ।
तुम्हइं बिण्णि वि अखलियपयाव	तुम्हइं बिण्णि वि गंभीरराव ।
तुम्हइं बिण्णि वि जगधरणथाम	तुम्हइं बिण्णि वि रामाहिराम । 5
तुम्हइं बिण्णि वि सुरहं मि पयंड	महिमैहिलहि केरा वाहुदंड ।
तुम्हइं बिण्णि वि णिवणायकुसल	णियतायपायपंकरुहभसल ।
तुम्हइं बिण्णि वि जण जणहु चक्खु	इच्छहु अम्हारउ धम्मपक्खु ।
खरपहरणधारादारिण	किं किकरणियरं मारिण ।
किर काइं वराणं दंडिण	सीमंतिणिसत्थं रंडिण । 10
दोहं मि केरा मज्झत्थ होवि	आउहु मेह्लिवि खमभाउ लेवि ।

घत्ता—अवलोयंतु धराहिवइ एत्तिउ किज्जैउ सुत्तु सुज्जत्तउ ॥

तुम्हइं दोहं मि होउ रणु तिविहु धम्मणाएण णिउत्तउ ॥ ९ ॥

४ MB मच्छरभावरहिय; P मच्छरभारभरिय. ५ MB फुरुरुरंत. ६ MB अणंत. ७ M चरणसवहसल्लिहियइं; B °चरणवसहसंणिहियइं; 'I' सवहसंणिहियइं. ८ P कोडि.

9 १ MBP उग्गमिउ रोसु. २ MBP read: तुम्हइं बिण्णि वि जयलच्छिगेह, तुम्हइं बिण्णि वि जण चरमदेह. ३ MB महियल केरा. ४ MBP आउह. ५ MBP किजइ सुट्टु. ६ MBP धम्म णाएण.

8 a प ग्ग होह रश्मिसमूहः. 9 °सवहस णि हिं यइं शपथवृत्तानि. 10 कु ड्ढि कुड्ढे भित्तौ.

9. 2 b महंत ए हिं मन्त्रिभिः. 7 a णिवणायकुसल राजनीतिकुशलौ. 10 b सीमतिणिसत्थं ऋषिसमूहेन. 12 सुत्तु सुभाषितम्. 13 धम्मणाएण धर्मन्यायेन.



## 10

पहिलउ अवरोप्परु दिट्ठि धरह  
 बीयउ हंसावलिमाणिएण  
 तइयउ पुणु णहि जोर्यतु देव  
 जुज्जह बिण्णि वि णिवमल्ल ताम  
 अवरोप्परु जिणिवि परक्कमेण  
 तणुसोहाहसियपुरंदरेहिं  
 किं दूहवियहि णवजोव्वणेण  
 किं सलिले चंडालंकिएण  
 किं राएं गुरुपडिकूलएण

मा पत्तलपत्तणचलणु करह ।  
 अवरोप्परु सिंचहु पाणिएण ।  
 करु करि धिवंतै सुरदंति जेव ।  
 एक्रेण तुलिज्जइ एकु जाम ।  
 गेण्हहु कुलहरसिरि विक्रमेण । 5  
 ता चित्तिउ दोहिं मि सुंदरेहिं ।  
 किं फालिएण वि कडुपं वणेण ।  
 किं दासें पेसणसंकिएण ।  
 सुविणीयसुयणसिरसूलएण ।

अप्ता—जे ण करंति सुहासियइं मंतिहिं भासियाइं णयवयणइं ॥

10

ताहं णरिंदहं रिद्धिं कओ कहिं सीहाँसणछत्तइं रयणइं ॥ १० ॥

## 11

इय चित्तिवि इच्छिउ मंतिमंतु  
 अवलंबिउ रोसु ण परियणेहिं  
 सकसायभाव आसणु दुक्क  
 उद्धाणणु पडु भुयबलिहि तौइ  
 हेट्ठिल्ल दिट्ठि उवरिल्लियाइ  
 णं होंति कुगइ पंचमंगईइ

बुड्ढाणुगामि णीसेसु संतु ।  
 आयंबकसणसियल्लोयणेहिं ।  
 दोहिं मि अवलोइउ एकमेक्क ।  
 पेच्छइं रविंविबु व किरणचंडु ।  
 णिज्जिय दिट्ठिइ अविहल्लियाइ । 5  
 विसयासा ईव मुणिवरमैईइ ।

10. १ MP पत्तलयत्तणु चवलु; B पत्तलयत्तणु चलणु; T पत्तलयत्तणु. २ B करि कर. ३ MBP धिवंतु. ४ MBP अणुहुंजहु मेइणि. ५ T चंडालट्टिएण. ६ MBP कहिं कहिं. ७ MB सिंघासण°, P सिंहासण°.

11. १ MBP आसणु दुक्क. २ MBP एकमेक्क. ३ MBP तुंडु. ४ MBP पेक्खवि. ५ P पंचम-  
 गयाइ. ६ MBP विव. ७ P °मयाइ.

10. 1 b पत्तलपत्तणु चलणु पत्तलपक्षमचालनम्. 8 a चंडालंकिएण चाण्डालस्वीकृतेन. 9 a  
 गुरुपडिकूलएण मन्त्रिपुरोहितप्रतिकूलेन. 10 सुहासियइं सुभाषितानि; णयवयणइं नीतिवचनानि.

11. 1 b बुड्ढाणुगामि वृद्धाश्रितम्; णीसेसु संतु सर्वमुत्तमम्. 5 b अविहल्लियाइ अविचलितया  
 स्थिरया.

णं तावसि भग्नी विडरईह  
णं कमलपंति ससियरर्तईह

णं सेलभिसि गंगाणईह ।  
कुमुओलि व मडलिय रविरईह ।

घत्ता—ठिउ हेट्टामुहुं चक्रवइ णिज्जिउ पडिभडदिट्टिपहावहिं ॥

घल्लियणवकुसुमंजलिहिं णंदातणुरुहु संश्रुउ देवहिं ॥ ११ ॥ 10

## 12

मओमत्तमायंगलीलावहाग  
फणिदेण चंदेण इंदेण दिट्टा  
सरतेहिं आलोइयं सच्छणीरं  
महापोमसुत्ताहिमाणिकुदित्तं  
महीरंगरंगंतकल्लोलमालं  
सिरीणेउरालावणच्चंतमोरं  
तरंतामरं रोयैरारद्धकीलं  
ससीछाहिसारंगडेवंतसीहं  
ट्टुणंतालिकोलाहलं सारिसिल्लं  
सुयाणेयपर्विख्वंदजर्विख्वदसहं

रमावासवच्छैत्थलोलंतहारा ।  
पुणो दो वि राया सरंते पइट्टा ।  
विसालं गहीरं तुमारोहतारं ।  
मरुधूर्यतिगिच्छिधूलीविलिचं ।  
मरालीपहालगलीलामरालं । 5  
भिसाहारपूरंतचंचूचऊरं ।  
जलुब्भंतमीणं लयापत्तणीलं ।  
समुचुंगफेणावलीछणणतूहं ।  
इणुम्मुकपायावलीफुल्लफुल्लं ।  
पमैज्जंतहत्थिदसोडाविमहं । 10

घत्ता—तहिं बिण्णि वि जण ओयरिय पट्टुणा घित्त जलंजलि भायइ ॥

विर्यलइ उप्परि मेहलहे णं मंदाइणि हिमइरिरायहु ॥ १२ ॥

८ P °रईह. ९ M णं कुमुउलि वररवियररईह; B ण कुमुउणिव णवरवि°; P णं कुमुउलिव णवरवि°.

12. १ MBP वच्छत्थलोलंवि°. २ M °तिगिच्छ°; B तिगिच्छि°; P तिगिच्छ°. ३ MB गेयपारद्ध°  
P खेयरारद्ध°; T रोयर चक्रवालं. ४ MBP °सिहं. ५ M सारिसिल्लं. ६ MP °पेक्खंत°. ७ MBP णि-  
मज्जंत°. ८ MBP सुडा°. ९ MBP वियरइ.

7 a वि ड र ई इ विट्टरत्त्या. 8 a °त ई इ°संतत्या; b कुमुओ लि कुमुदपंक्तिः. 9 पडि भ ड° बाहुबलिः.

12. 1 b रमा वा स° लक्ष्मीनिवासम्. 2 b सरंते सरोवरमध्ये. 3 b °तार शुभ्रम्. 7 a रोय र° रवि-  
रम्. 8 a स सी छा हि सारं ग° चन्द्रप्रतिबिम्बे स्थितं हरिणमुद्दिश्य; °डेवंत° धावन; b °तूहं तटम्. 9 b इणु-  
म्मुक पा या व ली° आदित्येन मुक्तानां किरणानां समूहैः.

## 13

वच्छत्यलु पाविधि पुंणु वि वलिय  
 कडियलि धावंती सुंदरासु  
 णं मरगयमहिहरि चंदकंति  
 डेवंती दीसइ सलिलधार  
 णं सुरसरि चैवलतरंगफार  
 आरुसिवि पुणु भरहहु विमुक्क  
 पच्छाइउ वउदिसु ताइ राउ  
 कणयइरि व सरयवभावलीइ  
 सलिले णवसोत्तइं पूरियाइं  
 उघोसिउ विजउ महासरेहिं

हेट्टामुह खलमेत्ति व धुंलिय ।  
 दीसइ तारालि व मंदरासु ।  
 णं णीलमहीरुहि हंसपंति ।  
 णं कंठभट्ट कंठिय सुतार ।  
 गयणुल्लंत झससुंसुमार । 5  
 णंदातणपं गुरुजलझलक ।  
 धवलइ जिणकिंसिइ णं तिलोउ ।  
 णं उययसिहरि ससहररुईइ ।  
 बहुपरियणसयणइं जूरियाइं ।  
 बाहुबलिणराहिवकिंकरेहिं । 10

घत्ता—सीसु धुणंतु भुंयंतु छलु सरवरवारिपवाहं सित्तउ ॥

पडिओसौरियउ पुहइवइ णाइं करिंदु करिंदे जित्तउ ॥ १३ ॥

## 14

जलभरियसुणासावंसएण  
 वैजियमंडलियकुरंगएण  
 रोसारुणच्छिरंजियदिसेण  
 सीहेण व उद्दयकेसरेण  
 पीलिज्जइ तेरउ उच्चुचाउ  
 फुल्लसर वि कयधंमेलसोह  
 अवियाणियखत्तियधम्मसार  
 किं किंरे वयणेण पलोइएण

वड्डियपडिभडवलसंसएण ।  
 परिहच्छे सरतीरंगएण ।  
 सप्येण व अइआसीविसेण ।  
 णिब्भच्छिउ भाइ णरेसरेण ।  
 रसु पिज्जइ खज्जइ गुलु सुसाउ । 5  
 पइं जेहा कहिं लब्भंति जोह ।  
 महिलाण गोहहो मोट्टियार ।  
 जीवंतहं सलिले ढोइएण ।

13. १ MB पुण वलिया. २ MBP घुलिया. ३ MBP तारावलि मंदरासु. ४ MP महिरुहि; B महीहरि. ५ MBP धवल°. ६ MBPK मुणंतु. ७ MBP °ओसरियउ.

14. १ MBI °तजिय°. २ MBP °धम्मिल्ल°. ३ MB किकरवयणेण.

13. 2 b तारा लि ताराश्रेणी. 3 b °म ही रु हि वृभे.

14. 1 b व ड्डियेत्या दि—वर्धितः प्रतिमटाद्बाहुबलिनः सकाशाद्बले संशयो जयविषये यस्य. 2 b परि-  
 इ च्छे वेणेन.

ए एहि देहि भुयञ्जुज्जु तेम  
ता भणइ जइणि णिप्फलु जि भसहि  
जाणंतु वि देवि<sup>४</sup> णिरत्थु भणहि  
माहेलाण गोहूँ हउं सयणमग्गि

अज्जु जि एयंतरु होइ जेम ।  
धणुबाण महारा काइं हसहि । 10  
पियविरहुव्वेइउ किं ण कँणहि ।  
गोहाण गोहु कड्डियइ खग्गि ।

घत्ता—जइ सयणत्तणु मणियउं तो किं मग्गहि पुहइ भडारा ॥

णियघणकर्णमयकयविवस् पत्थिव सयल होंति विवरेरा ॥ १४ ॥

## 15

तओ भुयमंडणि भायर लग्ग  
कुलीण कुकारणि माणमहल्ल  
सुकंचणकुंडलमंडियगंड  
चिराउस चंदचडावियणाम  
समत्थ सिरीण रईण णिकेय  
असंक खगंक झसंक विपंक  
मिलंति मिलेप्पिणु हत्थि धरंति  
पंडंत जि गाहणिबंधणु दैति  
विरुद्ध वि गाह बलेण सुयंति  
अलंभुयञ्जुज्जुविहाणसयाइं  
करंति वि धीर अविहवियंग  
पयाणभरस्स धरिस्सि ण तिण्ण  
फलोणयपायवपिट्ठु व लुण्ण  
ण चल्लिथ कुंचिय कूर फणिद  
तओ हयमाणिणिमाणमयण

णरिंदसिरोमणि धट्टपयग्ग ।  
पहाण महाबल बिण्णि वि मल्ल ।  
पसारियबाह सरोस पर्यंड ।  
सुविक्कमवंत णराहिवकाम ।  
महारह भौरह भक्खरतेय । 5  
जसंसुपसाहियपुण्णससंक ।  
धरेप्पिणु देह धडेवि पडंति ।  
कडीयलु कंटु णिरुंभिवि ठंति ।  
मुप्पिणु उड्डिवि झंत्ति वलंति ।  
परिप्पणकड्डणवेहणयाइं । 10  
णिरंकुस णाइं मयंघ मयंग ।  
विमुक्क रवेण दिसाकरि वुण्ण ।  
णहे गय पक्खि वणेयर रुण्ण ।  
दरीकुहरेसु णिलीण पुलिंद ।  
णरामरसंगरलद्धजपण । 15

४ P भुयञ्जुज्जु. ५ BK देव. ६ MBP कुणइ. ७ M मोहु, but records a p गोहु. ८ P कणयमय°.

15. १ K °घुट्ट° and gloss घृष्ट. २ P सकचण°. ३ MBP बारहमक्खर°. ४ MBP घडेण.  
५ MBP पडंति जि गाह°. ६ MBP गिरुद्धु वि बाहु; K गिरुद्ध वि गाह. ७ MBP जंति. ८ MBP  
पचंपण°. ९ PK चुण्ण.

10 a जइणि जिनपुत्रः; भसहि असंबद्धं प्रलपसि.

15. 2 a कुकारणि पृथ्वीनिमित्तम्. 4b णराहिवकाम देवौ. 5 b भक्खर° आदित्यः. 6 b जसं-  
सु° यशःकिरणाः. 12 b वुण्ण संकुपिताः. 13 b वणेयर मृगाः.

सुरिंदकरीकरथोरभुयण  
पहुस्स करेण करा परतावि

अणिदजिणिंदसुणंदसुयण ।  
परेण थिरेण धरेणं कमावि ।

घत्ता—कुंभैरे राउ समुद्धरिउ णायणियंविणिसेवियकंदरु ॥  
कयइच्छाकोउहलेण किं णं पुरंदरेण गिरि मंदरु ॥ १५ ॥

## 16

उद्धरिउ सुपुत्तै णं सुवंसु  
णं सुहपरिणामे जीव भव्वु  
णं मुणिवरणाहे वयविसेसु  
णं गर्मेणवियारै बालभाणु  
णं कामुयसत्थे कामचारु  
खयरामरमाणविमद्दणेण  
अइलुद्धे बहुमैणियधणेण  
परिपालियसयलवसुंधरेण  
जमदाढावलयहु अणुहरंतु  
रविबिंबेण व जियविसेमवेउ  
थिउ दाहिणभुयदंडहु समीउ  
को सुरयधुत्तिचित्ताणुवट्टि

कमलायरेण णं रायहंसु ।  
णं सुयणसमूहे सुकइकव्वु ।  
णं णरवरिंदणाएण देसु ।  
णं वाएं चंपयकुसुमरेणु ।  
णं सो जि तेण संसारसारु । 5  
पढमेण पढमजिणणंदणेण ।  
कुद्धे अवगणियसज्जेणेण ।  
ता चित्तिउ चक्कु सुकंधरेण ।  
उद्धाइउ चंचलु विप्फुरंतु ।  
तें परियंचिउ बाहुबलिदेउ । 10  
को पइउ किर णियकुलपईउ ।  
को एम जिणइ जगि चक्कवट्टि ।

घत्ता—विंभिउ भरहणराहिवइ बाहुबलीसु जगेण पसंसिउ ॥

गयणभाउ सुरमुक्कियहिं पुण्फदंतपंतिहिं णं पइसिउ ॥ १६ ॥

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरहए  
महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे भरहबाहुबलिजुञ्जवण्णणं णाम  
सत्तारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १७ ॥

॥ संधि ॥ १७ ॥

१० P धरेवि. ११ MBP कुमरे. १२ M णाइ, but T कि गिरिमंदरो पुरंदरेण नोद्धतः.

16. १ MBP जीउ. २ MBP गयण°. ३ BP बहुमाणिय°. ४ K °विसमवैर. ५ K बाहुबलि मेरु. ६ MBP पुष्पयंत°.

16. 4 a ग म ण वि यारै गमनपरिणत्या आकाशेन वा; b वा ए वातेन. 5 b सो जि भरतः; तेण बाहुबलिना. 14 पु ष्फ दं त पं ति हिं पुष्पाणीव दन्तपंक्तयः ताभिः.

## XVIII

णहु लंघिउ सुरगिरि चालियउ धीरें सायरु मवियउ ॥  
करडिंभु व बंमहु तणउं सुउ उच्चावि पुणु थवियउ ॥ ध्रुवकं ॥

1

णं कमलसरु हिमांहयकायउ  
जं ओहुंल्लियमुहु पहु दिट्टउ  
चैक्कवट्टि णियगोत्तहु सामिउ  
हा किं किज्जइ भुयबलु मेरउ  
महि पुण्णालि व केण ण भुत्ती  
रज्जहु कारणि पिउ मारिज्जइ  
जिह अलि गंधें गउ संघारहु  
भडसामंतमंतिकयभायउ  
तंडुलपसयहु कारणि राणा  
डज्जउ रज्जु जि दुर्खु गुरुक्कउ  
सुहणिहि भोयभूमि संपर्ययर

दवदंहुउ रुक्खु व विच्छायउ ।  
तं बलि भणइ हउं जि णिक्किट्टउ ।  
जेण मंहंत भाइ ओहामिउ । 5  
जं जायउ सुहिदुण्णयगारउ ।  
रज्जहु पडउ वज्जु समसुत्ती ।  
बंधवहुं मि विसु संचारिज्जइ ।  
तिह रजेण जीउ तंवारहु ।  
चित्तिजंतउ सव्वु परायउ । 10  
णरइ पडंति काइं अवियाणा ।  
जइ सुहु तो किं तापं मुक्कउ ।  
कहिं सुरतरु कहिं गय ते कुलयर ।

घत्ता—दुंल्लंघहु दुक्कियलंछणहो दूंसहदुक्खदुरंतहो ॥

भणु दाढापंजरि पडिउ णरु को उच्चरिउ कयंतहो ॥ १ ॥ 15

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

शशधरविम्बात्कान्ति तेजस्तपनाद्गभीरतामुदधेः ।  
इति गुणसमुच्चयेन प्रायो भरतः कृतो विधिना ॥

GK do not give it.

1. १ P उच्चाविवि. २ P हिमहय° but gloss हिमाहत. ३ P दवददु व. ४ B ओहुल्लिय महं.  
५ MBP महंत्तु. ६ P हा जं जायउ. ७ P बंधवाहु विसु. ८ B दुक्खगुरुक्कउ. ९ P संपयधर. १० B दुल्लंघिय-  
दुक्किय°. ११ MB दूंसही.

1. 2 करडिंभु हस्ते बाल इव; थ वियउ भूमौ मुक्तः. 4 b बलि बाहुबालिः. 5 b ओहामिउ  
अभिभूतः तिरस्कृतः. 6 b °दुण्णय° अविनयः. 9 b तंवारहु नरकम्.

## 2

कालभुयंगडु को वि ण चुक्कइ  
मइं पइ जेहा बहु वेहाविय  
एयहि अइअहिलासु ण गम्मइ  
पडिवण्णउं ण केम पालिज्जइ  
जं माणुसु धम्मेष ण भिज्जइ  
देव मज्जु खमभाउ करेज्जसु  
अप्पउ लच्छिविलासं रंजहि  
णहणिवडियणीलुप्पलविट्ठिहि  
तं णिसुणिवि भरहेसं बुद्धइ

सुयणत्तणु जि एक्कु पर थक्कइ ।  
पुहइइ पुहइपाल बोलाविय ।  
जणणि जणणु भायरु किह हम्मइ ।  
किह हियवउ कलुसें मइलिज्जइ ।  
सो णिकिट्ठु तेण किं किज्जइ । 5  
जं पडिकूलिउ तं म रुसेज्जसु ।  
लइ मँहि तुहुं जि णराहिव भुंजहि ।  
हउं पुणु सरणु जामि परमेट्ठिहि ।  
परिहवदूसिउ रज्जु ण रुद्धइ ।

घत्ता—अंतेउरसयणहं परियणहं णीसेसहं मि णियंतहं ॥ 10

हउं जित्तउ पइं तुहुं सइ खंविउं खम भूसणु गुणवंतइं ॥ २ ॥

## 3

जइ पइं णियमुपहिं अंदोलिउ  
तो किं चक्कुं रयणु मइं रक्खइ  
पइं जित्ती खमा वि खमभावे  
पइं जिह तेयवंतु ण दिवायरु  
पइं दुज्जसकलंकु पक्खालिउ  
पुरिसरयणु तुहुं जगि पक्कल्लउ  
को समत्थु उवसमु पडिवज्जइ  
पइं मुपवि तिहुयाणि को चंगउ

भूमंडलि तडप्ति अप्फालिउ ।  
पुणुं जीयंतु को वि किं पेक्खइ ।  
पइं ताँसिउ कँउसिउ सपयावे ।  
णउ गंभीरु होइ रयणायरु ।  
णाहिणरिदवंसु उज्जालिउ । 5  
जेण कयउ महु बलु वेयल्लउ ।  
जगि जसदक्क कासु किर बज्जइ ।  
अणुणु कवणु पच्चकलु अणंगउ ।

2. १ MBP णिकिउ काइं तेण किर किज्जइ, K णिकिट्ठु तेण काइं किर किज्जइ; but corrects it to सो णिकिट्ठु तेण किं किज्जइ. २ MBP खमिउ.

3. १ MBP महिमंडलि. २ MBP चक्करयणु. ३ MB पुणु वि जयंतु; PK पुणु वि जिंवंतु. ४ MB तोसिउ. ५ M पोउसिउ; B कोसिउ.

2. 2 a वे हा वि य वञ्चिताः; b बो ला वि य निष्कासिताः यापिताः. 5 a ण भिज्जइ न अनुरज्यते.

3. 3 a ख मा वि पृथिव्यपि; b क उ सि उ इन्द्रः. 6 b वे य ल्ल उ वैकल्यम्.

अणु कवणु जिणपयकयपेसणु

अणु कवणु रक्खियणिवसासणु ।

घत्ता—ससि सूरहो मंदरु मंदरहो इंदहु इंदु अणीयउ ॥

10

पर एकहु णंदाएविसुय तुह ण णिहालमि वीयउ ॥ ३ ॥

4

जं तुहुं दुव्वयणेहिं णिब्भच्छिउ  
जं सरवाणिएण णिरु सित्तउ  
तं एवहिं खंम करि महुं बंधव  
औउ जाहु उज्झाउरि पइसहि  
पट्टु णिबंधमि भालि तुहारइ  
एवहिं रज्जु करंतउ लज्जमि  
एवहिं इंदियछंदु विवज्जमि  
एवहिं कम्मणिबंधणं भंजमि

जं दिट्ठीइ सरोसु णियच्छिउ ।

जं जुज्झंतं पेह्लिवि धित्तउ ।

जिणवरतणय तिजगमणसंभव ।

अज्जु जि तुहुं सिंहासणि बइसहि ।

अक्ककित्ति जीवउ तुह केरइ । 5

एवहिं परमदिक्ख पडिवज्जमि ।

एवहिं पुणु ण पाउ समज्जमि ।

एवहिं जोएं प्राणं विसज्जमि ।

घत्ता—बंधव वणवासहु पट्टुविवि धरणिमोहरसभंतं ॥

मइं एवहिं दुज्जसभायणेण भायर काइं जियंतं ॥ ४ ॥

10

5

सज्जणकरुणं सज्जणु कंपइ  
जइयहुं हउं सिसुत्ति सहकीलित  
मज्जु वि तुज्जु वि कवणु पराहउ  
जे गय ते सयल वि मग्गिवि मिसु  
तेत्थु ण काइं वि दोसु तुहारउ  
जइ एवहिं धरित्ति ण समिच्छहि

तं णिसुणिवि भरहाणुउ जंपइ ।

तइयहुं पइं वि किं ण परिनोलिउ ।

मज्जु वि तुज्जु वि कवणु महाहउं ।

भावइ भोउ ताहं णावइ विसु ।

वंदणिज्जु तुहुं जगि गरुयारउ । 5

तां जं दिण्णी तहु जि पयच्छहि ।

4. १ MBP जं दुव्वयणेहिं. २ M महुं खम करि. ३ MBPK °णिबभणु. ४ MBP पाण.

5. १ MBP किं ण पइं मि. २ P adds after thus. तुहुं जि जेट्टु महु सामि महारउ. ३ MPK तो.

10 अणीयउ प्रतीन्द्रः, उपमां प्रापितो वा.

4. 7 a °छंदु °वशत्वम्.

5. 1 b भरहाणुउ भरतानुजो बाहुबलिः. 4 b भावईत्यादि—भोगस्तेषा विपमिव प्रतिभासते.



तहि अवसरि वयणेहि गिरोहिउ  
सुउ संताणि थवेवि महाबलि

मंतिहि भूमिणाहु संबोहिउ ।  
गउ केलासु परायउ भुयबलि ।

घत्ता—वणु जंतु मुयंतु णरिंदसिरि महि महंतु अहिमाणिउ ॥

साकेयहु राउ विसणमणु मंतिहि मैडुइ आणिउ ॥ ५ ॥

10

## 6

पत्तहि गिरिवरि बाहुबलीसैं  
णिट्टाणिट्टउ णट्टाणट्टउ  
अइदट्टेडुरुट्टपाविट्टहिं  
जो णउ दीसइ कुंठियेवायहिं  
धयणुग्गयगहीरजयकारैं  
रोसु तुज्जु रोसेण व णिग्गउ  
परं मेळिवि दोसुं धि दोसायरि  
तुह झाणग्गिभपण व णट्टउ  
परं तासिउ वड्डारियसंगउ  
कंदप्पहु वि दप्पु परं साडिउ  
तुहुं णिग्गंथु अणीहियगंथउ  
विज्जा णावइ परं जम्मंबुहि  
पम देउ गरु भत्तिइ वंदिवि  
णावइ भवतरुमूलुप्पाडणु

अइदूराउ पैणावियसीसैं ।  
दिट्टउ भट्टुदुट्टकम्मट्टउ ।  
हेट्टाकोट्टुगयहिं वप्पिट्टहिं ।  
मंसासिहिं मज्जवहिं सवायहिं ।  
सो जिणु संथुउ तेण कुमारैं । 5  
राउ ण याणहुं संझाहि लग्गउ ।  
थियउ कलंकमिसेण व ससहरि ।  
मोडु मोहणोसंहिहिं पइट्टउ ।  
लोडु वि सव्वेलोहभावं गउ ।  
कालहु उप्परि कालु भमाडिउ । 10  
तवणियंमं थउ दावियपंथउ ।  
उलंघिउ तुहुं रवि हरि हरु विहि ।  
मिच्छाडुक्किउ गैरहवि णिविवि ।  
करिवि सिसिरवरि चिहुडुप्पाडणु ।

४ MBP मंडई.

6. १ MBP पणामिय°, २ G कुट्टिय°, ३ P दोसु दोसायरि. ४ MP मोहणोसहहिं. ५ MB सव्वु लोह°. ६ MBT °मत्तउ; T records a p तेम णिमत्तउ इति पाठे ज्ञानावरणविनाशकः. ७ MB गरहेवि; P गिरिहिं वि. ८ MBP ससिरि वरचिहुडु°.

9 अहिमाणिउ अभिमानवान्. 10 मडुइ बलात्कारेण.

6. 2 a णिट्टाणिट्टउ परमानुष्ठाने स्थितः, णट्टाणट्टउ नष्टानर्थः. 3 b हेट्टाकोट्टु° अधीमुखम्. 4 a कुंठियेवायहिं प्रमाणबाधितवचने, b मज्जवहिं मद्यपै, सवायहिं श्रपाकैश्चाण्डालैः. 9 b लोहेत्यादि-लोभोऽपि सर्वकोहानि सुवर्णादीनि तन्मयत्व गतः. 11 b तवणियंमं थउ तपसि नियमे च स्थितः. 14 b ससिर-वरि स्वमस्तके.

घत्ता—सर पंच वि घल्लिय वम्महेण धणु रइ विण्णि वि मुक्कइं ॥ 16  
पडिवण्णइं पंच महव्वयइं पयजुयपाडियसक्कइं ॥ ६ ॥

7

णत्थि उवाणह्णउ सयणासणु	मुक्कउं छत्तु असेसु विहूसणु ।
विसहइ दंसमसयसीउण्हइं	सुहजणदुव्वयणाइं सयण्हइं ।
चरिय णिसेज्ज सेज्ज रइ अरइ वि	वहबंधणु गयजण वणवसइ वि ।
सीह सरह तणु लग्ग ण वारइ	मुणि जच्चिण्हि विच्चु ण पेइ ।
जल्लमलेहिं मि लिस्सउ अच्छइ	वउसक्कारु किं पि ण समिच्छइ । 6
असुहसुहेसु समत्तणु मण्णइ	विविहातंक रोय अवगण्णइ ।
लोयकण्हिं ण मुज्जइ दोहिं मि	सक्कारेहिं पुरक्कारेहिं मि ।
अहंसैण अलाहु रिसिसारउ	पण्णपरीसह सहइ भडारउ ।
वयसमिदिदियरंभणु लोउ वि	अञ्चेलकावासयजोउ वि ।
पहाणविवज्जणु महिसंसोवणु	दंतौधोवणु कयठिदिभोयणु ; 10

घत्ता—वणि णिवसइ दुक्खसयइं सहइ ण चवइ थोवउ जैवइ ॥  
परमिस्सि करइ णिह वि जिणइ मणु वेरग्गं भावइ ॥ ७ ॥

8

पम चरंतु चरिसु सुदुद्धरु	महि विहरंतु पइट्टु वणंतरु ।
तहिं थिउ पक्कु वरिसु लंबियकरु	वेल्लीवलयहिं वेढिउं णं तरु ।
जासु अंगि पयघट्टियसिंगहं	कंडुविणोउ सरइ सारंगहं ।
जासु वच्चि फणिमणि पविराइउ	बहुसो विसहरेहिं हाराइउ ।

7. १ MBP सतण्हइं; T सयण्हइ. २ B जच्चिहे. ३ MBP अहंसणु. ४ M अञ्चेलक आवासयजोइ वि; B अञ्चेलक पवासयजोउ वि. ५ MP दताधोयणु; B दंताभोयणु.

8. १ BP सुदुद्धरु. २ MBP णं वेढिउ.

7. 1 a उवा ण हाउ उपानहौ. 2 b सयण्हइं सतृण्णानि. 4 जच्चिण्हि याचमायाम्. 5 b वउ-सक्कारु शरीरसंस्कारः. 8 b पण्ण<sup>०</sup> प्रज्ञा. 9 a लोउ केशलोचः; b<sup>०</sup> आ वा सय<sup>०</sup> आवश्यकानि. 10 a<sup>०</sup> संसो-वणु संस्वपनं शयनम्.

8. 4 b हाराइउ हार इवाचरितम्.

जासु गच्छु कयमयजलणहवणउं  
चरणगुट्टयणाक्खि णिहिज्जइ  
देहि चडंति जासु सुरघरिणिहिं  
तणुकंतीइ जासु हयछाया  
जासु रत्तकंदीसिइ वट्टइ

जायउ करिहिं करडकंडुयणउं । 5  
सरहलु वणयरणरहिं णिसिज्जइ ।  
उल्लूरिय लय णहयरतरुणिहिं ।  
हंस वि हरियवण्ण संजाया ।  
पण्हिय सूयर घोणैइ घट्टैइ ।

घत्ता—आसण्णइं जासु मुणीसरहो तवपहावउवसंतइं ॥ 10  
करि केसरि णउलइं फणिलइं सह हिंडंति रमतइं ॥ ८ ॥

9

एकहिं दियहि पउत्तु सपत्तिइ  
धुणइ णराहिउ पयपडियल्लउ  
पइं कामं अकामु पारड्डउ  
पइं बाले अवालगइ जोइय  
पइं णियभुयबलेण हउं जोक्खिउ  
पइं महु दिण्णी पुहइ संहत्थे  
परउवयैरि धीर दमवंता  
पइं जेहा जगगुरुणा जेहा  
अत्थि रसणफंसणरसलालस  
रोसवंत हियपर विस्संभर

तासु भरहु गउ वंदणहसिइ ।  
पइं मुएवि जगि को वि ण भल्लउ ।  
पइं रापं अराउ कउ णिद्धउ ।  
पइं अपरेण वि परि मइ ढोइय ।  
पइं जि पुणु वि कारुणो रक्खिउ । 5  
तुहुं परमेसैरु जगि परमत्थे ।  
महि मुएवि णियमेणुवसंता ।  
एक्कु दोण्णि जइ तिहुयणि तेहा ।  
अम्हारिस घरि घरि जि कुमाणुस ।  
पावबहुल परवस अप्पंभर । 10

घत्ता—हा मइं यहुकम्मपरव्वसेण विसयबलाइं ण महियइं ॥

एक्कहो णियजीवहु कारणिण जीवसयाइं वि वहियइं ॥ ९ ॥

३ MBPK कंदासइ. ४ MB घोणं. P घोणिहि. ५ B घुट्टइ

9. १ BP °भत्तिइ. २ B सरे मइ. ३ M समत्थे, but records a p सहत्थे. ४ MB परमेसर.  
५ MBP °उवयार°.

6 b सरहलु शरफलम्, णि सि ज्ज इ तीक्ष्णाक्रियते. 9 a रत्त कंदासिहि रत्तकन्दाशया; b पण्हिय पा णिः;  
घोण इ मुखामेण.

9. 1 a सपत्तिइ स्वपदानिना. 2 a °पडियल्लउ पतितः. 3 a अकामु वैराग्यम्; b अराउ वीत-  
रागता, णिद्धउ लोहल-पुष्टो वा. 4 a अवाल गइ विद्वद्रतिर्भोगतिः; b परि अर्हत्सिद्धस्वरूपे परमात्मनि. 11  
महियइ मथितानि.

## 10

इदचंदचंदारयवंदे  
एकहु जीवहु गुण मणि भाविय  
तिणिण वि सल्लहं हियउद्धरियइं  
तिणिण वि डंभं मुक्क संखेवे  
चउगइकम्मणिवंधणरभिर्यउ  
पंचमहव्वयाइं अविहंडइ  
पंचिदियइं कयाइं णिरत्थइं  
ल्लुवावसियउज्जमु सँविसेसिउ  
छह लेसहं परिणामु वइट्टइं  
सत्त भयाइं हयाइं गहीरें  
अट्ट वि मय णिट्टविय अट्टुं  
णवविहु बंभचेरु परिपालिउ

तहिं अवसरि बाहुबलिमुणिंदें ।  
राय रोस दोणिण वि उट्टाविय ।  
तिणिण वि रयणइं लहु संभवियइं ।  
गारव तिणिण विवज्जिय देवे ।  
सण्णउ चत्तारि वि उवसमियउ । 5  
पंचासवदारइं णिच्छडुइ ।  
पंच वि णाणावरणइं गंधइं ।  
छज्जीवहं दयभाउ पयासिउ ।  
छ वि दव्वइं पञ्चक्खइं दिट्टइं ।  
सत्त वि तच्चइं णायइं धीरें । 10  
अट्ट सिद्धगुण भरिय वरिट्टुं ।  
णवपयत्थपरिमाणु णिहालिउ ।

घत्ता—इसंविहु जिणधम्मु चिर्याणियउ पयारह हयजडिमउ ॥

अँवियारहं धीरहं सावयहं बारह भिक्खुहुं पडिमउ ॥ १० ॥

## 11

तेरह किरियाठाणइं मुणियइं  
चोइह गंधमला वि समुज्झिय  
पण्णारह पमाय मेल्लेंतें  
सोलहविह कसाय पसमंतें

तेरहभेय चरित्तइं गणियइं ।  
चोइह भूयगाम सहं वुज्झिय ।  
पुण्णपावभूमिउ जाणंतें ।  
सोलहविहवैयणेषु रमंतें ।

10. १ BP राय दोस. २ MBP समरियइ; K संभवियइं but corrects it to संभरियइं. ३ MBP वेय. ४ P रसियउ. ५ BP णिच्छंडइ. ६ B छावासउ. ७ PK सुविसेसिउ. ८ B उवट्टइ. ९ MBP परिणामु. १० MB दहविहु. ११ MP वियारियउ. १२ M अवि बारह, but records a p अवियारहं.

11. १ B चउदह. २ MBP ०वयणें सुमरंतें.

10. 1 a ०वंदें वन्धेन. 7 b गंध इं परिग्रहरूपाणि. 9 a व इ ट्ट इं उपदिष्टानि सर्वज्ञेन.

11. 4 a सो ल ह वि ह क सा य कषायाः क्रोधमानमायालोभाः प्रत्येकमनन्तानुबन्धिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वरुनविकल्पाः सन्तः षोडशविधा भवन्ति.

अवि य असंजमोह सत्तारह	जाणिवि संपराय अट्टारह ।	5
एउणवीस वि णाहज्जयणहं	वीसविहहं असमाहीठाणहं ।	
एकवीस सबल वि णिरु णीसहं	सहिवि दुवीस दुसज्ज परीसह ।	
तेवीस वि सुत्तयडहं सुत्तहं	चउवीस वि जिणतित्थहं हौतहं ।	
पंचवीस भावणउ धरंतें	छब्बीस वि पुहवीउ णियंतें ।	
सत्तवीस जइगुण सुमरंतें ।		10
अट्टवीस णियच्चित्ति समप्पिवि	पवैराथारकप्प पवियप्पिवि ।	
एउणतीस वि दुक्कियसुत्तहं	तीस मोहठाणहं बलवंतहं ।	
एकतीस मलवाय धुणंतें	जिणुवैएस बत्तीस मुणंतें ।	

घत्ता—थिरु सुक्कण्णु आऊरियउ घाहचउक्कु पणट्टु ॥

उप्पाइउ केवलु मुणिवरेण लोयालोउ वि दिट्टु ॥ ११ ॥ 15

## 12

तां सुर चल्लिय समउ सुरिंदें	तारायणु चल्लिउ सहुं चंदें ।	
णरवइ धाइय समउ णरिंदें	उरय समागय सहुं धरणिंदें ।	
तेहिं कसायविसायवियारउ	संथुउ सिरिवाहुबलि भडारउ ।	
रायचक्कु पइं तणु परिगणियउं	कम्मचक्कु ज्ञाणाणलि हुणियउं ।	
देवचक्कु तुह अग्गाइ धावइ	चक्कु वि चक्किहि रैमणु ण भावइ ।	5
पइं दिट्टहं रिसि <sup>३</sup> राउ ण वडुइ	पइं मुएवि को णरयहु कडुइ ।	
जीवरासि णिर्म्मरु विहडंती	विहुरंभोहिविवरि णिवंडंती ।	
भोयासत्तएण पुहईसरु	दिक्ख लेवि णिज्जैउ वम्मीसरु ।	

३ P दुसज्ज दुवीस. ४ MBP संतहं. ५ P सुधरंतें. ६ MBP add after this: पुणु वि तेण मुणिणा भयवंतें. ७ P एम ण यारकप्प. ८ MBP जिणउवएस. ९ P लोयालय.

12. १ MBP read the first two lines as: ता सुर चल्लिय समउ सुरिंदें, उरय समागय सहुं धरणिंदें; णरवइ धाइय समउ णरिंदें, तारायणु चल्लिउ सहुं चंदें. २ MB वयणु; P रयणु; T रमणु रमणीयम्. ३ MBP सिरिराउ. ४ MBP णिरु भवि हिंडंती. ५ MBK विवडंती. ६ P सुहईसरु. ७ BPK णिज्जिउ.

6 a एउ ण वी स वि णा ह ज्ज य ण हं उक्कोड-णार्गे-कुम्म-अडय-रोहिणि<sup>५</sup>-सेस-रुवै-संघादे । मादंणिमल्लि-चंदिमी-तावईय-सिकी-तडेया-किजे<sup>६</sup> । सुंउकेय-अवैरकके-णदिफलं-उदगंनाह-( मडक )-पुंवरिगेवैणि इत्ये-कोनविंशतिर्नाहज्जयणाहं.

12. 5 b र म णु र म णी य म्.

को किर र्भणइ तुज्ज समाणउ  
पम थुणंतै बुद्धिसमिद्धे

तुहुं जि मुंडकेवलिहिं पहाणउ ।  
इवें वेउब्बियउ खणद्धे ।

10

घत्ता—पेउमासणु चवलु चमरजुयलु एकु जि छतु मणोहरु ॥  
दीसइ पण्हुल्लिउ पंहुउउ णं तवसरि इंदीवरु ॥ १२ ॥

13

पयणियजणमरणविदुमरइ  
देंतु देसजइजइवरचरियइ  
पायपोमपाडियसंकंदणु  
गैउ केलासहु पावपरंमुहु  
भासीणउ पसणु पसमियकलि  
भायरणाणेलंभसंतुहुउ  
उज्जाणयरिहि भरहु पइहुउ  
वज्जंतहिं जयवज्जाणिहायहिं  
वरिसियमेइणिरिद्धिविहोयहिं  
मंडलियहिं मंडिर्यणियवक्खहिं

संसमंतु भाउग्गयतिमिरइं ।  
संबोहंतु भव्वपुंडरियइं ।  
भूमि भमंतु सुणंदाणंदणु ।  
समंवसरणि णियतायहु संमुहु ।  
देउ समाहि बोहि महु भुयबलि । 5  
एत्तहि णरणाारीयणदिहुउ ।  
उरपमाणि हरिषीढि बइहुउ ।  
गाइयणारयतुंभुरुगेयहिं ।  
उव्वसिरंभाणट्टविणोयहिं ।  
अहिसिंचिउ मंगलघडलक्खहिं । 10

घत्ता—चउसट्टि सररीइ लक्खणइं बहुवज्जणइं अणिदहो ॥  
जं णिहिलहं भारहणरवइहिं तं बलु भरहणरिंदहो ॥ १३ ॥

14

वण्णु तत्ततवणीयपहायरु  
वज्जरिसहणारायणिबंधंउ

सासणु जासु चकलच्छीहरु ।  
समचउरंसु ठाणु रुइरिद्धउ ।

८ K भण्णउं and gloss भणामि. ९ MBP हरियासणु धवलु.

13. १ MBPT सकंदणु. २ MBP णाणलंभि. ३ MBP<sup>०</sup>णारीयणि. ४ MBP खंडियसविक्खहिं.

५ M बहुवज्जणइं; BP बहुविजणइं. ६ M<sup>०</sup>णरवरहिं.

14. १ MBP चक्कु. २ MBP<sup>०</sup>णिबद्धउ.

13. 1 a विदुम<sup>०</sup> भयम्; b सेसमंतु उपशमयन्. 3 a सेकंदणु इन्द्रः. 8 a णिहायहिं समूहैः.  
9 a<sup>०</sup>विहोयहिं विमोगैः. 11 लक्खणइं शंखकुलिशादीनि.

14. 1 b चकलच्छी हरु चकशोभाघरम्.

पुण्णपहावें अतुलु वि लद्धउ  
दोण्णि तीस सहसाइं सुवेसहं  
णवइ णव जि दोणामुहसहसइं  
खेडहं सोलह ताइ पउत्तइं  
कलवकणिसभरभारियसीमहुं  
सत्तसयाइं कुकुच्छिणिवासहं  
अट्टवीस वणदुग्गाइं रिद्धइं  
सहसट्टारह मेच्छणरेसहं

छक्कंहु वि महिमंडलु सिद्धउ ।  
दोसत्तरि पुरवरहं पयासहं ।  
पट्टेणाहं अड्ढाल सहरिसइं । 5  
चोइह संवाहैणहं णिरुत्तइं ।  
छण्णवइ जि कोडिउ वरगामहुं ।  
पंथं तहं मि धरियपरिहासहं ।  
छण्णणंतरदीवइं सिद्धइं ।  
वत्तीस जि मंडलियमहीसहं । 10

घत्ता—देवीहिं दुतीस वत्तीस पुणु मेच्छणराहिवदिण्हं ॥

वत्तीससहस अंबेरुद्धियहं णिरु णिरुवमलायण्हं ॥ १४ ॥

## 15

घरि भावाणुविभावपयासइं  
चउरासीलक्खेइं मायंगहं  
तईकोडिउ किंकरहं अहंगहं  
चुद्धिहिं कोडि रसायणरसियहं  
करिसणि णंगैरकोडि पयट्टइ  
कालणामु णिहि देइ विचित्तइं  
णिवहु महाकालु वि संजोयइ  
सांलिवीहिपमुहइं बहुधण्णइं  
णेसणु वि सयणासणभवणइं

णडहं णंडंति दुतीससहासइं ।  
तेत्तीयं जि रहाहं सैरहंगहं ।  
अट्टारह भणियाउ तुरंगहं ।  
सैट्टइं तिण्णि सयइं भाणसियहं ।  
फलभारेण धरिसि विसट्टइ । 5  
वीणावेणुपडहवाइत्तइं ।  
पंहुं देइ णाणाविहवण्णइं ।  
असिमसिकिसिउवयरणइं ढोयइ ।  
वत्थइं पोमु पिणु आहरणैइं ।

३ MBP छक्खड. ४ MP पट्टणाइं ७ ५ MBP संवाहणइं. ६ MBP पच्चंतहं. ७ M मेळ°. ८ P °सहासहं.  
९ M मेळ°. १० MBP °कण्ह. ११ MP अवरुद्धियहं.

15. १ M णट्ठानिउ, B णट्ठानिहु. २ MBP लक्खइं. ३ MBP तेत्तियइं. ४ MBP सारंगहं. ५  
M तईयकोडिउ ६ B सड्डइ. ७ MBP लगल°. ८ M धरि°. ९ MBP omit this foot. १० MBP  
omit this foot. ११ MBP add after this. सव्वइं धण्णइं सव्वरमोहइं, पंहु वि णिहि वि देइ अविरोहइं.

8 a कु कु च्छि णि वा स हं रत्तोत्पत्तिस्थानानाम्.

15. 4 b भा ण सि य ह रसवतीकारपुराणाम्. 5 ७ विसट्टइ स्फुटति. 9 a णे सणु नैसपों निधिः.

अत्थहं सत्थहं मीणवु दैतउ  
 सव्वरयणणिहि सव्वहं रयणहं  
 संखु ण थाइ सुवण्णु बहंतउ । 10  
 देइ सिरीवहु उरयलि णयणहं ।  
 घत्ता—असि चक्कु दंडु छत्तु वि धवलु पहरणसालहि जायहं ॥  
 कागणि मणि चम्मु वि सिरिभेवणे सहं णरणाहहु आयहं ॥ १५ ॥

16

रुप्पयमहिहरि सोहियवयणहं  
 पच्छइ पुणु संपत्तइ णरवइ  
 चत्तारि वि ह्यइं साकेयइ  
 णव णिहि ते वि तहिं जि संभूया  
 णिमेव तणुरक्खालुद्धहं  
 विविहइं घरइं कणयघरणियलइं  
 विविहइं छत्तइं मुत्तादामइं  
 विविहइं वत्थइं कयवउसोक्खइं  
 को सों बंभु कासु सुकइत्तणु  
 णारी रयणत्तणविक्खायइ  
 रुवें सोहमं लायणं  
 अब्भुयभूयइ जणमणमहइ  
 संभउ हरिकरिणारीरयणहं ।  
 घरवइ थवइ पुरोहिउ बलवइ ।  
 घरसिरधयवारियरवितेयइ ।  
 संपाइयइच्छियहलरूया ।  
 सोलहसहस सुरहं गणवद्धहं । 5  
 विविहासणइं विविहसयणयलइं ।  
 विविहइं आहरणाइं सकामेइं ।  
 विविहइं सरसइं भोयणभक्खइं ।  
 को वण्णइ चक्कवइपहुत्तणु ।  
 खेयररायवंससंजायइ । 10  
 णेहें रइयसुरयणेउणं ।  
 सुहं भुंजंतउ समउ सुहइइ ।

घत्ता—सिरिरेमणीवरघणथणजुर्यलसिहरुप्पेलियउरयलु ॥

थियउ ज्जहि भरहणराहिवइ पुर्णदंततेउज्जलु ॥ १६ ॥

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए

महाभवभरहाणुमणिणए महाकव्वे भरहविलासवण्णणं णाम

अद्वारहमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १८ ॥

॥ संधि ॥ १८ ॥

१२ MBP माणउ. १३ M °भुवणे.

16. १ MB घर. २ MBP विविहइं घरइं. ३ P मौलिय°. ४ MP सकामइ. ५ MB कय-  
 उवसोक्खइं. ६ M सह. ७ MBP रयणत्तणि. ८ M समुद्धइं. ९ MB °रवणी°. १० M °जुयल. ११ MB  
 पुप्फयंत°; P पुप्फयंतु.

13 सि रि भ व णे भाण्डागारे.

16. 2 b घरवइ भाण्डागारिकः, थवइ स्थपतिः. 7 b सका म इं समीप्सितानि चित्तानुरागजनकानि  
 वा. 8 a क य व उ सो क्ख इं कृतवपु.सौख्यानि.



## XIX

चित्तइ भरहेसरु महिपरमेसरु दविणें किं किर किज्जइ ॥  
जइ गियमियचित्तहं पउं सुपत्तहं दियहि दियहि णउ दिज्जइ ॥ धुवकं ॥

1

एकहिं दिणि पर्यणावियणिवइ	वसुंहाहिउ गियमणि चित्तवइ ।	
किं छज्जइ विणु चंदें गयणु	किं छज्जइ छिण्णैणासु वयणु ।	
किं छज्जइ णाणु गिरुवसमउं	किं छज्जइ रज्जु अँविक्रमउं ।	5
किं छज्जइ तर्णयविरहिउ कुलु	किं छज्जइ पिक्कंउं कडुयफलु ।	
किं छज्जइ भीरुहि गज्जियउं	किं छज्जइ अडयणलज्जियउं ।	
किं छज्जइ मयडहु भूसणउं	किं छज्जइ अँविणियरूसणउं ।	
किं छज्जइ हिमहयकमलवणु	किं छज्जइ सलिलविरहिउ घणु ।	
किं छज्जइ परवसजीवे जणु	किं छज्जइ तिट्ठालुयदाविणु ।	10

घत्ता—जं दिण्णु ण पत्तहु गुणगणवंतहु पइउं बुहयणु पेच्छइ ॥

मणयइ मलबंधणु तं अद्वारह भाणयिणु गच्छइ ॥ १ ॥  
बुद्धिहिं कोट्टि रसायणरसियहं सावउं धणु मुंयहो पउ वि ण गच्छइ ॥

2

णउ ण्हाणु विलेवणु परिहणउं	तृयविंदु ण माणित घणयणउं ।
जवणालंतवसित्थइं खरइं	ताइं वि सीसकभारधरइं ।
एँसोरसु दोणि कुलत्थकणं	अच्छउ कंजितु धाडिवि सैयण ।

MBP givo, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

इयामरुचि नयनसुभग लावण्यप्रायमङ्गमादाय ।

भरतच्छलेन सप्रति काम' कामाकृतिमुपेतः ॥ १ ॥

1. १ MBP °णामिय°. २ MBP वसुहाहिउ. ३ M किं ण तासु. ४ MBP णिविक्रमउं. ५ MBP तणएं रहिउ. ६ MBP कडुयउ पिक्कफलु. ७ MBP विणियरूसणउं. ८ MBP सलिलें रहिउ. ९ MBPK °जीवि. १० B सचियधणु. ११ P मुयहहु पउ वि ण गच्छइ.

2. १ MBP तियविंदु. २ MB जवणालवंत. ३ M एँसोरसु. ४ MBP °कणु. ५ MBP सयणु.

1. 7 b अडयण° पुंश्रली. 12 पउ वि पदमात्तमपि.

2. 1 b तृयविंदु छावृन्दम्. 2 b सीसक° कृकसं तुषम्. 3 a एँसीरसु अलसीतैलम्.

असरालु लोहघणु धरिवि मणे  
 रिणु मग्गमाण हिंडंति पुरे  
 णिव्वरयुरु पूयफलु खंति किह  
 पंत्तिदियंत्यु सुहुं वंचियउं  
 जरवीरणियासण फरुससिर  
 ण वियाणइ दुक्कंती णियइ  
 बंधइ मेल्लइ पुणु पुणु भवइ  
 सा सेंट्टि ण पूरइ किह भरमि  
 लोहिदु दुदु पाविदु चलु

जेवंति दीर्णं गरुण वि छणे ।  
 जणरंजणु पत्तु करेवि करे । 5  
 एक्रेण जि रवि अंत्यवइ जिह ।  
 लुद्धहिं अप्पाणउ वंचियउ ।  
 दालिहिय सघण वि किविण णर ।  
 णियहत्थहु हत्थु ण पत्तियइ ।  
 वसु गुज्झपवेसहिं पुणु ठवइ । 10  
 मणि जूरइ काइं दइव करमि ।  
 पाहुणयहु उत्तरु देइ खलु ।

घत्ता—गेहिणि गय गामहो इच्छियकामहो मीणु णं भल्लिइ भिज्जइ ॥

मज्झ वि दुक्खइ सिरु तुहुं आयउ घरु भणु एवहिं किं किज्जइ ॥ २ ॥

## 3

किं किज्जइ थेरें कामुएण  
 कुल्लपुत्तएण किं णित्तवेण  
 अवि विज्जाहरवरकिंणरेण  
 धरणियलरंधपैडिपूरएण  
 सा राई जा ससिविप्फुरिय  
 सा विज्जा जा सर्यरु वि णियइ  
 ते बुह जे बुहहं ण मच्छरिय

किं सत्थे पावपुरिससुएण ।  
 समएण वि किं किर णित्तवेण ।  
 णिव्विणएं समएं किं णरेण ।  
 किं लुद्धविविणपम्भारएण ।  
 सा कंता जा हियवइ भेरिय । 5  
 तं रज्जु जम्मि बुहयणु जियइ ।  
 ते मित्त णं जे विहरंतरिय ।

६ P हीण. ७ M णिव्वरु पूयफलु; BP णिव्वरु पूयफलु. ८ MP एक्रेण वि; B पक्रेण वि. ९ MBP अत्थमइ. १० MBP 'दियत्य' ११ MB गुज्झपएमहिं परिठवइ; P गुज्झपएहिं परिठवइ. १२ M सिट्ट. १३ MBP महु मणु भल्लिइ.

3. १ MBP पावपसंसिएण. २ MBPK कुल्लउत्तएण. ३ MBP परिपूरएण. ४ B रयणी. ५ B हरिय. ६ MBP सपरु. ७ M वहहिं ण मउच्छरिय; BP बुहहिं ण मच्छरिय. ८ P जे वि.

4 a असरालु बहुलम्; b छणे पर्वणि महोत्सवे दीपोत्सवे वा. 6 a णिव्वरयुरु निर्व्वयतरं जीर्णमित्यर्थः. 8 a णियासण अघोवज्जम्. 10 b गुज्झपवेसहिं गुह्यप्रदेशप्रवेशैः. 11 a सट्टि ण पूरइ वट्ठिर्न पूर्यते.

3. 1 b सत्थे शास्त्रेण; २ सुएण श्रुतेन. 2 a णित्तवेण निज्जपेण निर्लज्जेन व्रतारहितेन वा; b समएण सम्यक्त्वेन; णित्तवेण तपोरहितेन. 3 b समएं समदेन. 5 a राई रात्तिः. 6 a सयरु वि णियइ सकलमपि पश्यति. 7 b विहरंतरिय दुःखे अन्तरिताः.

तं धणु जं भुत्तउं दिणि जि दिणि जं पुणरवि दिण्णउं विहलयाणि ।

घत्ता—सा सिरि जा गुणणय गुण ते जे गय गुंणिहिं चित्तु हयदुरियउ ॥

गुंणि ते हउं मण्णमि पुणु पुणु वण्णमि जेहिं दीणु उद्धरियउ ॥ ३ ॥ 10

## 4

इय चित्तिवि रापं दविणगइ

ते आइय संवियधम्मधण

तर्गुणपरिक्खसुपयासिरयं

तरुपल्लवपिहियं पंगणयं

चप्पंति ण ते विरया गिहिणो

कय जेहिं तसंतहुं तसहुं दय

णादिण्णउं काहिं वि समिच्छियउं

घरसंगपमाणु जेहिं गहिउ

दिसिविदिसागमैणमाणकरणु

विरमणु अणत्थदंडासियउं

हक्काराविय णाणा णिवइ ।

जे जोयकिरणगणसुद्धमण ।

सज्जीयवीयणिसंकुरयं ।

णं वणसिरिदिण्णालिगणयं ।

परिपालियसावयवयविहिणो । 5

परंताविरि अलियवायविरयं ।

णउ अण्णु कलत्तु णियच्छियउं ।

रयणीभोयणविरईसहिउ ।

भोगोवभोर्यसंखाधरणु ।

भावियउं जेहिं जिणभासियउं । 10

घत्ता—सामाइउं पोसहु अतिहिपरिग्गाहु कामकोहपरिहरणें ॥

किउ जेहिं पसैत्थहिं पवरघरत्थहिं सहुं सण्णासनमरणें ॥ ४ ॥

## 5

ते भरहें विण्ण परिट्टविय

उवधीयहु केरउ चिंधधरु

कर मउलिवि सइं सिरिण णविय ।

दंसणहरि वल्लिउ पक्कु सरु ।

१ MBP गुणहिं १० M हउ गुण ते मण्णमि, B गुण हउं ते मण्णमि. P गुणि हउ ते मण्णमि.

4. १ MB ते गुण°. २ MBP परताविरि°; K °ताविरि but corrects it to ताविरि. ३ MP add after this: परधणु परवत्थु दुगुच्छियउ. ४ MBP add after this: दिण्णउ णियजोगु (P °जोगु) पडिच्छियउ, कुलवतु विवाहिउ वाडियउ. ५ B °गमणकरणु. ६ MBP °भोग°. ७ MBP समत्थहिं.

8 b विहल° दु खितः. 9 गु णण य गुणेण नता.

4. 2 b °जोय° चन्द्र. 3 b °णित्त कुरय निर्गताङ्कुरम्. 6 a त सं त हुं वस्तानाम्; त स हुं त्रसजीवानाम्.

5. 2 a उ व वी य हु कार्पांसूत्रस्य, यज्ञोपवीतस्येत्यर्थः.

धयवंति णिरूविय दोणिण सर  
पोसहवंतइ चत्तारि सर  
अणिसामोयणि उंडुमाण सर  
आरंभविवज्जिइ अट्ट सर  
अणुमोयणमुक्कइ दह जि सर  
उद्दिट्टचायकारिहि विहिय  
तंबु बंभ जेण घोसंति जप

सामाइयड्ढि पुणु तिण्णि सर ।  
सच्चित्तविरत्तइ पंच सर ।  
दढबंभचेरंधरि सत्त सर । 5  
अपरिग्गाहि कय णवसुत्त सर ।  
एयारह सर हयमयणसर ।  
ए दियवर रापं सुहुं णिहियं ।  
बंभणकुत्तु संठिउ तेण वप ।

घत्ता—चिरु सव्वु जि माणुसु पुणु णीईवसु रिसहें खच्चु पवेंत्तिउ ॥ 10  
जिणपुज्जायारउ धम्मपियारउ भरहेण वि कउ सोत्तिउ ॥ ५ ॥

6

घणि वाणिज्जारउ जाणियउं  
सो सोत्तिउ जो जिणवरु महइ  
सो सोत्तिउ जो ण दुट्टु भणइ  
सो सोत्तिउ जो हियैयण सुइ  
सो सोत्तिउ जो णे मासु गसइ  
सो सोत्तिउ जो जणु पहि थवइ  
सो सोत्तिउ जो संतहुं णवइ  
सो सोत्तिउ जो ण मज्जु पियइ  
सो सोत्तिउ जो जिणदेसियउ

किसियरु हलधारउ भाणियउ ।  
सो सोत्तिउ जो सुंतच्चु कहइ ।  
सो सोत्तिउ जो णउं पसु हणइ ।  
सो सोत्तिउ जो परंमत्थरुइ ।  
सो सोत्तिउ जो ण सुयणि भसइ । 5  
सो सोत्तिउ जो सुतवें तवइ ।  
सो सोत्तिउ जो ण मिच्छु चवइ ।  
सो सोत्तिउ जो वारइ कुगइ ।  
पण्णासतिकिरियहिं भूसियउ ।

5. १ MB उदुमाण. २ P °चेरु धरि. ३ MBP संणिहिय. ४ MBP तउ बभु. ५ MBP पवत्ति-  
यउ. ६ MBPK धम्मपियारउ.

6. १ M सुतच्च. २ P पसु णउ. ३ MBP हियवयणु सुणइ. ४ M परमत्थ सुणइ, P परमत्थ  
सुणइ. ५ B मासु ण.

9 a तडु बंभ तपो द्वादशविधं व्रतानुष्ठानं वा ब्रह्म परमात्मस्वरूपम्; घो सं ति प्रतिपादयन्ति; b व ए व्रते पदे वा.

6. 9 b पण्णा स ति कि रि य हिं त्रिपञ्चाशता क्रियाभिः, ताश्च सम्यक्त्वमेकम्; अणुव्रतानि पञ्च; गुण-  
व्रतानि त्रीणि; शिक्षाव्रतानि चत्वारि; अनस्तमित-सयम-जिनपूजा-ध्यानानि चत्वारि; चत्वारि दानानि; षड्विधं  
ब्राह्मं तपः; षड्विधं प्रायश्चित्तम्; चतुर्विधो विनयः; नवविधं वैयानृत्यम्; पञ्चविधः स्वाध्यायः; द्विविधो व्युत्सर्गः;  
इति त्रिपञ्चाशत् क्रियाः.

घत्ता—जो तिलकप्पासहं द्बवविसेसहं हुणिवि देव गह पीणह ॥ 10

पसु जीव ण मारइ मारय वारइ परु अप्पु वि समु जाणह ॥ ६ ॥

## 7

सो सोत्तिउ जाणसु एक्कु जिह  
वण्णासमकोडिचडावियहं  
दिण्णाहं ताहं सुद्धासयहं  
दिण्णाहं ताहं परतीरयहं  
दिण्णाहं ताहं मणिराइयहं  
दिण्णाहं ताहं मणमोहणहं  
दिण्णाहं ताहं देसंतरहं  
दिण्णाहं ताहं जियससहरहं  
दिण्णाहं ताहं करभरधरहं  
आरामगामसीमहं सरहं

लक्खाहं दिएसहं तेण तिह ।  
गुणगणणाभेयं भावियहं ।  
भूसेप्पिणु वरकण्णासयहं ।  
सियसुहुमहं सिचयहं णीरियहं ।  
कडिसुत्तकडयमउडाइयहं । 5  
घडपूरणदुद्धहं गोहणहं ।  
हयगयरहच्छहं पंडुरहं ।  
धणकणभरियहं विविहहं घरहं ।  
सासणलिहियग्गहारपुरहं ।  
दिण्णाहं ताहं णयरायरहं । 10

घत्ता—महि कसणरवण्णी धवलि वि दिण्णी विप्पहं जिणतणुजायं ॥

तिह जिह णउ खिज्जइ अज्जि वि दिज्जइ णिहिल्लं णिवइणिहायं ॥ ७ ॥

## 8

अण्णहिं दिणि सुत्तं सयणहरे  
दिट्ठी<sup>१</sup> दुक्किय सिविणावलिय  
सुपहायकालि गँउं सज्जियउ  
संथुउ परमेसरु परमपरु  
तुहुं सँरसु रसायणु अमयमउ

णरणाहें णिसि पच्छिमपहरे ।  
आगामिदोसजुत्ति व मिलिय ।  
केलासु गंपि जिणु पुज्जियउ ।  
जिण तुहुं चिंतामणि अमरतरु ।  
तुहुं मयरकेउ रँणि लद्धजउ । 5

६ MBP दम्भविसेसहं.

7. १ B णीरियहं. २ MBPK धवल वि. ३ MBP अज्ज.

8. १ MBP सुत्तहं. २ MBP दिट्ठिय. ३ MP गमु. ४ MBP सुरसु. ५ MB रण°.

11 मारय मारकान्.

7. 1 b दिएसहं द्विजेशानाम्. 2 a °कोडि° परमप्रकर्षम्. 5 a मणिराइयहं रत्नजडितानि.  
10 b °आयर° आकरा°. 11 कसणरवण्णी कर्षणेन रमणीया, कृष्णा रमणीया च. 12 °णिहायं° समूहेन.

तुहुं कामधेणु अक्खीणणिहि  
 तुहुं सिद्धमंतु सिद्धोसहि वि  
 तुह णामे णासइ मत्तकरि  
 तुह णामे हुयवहु णउ डहइ  
 तुह णामे संतोसियखलउ  
 तुह णामे सायरि तरइ णरु  
 तुह णामे केवलकिरणरवि

तुहुं पुरिसुत्तमु जणदिण्णदिहि ।  
 तुह णामे णउ भक्खइ अहि वि ।  
 कइं देतु वि थक्कइ णरहु हरि ।  
 परबलु गयपहरणु भउ वहइ ।  
 तुट्टेवि जंति पयसंखैलउ । 10  
 ओसरइ कोहकंदप्पजरु ।  
 णीरोय होंति रोयाउर वि ।

घत्ता—ण फलइ दुस्सिविणउं जणि अवसवणउं तिहुं वणभवणुकिट्टइ ॥  
 पूरंति मणोरह गह साणुग्गह होंति देव पइं दिट्टइ ॥ ८ ॥

9

इय वंदिवि पुंच्छइ भरहवइ  
 होहिंति अहिंसर्पविस्तिर  
 किं अक्खमि हउं तुह केवलिहि  
 फलु काइं भडारा वज्जरहि  
 परमेसर णाहिणरिंदसुउ  
 पुण्णेण केण हउं चक्कवइ  
 कंपावियसिहरिणियंबथलि  
 उप्पण्णु पवट्टियदाणरहु  
 पुण्णेण केण सोमप्पहहो  
 पुण्णेण केण पालियविणय

मइं दियवर णिमिय परमजइ ।  
 कालेण किं णं भणु तित्थयर ।  
 णिसि दिट्टहिं मइं सिविणावलिहिं ।  
 संदेहु महारउ अवहरहि ।  
 पुण्णेण केण तुहुं अरहु हुउ । 5  
 जायउ भारहभूयलविजइ ।  
 पुण्णेण केण बाहुबलि बलि ।  
 पुण्णेण केण सेयंसैपहु ।  
 इयउ संभेवु सोमप्पहहो ।  
 संभूया सयल वि तुह तणये । 10

६ M कमु देतु; B कउ देतउ; P कमु देतउ. ७ BP °संकलउ. ८ P सायर. ९ MB तिहुयणु भुयणुकिट्टइ.  
 9. १ P पुंछइ. २ MB °पवत्तियर°. ३ MBP णु. ४ P अरहउ हुउ. ५ MB °भूवल°; P °भू-  
 अल°. ६ MBP केण हुउ बाहुबलि. ७ MBP सेयंसु. ८ MBP संभउ. ९ MBPK add after this  
 मइं पइं जेहा होहिंति कइ ( P पइं मइं ), कइ हलहर हरि पडिसत्तु ( B पत्तिसत्तु ) कइ; MBP add  
 further: तवभट्टकामिणिहिं बद्धमइ ( P तवभट्ट य कामिणिबद्धरइ ), कइ होसहिं इइ रउइमइ; काणु वि किर  
 होसइ कवण गइ, भो मयणकरिंदमयाहिवइ; एउ ( P इहु ) सयलु वि अक्खहि परम जइ.

8. 10 a संतो सि य ख ल इं संतोषिता: खला: याभि:; b °सं ख ल उ दृखला: . 13 ति भु व ण भ व-  
 णु कि ट्ट इ त्रिभुवनोत्कृष्टे.

9. 4 b अ व ह र हि अपनय.

## 13

जं दिट्टु धवलहं तणउ गणु  
 संघाडपण भमिहिंति जह  
 जं पइं सिबिणुल्लइ तक्रियउं  
 जं मेहहिं जगु अंधारियउ  
 जो दिट्टु सुक्खउ ढंखतरु  
 पुत्तइं उल्लंघियपिउवयइं  
 किउ काइं वि णउ सहिहिंति परे  
 होहिंति मिच्च कंठियवइर  
 होहिंति विईवि णिप्फल विरस

तं चरिही णउ पक्कु जि सर्वणु ।  
 जाणेपिणु दुस्समकालगर ।  
 जं दिणयरमंडलु ढंक्रियउं ।  
 तं केवलु पुरउ णिवारियउ ।  
 सो णरणारिहिं दुचरिचैभइ । 5  
 होहिंति कलत्तइं पररयइं ।  
 काणीण दीण खल घरि जि घरे ।  
 पिप्पलबबूलपार्येव खयर ।  
 होहिंति मुणि वि बद्धामरिस ।

धत्ता—जिह जिह जिणु जंपइ बयणु समप्पइ भरहि भुवैणपंकयरवि ॥

तिह तिह तमु पहरइ दसविस्सु पसरइ कुंदपुष्फदंतच्छवि ॥ १३ ॥ 10

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्फयंतविरहय  
 महाभग्गवभरहाणुमणिय महाकव्वे भरहसिबिणयसंस्याउच्छणं  
 णाम पक्कणवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ १९ ॥

॥ संधि ॥ १९ ॥

13. १ MBP समणु, २ MBT ढंक्रु, ३ P दुचरित्तु, ४ MBPT वड्डियं, ५ MB °पायरं,  
 ६ MBP विडव, ७ MB भुवणु, ८ P दसदिसि, ९ MBP भरहसंस्याउच्छणं.

13. 1 ठ च रि ही चरिष्यति, 5 a ढं ख तरु पत्रपुष्पफलरहितो वृक्षः, 8 a क ठ्ठि य व इ र गृहीतवैराः,  
 11 कुंदपुष्फ दंत च्छ वि कुन्दपुष्पवत् शुभ्रा दन्तानां छविर्दसिः.

## XX

रिसहं भरहहु भासिर्यहं चिरु पवहिं हउं गुज्जु ण रक्खमि ॥  
भासइ गोत्तमु सेणियहो सुणि तिसट्टिपुराणं अक्खमि ॥ धुवकं ॥

1

<p>तहिं तइया देवे बुच्चु पम तेल्लोक्के देसु पुरु रञ्जु तित्थु अट्ट वि पारंभियपुण्णठाणि लोलंति पलोइज्जंति जेत्यु सो केण वि किउं ण कया वि धरिउ चलु णिच्चलु सो ससहावघडिउ वालिस कहंति जडयणहं हेउ दव्वाहं लोयउप्पायणाहं जइ णत्थि ताहं तो लहइ केत्थु किं गयणि होइ पंकयपवित्ति</p>	<p>णिसुणहि णंदण हो मणुयवेव । तंबु दाणु गर्हहलु सुंहपसत्थु । साहेवा होंति महापुराणि । 5 दव्वहं ते लोउ भणंति पत्थु । जीवाजीवहं णिक्खुब्भु भरिउ । आयासणिवासु वि णेय पडिउ । देवे सिट्टारं किर्यउ लोउ । महिमारुयवेसाणरवणाहं । 10 णीरुवहु होइ णिहं वि वत्थु । दीवाउ दीवि पज्जलइ वत्ति ।</p>
---	---

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

फणिनि विमुञ्जतीव मेचकरुचि कचन्निचयेषु योषिता-  
मलकिषु मूर्च्छतीव हसतीव तमालतल्लेषु पुञ्जितम् ।  
मदमुचि माद्यतीव लोलालिनि वरकरिगण्डमण्डले  
दिशि दिशि लिम्पतीव पिबतीव निमीलयतीव खण्णे ॥

P reads खण्णे for खण्णे. GK do not give it.

1. १ P भासियए. २ MBP तेलोक्क. ३ MBP तवदाणगर्हहलु. ४ MP सहु. ५ MBP तं लोउ.  
६ P तेत्थु. ७ MBP किउ केण वि ण धरिउ. ८ MB णिक्खुत्थु; P णिक्खुत्थु; T णिक्खुब्भा निरंतरम्. ९ K  
कयउ. १० MBP ण रुवि वत्थु; K ण णरु वि वत्थु and gloss नरोऽपि वत्थं पि न भवति.

1. 1 चिरु पूर्वम्. 3 a तहिं समवसरणे. 5 a-b त्रैलोक्यादयोऽष्टौ पदार्था महापुराणे सावयितव्या  
भवन्ति. 6 b ते तेन कारणेन. 7 b णिक्खुब्भु निरन्तरम्. 8 a चलु णिच्चलु चलो जीवः पुद्गलापेक्षया;  
निश्चलो धर्माधर्माकाशकालापेक्षया. 9 a वालि स अज्ञाः; हेउ कर्ता; b सिट्टारं विघात्रा. 10 b वणाहं जलानि,  
11 b णिइ वि अपि निश्चयेन.



धम्मत्थकाम णउ अत्थि जासु	कहिं लब्भइ इच्छापसरु तासु ।
णिकिरियहु कहिं किरियाविसेसु	णिकलुसहु होइ ण हरिसु रोसु ।
विणु तिट्ठित्तं णउ फलंति	किह करणहरणबुद्धीउ होंति । 15
विणु छत्ते किं सांवेडइ छाहि	सिवि लंभी किं कत्तारवाहि ।

घत्ता—कुंभहु भिण्णउ कुंभयरु करउ कुंभु तं महु मणि भावइ ॥

सिद्धं अप्पणुं जगु अप्पउं जि करिवि काइं गुणवंतहं सावइ ॥ १ ॥

## 2

विणु घडेयारेण सरूव लेइ	मिण्णिडउ जइ सरं कलसु होइ ।
तो एकु कम्म कत्तार भणमि	णं तो पुणु भेयविभिण्णु गणमि ।
जइ ईसरु भुवणयलहु णिमिनु	तो तासु कवणु तंगुणविचित्तु ।
जइ णिञ्चु ण तो परिणामरिद्धि	णिप्परिणामहु कहिं कम्मसिद्धि ।
विरपप्पिणु मंजई भुवणकोसु	जइ पही दीसइ कील तासु । 5
जयं सयल वि पसु णिकिरिय करइ	संघारसमइ ससरीरि धरइ ।
पुणु पासु ताहं संजोयमाणु	पावेण ण लिप्पइ किं अयाणु ।
जइ लिप्पइ णउ दुरिपण सिधु	तो किं अयसिरलुंचणि असुधु ।
जइ पभणह ण सिद्धं सिवंसु चंडु	तो णाउं होइ किं हेमखंड ।
पुरदाह वहरिवह रुहिरपाणु	णञ्चेवउ किं संतहु विहाणु । 10

११ MBP तिट्ठातत्ते; 'T' तृष्णा करणहरणाभिलाष. सैव तन्त्रम्. १२ MBKT सावडइ, P छावडइ. १३ P लुगउ. १४ MBP सिउ. १५ P अप्पाणु.

2. १ K विण. २ MB घडयारएण, ३ MBP सरूउ. ४ MBP मिण्णिडउ. ५ MT तं गुणु विचित्तु. ६ MBP भणइ. ७ M जइ जयल, K जइ सयल. ८ P अयसिरि लुंचण. ९ MBP सिउ.

14 a णि किरियहु निव्यापारस्य; किरियाविसेसु कार्योत्पत्तिविशेषः; णिकलुसहु कर्मरहितस्य. 15 a तिट्ठेत्यादि-तृष्णा करणहरणाभिलाषः सैव तन्त्र कारणमौषध वीं तेन विना कथं करणहरणादिबुद्धयो भवन्ति, तथा नैवैताः फलन्ति. 16 a सांवेडइ सपद्यते; b कत्तारवाहि कर्तृत्वव्याधिः 17 भावइ घटते. 18 सावइ शापं ददाति.

2. ३ b तं गुण विचित्तु कर्तृत्वगुणविचित्रम्. 5 b कील कीडा. 6 a पसु कर्मबद्धा जीवाः सर्वे पशवः कप्यन्ते; b ससरीरि धरइ स्वस्वरूपतां नयति. 7 a पासु कर्मबन्धनं गले पाशो वा. 8 b अयसिरि<sup>०</sup> ब्राह्मणस्य विरिः; असुधु ब्रह्महत्यायुक्तः. 9 a सिवसु शिवकला; b णाउं सीसकं नागम्; हेमखंडु सुवर्णस्रग्धम्.

परियाणिउं हौतउ जइ हरेण  
जइ वच्छलेण जि कियउ लोउ

तो दाणव णिम्मिय काइं तेण ।  
तो कि ण कियउ सव्वहु विहोउ ।

घत्ता—जिर्णणाहेण ण दिट्ठीं मिच्छाविसर्बिदुयणीसंदह ॥  
किं वणिणयइ कुवाइयहं सिवगयणारविंदमयरंदं ॥ २ ॥

3

अण्णाणु ण याणइ सइं जि मग्गु  
जइ जाइ जीउ सिवपेरणाइ  
को जाणइ केही हरहु वेट्ट  
कम्माणुंय सा जइ भणसि एम  
माहेसर किं गोवइ थवंति  
अणिबद्धउं महु णरजम्मयारि  
जिह सिवु तिह बंभुं ण विण्डु अत्थि  
विणु णरसंताणं मणुउ केम  
सत्तेक्कपणेक्कसुरज्जुपिहुलि  
वेत्तासणहल्लरिमुंरैयरुवि  
तहु मज्झि परिट्टिउ तिरियलोउ  
एक्केण एकु वेदियंउ ताम

णिव णरयविवरु सग्गापवग्गु ।  
तो कि कंयायइ तवभावणाइ ।  
होसइ भीसण णिट्टिवियइट्ट ।  
ता पलइ सुयण संहरइ केम ।  
जड मत्त पिसल्लय किं चवंति । 5  
पिउ बंभयारि जणणि वि कुमारि ।  
विणु हत्थिउलेण ण होइ हत्थि ।  
अणिहणु अणाइ जगु सिद्ध एम ।  
अहमज्झउड्ढुंभुवणग्गाकुयलि ।  
चोईहकेयाउच्छेहभावि । 10  
गयसंखदीवजलणिहिसमेउ ।  
छेईल्लु सयंभूरमणु जाम ।

घत्ता—तहिं लंविणणवमेहलइ मंदैरमउडें मंदिउं भावइ ॥

जंबूदीउ पसिंहुं जगि सयलहु दीवहु राणउ णावइ ॥३॥

१० MBP जिणणाहेण वि. ११ P दिट्ठियइ.

3. १ MBP कयाइ. २ MBP होही. ३ MBPT कम्माणुवमा. ४ MPK अणिबद्धइ. ५ MBP बंभणु विण्डु. ७ MBP भुयणंतकुयलि. ७ M मरवरुवि; BP मुरवरुवि. ८ BP चउदह°. ९ MB वि ठियउ. १० MBP छेयल्लु. ११ MBP लवणंभुहि°. १२ MP मंदिर°. १३ P वेदित्त. १४ MBP पसत्थु.

12 b वि हो उ विशिष्टो भोगः. 13 मि च्छेत्या दि—मिथ्यात्वजलबिन्दुनां निष्यन्दो येषु गगनारविन्दमकरन्देषु.

3. 1 b णिव हे भरत, अथवा, हे श्रेणिक. 2 b क या यइ कृतया. 3 b णिट्टु वियइट्टु निष्ठापितं च्चलं इहं प्राणिनां वाञ्छितं यया. 4 a क म्मा णु य कर्मानुसारिणी. 5 a मा हे सर शैवाः; गोवइ शंकरः. 9 a स ते के त्या दि—यथासंख्यं सप्तैकपञ्चैकशोभनरज्जुके विस्तीर्णैः; b °कु य लि भूतले. 10 b °के या° रज्जवः; °उ च्छे ह भा वि दीर्घत्वम्.

4

दहखेत्तभाय जहिं रिखिवंत  
 ददकुलिसकवोडंधियपहाइं  
 सप्पुरिसविन्नु जिह तिह विसालु  
 फलिहमयकुसुममंजरिसुसेउ  
 जंबूतरु जंबूदेवठाणु  
 णं जगलच्छिहि भूसणवियार  
 णक्खत्तहं संख ण मुणि भणंति  
 तहिं दीवि मेरुपच्छिमदिसाहि  
 यत्ता—द्विक्खणतीरि रम्मि विउले णीलहरिहि उत्तरदिसि मंडिवि ॥

छव्वरिसघारि धरसाणुमंत ।  
 चउदारइं चोदह णइसुहाइं ।  
 परिवड्ढियमरगयरयणडालु ।  
 पवरिदणीलमयैहलणिकेउ ।  
 जसु देवैहिं दिट्ठउ धुवुं णिवाणु । 5  
 जसुवरि भमंति दो चंदसूर ।  
 अम्हारिस जड कह किं मुणंति ।  
 सीओयहि जलकीलियझसाहि ।

गंधेले णामे विसयविडु थिउ महिवहु णावइ अवरंडिवि ॥ ४ ॥

10

5

जो पारियायचंपयकलंबमुचुकुंदकुंदमंदारसारसेरिधगंधगुमुगुमियमहुयराली-  
 मिलंतवयमोरकीरकलहंसकुरैरकारंडकोइलारावरम्मो ॥ १ ॥

जो मत्तदंतिगंडयलगलियमैयतुप्पविंदुच्चित्तलियवारिवियरंतण्हंततियसिंद-  
 कामिणीसिहिणघुसिणपिगलियफेणसोहियसरंतो ॥ २ ॥

जो विविहधण्णफलणैवियछेत्तकणसुरहिपरिमलामोयघुलियसउणउलकुद्ध-  
 हलिणीविमुक्कछोकरणकलरवोदिण्णकण्णथियचरणहरिणसंछण्णसीममग्गो ॥ ३ ॥

जो कलवकंगुजवमुग्गमाससंतुट्टमंथैरोमंथमाणगोमैहिसोहदुद्धमंतदुद्धघयदहिय-  
 वाविर्मज्जंतपंथियसमूहो ॥ ४ ॥

4. १ T साणुवत. २ PT °कवाडइ चियपहाइ. ३ MBP °मेहलणिकेउ. ४ MBP देवै. ५ MBP धुउ. ६ MBP जगलच्छिहि ण. ७ MBP उत्तरतीरि. ८ MBP दक्खिणदिसि; T सीतोदाया उत्तरदिसि इति संबन्धः, दक्षिणतीरे णीलहरि इति संबन्धः. ९ MBPK गधिलु.

5. १ MBP° कयब°. २ MBP °महुयरोली°. ३ MB °कुरल°; P °कुरल°. ४ B °मयरुप्पविंदु°; P °मयतोयविंदु but gloss झिग्ध. ५ MBP °भरिय°. ६ M °संछरोमय°, BP °सच्छरोमंथ°. ७ K °माहिसोह°. ८ MBP °मज्जंतजतपथिय°.

4. दहखेत्तभाय भरतहैमवतहरिरम्यकहैरप्यवतैरावतक्षेत्राणि पूर्वविदेहो अपरविदेहः कुरव. उत्तर-  
 कुरवश्च; b छव्वरिसघारि षट्कुलपर्वताः. 4 b °हल° °फल°. 5 b णिवाणु निर्माणं संस्थानं वा. 10 वि-  
 सयविडु देश एव विटः.

5. 2 °सिहिण° स्तनौ. 3 थियचरण° स्थितं त्यक्तं चरणं भक्षणं गमनं यैः.

जो रूंदचंदकिरणहिरामसामारमंतगोवालगोवियागीयेयरसवसधिसण-  
सुणहाणिहिसणीसासतावविहडंतगोट्टिसोहंतगोट्टो<sup>१</sup> ॥ ५ ॥

5

जो वसहसिंगखयखोल्लमहियलुच्छलियसरसथलकमलमंदर्मयरदपुंजपिंजरिय-  
तुंगणग्गोहरोहपारोहडालडोल्लायमाणजक्खीविलुंपियासण्णपामरोहो ॥ ६ ॥

जो खयरचंचुहयपडियपिक्कमायंदगोच्छघावंतवाणरोमुक्कधीरबुक्कारतसिय-  
णासंतरायरमणीपयग्गपविलुलियणेउरालग्गहेमरयणंसुफुरियवेल्लीहरंतो ॥ ७ ॥

जो रत्तचूलकीलावियंभणुड्ढाणमेत्तणिवसंतगामपुरणयरखेडकब्बडमडंबसंवाह  
णाइरमणीयभूपयसो ॥ ८ ॥

जो हीरणारसीहारणालसंभवकुवाइकयसमयविरहिओ वीयरायणयतोयघोय-  
लोयंतरंगसुद्धो सहावसोम्मो ॥ ९ ॥

जो घोरवीरतवचरणकरणपरिणयमुणिंदपायारविंद्वंदणपसत्तणरमिडुणगरुअ-  
चारित्तभत्तिविहवियविसमपावावलेवो<sup>१४</sup> ॥ १० ॥

10

घत्ता—जहिं वेयडुमहासिहरि मज्झि परिट्टिउ दीसइ केहउ ॥

रुण्णयदंडउ घल्लियउ पुहइ मवंतें विहिणा जेहउ ॥ ५ ॥

6

तहिं उत्तरसेट्ठिहि रमियखयरि  
पर्णुल्लियसयदलपरिमलेण  
पडिवक्खत्तिस्तकयदूसणेण  
आबद्धें रयणवित्तिपण  
णाणादुबारमणितोरणेहिं  
वीसइ णंदणवणणीलकेस  
चूलामणिचुंभियणहयलाइं

अलयाउरि णामें अत्थि णयरि ।  
परिवेडिय जा परिहाजलेण ।  
जा सोहइ णाइ णियासणेण ।  
पायारकणयकडिसुत्तण ।  
णं छज्जइ कंठविहसणेहिं ।  
पुरि णं अबैयरिय अउन्व वेस ।  
जहिं घरइं सत्तभूमीयलाइं ।

5

१ M °गोहो. १० MP °मयरंदपुंजरिय°, ११ MBP °ढौलायमाण°. १२ M °कयमब°. १३ M सहाव-  
सोमो. १४ All Mss add:- इमी विसमसीसयछंदजाई कहिया. १५ MBPK तहिं.

6. १ MB उत्तरे सेट्ठिहि. २ MBP पर्णुल्लिय. ३ K अवयरियउन्व वेस.

5 °सा मा° रात्तिः. 9 हीर° शंकरः; °णार सी ह°: नरसिंहः; आरणाल संभव° ब्रह्मा. 10 °परिणय °प्रवृत्तः,

6. 3 b णिया सणेण परिधानवळेण. 6 b वेस वेद्या.

णं धूर्वं सुधूमं नीससंति  
 णं अलिङ्गकारै सरै गुणंति  
 धयवड णं णियकरयल धुणंति  
 अम्हहुं सारिच्छा दिव्वगेह  
 पवसियपियाहिं पेळ्ळियकरेहिं

णं मुत्तावलिदंतैहिं हसंति ।  
 णं गुरुगवक्खकण्णहिं सुणंति ।  
 णं सिहिरवेहिं के के भणंति । 10  
 जहिं सिहरोलंबियणीलमेह ।  
 संतावयार तल्लंतबिरेहिं ।

घत्ता—अमलियमंडणु मुहकमलु विरहिणीइ मणिभित्तिहि दिट्ठुं ॥  
 संझइ सुत्तविउद्धियइ जहिं अप्पुं मण्णुणु णिक्किट्ठुं ॥ ६ ॥

## 7

जहिं पोमरायपहणिरसियाइं  
 घरु हरिणीलै णीलियउ जाम  
 णयणइं ण लहंति णयाणणाइ  
 णिंदेप्पिणु रंगावलिपयारु  
 जहिं रिद्धि वि रेहइ पवर का वि  
 उग्गायकिंजकरयंकयाइं  
 जहिं पंकइ पंकइ हंसु थाइ  
 जहिं कलरवि कलरवि हयणिमाण  
 जहिं उववणाउ धैरि सिरि चडंति  
 हयमुहफेणहिं कुंजरमपहिं  
 संजणियपंक जहिं रायमग्ग  
 जहिं णिञ्चुच्छव मंगलपसत्थ  
 जिणघम्माणंदिय भुत्तभोय

वहुपायालत्तयविलसियाइं ।  
 ताविच्छहु केरी सोह ताम ।  
 जहिं एम कहिं मि जूरिउ धणाइ ।  
 जहिं कुलवहु बंधइ कंठि हारु ।  
 जहिं पंगणि पंगणि तोयवावि । 5  
 जहिं वाविहि वाविहि पंकयाइं ।  
 जहिं हंसि हंसि कलैरव विहाइ ।  
 कामेण समप्पिय कामबाण ।  
 पुणु विविह पक्खि उववाणि पडंति ।  
 तंबोलहिं माणवमुहच्चुपहिं । 10  
 वच्चंतजाणजंपाणुग्ग ।  
 असिमसिकिसिविज्जावज्जियत्थ ।  
 णिरुवइव जहिं णिवसंति लोय ।

४ MBP धूव सुधूमं. ५ MBP दंतैहिं. ६ MBP सर. ७ MP अम्हइं; B अम्हइं; K अम्महुं but gloss अस्सत्सदशाः. ८ P °तंबरेहिं. ९ MBPT संझइ सुत्तविउद्धियइ.

7. १ MBPK सोहइ. २ MBP कलरउ; K कलरव but corrects it to कलरवु. ३ MBP घरसिरि. ४ MP °मुहमुएहिं; ५ MB °वेज्ज°.

12 b संतावयार संतापकरा मेघाः. 14 सुत्त विउद्धियइ सुत्तविवुद्धया जागरितया.

7. 1 a °णिरसियाइं तिरस्कृतानि. 2 b ताविच्छहु कज्जलस्य. 3 a णयाणणाइ नम्रमुक्था; b धणाइ वच्चा खिया. 8 a हयणिमाण हतनुमानः.

घत्ता—अइबलु णामे तेत्थु पडु सो जइ वि हु ण होई दोसायरु ॥

तइ वि हु कुवलयतोसयरु सोम्मुं वि चंडपर्याव पहायरु ॥ ७ ॥ 15

8

कुलणहसवियारु वि णिव्वियारु	सुहसीलु वि धरियधरिसिभारु ।
इहलोयत्थुं वि परलोयभत्तु	गोवालु वि जाणियरायवित्तु ।
जयंगहियगुणु वि अक्खयगुणोहु	णिब्बाहु वि करिकरदीहबाहु ।
बलवंतु वि अबलासयरुं गम्मु	अविडप्पु वि लंघियसूरहम्मु ।
णीसु वि लक्खणैलक्खियसरीरु	ससहावे धीरु वि पावभीरु । 5
दूरत्थु वि णियडंत्थु वं हयारि	रइवंतु वि परवहुबंभयारि ।
सुयभिण्णमणु वि दढच्चित्तवित्ति	बहुपालिरो वि दिसधित्तकित्ति ।
अइसच्छु वि र्हियसमंतचारु	गुरुओ वि गुरुहुं लहु विणयसारु ।
संगरु वि जिणइ संगरि दुजेय	लच्छीवासु वि खरदंड णेय ।
सुपसुत्तु वि चलणयणेहिं णियइ	टाणत्थुं वि तर्हणणेहिं भमइ । 10

घत्ता—जो महिमाहरु पुरिसहरि महिमावंतु भुवणि विक्खायउ ॥

जो अहिमाणवंतु सुयणु जो रिउमाणवंतु संजायउ ॥ ८ ॥

१ MB होय. ७ MBP सोमु. ८ MBP चडपयाउ.

8. १ MBPK जग°. २ P °गुणि. ३ K लक्खियलक्खणसरीरु ४ P णिवडत्थु. ५ M वि. ६ P रइय°. ७ MB गरुओ, P गरुओ. ८ M खरददु; BP खरदंडु. ९ MBP चर°, T चल°. १० M वाणत्थु; MP वाणत्थु. ११ MBP तचरणिहिं भमइ.

15 चंडपयाव चण्डप्रतापः, पहायरु प्रभाकरः.

8. 1 a कुलणहेत्यादि- यः कुलाकाशे सविकारः स कथं निर्विकार इति विरुद्धम्; अन्यत्र कुलाकाशे सवियारु सविता; b सुहसीलु सुखशील उत्तमशीलश्च. 2 a परलोयभत्तु मोक्षप्रदालुः. गोवालु पशुपालः; अन्यत्र गौः पृथ्वी ज्ञानं च तत्पालयतीति गोपालो ज्ञातराजवृत्तिश्च. 3 b णिब्बाहु निर्बाध प्रलम्बबाहुश्च. 4 b अविडप्पु विदर्पो राहुः सः अभवन्नपि विलधितसूर्यतेजाः, अन्यत्र विटात्मा न भवति. 6 a णियडत्थु निकटस्थः, आसन्नधनश्च. 7 b बहुपालिरो बहुपुरुषान् पाति पुष्पातीनि बहुपा पुंश्वली तां आलिं सखीं राति आदत्ते य सः कथं विक्षु प्रवृत्तकीर्तिः; अन्यत्र बहुपालकः प्रख्यातकीर्तिश्च. 9 a संगरु स्वाज्ञे स्वशरीरे रुग् व्याधिर्यस्य स स्वाज्ञरुक्. 10 a सुपसुत्तु यः सुष्ठु प्रसुप्तः स कथं चलनयनैः पश्यति; अन्यत्र, सुष्ठु प्रकृष्ट सूत्र नीतिर्यस्य स चारलोचनेश्च कृत्वा पश्यति; b वयइ व्रजति गच्छति. 11 महिमाहरु पृथ्वीलक्ष्म्या गृहम्.

9

णं पेम्मसलिलकल्लोलमाल  
 णं चिंतामणि संदिण्णकाम  
 णं रूवरयणसंघायस्त्रीणि  
 णं घरसरहंसिणि रइसुहेल्लि  
 णं घरवणदेवय दुरियसंति  
 णं घरगिरिवासिणि जक्खपत्ति  
 महपवि तासु घरकमललच्छि  
 तहि जणिउ तणउ खयराहिवेण  
 घत्ता—जाए जेण थणंधएण दुज्जणंबंदु सयलु संताविउ ॥

णं मयणडु केरी परमलील ।  
 णं तिजगतरुणिसोहग्गसीम ।  
 णं हिययहारि लायण्णजोणि ।  
 णं घरमहिरुहमंडणियवेल्लि ।  
 णं घरछणससहरबिंबकंति । 5  
 णं लोयवसंकरि मंतसत्ति ।  
 णाम्भेण मणोहरं पंकैयच्छि ।  
 अलयाउरिधरंणाहेण तेण ।

णालिणु व णवदिवसाहिवेण णिययगोत्तु हरिसं विहंसविउ ॥ ९ ॥ 10

10

कुम्भुण्णयकमु  
 केसरिकडयलु  
 आयंबिरणहु  
 णवजलहरमुणि  
 सुरकरिकरकर  
 विसवइकंधर  
 गुणरंजियजणु  
 उण्णयमालउ  
 भलिणिहकौतलु  
 मणुयकलेवर  
 किमिकुलसंकुलु

दुजयविकमु ।  
 वियडोरत्थलु ।  
 कणयसमप्पहु ।  
 कुलचूडामणि ।  
 तरुणीमणहरु । 5  
 रज्जधुरंधर ।  
 अहिणवजोव्वणु ।  
 पेच्छिवि बालउ ।  
 चितइ अइबलु ।  
 अट्टियपंजर । 10  
 रुहिरचिलिव्विलु ।

9. १ MBP °स्त्रीणि. २ P मणोहारि. ३ MBP कुवल्लयच्छि. ४ MBP °वरणाहेण. ५ MBP दुज्जण-  
 वगु. ६ MBP वियसाविउ.

10. १ MBP °कडियलु; K कडयलु but corrects it to कडियलु. २ P रज. ३ MBP  
 °कुंतलु. ४ K omits अट्टियपंजर.

9. 4 a रइसु हे ल्लि रतिसुखयुक्ता. 6 a जक्खपत्ति कुबेरमार्या. 9 थणंधएण पुत्रेण.

10. 11 b °चि लि व्विलु बीभत्सम्.

लालाविट्टु	अंतहं पोट्टु ।	
पिउवणभौर्यु	पक्खिहिं भोयणुं ।	
सोलहकंदर	णवदारंतर ।	
कामे जिप्पइ	लोहे धिप्पइ ।	15
कोहे तप्पइ	छम्मे लिप्पइ ।	
कम्मं बज्जइ	मोहे मुज्जइ ।	
सत्ये भिज्जइ	रोपं भिज्जइ ।	
जरइ कुडिज्जइ	काले खिज्जइ ।	

॥ घटा—भणित् सणंदणु पत्थिवेण संति करेज्जसु णियसंताणहो ॥ 20  
तुहुं अणुहुंजहि रायसिरि मइं पुणु जापवउ णिव्वाणहो ॥ १० ॥

II

चवलयर कुसासणवस चरंति	महुं वाइ कुवाइहिं अणुहरंति ।	
जरमरणहं किंकर किं करंति	मायंग अंग किं मोक्खु देंति ।	
णिम्मलमइ रायहु रह रहंति	ए अवरं वि जणि असुवह ईवंति ।	
अंतेउरु अंते उरु जि हणइ	रोवइ वइवसहु ण रक्ख कुणइ ।	
भवपासबंधु सुहिबंधुणियरु	खणधंसि णयरु गंधव्वणयरु ।	5
घणु इंधणु लोहहुयासणासु	घरु विग्घरु केवलदंसणासु ।	
फणिमोउ व मोउ ण मुंजणिसु	आकोसु वि कोसु वि वज्जणिसु ।	
दुक्कियणिहेसु व देसु भणमि	खयरवइपहुत्तणु तणु व गणमि ।	
सीहासणु हासणु मेल्लमाणु	किं रक्खइ खइ गैच्छंतु प्राणु ।	

५ M °भाषणु. ६ B reads this line as पिउवणभायणु, गुणगणमोयणु and adds further सोयकोयणु, पक्खिहिं भोयणु. ७ MB add after this: गुणगणमोयणु, सोयकोयणु. ८ MBPT °कंडर. ९ MBP छिप्पइ. १० B कामे. ११ MBP खज्जइ.

11. १ MBP बहंति. २ MB केवलु दंसणासु. ३ P खज्जंतु. ४ MBP पाणु.

18 a पिउ वण° इमशानम्. 16 b छ म्मे मायया.

11. 1 a कु सा सण व स कुशायास्तर्जनकस्य असनवशास्ताडनवशाः, पक्षे कुशासनवशाश्चावाकादयः; b वा इ वाजिनोऽश्वाः. 2 b अंग संबोधनेऽप्ययम्. 3 b असुवह प्राणघातकाः. 4 a अंते विनाशे; उरु इदयम्. 6 b विग्घरु विघ्नकरम्. 8 a °णि हेसु उपदेशः. 9 a हा सणु हा इति स्वनः शब्दः.



किं छत्तहिं छत्तायारभूमि  
चामरु मरु देइ ण मरणहारि  
पलियंकियसीसु ण सीसु होइ

पाविज्जइ विज्जउ जहिं ण कामि । 10  
ण समंति केउ झसकेउधारि ।  
जो मुणिहिं मूढु सो कुगइ जाइ ।

घत्ता—एम परंपिचि राणएण णं मेहहिं धाराजलवरिसहिं ॥

बद्धउ पट्टु महाबलहो अहिसिचिवि सिपैहिं सिरिकलसहिं ॥ ११ ॥

## 12

जं जयजयसहं बद्धु पट्टु  
मणिभूसणु णिवसणु परिहरेवि  
जो छिंदइ सिचइ चंदणेण  
जो थुणइ जो वि दुव्वयणु देइ  
सामंतमंतिभडसेवणिज्जु  
देवंगहिं विविहहिं परिहणेहिं  
कामिणिथणसिहरालिंगणेहिं  
तंतीपुक्खरवज्जाइएहिं  
उच्छलियपहयघडियारवालु  
पढमिल्लु महामइ णिहयमंति  
तिज्जउ सयमइ बहुरिद्धिरिद्धु

नं पुरुमेह्लिचि णरवइ पयट्टु ।  
थिउ णिज्जाणि वणि जिणदिकख लेवि ।  
विंधइ सरेण मण्णइ मणेण ।  
दोहिं मि समाणु हुउ परमजोइ ।  
एत्तहि वि तासु सुउ करइ रज्जु ।  
आहरणं मणिकं चणघणेहिं ।  
उज्जाणहिं जाणहिं वाहणेहिं ।  
स रि ग म प ध णी सरगाइएहिं ।  
भोयासत्तहु तहु जाइ कालु ।  
वीयउ संभिण्णमउ त्ति मंति । 10  
सइवुद्धु चउत्थउ जगपसिद्धु ।

घत्ता— तेण णंराहिवु विण्णविउ ह्यवहु तरुत्तणेहिं किं धायँउ ॥

सार्थरु बहुसरिवाँणिएहिं विसयसुहेहिं मि जीउ वरायउ ॥१२॥

५ MBP सीसे.

12. १ MBPK आहरणहिं. २ M पढमिल्ल. ३ MBP णराहिवु. ४ MBP किं तरुत्तणेहिं. ५ P धाविउ.  
६ M सायर. ७ MBP ° वाणियहिं.

10 a छत्तायारभूमि मुक्तिशिला. 11 b झसकेउधारि काम. 12 a सीसु शिष्यः. 14 सिपैहिं  
रूप्यमयैः.

12. 3 b मण्णइ अनुमतिं करोति. 10 a णिहयमंति निःसंदेहः. 12 धायउ तृप्तः.

## 13

जिहं पामा कररुहफंसणेण  
 तिह णिच्चं कामु सेविज्जमाणु  
 वड्डइ लोहेण मंहंतु लोहु  
 वड्डइ णयहीणु णिपवि माणु  
 वड्डइ रइ अंगुअंधेण मोहु  
 महिणाहु होवि पुणु होइ साणु  
 उप्पज्जइ जा कंदप्पवाहि  
 क्ख केण वि कत्थइ आणियाइ  
 सा णारि सहावदुगंध चड्डुल  
 घत्ता—भुक्ख सरीरि समुब्भवइ तं जि दहइ सा ज्ञत्ति पलित्ती ॥

संभासणपियमुहदंसणेण ।  
 वित्थरइ होइ अइअप्पमाणु ।  
 वड्डइ हंकारे तिव्व कोहु ।  
 परवंचणेण मायाविहाणु ।  
 इय जीउ करेप्पिणु धम्मदोहु । 5  
 संसारि कवणु रायाहिमाणु ।  
 संकप्पे तप्पइ ताइ देहि ।  
 पसमिज्जइ जाइ सुमाणियाइ ।  
 अण्णासत्ती धणगम्म कुड्डिल ।  
 10  
 अत्थि ण देहि गविट्ट मइं ताहि उवसमविहि परवस उंत्ती ॥ १३ ॥

## 14

फासरसवसंगय महि भमेवि ।  
 गायंति के वि णच्चंति के वि  
 सीवंति के वि तुण्णंति के वि  
 करिसणु करंति पहरणु धरंति  
 आवंतु विस्सिट्ठु ण संसहंति  
 कम्मेहिं धणाइं समज्जिऊण  
 दिवसावसाणि समसंत होंति  
 अह उड्डमग्ग वड्डियणिणाय

वायंति के वि वण्णंति के वि ।  
 धणकज्जि पढंति लिहंति के वि ।  
 चड्डयम्महिं परहियवउ हरंति ।  
 अम्हइं गुणव्रंता सइं कहांति । 5  
 आणेवि णिहेलाणि पुंजिऊण ।  
 णिव्वाइयमुह माणव सुयंति ।  
 धावंति सइच्छइ वे वि वाय ।

13. १ P जिहं. २ P णिच्चु. ३ MBP अणतु. ४ MBP तिव्वु. ५ MBPK णियहीणु. ६ MP  
 ०वंचणेण मणि मायठाणु; B ०वचणेण मणि माइ ठाणु. ७ MBP अणुवधेण. ८ BP उहइ. ९ M गव्विट्ट.  
 १० MBP वुत्ती.

14. १ MB भमेमि. २ G पुज्जिऊण. ३ B पाय.

13. 5 a अणु अंधेण संतत्या प्रवर्धनेन. 8 a आणियाइ आनांतया खिया. 11 ग विट्ट गवेषिता; उव-  
 स म वि हि पर व स उ त्ती उपशमविधिर्न दृष्टा शरीरे किं तु अन्येन भोजनादिना कृत्वा शाम्यति, तेन परवश एव  
 उपशमविधिर्दृष्टा.

14. 7 a समसंत श्रमश्रान्ताः; b णिव्वाइयमुह प्रसारितमुखाः. 8 b वे वि वा य अधोवात ऊर्ध्ववातश्च.

णिहद् रीणत्तणु खयद् जाह  
आहार भुत्तु परिणवद् अंगि  
उद्गंति गोसि पुणु णीससंत

खलु छिण्णउ छिण्णउ रसु वि धार ।  
पज्जलद् पित्तु ह्यसेंभेसंगि । 10  
किह रक्खहं धणु पणइणि भणंत ।

घत्ता—भयसण्णावस थरहरिय लेति केर कासु वि बलवंतहो ॥

जीहमेडुणरसरसिय जंति जीव णरयद् सुदुरंतहो ॥ १४ ॥

## 15

धणणियरविहीणें किं कुलेण  
वरसलिलविहीणें किं सरेण  
सुवियद्दुविहीणें किं पुरेण  
चारित्तविमुक्कें किं सुएण  
किं चाएं मणसंतताविरेण  
किं करिणा अवगणियंकुसेण  
किं पुरिसें पसरियदुज्जसेण  
किं मुणिणा पंविदियवसेण  
किं मत्तें कयंबहुवहरएण  
किं गुरुणा मोहंधारएण  
किं दुज्जणमहुरालाविएण

णियणाहविहीणें किं बलेण ।  
सुकलैत्तविहीणें किं घरेण ।  
परवहुणहवणिपं किं उरेण ।  
पिउपयपडिकूलें किं सुएण ।  
किं माणें पियमुहदाविरेण । 5  
किं हरिणा अवगणियकुसेण ।  
किं णच्चिएण वियलियरसेण ।  
किं धुत्तें पेम्मपरव्वसेण ।  
किं परियणेण परवहरएण ।  
किं सीसें अविणयगारएण । 10  
किं धम्मविहीणइं जीविपेण ।

घत्ता—पुंणु सइवुसु पसण्णमइ खगवइ रायद् अग्गइ भासइ ॥

धम्मद्दु एत्तिउ सारु णिव जं पढ अप्पसमाणउ दीसइ ॥ १५ ॥

४ MBP सभवइ, ५ MBP °सिभ°.

15. १ MBP °संतावएण, MB °दाविएण, ३ B अविगणियं°, ४ MP मत्तें; B सत्तें, ५ P बहु-  
कयवहरएण, ६ MP मोहें धारएण, ७ MBP °लावएण, ८ MBP धम्मविरहिणं, ९ MP जीवएण,  
१० MBP परमदियत्तें भंतिवरु खयरवइ रायद्.

6 b ख लु छिण्णउ तिलखलश्चर्वितश्चर्वितः सन् रसो दुग्धं भवति, तथा निद्रया भ्रमो गच्छति, 10 b ह्यसें भ-  
संगि श्लेषसंगे हते सति पित्तमुत्पद्यते, 11 a गो सि प्रभाते, 12 के र आहाम् .

15. 4 a सुएण भुत्तेन; b सुएण सुत्तेन, 6 b हरिणा अश्वेन, °कुसेण °वावुक्केन ( तर्जनेकेन ). 9 a  
मत्तें मत्तयेन मनुष्येण; b परवइ° परपतिः.

16

सखेण दयादाणेण धम्मु  
तेजेत्थ कुणर णारय तिरिक्ख  
धम्मेण होंति कप्पामरिंद  
अहमिंद रुंदचंदाहजोण्ह  
मणिमउडसिहरसोहिल्लसीस  
पडिवासुएव कुसुमसर रुह  
कइगमयवम्मिवाइत्तणां  
सोहंग रूवु कुलु सीलु कंति  
जं दीसइ चंगउ गुणविसेसु  
घत्ता—धवलीह्यउं सिरकमलु भोउ देव केसिउ भुंजिजइ ॥

अलिपण जीवहिंसइ अहम्मु ।  
कुच्छिय सुर होंति तिसल्लतिक्ख ।  
अरंहंत चक्कि चारण मुणिंइ ।  
धम्मेण होंति जगि राम कण्ह ।  
मंडलियमहामंडलवईस । 5  
धम्मेण होंति णाणाणरिंद ।  
धम्मेण हवंति बुहत्तणां ।  
पोरिसं जसु भुयबलु विमल अंति ।  
तं धम्महु केरउ फलु असेसु । 10

धम्मु जिणागमभासियउ भणवयकायतिसुद्धिइ किजइ ॥ १६ ॥

17

पहु साहिजइ सग्गापवग्गु  
अणिहणइं अणाइअहेउयाइं  
भूयइं चयारि जहिं जहिं मिलंति  
गुलजलपिट्ठिं मयसत्ति जेम  
ण सरीरिसरीरहुं भेउ अत्थि  
जम्माउ ण वच्चइ अणुं जम्मु  
जो परहर पुच्छिवि परहु पासि  
विणु तेहिं केम सो सग्गो जाइ  
जासुवरि मुर्वइ मलु जीवलोउ  
जलबुब्बुय जइ कम्मेण होंति

ता दिसइ महामइ तहु कुमग्गु ।  
महिमारुयवेसाणरउयाइं ।  
तहिं तहिं चेयणविधइं चलंति ।  
भूपसु जीउं संभवइ तेम ।  
कर कणुं दंतु को कवणु हत्थि । 5  
अणु जेण जियइ तं करइ कम्मु ।  
गच्छइ इंदियबुद्धीपयासि ।  
पुज्जिउ पत्थरु किं पुण्णमाइ ।  
परजम्मि तेण कहिं कियउ पाउ ।  
तो जीव वि राय म करहि मंति । 10

16. १ K अरिहंत. २ P सोहंगु सीलु कुलु रुउ, ३ MB रुउ, ४ MBPK पोरिसु जसु.

17. १ MBP °जलघाइहिं. २ M जीव. ३ MBP कण्ण दंतु. ४ MB अणजम्मु. ५ MB सग्गु;  
P सग्गि; K सग्ग but corrects it to सग्गु. ६ K मुयइ.

16. 4 a °जोण्ह °कान्तिः. 7 a कइगमय° सैदान्तिकः सिद्धान्तवेत्ता; °वम्मि° वाम्मी.

17. 2 b °उयाइं उदकानि. 7 a परहर परगृहम्; b °पयासि °प्रकाशेन. 10 b राय हे राजन्.

घत्ता—कहिं किर सुक्कियदुक्कियदं विणु भूयंपहिं जीउ कहिं दिट्ठु ॥  
जो वाहिउ पासंडियहिं सो हउं मण्णमि चोरंहिं मुट्ठु ॥ १७ ॥

## 18

तं गिसुणिवि चविउं चउत्थएण  
परिपालियसमहिंसावएण  
जणि मइरहि दीसइ दिण्णु राउ  
देहें भावेण वि भिण्णु लोउ  
खरवडवारइरैसि वेसरसु  
दव्वंहिं तेहिं तेहउ जि होइ  
सिहि उल्लंविज्जइ पाणिणएण  
चचलयरु पवणु थिर जड धरित्ति  
एमेर्यं करिवि अप्पणिय उत्ति  
विणु जीवें कंहिं भूयइं मिलंति  
जइ परिणंवंति भासहि कुहेउ

मंतिहि पडुपणवियमत्थएण ।  
सुयवंतें परिणयसावएण ।  
चउदव्वपसूयहि पक्कु साउ ।  
किह घडइ तुहारउ भूयजोउ ।  
संभूयु णिदिट्ठु कत्थइ णरासु । 5  
वइच्चित्तु काइं संजोयवाइ ।  
पाणिउ मोसिज्जइ झत्ति तेण ।  
असरूवहं कहिं भेलावजुत्ति ।  
किं जंपसि पउरंदरिय वित्ति ।  
कायाकारेण ण परिणंवंति । 10  
तो काढयपिढरि सरिरु होउ ।

घत्ता—पंच्चिदियहिं विवज्जियउ मणविरहिउ चिम्मैत्तुं अयाणउ ॥  
जीउ जाइ किह भणसि तुहुं सग्गि होइ किह सुरवरराणउ ॥ १८ ॥

## 19

दीसइ पयत्थु जणि सहुं गुणेण  
कड्डिज्जइ आयसु कड्डुएण

पाहाणेण वि णिञ्चेयणेण ।  
जिह तिह सो कम्मणिबंधणेण ।

७ MBP भूएहिं. ८ MBP चोरें.

18. १ MB दिण्ण राउ. M विभिण्णलोउ; BP °विहिण्णलोउ. ३ MBP °रसु. ४ MBP उप्पत्ति करइ  
अण्णहु विणासु. ५ M उक्काविज्जइ. ६ MB एमेवि, P एमेव. ७ MBP भूयइ कहिं. ८ MBP परिणमंति.  
९ MBP परिणयति १० M चिमित्तु, B चिम्मत्तु.

19. १ B कड्डिएण P कड्डुएण.

18. 1 a च उ त्थ ए ण स्वयंबुद्धेन; b मं ति हि मन्त्रिणा. 2 a °स म हिं सा व ए ण मभ्यक्त्व—अहिंसाव्रतेन,  
अथवा, शमश्च अहिंसा चेति, b परि ण य सा व ए ण परिपक्कश्रावकेण. 3 b सा उ स्वादः. 5 a °व ड वा ° अक्षी.  
6 b सं जो य वा इ हे संयोगवादिन्. 9 प उ र द रि य वि ति चार्वाकमतम्. 11 b का ढ य ° काथः. 12 चि म्मे तु  
चैतन्यमात्रः.

19. 1 a प य त्थु पदार्थः. 2 a क ड्डु ए ण चुम्बकपाषाणेन.

अंपिउ पइं बहुपुजाहरेण  
णउ रूसइ सो कयणिग्गहेण  
णिज्जीउ ण याणइ सोक्खु दुक्खु  
भो भूयवाइ भूपहिं भुच्चु  
अइतंइय पंडिय कव्वु कवहि  
तहिं अवसरिं संभिण्णे पउत्तु  
हसियच्छियरमियकयासणाइ  
जो दीसइ सो खणवट्टि खंधु  
घत्ता—ता रिसिसमयहु भत्तएण उत्तरु दिण्णु तेण खर्णवाइहिं ॥

वत्थु गिरण्णउ णत्थि जगि तणजलरसु जि दुद्ध धुवुं गरिंहिं ॥ १९ ॥

किं किउ सुक्किउ भवि पत्थरेण ।  
णउ तूसइ भोयपरिग्गहेण ।  
जहिं जीउ तहिं जि तुहुं ताइं पेक्खु । 5  
तुहुं तुज्झ णत्थि जिणवयणमंतु ।  
अणिवद्धु असेद्धउं काइं चवहि ।  
उप्पज्जइ खाणि खणभंगच्चित्तु ।  
परियाणइ सुइरु वि वासणाइ ।  
णउ अप्पउ णउ णिव पासबंधु । 10

20

अं णत्थि बप्प तं कुम्मरोसु  
तं ण हवइ भणु को खणु वि थाइ  
को जाणइ जिणवरु मुइवि सच्चु  
जइ छिण्णउं मणु मणभाउ चेइ  
जइ दव्वइं तुह खणभंगुराइं  
किं सा खंधहं वाहिरिय दिट्ठ  
ता सयमइ चवइ मइविसालु  
जिह पयहु केरी सव्व माय  
गुरै सीसु धम्मु ववहारु एहु

तं वंझडिभु तं गयणपोसु ।  
अत्थिल्लउ किं पुणु खयहु जाइ ।  
वज्जिवि अरूवि परिणामि तच्चु ।  
तो अण्णे थवियउ अण्णु लेइ ।  
तो खणधंसिणि वासण ण काइं । 5  
अणणुहवु खाणिउं किं भंणिउं धिट्ठ ।  
मार्यंण्हिय सिविणय इंदजालु ।  
दीसंतु वि तिह जगु णत्थि राय ।  
परमत्थे णउ परु णउ सदेहु ।

१ MBP भवि सुक्किउ. २ MBP तह तुज्झ. ४ MBP असुद्धउं. ५ MBP खाणि भंगचित्तु. ६ MB खणवट्टि, P खाणि वट्टि. ७ MBP तेण दिण्णु. ८ MB खणवाइहो. ९ B अत्थि. १० MBP धुउ. ११ MB गाइहो.

20. १ MBP भगसि. २ MBP माइण्हिय. ३ P गुरुसीसधम्मु.

7 a कवहि काव्यं करोषि; b असद्धउ अश्रद्धं अप्रतीतिजनकम्. 8 b खण भंग वित्तु क्षणविनश्वरो जीवः. 9 b वासणाइ विससंस्कारेण. 10 a खंधु रूपविज्ञानवेदनासंज्ञासंस्काराः पञ्च स्कन्धाः; b पासबंधु कर्म. 12 गिरण्णउ निरन्वयम्.

20. 2 b अत्थिल्लउ अस्तित्वयुक्तम्. 3 b वज्जिवीत्यादि—अरूपि जीवादि वर्जाभित्वा. 4 b चेइ जानाति. 6 b अणणुहवु अननुभूतम्. 7 b मायण्हिय मृगनृष्णिका.

घत्ता—जंहुँउ मासखंड मुहवि धायउ सल्लिँगयपादीणहो ॥ 10  
 आमिसु गिँडे णहि णियउ मीणु णिमज्जिवि गउ णियँटाणहो ॥ २० ॥

## 21

जिह सोणरि तिह णरु उँहयभट्टु	परलोयहु लग्गिवि को ण णट्टु ।
अलियाइं जि णिसुणिवि मुयइ धीरे	णियतणु दंडइ किं णरयभीरु ।
आयासु पडेसइ भणिवि तसइ	टिट्ठिँहुँ उत्ताणियचरणु वसइ ॥
इसिपायपणामविणीयण	ता गुरुणा भणितं तुरीयण ।
जइ णत्थि किं पि कारणु ण कज्जु	तो किं बीहहि जइ पडइ वज्जु । 5
जइ होइ असंतउ अत्थकारि	तो आणहि सिविणंतेरि मयारि ।
णिण्णासाहि तेणाहियकरिद	किं चवहि असच्चउ विउँसयंद ।
णउ सहु ण तुहुँ णउ हउं ण वत्थु	भणु होइ इट्टपडिवत्ति केत्थु ।
सुणि राय जिणागँमहासियाइं	सुम्मंति ण जइयणभासियाइं ।

घत्ता—आसि तुहारइ वंसि हुउ पहु अरविँदु णाम विक्खायउ ॥ 10  
 पढमेपुत्तु हरिचंडु तहो पुणु कुरुविँदु इँदुँसमु जायउ ॥ २१ ॥

## 22

तहि णयरिहि सुहिकल्लाणकारि	रिउघरिणिहारकरवलयहारि ।
गयगंधहत्थि भडकालदूय	पडिकूलपिसुणसिरसूलभूय ।
ते तिण्णि वि सुहुँ अच्छंति जाम	लग्गउ डाहज्जरु पिउहि ताम ।

४ MBP जवू . ५ MBP सल्लिगयहु. ६ MB णियथाणहो.

21. १ MBP उभय°. २ K धीरु but corrects it to चीर and gloss वजं. ३ K टिट्ठिह.  
 ४ MB सिविणतर°. ५ MMB णिण्णाभिय. ६ MBP विउसइद. ७ MBPK °गमदूसियाइं. ८ K अरिविँदु.  
 ९ MBP पढमु पुत्तु. १० M इदुसम, B इंदरामु.

10 °पा ढी ण हो मत्स्यस्य.

21. 1 a सो ण रिं झुगालः. 4 b गुरुणा मन्त्रिणा. 7 a अ हिय क रिं द अहितकरीन्द्रा अधिकहस्तिनो  
 वा, b वि उ स यं द विद्वच्चन्द्र.

णिहृहृ हारु मलयरुहपंकु	धगधगह पलयसूक व ससंकु ।	
जलजलितु जालजलणु व जलद	आवहकालह आवह ण णिह ।	5
उवसमह ण केम वि अंगडाहु	थिउ कायरमुहुं वरस्वरणाहु ।	
तहि अवसरि पंकयवैत्तणेत्तु	पिउणा कोक्काविउ पढमंपुत्तु ।	
सो भणिउ तैण ह्यरवियराहं	जहि घणहं वणहं वेल्लीहेराहं ।	
जहि सुरहिउ कंपिउ देवदारु	सीयलु संचारियं हिमतुसारु ।	
जहि वाइ वाउ णीवइ सरीरु	तं णेवावहि सीओयतीरु ।	10
आइसहि सविज्जादेवयाउ	मइ णेतु तुरिउ मारुयरयाउ ।	
ता तेण भणिवि पेसणपसाउ	आवाहिउ खगदेवीणिहाउ ।	
घत्ता—सुएण सैविज्जउ पेसियउ ताउ तासु जोयंति ण संमुहुं ॥		
मंतु देउ ओसहु सयणु पुण्णि परंमुहि होइ परंमुहुं ॥ २२ ॥		

23

पाविट्टहु कह व ण जाइ प्राणु	आढत्तउ तेण रउहु ज्ञाणु ।	
लोएहिं भणिज्जइ देव जीय	संपयसुहि सुहियहं सेवणीय ।	
कंदइ करोहिं ताडंतु तौडुं	दुंहिदेसएण संणिहु णरिदु ।	
जुंज्जंतहं कपिउ कायदंदु	पल्लीदेहंतहु रुधिरबिदु ।	
णिंवाडिउ आसासिउ सो रविदु	सीयलु वणरुहलवुं णं छणिदु ।	5
तं पेच्छिवि हरियंदाणुयासु	आपसु दिण्णु ताए सुयासु ।	
जइ रत्तइहि जलकील करमि	तो पुत्त णिरुत्तउ णउं मरमि ।	

22. MBPK णिहुहृहृ. २ MBP जलजलइ जलितु जलणु. ३ MB °पत्त°. ४ MBP पढमु पुत्तु. ५ P वल्लीहेराहं. ६ MBP संचारिउ. ७ MBP सुविज्जउ.

23. १ MBP पाणु. २ MBP तुंडु; T तौडु उदग्म्, K तौडु, but records तौडु in second hand. ३ M reads this foot as 4 a. ४ P °देसिएहि. ५ M reads this foot as 3 b. ६ MBP हियसत्थिउ आसासिउ णरिदु. ७ MBP °लउ. ८ MBP रत्तइहि. ९ MBP णेय.

22. 4 a मलयरुह° चन्दनम्. 5 a जलद जलद्रं वल्लम्. 11 b मारुयरयाउ वायुवेगाः. 12 b आवाहिउ आकारितः; °णिहाउ समूहः.

23. 1 b आढत्तउ प्रारब्धम्. 2 b संपयसुहि लक्ष्मीसुखार्थम्. 3 a तौडु उदरम्; b कायदंदु शरीर-द्वयम्. 4 b पल्लीदेहंतहु विश्वंभरदेहमध्यात्. 5 b वणरुह° रुधिरम्; छणिदु पूर्णिमाचन्द्रः. 6 a हरियंदा-णुयासु कुरुविन्दस्य; b सुयासु सुतस्य.



किंकरकरसिरघडयाणिपण  
खाणि खोल्ल खणेपिणु भरहि तेम

ससमेसमहिसमृगंसोणिपण ।  
सुविहाणइ हउं तहिं ण्हामि जेम ।

घत्ता—णिसुणिवि हिंसावयणविहि गउ कुरुविंदु पिउहि मउलिधि कर ॥ 10  
कारिमकीलालहु भरिंर्यं विरहय वावि विहाणइ दुत्तर ॥ २३ ॥

## 24

तूसेपिणु तेत्थु पइट्टु राउ  
णउ लोहिउं लक्खारसु णिरुत्तु  
मणि पसरिउ तहु दुक्कम्मरेणु  
अइबुद्धिवंतु परावित्तजाणु  
णं करिहि विरुद्धउ जरकरेणु  
पक्खलिवि पाडिउ गिरिरायतुंगु  
मुउ गउ णरयहु सुहिसोयभग्गि  
अवरु वि णिसुणहि तुह वंसकेउ  
विरु हौंतउ णरवइ दंडधारि  
तहु तणउ तणउ वज्जियदुवालि  
तो देव दीहकालेण पत्थु

ण्हंतेण तेण बुज्जियउ साउ ।  
भायारउ णिहणमि पहु पुत्तु ।  
आयद्धिय भीसणु खग्गधेणु ।  
दिट्टउ कुरुविंदु पलायमाणु ।  
णरवइ तहु पच्छइ धावमाणु । 5  
णियकरद्धुरियाणिव्वट्टियंगु ।  
हाहारउ उट्टिउ बंधुवग्गि ।  
रूवेण णां सइं मयरकेउ ।  
दंडउ णांमं दंडियणियारि ।  
मणिमालि सउलगयणंसुमालि । 10  
घणरासिहि उप्परि देंतु हत्थु ।

घत्ता—पुत्तु कलत्तु चित्ति धरिवि पुंजियविविहदव्वपच्चारइ ॥  
अट्टज्जाणें पिउ मरिवि अजैयरु हुयउ णिययभंडारइ ॥ २४ ॥

१० MBP °मिग°. ११ GK भरिय वावि.

24. १ MBP तुहु णिसुणहि. २ P णामेण जि दडियारि. ३ MBP °दुवालि. ४ MBP ता.  
५ MBP अजगर.

9 a ख णि गर्ता. 11 क रि म की लाल हु कृत्रिमरुधरेण; वि हा ण इ प्रभाते.

24. 1 b साउ स्वादः. 9 b णि व्व ट्टिय गु विदारिताङ्गः. 10 a °दुवालि अन्यायः; b सउ ल ग य णं सु-  
मा लि स्वकुलगगनसूर्यः.

## 25

माणुसु दाढहिं दंतहिं दलई  
 ससिमणिजलकयसिहरग्गणहवणि  
 संभरियपुब्बजम्मंतरेण  
 मँब्भीसिउं भोयाँहोयणेण  
 महु एहु को वि चिरजँम्मबंधु  
 पुणु गंपि तेण पुच्छिउ मुण्हिहु  
 ह्यउ असमाहिइ मरिवि सप्यु  
 तं सुणिवि तेण णिवणंदणेण  
 पडिआवेप्पिणु घरु खवियकम्म  
 बुज्झिवि फणिणा संणासु कयउ  
 देवेण तेण जाणियभवेण  
 आविवि मणिमालिहि दिणु हारु  
 इहु अज्ज वि अच्छइ तुज्ज कंठि

जं घरि पइसइ तं तं गिलई ।  
 पुणु रँयणमालि पइसंतु भवणि ।  
 ओलक्खिउ णियसिखु विसहरेण ।  
 ता चित्तिउ खगवइजायएण ।  
 णं तो किं णउ भक्खइ मयंधु । 5  
 भासियउ तेण दंडयणरिहु ।  
 किं ण वियाणहि अप्पणउ बप्यु ।  
 पिउणेहकँरुणकंपिर्धमणेण ।  
 जिणणाहहु केरउ कहिउ धम्मु ।  
 मुउ जायउ सुरु उरयक्खु गयउ । 10  
 कय गुरुपुज्जा सुमहुच्छवेण ।  
 जाणइ पुरु देसु कहांवयारु ।  
 ताराणियरु वँ णं मेरुकंठि ।

घत्ता—तं णिसुणेवि महाबलेण भरहमोत्तियावलि जोएप्पिणु ॥

हयतमु पुर्फंदंतसरिसु आलिंगियउ मंति विहसेप्पिणु ॥ २५ ॥ 15

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइय  
 महाभव्वभरहाणुमणिय महाकव्वे वितंडापंडियपंडाविहंडणं णाम  
 वीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २० ॥

॥ संधि ॥ २० ॥

25. १ MBP दलेइ. २ MBP गिलेइ. ३ MBP रयणिमालि. ४ MBP मं भोसिउ. ५ MB भोया-  
 भोयणेण; PT भोयाभोयएण. ६ B चिरधम्मबंधु. ७ MBP °करण°. ८ M °कप्पिय°. ९ T कथावयारु  
 कृतावतारः १० MBP व मेरुकंठि. ११ MBP पुप्फयंत°.

25. 4 a मब्भी सिउ मा भेषीस्त्वम्, भो या हो वणे ण फणामण्डपाधःकृतेन फटाटोपेन. 10 b ग य उ  
 नष्टम्. 12 b क हा व यारु कथावतारः.

## XXI

बुद्धंतहु णरइ पडंतहं। बहुमणियमवतरुहलहो ॥  
सइंबुद्धं णाणविसुद्धं दिण्णउ हत्थु महाबलहो ॥ ध्रुवकं ॥

### I

<p>पुणु तेण पजंपिउं सुइमहु तुह तायपियामहु कुलधवलु उप्पाइवि केवलु णाण गुणि तुह तायताउ सयबलु णिवरु माहिंदसग्गि हूयउ अमरु गउ मेरुहि तइया भावियउ अइवलु तुह पिउ भयवंतु वसि णयविणयालहं णवजोव्वणहं तुह एम पियामहपियंपहुइ रुइइज्ञाणआरुडदुइ</p>	<p>भवसयसंविचयमलभारहरु । णाम्मेण पसिद्धउ सहसवलु । गउ मोक्खणिवासहु परममुणि । 5 परिपालिवि सावयवयर्पयरु । सत्तंबुहिआउपमाणधरु । तुहुं मइं सहुं तें बोलावियउ । गउ वणवासहु होएवि रिसि । सिरि अप्पिवि णियणियणंदणहं । 10 सुम्मंनि देव साहियसुगइ । संपत्ता णरयतिरिक्खगइ ।</p>
--	---

घत्ता—हयकम्मं जिणवरधम्मं उवरि उवरि रंकु वि चडइ ॥

कयगावें पत्थिव पावें हेट्टामुहुं राउ वि पडइ ॥ १ ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

यस्य जनप्रगिद्धमत्सरभरमनवमपाम्य चारुणि  
प्रनिहतपक्षपातदानश्रारुरसि सदा विराजने ।  
वसति सरस्वती च सानन्दमनाविलवदनपङ्कजे  
राजति जयतु जगति भरनेश्वरमयममलमङ्गलः ॥

MP read विराजयते for विराजने, °मलाणिल° for मनाविल°, स जयति जयतु for राजति जयतु; M reads °श्वरसुखमयममल°; P reads °श्वरजयमयममल° for °श्वरमयममल°. GK do not give it.

1. १ MBP पथपिउ. २ MBP केवलणाणु गुणि. ३ MBP °पवर. ४ P °जोव्वणाहं. ५ P °णंद-  
णाह. ६ MBP °पिउ°.

1. 6 a णिवरु नृवरः. 11 a °पिय° पिता.

2

तं सुणिवि पबुद्ध उ भव्वयणु  
संकाकंखाहिं विवज्जियउ  
अण्णहिं दिणि उडुगणमेहलहो  
कंचणधूलीरयपिणलहो  
मणियरकञ्चुरियणहंतरहो  
आसीणसुरासुरसुंदरहो  
सिरिर्भहासालसुणंदणइं  
वज्जियफणिकामिणिणेउरइं  
किंणरपारद्धथोत्तसयइं  
अकयाइं विलंबियतोरणइं  
मंडिय सीहासैणवेइयउ

अइबलंसुउ हुउ उवसंतमणु ।  
गुरु तेण सुवण्णहिं पुज्जियउ ।  
खलखलखलंतणिज्झरजलहो ।  
करिदंतविहिण्णसिलायलहो ।  
सिहरुञ्चाइयसयमहघरहो । 5  
गउ वंदणहत्तिइ मंदरहो ।  
सउमणससरसपंडुयवणइं ।  
वालियचंदुज्जलचामरइं ।  
विद्धंसियमाणवभवैभयइं ।  
पर्यसिधि जिणविंबणिहेलणइं । 10  
परियंचिधि अंचिवि चेइयउ ।

घत्ता—णरविहुणा खगवइगुरुणा करु णिउ सेसासयदलहो ॥

तं मणियहिं महुयरञ्चुणियहिं भणइ व र्तर दुक्कियजलहो ॥ २ ॥

3

ता तहिं ओलंबियभुयजुयलु  
मलु जासु सरीरि ण ज्ञाणि मलु  
जसु भमइ जासु णउ भमइ मणु  
वंकत्तणु भउंहइ आयरिउ  
रसु परमागामि णउ कामरसु  
सिरि केसजडत्तणु जासु गय

संपत्तउ चारणमुणिजुयलु ।  
णउ परतावाणि बलु सुतवि बलु ।  
णहु भज्जइ काहिं मि ण सीलगुणु ।  
णउ जासु मइइ किं पि वि धरिउ ।  
वसु जं ण समिच्छइ धम्मवसु । 5  
णउ सीस वियाणियसत्तणय ।

2. १ MB णिसुणिवि. २ MB अइबलु सुउ. ३ BP वंदणभात्तिइ. ४ P °भइ°. ५ MBP ° भव-  
सयइं. ६ MBP पइसिधि. ७ MBP सिहासण°. ८ MBPKT तव.

3. १ P मह and gloss मती. २ MBP जो.

2. 8 a व ज्जिय° शब्दायमानः. 10 b पयसि वि प्रवेशं कृत्वा. 11 a °वे इयउ चतुष्किाः; b  
चे इयउ प्रतिमाः. 12 °विहु णा °चन्द्रेण; से सा स य द ल हो निर्माल्यस्थपद्मस्य कृते. 13 म णि य हिं मनोः;  
त र दु क्कि म ज ल हो दुष्कृतजलात् तर, पापं मुक्त्वा सुखी भव.

3. 3 b ण हु णखम्.

दुम्मह मय अट्ट वि जासु मय  
तं रिसिजुयलुल्लउ वंदियउ  
हउं अज्जि वि एम ण करमि तउ

कय पंविदियहुं णं जेण दय ।  
सइंबुद्धे अप्पउ णिदियउ ।  
केत्तिउ किर पोसमि असुइवउ ।

घत्ता— सिरिगेहइ पुव्वधिदेहइ देसु महाकच्छउ वसइ ॥

10

तंणयरहु सुरगिरिसिहरहु आयउ तं तहु दिहि विसइ ॥ ३ ॥

4

तं अरुहुंयंघरतित्थसरे  
तहि एक्खु साहु आइच्चगइ  
ते पुच्छिय बुद्धे वे वि जणै  
महु सामि महाबलु संभरह  
जाणियतसथावरजीवगइ  
इह जंबुदीवि दाहिणभरहे  
आसण्णभव्वु सो णिवखयरु  
भोयासिउ जं तं णैउ रहमि  
पच्छिमविदेहि गंधिलविसए  
णामे सिरिसेणु सिरिणिलउ  
तहु पढमु पुत्तु जर्यवम्मु हुउ  
सो रुच्चइ जणणिजणणमणहो

ण्हायउ ण वडइ संसौरजरे ।  
अण्णेक्खु अरिजउ सुद्धमइ ।  
तुम्हइं तिणाणपाणीयर्षण ।  
किं भव्वु अभव्वु व वज्जरह ।  
तं णिसुणीवि जंपइ जट्टे जइ ।  
अग्गइ जुयाइपारंभवहे ।  
दहंमइ भवि होसइ तित्थयरु ।  
दुम्मोयत्तणु तहु तुह कहमि ।  
सीहउरि णारिंदु विमुक्कभए ।  
सुंदरिदेविहि दरिसियपुलउ ।  
वीयउ सिरिवम्मु णरेहिं थुउ ।  
सो भावइ सयलहु परियणहो ।

5

10

घत्ता—सुहडत्तणु बुद्धिबुहत्तणु विर्विहि असेसु वि जलहिजले ॥

किं गुणगणु मण्णइ सज्जणु वर्णणइ पुण्णु जि भल्लउ भुवणयले ॥ ४ ॥

३ BP ण जी जीवदय. ४ MBP अज.

4. १ MBP °जुयंघरि. २ MBP सत्तारदरे. ३ MBP जणा. ४ MBP °घणा. ५ M जेट्टु जइ.

६ MBP वसमइ. ७ B जंतउ णउ; P जतणउ. ८ MBP पढमु पुत्तु. ९ MBP अजवमु. १० MBP णरिवथुउ. ११ P थिवहुं. १२ M मण्णइ.

7 a मय मदाः; मम मृताः. 11 दि हि धृतिः.

4. 1 a °सरे जले. 6 b जुयाइपारंभवहे कर्मभूमिप्रथमप्रवेशमार्गे.

## 5

मेलंतें संतें रज्जरइ	वड लेंतें जंतें परमगइ ।
णरणाहें अइअजुत्तु कियउ	लहुतणयहु रज्जु समप्पियउ ।
जैयवम्मैं ता परिचितियउ	को फेडइ दइवणियंतियउ ।
णिइइवहु सव्वु वि चप्फलउ	णिइइवकाजि जगु सीयलउ ।
णिइइवु णवंतु वि को गणइ	णिइइवहु भासिउ को सुणइ । 5
णिइइवहु सुकई भरिउ सरु	ण फलइ णिइइवें णिहिउ तरु ।
णिइइवहु बंधु वि होइ परु	णिइइवहु देव ण देंति वरु ।
ण हणइ भेसहु वि रुयापसरु	वियलइ सुवण्णु पत्तउ वि करु ।
णिइइवहु विहडइ घरिणि घरु	ण करइ सणेहुँ मायापियरु ।
उज्जमुँ करेवि अप्पउ दमइ	णिइइवहु किं सिरि संकमइ । 10

घत्ता—णहु लंघउ गिरि आसंघउ जं जि करइ तं णिप्फलउ ॥

हयकारं किं ववसायं सव्वहु दइधु जि अगलउ ॥ ५ ॥

## 6

इणं चित्तमाणो	अहं णिंदमाणो ।
अरायं वहंतो	अणंगं वहंतो ।
पिउस्सायहंतो	रमासायहंतो ।
रईसूहवेणं	सयासूहवेणं ।
जसेणं सियं जं	मुहेणं जियं जं । 5

5. १ P णरणाहें अजुत्तु २ MBP अजवम्मैं. ३ P णिइइवहु. ४ MBP णिइइउ. ५ MBP सुक्खइ. ६ BP सिणेहु. ७ MBP उज्जउ.

6. १ B णिइमाणो. २ B °स्सायहंतो. ३ MBPT सियज्ज. ४ MBPT जियज्ज and gloss in T मुखेन कृत्वा जिताब्जं यद्यौवनम्.

5. 4 a च फलउ चपलम्.

6. 1 a इणं एतत्त्वाम्. 2 a अराय वैरायम्. 3 a पिउस्सायहंतो पितर कथयन्, b रमासायहंतो लक्ष्मीस्वादहन्ता. 4 a रईसूहवेणं कामदेवोद्भवेन, b सयासूहवेण सर्वदा सर्वेषामभिलषणीयेन. 5 a जसेणं सियं जं यशसा निर्मलं यद्यौवनम्; b जियं जितम्.

दयंगं समंतो	समेणं समंतो ।	
णियं जोव्वणंतं	गथो सो वणंतं ।	
किडीखद्धकंदं	णैयासीणकंदं ।	
सरेणं सवंतं	महावंसवंतं ।	
सवेल्लीपिर्यालं	पुलिदीपियालं ।	10
विणित्तंकुरोहं	विचित्तंकुरोहं ।	
अलीपीयवासं	फणिदाहिवासं ।	
महृहिं पलित्तं	दवग्गीपलित्तं ।	
पवडुंतपीलुं	पगज्जंतपीलुं ।	
हुयातावसीयं	सया तावसीयं ।	15
पवित्तं पम्मणं	हयाणेयसण्णं ।	
विलुत्तंतयासं	पकुल्लंतयासं ।	
सुसंतावयासं	णिहित्तावयासं ।	

घत्ता—तहिं काणणि थियपंचाणणि दिट्ठु भडारउ दुरियमहु ॥

जयवम्मं समियकुक्कम्मं मोक्खहु केरउ णाइ पहु ॥ ६ ॥ 20

## 7

जसु तित्थगमणु अहंवाचठाणु	जसु धम्मभणणु अहवा सुमोणु ।
जसु इंदियरणु अह परमकरणु	जसु अरुहचित्तं अह सुयसरणु ।
जसु जोयणिइ अह जागरणु	जसु खल्लेकिउ दुहु अह तवचरणु ।

५ MBP गिरिलगकंदं, T णयासीणकंदं गिरिलगमंघं, ६ M वियाल, ७ T पहुल्लतयास, ८ MBP अजवम्मं.

7. १ MBPT अहवा सठाणु २ P धम्मसवणु, ३ MBP समोणु, ४ MBT परमकरणु, ५ P खल्लेकिउ.

6 a दयंगं दयालवम्, b समंतो उपशमयन. 8 a किडी° सूकर, b णयासीणकंदं गिरिलगमंघम्. 10 b पुलिदीपियालं पुलिन्दीप्रियम्. 11 a विणित्तं विनिर्गतः, 12 a अलीपीयवासं भ्रमरैः पीतगन्धम्; b °अहिवासं °अधिष्ठानम् 14 a °पीलुं °वृक्षविशेषम् b °पीलुं °गजम्. 15 a हुयातावसीयं संजानोष्णशीतम्, b तावसीयं तापसेभ्यो हितम्. 16 b हयाणेयसण्णं हता अनेकैराहारादिसंज्ञा यत्र. 17 a विलुत्तंतयासं विलुसा अन्तकस्याशा येन, अजरामरपदग्रापकत्वात्.

7. a अवठाणु कायोत्सर्गः.

जसु सयणु धराणि अह कट्टु तिणु  
 उववासु जासु अह जिणकहिउ  
 तहु दुम्महवम्महणिम्महहो  
 सिरिसेणसुएण समिच्छियउ  
 छुहु केसभारु आलुं चियउ  
 तामायउ पणवहुं परमजइ

जो तणुमैलधरु मणमलेण विणु ।  
 परपिंडु जेण सुद्धउ गहिउ 5  
 िवाउ करेवि सयंपहहो ।  
 अणगारत्तणउं पडिच्छियउ ।  
 छुहु करणावियारु वि खंचियउ ।  
 महिहरु णामे खयरहिवइ ।

घत्ता—जंपाणहिं विविहविमाणहिं णिहिलु णहंगणु छाइयउ ॥ 10  
 वैभइएं णवपावइएं महुं णिन्वायवि जोइयउ ॥ ७ ॥

## 8

बद्धउ णियाणु परिसिय जहिं  
 जइ अन्थि किं पि रिसिधम्मफलु  
 ता तक्खणि णिग्गउ गिरिविवरे  
 रुहिरुल्लउ धारहिं परिगलितु  
 गुरुणा भवपासणासकरइं  
 असुधामु विसेणे झडत्ति हउ  
 अलयाउरि रायहु तणइ घरे  
 सो एहु महाबलु भोयरसु

कुलि रिद्धि होउ महु जम्मु तहिं ।  
 तो होउ रज्जु विहवियखलु ।  
 कालउ विसहरु तहु लग्गु करे ।  
 धरणियलि कलेवरु रलुघुलितु ।  
 कहियाइं पंचपरमक्खरइं । 5  
 गउ जीउ ईसिउवसमियरउ ।  
 उप्पण्णु मणोहराहि उयरे ।  
 णउ मुयइ तेण सणियाणवसु ।

घत्ता—मिच्छत्ते मणकुडिलत्ते अवरु णियाणणिबंधणेण ॥

जगु ताविउ आवइ पाविउ णं वणगयउल्लु बंधणेण ॥ ८ ॥ 10

६ MB कट्टुतिणु. ७ MBP मलहरु वि मलेण. ८ P °सेणु सुएण. ९ MBP तावायउ. १० MP सुहु.  
 ११ MBK णिन्वाइवि.

8. १ MBP परियलितुं. २ P झडत्ति विसेण. ३ P जीविउ इसिउवसमियउ.

11 णवपावइएं नवप्रभजितेन जयवर्ममुनिना.

8. 6 b ईसिउवसमियरउ ईषदुपशमितरजाः.



## 9

णत्थित्तविवाइहिं दुम्मइहिं  
 भुयदंडिहिं चप्पिवि पेल्लियउ  
 पइं कड्ढिवि सुंविवारिहिं ण्हविउ  
 णिसि सिविणैइ अज्जु णियच्छियउ  
 सुत्तुट्टिउ काइं मि णउ चवइ  
 दिट्ठउ णिमिच्चु तं णउ कहइ  
 अचिरेण जाहि पँहुमंदिरहो  
 जा ण कहइ सो पत्थिवु सुयणु  
 अण्णु वि लइ दुक्का खयँणियइ  
 पडिबज्जइ धम्मु म भंति करु  
 संबोहहि जाइवि तुरिउं तुहुं  
 तं णिसुणिवि जइवरवोल्लियउ  
 साहारिवि सुमरिवि जिणवयणु

संभिण्णमहामइसयमइहिं ।  
 अप्पाणउं कहमि घल्लियउ ।  
 उच्चाइवि सीहासाणि थविउ ।  
 तुह णाहँ दुरिउ दुगुंछियउ ।  
 अच्छइ विंताऊरिउ णिवइ । 5  
 आगमणु तुहारउ मणि महइ ।  
 भम्मरु व भमंतु इंदीवरहो ।  
 ता पहिलउ सिविणउं तुहुं जि भणु ।  
 एवहिं सो एक्कु मासु जियइ ।  
 दिवसहिं होसइ तेलोकगुरु । 10  
 पावेसइ भव्वु अणंतु सुहुं ।  
 णियहिइयवउ दुक्खँ सल्लियउ ।  
 आलोइवि गर्मणिच्छइ गयणु ।

घत्ता—रिसि संसिवि बे वि णमंसिवि लहु संचल्लिउ मंतिवरु ॥

पहु पविमलु गुरु दंसणजलु तण्हइ जोयइ वोमसरु ॥ ९ ॥ 15

## 10

तावेत्तहि णहयालि णिव्वडिउ  
 चितइ सो बहुंविहु भिण्णमइ  
 किं यणु णं णं पडिखलियमरु  
 इय जाम कमेण विवेइयउ

खेयरु खगवइदिट्ठिहि चडिउ ।  
 किं गिरिवरु णं णं खँयलगइ ।  
 किं पाक्खि ण एहु पलंबकरु ।  
 ता बुद्धु सँमीचु पराइयउ ।

9. १ MBP मिच्छत्तविवाइहिं. २ MBP सुइवारिहिं. ३ P सिविणउ अज्ज. ४ MBP बुहमंदिरह. ५ MB खयणिवइ. ६ MBP गयणिच्छइ गमणु.

10. १ MBP ता एत्तहि. २ MB बहुंविह. ३ MB खयरगइ. ४ MBP णिवेण णिवेइयउ. ५ MBP समीउ.

9. 1 a णत्थित्तविवाइहिं नास्तिकविवादेः 9 a खयणियइ क्षयस्यावश्यभावः. 13 b गमणिच्छइ गमनेच्छया.

10. 1 a णिव्वडिउ प्रकटीभूतः. 2 b भिण्णमइ नानामतिः; b खयलगइ खतलगतिः. 3 b पडिखलियमरु प्रतिहतवातः

उद्विधि आर्लिगिउ णिववरेण  
 पुणु भणिउं अउव्वु पसाउ किउ  
 ता भणइ राउ णिसि लक्खियउ  
 मंते पउत्तु भो णउ रहमि  
 चंपियउ ज्जेहि ते जइ कुगुरु  
 जं जलु तं जिणवरिदवयणु  
 हरिविदारोहणु सुगइसुहुं

तेण वि णिहुं पणविउ णियसिरेण । 6  
 किंकरु हउं परमुण्णइहि णिउ ।  
 पइं जीवियव्वु महु रक्खियउ ।  
 पइं विट्टुउ दंसणु हउं कहमि ।  
 जो पंहु तं जि दुग्गइविहुह ।  
 धोयउ मइं तुहुं सुविसुद्धतणु । 10  
 पुणु कहइ संतु वियसंतमुहुं ।

घत्ता—मइं देसिउ चारणभासिउ देव कयाइ ण संचलइ ॥

सहुं सामे एक्कें मामे आउ तुहारउ परिगेलइ ॥ १० ॥

## II

ना भणइ महाबलु रयविरमु  
 तुहुं वप्प मज्झु दाहिणउ करु  
 आसण्णमरणु किं तउ केरमि  
 इय जंपिधि मउलियकरयलहो  
 परियणसयणाइं खमाइयइं  
 तणुमणवयसिरइं वि मुंडियइं  
 मलभरियइं चरियइं छंडियइं  
 णीसेसं परिग्गहु परिहरिवि  
 पच्छा घुलंतसाहारवणि

कल्लाणमिच्चु बंधउ परमु ।  
 आलग्गणखंभु सुसंतियरु ।  
 हउं एवहिं संणोसिण मरमि ।  
 पुरि अप्पिवि पुत्तहु अइवलहो ।  
 मुंणिभावणसुत्तइं भावियइं । 5  
 इंदियइं खगिंदे दंडियइं ।  
 मायामिच्छत्तइं खंडियइं ।  
 अरहंतु भडारउ संभरिवि ।  
 थिउ सहससिहरि जिणवरभवणि ।

घत्ता—अहिसित्तइं सुद्धपवित्तइं जिणपडिबिबइं पुज्जियइं ॥ 10

हयभमरहिं चालियचमरहिं खयरकुमारहिं विज्जियइं ॥ ११ ॥

६ MBP णिउ. ७ P परमुण्णइ णिहउ. ८ B चंपियउ. ९ B परियलइ.

11. १ MBP आसणु मरणु. २ MBP चरमि. ३ MBP संणासणु करमि. ४ M णियभावण°. ५ MBP णीसेसु. ६ MBP पुण्णपवित्तइ.

6 ७ परमुण्णइ हि णिउ परमोर्धति नीतः. 8 ७ दंसणु स्वप्न.

11. 9 ७ सहससिहरि सहस्रशिखरे.

## 12

कमकमलपडियभुवणत्तयहो  
 तियसिंदविदवंदियपयहो  
 उक्खित्त चरुय पीणीयं भूय  
 हत्थिहडा इव घंटासुहल  
 जलणिहिवेला इव सरयणिय  
 तरुरा इ व विविहकुसुमथइय  
 घम्मो इव दित्तदीवसहिय  
 अट्टाहइं महिवि जिणाहिवइ  
 पाउग्गमरणविहि तेण कय

उम्भासियसियत्तत्तयहो ।  
 पारद्ध पुज्ज परमप्पयहो ।  
 माया इय उच्चाइय धूर्ये ।  
 वरणरवइसेवा इव सहल ।  
 वेसा इव दरिसियदंप्पणिय । 5  
 णहलच्छि व पउरकेउच्छइय ।  
 सुत्तिसिहरि व चंदणमहमहिय ।  
 वावीस दिवस संगासगइ ।  
 सुहझाणारंभे प्राणं गय ।

यत्ता—ईसाणइ सँगाविमाणइ सिरिपहि सिरिकमलिणभमरु ॥ 10  
 णिच्छम्मं णिउ णियधम्मं खणमेत्तेण अजरु अमरु ॥ १२ ॥

## 13

मणिमइ सुमहंतधंतविलइ  
 सो मरिवि महाबलु तियसकुले  
 हुउ देउ दिव्वु ललियंगधरु  
 वेउव्वियणयणसुहावणिय  
 बिहिं घडियहिं रंजिय सुरवणिय

उववायसँयणि संपुडणिलइ ।  
 णं विज्जुपुंजु जलहरपडले ।  
 लँलियंगु णाम णं कुसुमसरु ।  
 तवणीयनेय ओहावणिय ।  
 जिह तणु तिह जोव्वणंसिरि जणिय । 5

12. १ MBP फणियभुयहो. २ MBP उच्चाइयभुवहो, T भूय पुत्री धूपश्च. ३ MB °दप्पणय.  
 ४ K omits this line. ५ MBP पाण. ६ MBP सभिम विमाणइ.

13. १ MBPK °सयण°. २ P विज्जुपुंजु. ३ MBP ललियगणामु. ४ MBP तवणीयकंति°. ५ P जोव्वणु.

12. 3 b मायाइव जननीव; धूयपुत्री धूपश्च. 6 a °राइ पक्तिः. 7 a घम्मा इव प्रथमनरकभूमि-  
 स्तत्संबन्धि तिर्यकक्षेत्रम्. 8 a अट्टाहइं अष्ट दिनानि.

13. 1 a °धत विलइ ध्वान्तविनाशे. 4 b तवणीयतेयओहावणिय सुवर्णदीप्तिरस्कारिका.  
 5 a सुरवणिय सुरवनिता.

लह पुण्णविलेसें सार्वडिउ  
 हत्ये सहुं कंकणु मणिजडिउ  
 मउडें सहुं कुसुममाल चडिये  
 वच्छे सहुं बंभसुत्तु विमलु  
 तहु जम्मविलासपयासणउं  
 णयणहि सहुं अणमिसपेच्छणउं

पापं सहुं णेरु तहु घडिउ ।  
 सीसें सहुं मउडु वि पाँयडिउ ।  
 कंठे सहुं सियहाराबलिय ।  
 सहुं कडियलेण कडिसुत्तु चलु ।  
 सहजायउ णिवसणभूसणउं । 10  
 लायण्णु भणमि किं तहु तणउं ।

घत्ता—णउ रोमइं अट्टियच्चम्मइं ण छिरिउं णउ मुहि मीसियउ  
 घणधंदिमहि कंचणपडिमहि संणिहु देहुं पयासियउ ॥ १३ ॥

## 14

उहु देउ णिसण्णउ गच्चहरे  
 ता दुंदुहि वज्जिय गहिरसर  
 वरिसिय कप्पयरु कुसुमवरिसु  
 एए के को हं कवणु घरु  
 सुत्तुट्टिउ जिह जा संभरइ  
 बुज्झिउ सइंबुद्धहु संचरिउ  
 उट्टिउ सीहांसणि संणिहिउ  
 जिणु कामकसायविवज्जियउ  
 उरैपेल्लियपीणपयोहरहं  
 णक्खत्तकंतिसंकासणह  
 चिरभवपरिपालियसुद्धवय  
 सो एयहिं सहुं सुहुं तहिं वसइ

णियदिट्ठि देंतु णियबाहुसिरे ।  
 धाइय जयजय परमंत सुर ।  
 अमरंगणगणु णच्चिउ संरसु ।  
 अवलोयइ णियउरु पाँउ करु ।  
 तां अवहि तासु मणि वित्थरइ । 5  
 संणासु वि जं णरभवि चरिउ ।  
 देवहिं अहिसेउ तासु विहिउ ।  
 तेण वि परमेसरु पुज्जियउ ।  
 चालीससयइं पवरच्छरहं ।  
 महपविसयंपहकणयपह । 10  
 कणयलय सुहासिणि विज्जुलय ।  
 एक्के पक्खेण समूससइ ।

घत्ता—सुहसाउ परहं परमाउ जलहिमाणवित्थेरिण ॥

सो जीवइ एक्केसु जेमइ वरिससहासें भरियण ॥ १४ ॥

६ M सपडउ; BP संपडिउ. ७ B पायपउ. ८ MBP add after this: कण्णे सहुं कुंडलु विप्फुरिउ.  
 ९ MBP चलिय. १० MBP अणिमिस°. ११ MBP सिरउ. १२ T घणणिविडं. १३ MB देउ.

14. १ P पभणति. २ MP सरिसु. ३ MRP पाय. ४ MBP तो. ५ P सिंहासणि. ६ MB देविहिं.  
 ७ M घरि, BP उरि. ८ P °हरिहं. ९ M बिज्जुलिय. १० MBP सहुं तहिं. ११ MB थिरु; P थियउ  
 १२ MBP °वित्थरियण. १३ M एकसु.

14. 10 a संकासणह सदशनखाः. 14 एकसुएकवारस्.

## 15

सो रयणिउ सत्त समुच्छियउ  
तहु पल्लपुहुत्ताउसि वणिय  
कालेण चिरंतण अवहरिय  
तहि अहरुल्लइ कामेण रसु  
तहि णाहिदेसि गहिरत्तणउं  
तहि थणजुयलइ कट्ठिणत्तणउं  
मंदरकंदरि कीलियखयरे  
तहि तणुपवियारें गय दिवस

सुहकारि ण केण णियच्छियउ ।  
मालूरपीणपीवरथणिय ।  
अण्णेक सयंपह अवयरिय ।  
तहिं दिट्ठिसियत्तणि णिययजसु ।  
तहिं भउंहाजुइ कुडिलत्तणउं । 5  
तेण जि संणिहियउं अप्पणउं ।  
कुंडूलरुजगदिगुहाविवरे ।  
तहु ललियंगहु रइरमणवस ।

घत्ता—भरहाहिव णिसुणि महाणिव रिसिहिं पुराणहिं वज्जरिण्ण ।

गयकालइ अइअसरालइ पुष्पयंतगइसंभरिण्ण ॥ १५ ॥

10

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महकइपुष्पयंतविरहय  
महाभवभरहाणुमण्णिणप महाकव्वे महाबलसंज्ञासंभरणं ललियंगुप्पत्ती णाम  
एकवासिमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २१ ॥

॥ संधि ॥ २१ ॥

15. १ B समिच्छियउ. २ MBP °पहुत्ताउस वणिय. ३ Tp रिसइ. ४ MB पुराणइ; P पुराणिहिं.  
५ MBP वज्जरिय; T वज्जरइ. ६ MBP °समरिय, 'T मभरइ. ७ MBPK सणासण.

15. 1 a समुच्छियउ समुच्छितः उच्चः. 2 a पल्लपुहुत्ताउसि पल्य पृथुत्व आयुर्यस्याः; व णिय वनिता. 9-10 भरहाहि वेत्यादि—गौतमस्वामी श्रेणिकं कथयति । हे भरताधिप श्रेणिक, निशृणु त्वम् । पूर्वगते कालेऽती वा सराले अतिशयेन बहुतरे भरतो नष्टः । रिसइ ऋपभनाथस्तस्य पुराणानि वज्जरइ कथयति । तस्य च कालस्यानोपायभूतां ( ? ) पुष्पदन्तगतिं चन्द्रादित्यगतिं स्मरति सप्रधारयति । अथवा पुष्पदन्तजिनस्य गतिं मुक्तिं तत्प्रापकमार्गं वा सभरइ धरति पुष्पाति वा । रिसिहिं मि ति पाठे ' गए कालए अइअसरालए तह तणुपवियारें गयदिवसहो ललियंगहो ' इति भरताधिप निशृणु । कथंभूते काले पुराणए वज्जरिण्ण ऋषिभिर्माणधरदेवादिभिः पुराणे कथिते तत्कालनयनार्थं पुष्पदन्तगतिः सस्मृता ' इति.

XXII

सज्जनमणसंताविरहं रइसुहवारणाइं दुप्पेच्छइं ॥  
दिट्टइं दुक्कियदुमहलइं ललियंगेण मरणणेवच्छइं ॥ धुवकं ॥

I

दुद्धरखयकाले पडिपेह्लिउ  
मउ देवंगवत्थे दरमहल्लिउ  
पैरिवड्डिउ भोएसु चिरायउ  
परियणु सोयधिरसु जंपंतउ  
मोहियमणु माणिणिउ गिरिक्खइ  
ता तियसगुरु को वि तहिं भासइ  
भो ललियंग पेमह्लहि भयजरु  
सुर्यरहि जं सइंबुद्धे मिट्टउ  
तं जिणपायपोमु सब्भावे  
दुल्लेसाइ णरत्तणहाणिहि  
संसारंधिवमूलुम्मूलइं

दिट्टउ कुसुमदांसु ओहल्लिउ ।  
दिट्टउ अंगु किं पि मलकालिउ ।  
आहरणोहु दिट्टु णित्तेयउ । 5  
दिट्टउ सुरतरुवणु कंपंतउ ।  
जा सो माणसदुक्खे सुक्खइ ।  
णियइणिओएं सक्कु वि णासइ ।  
तिट्टुयणि णंत्थि को वि अजरामरु ।  
जसु सेवाहलु एत्थु जि दिट्टउ । 10  
जेण विमुच्चहि भवकयपावे ।  
मा पडिहीसि बण्य मूर्गीजेणिहि ।  
मीं होहिति दूरि व्रतंसीलइं ।

घत्ता—जायइं पुणु वि पणट्टाइं रंगणडा इव भावविचित्तइं ॥

भेह्लिवि सारसंयसिद्धिसिरि दुल्लहाइं णउ होति सुरत्तइं ॥ १ ॥ 15

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza -

मदकारिदलितकुम्भमुक्ताफलकरभरभासुरानना  
मृगपतिनादरेण यस्या धृतमनघमनर्घमासनम ।  
निर्मलनरपवित्रभूषणगणभूषितवपुरदारुणा  
भारतमल्ल सास्तु देवी तव बहुविधमम्बिका मुदे ॥

GK do not give it.

1. १ MB °दाम. २ MB °वत्थ. ३ MBP दरमल्लियउ. ४ MBP °कलियउ. ५ M परि-  
यट्ठिय; B परिवट्ठिय. ६ P दुक्खइ. ७ MBP को वि णत्थि. ८ M सुम्बरहि, BP सुमरहि. ९ MBP जेण  
जि मुच्चहि भवभयपावे. १० MBPT मिग°. ११ MBP मा हो होति. १२ MBP वयसीलइं; K वयसीलइं.  
१३ MB सासयसिद्धि.

1. 2 °जे व च्छइ चिह्नानि. 3 b ओ हल्लिउ म्लानम्. 4 a दर° ईपत 8 b णियइणिओएं  
भावितव्यतासंसर्गेण.

## 2

ता ललियंगे तं आयणिवि  
 तित्थइं जाइवि सुहतित्थंकरु  
 कुवलपहिं कुवलयउद्धरणु  
 सँदूरहिं दुरुज्झियवम्महु  
 वीसंतहिं वसिल्लु जियविग्गहु  
 तिलयहिं तिजगतिलउ जो जाणित्त  
 बंधूपहिं वंधविद्धंसणु  
 घणसालेहिं सीलसुँसालिलघणु  
 धूर्वहडेहिं णिहीहडदावउ  
 मालईहिं मालइयामहिरुहु  
 अञ्चुयकण्णजिणालउ जाइवि  
 जीबित्त मुक्कउ खाणि ललियंगे

वारवार णियहियवइ मणिवि ।  
 चंपपाहिं पर्यं परमसुहंकरु ।  
 कुंदहिं कुंददसणु सुहकारणु ।  
 मंदारहिं दारासाणिम्महु ।  
 जूहियाहिं रिसिजूहपरिग्गहु । 5  
 सुरहिं ण मेरुहु मेरुहु ण्हाणित्त ।  
 बउँलहिं अवउलकेवलदंसणु ।  
 चंदणेहिं पसमियणिच्चंदणु ।  
 दीवपहिं तेल्लोकहु दीवउ ।  
 जिणु पुज्जियउँ तेण पूँयारुहु । 10  
 चेईतरुतलि जइवइ झाइवि ।  
 अंगु विलीणउं पुण्णविहंगे ।

घत्ता—जंबूदीवहु मंडणिय मणुयजणणि चित्तियसुहदाइणि ॥

मेरुहि पुव्वविदेहि थिय णाम पुक्खलावइ जणमेइणि ॥ २ ॥

## 3

करारिंदविददलवट्टणु  
 साहुद्धरणु जेत्यु णंदणवाणि  
 जेत्यु लोउ विणँणोणल्लउ

उरुपलखेडु णाम तहिं पट्टणु ।  
 णउ णंदंनि कहिं मि दासइ जणि ।  
 उद्धरणु एक्कु जि करहुल्लउ ।

2. १ MBP °नित्थकर, २ M पर, B पर ३ BP °सुहकर, ४ MBP सिंदूरहि, ५ P °णिम्महु, ६ PT वासनिहि, ७ P मेरुहि मेरुहि ८ MPK बध्णविद्धसणु, ९ MB अवियल°, P अविउल°, T अवउल°, १० P °सुललिय°, ११ धूर्वहडेहि, १२ P पुज्जित्त, १३ MBP पुजारुहु, १४ MBPK °विहंगे, T °विहगे, 3. १ M उप्पलु खेडु, २ MB णामे, णामु ३ T साहुलाभओणल्लउ.

2. 4 b दारा मा° कलत्राभिलाषः. 5 a वासतहिं आतिमुक्तकै., 7 b अवउलकेवलदंसणु अशरीरग्राहि सिद्धस्वरूपप्रापक केवल केवलज्ञान यरय. 8 a घणसालहि कर्पूरैः; b °णिच्चंदणु नित्याकन्दनम्. 10 a मालइया° लक्ष्मीलतिका. 12 b पुण्ण विहंगे पुण्यक्षयेण.

3 2 a साहुद्धरणु शाखानामुद्धरणम्. 3 a विणँणोणल्लउ विनयेन प्रणतः; b करहुल्लउ उष्ट्रः.

करि कंकणु बंधणु पँइ नेउरु	अण्णु ण जेत्थुँ अत्थि दुक्खाउरु ।
खलु तेह्लिर्यँहरि णिरु णिण्णेहउ	अण्णु सञ्चु जहिँ सुयणु सणेहउ । 5
वाहि लिहिय भिसिहि विसयरेँ	दीम्मइ तणुहि ण णरवँरणियरेँ ।
सरसंधाणु जेत्थु वायरणइ	णउ पर्यक्कभीमि रायरणइ ।
जहिँ हयव्वरु हरि णउ णारीयणु	वंसु जि छिइसहिउ णउ पुरयणु ।
कुणडि रसक्खउ णउ विवणीवहि	अँसिहि अपेउ वारि णउ सरिदहि ।
अंजणु णयणि जेत्थु ण तवोहणि	णायभंगु गारुडि ण धणज्जणि । 10
संकरु पडु ण वण्णविहिसंकरु	दोहउ गोवालु जि णउ किंकरु ।
जहिँ कुंजरु अण्णइ मायंगउ	णउ माँणवु कइ वि मायं गउ ।

घत्ता—जणु कलहं सहं सज्जणेण ण करइ को वि ण विप्पिउ भासइ ॥

जहिँ कलहंसहं गइपसरु पंगीणि पंगणि वावहि दीसइ ॥ ३ ॥

4

वज्जबाहु णामेँ तहिँ णरवइ	रिद्धिइ जेण पँरिज्जिउ सुरवइ ।
जासु कित्ति गय दसेँहिँ दियंतहिँ	आरूढी वरदिक्करिदंतहिँ ।
जासु खँगु वेरंतु वियंभिउ	जासु रञ्जु ण परेहिँ णिसुंभिउ ।
जासु कोसु चाएण पँवित्तिउ	जेण तिजगु सुँकुडुँवु वि चित्तिउ ।
जेण गोत्तु धम्मेणुज्जोइउ	जेण चिन्तु जिणपयजुइ दोइउ । 5
पेम्मसासवासालवसुंधरि	ताँसु देवि णामेण वसुंधरि ।
सगगहु गम्भवासि अवयरियउ	णवमासहिँ उयरहु णीसरियउ ।
ताहि तेण जणियउ ललियंगउ	णंदगु णं णरवेसु अणंगउ ।

४ M पउ, B पए. ५ P अत्थि जेत्थु. ६ MBP तेह्लियणिहि. ७ B णरवइरणियरेँ. ८ MB परचक्कभीमरायरणइ; P परयक्के भीमं ९ MB आसि अपेउ. १० MBP माणउ कया वि. ११ MBP मंदिरपगणवाविहि.

4. १ MBP परज्जिउ. २ MBP दिसहिँ. ३ MB खगि धीरत्तु. ४ MB पवत्तिउ. ५ MBP सकुडुँवु व. ६ MBP तहु वल्लह महएवि वसुंधरि.

7 a सरसंधा णु स्वरसंधिः, पक्षे, शरसंधानम्; वायर णइ व्याकरणे. 8 a हयवरु अश्ववर, हतो वरो यस्य नारीगणस्य; b छिइ° छिद्रं दोषश्च. 9 a कुण डि कुत्तिसतनटे, विवणीवहि अट्टमार्गं. 10 a अंजणु अज्जनं पापं च; b णायभंगु सर्पभङ्गो न्यायभङ्गश्च. 11 a संकरुपडु प्रभुरेव सुखकारी गंकरो न तु वर्णसकरः; b दोहउ गोदोहकः, द्विधवः स्वामिद्वययुक्तः. 12 b मायंगउ मायां गतः. 13 कलहं सकण्टकम्.

4. 6 a पेम्मे त्यादि—ज्ञेहधान्यस्य वर्षयुक्ता भूमिः.



कुडिलहिं केसहिं उज्जयगत्तउ	रहसहिं जंघहिं दीहरणेत्तउ ।	
किसमज्जेण थोरभुयजुयलें	वियडें कडियलेण वच्छयलें ।	10
सत्ते णाहिं सरें गंभीरें	छज्जइ सीसें छत्तायारें ।	
कोमलपयहिं अकोमलहत्यहिं	अवरेहिं मि लंक्खणहिं पसत्थहिं ।	

घत्ता—लक्खणपुंजु व पुंजियउ एकहिं विहिणा अकयविहायउ ॥

वज्जंकियकरचरणयलु वज्जजंघु वज्जोवमकायउ ॥ ४ ॥

## 5

सो कुमारु तहिं वडुइ जइयहुं	णवरीसाणकप्पि ता तइयहुं ।	
रुयइ सयंपह पियविरहालस	हा ण सुहासि मज्झु सर माणस ।	
हा हे सग्गल्लोय विच्छायउ	विणु णाहेण णिरुव्वसु जायउ ।	
हा कप्पहुम किं किर फुल्लहि	पइमरणे वि कट्ट णो हुल्लहि ।	
हा तुंबरुं गाइयउं पडुच्चइ	रमणे विणु महु किं पि ण रुच्चइ ।	5
हा लैलियंगदेवु कहिं पेच्छमि	हा हे सांवि <sup>3</sup> केव कहिं अच्छमि ।	
को वारइ भवियव्वु ह्वंतउ	इह देवहु वि कम्मु बलवंतउ ।	
एव चवंति विमुक्कुच्छाहिय	दढधम्मं सुरेण संबोहिय ।	
तावसघरिणि व मंदरवण्णी	मंदरसेलहु मंदरवण्णी ।	
गय सउमणससुरासाजिणहरि	मुइय सरारिबिंदु धारिवि सिरि <sup>10</sup> ।	10
पुव्वविदेहि तहिं जि सकमलसर	णयैरि पुंडरिगिणि पंडुरघर ।	

घत्ता—जहिं घरसिहरि णडंतएण घरसिहरोवरि णियंडि विलंबिउ ॥

णवजलकणचक्खंतएण नूसिवि मेहु मऊरें चुंविउ ॥ ५ ॥

७ MB उज्जयगत्तहिं; P उज्जयगत्तहिं. ८ MBP दीहरणेत्तहिं, ९ MBP सत्ते १० MBP लक्खणेहिं.

5. १ P तुंबरु. २ MBP ललियगु देउ. ३ MBP मामि and gloss in T सखि. ४ MBP भवंतउ. ५ P उरि. ६ MB ° सरि. ७ M णयर. ८ MB °घरि. ९ P णिवाडि.

11 a सत्ते मत्त्वेन. 13 अ क य वि हा य उ अकृतविभाग .

5. 1 b ण व री सा ण क प्पि केवलईशानकल्पे. 6 b सां वि स्वामिन्. 9 a म द र व ण्णी मेइसट्टशवर्णा; b मंदरवण्णी स्तोकरमणीया 10 a °सुरासा° पूर्वदिशा, b सरारिबिंदु स्मरारिजिनस्तस्य विम्बम्. 12 विलंबिउ स्थितः.

## 6

णिवेसेण रम्मा	णहालगाहम्मा ।	
मुर्णिदेहिं सोम्मा	जिर्णुद्धिद्धम्मा ।	
धणेणं समिद्धा	जसेणं पसिद्धा ।	
सुएणं पबुद्धा	वएणं विसुद्धा ।	
घणारामवंती	विसाला वसंती ।	5
सुपायारदुग्गा	कयाणेयमग्गा ।	
अणय्यादुवारा	अणेयण्यारा ।	
जणेणं महत्था	कएणं कयत्था ।	
भरणं विमुक्का	सया जा णिरिक्का ।	
इर्माए पुगीए	अंमेओ सिरिए ।	10
महेणं महंतो	गुणी वज्जदंतो	
पह चक्रवट्टी	सुमग्गाणुवट्टी ।	
कयंतो व्व दंडी	सई तस्स चंडी ।	

घत्ता—लच्छि व सोहइ लच्छिमइ तासु विउलि वच्छयलि विलग्गी ॥

शक्ति शम्के कुद्धएण मुक्का भल्लि व हियवइ लग्गी ॥ ६ ॥

15

## 7

अरिहरिणोहवियारणवाहहु	तहि सुंदरिहि तासु णरणाहहु ।
सिरि व मिरिप्पहसुरहरवासिणि	चविवि सयंपहतियसविलासिणि ।
स्मिग्मइ णामे तणुरुह हई	णाइ कुमारहं कामविसूइ ।
पाय सकुंकुम किं तहि वण्णमि	वम्महमुद्दावेसु व मण्णमि ।

6. १ P जिणोद्धि°, २ B omits this foot, ३ MP विवुद्धा, ४ MBP add after this: गुणाण पविता. ५ MBP add after this: महतियवती. ६ MBP सपायार°. ७ MBP अणेयहुवारा. ८ B एण. ९ P इमेया सिरिए.

7. १ B °वावहु.

6. 1 a णि वे से ण र च न या. 9 b णि रि क्का चो र र हि ता. 11 a म हे ण प्र ता पे न. 13 b चं डी भा र्या.  
7. 2 a मि रि प्प ह सु र ह र ° ध्री प्र भ वि मा न म्. 4 b ° मु द्दा वे सु ° मु द्दा व ता र :

तंबइं पोमरायरुइचोक्खइं	रत्तउ किं रावंति ण णक्खइं ।	5
पेच्छिवि तरुणिजाणुसंधाणइं	मुणि वि करंति मयणसंधाणइं ।	
ऊरूवाहियालिअंतरि चुउ	कासु ण च्चलइ बप्प मण्णेंदुउ ।	
कासु ण गिण्णासिउ कयैकित्तणु	सोणीगैरुयत्तणि ण गुरुत्तणु ।	
मयरइयहुयवहधूमावलि	रोमावलि तरुणहं हिययावलि ।	
णाहिकूउ रइवइरससासणु	तिवलिभंगु वयभंगपयासणु ।	10
थणंथडुत्ते विडथडुत्तणु	अवसें णासइ विसेण विसत्तणु ।	
वम्महभूमि जासु देही कर	तासु जि कामकुंड थिउं सुहरु ।	

घत्ता—पोष्फैलिकंठसमाणहो कंठहु को ण होइ उक्कंठिउ ॥

मुहरसु मुद्धहि सिद्धरसु सुहसुवण्णसिद्धियरु परिट्टिउ ॥ ७ ॥

## 8

बहुवण्णहिं णयणहि कयरायउ	रत्तउ एक्कवण्णु जगु जायउ ।	
कासु ण हित्तंउ किर धुत्तत्तणु	भउंहावंकत्ते वंक्कत्तणु ।	
अंगोवंगपपसघुलंतहं	केसंपासु पासु व परवित्तहं ।	
जाहि रूउ सुरंगुरु ण वियक्कइ	जा वण्णहुं फणिवइ वि ण सक्कइ ।	
सा जामच्छइ मउलियणेत्ती	सिरिहरि सत्तमभूमिहि सुत्ती ।	5
णिसि ससहरकरहिमलव लैती	सालसु अंगविलासु वहंती ।	
मणहरवणु जसहरु जिणु आयउ	कहिं मि णे मायउ देवणिकायउ ।	
वीणावंसमउंदर्णिणहहिं	णाणाथोत्तवित्तथुंइसहहिं ।	
ता उट्टिउ कलयलु गरुआरउ	वियलिउ कण्णहिं णिहाभारउ ।	

२ MK कियकित्तणु. ३ MBPK सोणीगरुयत्ते ण. ४ MK गुरुयत्तणु. ५ M reads this line as: अवसें णासइ विसेण विसत्तणु, थणथडुत्ते विडथडुत्तणु. ६ P पिउ. ७ MB कोकिलकंठ°, P कोकिलिकंठ°.

8. १ MP बहुवण्णहिं रयणहि; B विहवण्णहि रयणहि. २ M हित्तइं. ३ MBK केसपास. ४ MBP सुरगुरु वि ण अक्खइ. ५ B समाइउ. ६ P °णिणायहिं. ७ B °थुद्धभइहिं.

6 b मय ण संधाणइं कामसंकल्पाः, 7 b °हेंदुउ कन्दुक. 8 a कय कित्तणु कृतव्यावर्णनम्. 10 a रइ-वइरस° कामरसः. 11 a विसे ण विसत्तणु विषेणैव विषत्वं नश्यति.

8. 8 a °मउंद° मृदङ्गः.

घत्ता—सुर जोयंतिहि ताहि तर्हि जम्मावरणइं खणि ओसरियइं ॥ 10  
सर्गभवंतरु संभरिवि थक्कइं मणि ललियंगहु चरियइं ॥ ८ ॥

9

हा ललियंग देव पभणंती  
मुच्छिय सैचिय सलिलणिवाणं  
उट्टिय णीससंति अइरीणी  
वम्महु अट्टं वि अंगइं तावइ  
मलयाणिलु पलर्याणलु भावइ  
जहिं संजायउ चित्तु जि सयदलु  
णहाणु सोयणहाणु व णउ हच्चइ  
असुहारु व आहारु ण गेणहइ  
फुल्लु णयणफुल्लु व असुहावउ  
पुरु जमपुरु व घरु वि अरइयरउ  
गेयसरु वि णं रिउमुक्कउ सरु  
चंदणु इंधणु विरहहुयासहु

पंडिय स महियलि तणु विहुणंती ।  
आसासिय च्चलचामरवाणं ।  
वइयविओगवेयविहाणी ।  
घित्त जलइ जलइ जणियावइ ।  
भूसणु सणु करि बद्धउ णावइ । 5  
तर्हि किं किज्जइ सीयलु सयदलु ।  
वसणु वसणसंणिहु सा सुच्चइ ।  
णंदणवणु पिउवणसमु मण्णइ ।  
तंबोलु वि बोलु व कयतावउ ।  
पँरहुयलविउ महुरु णं महुरउ । 10  
सवलहणउं सबलहणु व दिहिहरु ।  
ता सहीहिं विण्णविउ महीसहु ।

घत्ता—आवेप्पिणु लच्छामइइ सह सपियाइ पईहरवाहें ॥

पियसुमरणदुहदुम्मणिय दुहिय णिहालिय णरवरणाहें ॥ ९ ॥

८ M पुन्वभवंतरु.

9. १ MLP पडिय महीयालि. २ MBP °णिहाणं. ३ MBP उट्टी. ४ MBPK °विओय°. ५ MBP अट्टइं अगइं. ६ BP पलयाणिलु. ७ MBP परहुय°. ८ MBP विरहु. ९ M सहीइ.

9. 2 a णिवाणं °निपातेन. 3 b दइयेत्यादि— दयितेन प्रियेण सह वियोगस्तस्य वेग आवेष्टाः वेदोऽनुभवो वा, तेन विदीर्णा. 5 सणु शणबन्धनम्. 6 a सयदलु शतखण्डम्; b सयदलु कमलम्. 7 b वसणु वल्लम्, वसण° व्यसन दुःखम्. 8 a असुहारु प्राणहारकः. 10 a अरइयरउ अरतिकरम्. 11 b सबलहणउ समालम्भनं चन्दनादि; सबलहणु स्वबलघातकं मृतकलान वा. 13 सपियाइ स्वप्रियया; पईहरवाहें प्रदीर्घवाष्पेण.

## 10

सुर्येरिउ मुद्धइ पुव्विल्लउ वरु  
इय परिणामपवित्ति वियप्पिवि  
गउ धरणीसु णिहेल्लेणु जावहिं  
आइय देहिं मि कहिउ णवेप्पिणु  
जसहरासु उप्पणउ केवलु  
ता रायं सीहासणु मेल्लिवि  
भणिउ जयहि अरहंतभडारा  
जयहि तिसल्लवेल्लिणिल्लरण

किं जाणहुं सुरु किंणरु किं णरु ।  
पंडियधाइहि पुत्ति समप्पिवि ।  
पहरणउववणवालैय तावहिं ।  
देव देव णिसुणहि मणु देप्पिणु ।  
आउहसालहि चक्रु णिरग्गेलु । 6  
सिरमउडेण मर्हायलु पेह्लिवि ।  
जय संसारमहणवतारा ।  
सविणयसुयणमणोरहपूरण ।

घत्ता—निभिरु हणंतु करंतु दिहि उवसमवंतहु वियलियगव्वहो ॥

ताँडुग्गामियउ दिवसयरु णाणविसेसु व सोहइ भव्वहो ॥ १० ॥ 10

## 11

दंतघायगिरिभिस्तिवियारणि  
कुलिसदसणु कयमणतमणिरसणु  
समवसरणु गउ सेण्णे सहियउ  
दिट्ठु असोयहु मूलि असोयउ  
दिव्ववाणि मुणि णिव्वाणेसरु  
चलचामरु णिच्चांमरसेविउ  
दुंदुंहरिउ दुहिरवैणिच्चारणु  
छत्तसमासिउ छत्ततियालउ

कण्णतालअलिवारणि वारणि ।  
आरुहेवि ससिसियसुइणिवसणु ।  
अण्णु वि जो एहउ सो सहियउ ।  
कुसुमंचिउ हयकोसुमसायउ ।  
अमउ मयाग्गिवादि संठिउ परु । 6  
भामंडलरुइमंडलदीवउ ।  
लोयसारु संसारुत्तारणु ।  
अतियालउ संवुद्धतियालउ ।

10. १ MBP सुर्येरिउ. २ MBP णिहेल्लेणि. ३ MBP °वालहि. ४ MBP आविवि. ५ MBP पुणिम्लु. ६ MBP ता उग्गामियउ.

11. १ P णिच्चारु. २ P दुंदुंहि°. ३ MBP दुहरव°; T दुहिरव°.

11. 1 b °ताल° व्यजनः. 2 a कु लि स द स णु वज्रदन्तः. 3 b सहियउ आत्महितः. 4 b को सु म-  
सायउ कामः. 5 b मया रि वी डि मिहासने. 6 b °म ड ल दी व उ लोकप्रकाशकः. 7 a दु हिर व° दुःखित-  
शब्दः. 8 a छत्त तिया ल उ छत्रात्रिकयुक्तः, b अ तिया ल उ स्त्रीरहितः अतिक्रान्तकालो वा, °तिया ल उ  
°त्रिकालः

कमलासणु केसउ जगि सो हरु	तित्थणाहु णामेण जसोहरु ।	
वेउ अणिदिउ वंदिउ भावें	वडुंतेण विसुद्धें भावें ।	10
अबहिणाणु रायं उप्पाइउ	रुवि दव्वुं णीसेसु वि वेइउ ।	

घत्ता—विद्धउ कणयरसेण जिह लोहु वि हेमत्तणु पडिवज्जइ ॥

तिह जिणभावेण भावियहो भवियहु णाणभाउ संपज्जइ ॥ ११ ॥

12

पहु गुरु वंदिवि आयउ गेहहु	तित्ति ण पुण्णी पुत्ति सणेहहु ।	
आलिंगिवि अंके वइसारिय	सा तप्पंति तेण विणिवारिय ।	
चवइ णिवइ चिरु पइं जाणंतउ	अच्चइ सुरवर्गिनु हउं होंतउ ।	
भीयइ कप्पि विमाणि णिवांसिणि	तुहुं ललियंगहु तणिय विलासिणि ।	
महुरालांविणि पाणपियारी	एवहिं हई धूव महारी ।	5
मा शिज्जहि सो तुज्जु मिलेसइ	हाह व उररुहजुयलि धुलेसइ ।	
बाँलहि मइ वीलइ पच्छाइय	पुणु वि धाइ पडुणा संकेइय ।	
दुत्थियउ जडयणु कूरसरावहु	गोगाइहि खरु खरहु सरावहु ।	
उल्हावियविओयसंतावहु	णवजोव्वणु जणु कामालावहु ।	
विबुहहु बुहु गोवालु वि गोचहु	महिलहि महिल जाइ सम्भावहु ।	10
णिवेण कहिवि दिट्ठंतकहाणउं	पुणु दिव्विजयहु दिण्णु पयाणउं ।	

घत्ता—आउंविद्यतणु थरहरिउ फणिवइ भीयउ किं पि ण जंपइ ॥

इयगयरहणरपयदलिय जंतें रायं मेइणि कंपइ ॥ १२ ॥

४ MBP उप्पायउ, ५ MB दिव्वु.

12. १ MBP विलासिणि. २ MBP ° लावणि. ३ MB बाल एम वीलइ. ४ MP जडयण. ५ B उल्हाविय°.

13 भ विय हु भव्यस्य.

12. 8 b सरावहु सशब्दस्य.

## 13

तरलतमालतालतालीघणि  
फलिहसिलायलम्मि आसीणी  
सुइरु महारुहाउ संचालिवि  
एकहिं दिणि करणिहियकवोली  
णवकर्यलीकंदलसोमाली  
पुत्ति पुत्ति मोणव्वउ छंड्हि  
पुत्ति पुत्ति किं अप्पउ दंडहि  
मायहि गुज्झु काइं किर रक्खहि

गइ णरिदि णवकंकेलीघणि ।  
परभवपियसंभरणे ण्णीणी ।  
कोमलकरकमलें तणु लालिधि ।  
पंडुगंडविलुलियविहुराली ।  
कंचुईइ औउच्छिय वाली । 5  
पुत्ति पुत्ति तणु तणुलय मंडहि ।  
ण्णवीडि दंतगहिं खंडहि ।  
मज्झु वि किं णियमणु ण समक्खहि ।

घत्ता—तं आयण्णिवि रायसुय णीससंति णियजम्मु पयासइ ॥

धराणि व वेल्लिहि मज्झु तुहुं जणणि माइ तुह काइं ण सीसइ ॥ १३ ॥ 10

## 14

धार्दइसांडि मेरुपुव्विहइ  
भूयगाउं जिह लोयपसिद्धउ  
गोरसडु जो तवसि वसिलु व  
पविउलखलु वि ण जो खलसंकुलु  
जो करि व्व णरचइढोइयकरु  
कच्छुल्ललु णं गिहिवयधारउ  
णागयचु णामें तहिं वणिवरु

पुव्वविदेहि देसि गंधिल्लइ ।  
पाडलिगाउं अत्थि धणरिद्धउ ।  
करिसणजाणउ जो सुंकरिलु व ।  
जो हलहरु वि भुवाणि ण भाणउ बलु ।  
बहुकंकणु णं वरकामिणिकरु । 5  
णियवइगक्खिणउ णं सेवारउ ।  
सुरइवहुल्लियाहि वल्लहु वरु ।

13. १ MP तहिं ककेलीवणि, B तहिं किंकेलीवणि. २ MBP °कयलीसुकद°. ३ MBP आउच्छी.  
४ MBP छडुहि.

14. १ MB धायइ°, P धाइय°. २ T भूयगामु. ३ MB सकरिह्.

13. 1 a तरल° दीर्घाः. 5 b कंचुईइ पण्डिनया धान्या. 8 a माय हि धान्याः.

14. 2 a भूयगाउं भूतग्राम. शरीरम्. 3 a गोरसडु गोरसाढ्यः, पक्षे, गौः वाणी तत्र रसिक-  
स्तपस्वी स्यात्; b करिसण° कर्षकः, पक्षे, हस्तिशब्दः, सुकरिल्ल हस्तिपालकः. 4 a °खलु धान्यमलनस्थानम्.  
5 b बहुकंकणु बहुजलभान्यः, पक्षे, बहुगुवर्णवलयः. 6 b णियवइ° निजपतिः; पक्षे, निजवृत्तिः; सेवारउ  
सेवकः. 7 b सुरइवहुल्लियाहि सुरतिरेव वधूस्तस्याः.

णंदुं णंदिमिस्तु वि सुउ जायउ

पुणु मायइ मणमोहणु लद्धउ

घत्ता—सिरिवह सिरिहर वणितणय अवर वि हउं तिज्जी लहुयारी ॥

णामे णिण्णामिणि विसम दालिदिणि जर्णाविप्पियगारी ॥ १४ ॥

10

15

अम्हारउ घरु मोक्खु विसेसइ

णिद्धणु णं घणणासि णहंगणु

॥ णीरसु कच्चु व कुकइहि केरउ

अट्टभाउ हंडइं दो पियरइं

कडियलवेदियवक्कलवासइं

अम्हइं दहजणाइं तहिं सयणाइं

पंडुरपविरलदीहरदंतइं

वारणवरियहु तरुसंछण्णहु

तहिं अंबरतिलयम्मि महीहरि

सरलैहरियपत्तहु तंबिरयहु

अण्णु वि दारुभारु गरुयारउ

णिक्कलसउ णीरंजणु दीसइ ।

णिक्कणु तोलीरु व सारियरणु ।

तं जिह तिह पुणु णिरलंकारउ ।

कयखलचणयमुट्टिआहारइं ।

हडहडफुट्टफरुससिरकेसइं ।

कलहंतइं भासियदुक्कयणाइं ।

जावच्छहुं परकम्मु करंतइं ।

तावेक्कहिं दिणि हउं गयै रण्णहु ।

विहरंतियइ गहीरदरीहरि ।

मइं उच्चोलि भरियं माहुरयहु ।

सीसि णिहिउ णं दुक्खहं भारउ ।

5

10

घत्ता—जा पल्लट्टमि णियघरहो ताम लोउ मइं पंतु पलोइउ ॥

रयणालंकारहिं विप्फुरिउ जिणु वंदहुं णं सुरयणु आइउ ॥ १५ ॥

16

ता कट्टुभारु

महियलि धिवेवि

णं दुक्खभारु ।

णरु मइं णवेवि ।

४ M णदि णंदिमिस्तु वि सुउ जायउ; B णदिमिस्तु णंदि वि सुउ जायउ; P णंदि णंदिमिस्तु वि संजायउ.

५ MBPK वरसेणु. ६ P जणविप्पियं but adds °मण° in the margin between जण and विप्पिय.

15. १ MBPK तोणीरु. २ M ज जिह. ३ MK गउ. ४ MBP तहिं पुणु अंबरतिलयमहीहरि.

५ MB सरलु. ६ M भरय. ७ MBPK दुक्कियं. ८ MBP फुरिउ. ९ M सुरयणु आइउ; P सुरयणु चलिउ.

15. 1 b णिक्कलसउ घटरहितम्, अन्यत्र, निष्कलानां चरितमनुष्ठान प्रवृत्तिर्वा.



पुच्छियउ हेउ	कहिं चलिउ लोउ ।	
ता तेण वुचु	सुतिगुत्तिगुत्तु ।	
सिद्धत्थकामु	जो <sup>१</sup> जित्तकामु ।	5
जो मुक्कसत्थु	मैणधरियसत्थु ।	
जो बुहणिहाणु	गुणमणि णिहाणु ।	
धुयमोहवासु	तरुमूलवासु ।	
जो पांडसेसु	चम्मट्टिसेसु ।	
गयसरिरयालि	जो सिसिरयालि ।	10
बहि सयणसाइं	जो सुअवसाइं ।	
तिव्वुण्हजेट्टि	वइसाहजेट्टि ।	
रवियर विसहइ	जोएण सहइ ।	
जो मुणिससंकु	हयपरमसंकु ।	
तडु गंपि वासु	पिहियासवासु ।	15
पर्णवंति पाय	पुच्छंति राय ।	
परलोयमग्गु	सग्गापवग्गु ।	
चिरसंभवाइं	जाणइ भवाइं ।	
रिसि णाणधारि	जिणधम्मचारि ।	
इह गिरिवरम्मि	सो कंदरम्मि ।	20
णिवसइ कुलीणि	दोगच्चखीणि ।	

घत्ता—ता मइं थोरथणत्थलिय दंडिखंडु पसरेण्णिणु थवियउ ॥

पइसिवि साहु मर्हासहहि जइपयजुयलउ भस्तिइ णवियउ ॥ १६ ॥

16. १ P पुच्छियउ. २ U omits this foot; K however adds it the margin.  
३ M मणि धरिय°. ४ B °मूलु. ५ P पावसेसु. ६ MB add after this: वरिसति भेहि, दुहु सहिय  
देहि. ७ M पणवत. ८ MBP महासहहो.

16. 5 a सिद्धत्थकामु सिद्धार्थे मोक्षे कामोऽभिलाषो यस्य. 7 b °णि हा णु वृभानुः. 10 a ग य-  
स रिर या लि गतो नदीना वेगो यस्मिन् काले. 11 b सु अवसाइ षडावश्यकादिषु सुष्ठु उच्यतः. 12 a °जे ट्टि  
°महति. 13 b सहइ शोभते. 14 b हयपरमसंकु हतपरमशङ्कः. 22 दंडिखंडु शतजर्जरं जीर्णं सिवितं  
वज्रम्.

17

तवपहावर्विभाविद्यर्वासु  
 कवणें दइवें हउं दालिहिणि  
 कहहि देव तुहुं सच्चउ जाणहि  
 ता पभैणइ समणगणपहाणउ  
 णिसुणि पुत्ति अक्खमि जम्मंतरु  
 गामि पलासपुत्ति तहिं गहवइ  
 गेहिणि ताहि धूय तुहुं इइ  
 १० वीयरायसिद्धंतु पढंतहु  
 एक्कहिं दिणि वणि खंतिसणाहहु  
 अण्णाणइ पइं उप्परि घत्तिउ  
 किमिकुलपूयहहिरदुग्गंधउ  
 सुणहकलेवरु दियहि दुइज्जइ  
 घत्ता—णउ तूसहिं रूसंति ण वि सुइ कंदप्पदप्पखयगारा ॥  
 जो मंडइ जो खंडइ वि विहिं मि समाणा समणभडारा ॥ १७ ॥

पुच्छिउं पुणु तेहिं सो पिहियासउ ।  
 इइं दोग्गयगोत्तणियंविणि ।  
 दीण वि मइं पियवयणें पीणहि ।  
 दीणु वि राउ वि मज्झु समाणउ ।  
 आसि कयउ जं पइं कम्मंतरु । 5  
 देविल्लु सुमइ तासु रंजियमइ ।  
 हलिय जुवाणहं णं रइदुइ ।  
 जीवाजीवभेय भावंतहु ।  
 हसिवि समाहिगुत्तमुणिणाहहु ।  
 रिसिणा तणुभूसणु व विचित्तिउ । 10  
 पयडियदंतउ विहडियरंधउ ।  
 तैवं जि पुणु वि पदिदु तइज्जइ ।

18

पेच्छिवि मुणि परिहरियसकायउ  
 भसणसरीरु धिचु अण्णेत्तहि  
 पणउ करेप्पिणु जोइ खमाविउ  
 ईसिं समेण मरेवि असुहाउलि  
 धम्मं मुच्चहि दुक्कियदुक्खहु  
 फणित्तरणइं जगि को अहिणाणइ

तुह अणुकंपभाउ संजायउ ।  
 पइं णयणेहिं ण दीसइ जेत्तहि ।  
 तेण जि खमभाउ जि संभाविउ ।  
 तुहुं इइंसि एत्थु दुग्गैयकुलि ।  
 धम्मु णिसुणि सुइ कारणु सोक्खहु । 5  
 परमत्थेण धम्मु को जाणइ ।

17. १ MBP वासउ. २ MBP पुच्छिउ तें पुणु सो. ३ MBP पभणइ मुणि समणपहाणउ.  
 ४ MP पइं जं. ५ MBP गाम. ६ MB ललिय°. ७ MBP तेम जि पुणु पइ दिदु. ८ MBP तूसंति.  
 18. १ MP परिहरियसकायउ; B परिहरिसंकायउ. २ B °भाव. ३ MBP इसि उवसग्गे मरिवि.  
 ४ M असुहाहलि. ५ MB दुग्गम°.

17. 7 b हलिय कर्षकली.  
 18. 1 a परि हरिय सकायउ परित्यक्तस्वशरीरः.

लोहयधम्मु होई जलण्हाणें  
धम्मु होइ पुणु पुणु अच्चवणें  
धम्मु होइ घइ णियमुहदंसणि  
धम्मु होइ तिलपायसभोयणि  
धम्मु होइ गोमुत्तु पियंतहु  
धम्मु होइ पलवेहु करंतहु

वीरपुरिसभंडणवक्खाणें ।  
पाहाणुपरि पत्थरठवणें ।  
धम्मु होइ सुंरहीतणुफंसणि ।  
धम्मु होउ आसत्थालिंगणि । 10  
धम्मु होइ महु मज्जु रंसंतहु ।  
छेलउ कुकुडु किडि मारंतहु ।

घत्ता—एहु कुलिगु कुधम्मु सुए एण णवर दुग्गइ जाइजइ ॥

जिणणहेण पयासियउ धम्मु अहिसालक्खणु किजइ ॥ १८ ॥

## 19

मेहलकण्हाइणदब्भयणइं  
किं लिगेणं लिगिसंदोहहु  
अंतरंगु जसु सुधु ण दीसइ  
दंडउ अप्पउ मुणिविहियारउ  
उवसमंपुच्चाणुव्वयधारहिं  
करपल्लउ परदविणि म ढोवहि  
मुयहि संगु बहुलोहुप्पायणु  
अवरु पव्वपोसहु पग्गिपालहि  
अहिसिंखिवि अंखिवि णियसत्तिइ  
तुसगासु वि उवमंतहु देज्जसु

धरिवि काइं जणु मारइ हरिणइं ।  
जइ णउ मुच्चइ णिच्चु जि कोहहु ।  
कायकिलेसें तहु किं होसंइ ।  
तासु तहेंट्टिउ भवसंसारउ ।  
अलिउ म जंपहि जीउं म मारहि । 5  
परपुरिसु वि सराउ मा जोयहि ।  
रयणीभोयणु दुक्खहं भायणु ।  
जिणपाडिंबिबइं णिच्च णिहालहि ।  
ताइं णवेज्जसु गरुयइ भस्तिइ ।  
णियमएण णियमणु णियमेज्जसु । 10

घत्ता—पण्णासट्टत्तरु सउ वि सियपंचमिहि बालि जइ उवसहि ॥

सुयहरि मुणिवरि जं कियउ तो तुंहुं तं चिरदुरिउ पणासहि ॥ १९ ॥

६ M होय. ७ MBI' फुडु अच्चमणें. ८ MBP तणु मुरही फंसणि. ९ P पियंतह.

19. १ B किं लिगिण सलिगिसंदोहहु. २ MBP सीसइ. BPT मुणिविहियारउ. ४ P तहिट्टिउ.  
५ P उवसम. ६ MBP जीव. ७ MBP त तुंहुं.

8 a अच्चवणें आचमनेन. 9 a घइ घृते, b मुरही तणु° गोशरीरम्.

19. 1 a मेहलकण्हाइण° मेखला कृष्णाजिन कृष्णहरिणचर्म च, दब्भयणइं दर्भतृणानि. 11 पण्णा-  
सट्टत्तरु सउ वि सियपंचमिहि सुक्कपथमीनामष्टपञ्चाशदधिकशतपरिमाणोपवासैः. 12 सुयहरि श्रुतधरे.

20

मुणिहिं सरीरि परमु समु णिवसइ  
 चूडामणि किं चरणि णिहिज्जइ  
 दुब्धितियउ दुबोह्लिउ दुक्किउ  
 ता सा खंविय तविय गयगावें  
 महु पाँवोहे कहिं पावणियत्तणु  
 मायामोहु मुइवि मणु रोहिवि  
 गय रिसिवइ वंदिवि णियंवासहु  
 काइं वि दविणु ण विज्जइ जइयहुं  
 खलु वि सुपत्तहु अणुदिणु दिण्णउं  
 पुज्जिउ जिणवरु दोणयहुल्लें

ते णिंदंतहं दुम्मइ विलसइ ।  
 वंदणिञ्जु भणु किह णिदिज्जइ ।  
 आसि जम्मि एवहिं करि सक्किउ ।  
 अंतोअंतो पच्छत्तावें ।  
 जाइ कयउ गुरुहुं मि पिसुणत्तणु । 5  
 एमण्णणउं णिदिवि गरहिवि ।  
 हउं लग्गी सहि सुयउववासहु ।  
 मइं दालिहिणीइ तहिं तइयहुं ।  
 छड्डिउ सन्वजीवपेसुण्णउं ।  
 बोहिउ दीवउ दुल्लहतेल्लें । 10

घत्ता—पुज्जउ इंदु णराहिवइ अवरु वि णिद्धणु सिरिमइ भासइ ॥

एकू जि फलु मइं अक्खियउ जइ मणि णिम्मलभत्ति ण णासइ ॥ २० ॥

21

एम तेत्थु हउं चिरु जीवेप्पिणु  
 पुणु आहारु सरीरु सुएप्पिणु  
 मुइय गंपि ईसाणविमाणइ  
 ललियंगहु महएवि सयंपह  
 मुइ पिययमि छम्मास जिएप्पिणु

गुरुउवंपसलेसु पाँलेप्पिणु ।  
 परंमक्खरइं पंच सुमरेप्पिणु ।  
 सिरिपहणामि रमियणिन्वाणइ ।  
 इइं जुइणिज्जियचंदप्पह ।  
 इह इइं सग्गाउ चएप्पिणु । 5

20. १ MBP किह भणु. २ BP पच्छत्तावें. ३ BP पावहि. ४ MBPK मणु ण रहिवि. ५ MBP सणिवासहु. ६ P दालिहिणि एत्तहि. ७ MBP भोयणु.

21. १ P उवएसु. २ MB पावेप्पिणु. ३ B omits this foot.

20. 6 a मणु रोहि वि मनो निरुध्य. 10 a दोणय हु ल्लें दमणपुण्णेण; b दुल्लह ते ल्लें परसमीपे भाचितेन तैलेन.

पिउं सुयरंतिहि चंदु वि तावइ  
 अट्ट वि अंगइं हयइं अणंगे  
 एम चवेप्पिणु पडु आणाविउ  
 गियचिररूउ तहिं जि आलिहियउ  
 अण्णण्णइं कीलासंताणइं  
 अण्णइं तहिं रईरहसंचरियइं  
 एत्थु वसंती एत्थु रमंती  
 एम भंणैप्पिणु गुज्झु ण रक्खिउ

चंदणु देहि ण लग्गउ भावइ ।  
 तुहुं किं ण मुणहि इंगियैलिंगे ।  
 णाहु लिहेप्पिणु धाइहि दाविउ ।  
 फुरइ व चेलंचलि संगिहियउ ।  
 लिहियइं सँरिसरगिरिवरठँणइं । 10  
 धुत्तहं भइयइं गूढइं धरियइं ।  
 सो एहउ हउं एही हँती ।  
 सुंदरीइ गियहियवउ अक्खिउ ।

घत्ता—आणहि पंडिइ प्रीणपृउ फेडहि वम्महवाहि महारी ॥

भरह पुष्पंदंतुज्जालिय अण्ण ण तियमँइ मइगरुयारी ॥ २१ ॥

15

इय महापुराणे निसद्धिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए  
 महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे गिण्णामियाधम्मलंभो णाम  
 बावीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २२ ॥  
 ॥ संधि ॥ २२ ॥

४ MBP पिय सुयरंतिहि. ५ B इदियलिंगे. MB सरसरि°. MBP °गहणइं. ८ MBP रइरससंचरियइं.  
 ९ P भइए and gloss भयेन. १० MBP कहेप्पिणु. ११ MBP पाणपिउ. १२ MBP फुष्पयंतु°. १३ MBP गियमइ.

21. 6 a पि उ प्रियम्. 11 a °रहस° एकान्तः. 15 भरह सरत; ति य म इ श्रीमतिः.

## XXIII

तं णिसुणिवि पडु करयलि कग्गिवि गय पंडिय जिणगेहहे ।  
अइकुडिल सुतेय मणेहरिय चंदलेह णं मेहहे । धुवकं ॥

।

दुवई—एत्तहिं सा णरिंदसुय विसहइ पिययमविरहवेयणं ।  
एत्तहिं पंडियाइ पविलोइउ परमपयणिहेलणं ॥ १ ॥

<p>पवणुद्धयधयमालाचवलं गायणंगणगाइयजिणधवलं गयणंगणलगमहासिहरं जंविखजक्खपाडिमाणिलयं मरगयमयखंभंसमुद्धरियं आयासफलिहमयभित्तयलं उव्वंइयधुवंगारवरं घल्लियपप्फुल्लियफुल्लचयं पइसेपिणु तं मुणिणाहघरं पडु विउसिइ पसग्गिवि दावियउ</p>	<p>हिमकुंदममाणसुहाधवलं । 5 भिद्धंतपढणकलयलमुहलं । अइरुंदचंदकररासिहरं । विदुमतरुंउंभयतलसिलयं । मंणिमत्तवारणालंकरियं । हरिणीलणिबद्धधरित्तियलं । 10 गुमुगुमुगुमंतमत्तालिसरं । ओलंबियमोत्तियदामसयं । णविऊण जिणं जियजम्मजरं । णायरणरेहिं परिभाविउ ।</p>
---	---

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

अङ्गुलिदलकलापमसमश्रुति नखनिकुरुम्बकर्णिक  
सुरपतिमुकुटकोटिमाणिकयमश्रुत्रतचक्रचुम्बिणम् ।  
विलसदणुप्रतापनिर्मलजलजन्मविलासि कोमल  
घटयतु मङ्गलानि भरतेश्वर तव जिनपादपङ्कजम् ॥

GK do not give it.

1. १ P सतेय. २ MBPK पवणुद्धय. ३ M गायणगइ. ४ M आरुद. ५ M जंविखदजक्ख. ६ MBP तलउभय. ७ M खंघ. ८ P मयमत्त. ९ MBP भित्तियल. १० MBP उव्वंइयधुवंगार.

1. 5 b सुहा सुधाचूर्णम्. 8 b विदुमेत्यादि-विदुमघटिता तले कुम्भिका तलशिक्षा. यत्र. 14 a विउसिइ विदुष्या धार्या.

घत्ता—इय दसदिसु वत्त समुच्छलिय जं पडवइयर जाणइ ॥  
धरणीसरतणयहि सिरिमइहि सो थणजुर्यलं माणइ ॥ १ ॥

15

## 2

दुवई—विविहाहरणकिरणविष्फरणोहामियफणिसुरेसरा ।  
ता मायंगतुंगतुरैयासण चल्लिय णरवरेसरा ॥ १ ॥

सेयत्तं णिज्जियासियसरयं णिवसियविरयं वारियणरयं ।

पत्ता राया तं जिणहरयं दुक्कियहरयं सुम्भवियवरयं ।

दिट्ठो लिहिओ<sup>१</sup> तेहिं पडो झंसइधणडं मणि णंच्चियओ ।

6

तं पेच्छिंवि अहिलमियसियो भणु को ण णिवो रोमंच्चियओ ।

केण वि भणिया—पुत्तलिया लयंकोमलिया वण्णुज्जलिया ।

एसा बाला सामलिया णामं ललिया अलिकंतलिया ।

चिरभवि होंती मज्झ पिया पच्चक्खसिया विहिकत्थणिया ।

केण वि भणियं—मइं मुणिया सुरवरगणिया मृंगलोयणिया ।

10

होंती कंनें महु तणिया णीलंजणिया पीणत्थणिया ।

केण वि भणियं—दिण्णसिरि इहु मेरुगिरि इह सा तरुणि ।

इह मइं देवें होंतइण गायंतइण मोहिय हरिणि<sup>२</sup> ।

कु वि भणइ—आसाइ धिणु गुरु एक्कु खणु किह दिणु गंवमि ।

कु वि<sup>३</sup> भणइ—हा किं ऋरमि णिच्छउ मरमि जइ णउ रममि ।

15

११ P °तणयहु, K तणहे. १२ MBP जुयलउ.

2. १ M °हरणकिरणविष्फरणोहामिय°; B °हरणविष्फुरियणोहामिय°; P हरणकिरणविष्फुरिणोहा-  
मिय°. २ P तुरयासणा. ३ B लिहिओ तहे तेहिं, P लिहिओ सो तेहिं. ४ MBP झसच्चिध°. ५ MBP  
चित्तविओ. ६ P पेच्छेविणु. ७ MBP भाणिय. ८ MBP पत्तलिया. ९ MPB लइ°. १० M मइं मुणि-  
मुणिया; P मणि मुणिया. ११ MBP मिय°. १२ MBP कता. १३ MBP महुललयगिरि. १४ MBP  
add after this: मज्झु वि चरिणि. १५ MBP को वि एम्भ भणइ.

15 पडवइयर चित्रपटव्यतिकर.

2. ३ सिय सरयं शुकशरत्पक्षे शुकमेव. ४ सु भवियवरयं सुधु भव्यानां वरदम्. ७ लयंकोमं किं वा  
लनावत्कोमला. ९ °सिया लक्ष्मी विहिकत्थणिया विधिना कुत्रापि नीता, विधिकदर्थितेत्यर्थः.

को वि सँदीहउ णीससइ तावँ सुसइ उरयलु हणइ ।  
 अप्पउ घल्लइ धराणियले आणेहि हले तं<sup>१९</sup> सुहुं भणइ ।  
 को वि मुच्छावसु णिवडियउ रइविणडियउ णिज्जीवं थिउ ।  
 उच्चापप्पिणु परियणिण दूमियमणिण णियघरहु णिउ ।  
 धाँइ जिणेप्पिणु उँत्तरहिं पञ्चुत्तरहिं कु वि चवइ वरु । 20  
 हउं वरइँत्तु भँवंतरिउ इह अवयारिउ तहि धँरिवि करु ।  
 घत्ता—विहसेवि पबोल्लिउ पंडियइ जो गुज्झइं महुं अक्खइ ॥  
 सो सुँअवेल्लीरइसुहहलहो रसु परमत्थं चक्खइ ॥ २ ॥

3

दुषई—अह वररमणिरूवरंजियमणु जो णरु अलिउं भासण ।  
 सो सरसरविहिणु सा ण लहइ पँइसइ णरँयवासण ॥ १ ॥

ता तेत्थंतरि	विरहमहाभरि ।	
कुँमरिहि घणथणि	जायइ जोव्वणिँ	
छक्खंडावणि	जिणिवि महाफणि ।	5
देव वि खयर वि	णित्तेयइ रवि ।	
चोयँवि गयवइ	आयउ महिवइ ।	
पुरिहि पइट्टउ	सघरि णिविट्टउ ।	
महुरालावँ	सपणयभावँ ।	
सुय बोल्लाविय	णिरु संताविय ।	10
पियपरिणामँ	णिहयकामँ ।	
पुत्ति म शिज्जहि	लइ पडिवज्जहि ।	
ण्हाणु विलेवणु	कंकणु परिहणु ।	

१६ MB सुदाहउ. १७ MBP तम्महुं. १८ MBP णिज्जाउ; १९ MBP घाहउ. २० MBP दुत्तरहिं.  
 २१ P वरयत्तु. २२ M अवंतरु. २३ MBP धरमि. २४ M सुहं.

3. १ P अलियउ भासइ. २ MBP णिवडइ. ३ P णरइ. ४ MBP एत्थंतरि. ५ MBP read  
 this line as: पसरियरायइ, कुवरिहि ( P कुवरहि ) जायइ. ६ MBP add after this: उत्तुंगत्थणि,  
 षणि घणि जोव्वणि. ७ P चोइयगयवइ. ८ M कंकणु पहिरणु, B कंकणु परिहरणु; P कंचणु पहिरणु.

17 तं तां तरुणीम्; मुहुं चारंवारम्. 28 °सु अ° सुता.

3. 2 सरसरविहिणु स्मरबाणविभिजः.



गुरुयणु रंजहि	भोयणु भुंजहि ।	
वज्जउ वायहि	णञ्चहि गायहि ।	15
अक्खंरु भावहि	पक्खि पढावहि ।	
तुज्झु मुहुल्लउ	तिहुंयणभल्लउ ।	
हँउं णालोयमि	तो णउ जीवभि ।	
तायहु जंपिउ	तं मुद्धइ किउ ।	
पुणु आवेप्पिणु	पणउ करेप्पिणु ।	20
णियडि णिसण्णी	विहुंहविसण्णी ।	
आलिंगेप्पिणु	सिरि चुंबेप्पिणु ।	
णयणाणंदे	भणिय णरिंदे ।	
चारु चिराणउं	कहमि कहाणउं ।	
मयरद्धयसिरि	णिसुणि किसोयरि ।	25

घत्ता—चिरु पत्थु पुंडरिगिणिपुगिहि इमहु भवहु पंचमंभवि ॥

हउं अडचक्कवट्टिहि तणउ हौतउ कुलि णिञ्चुच्छवि ॥ ३ ॥

## 4

दुवई—णामे चंद्राकित्ति जयंकित्ति सुमित्तवरेण भूसिओ ।

सुइ जणणे अहं पि लच्छीइ महीइ चिरं समासिओ ॥ १ ॥

णिरुवमसुहसयहरिसियमणेहिं	चिरु भुनु रल्लु दोहिं मि जणेहिं ।	
अवसाणि विहिं वि सिरि परिहरेवि	पीईवडुणि वणि पइसरेवि ।	
पयसेवियचंदसेणगुरुहि	किउ तँवु णिज्जणि उग्गयकुरुहि ।	5
दोहिं वि विणिवारिय पावमइ	सह चेय विहिं वि कय कालगइ ।	
बिणिण वि जाया माहिंदसुर	सत्तंवुहिआउपमाणधर ।	
चिरु जीवेप्पिणु तँहि नियसयुय	पुण्णक्खइ सुंदरि तँहि वि मुय ।	

१P अक्खर. १० MBP जइ ओहुल्लउ. ११ MB हउ आलोयमि, P हउ अवलोयमि. १२ G omits विरह-विसण्णी. १३ MB पचमइ भवि.

4. १ MBP जमाकित्ति. २ M °धरेण. ३ MBP तउ. ४ MBK हियनियसणुय.

19 a ज पिउ यत्तिप्रयं, जल्पितं वा.

पुक्खरवरि पुब्बमेरुसिहरे तद्दु पुब्बविदेहि रसंतकरे ।  
 धणधणरिद्धि जायाइसउ णामेण मंगलावइ विसउ । 10  
 जहिं दहिउ दुद्धु जलु जिह सुलहु जहिं णत्थि दोसु गुणगणु जि बहु ।  
 घत्ता—जहिं घणछेत्तावलिपालियहि सुउ हँलिणिहि कह भासइ ॥  
 आरत्तवंचु चंचेलमुहु जंपमाणु मँणु तोसइ ॥ ४ ॥

## 5

दुवई—मत्तमहंतर्धवलगलगजियबहिरियविउलगोउले ।  
 विसरिसविसमभिडियघरसेरिहकयकाहलियकलयले ॥ १ ॥  
 तहिं किडिदाढाहयथलकमले कमलवलच्छाइयविमलजले ।  
 जलजंतसित्तकेलीतरुणे तरुणतरुकुसुमरयच्छरणे ।  
 छच्चरणालंकियदियपवरे दियपवरकलरवुटुंतसरे । 5  
 सरसीमारामपपससुहे सुहयरहुहपंडुरि रायगिहे ।  
 गिहसिहरालिगियघणणियरे ।  
 णिर्यरायणायणिसिंत्तैपप पयपाडियपरणरवीरसप ।  
 सयवत्तर्पसाहियजलपरिहे परिहरियपावि मंदिरे<sup>१</sup> सिरिहे ।  
 सिरिहरु पुरि रयणसंवि णिवइ णिवइच्छियविसि सुधम्मरइ । 10  
 रइ विव कामहु कंत सइ सइ णं देविंदुहु हंसगइ ।  
 घत्ता—सा णामे देवि मणोहरिय जिह तिह सँच्चसउच्चं ॥  
 भँम्हइं बिण्णि वि सग्गहु ल्हसिय हयखयकालदइच्चं ॥ ५ ॥

५ P हल्लिणिहि. ६ M जणु.

5. १ M °धवलगजियरवबहिरिय°. २ MB °तरुणी. ३ MB तरुणतर°. ४ MB छच्चरणि.  
 ५ MBP °पंडुर°. ६ B दियराय°. ७ MBP णिच्चत°. ८ MBP पयासिय°. ९ P मदरिसरिहे. १० MBP  
 कामहु तद्दु कंत. ११ MB सिरिमइ सच्चं. १२ P अणु वि सिरिमइ सग्गहु ल्हसिय अग्गइं हयणियभिच्चं.

4. 10 a जा या इ सउ जातातिशयः. 12 सुउ शुक्; हल्लिणिहि कर्षकस्त्रियः 13 चंचेलमुहु  
 ककमुत्तः.

5. a जलजंत° जलयन्त्राणि; b °छच्चरणे भ्रमराः बडाचरणकाः पठनपाठनयजनयाजनदानप्रतिग्रहाः.  
 5 b दिय° द्विजाः पक्षिणः.

## 6

दुवई—जाया ताहं गग्भि हलहर हरि विणिण वि सुकयकारिणो ।

चडिय जुवाणभावि सिरिवम्मविभीसंणणामधारिणो ॥ १ ॥

दोहिं मि भायहं जयलच्छिसहि	अहिसिचिवि अम्हहं देवि महि ।	
गउ जणणु सुधेम्मसूरिसरणु	किउ घोरु वीरु जिणतवचरणु ।	
छिण्णउं उप्पत्तिजरामरणु	पत्तउ कवलु णिक्कलकरणु ।	5
छुडु परिभाविउ कंचणु वि तणुं	राएण विमुक्कहु घरुं जि वणु ।	
णिज्जाइयअज्जासाइयहो	थंडित्तु वि थणत्थलु राइयहो ।	
गिरिकंदरंमंदिरु किं करइ	दुक्कियपरिणामु ण तं धरइ ।	
इय भणंवि मणोहर थिय भवणे	जिणवरु ज्ञायंतिइ णिययमणे ।	
चिण्णउं जणणिइ दुच्चरु चरिउ	पक्खालिउ जम्मंतरदुरिउ ।	10
संणासणि ज्ञाइवि पंचगुरु	सा हई दिवि ललियंगसुरु ।	

घत्ता—सिरि भुंजिवि भोयतिसानिसिउ मुयउ विहीसंणराणउ ॥

उप्पण्णउ णरयमहाविवणि कालं को ण विलीणउ ॥ ६ ॥

## 7

दुवई—लच्छिसरासईण सहवासु व विहिणा दलिवि घल्लिओ ।

दुत्थियकप्परुक्खु व सुहाहिउ खयकरिदसणपल्लिओ ॥ १ ॥

सर्वु पेच्छिवि हउं दुक्खाउलिउ	सोयग्गि देहरुक्खु जलिउ ।	
हा चक्कपाणि हा पाणपिय	हा बंधव किं अवहेरि किय ।	
सुसहोयर दामोयर चवहि	हा एकवार मइं संथवहि ।	5
सुर णरवइ णिहिवइ पुहुइवइ	किं मरइ भडारउ चक्कवइ ।	
मइं मिच्छाभावे भावियउ	मडउल्लउ खंधि चडावियउ ।	

6 १ MBP °विहीमण°. २ MBP सुधम्म. ३ MB पत्तउ णिक्कलु णिम्मलु करणु; P पत्तउ णिम्मलु णिक्कलकरणु; T णिक्कलु करणु. ४ M तिणु. ५ M घर. ६ P °कदरु. ७ MB भरवि, P भणिवि, ८ P °तिसातिसउ. ९ B विहांसणु.

7. १ MBT सउ. २ P एकवार.

6. 4 a जणणु पिता श्रीधर 5 b णिक्कलकरणु सिद्धावस्थाप्रापकम्. 7 a णिज्जाइयेत्यादि-निर्घाता अभिनवा वधूस्तस्या. स्वाद आलिङ्गनम्. 11 b दिवि स्वर्गे.

7. 3 स बु मृतकम्.

तं पुसमि हसमि हउं तेण सहुं	जंपैवि पञ्चत्तरु देहि महु ।	
मईमूडु ण काइं मि संभरमि	पुरगामसीमरणहिं चरमि ।	
तहिं अवसरि आयउ जणणिचरु	ललियंगु ललियभासिरु अमरु ।	10
पहि थिउ चोयंतुं वसह सभय	सो जंतं णिप्पीलइ सियय ।	
मइं भणिउं भ णियवलु णिट्ठवहि	किं पाणिइ लोणिउं उट्ठवहि ।	
किं णेहु होइ दासीसुयहे	किं तेहु विणिग्गइ वालुयहे ।	
तं णिसुणिवि देवें भाणियउ	जइ एउं बण्ण पइं जाणियउं ।	
घत्ता—तो एउं वियाणहि किं ण तुहुं कीस विसूरहि हलहर ॥		15
जे मुयं ते पुणरवि दिट्ठ पइं कहिं जीवंता णरवर ॥ ७ ॥		

## 8

दुवई—हाहाकारु पुंत्त किं मेहहि धीरिवि जाहि अप्पयं ।  
धीराधार वीरं विउंलं भुयणं पि गणंति गोप्पयं ॥ १ ॥

किं भार्येर भार्यर पुक्करहि	हउं माय तुहारी संभरहि ।	
तुह मंदिरि णिवसिवि कियंउ तउ	संपत्ती तेण सुहासिभवु ।	
गउ एम भणिवि सुरु णियघरहो	मइं मुहुं जोईउ चक्केसरहो ।	5
सच्चउ णिच्चैयणु जाणियउं	सलु रईउ हुयासणु आणियउ ।	
लहु वासुपउ सक्कारियउ	तणुरुहु सराजि वइसारियउ ।	
वयसंजमभारधुरंधरहो	दिवखंकिउ पासि जुयंधरहो ।	
पंचिदियगयउल्लु पीडियउ	तंउ कियउ सीहणिकीडियउ ।	
पुंणु सव्वभइ उच्चाइयउ	मिच्छत्तजडत्तु णिवाइयउ ।	10

१ MBP जंपमि. ४ मइमूड. ५ P चोवतु. ६ P लोणउं. ७ B मय.

8. MBP पुत्त मं मेहहि. २ MBP धीर. ३ P विउणं. ४ भार्यर भार्यर. ५ MK कयउ. ६ P जोयउ. ७ P सलु रयउ. ८ MBP सकारियउ. ९ P पालियउ. १० B omits this foot. ११ B omits this line. १२ K मिच्छत्तु जडत्तु.

10 a जणणिचरु पूर्वभवस्था जननी. 11 b सियय सिकता वालुका. 15 कीस किमर्थम्.

8. 2 धी रा धार धैर्याधाराः. 4 b सुहासिभवु देवभवः 6 b सलु शवशयनं चिता. 7 b सरज्जि स्वराज्ये.

भ्रैणसणविहाणि जं साहियउ तं चउविहु मई आराहियउ ।  
 हउं अरुहु भरेण भरेवि मुउ अहुइ आहंडलु णवर हुउ ।  
 घत्ता—ता रयणविमाणारोहियउ मई अश्रुयकंपहो णियउ ॥  
 ललियंगदेउ सो णिययगुरु मूरुयइ भत्तिइ पुज्जियउ ॥ ८ ॥

## 9

दुवई—चुउ ललियंगदेउ जंबूतरुलंछेणि दीवि सुहवई ॥  
 सुरगिरि सुरादिसाइ सुविदेहइ जणमहि मंगलावई ॥ १ ॥

खगसंसाहियविज्जावल्लिहे	रुप्पयगिरिंदउत्तरथलिहे ।
गंधव्वणयरि तहि विमलजसु	वासउ णामे वासवसारिसु ।
पायडपयाउ णरवइ वसइ	जसु दिट्ठिहि कलिकयंतु तसइ । 5
तहि देविहि उयरि पहावइहि	उप्पणणउ कलमरालगइहि ।
णामेण महीधरु धीरिअणि	ताएण आरिजउ दिव्वमुणि ।
सुउ रज्जि थवेप्पिणु सेवियउ	णिभंगंधभाउ संभावियउ ।
मुत्तावलितवतावे तविउ	दढकम्मालाणु परिक्खविउ ।
संतं देतं रुद्धासवेण	अप्पउ णिउ मोक्खइ वासवेण । 10
णं सससिणिसाइ पहावइहि	पणवंतिहि ताहि पहावइहि ।
तउ दिण्णउं कयजगसंतियइ	सुद्धइ पेमावइकंतियइ ।
सीसिणियइ पुण्णु समज्जियउ	साविसयकसायबलु णिज्जियउ ।
रयणावलि णामे जैणियदिहि	कयदेहमोसउववासविहि ।
घत्ता—स वि मय तहि णिरु णिरसणु करिवि आउक्खइ किं जिज्जइ ॥ 15	
सोलहमइ सग्गि थडिंदु हुंय भणु किह धम्मु ण किज्जइ ॥ ९ ॥	

१३ B omits this foot. १४ P °कप्पहि. १५ P गुरुयइ.

9. १ MBP ललियंगु देउ. B °लंछणदीवि. MBP सुविदेहइ. MBP °पुव्वत्थलिहे. ५ P वासव.  
 ६ P दिव्वमुणि. ७ MBP परिक्खयउ. ८ MBP जगकयसतियइ. ९ MBP जायदिहि. १० MBP किज्जइ.  
 ११ MBP हुउ.

11 b चउ विहु चतुर्विधमाराधनास्वरूपम्. 12 भरे ण भरे वि अस्यर्थं स्मृत्वा.

9. 1 सुहवई सुखवती. 2 जणमहि जनपदः 5 b कलि° कलहः पापं वा. 9 b कम्मालाणु कर्म-  
 बन्धनम्. 11 a सससिणि साहि चन्द्रयुक्तायां रात्रौ. 15 जिज्जइ जीव्यते.

10

दुवई—अह णल्लिणंकि दीवि पच्छिमदिसमंदरपुव्वि रिद्धिया ।

पुव्वविदेहि छोणि वच्छावइ पुरि पहयरि पसिद्धिया ॥ १ ॥

तिजगवद्धुधरियत्तत्तयहो

परिगणियमुणियकांलत्तयहो

धिरंवरियधरियगुत्तत्तयहो

विद्धंसियणियसल्लत्तयहो

वियलियरसाइगव्वत्तयहो

वज्जियहेट्ठिमझाणत्तयहो

केवलचेयणगुणइत्तयहो

णिव्वाणपुज्जविणयंधरहो

फणिमणिभाभासियअहिहरहो

तहिं णंदणि सुपसिद्धम्मि वणे

विज्जउ पुज्जंतउ दिट्ठु सई

जइणिहेसियरयणत्तयहो ।

हयजाइजरामरणत्तयहो ।

सुंइसंबोहियभुवणत्तयहो ।

परियाणियजीवगइत्तयहो ।

गईकम्माइयदेहत्तयहो ।

कयकिरियाछेयपयत्तयहो ।

सीदीभूयहु ण णियत्तयहो ।

हउं करिवि कुहरककरवरहो ।

गउ पढमदीवसुरमहिहरहो ।

इंदासासंठियजिणभवणे ।

महिहरु बोलाविउ मुद्धि मई ।

5

10

यत्ता—किं ण मुणहि तुहं खयराहिवइ हउं णंदणु तुह हंतउ ॥

सिरिवम्मु सीरिभायरमरणे जइयहु कलुणु रुयंतउ ॥ १० ॥

15

11

दुवई—तइयहुं तइं सुरेण संबोहिउ एवहिं किं ण याणसे ।

सिरिहररायधरिणिमणहरिभंबु किं णंत सरसि माणसे ॥ १ ॥

अज्ज वि किं भुंजईहि विसयविसु

भवि भवि संघारइ विसयविसु

विसु मारइ मित्त पक्कु णिमिसु ।

ता तेण जि लद्धउ तं जि मिसु ।

10. १ MBP पच्छिमदिसि मदरि पुव्व°. २ MBP सयलत्तयहो. ३ MBP धियवरिय°. ४ B omits this foot. ५ B omits this line. ६ MBP गयकम्मा°.

11. १ MBP °भउ. २ MBP ण सरिसि. ३ MBP भुंजसि.

10. 1 ण ल्लि णं क दी वि पुष्करद्वीपे. 5 b सुइ° आगम.. 6 b °गइत्तय° पाणिमुक्ता लाङ्गली गोमू-  
त्रिका च. 7 b देहत्तय° कार्मिकमौदारिक तैजस च. 8 b °पयत्तय° प्रयत्न.. 9 a °इत्तयहो युक्तस्य.  
15 सीरि° बलभद्रः.

अहिणंदिचि सुरवराउ खयर	संप्राइउ सहसा गियणयर ।	5
भडभक्खणि णावइ डाइणिय	महिकंपहु पुत्तहु मेइणिय ।	
दोइवि णंदणुं मुणिगुरुविहिउ	वैयमग्गि उग्गि ववसिउ सहिउ ।	
सहुं अइबहुयहिं विज्जाहरहिं	तरुकोडरगिरिविवरंतरहिं ।	
तवुं चिणु तेष कणयावलिय	चिरसंचियदुरियावलि गलिय ।	
कालेण गंलंते महिहरहो	पुणु अंतयालु संपणु तहो ।	10
सो प्राणिप्राणपरिरक्खयर	प्राणइ जायउ तियसिंदवर ।	

घत्ता—जीवियउ वीसमायरसमइ पुणु काले संचील्लिउ ॥

धादइसंडइ पुब्बिल्लसुए जो सुरगिरितरुमाल्लिउ ॥ ११ ॥

## 12

दुवई—तस्सावरविदेहि गंधिलविसयम्मि विमुक्कविप्पिया ।

उज्झाणयरि तीइ जयवम्मु णरेसरु सुप्पहा पिया ॥ १ ॥

तहि चविवि पुरंदरु हुउ तणउ	अजियंजउ णामे लद्धजउ ।	
दिक्खहि कारणे ओलगियउ	जणणे अहिणंदणु मग्गियउ ।	
ते दिण्णइ पंच भैहव्वयइं	मुक्काइं तेण सत्त वि भयइं ।	5
मयणिज्जियसीहे णाइं मया	इहपरलोयास वि खयरु गया ।	
आयंबिल्लु तवुं दुक्करु चरिवि	कमट्टयंगंठिहि णीहेरिवि ।	
होऊण सिवी गउ सिववयहो	निवुं सुहहु णामु णिरु णीरयहो ।	
सूलिहि णरसिरमालाधरहो	णउ अण्णहु तं कवालकरहो ।	

४ MBPK सुरवइ गउ. ५ MBP सपाइउ. ६ MBP णंदण. ७ MP तवमग्गि उग्गि; B वयमग्गे ववसिउ समसहिउ. ८ MBP तरुकोडरि. ९ MBP तउ. १० MBP वहेने. ११ MBP संपणु. १२ M पाणिपाणु; B पाणिपाण°. १३ MBP पाणइ. १४ MBP सचालियउ. १५ MBP °मालियउ.

12. १ B omits this line. २ MBP °महावयइ. ३ MBP तव दुद्धर थरिवि. ४ B कम्मट्टइ. ५ MBP णीसरिवि. ६ MBP सिवहरहो. ७ MBP सिवसुहहु णाम.

11. 7 b सहिउ त्वाहित. 18 °सुए पुत्रि.

12. 8 a सिववयहो शिवपदम्. 9 a सूलि हि शंकरस्य.

सुहकामकोहविद्धंसणहे  
 अं वउ परिपालिउ सुप्पहइ  
 सुइचक्खुसोक्खणिण्णासियइ  
 रंण्णावलिकयरण्णासियइ  
 घत्ता—भेहेप्पिणु माणवकुणिमतणु देवणिकायहुं वल्लहु ॥  
 अब्बुइ अणुदिसदेवत्तु खणे पत्तउ ताइ सुदुल्लहुं ॥ १२ ॥

13

दुवई—चोईहरयणपहरणुत्तासियणासियरिउभडत्तणं ।  
 कयमजियंजपण वरिसहरणयावहि महिपहुत्तणं ॥ १ ॥  
 धम्मघोसउडिडिमपहयउ  
 थिउ अग्गइ मउलियउहयकरु  
 मेरु व समेणु णिच्चलु थविउ  
 सुविसुद्धचित्तु रिसि विव गणिउ  
 मायासुयवइयरु साहियउ  
 मुणिघम्मंसवणसामियमइहिं  
 गुरुमंदरथाविरु समासियउ  
 आलिंणित् चारणरिद्धियप  
 वणिं पुत्तिइ पावयत्तामियप  
 अहिहरिणभिल्लभिल्लीणिलप  
 पइं तासु पासि सुउ धम्मु चिरु  
 दिवि जीविउ हउं माणियरमइं  
 घत्ता—जणणी ललियंगु आइ करिवि सुंदरि कल्लिमलवज्जिय ॥  
 बावीस देव ललियंग मइं गुरु मण्णेप्पिणु पुज्जिय ॥ १३ ॥

१ MBP गणियहि. २ MBP त वणिज्जइ कह. १० MP रयणावलि°. 13. १ P चउदह°. २ MBP धम्मघोसउ डिडिमु हयउ. ३ MBP सममणु. ४ MBP °धम्म समण°. ५ MBP संबोहियणसमिद्धियए. ६ MP कलमल°.

10 b ग णि णि हि पा सि आचार्यानीसमीपम्, गणिनीसमीपम्. 13 a रण्णा व लि° रत्नावली नाम तपः; °रण्णा सिय इ रत्नत्रययुक्तया.

13. २ व रि स ह र ण या व हि क्षेत्रविभागकरपर्वतावधि. 10 b सव्वो हि य° सर्वाधिज्ञानम्. 14 a मा णि य र म इं अनुभूतकक्ष्मीकाणि.



## 14

दुवई—चंचलतरुणहरिणलोयणजुइ छणससिबिंबजंपणे ।

अवरु वि कह वि तुज्जु पिय विरहमहाणलसुसियचंदणे ॥ १ ॥

जम्मंतरि वित्तुं संभरमि

हउं पुँच्छिउ वियलियदुम्मइणा

लीलाउद्धरियचसुंधरहो

दीर्वमि जंवुरुक्खंकियप

सीयासरिदक्खिणयलि पवरु

णामेण सुमीमा वर णयरि

अमथमइ मंति सइरत्तमण

तहि सुउ पहसिउ पहसियवयणु

सह ते विणिण वि कवडेण विणु

ते बे वि विउम विच्छिणमय

एकहिं दिणि रापं सहुं सुहय

सो पहुणा पुँच्छिउ जीवगइ

संतेण जेण जगु परिर्णमइ

अहिणाणु णिसुणि तुह वज्जरमि ।

वंभेदं लंतवसुरवइणा ।

मइं अक्खिउं चरिउं जुयंधरहो । 5

भेरुहि विदेहि पुव्वासियप ।

वच्छावइदेसु वँच्छपउरु ।

तहिं पहु अजियंजउ पुरिसहरि ।

तहु सच्चहाम णामेण धण ।

तहु सहयरु वियसिउ सियणयणु । 10

णिसुणंति पढंति गमंति दिणु ।

छलजाइहेउकुविवायरय ।

मइसायररिसिसीमावु गय ।

आहासइ सँव्वउ तासु जइ ।

तं कारणु कालु महाणिवइ । 15

घत्ता—जहिं अच्छइ तं धुवुं गयणयलु गइहि धम्मु सहकारिउ ॥

फुडु होइ अहम्मु थिरत्तणहो परमेसहिं उँवईरिउ ॥ १४ ॥

## 15

दुवई—पोग्गलदवु होइ णिच्चेयणु जं जं णिव सुँचेयणं ।

तहिं तहिं कहमि तुज्जु परमत्थं जीउ जि णाणकारणं ॥ १ ॥

14. १ BP विरहाणल°, २ MBP चिण्णउ, P पुँछिउ, ४ MP पच्छपवरु, B सुवच्छपवरु, ५ MBP °सामीउ, ६ P पुँछिउ, ७ MBPK सच्चउ, ८ MBP परिणवइ, ९ MBP धुउ, १० MB एउ ईरिउ; P इउ ईरियउ.

15. १ MBP सच्चेयण.

14. 12 b °जा ई °मिथ्योत्तरम् . 17 उवई रिउ प्रतिपादितम् .

विणु जीवें पोग्गलु किं<sup>१</sup> तसइ  
 विणु जीवें पोग्गलु किं<sup>२</sup> रमइ  
 विणु जीवें पोग्गलु किं<sup>३</sup> जियइ  
 विणु जीवें किं<sup>४</sup> पोग्गलु सुणइ  
 ता वुत्तउ<sup>५</sup> पहसियवियसियहिं  
 जइ जीउ जि पेच्छइ कहहि कह  
 जो पंतु ण दीसइ जंतु ण वि  
 जइ चिनियमेत्तं तहु कुगइ  
 दालिदिउ भुक्खइ किं मरइ  
 को जाणइ भासिउ केण किह  
 सिद्धंतंहु किं जणु गुरु णवइ  
 किं वीहिउ वट्टा णउ हँवइ

विणु जीवें पोग्गलु किं हसइ ।  
 विणु जीवें पोग्गलु किं भमइ ।  
 विणु जीवें पोग्गलु किं णियइ । 5  
 किं विद्धंउ वेयणाइ कणइ ।  
 अणुहुत्तपुहइपत्थिवसियहिं ।  
 तो विणु णयणहिं ण णियइ कह ।  
 तहु कँवणु भाउ किर कवण छवि ।  
 तो चित्तंइ पूरइ किं ण रइ । 10  
 भोयणु चिनविउ किं ण करइ ।  
 आगमु णवकंबलु पुरिसु जिह ।  
 तवतावें किं अप्पउ खवइ ।  
 तं णिसुणिवि मुणिवरिंदु चवइ ।

घत्ता—चित्तरहु लेहणिवज्जियहो चित्तौलिहणु ण संतउ ॥ 15

इह दव्विदियभाविंदियहं जाणइ जीउ णिरुत्तउ ॥ १४ ॥

## 16

दुवई—जो जां पेच्छसे ण जेत्तेहिं ण सो सो जइ पयट्ठओ ।

ता सपियामहस्स सपियामहु पुत्तंय पइं ण दिट्ठओ ॥ १ ॥

जइ सो जि णत्थि तो तुहुं ण पुणु  
 ससहाउ भाउ परिभाउं ण वि  
 जइ चित्तौ विसिउं णउ हवइ

चिम्मेत्तहु कहिं वण्णाइगुणु ।  
 जं णहु तं णहु जि ण चंदु रवि ।  
 ता झाइय देवय किहं चवइ । 5

२ MBP किह. ३ B किम. ४ P किह. ५ MBP पोग्गलु. ६ MB बद्धउ. ७ B °पत्थिवसियहिं.  
 ८ MBPK णयणेण, ९ B चित्तिण. १० MBT सिद्धत्थहु; and gloss in T सिद्धत्वस्वरूपप्राप्त्यर्थम्;  
 P सिद्धतउ and gloss आगमनिमित्तम्. ११ MBP वहइ. १२ M चित्तलिहणु.

16. १ M पयत्थओ; P पइत्थओ. २ M पुत्त. ३ BPT परिभावि. ४ MBP चित्तिउ. ५ MBP किं.

15. 9 b भाउ परिणति, छवि आकारो वर्णो वा. 12 b णवे त्यादि—यथा नवकम्बलः पुरुष इति  
 वाच्य नव वा कम्बला अस्येति संशयहेतुत्वात्प्रमाण तथा आगमेऽपि. 13 a सिद्ध तहु आगमनिमित्तम्. 14 a  
 वट्टा मार्गः. 15 ण संतउ अबिद्यमानम्.

16. 1 पयट्ठओ पदार्थः. 4 a ससहाउ भाउ स्वस्वभावो भावः.

पविरहयसुहासुहरयदलं	जइ जीउ ण गेण्हइ पोण्णलं ।
तो कंचुयसुत्तजालु तियहिं	किहं तुट्टइ भिउं पेच्छंतियहिं ।
जइ सहु जि ण घडइ पइं भणिउ	तो गहणु केण जाणिउं गणिउं ।
घडघोसु ण वसहि बुद्धि जणइ	इय बालु वि गोवालु वि मुणइ ।
धम्मु जि कयमोक्खउ गयसरहो	पंडिउं पुणु लावइ गयसरहो । 10
कइभावु कव्वु किह पंरु घडइ	जिह रुक्खहु उप्परि सिहं चडइ ।
घत्ता—जइ जं जेहउ तं तेहउ जि पइउं पइं संभोवियउ ॥	

तो किरियाजोपं किह जणेण लोहिं सुवण्णं दावियउ ॥ १६ ॥

## 17

दुवई—हो हो जाइहेउछलवयणविरयणु मुपवि चप्पलं ।

कुरु कुरु परमधम्मु जिणभासिउ लहसि संभिच्छियं फलं ॥ १ ॥

तं णिसुणैवि इइं सम्मइय	वाईसर णिव्वेयं लइय ।
गुरुभत्ति करिवि पणाविय गुरुहे	रविउयइ जडत्तणु अंबुरुहे ।
जिह णउ थक्कइ तिह भव्वयणे	आयण्णियमण्णियमुणिययणे । 5
कल्लाणमित्त ते वे वि जण	संसारवियारविरत्तमण ।
तासु जि तेलोक्कदिवायरहो	पावइय पासि मइसायरहो ।
आयंबिलु वडुमाणु कियउ	तउ भीमु सुदंसणसंणियउ ।
दोहिं मि दुक्कम्मु णिरोहियउ	स्वय वेण्णि वि णियंमवि णियहिियउ ।
सिट्ठत्तमट्टादिट्टीइ मुय	सुक्कामर इंद पंडिद हुय । 10

६ P °रइदलं. ७ MBP कि. ८ MBP पिउ. ९ MBPT ज पंडिउ पलवइ गयसयहो. १० MB कि पर, P कि पडु. ११ MBPKT सिहि, T सिहि मयूर कवेरभिपायः, अन्यस्य पुनरभिरिति. १२ M पइं सभासियउ, B पइ जइ भावियउ. १३ M सुवण्णउ दाविउ; B सुवण्ण दावियउ.

17. १ MB समीहियं; P समाहियं. २ MBP णिसुणिवि. ३ BP सुदंसणु सणियउ. ४ MBP णियमिवि.

6 a रयदलं कर्मभेदाः. 8 a महु आगमः. 9 a घउ घोसु घटशब्दः; वसहि वृषभे. 10 a-b धम्मु जीत्यादि-गयसरहो नष्टकामस्य मुनेः धम्मु जि चारित्रमेव कृतमोक्षम्; पंडिउ वैतण्डिकः लावइ योजयति धनुरेव गतबाणस्य कृतमोक्षम्. 11 b सिह पक्षी.

17. 1 जाइ° मिथ्योत्तरम्. 8 b सुदंसणु सणियउ मेरुमंजितम्, मेरुपंक्तिविधिरित्यर्थः. 10 a सिट्ठत्तमट्टादिट्टीइ मुय शिष्टा आगमे प्रतिपादिता चतुर्विधा आराधकस्य या उत्तमार्थदृष्टिः चतुर्विधाहारत्यागस्तथा मृतौ.

ओसारियकायकंतिसिहं गिवसिवि सोलहजलणिहिणिहं ।  
 धादइसंडइ थिय सिसुससिहि पच्छिममंदरपच्छिमदिसिहि ।  
 पच्छिमविदेहि णरदिणसुह णामेण पुक्खलावइ वसुह ।  
 घत्ता—तहि अत्थि पुंडरिंकिणि णयरि राउ धणंजउ गिवसइ ॥  
 जयसेण सेण णं वम्महहो अवर वि भज्ज जसैस्सइ ॥ १७ ॥ 15

## 18

दुवई—ससिसिय भमरणील णंळपाउसणासपवेसकुसवहा ।  
 इंद पडिंद बे वि आवेप्पिणु जाया ताहं तणुरुहा ॥ १ ॥  
 जयसेणहि गंदणु सीरधरु पहसियउ इंदु दणुयारिवरु ।  
 वियसिउ पडिंदु सणियाणवसु तवरयणं किणियणिकामतुसु ।  
 णारायणु जायउ जसैसइहि भूहरवियारि वेउ व णइहि । 5  
 णामेण महाबलअइबलहं तहि ताहं जगत्तयमंगलहं ।  
 सिरि भुंजंतहुं गउ मरिवि हरि अइबलु वि ण खयकालहु उवरि ।  
 अवलोयवि णियबंधवपलउ मणु मुक्कु ण वीरं मोक्कलउ ।  
 वणु पइसिवि सरु णिसुणिवि मयहं पणवेवि समाहिगुत्तपयहं ।  
 तउ लेवि महाबलु तहि मरिवि प्राणयतियसेसरत्तु करिवि । 10  
 वीसद्विसमाणहिं पुणु पडिउ अंतयराएण ण को णडिउ ।  
 पुव्वुत्तदीवभायंतरए पुव्वुत्तसुरादिदियंतरए ।  
 पुव्वुत्तविदेहि तवियतरणि णामेण वच्छयावइ धरणि ।  
 पुरि तम्मि पहायरि जणभरिय महसेणहु देवि वसुंधरिय ।  
 घत्ता—तहि देविहि मयणंमयालसहि गब्भवासु सेवेप्पिणु ॥ 15  
 चउदहमर्यकप्पसुरादिघइ थिउ माणुसु होएप्पिणु ॥ १८ ॥

५ MBP पुंडरिंकिणि. ६ MBP धणजउ. ७ M p जसंमइ.

18. १ MBP णं पाउसणासपवेसि. २ MBP जसमइहि. ३ MBP पाणइ. ४ P मरुसेणहु.  
 ५ MBP °महालासिहि. ६ P चउदहमइ.

11 a ओ सा रि ये त्या दि-उत्सारिता स्फेटिता अवसाने कायकान्तिः शिखाज्योतिर्यैः; b °जल णि हि णि ह इं सागरोपमाणि.

18. 1 स सि सिय चन्द्रवत्पाण्डुरः; कुसवहा मेघाः. 3 a सीरधरु हलधरः; b दणु यारि° वासुदेवः.  
 4 b °णि काम तुसु तुषवत्तुच्छा मानुष्यकभोगाः. 5 b वेउ व वेगः प्रवाह इव. 11 a वीसद्विसमाणहिं विंशतिसागरोपमैः.

## 19

दुवई—हुउं जयसेणचाक्कि को वारइ होंती पुण्णसत्तिया ।

तेत्थु वि तेण भीमकरवालें महि छक्खंड भुत्तिया ॥ १ ॥

पुणु केवलणाणसिरीहरहो  
चोइहरयणइं णिहि परिहरेवि  
घणपावको व्व विहावणउ  
फणिणरसुरवइकयकित्तणउं  
गउ प्राणं विसंज्जिवि घुलियधप  
तीसंबुहिसंणिहाइं जिइवि  
पुक्खरदीवहु पुव्विहु गिरि  
तहि पुव्वविदेहइ दिण्णसुह  
तहिं रयणसंवि अजियंजयहो  
जोइयसुहसिविणयसंतइहे

पायंतियम्मि सीमंधरहो ।  
दुद्धरु चारित्तभारुद्धरेवि ।  
भावेप्पिणु सोलह भावणउ । 5  
अज्जेप्पिणु तित्थयरत्तणउं ।  
उवग्गिमेवज्जहि मज्झमए ।  
अहमिंदु देउ तेत्थुहु चइवि ।  
णामेण मेरुसरि वूढसिरि ।  
णरजोणि मंगलावइ वसुह । 10  
रायहु पालियसावयवयहो ।  
हुउ सुउ देविहि तसु वसुमइहे ।

घत्ता—सो देउ जुयंधरु परमजिणु वम्महवम्मवियारउ ॥

उप्पणु जि सयलहिं सुरवरहिं मेरुहि ण्हविउ भडारउ ॥ १९ ॥

## 20

दुवई-- पुणु णरखयररायरायत्तणु मेल्लिवि गउ वणंतरं ।

हंभिवि अंतरंगु पविलंवियकरु थिउ सो णिरंतरं ॥ १ ॥

भयवंतहु विहुणंतहु दुरिउ  
उप्पण्णउं जगसंखोहणउं  
आइल्लउ तित्थु पवत्तियउ

पालंतहु सुत्तउत्तु चरिउ ।  
केवलु किउ तच्चणिरूचणउं ।  
तिहुवणु कुवहाउ णियत्तियउ । 5

19. १ P हुव जयसेणु. २ P चउदह°. ३ MBP पाण. ४ P विवज्जिवि. ५ MB मज्झवए; P मज्झमए. ६ MBP पुक्खरवरदीवइ पुव्वगिरि. ७ MBP मेरुदरि.

20. १ MBP read this line as: तिहुवणु कुवहाउ णियत्तियउ, आइल्लउ तित्थु पवत्तियउ.

19. ३ b पा यं ति य म्मि पादसर्मापे. ४ a अंबु हि स णि हा इ सागरोपमाणि.

20. ३ b सुत्तउत्तु आगमोक्तम्. ४ a आइल्लउ प्रधानम्.

गड मोक्खहु अक्खेरु अक्खरहो	तणु सक्कारिउ परमेसरहो ।	
अग्गिदहिं णियमउडाणलिण	भणुं किं ण होइ सुक्कियफलिण ।	
इय कहपवंचि मँइं संकहिए	सम्मत्तु लइउ देवहिं सहिए ।	
हे हे मह कुलकमलेक्कसिए	ललियंगहु तुह ललियंगपिए ।	
हियउल्लउ णिदियइंदियउ	तइयहुं जिणधम्मणंविउ ।	10
संभरसु पुत्ति रमियामरहो	अंजणणामयहु धराधरहो ।	
अम्हइं तुम्हइं मि महासरहो	दीवहु गयाइं णंदीसरहो ।	
संभरसु पुत्ति पविउलकमले	कीलियइं सँइंभूरमणजले ।	
किय जाण्णिणु रुद्धासवहो	णिन्वाणपुज्ज पिहियासवहो ।	

घत्ता—संभरसि पुत्ति मइं भासियइं पयइं व हुअहिणाणइं ॥ 15  
 तुम्हइं दंपइहिं रईयरइं सुरवरकीलाठ.णइं ॥ २० ॥

21

दुवई—तहिं णिउतद्धमाणु पुव्वाउसु अच्छइ बिहि वि जइयहुं ।  
 हउं कालेण कह व णिल्लोट्टिउ इंदवयाउ तइयहुं ॥ १ ॥

हमच्चुया चुओ सुंए	कुले सुरिदसंथुए ।	
वसुंधरावहूये	महंतपुण्णगोयेरे ।	
णिबद्धपेम्मराइणा	जसोहरेण राइणा ।	5
सुओ हुओ हियंतओ	इहेव वज्जदंतओ ।	
कुवाइपहिं मोहिओ	सुमंतिणा पबोहिओ ।	
कयंगयारिण्हाणओ	मरेबि दिण्णदाणओ ।	
सुधम्मभावणामलो	खगादिवो महाबलो ।	
दुइज्जसग्गठाणए	सिरिप्पहे विमाणए ।	10

१B अक्खर अक्खरहो. ३ MBP भणु होइ किं ण. ४ M मह सइ कहिए; B सइ मइं कहिए. ५ P सयभू.  
 ६ B दंपइरईयरइं.

21. १ MP सए.

6 a अक्खरं लब्धानन्तचतुष्टयरूपतयाविनश्वरम्.

21. 1 णि उ त द्ध मा णु पु व्वा उ सु नियुत लक्षं तस्यार्थं पञ्चाशत्सहस्राणि तत्प्रमाणानि पूर्वाणि आयुर्यत्र.

७ a इं अहम्; सुए हे पुत्ति. 4 a °वहूयेरे वधूदरे. 8 a °अगयारि° मदनान्तको जिनः.

लयारपुव्वणामओ	सरूवजित्तकामओ ।	
हुओ सुरो दुवीसमो	महं गुरू स पच्छिमो ।	
पियव्वया अणामिया	गयाउणा ख्यं णिया ।	
तुमं पि तप्पिइल्लिया	पहूय अंतिमिल्लिया ।	
दिवायरस्स णं पहा	संलक्खणा सयंपहा ।	15
कयंतचंडिमाहओ	तुहं पिओ तहिं मओ ।	
वरुप्पलाइ खेडए	पुरे विचित्तणीडए ।	
पलंबथोरबाहुणो	प्पिघस्स वज्जवाहुणो ।	
सुवण्णवण्णकायओ	कुलंगणाइ जायओ ।	
रवि व्व सो दुलंघओ	मयच्छि वज्जजंघओ ।	20
पिओसुया सुहंकरा	महं सुहीण ते परा ।	
संमीवु भूमिमंडले	वसंति ते सुकौंतले ।	
सुरालयाउ आइया	रमावईइ जाइया ।	
तुमं सयां पहायरी	महं सुया किसोयरी ।	
वरं वरं विहाविही	वियक्खणा विहाविही ।	25
पियागमं पयासिही	दिणेहिं तीहिं भासिही ।	
सिरिमईइ भासियं	तए महं पयासियं ।	
भैरामि हं परं भवं	चिरं पि ताय णं णवं ।	
घत्ता—सुणि सेणिय आसि समासियउ भरहहु रिसहजिणिंदे ॥		80
णवकुंद <sup>३</sup> पुष्कदंतहिं हसिवि पुणु सुय भणिय णरिंदे ॥ २१ ॥		
इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्क्यंतविरहए		
महाभव्वभरहाणुमण्णिणए महाकव्वे सिरिमइभवसंभरणं णाम		
तेवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २३ ॥		

॥ संधि ॥ २३ ॥

२ MBK खयाणिया, ३ BP तुम ति, ४ MBP पट्ट अयं ति मिळिया, ५ MBP सुलक्खणा, ६ MP कयंति, ७ MBP समाव<sup>०</sup> ८ MBP सुकोमले, ९ BP सयपहायरी, १० M इहाविही, ११ MBP सरामि, १२ P गयं, १३ MBP <sup>०</sup>पुष्क्यंतहिं.

11 a लयारपुव्वणामओ ललितान्नः, 16 a <sup>०</sup>चंडिमा<sup>०</sup> रौद्रत्वम्, 20 b मयच्छि हे मृगाक्षि, 21 a पिओसुया पितापुत्री, 23 b रमावईइ लक्ष्मीवत्याम्, 25 a विहाविही द्रक्ष्यति; b वियक्खणा पण्डिता चात्री, विहाविही वि+इह+ आविही आगमिष्यति, 26 b भासिही बोभिष्यते विवाहेन.

XXIV

सहं णंदणेण णियपरियणेण महु लोयणसुहु देसइ ॥  
सुणि राउलउ तुह माउलउ अज्ज पुत्ति आवेसइ ॥ ध्रुवकं ॥

I

म करहि वयणकमलु तुहुं दीणउं	अज्ज पुत्ति जायउ सुबिहाणउं ।
आयहु वज्जवहुपाहुणयहु	अज्ज करमि करणिज्जु सँविणयहु ।
सोयकिलेसपंकु पक्खालहि	अज्ज पुत्ति तुहुं णाहु णिहालहि । 5
आया माणणिज्ज ते माणमि	लहु अद्धवेहि गंपि घरु आणमि ।
जाँमि भणिवि गउ णरवइ जावँहि	पंडियभवणु पराहय तर्वाहि ।
मुणिहि वि मयणुक्कोवजणेरी	दिट्ठी सुय णरणाहहु केरी ।
णं गंगाणईहि जउंणाणइ	णं कइमइहि मिलिय सुयसंतइ ।
णियडि णिसण्णी सा तरलच्छिहि	पुरिसुज्जमलीला इव लच्छिहि । 10
करिणिइ करणिजेम करु मग्गिय	वेल्लिइ णववेल्लि व आलिंगिय ।
मत्थइ चुंबिवि पुरउ णिवेसिय	हंसिइ कलहंसि व संभासिय ।
मुहराएण जि सिद्धं णियच्छिउ	कज्जु तो वि णिवकण्णइ पुच्छिँउ ।

यत्ता—विउसिइ कहिउ ढंकिवि लिहिउ पइं जं तहिं मइं ढोहय ॥

णरवइ दमिय ओसरिवि थिय वासवदुहंताइय ॥ १ ॥ 15

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

हिमांगरिशिखरनिकरपरिपाण्डुरधवलितगगनमण्डल  
पुलकमिवातनोति केतकतरुवरतरुकुसुमसकरे ।  
विकसितफणिफणासु सुरसरितो मणिरुचिगतमधः क्षिते-  
रिदमतिविप्रकारि भरतेश्वर जगतस्तावकं यशः ॥

GK do not give it.

1. १B लोयणु सुहु. २ P रावलउ. ३ MBP अज्जु—and throughout this Kadavaka, ४ P सुविणयहु. ५ B अद्धवहु. ६ M एम. ७ MB तावेहि; P जाविहि. ८ MB तावेहि; P ताविहि. ९ MBP मयणुक्कोय°. १० MB सुहु; P सिद्ध. ११ P पुंछिउ.

1. 6 b अद्धवहि अर्धपद्ये. 8 a मयणुक्कोव° मदनप्रसरः.



## 2

पच्छइ सयलहं आयउ जो वरु  
 सो णं वम्महेण पेसिउ सरु  
 सो णं रहरसंसलिलहु सायरु  
 सो णं रूवविलासु पसारिउ  
 सो णं विज्जाविहि वित्थारिउ  
 सो णं सूहउ महु मणि भावइ  
 पुत्ति महासिहरहु दुहणासहु  
 फेणहिमट्टेहाससंकासहु  
 हियवउ रइवियसिउं मउलेप्पिणु  
 वंदिउ जिणु सुहवैज्जियवज्जिउ  
 वंदिउ जिणु जगंवंदियवंदिउ  
 जम्मवासु देवहु णउ जुज्जइ  
 अकिरिउ णिक्कलु गयणसरिच्छउ

सो णं सोहग्गहु केरउ घरु ।  
 सो णं जुवइयणहं जीवियहरु ।  
 सो णं तुह मुहकमलदिवायरु ।  
 सो णं कंतिकोसु वड्डारिउ ।  
 सो णं पुण्णपुंजु अवयारिउ । 5  
 जो तुह अट्ट वि अंगइं तावइ ।  
 देवि पयाहिण जिणवरवासहु ।  
 णांइं पुरंदरेण केलासैहु ।  
 तेण वे वि णियकर मउलेप्पिणु ।  
 वंदिउ जिणु सुरपुज्जियपुज्जिउ । 10  
 वंदिउ जिणु बुहणिंइियणिंदिउ ।  
 विणु सयलेण सत्थु किह णज्जइ ।  
 जंपउ जडयणु बुद्धिइ तुच्छउ ।

घत्ता—गरुयउ णहहो सीयलु हिमहो जिण तुह पंरु गुरु केहउ ॥

वलइयभुयहो वंझासुयहो खकुसुमसेहरु जेहउ ॥ २ ॥ 15

## 3

जिणु वंदेप्पिणु वदिय मुणिवर  
 अंगणहररुइरंजियवदंसदिस  
 जसु ण कलंकु गोत्ति णउ हियवइ

मुणिवर ते सुयहर णं गणहर ।  
 दसदिसिवहपन्नरियणिम्मलजंस ।  
 वंथवालणि मइ जसु थिय जिणणइ ।

2. १ MBP °णिलयहु, २ MP °हिमहि°, ३ P कइलामहु, ४ MBP' रइ°, ५ MP मेलेप्पिणु,  
 ६ BPT सुहवज्जिण°, ७ M जयवंदियवदिउ, 8P भयवज्जियवदिउ, ८ MBP' परगुह.

3. १ MBP °दसदिसु, २ MBP °जसु, ३ MP वयपालिण.

2 9 a रइवियसिउं कंडोळमितम् 10 a सुहवज्जिय° शुभकर्मरहितै . 12 a-b जम्मे त्यादि-  
 जन्मवासो गर्भावनारो देवस्य न युज्यते, अयोनिस्तभवत्वादस्य. अत्रोत्तरमाहाचार्य —[व णु इत्यादि-कलाभिरव-  
 यवैर्भूतिभिर्वा सह वर्तते इति सकलं शरीरतेन विनान्यमुक्तात्मवत् शिवस्य शास्त्र कथ ण ज्जइ युज्यते. 15 व ल इय-  
 भुय हो वलितभुजस्य.

णयसिर्हं पट्टसाल स पइट्टउ  
 दिट्टउ पइ सहुं सुलिहियचिसैं  
 संतैं इट्टविओयकंतैं  
 कंतैं<sup>४</sup> जयलच्छिहि विकंतैं  
 कंतैं चंदेण<sup>५</sup> व संपुण्णैं  
 रुण्णैं पर सरीरु णिव्वट्टैइ  
 वट्टइ जाणित्तं कर्हि दीसइ सा  
 जा सा सा भणंतु सो मुच्छित्तं  
 अच्छित्तं विमणु पपुच्छित्तं धाइइ  
 माइइ भणइ रमणु तुह अक्खमि

सपइट्टउ महं संमुहुं दिट्टउ ।  
 चिसैं चित्तिउ तेण ससंतैं । 5  
 कं तैं धुणियउं भवसंकंतैं ।  
 कंतैं सुमरियपेम्मुकंतैं ।  
 पुण्णैं पियसंजोउ ण रुण्णैं ।  
 णिव्वट्टित्तं देउ वि ण पवट्टइ ।  
 सा मणणल्लिणोयरवासिणि जा । 10  
 सोमुच्छित्तं चंदु व्व णियच्छित्तं ।  
 धाइइ परियणि कर्हि मि ण माइइ ।  
 अक्खेमियं जं तं किह रक्खमि ।

घत्ता—भर्वसंचरिउ पडिउद्धरिउ बहुपयारु पँरढंकिउ ॥

णरवइसुयइ सुललियभुयइ कीस सहियवउ वंकिउँ ॥ ३ ॥ 15

4

पँहु ईसाणकप्पु विविहामरु  
 पँहु दिव्वतरुवरु णंदणवणु  
 पँहु ललियंगु देउ हउं हौंतउ  
 थणयलघुलियहारमणहारी  
 अच्चुयणाहु पँहु तियसेसरु

लिहियउ पँहु सिरिमहु सुरहरु ।  
 पलवमाणु चलकलकोइलगणु ।  
 पन्थु वसंतउ पत्थु रमतउ ।  
 पँह सयंपह देवि महारी ।  
 कुलिसपाणि लिहियउ परमेसरु । 5

४ B °सिरपट्ट°. ५ M omits this foot. ६ BPK पेम्मकंतैं सुयरियकंतैं. ७ MBPT णीवट्टइ.  
 ८ MBP णीवट्टित्तं देह. ९ B अक्खमियउं. १० MBP भवि. ११ MBP °ढकियउ. १२ MBP  
 वंकिउ.

4. १ P इह and throughout this Kadavak. २ MB सुण्हसंपयसुर°.

3. 4 a पट्टसाल स पइट्टउ ग पट्टसालां प्रविष्टः; b सपइट्टउ सप्रतिष्ठः. 5 b ससंतैं निश्वसता.  
 6 a सतैं उत्तमपुरुषेण, °विओयकंतैं वियोगर्पाडितेन, b कं तैं धुणियउ तेन मस्तक कार्मपतम्. 7 b °पेम्मुकंतैं  
 जेहयुक्तेन. 8 a कंतैं चंदेण व कमनीयेन चन्द्रेणेव; b पुण्णैं पुण्येन. 9 a णिव्वट्टइ विनरयति. 10 a वट्टइ  
 जाणित्तं ज्ञान वर्तते. 11 a जा मा मे त्यादि-या जगत्प्रसिद्धा लक्ष्मी 'सेयम्, सेयम्' इति मूर्च्छितः;  
 b सो मुच्छित्तं उसौम्यः उच्छित्तः. 12 a धाइइ धात्र्या, b धाइइ धाविते. 13 a माइइ हे पुत्रि; b अक्ख-  
 मिय इन्द्रियैर्जातम्.

कहइ जुयंधरदेवकहाणउं  
 एयइं अमहइं बे वि बइडइं  
 इय मेरुहि गयाइं जगखंभडु  
 एहु अंजणमाहिहर महु रुचइ  
 इह सहुं सुरणाहें मुहललियइं  
 अंवरतिलउ एहु गिरिसारउ  
 एत्थु तासु कमकमलु णमंतइं

लंतवबंभेसर मइं लीणउं ।  
 कहं णिसुणिवि णिर्यंमणि संतुट्टइं ।  
 इह लग्गइं जिणणहाणारंभडु ।  
 एहु दीउ णंदीसरु बुचइ ।  
 वंदणहत्तिइ विणिण वि चलियइं । 10  
 इहु पिहियासउ लिहिउ भडारउ ।  
 थियइं बे वि जिणधम्मु सुंणंतइं ।

घत्ता—एहु मलरहिउ हउं पाडहिउ एह सयंपह णचइ ॥

तियसिद्धिवणे जिणवरभवणे महि पयपोमहिं अंचइ ॥ ४ ॥

## 5

अण्णेत्तहि वि एत्थु णो लिहियउ  
 रण्णेउरसइं रोमंचिउ  
 अमहइं तणुपरिमलपरिभमियउं  
 एत्थु ण लिहियउ लज्जादेसिरु  
 सवणभरणु इह णलिणु ण लिहियउ  
 एत्थु ण लिहियउ पडिवहुविलसिउ  
 इह कवेलपत्तावलिमोडणु  
 एत्थु ण लिहियउ विरहाउरु मुहुं  
 एत्थु ण लिहियउ भूर्मणु पेसिउ  
 एक्कु जि लिहियउ अणुणयगारउ

जो मइं कीलारंभु पविहियउ ।  
 एत्थु ण लिहियउ मोरुं पणच्चिउ ।  
 एत्थु ण लिहियउं अलिगुमुगुमियउं ।  
 सुंय गुरुंयणआगमणुम्भासिरु ।  
 जं वहुणयणहं सोहइ महियउ । 5  
 एत्थु ण लिहियउ पणयारोसिउ ।  
 एत्थु ण लिहियउ किसलयताडणु ।  
 एत्थु ण लिहियउ प्रिउं विवरंमुहु ।  
 एत्थु ण लिहियउ दूययभासिउ ।  
 इहु महु दिण्णउ पायपहारउ । 10

३ MB कहि. ४ MB णियमण<sup>०</sup>. ५ MB सरंतइ.

5. १ MBP णालिहियउ. २ B मेरु. ३ MBP सुउ. ४ MB गुरुयणु. ५ MBP road this line as: एत्थु ण लिहियउ पणयारोसिउ, एत्थु ण लिहियउ पडिवहुविलसिउ. ६ MBP विरहाउर. ७ MBP पिउ. ८ MB भूमण. ९ M एत्थु ण; B एउ महु.

4. 13 पा ड हि उ नाट्याचार्यः. 14 ति य स हि<sup>०</sup> मेरु..

5. 4 b सुय शुक्रः. 10 a अणु ण य<sup>०</sup> अनुकूलता.

पयवडिप सारंभु मुयाविउ  
अण्णहि णेही रुवविह्वरं  
अण्णहि पसइणिंहाणं णेत्तइं

पत्थु ताइ हउं आसि अमाविउ ।  
देवि सयंपह माणवि ह्वरं ।  
अण्णु लिहइ किं महु चारिसइं ।

घत्ता—अणु किं कहमि ण विरहु सहमि वृइइ पिय महु आणहि ॥

सा तेत्थु पुरे थिय जम्मि धरे तर्हि जायवि संमाणहि ॥ ५ ॥ 15

6

ता वृइइ उंचु अम्हारी  
वज्जदंतु पहु तहु सुहगारी  
धीय ताहि सिरिमइ उण्णणी  
पहु ताइ लिहियउ कहवइयरु  
पम भणेप्पिणु हउं पत्थाइय  
तावेत्तहि कुमारु गउ तेत्तहि  
पियविओयसिहिजालाच्छित्तउ  
तरुणीवग्गुरवडिउ पलोइउ

णयरि पुंडरिक्किणि पुरिसारी ।  
लच्छीमइ महपवि भडारी ।  
पिउ सुमरिवि जीवियणिव्विणी ।  
पइं जाणियउं णिरुत्तउ तुहुं वरु ।  
पइसंबंधिणि वत्त णिवेइय । 5  
उण्णलखेडउ पुरवरु जेत्तहि ।  
घरि तलिमयलइ देहु णिहित्तउ ।  
णं वणवाहें मृंगु संभाविउ ।

घत्ता—रइरिद्धएण मयरद्धएण विद्धउ पंचहिं बाणहिं ॥

विवरीउ हुउ सो रायसुउ कह व ण मुक्कउ प्रीणहिं ॥ ६ ॥ 10

7

कुण्णरिणामें कामें तण्णइ  
रसइ हसइ णीससइ विरुज्जइ  
कर मोडइ धम्मेल्लय मेल्लइ  
वेवइ वलइ विलासहिं गच्छइ  
एक्कहिं णिलइ ण णिविसुं वि अच्छइ

सीयलमलयजपकें लिण्णइ ।  
उट्टउ बइसइ मोहें मुज्जइ ।  
अहरु डसइ अण्णिसु पबोल्लइ ।  
परु पच्छण्णु पउत्तिहिं पुच्छइ ।  
दिसि लिहियं पिव पियमुहुं पेच्छइ । 5

१० MBP °णिहाइं ण, ११ MB अण्ण, १२ MBP जेत्य, १३ MBP हरे.

6. १ MPB वुत्तु, २ MBP ताहि, ६ M °वग्गुरु पडिउ विलोइउ; P वग्गुरु वडिउ विलोइउ.

४ MBP मिगु, ५ M रइविद्धएण, P रइरिद्धिएण, ६ MBP पाणहिं.

7. १ MBP अण्णिसु बोळइ, २ MB पच्छण्ण°, ३ P णिमिसु.

11 ८ सारंभु कोपः 15 संमाणहि मदीयकुशलवार्तया संतोषय.

6. 10 विवरीउ कामज्जनितोन्मादादसंबद्धप्रलापी.

पहाइ ण धुवइ ण जिणवरु पुज्जइ  
रमइ ण कंदुउ तुँरउ ण वाहइ  
गेउ ण सुणइ ण वज्जउ वायइ  
एकु वि रायविणोउ ण माणइ  
मंतिहिं वज्जबाहु विण्णवियउ

भूसणु लेइ ण भोयणु भुंजइ ।  
करि वि रहु वि णयेंणेहिं ण चाहइ ।  
परँ णिममीलियच्छु पँय झायइ ।  
कामगहिल्लउ किं पि ण याणइ ।  
तणउ देव मयणें परिहँवियउ । 10

घत्ता—इइँ सइहि लच्छीमइहि जा सिरिमइ तहि रत्तउ ॥

दुक्की णियइ दुक्करु जियइ कामाणलसंतत्तउ ॥ ७ ॥

8

तं णिसुणिवि णहछोडउ देप्पिणु  
गउ तहिं जहिं अँच्छइ सो बालउ  
आवहिं जाम ण होइ वियालउ  
सुणह महारी पइं कहिं दिट्ठी  
गउ कुमारु परिभमहुं सलीलइ  
पुव्वजम्मु तहिं एण णियच्छिउ  
कामु वि कामरुवि जं पाइइ  
पट्टँइ लिहियउ हियवइ लिहियउ  
अवसें होसइ णिव विहिविहियउ  
ता सहुं पुत्तं समउ कलत्तं  
वज्जबाहु सहस त्ति पधाइउ  
रच्छसोह पुरि कारावेप्पिणु

उट्ठिउ णरवइ दर विहसेप्पिणु ।  
पभणइ पहु सुय थिउं किं कालउ ।  
अज्जु जि किज्जइ तुह पँयमेलउ ।  
अवरें वत्त णरिंदहु सिट्ठी ।  
दिट्ठउ पहु आलिहिउ जिणालइ । 6  
चिरँकंतावयारु परिहच्छिउ ।  
ताहि रूउ कं कं ण भमाइइ ।  
को<sup>९</sup> तं पुसइ णिडाँलइ लिहियउ ।  
एम जाम मइँबंधे कहियउ ।  
सहुं सेण्णेण धवंलधयच्छत्तं । 10  
णयरि पुंडरिंकिणि संप्रीइउ ।  
लीलइ मत्तकरिंदि चडेप्पिणु ।

घत्ता—आवंतु पहे पहु अद्धवहे पविभुएण जयकारिउ ॥

सो तेण जिह देवीइ तिह तिह सुएण णवयारिउ ॥ ८ ॥

४ M डुरिउ. ५ MBP णयणहिं वि ण. ६ P परि. ७ MBP पिय. ८ P परिहाविउ.

8. १ MB सो अँच्छइ. २ MBP कि थिउ. ३ MBP पियमेलउ. ४ MBP विरु कंता°. ५ MBP पट्टालिहियउ. ६ B omits this line. ७ MBP णिलाइइ. ८ B °वहियउ. ९ MBP मइवंते. १० BP धवलछत्तत्तं. ११ MBP संपाइउ. १२ M णवियारिउ.

7. 7 a डुरउ डुरगः. 10 b परि ह विय उ विह्वलाकृतः कर्दार्थतो वा. 12 णिय इ भवितव्यता.

8. 1 a णहछोडउ नखोच्छोटिका. 6 b परि ह च्छिउ ज्ञातः. 7 a कामरुवि कामावस्थायाम्. ७ b मइबंधे मतिबन्धनेन बुद्धिप्रपञ्चेन. 1३ पविभुएण वज्जबाहुणा. 14 णवयारिउ नमस्कृतः.

9

सालउ सस बिणिण वि जोएपिणु  
राएं अवलोइयउ संस्सीयउ  
पुरेणारीयणु कहिं मि ण माइउ  
णिवइहि कैरउ सहि धरणीवइ  
जसहरणामहु धीय जिणिंदहु  
एयहु उप्पलखेडणरंसहु  
जो सग्गाउ देउ अवयरियउ  
इहु सो वज्जजंघु हलि णरवरु  
सो वि ण पावइ चिचु जि पावइ  
पुरिसु होइ जइ एहउ वम्महु  
का वि भणइ उच्चायहि मइं पिय  
ताइ णियंतिय रूडु कुमारहु

णयणहुं केरउ फलु पावेपिणु ।  
अच्छिउडेहिं रूवरसु पीयउ ।  
अवरुप्परु चूरंतु पधाइउ ।  
वज्जवाहु पंडु सो बहिणीवइ ।  
एह वसुंधरि बहिणि णरिंदहु । 5  
दिण्णी सुंदरि णिरुवमवेसहु ।  
जो सिरिमइवरु जम्मंतरियउ ।  
एयहु संमुहुं मइं पंसरिय करु ।  
तं पावंतु वि तणु संतावइ ।  
णं णं सो अणंगु मुणिमणमहु । 10  
लंघवि कोट्टु पलोयमि वर्सृय ।  
पेम्मजलोल्लिय तणु भत्तारहु ।

घत्ता—रूपेणियउं उब्बेणियउं णिच्छुटंतु णिरुंभइ ॥

कविणिम्मलय चुये मेहलय ददु परिहंणु णिब्बंधइ ॥ ९ ॥

10

का वि भणइ णगयग्गदुवारें  
उब्भिउ करु करयलइ ण णयणइं  
का वि भणइ भासिय दुब्बयणइं  
एयहु घरि दासिचु समिच्छमि  
का वि भणइ णिवसुय सकयत्थी

अंतरियउ सूहउ पायारें ।  
किह पेच्छमि अंगाइं समयणइं ।  
अज्ज परइ मेहंमि पंडसयणइं ।  
जीवमि छुडं मुहकमलु णियच्छमि ।  
ण वियाणहुं चिरें काइं वउत्थी । 6

9. १ MBPT ससीयउ. २ MBP पुरि. ३ K पराइउ. ४ MBP एहु; K एहु but corrects it to पहु. ५ MBPK बहिण. ६ MBP पसरिउ. ७ MBP पावंतु जि. ८ MBP वरमिय. ९ MP धुउ मेहलय ददु°; B चुए मेहलय ददु°. १० MBP परिहाणु णिब्बंधइ.

10. १ B मेह्लिवि. २ MBP पिउसयणइं. ३ MBP फुडु. ४ P सकियत्थी. ५ B चिर.

9. 2 a स स्सी य उ भागिनेयः 11 b कोट्टु भित्तिः वरसुय वरश्रीः. 13 उ उब्बेणिय उ उच्छ्वासितम्.

10. 1 a-b ण नेत्या दि-नगश्च प्राङ्गणवृक्षः, अग्रद्वारं प्रतोली, ताभ्यामन्तरितः प्राकारेण च; अथवा, न गता अहमग्रद्वारेण प्रतोल्यां निस्सत्य त द्रष्टुम्. 5 b वउत्थी व्रतस्था.

पहउ जाहि रमणु संपणुणउं  
तहि अवसरि पदुभवणि पइट्टइं  
उवणुउ ण्हाणु विलेवणु णिवसणु

मं छुहु को वि महातउ चिण्णउं ।  
पाहुणाइं पीढिसु णिविट्टइं ।  
ताहं सुकुसुमदामु मणिभूसणु ।

घत्ता—पुणु विविहु रसु सुरहिउ सुर्वसु पंचिदियहुं पियारउ ॥

जेवणुं जिमिउं णावइ रमिउं रइसुहुं धुत्तिहि केरउ ॥ १० ॥ 10

## II

भणइ णरिंदु ण किं पि विर्यप्पमि  
तुहुं घरु आयउ तुह किं किज्जउ  
चवइ कुलिसयरु धणुकयसंकउ  
धणु मज्जु व मज्जावइ माणुसु  
धणुं णयणइं जाणमि मइमइलइं  
धणु किं संणिवाउ जरु हांसइ  
धणु काणीणहु दीणहुं दुल्लहु  
सयल्लु अत्थि महु तुज्जु पसाणं  
सकुलायउ सोहइउं दावहि  
तं णरणाहें वयणु समत्थिउ  
परभवाउ सुरमिहुणु जि आयउ  
अरुइइ विरहाणलसंतत्तउ

धणु जं मग्गहि तं जि समप्पमि ।  
भणु भणु वज्जवाहु किं दिज्जउ ।  
धणु गुणेण सहं णिच्चु जि वंकउ ।  
धणु मारणउं बंधुढोइयविसु ।  
तेण जि धोणि इट्टु वि ण णिहालइ । 5  
तेण जि धणि अणिवंधउं भासइ ।  
उत्तिमपुरिसहुं माणु सुदुल्लहु ।  
एक्कु जि मग्गमि सुहिअणुराणं ।  
सिरिमइ वज्जजंघकरि लावहि ।  
खिच्चहु उप्परि घिउ ओमत्थिउ । 10  
महु तुह मंदिरि माणुसु जायउ ।  
संजेइज्जइ दइवविहिंसंउ ।

घत्ता—चक्रेसरहो तहु पवियरहो कंणइ लिहियउ आणुउ ॥

गुणभूसियए ता विउसियए पडपवंचु वक्खाणुउ ॥ ११ ॥

६ MB सवसु. ७ MBP जेमणु.

11. १ B विर्यप्पमि २ MBP कुलिसकर. ३ MBP धणु णयणइं जाणमि मइलइं. ४ MBP धणु इट्टु ण. ५ MBP अणिवद्धउ. ६ MBP माणु सुवल्लहु. ७ M मत्थि. ८ MBP लायहि. ९ MBP एउ जि. १० MBP विहत्तउ. ११ MBP बालइ लिहिउ त्रियाणुउ.

9 सु व सु जारक.

11-3 a कुलिसयरु वज्जवाहु. 9 a मो ह इ उं मित्रत्वम्. 10 b खिच्चहु उप्परि खीचडी उपरि (? ) कृसराया उपरि; ओमत्थिउ प्रक्षिप्तम्. 13 प वियरहो वज्जवाहोः.

12

पियराहिरामाह	संपुण्णकामाह ।	
मुक्काह वायाह	तुट्टाह मायाह ।	
परिखवियकम्माह	कइयाह रम्माह ।	
* जिणणाहपूयाह	दिण्णाह धूवाह ।	
सुइसायकुंभेहिं	घणैघडियखंभेहिं ।	5
रुप्पभैयकुट्टेहिं	आलिहियभेहेहिं ।	
विप्फुरियरयणेहिं	वरहीरगहणेहिं ।	
आसणविराहयहिं	माणिकवेइयहिं ।	
पडिणेत्तपच्छइउ	कंतीइ चैचैइउ ।	
रुंलंतमोत्तियहिं	णं दंतपंतियहिं ।	10
विहसंतु पडिहाइ	दिट्ठीसुहं देइ ।	
णाणापयारेहिं	णाणादुवारेहिं ।	
कउ मंडओ ताम	संमाइ जणु जाम ।	
मिलिपहिं सुहियेणहिं	भरिपहिं तोरणहिं ।	
घणरवगहीरेहिं	पहपहिं तूरेहिं ।	15
णच्चंततरुणीहिं	मंडलियघरणीहिं ।	
खयरीहिं जक्खिणिहिं	णायरणियंबिणिहिं ।	
हिमहारसैरिसेहिं	सजलेहिं कलसेहिं ।	
पइपुत्तवंतीहिं	महिणाहपत्तीहिं ।	
सोहग्गसुंदरं	णहवियाइं वहुवरइं ।	20
पुणु पुणु पसाहियइं	णवरइरसाहियइं ।	
थुइययणकलयलहिं	धवलेहिं मंगलहिं ।	
पुणु पुणु जि गाइयइं	आसण्णढोइयइं ।	

घत्ता—पसरियकरहे मयणिअरहे मणु मयणे सुंविचारिउ ॥

सुहवडु पियहे णं गयघडहे वरसुहडे ओसारिउ ॥ १२ ॥ 25

12. १ P संदिण्णपूवाह. २ MBP घर घडिउ खभेहि. ३ MBP °कुट्टेहिं. ४ MB °भडेहि. ५ MBP विचइउ. ६ MBP सुलंत°. ७ P सुहयणहिं. ८ BP घरिणीहिं. ९ M °सरसेहिं. १० MB सवियारिउ.

12. १४ ८ °वे इय हि चतुष्किक्कामिः.



## 13

सोहणे वासरे चारुलगुगमे  
पाणिणा पाणि तीण तिणा धारिओ  
रायराएण भिंगारएणाणियं  
अण्णजम्मागया तुज्ज सीमंतिणी  
वाइणो वाउवेया पमत्ता गया  
जाण जंपाण छत्तं सियं चामरं  
उज्जलं हंसतूलकसेज्जायलं  
हॉरिवीरोहओ इच्छियं मंडलं  
राइणा पुत्तिसंतोसउप्पायणं  
रार्यपुत्तिं करेणुं व लीलागओ  
मंडवे वेइयापट्टि आसीणओ  
अक्खया पूयद्वंक्कुरम्मीसिया  
जाव गंगाणई जाव मेरू गिरी  
होंतु पुत्ता महंता पहाभांसुरा  
अच्छमाणाइ लच्छीविसाला जहिं

उग्गदोहग्गदुक्खावलीणिग्गमे ।  
अंगडाहो परं दूसहो हारिओ ।  
भार्यणेयस्स धित्तं करे पाणियं ।  
तुज्जु मे दिण्णिगया पेसलालाविणी ।  
पंचवण्णा पवित्ता विचित्ता धया । 5  
देस गामं पुरं सत्तभूमं घरं ।  
दीवओ मंचओ दासदासीउलं ।  
कंचिदामं वरं कंकणं कुंडलं ।  
वत्थुसारं अणेयं पि<sup>१</sup> दिण्णं घणं ।  
तं करे गण्हउणं वरो णिग्गओ । 10  
वज्रबाहू समाणंदिओ राणओ ।  
बंधुलोएण धित्ता सिरे सेसिया ।  
ताम्व भुंजेहं तुमे वि णिच्चं सिरी ।  
जंतु अच्छिण्णणेहेण वो वासैरा ।  
सो वरो सा वह्द दो वि ताइं तहिं । 15

घत्ता—लग्गिधि वरहो तहु वासरहो पैरिवाडिइ सुहवासहिं ॥

अहिसिचियइं पुणु अंचियइं णिवहिं दुनीससहासहिं ॥ १३ ॥

## 14

वाँलमुणालसरलकेमलयरु  
वरु सकामु काइं वि जंपावइ  
वरु तणुपर्यइजोगु आलिंगइ

दियहाहिं जंतहिं कीलइ बहुवरु ।  
बहु लज्जंति तं जि संभावइ ।  
बहु मुक्कीं तं पुणु मणि मग्गइ ।

13. १ P भगर°. २ MBP भाइणेयस्य. MBP °तूलक°; K °तूलक but corrects it to °तूलक° and gloss अर्कपिचु अर्कतूलः. ४ M हार°. ५ MB पदिण्ण. ६ MBP रायपुत्ते. ७ P करेणु  
व्व. ८ MBP द्वंक्कुरामीसिया. ९ M भुंजेवि. १० MBP भासुर. ११ MBP वासरं. १२ MP पडिवाडिइ.

14. १ P बालु. २ MBP °पइयजोगु.

13. 2 a ति णा तेन राज्ञा. 7 a तूल क° अर्कपिचुरर्कतूलः. 8 a हारि वी रो हओ मनोहरवीरसमूहः.  
12 a पूय° पवित्राः. 16 सुह वा स हि सुखवासैः.

14. 2 a जंपा व इ अनुमन्यते. 3 a त णु प य इ जो ग्गु शरीरस्वरूपयोग्यम्.

वरु केसगाहेण ओणामइ	वहु हेट्टासुहुं मुहुं ल्हिकावइ ।
वरु मउअउ जि करइ अहरग्गाहु	हुं हुं <sup>६</sup> मेळि दर भासइ णववहु । 5
वरु थणसिहरइं छिवइ सहत्थे	वहु वीलावस ठंकइ वत्थे ।
वीरु पसारिउ सणियउं पुंजइ	वरु कइ ऊरुजुर्यलि णिउंजइ ।
वरु फेइवि म्भलइ पलंकरइ	पाणि देइ वहु वयणससंकइ ।
वरु सोणीर्यलहुत्तउ जोयइ	वहु तहु दिट्ठि <sup>११</sup> करहिं पच्छायइ ।
अलियणहेहिं णाहु संघट्टइ	वहु उग्गायपुलपण विसट्टइ । 10
चवइ रमणु रइहरि सिज्जंतइं	आसि वे वि भणु किं लज्जंतइं ।

घत्ता—कीलिवि पवरे हिमगिरिसिहरे चलियइं उट्टयासहो ॥

तुह सिरिहरहो भरहेसरहो पुप्फयंतकइवासहो ॥ १४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए  
महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे वज्जजंघसिरिमइसमागमो णाम  
चउवीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २४ ॥

॥ संधि ॥ २४ ॥

३ P केसगाहेण. ४ BP णिकावइ. ५ P मउ जि. ६ M महु मेळहि दर; BP लहु मेळहि दर. ७ B कर.  
८ P °जुयलु. ९ MBP णियवयण°. १० M सोणीयलु हुत्तउ; P सोणीयलहुत्तइ. ११ MBP करहिं दिट्ठि.  
१२ MP °कमवासहो; T records a p पुप्फयंतरइवासहो इति पाठे चन्द्रादित्यदीप्तिस्थानकात्.

13 °हुत्तउ °अभिमुखम्.

XXV

अणुदिणु दंसणेण संभासणेण दाणसंगवीसासें ॥  
 पृउभाउग्गामणे रमणीरमणे रमइ विसेसविलासें ॥ धुवकं ॥

1

पणुल्लपोमपहसियमुहाहं	कल्लाणण्हाणपुज्जारुहाहं ।	
मउमणियमम्मणुल्लाविराहं	उरुउररुहज्जुयलालियकराहं ।	
अवरुंडणपसरियभुयवलाहं	मुहकंठमूलि चुंबणरथीहं ।	5
रइजलरोल्लियसयणोयराहं	धियकेसहं महुपीयाहराहं ।	
कयपणयकोविसंभाविराहं	लीलाकडक्खविव्खेविराहं ।	
पविजंघसिरीमइवहुवराहं	कीलंतहं गयबहुवासराहं ।	
रूवे सोहग्गे अहुइय	हिमकिरणकंति कुलिसयरधीय ।	
सिरिमइर्वरलहुइसस मियच्छि	णं विकमलकर सयमेव लच्छि ।	10
णामेणाणुंधरि सोक्खहेउ	णियणंदणु णं सो कामएउ ।	
लच्छीमइदेवीगच्चजाउ	परिणीमिउ राणं अमियतेउ ।	

घत्ता—नणय वसुंधरहि घरभरधरहि लज्जइ तहु करि लग्गी ॥

कुलउत्तहु हिरि व कण्हहु सिरि व दिहि व रिसिहि आवग्गी ॥

MBP give, at the commencement of this Samdhu, the following stanza:—

उत्ततातिमनुमात्रपात्रता भाति भद्र भरतस्य भूतले ।

काव्यकीर्तिघण्टारवो गृहे यस्य पुष्पदन्तो दिशागजः ॥

GK do not give it.

1. १ MBP °वीमासहिं. २ MBP पिय°. ३ MBP °विलासहिं. ४ MBP उरि उररुह°; K उरउररुह°. ५ MBP °भुयलयाह°. ६ MB °मूलु. ७ B°रहाहं ८ MBP °कोविसभाविराहं. ९ MBPT अहुतीय. १० B कुलिमेयवीय. ११ MBPK °वइ°. १२ MB मियच्छि. १३ MP विगयकमल, B विकमलकल. १४ MBP लच्छीम्मइदेविहि गच्छि जाउ. १५ MBP परिणाविउ.

1. 6 a स य णो य रा ह स्वजनोत्कराणां स्वजनममूहानाम्; b महुपीयाहराहं मधुनोपलक्षितः पीतोऽधरो ययो. 8 a पविजघं वज्जजघः, 9 a अहुइय अद्वितीया; b कुलिसयरधीय वज्जबाहुपुत्री. 12 b अमियतेउ अमिततेजाः नाम श्रीमत्या भ्राता. 14 आवग्गी आवल्लिता.

2

अण्णाहिं दिणि दिण्ण पयाणभेरि  
 णरणाहं करिकरदीहबाहु  
 सहं सुणहइ सहं णियतणुरुहेण  
 आउच्छिवि इट्ट विसिट्ट बंधु  
 उप्पलखेडाहिउ चमुसमेउ  
 हरिखुरधूलीधूसरिउ सग्गु  
 पहरणविण्णुरणहिं जिगिजिगंतु  
 गयमयजलधौराहिं भरइ तल्लु  
 गुरुयणविओयतावं चुयाइं  
 सह कामिणीहिं पंकयमुहीइ  
 आसण्णपंधि सुंदरपपासि  
 पेच्छिवि परिपुच्छिवि सयणविंदु  
 घत्ता—इयरु वि जंतु पहे भल्लइ दिथहे उप्पलखेड पइट्टउ ॥

दससु वि दिसासु थरहरिय वेरि ।  
 णियणयरहु पेसिउ वज्जबाहु ।  
 सहं सकलत्तं ससहरमुहेण ।  
 संचलिउ सुयणु चंदक्कचिंधु ।  
 अम्मणु अंचहुं णीसरिउ राउ । 6  
 छत्तहिं छाइउ दिसेविदिसमग्गु ।  
 चउपासहिं दीसइ महिदियंतु ।  
 हयलालइ हुउ चिक्खुंल्लु खोल्लु ।  
 पुत्तियहिं पुंसेण्णिणु अंसुयाइं ।  
 पंडिय संपेसिवि समउ तीइ । 10  
 सरसीमारामसिरीणिवांसि ।  
 णियभवणहु पल्लिट्टउ णरिंदु ।

पुरयणपरियणहिं कयतोरणहिं मंगलसेसहिं दिट्टउ ॥ २ ॥

3

पिउघरि णं रइरंजियउ मारु  
 लक्खणचंजणहिं पसाहियाइं  
 बरतणयहिं जणियइं सिरिमईइ  
 पक्कहिं दिणि राणउ वज्जबाहु  
 सँउहइ सेहीरासणिसण्णु  
 णहयलि अवलोइउ सरयमेहु

सहुं बहुयइ सुहुं अच्छइ कुमारु ।  
 जमलइं पण्णासेक्काहियाइं ।  
 सुललियकच्चाइं व कइमईइ ।  
 जावच्छइ सुइलीलंबुवाहु ।  
 तां कालीयरवरकिरणवण्णु । 6  
 णं विहिणा णिम्मिउं दिव्वुं गेहु ।

2. १ MBPK °धूलिइ धूसरिउ. २ MBP दिसिविदिसि°. ३ M °भारहिं. ४ MBP चिक्खिण्डु.  
 ५ K °णिवेसि. ६ MBP पल्लिट्टिउ. ७ MBP उप्पलखेडि.  
 3. १ MB °रंजियकुमाइ. २ MBP °वेंजणहिं. ३ K सुइसीलंबु°. ४ MBP सउहयलइ.  
 ५ MBT सीहासणं; P सीहासणि. ६ MBP ता ते कालीयरकिरण°. ७ MBP दिव्वगेहु.

2. 5 b अ म्म णु इत्यादि—कियन्मात्रमार्गवोलापनं कर्तुं निःसृतः. 7 b महीदियंतु पृथिव्या  
 दिगन्तः. 8 a त ल्लु धुदसरः.  
 3. 1 b कुमारु पृथिव्यां कामः. 5 a सेहीरासणं सिहासनम्; कालीयरं चन्द्रः.

उत्तुंगसिंहरसुरहरसमाण  
 चितइ पडु गउ वारिहर जेम  
 जीविउ धणु पुत्तु कलत्तु वासु  
 इय भणिवि तेण परणरदुलंघु  
 सह सुयसुएहिं सुयबहुसुएहिं  
 जिणविक्ख लेवि कउ कम्ममोक्खु  
 रच्छाहिंडियसुरसुंदरीहि  
 घत्ता—<sup>१</sup>जो सो चक्रवइ सुहबद्धरइ अच्छइ महुलिहमाणिउ ॥

पुणरवि सो विट्टु विलीयमाणु ।  
 जाएसमि पलयहु हउं मि तेम ।  
 होसंइ थिर घणसंकासु कासु ।  
 कुलसिरिहि समण्णिउ वज्जजंघु । 10  
 अवरोहिं मि रायहिं थिरभुएहिं ।  
 तेणाभाइउ तं परमसोक्खु ।  
 एत्तहिं वि पुंडरीकिणिपुरीहि ।

ता णिसि मिलियदलु सुरहिउं कमलु उववणवालें आणिउं ॥ ३ ॥ 15

## 4

जोइउ णरणाहें लेवि णंलिणु  
 उग्घाडइ तं सो रमणराइ  
 तं वारवार चप्पिवि करेण  
 पुणु पुणु लीलइ कीलंतएण  
 इच्छिउ राएं खरदंडणासु  
 ववगयमलदळवलयंतरालि  
 सररुहकरंडि णिम्मुकुजीउ  
 भासइ हे मामि सिलीमुहेण  
 दाणुलि कवालि घुंणंतएण

को किर ण णियइ गोमिणिहि भवणु ।  
 लच्छीमुहदंसंणि कामु णाहं ।  
 विहडियउ कमलु सूरेण तेण ।  
 एक्केणु पत्तु अवणंतएण ।  
 खरदंडणासु तहु गुणविसेसु । 5  
 अवलोइउ अलि केसररयालि ।  
 णं इंदणीलंमणि णियवि राउ ।  
 करिकण्णझडण्णु सहिउ एण ।  
 संपत्तंउ दुक्खु रडंतएण ।

घत्ता—दिसहिं समुल्लंइ लोलइ धलइ रुद्धउ कहिं पसरइ करु ॥ 10

णिसि तमपिहियमुहे एत्थंबुरुहे गंधलोलु मंड महुयरु ॥ ४ ॥

८ MBP °सिहर. ९ MBP सो पुणरवि. १० MBP होहर. ११ MBP पुंडरीकिणि°. १२ MP जो.

4. १ M णडिणु. २ MBP °दसणकामु. ३ MBP णिम्मुकु जीउ. ४ MBP इंदणीलु मणि.

५ MBPK घुलंतएण. ६ M संपत्तु दुक्खु करदंडण; MP संपत्तु दुक्खु करदंडंतएण. ७ BP समुल्लसइ.

८ MBP मुउ.

11 a सुय सु ए हिं पुत्राणां पुत्रैः; सुय बहु सु ए हिं भुतबहुभुतेः अर्थातागमैः.

4. 2 a उग्घाडइ विकासयति; रमणराइ कीडानुरागी. 4 b अवणंतएण श्रोतयता. 5 a खरदंडणासु कमलम्; b खरदंडणासु तीव्रदण्डनाशः तस्मिन् गुणविशेषः 8 a मामि हे सखि.

5

आरोहणबंधणताडणाहं  
गणियारिफासवसमागपण  
रसलालसु मासकणावलुद्दु  
सरिविउलविमलजलि कीलमाणु  
संगीयगोरिगयचित्तसोत्तु  
णउ पेक्खइ विसयासाइ दमिउं  
प्रांपं संप्राविउ प्राणणिहणु  
पवसियमहिलंसुयहंतसिहेण  
वेच्छिल्लकुसुमसमवणणएण  
रूवरयपयंगहं कयस्वएण  
पमेव कयंताणणि पडंति  
पक्केकिवियवसमुवगयाहं  
असरियपंचक्खरसामिसाहं  
कंपावियदसदिसिवहरसाहं

अंकुसखयाहं कईवेयणाहं ।  
भणु किं ण विहुरु विसहिउं गपण ।  
परिधावमाणु संमुहउं मुद्दु ।  
धीवरगलेण गलि भिण्णु मीणु ।  
णउ पेक्खइ संमुहं सरु सरंतु । 5  
चउदिसिंहिं वि वग्गुरवेदु भमिउं ।  
वणि वाहं विद्धउं हरिणमिहणु ।  
तिडितिडियतिडिकारवणिहेण ।  
दीवुच्छवि देहलिदिणणएण ।  
णं भासिउ भावइ दीवएण । 10  
मोहंध सयल सहि खयहु जंति ।  
एवहु दुक्खु तोहिं जंतुयाहं ।  
चक्खियपंचक्खरसामिसाहं ।  
अक्खेवि तं किं अम्हारिसाहं ।

घत्ता—इय संभरिवि मणे आहूउ खणे अमियतेउ नूँवसंसिउ ॥ 15  
तेण समायएण जुवरायएण जणणु सिरेण णमंसिउ ॥ ५ ॥

5. १ MBP °ताडणबंधणाह. २ MBP कय°. ३ B मुद्दु. ४ MBP °दिसहिं वग्गुरावेदु. ५ MBP पावें संपाइउ पाण°. ६ MBPK हय°. ७ MBP कंकेल्लिकुसुम°, T विच्छिल्ल कोरण्टकः. ८ M रूवरयपयंगहं; BP इवयरपयंगहं. ९ MBP जहिं. १० M असरिसपच°; T असरिय°. ११ MBK दस-दिस°; T दसदिसि°. १२ MBP अक्खमि. १३ MBP णिव°.

5. 1 b °खयाहं° क्षतानि. 2 a गणियारि° हस्तिनी. 3 a मासकण° मांसखण्डम्. 7 a प्राएं प्रायः; णि हणु विनाशः. 8 b °रवणिहेण °शब्दव्याजेन. 9 a वेच्छिल्लकुसुमसमवणणएण कोरण्टक-पुष्पवत्पीतवर्णेन. 10 b भावइ प्रतिभासते. 13 a असरियपंचक्खरसामिसाहं न स्मृता पञ्चाक्षरस्वामिनां पञ्चपरमेष्ठिनां सा लक्ष्मीर्यैस्तेषाम्; b चक्खियपंचक्खरसामिसाहं आस्वादितं पञ्चानामक्षाणामिन्द्रियाणा रसो रतिष्ठुच्चं तदेवामिषं यैः. 14 a कंपावियदसदिसिवहरसाहं कम्पिता भयं नीता दशदिकपथा मार्गाः रसा च भूमिर्यैस्तेषाम्.

## 6

राएण भणिउं भो भो कुमार  
कलिकलुसपंकु तवहुयवहेण  
तुहुं देहि कुलकमभरहु खंधु  
महं पहेणेवउ परमायरेण  
कामिणि मेइणि वि जगेकराय  
तुह पयपंकययचंचरीउ  
जिह लच्छीहर तिह पुंडरीउ  
महु तणउ तणउ सो पुंडरीउ  
हउं तुहुं मि बे वि साहहुं परत्तु  
घत्ता—र्ता सिस्सु ससिसरिस्सु जयकयहरिस्सु महिणाहं सोमालउ ॥  
रज्जि परिट्टुविउ णरवरणविउ पुत्तु पुत्तु पय पालउ ॥ ६ ॥

घरि घरणिभारु घउरेयधीर ।  
हउं सोसमि कंपियसयमहेण ।  
ता चवइ तणउ सो मयरच्चिधु ।  
तमणियरु व बालदिवायरेण ।  
पइं भुत्ती भुंजमि केम ताय । 5  
कूपारिलुलाययपुंडरीउ ।  
भासणु अल्लिवहि सपुंडरीउ ।  
इह करउ रज्जु नूवपुंडरीउ ।  
तं णिसुणिवि राएं तं जि उत्तु ।  
10

## 7

परिसेसियमत्तमहागएण  
परिसेसियकंचणसंदणेण  
परिसेसियबहुदेसंतरेण  
परिसेसियसयलवसुंधरेण  
जसहरसीसहु गणहरहु पासि  
दिज्जंति ण इच्छिय पुहइ जेण  
उच्चारियजिणवरथुइमुहाहं  
पवइया मुणिमयजाणियाहं

परिसेसियचलहिंसियहएण ।  
परिसेसियभइवरणंदणेण ।  
परिसेसियपउरंतरेण ।  
जायवि देवें चक्केसरेण ।  
पववज्ज लइय गिगिकुहरवासि । 5  
सह अभियनेयणामेण तेण ।  
सहसु जि वयमासिउ तणुरुहाहं ।  
सह सट्टिसहस रायाणियाहं ।

6. १ MBPK धोरेय°. २ K सोसविं. ३ M मेइणि जगि एक्क°, BP मेइणि व जगेक्क°. ४ MBPT अल्लवहि. ५ MBP णिव°. ६ MBP ता.

7. १ K adds this foot in the margin. २ K omits this foot. ३ M गंदरेण, P °दंसणेण, but records a p °णदणेण. ४ M तेण. ५ MBP पवइयइ.

6. 1 b घउ रे य° धुरि साधुः. 4 a पहेणे व उं परित्याज्यम्. 6 b लुलायय° महिषः; °पुंडरीउ व्याघ्रः. 7 b अल्लिवहि देहि, सपुंडरीउ सच्छत्रम्. 10 सोमालउ कोमल., 11 पय पालय प्रजाः पालय.

7. 7 b वयमासिउ व्रतं शहीतवान्.

दिक्खंक्रियाइं लुंचेवि केस  
इय रापं किउ णिक्खवणु जाम

णाणाणिवाहं सहसाइं वीस ।  
संपत्त विलासिणि तहिं जि ताम । 10

घत्ता—पंडिय तवचरणु दुक्कियहरणु लेवि थक्क णियजोग्गउ ॥

किउ मणु अप्पवसु कंदर्पवसु होंतउ खंतिइ भग्गउ ॥ ७ ॥

## 8

णिरुद्धयं गिराइणा  
विमुक्कंओ सवासओ  
समामि ओ तवासओ  
णिवारिओ कसायओ  
मईहरे पिसायओ  
चलेहि जा ण साहिया  
दहं दिही हणंति मा  
सगंतु सो वसी अयं  
विइणवाणरीडरं  
णियाहिदेहकंचुयं  
महीहरे भयालए  
रविस्स संमुहो ठिओ  
अहिण्णभूतणग्गयं  
महाखले वि सामिणं

समाणसं विराइणा ।  
सभूसणो सवासओ ।  
लुओ कयंतवासओ ।  
समीहिओ कसौयओ ।  
जिओ पंडुलुसायओ । 5  
थिरेहि जाण साहिया ।  
परजिया छुहा तिसा ।  
सहेइ माहसीययं ।  
भरंतरुक्खकोडरं ।  
घणागमे वि कं चुयं । 10  
हुयम्मि गिण्हयालए ।  
तवेइ मोक्खपंधिओ ।  
सबाहिरंतणग्गयं ।  
णमंसिऊण सामिणं ।

६ P कंदपु वसु.

8. १ T ममुक्कणग्गवासओ and adds सवामउ इति पाठे निजगृहमित्यर्थः. २ MBP समाहिओ. ३ P कसाईओ. ४ MT पिहुल्ल°. ५ MB दिहि; P दिह. ६ GK यय but gloss अजम्. ७ MBPK गिभयालए. ८ M संमुहे. ९ MBP थिओ. १० MBP अभिण्ण°.

8. 1 a गिराइणा चुराजेन चक्रवर्तिना; b विराइणा वीतरागेण. 2 a सवासओ खगृहम्, b सवासओ सवन्नम्. 3 a तवासओ तपआश्रवम्, b कयंतवासओ कृतान्तपाशः. 4 b कसायओ क. परमात्मा तस्य स्वादोऽनुभवः. 5 b पंडुलुसायओ पुण्यबाणः कामः. 6 a चलेहि चञ्चलचित्तैः; b थिरेहि जाण साहिया स्थिरचित्तैः परीषहेभ्योऽक्षुभितचित्तैः जानीहि साधिता निर्जिता. 8 a अय अज जिनम्; b माहसीययं माघमासे शीतम्. 10 a णियाहिदेहकंचुयं प्रवादितसर्पकम्, b कंचुयं पतितं जलम्. 18 a अहिण्णभूतणग्गय अखण्डितभूमित्पणाग्रम्. 14 a महाखले वि सामिणं महाखलानामप्युपशामकम्.



तओ वसुंधरीसुया	अणुंधरी ससासुया ।	15
धरेवि पुंडरीयं	सिरि <sup>१२</sup> व्व पुंडरीयं ।	
पईविओयकालिया	अचंदिम व्व कालिया ।	
समंदिरं समाइया	अमेयतेयमाइया ।	

घत्ता—सुंयरिवि णिययवइ सा हंसगइ धिवइ सरीरु महित्थेले ॥

णयणंजणमइलु कुकुमकविलु अंसुपवाहु थणत्थेले ॥ ८ ॥ 20

9

पुणु सोउ मुपप्पिणु हसियचंदु	जोईउ णत्तियवयणारविंदु ।	
घरंमंतिमंतणिम्मलमईइ	संचित्तु मणि लच्छीमईइ ।	
णिज्जइ दवग्गि वणि मारुण	णिज्जीव णाव वेणि तारुण ।	
असहायहु कासु वि णत्थि सिद्धि	चित्तेवी पढम सहायरिद्धि ।	
जो धरिउ भारु णाहें विसालु	तं वहइ केम अँव्वत्तु बालु ।	5
जं धवलु धुरंधरु धीरु धरइ	तहि भरिण व च्छु ण पउ वि सरइ ।	
गंधव्वणर्यररायहु सुवाय	मंदरमालिहि सुंदरिहि जाय ।	
चित्तागइ मणगइ खयरराय	देवीइ भणिय ते वे वि भाय ।	
इहु लिहिउं लेहु मइं कइं मणम्मि	सामुग्गइ णिहिउं सलंछणम्मि ।	
जाइवि वररमणीदुल्लहासु	णिविस्खेवहु सिरिमइवल्लहासु ।	10
णिंसुणिवि अम्महि कम णवेवि	पाहुहु लेविउं आहरणु लेवि ।	
गय ते णहेण कंठइयदेह	पयजुयणेहीरारुणियमेह ।	

घत्ता—खाणि मणपवणगइ खयररहिचइ उप्पलखेहु पराइय ॥

वज्जजंघणिवेण इच्छियसिवेण ते पणवंत पलोइय ॥ ९ ॥

११ K ससासुया but corrects it to सुसासुया. १२ P सरि व्व. १३ MBP सुमारवि; K सुंयरिवि. १४ MP महीयले, B महयले.

9. १ MBP °मंतिमत°, K °मते मंत°. २ K जलि. ३ MBPT अवुहु. ४ B ° णये रायहु. ५ MBP लेहु लिहिउ. ६ M कय. ७ BP लिहिउ. ८ MBP णिक्खेवहु सिरिमइ°. ९ MBP तं णिसुणिवि अवहियवयणु वे वि. १० MBP चेलिउ. ११ MBP उप्पलु खेहु.

15 b स सा सु या श्वभूसहिता. 17 b का लि या रात्रिः. 18 b अ मे य ते य मा इ या अमृततेजोमातृका.

9. 1 b °णत्तियं पौत्रः. 3 b वणि जले; तारुण कर्णधारेण. 5 b अव्वत्तु अप्रगल्मः. 9 b सामुग्गइ करण्डके; सल छणम्मि मुद्रायुक्ते. 12 b °णे ही र° कुकुमम्.

## 10

तद्दु तेहिं समप्पिउ मणिकरंडु  
 उब्बेढिवि वाइउ झैत्ति लेहु  
 जिह दिज्जंतै वि परिहरिवि भूमि  
 जिह पुंडरीयसिरि बद्धुं पद्दु  
 जिह लइय दिक्ख नृवकामिणीहिं  
 जिह तणुरुहेहिं जिह पंडियाइ  
 गउ पद्दु जिह अवरु वि अमियतेउ  
 जं जिह तं तिह लेहेण कहिउ  
 चंगउ किउ देवें मयणजूरु  
 चंगउ किउ तासु तणुब्भवेण

उग्घाडिउ तेणुवरिल्लखंडु ।  
 जिह जाउं जोइ महिणाहणाहु ।  
 हुउ अमिर्यतेउ तस्साणुगामि ।  
 मेल्लेप्पिणु गियजोवण्णमरद्दु ।  
 जिह मंडलियहिं मुक्कावणीहिं । 5  
 हयकामकोहविच्छड्डियाइ ।  
 तुहुं पालहि तेरउ भाइणेउ ।  
 ता सुहिणा सुहिहि चरित्तु महिउ ।  
 जं लइयउ तंहु भवतिमिरसूरु ।  
 जं द्रैउ संगहियउ णववपण । 10

घत्ता—धण्णउ सो णिवइ परिहरिवि रइ अरिहु जेण मणि भाविउ ॥

णिहिघडदरिसियइ घडंदासियइ महियइ को ण विहाविउ ॥ १० ॥

## 11

इय भणिवि तुरिउ संचलित राउ  
 सब्वत्थ रहेहिं ण जाहुं जाइ  
 संचारु ण लब्भइ हयवरेहिं  
 छत्तइं णं कुसुमंइं वियसियाइं  
 चमरइं चलंति कामिणिकरेसु  
 दीसंति सुवंसारूढकेउ

दिसिगयजत्ताभेरीणिणाउ ।  
 जंपाणु खलइ मायंगु थाइ ।  
 जलु थलु संदाणिउं किंकरेहिं ।  
 सिरिमइमुहससहरपहसियाइं ।  
 णं हंसइं रत्तिदीवरेसु । 5  
 णावइ सुपुत्तकुलकित्तिहेउ ।

10. १ MBP °णुवरिल्लु. १ MBPT उब्बेढिवि, K उब्बेढवि. ३ K तेण लेहु. ५ MBP जोइ जाउ. ५ MBP दिज्जती. ६ M मियउ तेउ. ७ B बद्ध पद्दु. ८ MBP आमेल्लेप्पिणु जोवण्ण मरद्दु. ९ MBP णवकामिणीहिं. १० MP तउ; B तव. ११ MBP वउ; K वउ but corrects it to वउ. १२ MBP घरदासियइ महिए.

11. १ MBP कुमुयइं.

10. 2 a उ व्बे ढि वि प्रसार्य, b महिणाहणाहु चक्री. 6 b °वि च्छ ड्डिया समूहः. 10 b ण व-वए ण यौवनस्थेन. 12 वि हा वि उ विखण्डाकृतो वाञ्छितः.

11. 4 b °प ह सि या इं प्रभाशुभ्राणि.

लीलाइ मिलिय मंडलिय जंति	मइवरु सुरगुरुसारिच्छु मंति ।	
आणंदु पुरोहिउ दिव्वदिट्टि	धणवइसमाणु धणमिच्छु सेट्टि ।	
बलवइ वि अकंपणु कंपियारि	संचैलियउ चलकरवालधारि ।	
णिवसंतगामपुरपट्टणेहिं	वणु संप्राइय कइवयदिणेहिं ।	10

घन्ता—चवलरहैल्लिचलु फुल्लियकमलु तहिं सरवरु अवलोइउ ॥

णं रायहु महिए आयहु सहिए अघवत्तु उच्चाइउ ॥ ११ ॥

## 12

करिकरडगलियमयविंदुमलिणु	मयमिहुणणिसेवियविउलपुलिणु ।	
मयलंछणयंरकरदलियणलिणु	मयमैत्तभमरगइरइयखलिणु ।	
मयगैयदलवाट्टियसिरिणिकेउ	मयवइमुह जीहाविलिहियाउ ।	
तहु तीरि विमुक्कउ सिमिहं जाम	सहुं सायरमेणं सूरि ताम ।	
चित्तंतु भोज्जंभायणपरिक्ख	रिसि परिभंमंतु कंतारभिक्ख ।	5
दमवैरु णामे पुहईसरासु	संपत्तउ दूसावासु तासु ।	
आवंत णियंवि मउलियकरेण	सिरिमइपविजंघवइवरेण ।	
ठाभणिय बे वि उवसमवसेण	थिय चारिणमुणिविणयंकुसेण ।	

घन्ता—सुरसिरकुसुमरययमुक्करयमहुयरपंतिहिं कालिउं ॥

चंदयरुज्जलेण पासुयजलेण पयजुयलउं पक्खालिउं ॥ १२ ॥

२ MB धणयत्तु. ३ K सचल्लिउ. ४ MBP सपाइउ. ५ M रहिल्लु चलु; B<sup>०</sup> रहिल्लिचलु; P रहिल्लुचलु.

12. १ MBP °लछणकर°. २ MBP मयरत्त° ३ K मयगल°. ४ MBP सिबिक्क. ५ MBP भोयभायण°. ६ BP परिभवत्तु. ७ B दमवर. ८ BP आवंतु. ९ MBP णियंवि. १० MP चारणयय.

11 °रहल्लि° लहर्यं कल्लोलाः. 12 स हि ए सख्या.

12 2 a मयल छण यरे त्यादि—मृगलाञ्छनं चन्द्रं करोतीति मृगलाञ्छनकर आदित्यः; तत्करैर्दलितं नलिन यत्र 3 a °दल वट्टियं चूर्णम्. सिरिणि केउ पद्यम् 6 b दूसा वासु पट्टइमयं शिबिरम्. 9 सुरे—त्यादि—सुराणां देवाणां शिरःकुसुमरजसि रताः मुक्तवेगा निश्चला ये मधुकरास्तेषां पक्तिभिः.

13

वंदेपिणु भावे चरणकमलु  
तं दीसइ भोयणु भुंजमाणु  
हत्थु वि उडुंतुं ण होइ दीणु  
णिकरु बिक्करहु दिट्ठि देइ  
तिम्मणु गेणहंतु वि बंभयारि  
णित्थंहे लइयउ थरुं दहिउ  
मणसच्छहु ढोइउ संच्छ वारि  
उच्चाइयथिरदीहरभुएण  
उन्नविट्टु णिहित्तइं आसणाइं  
पुणु दीहु वेत्तु जिणधम्मु सुणिवि  
घत्ता—रुवइं मुणिवरहं संजमघरहं आसि कहिं मि मइं दिट्ठइं ॥

णवर ण संभरामि हा किं करमि विहिं<sup>13</sup> लोयणहं सुइट्ठइं ॥ १३ ॥

14

तां भासिउं विहसिवि मइवरेण  
जमलहं पण्णासहं पच्छिमिल्लु  
पत्थिव जइवर जाणंति सव्वु  
गुणकारणु किं थेरत्तु होइ  
महु महुहं जि दीसइ सयलुं कालु  
आयरियउ किं परिणयवएण  
महु दमवर दमियाणंगलील  
अण्णु वि पयहि तुह माउयाहि

तुह तणुरुह दमवर जलहिसेण ।  
सुयजुयलु ण याणहि किं गहिल्लु ।  
ता चवइ णिवइ परिगलियगव्वु ।  
जरंणिवु ण महुरत्तणहु जाइ ।  
तवुं तणुरुहेहिं मईं मोहजालु ।  
कम्मु जि बलवंतउ किं वएण ।  
गयर्भवइं समासहि सामिसाल ।  
जइपुंगव चक्काहिवसुयाहि ।

13. १ MBP सरसेसु णीरसेसु वि. २ P उडुंतु. ३ P णउ. ४ M दिण्ण. ५ K सिणेहु. ६ MBP णिकरु णिवियारि. ७ MBP णित्थंहे ८ MBP थहु. ९ MBP जगि महिएं. १० MBP सीय. ११ MBP सच्छ. १२ MBP भुत्तभोज्जु. १३ MBP विहिलोयणहु.

14. १ MBP तो. २ B जइ णिवु; P जरु णिवु. ३ P महुर. ४ M सयल. ५ MBP तउ. ६ MBP महु. ७ MBP किह परिणयवसेण, T परिणतवयसा. ८ MP °भवहिं.

13. ५ तिम्मणु व्यञ्जनविशेषः स्त्रीचित्तं च. 7 b महिउ तकम्.

14. 1 b जल हि सेण सागरसेनः. 5 b मइ मयि. 6 a परिणयवएण परिणतवयसा.

आणंदपुरोहियमइवराहं  
चिरजम्मु कहसु महुं गरुउ णेहु  
रिसिणा पउत्तु पेरिचत्तणाणु  
जाओ सि बप्प तुहुं खयरणाहु

घणमित्ताकंपणकिंकराहं ।  
किं कारणु ता वज्जरइ साहु । 10  
जर्यवंम्मु णाम बंधिवि<sup>११</sup> णियाणु ।  
णामेण महाबल्लु बलसणाहु ।

घत्ता—चिरु रूप्ययगिरिहि अलयाउरिहि सइंबुद्धे संबोहिउ ॥

मुउ खयरहिवइ सुविसुद्धमइ सीलगुणेहि पसाहिउ ॥ १४ ॥

## 15

जाओ सि देवु अहिलंसिउ काउं  
तहिं मरिवि भवंतरि एँत्थु आउ  
पुणु कहइ साहु भवभावमुक्कु  
गहवइसुय घणसिरिसुयहरासु  
इइं दींलिहिणि वणियधीय  
सा मर्यं सावयवउं किं पि लेवि  
णामेण सयंपह चविवि तेत्थु  
सिरिमइ सइ सुंदरि मज्झु माय  
जंबूदीवामरगिरिविदेहि  
वच्छावइइदेसि रुंसा समिद्धु  
गउ णरयहु दससायरसमाउ  
णियणयरणियद्धि णियवसुणिवासि

ईसौणकप्पि ललियंगु णाँउं ।  
तुहुं वज्जजंशु मँहं तणउ ताउ ।  
सुणि सिरिमइजम्मंतरचउंक्कु ।  
उवसग्गु कैरेप्पिणु मुणिवरासु ।  
पिहियासवेण उवसमहु णीय । 5  
इइं देवत्तणि तुज्झु देवि ।  
इइं णरणाहहु धूय एत्थु ।  
आयण्णहि मिच्छपवंत्तु ताय ।  
पुरिमिल्लिइ गयणविलंबिमेहि ।  
हौंतउ णरवइ णामेण गिद्धु । 10  
अणुहुंजिवि पंक्कप्पहि वराउ ।  
हुउ वग्गु दिसागयकुसुमवासि ।

घत्ता—ता तहिं माहिहरण लवलीहरण पीईवद्धेणु भासिउ ॥

उप्परि भायरहो समरायरहो जंतु राउ आवासिउ ॥ १५ ॥

१ M परचित्तणाणु, १० MBP अजवम्मु; K अजवम्मु but gloss जयवर्मा त्वं. ११ K बंधवि.

15. १ MBPK अहिलसिय. २ P कामु. ३ P णामु. ४ MBP एत्थ जाउ. ५ MBP महु.  
६ MBP °मुक्क. ७ MBP °चउक्क. ८ MB सुहरासु. ९ MB करेविणु. १० P दालिहिय. ११ P मुय.  
१२ BP रसासमिद्धु; GK note this as p in the margin : रसासमिद्धु इति पाठे पृथ्वीपरिपूर्णः;  
T रसासमिद्धु अतिकोपी रसासमृद्धो वा पृथ्वीपरिपूर्णः. १६ M पीईवद्धेणु; BP पीईवद्धेणु.

11 a परि चत्त णा णु परित्यक्कज्ञान.

15. 1 a काउ कामः.; 10 a रुसा कोपेन; समिद्धु ज्वलितः. 11 b वराउ वराकः. 12 a °वसु णि वा सि धृतधनस्थाने. 41 सम रायर हो संग्रामादरस्य.

16

तंहि णिवसइ पहयरिणयरिणाहु  
 चारणमुणि णहयलि ओयरंतु  
 गिरिवरविवरंतरसंठिएण  
 दिट्ठउ पुंलि पिहियासवक्खु  
 संभैरियजम्मु हउं मंदभाउ  
 गउ सच्चंहु पुणु अलियलि जाउ  
 मणु जाणिविमुणि वि समीउ अउ  
 थिउ संणासणि मूंगु णिक्कसाउ  
 तो थाहि भणिवि महुरे सर्रेण  
 पक्कसालिउ जमिकमजुगु जलेण  
 गुणवंतहु संतहु कयउ माणु  
 तं पुच्छिउ ईच्छिउ णियहिएहिं  
 सो ताहं तेण दरिणियउ पुंलि  
 ईसाणि दिवायरु णाम तियसु  
 गउ महिवइ मोक्खहु खवि वि कम्म  
 घत्ता— मुणिपयपोमरय कालेण मय चमुवइ मंति पुरोहिय ॥

जा तांबोलंबियलंबबाहु ।  
 वणि चरियामग्गे परसरंतु ।  
 मयमासाहारुकंठिएण ।  
 परमेसरु णिम्मलणाणचक्खु ।  
 एत्थु जि चिरु हौतउ पुहइराउ । 5  
 पसुमासें पोसमि काइं काउ ।  
 संबोहिउ साहिउ धम्मणाउ ।  
 गउ भिक्खहि भिक्खु महाणुभाउ ।  
 पडिगाहिउ झत्ति चक्केसर्रेण ।  
 अंचिउ पोमेण सक्कसर्रेण । 10  
 ते तहु दिण्णउं आहारदाणु ।  
 सेणावइमंतिपुरोहिएहिं ।  
 जइणा पत्तउ सुरवरंसुहिल्लि ।  
 अण्णु वि सुहुं पावइ किं ण सवसु ।  
 तिहिं<sup>१२</sup> तिण्णि समीहिवि दाणधम्मु ।

कुरुभूमिहि मणुय हुय पीणभुय णाणाहरणहिं सोहिय ॥ १६ ॥

17

मंड मंति कुरुहि गइ आउमाणि  
 उण्णणउ सुरु ईसाणसग्गि

कणयाहु णाम कंचणविमाणि ।  
 विण्कुरियविविहमाणिकमग्गि ।

16. १ K तिहि. २ U तारोलंबिय°. ३ P णिम्मल. ४ MBP सभरिउ जम्म. ५ MBP सच्चंहु; T सच्चंहु नरके. ६ MBP मियु. ७ M तो ठाहु भणिवि; BP तो थाह भणेवि; K भो थाहि भणिवि ८ M पुणु कमजुउ जलेण BP कमजुयलु णरेसर्रेण; T कमजुयु गरेण. ९ MBP इच्छिय. १० MBP<sup>T</sup> इच्छि ११ BPK सुरवर°. १२ BP तहिं.

17. १ MBP मुउ.

16. 1 a पह य रि ण य रि णा हु प्रभकरानाथः श्रीनिवर्धनः. 4 a पुंलि व्याघ्रेण; पि हिया सवक्खु पिहिताश्रवाख्य.. 6 a सच्चंहु श्रं नरकम्. 7 b धम्मणाउ धर्मोपदेश.. 10 a सर्रेण जलेण. 13 b सु हि लि सुखपरंपरा. 15 b ति णि णि सेनापत्यादय..

रुसियइ वरभवणि पहंजणकु  
 सेणाणि पहायरु पहघरंति  
 चत्तारि वि णिञ्चु जि विहियसेव  
 पइं चुइ पुणु ह्या जेत्यु जम  
 सहूलदेउ सिरिमइहि उयरि  
 मइवरु मइवरु तुह मंति गय  
 हे नाय पहायरु मरिवि देउ  
 सेणावइ तेरउ तिच्चतेउ  
 कणयाहु तियसु चुउ कर्हीहिं भणउ  
 जो पइ बण्य मो दिण्णसुद्धि

जायउ पुरोहचरु गलियसंकु ।  
 हुउ दिव्वदिस्सि दीवियदियंति ।  
 देवस्सि तुज्जु परिवारदेव । 5  
 आहासमि णिसुणहि तेत्थु तेम ।  
 साथरसेणो हुउ पुण्णपवरि ।  
 को पावइ पयइ नणिय छाय ।  
 अज्जवहि अकंपणु पुत्तु जाउ ।  
 परबलहु समुग्गउ धूमकेउ । 10  
 सुयकित्तिअणंतमईहिं जणउ ।  
 आणंदु पुरोहिउ विमलवुद्धि ।

घना—अमरु पहंजणउ रंजियजणउ रुसियविमाणहु—आयउ ॥

दत्तयवणिवहणा विग्इयरहणा धणयत्तहि सुउ जायउ ॥ १७ ॥

## 18

धणमिच्चु संद्विकुलणल्लिणमिच्चु  
 पयइं छह बद्धसिणेहयां  
 णरवइ चउ किंकर समग्भीम  
 णिमृणेवि भवावलि विमिहयां  
 पुणु भणइ गाउ भयघंत विमल  
 चत्तारि वि णरहं ण ओंसरंति  
 णउ भक्खु लेंति णउ जल्लु पियंति  
 किं कारणु कर्हाहि मुण्णिद्वन्द

किंकर अहवा तुह परममिच्चु ।  
 तुम्हइं सग्गाउ समागयाइं ।  
 सिरिमइ गणी मोहग्गस्सीम ।  
 छ वि जिणेरविगुण च्चित्तिवि थियाइं ।  
 सहूल कोल गोपुच्छ णउल । 5  
 अच्छंति णिसण्ण ण वणि चरंति ।  
 णवियाणण तुह भासिउं सुणंति ।  
 ता भणइ सुणि सुंणि भो णरिंद ।

२ MBP रुसियवर ३ P चत्तारि जि णिञ्चु वि ४ B देवत्त. ५ MB सायरसेणु व हुउ P साथरसेणहो हुउ, K सायरसेण हुउ. ६ MBP कर्हाहि

18. १ MBP विभियाट २ MBP जिणवर°, ३ P'T गोपुच्छ. ४ MBP भो सुणि.

17. ४ a पहघरंति प्रभाविताने 9 b अ ज्ज व हि आर्जवाराम्याम. 10 b धूमकेउ बहिः.

18. 5 b गोपुच्छ मर्कटः 7 b णविया ण ण नमितानना .

इह वेसि हंत्थिणायउरि गम्म  
तहु धण धणवइ सुउ उग्गसेणु  
पहु कोट्टागारि अइकमेवि  
उर्वणेतु पणयस्मीमंतिणीहिं  
मुउ कोहें जायउ एत्थु वग्घु  
घत्ता—होंतउ स्यग्गउ चिरु माणरउ विजयणयरि वुंझिए किसु ॥  
महंणंदें जणिउ जणैवइमुणिउ णिव वसंतसेणाहि सिंसु ॥ २८ ॥ 15

## 19

हरिवाहणु णामें वृढमाणु  
णग्गणहें णंदणु भणिउ एंव  
तं णिसुणिवि धाँइउ चवलु डिंभु  
मुउ एत्थु पहु ह्यउ वराहु  
उद्धयधयमालापंचवणिण  
वणिवरिण कुयेरें जणिउ पुत्तु  
वहिणिहि विवाहु किज्जइ धणेण  
वंत्रिवि चामीयरु णियउ सव्वु  
सुउं मायाग्गउ हुउ एत्थु पहु  
णायारि णिसुणि णिव पुव्वयालि  
होंतउ कंदुवि लोळुयउ णाम  
पारंगभिउ जिणहरु पत्थिवण  
दप्पंभु समंदिरि कालमाणु ;  
माणेण परंमुहुं होंति देव ।  
सिरि लग्गु सिलामउ भवणखंभु ।  
पुणु कहइ साहु अँखंतसाहु ।  
कइ आसि जम्मि णयरम्मि धण्णि । 5  
पणइणिहि सुदत्तहि णागदत्तु ।  
भासिउ मायइ ता सा अणेण ।  
ता तहिं वि ताइ तहुं गहिउ दव्वु ।  
वणि मंकेइ माणुसमेत्तेहु ।  
सुपरइट्टियपट्टणि तोरणालि । 10  
दियहेहिं णवर रामाहिराम ।  
कारवहुं एण कारावण ।  
घत्ता—जुण्णउं रायहरु तम्हांउ तरु लेवि चहइ पुरु परियणु ॥  
इइ विसइ जहि सहम्म ति तहिं कंदुइ पेच्छइ कंचणु ॥ १९ ॥

१ MBP हत्थिणाउरि पुरम्मि, ६ BP क्त्याभरणइ, ७ MBP बलिमड, ८ MBP उवयत्तु 'T' उवणेत, ९ MB तह अच्छइ, P हुउ अच्छइ, १० MBP बुद्धांइ ११ MBP मह णंदें १२ MBP जणवय<sup>०</sup>.

19. १ MBP धाविउ चवल, २ B अवइत्तसाहु, ३ MBP त गहिउ, ४ MBPK मुउ, ५ MBP मक्कडु माणुमु, ६ MBP लोळुउ ७ M तुम्हाउ भरु, ८ B विमिइ, ९ MB कदुउ, P कदुव

12 b णिययणीहिं वरत्राभि 13 b ओहच्छइ ऊर्व. स्थितः.

19. 5 b कइ वानरः 9 a मायाग्गउ मायावी, 10 a णायारि नकुल, 11 a कदुवि काद-  
विक., b रामाहिराम हे रामाधिराम वज्जजघ, 12 b एण अनेन कादविकेन, 13 तरु शीघ्रम,  
14 विसइ स्फुटिताः.



## 20

तेल्लिप्पिणु चलकरयलनुलाइ  
इट्टु चामीयरपूरियाउ  
कइवयउ ण केण वि भावियाउ  
कम्मय्यरहु डिण्णउं सरसु भंज्जु  
इय गंगहिउं कम्मु करेवि गृदु  
घरि नणउ थंवेप्पिणु वियन्मियामु  
पत्तहि पुत्तं पियराण भिण्ण  
तें खंडइ जाम सुवण्णयारु  
तें गंपि पक्कंपियजीयण्ण  
भाम्मिउ वेम्मइ विसंतु सच्चु  
धरणीम्मरकुलन्निधेण जडिय  
परिक्खियमाहिंमाणवेहि  
सुउ बंधिवि कारागारि धिन्नु

परियाणेप्पिणु वणिवरकलाइ ।  
ब्रैहिं मिप्पिडेहिं समारियाउ ।  
लहुं गियभवणहु णेवावियाउ ।  
त्तुदु वि दाणेणं करेइ कज्जु ।  
अण्णाहिं दिणिं मोहवसेण मृदु । 5  
गउ गामंतरु तणुरुहाहिं पासु ।  
सोवण्ण इट्टु दारियहिं दिण्ण ।  
तं पिरुल्लइ पडुपिउणाम सारु ।  
जाणाविउ रायहु भीयण्ण ।  
तं जायउ रायहु नणउं दच्चु । 10  
लोल्लुयगेहं गियमुह पडिय ।  
परभीयगेहिं णं दाणेवेहिं ।  
तहिं अवसरि कट्टुइ तहिं जि पन्नु ।

यत्ता—णंदणु तेण हउ कह वि हु ण मउ दंडपहारहिं ताडिउ ॥

परधणलोल्लुयउ सो लोल्लुयउ राउलेण विम्भाडिउ ॥१० ॥ 16

## 21

पुणु बहुदविणासाऊरिण्ण  
तुम्हइं विण्णि वि महुं सन्नु जाय  
मुउ लोहकसायमलेण मइल्लु

कहिं गये भणेवि उल्लरिण्ण ।  
पाहाणं चूरिवि गियय पाय ।  
इह हयउ पेक्खु णग्गिं णउल्लु ।

20. १ MBP बहिं मिउपिडेहिं. B बाहिमिपिडेहि २ M कम्मय्यरह. ३ MBP दाणेण जि करइ  
४ MBP गहरिउ ५ MBP ता. ६ MBP तो. ७ MBP त. ८ MBP लेणयः गेहि ९ T माहिय  
सा लक्ष्मीर्हिना माहिव माहिना इति पाठे

21. १ MBP गउ २ MBP कुल्लूरिण्ण.

20. २ B बहिं बहिं 6 a विय मि यामु विकसितास्यः. 7 a पियराण पत्रजा. 12 माहिव  
लक्ष्मीपती राजा.

21. 1 B उल्लूरिण्ण कंदुकिना

णिसुणेपिणु महुमहुरक्खराइं  
 उवसंत वहांति ण भउ ण गेसु  
 पइं दिण्णु दाणु माण्डं इमेहि  
 बहुभोयभावसुइदीइणीहिं  
 अट्टमइ त्तिमि तुहुं जिणवग्गिंदु  
 निग्गिमइ होसइ सेयंसगउ  
 सुग्गणरसुहाइं संपाविहिंति  
 संसारविहुरणिंवेइएण  
 कमकमलजमलवलइयसिरेण  
 वंदिय मंतिहि सावयगणेण  
 संपत्ता कुरिणं वणयरत्तु  
 यत्ता—मृगंहत्ये ५ सिवि तहि णिसि वसेवि सूरुग्गमि पडु णिग्गउ ॥  
 कग्गिंटासग्गिह पसरियकरहि भयंभसावियदिग्गउ ॥ २६ ॥

सुयरेपिणु गय जम्मंतराहं ।  
 सुहस्राणं अज्ज खवंति दोसु । 5  
 कईकंठवग्गविसहरदमेहि ।  
 पग्गमाउ वत्तु कुरुमेइणीहिं ।  
 होसाहि पयजुयणांमियसुरिंदु ।  
 पहिलउ जि द्वाणंतिन्थयरदेउ ।  
 ए तुह सुहि होइवि सिदिग्गिहिंति । 10  
 जिणणाहधम्मअणुराइएण ।  
 तं णिसुणिवि पणविय बहुवरेण ।  
 गय रिसि णहयग्ग णहपंगणेण ।  
 संभासिवि चत्ताग्गि वि णिरुत्तु ।

22

छणयंदु व तणुंकांतिइ पसण्णु  
 साणुंधग्गि पइवयणिलयकुहिणि  
 पर्णमिय सासुय जार्माउएण  
 आलिग्गिउ राणं भार्यणिज्जु  
 मिलियउ लच्छीमइसिग्गिमईउ  
 णियंबंधुहि संचिंतियसिवेण  
 सामित्तणगुणि संणिहिउ सामि

दियंहहिं पुंडरिंकिणि पवण्णु ।  
 अलोइय नेण णवंति बहिणि ।  
 अविश्यसणेहंपसरियभुएण ।  
 अविउल्लु बालु पहसियमुहज्जु ।  
 णं गंगाणइजउणाणइउ । 5  
 तहिं नेण वज्जजंघे णिवेण ।  
 मंनि वि किउ विउंहेणयाणुगामि ।

३ MBP °ज्ञाणेण । अ ज खवहि ४ B कइकटुवरघ°, P कडकोलवरघ° ५ M बहुभेय° ६ MBP °दावणीहि. ७ MBP °णावियणारिंदु ८ M दाणु नित्तु° ९ PK करकमल°. १० M मगहत्थे फसिवि तहिं णिसि णिवसेवि B मगहत्थे फासावि तहि वणि णिवसेवि P मगहत्थे फासिवि तहि (णव मासवि.

22 १ M णवकांतिइ २ MBP अवलोइय ३ MBP पणविय ४ MBP जामाइएण ५ MBP °मिणेह° ६ MBP भाइणेज्जु ७ MBP अविउल्लु वि T अविउल्लु इति पाठेऽप्ययमेवार्थः. ८ MBP ता णियबंधुदि चितिय° ९ MB विवुह°, P विवुहु

6 b °कठ° सुकर

22 4 b मुहज्जु मुखाऽजम 7 b विउ ह ण या णु गा मि विद्वज्यानुगामिन .

गिरुवहउ गिवसाधियउ देसु	सुहि संमाणिय संचियउ कोसु ।	
विचीइ बलाइं गियंतियाइं	जोग्गाइं दुग्गाइं परिचितियाइं ।	
पडिवक्खु असेसु वि खयहु णाउ	थिरु रज्जि थवेर्पिणु पुंडरीउ ।	10
अर्पणु पुणु घरवत्ताइ लइउ	सहुं कंतइ उर्पल्लेखेहु अइउ ।	
सैहुं भिच्चउक्कं ससिमुहेण	थिउ रज्जु करंतु सुंही सुहेण ।	
को एम ससयणहं देइ रिडि	एवहु कासु सामत्थसिडि ।	

घत्ता—थिर परकज्जग्गय गियवंसधय सुणुरिस को णामंघइ ॥

घणतमभग्गरणे दित्तीरिं रणे पुष्पदित को लंघइ ॥ २२ ॥

15

इय महापुराणे तिसट्टिमहापरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरहए

महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे वज्रबाहुवज्रदंततवचरणकरणं

णाम पंचवीसमो परिच्छेओ समन्तो ॥ २५ ॥

॥ संघि ॥ २५ ॥

१० MP यतियाइ. ११ MBP समपिडि १२ BP अपुणु १३ MBP उवल्लु खेहु १४ B omits this foot. १५ MBP महामुहेण. १६ P दित्तीहरणे.

11 b अइउ आगतः. 13 a समयण ह स्वस्वजनस्य 14 णा स घ इ नाश्रयति.

## XXVI

कामभोयसुहरमवमहो तद्दु वसुमइहि काङं वणिज्जइ ॥  
जं जं चितइ किं पि मणे तं तं सयलु वि खणि संपज्जइ ॥ धुवकं ॥

।

जक्खपंको ददं वल्लहालिंगणं  
उंचओ मंचओ चारुमेज्जायलं  
उण्हयं भोयणं तुण्णधागहं  
पुव्वपुण्णेण सव्वं पि संजुत्तयं  
चंदणं चंद्रपाया पिया णहली  
दाहिणो मंशरो माँहओ सीयलो  
वल्लरीमंडवो पोमँजुत्तो सरो  
थद्धथद्धं दहिं सीयं पाणियं  
फुल्लियासाकयंबोहधूलिरओ  
णीग्घारासुयंतंबुवाहज्जुणी  
णिग्गलं मंदिरं णिक्खियं भूयलं  
इट्टगोटीविसिट्टेहिं विण्णाययं  
विज्जुमालाफुरंतं णहं दिण्णहं  
दीहरो कालओ जाव वॉच्छिण्णओ

मालईमालिया कुंकुमालेखणं ।  
आवरौहारि सोमँहं थणाणं थलं ।  
रत्तओ कंबलो छण्णरंघं घरं । 5  
सीययालम्मि तेणेरिसं भुत्तयं ।  
मल्लियादामयं तारहागवली ।  
रुक्खकीलाणिओ पल्लवो कोमलो ।  
वीयणंदोलाणीणओ सीयरो ।  
उण्हयालम्मि तेणेरिसं माणियं । 10  
मत्तमाऊरवंदस्स केयारओ ।  
संगया सुहवा पासि सीमंतिणी ।  
धावमाणं रयालं पणालीजलं ।  
दिव्वगंधव्वयं कव्वयं पाययं ।  
तस्स मेहागमे तं पि सोक्खावहं । 15  
गेहए धूवओ ताम से दिण्णओ ।

MBP gi e, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

घनधवलताथयाणामचलास्थितिकारिणा मुहुभ्रंमताम ।  
गणनैव नास्मि लोके भरतगुणानामरीणा च ॥ १ ॥

GK do not give it.

1. MBP उचओ २ M °सेजावळ P सेजाळयं ३ MBP तोण्ण ४ GK मारओ but gloss वायु . ५ MBP पोमँजुत्तो ६ MB थद्धथद्ध P बद्धथद्ध ७ MBP सीयलं, ८ M रयाणं, ९ MBP वोल्लणओ, T वॉच्छिण्णओ.

1. 4 b आव रो हारि स्थूलोन्नत मनोज्ञ च मोह उष्ममहितम् 9 b सीय रो शीकरो जललवाः,  
11 b °माऊ रवंदस्स केयारवो मयूरवृन्दस्य केकारव . 13 b रयाल सवेगम्.

सोत्तसंचारि भूयेण ताणं हुआ  
कारणं मञ्जुणो किं जणीं कंखण

दंपईणं खंणेणेष जीओ गओ ।  
होइ मंत्यं सिरीमं पि आउक्खण ।

यत्ता—जंबूदीवसुरालयहो उत्तरकुरुहि रमणमर्णहारिहे ॥

मरिचि वड्डवरु अवयरिउ उयरि अणिदड्डु अज्जवणैरिहे ॥ १ ॥ 20

## 2

णवमासहिं गम्भडु णीसरियहं  
उत्ताणियमुहाहं णिवसंतहं  
सत्त सत्त दिण गय रंगंतहं  
सत्त खलिय पर्यवयणइं देंतहं  
पुणु सत्तहिं थिराइं संजायइं  
अवरहिं सत्तहिं अलिणहच्चिडुरइं  
अण्णाहिं सत्तहिं दियहहिं पोढइं  
नाइं तिगाउयतुंगसरीरइं  
मो वि गामु गेणहंति तिदिवंसहिं

ताहं विहिं वि संचियसुहचरियहं ।  
ककमलंगुलियाउ पियंतहं ।  
पुणु वि पुणु वि उट्टंतपडंतहं ।  
अवरोप्परु दग्केलि करंतहं ।  
गयंकुसलाइं परिप्फुडवायइं । 5  
णिहिलकलाकलावणिउणयरइं ।  
णवजोव्वणसिगारारुढइं ।  
वरंबदरीहलमेत्ताहारइं ।  
इय भांसिउं रिसीहिं हयहरिम्महिं ।

यत्ता—जहिं चामीयरधरणियलु पाणिउं मिट्टुं णाइं रसायणु ॥

10

मणिमयकप्पमहीरुहहिं चिउं रवि सत्तावीमं जोयणु ॥ २ ॥

## 3

जहिं जणियसोक्ख  
जणमणु हरंति

दहभेय रुक्ख ।  
चिंतियउ देंति ।

१० MBP खणेणय. ११ B मन्थ पियाओखण P मत्थ सिरीमं पयाओ खण. १२ MBP °हारहो.  
१३ MBP °णारिहो

2. १ B संचियसुहसुहचरियहं २ MBP पिय. T पय पदानि ३ MBP गइं. ४ MPB वर-  
बदरीहल°, T कुवली बदरी. ५ B सुदिवसाहि. ६ MBP भासियउ रिसिहिं. ७ MP थिउ B थिउ.  
T थिउ प्रच्छादितम्.

18 b सिरीस थ्रामुखं पुणं वा. 19 °सुरालयहां मेरो.

2. 1 ॥ पयवयणइं पदानि बचनानि च. b दग्केलि लोकक्रीडा. 8 b °कुवली° बदरी. 11 थिउ  
प्रच्छादितम्.

महसहिउं पेज्जु	मज्जंगु मज्जु ।	
तूरंगतूरु	भूर्यंगु हारु ।	
केऊरु दोरु	वैच्छंगु चीरु ।	5
गेहंगुं गेहु	णं सरयमेहु ।	
दोयंति तुंग	तरुभायणंग ।	
भायणविहँत्ति	दित्तंगदित्ति ।	
जे भोयैणक्ख	ते विविहमक्ख ।	
भोयणसयाइं	रस्ससंगयाइं ।	10
उवणंति ताइं	जग्गु महइ जाइं ।	
पुण्णाय णाय	वर पारियाय ।	
णवमालियाउ	अलियालियाउ ।	
मालंगकुरुह	दोयंति गिरह ।	
हयतिमिरभावुं	दीवंगुं दीवु ।	15

घत्ता—णिच्चु जि उच्छेवु णिच्चं दिहि णिच्चु जि तगुनारुण्णु णवल्लउ ॥

भोयभूमिरुहमाणुसहं जं जं दीसइ तं तं भल्लउ ॥ ३ ॥

4

ण दुज्जणु दुसियसज्जणवासु	ण खासु णं सोसु ण रोसु ण दोसु ।
ण छिक्क ण जिभणु णालँसु दिट्ठु	ण णिह ण णेत्तंणिमीलणु सुट्ठु ।
ण रत्ति ण वासरु धंतुं ण धम्मु	ण इट्ठविओउ ण कुच्छिय कम्मु ।
अयालि ण मरुँवु ण चित्त ण दीणु	कयाइ कहिं पि सररीरु ण झीणु ।
पुँगीसविसग्गु ण मुत्तपवाहु	ण लाल ण सँभुं ण पित्तु वि डाहु । 5

3. १ MBPKT मयसहिउ. २ MBP भूगगु ३ MBP केऊरु°. ४ M वच्छंग. ५ MBP गेहंग. ६ MBP °विहित्ति. ७ MP भोयणेक्ख ८ P गिरह. ९ MBP °भाउ १० MBP दीवगदीउ. ११ MBP उच्छउ. १२ MBP णिच्चु.

4. १ MB दुज्जण. २ MBP ण रोसु ण सोसु. ३ MBP णालस. ४ M गित्त°. ५ MBP वण्णु; T धण्णु. ६ MB मिच्चु. ७ MBP पुरीसुवसग्गु. ८ MBP सिंभ. ९ MBP पित्त ण डाहु.

3. 3 a महस हिउ हर्षसहितम्; पेज्जु पातव्यम्. 4 a °वि हति विभक्ति भेदः 5 a भो य ण क्ख भोजनाख्याः. 14 b गिर ह निर्दोषा .

4. 3 a चंदु ध्वान्तमन्धकारः पाप च.

ण रोउ णं सोउ ण सेउ विसाउ  
सुँरुव सलक्खण माणव दिव्व  
मुहाउ विणीसिउ सासु सुयंघु  
तिपल्लपमाणु थिराउणिबंधु  
ण चोरु ण मारि ण घोरुवसग्गु

किलेसु ण दासु ण को वि<sup>११</sup>वि राउ<sup>१२</sup> ।  
अगव्व सुमव्व समाण जि सव्व ।  
कलेवरि वज्जसमट्टियबंधु ।  
करीसेँर केसरि ते वि हु बंधु ।  
अहो कुरुभूमि विसेसइ सग्गु । 10

घत्ता—विहि मि ताहं तहि संठियहं एकमेकरहरमणालुद्धं ॥

भुँजंतहं णाणासुहं जाइ कालु दिँदणेहणिबंधहं ॥ ४ ॥

## 5

तहि जि परहरथोरकर  
पत्तभोयभूमीभवेण  
समहिलेण अच्छंतपण  
कासु वि भासियसम्मयहो  
देवहु दीवियदिप्पहहो  
पुव्वभवंतरु संभरिउ  
थिउ णियमणि जा विंभइउ  
ता णहाउ चारणजुयलु  
यंतु तेण हकारियउ  
सीसें सीसेण जि णेविउ  
के तुम्हइं किं आगमणु  
महु वट्टइ णेहुल्लियउ

सहूलाइय जाय णर ।  
वज्जजंघरायज्जवेण ।  
सुरंतरुसिरि पेच्छंतपण ।  
कज्जेणैयं समागयहो ।  
णिपवि विमाणु रविप्पहहो । 5  
तं ललियंगदेवंचरिउ ।  
भवणिव्वेयभावलइउ ।  
भोयरिउ णहणिहु विमलु ।  
रहरासणि वइसारियउ ।  
सविणयवायइ विण्णविउ । 10  
किँउ किं तुम्हहं उवरि मणु ।  
ता गुरुमुणिणा बोल्लियउ ।

घत्ता—जइयहुं तुहुं अलयाउरिहि हौतउ आसि महावलु राणउ ॥

तइयहुं हउं सइंबुद्धु तुह मंति मंतसब्भाववियाणउ ॥ ५ ॥

१० MBP' ण सेउ ण सोउ. ११ MBP कोइ. १२ MBP add after this: मुहजि ( B महुजि; P मुहजे ) ण मीसिय मासिय ( B चम्मू ण ) रोम, सुरेसहु बुदि विसेसियकाम ( B °कम्म ). १३ MBP सरुव. १४ M करीसरि. १५ MBPK भुँजंतह. १६ MB दढणेहणिबद्धह.

5. १ MBP सहूलाइ वि. २ MBP सुरहरसिरि. ३ MBP कज्जे केण. ४ P °देउ. ५ P वि. ६ MBP किं अम्हहं तुम्हहं.

9 a सुयंघु सुगन्धः. 11 b विसेसइ अतिशेते.

5. 10 a सीसेणजि शिष्यणेव. 12 a णेहुल्लियउ जेहारमं.

6

णिहाइ भुक्तो सि	विवरंतधित्तो सि ।	
अइया कुवाईहिं	सिविणंतरे तीहिं ।	
हो बप्प दुग्गेज्झ	तइया मप तुज्झ ।	
संसारहाराइं	जिणवयणसाराइं ।	
सिद्धा रिसी जेहिं	दिण्णाइं तं तेहिं ।	5
होऊण ललियंगु	मोचूण दिव्वंगु ।	
भीमारिणिण्णासि	भूमीसु द्वओ सि ।	
मुणिदाणबुद्धीइ	बहुपुण्णासिद्धीइ ।	
तुहुं पत्थु जाओ सि	णाणेण णाओ सिं ।	
संबंधिओ होसि	किं जेय जाणासि ।	10
खगवइविओएण	मइं मुक्कभोएण ।	
किउ घोह तवयरणु	इंदियछिंहाइरणु ।	
सोहम्मि सोहान्तु	हुउ देउ मणिचूलु ।	
सइंपहविमाणम्मि	दुक्खावसाणम्मि ।	
इह जंबुदीवम्मि	पुव्वे विदेहम्मि ।	15
पुक्खलहि मेइणिहि	पुरिपुंडरिंकिणिहि ।	
पियसेणरायस्स	पसरंतरायस्स ।	
कयणाहणेहम्मि	सुंदरिहि देहम्मि ।	
जाओ मि हं भइ	आलौविणीसइ ।	
पीइंकेरो णाम	सुणि रौमिणीकाम ।	20
अलिवलयणिहकेस	पीइंसरो एंस ।	
मज्झाणुओ होइ	दिव्वो महाजोइ ।	

6. १ MBP विवरंति. २ MBP हा बप्प. ३ MP add after this: णयणेहिं दिट्ठो सि, णेहं गओ तो सि ४ B °कुहा°; T °ठिहा°. ५ MBP आलावणी°. ६ MBP पीइंकेरो. ७ MBP कामिणी°; T रामिणी°. ८ P ईस.

6. 12 b °ठिहा° स्पृहा वाञ्छा. 19 b आला विणीस इ वीणासदृशवाच्यः. 20 रामिणी° श्री.



घत्ता—णिञ्चं विय णेहाउलहो णिग्गय विण्णि वि णियघरवासहो ॥

जाया सीस सयंपहहो अरहंतहो संतारिविणासहो ॥ ६ ॥

## 7

अवहिणाणि चारण संजाया  
लइ सम्मत्त अलाहि पलावें  
अत्थि णत्थि किं संक ण किज्जइ  
गुणवंतहु दोसु वि ढंकिज्जइ  
असुइकलेवरु जणु ण वियप्पइ  
वेज्जावच्चु समउ वच्छहें  
मिच्छु तुच्छु जो वंजु कहिज्जइ  
वडुइ वड्डियदुक्कियलेवइ  
समयवेयलोइयमूढत्तणु  
अच्छइ वुहयणगर्थणिबद्धउ  
घत्ता—वेणं किज्जइ जीवंदेय अप्पउ पर सयलु वि जाणिज्जइ ॥

हम्मइ जेण जियंतु पसु तं कग्गालु ण वेउ भणिज्जइ ॥ ७ ॥

विण्णि वि पइं संबोहहुं आया ।  
भावहि जिणदंसणु सम्भावें ।  
इहपरलोयकंख वज्जिज्जइ ।  
मग्गभट्ट पुणु मग्गि ठविज्जइ ।  
साहुहुं देहंदुगुंछ ण धिप्पइ । 5  
किज्जइ हियपं संघेहियहें ।  
अण्णदिट्ठिवहुं सो ण थुंणिज्जइ ।  
मलु कुदेवकुच्छियगुरुसेवइ ।  
अवसें करइ अणत्थपवत्तणु ।  
धिउ णाणम्मि धाउ सुपसिद्धउ । 10

## 8

सया णारिरत्तो  
सया वित्तलुद्धो  
समोहो ममाओ  
ण सो होइ देवो  
पलं जस्स खजं

सया मज्जमत्तो ।  
सया सत्तुकुद्धो ।  
सदोसो सराओ ।  
ण खं सुण्णभावो ।  
महुं जस्स पेजं । 6

7. १ M अलंहि. २ MBP वि दोसु ३ P असुह°. ४ M देहु दुगुञ्जण, P देहु दुगुंछु ण. ५ B संहियहें. ६ MBPT °पहु. ७ MP मुणिज्जइ. ८ MBP °गर्थहि बद्धउ T गयणिबद्धउ. ९ MBP जीवदया.

8 १ P मज्जि मत्तो. २ P सत्तुकुद्धो. ३ MBP सय सुण्ण°, T खं ण न गगन देवः.

२ 4 संतारिविणासहो परमवीतरागस्य कर्मविनाशकस्य च

7. 2 a अलाहि प्रतिषेधेऽव्ययम्. 6 b °हियहें हितत्वेन 7 b अण्णदिट्ठिवहु मिथ्यादर्शनादि-  
मार्ग . 10 a वुहयणगर्थणिबद्धउ पण्डितैः शास्त्रे रचितः. b विउ टनि—विद ज्ञान इति धातुः प्रसिद्धः.

8. 4 b ण ख न गगन देवः.

वह् जस्स गेहे	रई जस्स देहे ।	
गुरू सो वि हा हे	जगे मंदमेहे ।	
सपावं सपावा	णवंता विगावा ।	
ण गच्छंति सग्गं	ण वा तेऽपवग्गं ।	
पउत्ता महंता	ण कायस्स चिंता ।	10
विसस्सावि हारे	खमा होइ भारे ।	
पमोत्तूण वेयं	खगं वइणतेयं ।	
जिणिंदं अणिदं	सुरिंदोहवंदं ।	
विहुं वीयरोसं	अहिंसाणिघोसं ।	
विहाऊण एक्कं	णयाणीयसक्कं ।	15
परो को हयारी	जगे मोहहारी ।	
तिणा जो पउत्तो	असच्चेण चत्तो ।	
अहिंसापयासो	वियाणागमो सो ।	

घत्ता—पँत्तीय धम्मु दयार्परम्मु रिसि गुरू देउ जिणिंदु भडारउ ॥

लइ लइ तुहुं सम्मत्तगुणु मइं अक्खिउं संसारहु सारउ ॥ ८ ॥ 20

9

भो ललियगत्त	भो घवलणेत्त ।	
सइहसु मित्त	तच्चाइं सत्त ।	
छइव्वभेय	छज्जीवकाय ।	
पंचत्थिकाय	चउं सुरणिकाय ।	
णाणाइं पंच	गइभेय पंच ।	5
रिसिवयइं पंच	गिहिवयइं पंच ।	

४ MBP तस्त. ५ MBK विमस्सावहारे; P विसस्साहवारे. ६ MBP मोहयारी; T मोहयारी मोहदारकः

७ MB एत्तीय; P पत्तिय and gloss प्रतीत्या. ८ MB °पवरु; P °परु.

9. १ K adds this line in the margin but scores it out. २ MBP सुरचउणिकाय. ३ M गयभेय.

7 a हा हे हा कष्टम्. 8 b विगावा विगतगर्वाः. 9 b अपवग्गं मोक्षम्. 11 b खमा समर्थाः. 12 b वइणतेयं गरुडम्. 15 b णयाणीयं नमनार्थमानीतः. 16 a हयारी विनाशितकर्मांरातिः. 18 b वियाणागमो सो विजानीहि सः आगमः. 19 पत्तीय प्रतीत्यः, अथवा प्रतीति कृत्.

छल्लेसभाव	मुणि तिण्णि गाव ।	
तेरह चरित्त	गुंत्ति वि तिहुत्त ।	
णवविह पयत्थ	दह धम्मपंथ ।	
सत्त भय सिट्ठ	मय अट्ठ दुट्ठ ।	10
अप्पाणुवाउ	कम्माणुवाउ ।	
चरणाणिओउ	करणाणिओउ ।	
जं कहिउ तेण	मुणिपुंगवेणं ।	
णिस्सुंणिवि कमेण	सैं गहिउं तेण ।	
अज्जेण जेम	अज्जाइ तेम ।	15

घत्ता—जिह सहूल्लवणरेण कोलणरेण वि तिह पडिवण्णउं ॥

वाणरचरफणिरिउं चरहं सम्महंसणु मुणिणा दिण्णउं ॥ ९ ॥

## 10

भत्तिप णविय भवियणरवग्गे	गय रिसि उंल्लेवि णहमग्गे ।	
कुलिसबाहुतणयहु ते किंकर	मइवराइ चत्तारि सुहंकर ।	
तउ करेवि जाया णिरवज्जहि	अहविमाणि हेट्ठिमगेवज्जहि ।	
लोयसारु अहंमिदसुरत्तणु	पत्ता पुण्णपहावपहुत्तणु ।	
वज्जंजंघु सइ सिरिमइ अज्जइ	बे वि मयाइं समंविपुज्जइं ।	5
हुउं ईसाणकण्णि वरु सुरवरु	सिरिपहमंदिरि णामें सिरिहरु ।	
तहिं जि कण्णि कुंदेंदुसमप्पहि	सीमंतिणि सुरगेहि सयंपहि ।	
जिणचरणारविंदरयच्चित्तें	णारिलिंणु छिंदेवि सैमत्तें ।	
हई अमरु सयंपहु णामें	सो रूवेण ण णिज्जिउ कामें ।	

४ MP रयणइं तिहुत्त. ५ K °पगमेण. ६ B सिसुणवि, P णिसुणवि. ७ MBP महिउ. ८ MP सहूल्ल अज्जणरेण; B सहूल्लवज्जणरेण. ९ MP °रिउचरहं.

10. २ P उल्लेवि. २ MBP अहमिदु. ३ MBP वज्जंजंघु सिरिमइ तह अज्जइ. ४ P मुयाइं. ५ P हुव. ६ MBPK सम्मत्तें.

9. 7 b मुणि जानीहि. 11 a अप्पाणुवाउ जीवास्तित्वम्, b कम्माणुवाउ कर्मानुवादः. 12 a चरणाणि ओउ चरणानुयोगः. 17 फणि रिउं° नकुलः.

वर्धचरु वि णरु मुउ ललियंगउ णिलइ मणोहरि हुउ चित्तंगउ । 11  
 देउ वराहचरु वि संजायउ णामे कुंडलिल्लु सुच्छायउ ।  
 पंदविमाणि सरयकंदाहइ खणि सोदामणिपुंजु व मेहइ ।  
 घत्ता—कुरुभूमिहि माणेवु मरिवि कंतिइ णां मियंकु दुइज्जउ ॥  
 णियसुहकम्मं पेरियउ पहयरि मंणरहु हुउ णउलज्जउ ॥ १० ॥

11

होतउ आसि जम्मि जो वाणरु सुहुं भुंजेप्पिणु कुरुधरणीणरु ।  
 णंदावत्तविमैणइ ह्यउ णाम मणोहेरु देउ संरूयउ ।  
 जो सइंबुद्धु बुहोहे भाविउ जेण महाबलु धम्महु लाविउ ।  
 पीयंकंरु तिलोयपीईकंरु सो संजायउ केवल्लिजिणवरु ।  
 णाणे परियाणिवि सुरसहयरु गउ बंदणैहत्तिइ तहु सिरिहरु । 5  
 अमरसहंतरालि पइसेप्पिणु थुउ णियगुरु गुरुभत्ति करेप्पिणु ।  
 णिवडंतहु भवविवरि मुणीसर पइं महु दिण्णु हत्थु परमेसर ।  
 पइं सइंबुद्धु बुद्धं जगु बुद्धउ पइं हियउल्लउ कयउ विसुद्धउ ।  
 पइं जोईयउं तच्चु णीसेसु वि तुहुं समु सहणेसु वि णीसेसु वि ।  
 तुहुं महु लग्गणखंभु भंभंगउ हउं तुह चरणजुयलु सरणं गउ । 10

घत्ता—मिच्छादिट्ठि सुंदुद्धमण पावयम्म णिद्धम्म वराया ॥  
 कहहि मयणमयणिम्महण कहिं ते मंति महारा जाया ॥ ११ ॥

12

कहइ भडारउ विण्णि कुधामहु गय संभिण्णसहसमइ भीमहु ।

७ K विग्घचरु. ८ MP कुंडलिल्लु. ९ MBP माणउ.. १० MBP मणहर, K मणहर but corrects it to मणरहु.

11. K सो. २ MBP °विमाणे पहूयउ. ३ M मणोहर. ४ MBP सुरूयउ. ५ M पीईकर, P पीईकर. ६ MP पीईकर; B पीयंकंरु. ७ MB °भत्तिहि; P °भत्तिइ. ८ B करेविणु. ९ MP सुदु. १० MBP जाणियउं. ११ MBP अमगउं. १२ MB सुदिट्ठिमण; P सुदुद्धमण.

10. 12 a कंदा हइ मेघामे.

11. 6 a °सहंतरालि समान्तरे. 9 b सहणेसु सधनेषु; णीसेसु निःस्तेषु दरिद्रेषु.

असहविदुर संतर संजोर्यहु  
 सुण्णवायविवरणदुसियमइ  
 तं णिसुणिवि सिरिहरु गउ तेत्तहि  
 पइसेपिणु तं सतिमिरु कुविवरु  
 अहो अहो सयमइ सुण्हि महाबलु  
 भुत्ती सुइरु जेण अलयाउरि  
 सुरदुंदुहिगंभीरणिणापं  
 गुरुणा जिणवयणम्मि णिउत्तउ  
 जीवदर्योदमेण परिचत्तउ  
 दुण्णपरिं मा विणडहि अप्पउ

णिच्चतमंघहु णिच्चणिगोयहु ।  
 णिवडिउ णरइ दुइजइ सयमइ ।  
 णारउ णरइ णिसण्णउ जेत्तहि ।  
 भणइ विमाणारूढउ सुरवरु । 5  
 हउं सो खयरराउ जसणिम्मलु ।  
 सामिसालु तुहुं रिउकरिकेसरि ।  
 तुम्हइं तिण्ण वि जिणिवि विवापं ।  
 सोक्खपरंपेराउ हउं पत्तउ ।  
 तुहुं पुणु पावें एत्थु णिहित्तउ । 10  
 वीयराउ जिणुं भणु परमप्पउ ।

धत्ता—धम्म अहिंसउ सदहहि मोक्खमग्गु णिगंथु वियाणहि ॥  
 जीहोवत्थछिहारहिउ मुणि णिमुक्कमोहु संमाणहि ॥ १२ ॥

## 13

पहाजिततरणी  
 पइ तेण मुणिओ  
 दढं झैत्ति गहिओ  
 जिणिंदस्स समओ  
 तमुब्भूयदुरियं  
 पैवोत्तूण महुरं  
 सुरो सोम्मवैयणो  
 तओ विदुरदलिओ  
 रिउ विहियसमरा

विहंगेण करुणी ।  
 जैयार्णिद भणिओ ।  
 सया दोसरहिओ ।  
 अमोहेण वि मओ ।  
 महादुक्खभरियं । 5  
 गओ सग्गसिहरं ।  
 सियायंबणयणो ।  
 सकालेण चलिओ ।  
 महाणैरयविवरा ।

12. १ P सो जोयहु. २ MBP मुणहि. ३ P सुयरु. ४ MBP °परपराइ. ५ MBP °दया-  
 दाणें. ६ MBP भणु जिणु. ७ MB णिमुक्कमोहु; P णिमुक्ककोहु.

13. १ B करणी. २ MBP जिणिंदेण भणिओ. ३ MBP भसि°. ४ M समुब्भूय°. ५ MBP  
 पमोत्तूण. ६ MBP सोम°. ७ MB °णयर°.

12. 13 जी हो व त्थ छि हा र हि उ जिहोपस्यक्षुधारहितः.

13. 5 a उ न्भू य दुरि यं उदयप्राप्तपापम्.

मणीणलिनणिलए	वरे दीववलए ।	10
सिगरूढहरिणो	महामेरुगिरिणो ।	
सुरासाइ सहले	विदेहम्मि धिउले ।	
जलाऊरिया णई	मही मंगलावई ।	

घत्ता—पट्टणु रयणसंचु सधणु तेत्थु जि णरिंदु मंहीधर णामें ॥  
सुइवंसुंभुवु गुणसहिउ चावदंडु णं दाविउ कामें ॥ १३ ॥ 15

14

तहु गेहिणि' सोहगें सुंरि	किं वणिज्जइ णामें सुंदरि ।	
पाउ असेसु वि अणुहुंजेप्पिणु	जिणमयंसहहाणु पैवेप्पिणु ।	
सयमइ सुहहलेण तहि तणुरुदु	हुउ छणयंदविंवलसंणिहमुहु ।	
सो जयसेणु भाणुसंणिहयरु	जाम विवाहि धरइ कण्णाकरु ।	
ता सिरिहरसुरु तहिं जि पदुक्कउ	वाउ धूलिउवल्लोहुवि मुक्कउ ।	5
तेण विग्घु भीसणु पारद्धउ	उच्छवि केण वि सोक्खु ण लद्धउ ।	
तं पेच्छवि वरइसें भाविउ	एहंउ चिरु मइ कंह व णिसेविउ ।	
एम कहिं मि पाहाणिहिं ताडिउ	एस्व कहिं वि खरपवणें मोडिउ ।	
एम कहिं मि रयपुंजे झंपिउ	एस्व कहिं मि हउं दुक्खें कंपिउ ।	
एम सरिवि सुमरिउ णारयंभउ	जमहरगिसिहि पालि लइयउ व्रंउं ॥10	
तउ करेवि बंभिंदु पइयउ	धम्मु जि जीवहु अंगइ इयउ ।	

घत्ता—अइगरुआ वि णवंति गुरु चंदसूरवंदारयवंदे ॥  
सामण्णु वि सुरु धम्मगुरु सिरिहरु पुज्जिउ वंभसुरिंदे ॥ १४ ॥

८ MBP °ऊरिय, K °ऊरिय but corrects it to °ऊरिया in second hand, ९ MBPK तेत्थु णरिंदु, १० MBP महीधर, ११ MBP °वमुब्भव.

14. १ P गेहणि, २ MBP जिणमइ°, ३ K पालेप्पिणु, ४ MBP °सणिय°, ५ MBP सिरिहरु, ६ K omits this foot, ७ MB कहिं मि, ८ BK पाहाणहिं ९ MBP णारय°, १० MBP तउ; K वउ, ११ MBP सग्गहु, K सग्गहु, but corrects it to अग्गहु

10 a मणीणलिनणिलए मणिमयपद्यस्थाने; b वरे दीववलए पुष्करार्धद्वीपे.

## 15

चुउ मुइवि णियकाउ	सिरिहरु वि सग्गाउ ।	
ससिसूरदीवम्मि	इह जंवुदीवम्मि ।	
हरिणियगिरीसस्स	मंदरगिरीसस्स ।	
उत्तुंगेदेहम्मि	सुरदिसिविदेहम्मि ।	
वित्थिण्णसीमाहि	णयरिहि सुसीमाहि ।	6
सुहद्विट्ठि णरणाहु	रणि जस्स ण रणाहु ।	
जो रोसु संवरइ	जो सिरिवहुं धरइ ।	
जो कामु परिहरइ	परणारिरइ हरइ ।	
जो माणु णिग्गहइ	मउयत्तु संगहइ ।	
जे जणित्तु जेणि हरिसु	जे णे किउ अइहरिसु ।	10
जे लोहु णिम्महिउ	पुरिसत्थु जे महिउ ।	
मउ जेण णिट्ठविउ	मणु जेण थिरु ठधियउ ।	

धत्ता—रूवे सोहग्गे गुणेण णावइ उव्वसि णं इंदानी ॥

किं थुव्वइ अम्हारिसिहिं सुंदरि णंद णाम तहु रानी ॥ १५ ॥

## 16

सुरवरु सग्गु मुदुप्पिणु आयउ	ताहि गम्भि सो णंदणु जायउ ।	
तेण सुविहिणामेण जुवाणे	णं पच्चक्खे घम्महाणे ।	
मुणिहिं वि मयणुम्मायजणेरी	अभयघोसच्चक्खइहि केरी ।	
सुय लीलाणिजियतंबेरम	परिणिय पणइणि णाम मणोरम ।	
जो सिरिमइहि जीउ स सयंपहु	सुरमंदिरचुउ बहुपुण्णावहु ।	6

15. १ M हरिणिव°, २ M उत्तुंगेदेहम्मि, ३ MBP सिरिवहु वरइ, ४ MBP जणहरिसु, ५ P जि ण कउ, ६ MBP इदाइणि, ७ K सुंदर, ८ B राइणि.

16. १ MBP सिरिहरु, २ MB °पुण्णाउहु.

15. ३ a हरि णिय गिरी सस्स हरिणा इन्देण नीतो गिरा वाचामीशस्तीर्थकरो यत्र. 6 b रणाहु रणाघ समामदोषः.

16. 4 a °तंबेरम हस्ती. 5 b बहु पुण्णा बहु बहुपुण्यधारकः.

पुत्तु मणोरमाइ संजणियउ  
जो सहूलजीउ चित्तंगउ  
सो वि बिहीसणेण सियणेत्तहि  
जो चिरु कोलर्जाउ कुंडलसुरु  
णंदिसेण्णापं अणुरूवउ  
सयणहि वरसेणु जि जणि कोकिउ  
सो जि मणोहरु माणव सुगइहि

केसउ णामें जणवइ भणियउ ।  
सग्गहु णिवडिउ कालवसं गउ ।  
हुउ सुउ वरयेंत्तउ प्येदत्तहि ।  
सो संप्राईउ पुणु जम्मंतरु ।  
तणउ अणंतमईहि पइयउ । 10  
जो वाणरहं जीउ मइं तक्किउ ।  
रइसेणें ह्यउ चंदमइहि ।

घत्ता—तहु चित्तंगउ णाउं किउ णउल्लु मणोहरु सुरु सग्गायउ ॥

जो सो णिविण पइंजणेण पुत्तु चित्तमालिणियहि जायउ ॥ १६ ॥

17

संतमयणु जाणिज्जइ णामें  
कय रिसि सुविहिहि सुविहिहि सहयर  
विमलवाह जिणवंदण्हत्तिइ  
अभयघोसु जिणघोसु सुणेप्पिणु  
कामकसायविसायविहंजणु  
पंचसयाइं सुयाहं अणिंदहं  
तेण समउ दिक्खिय ह्यराया  
सुविहिणिहालियकंसवदेहें  
पंचाणुव्वय तिण्णिण गुणव्वय

ए णरवइसुय सुहपरिणामें ।  
अभयघोसरापं सहुं किंकर ।  
गय विविहञ्चणवण्णविहत्तिइ ।  
चक्के णिहाणइं वसुह मुपप्पिणु ।  
हुउ मुणिवरु णिग्गंथु णिरंजणु । 5  
अट्टारहसहसाइं णरिंदहं ।  
वरदत्ताइ वि तहिं रिसि जाया ।  
घरवइ संठिउ णंदणैणेहें ।  
चउ सिक्ख्खावय कय वज्जिय मय ।

घत्ता—जेण सवित्तु णिरोहियउ इंदिये विसयरसेसु ण थक्कइ ॥ 10

तहु माणवियहु घरि जि तउ जो अप्पाणउं दंडंहुं सक्कइ ॥ १७ ॥

३ MBP वरदत्तउ. ४ MBP पियदत्तहि ५ MBP कुंडलिसुरु. ६ MBP सपाइउ. ७ MBP णउल.

17. १ MBP ०वंदणभत्तिइ. २ MB चक्क. ३ MBP णियसुवणेहें. ४ P इदिउ. ५ MBP दडिबि.

10 a अणुरूवउ आत्मसदशः.

17. 1 a संतमयणु प्रशान्तमदन. 3 b विविहञ्चणवण्णविहत्तिइ अर्चन पूजा, वर्णविभक्तयो गद्यपद्यादिषु विविधभागा., विविधा अर्चनवर्णविभक्तयो यत्र.



## 18

दंसंण वउ सामाईउ पांसहु  
 वासरि णारिसंगपरिवज्जणु  
 दुविहु वि संगभारु अवगण्णिउ  
 णिहिट्टउ ण तेण पडिवण्णउं  
 अंतइ संथारयसवँणत्तणु  
 तायविओपं मेह्णि मेह्लिवि  
 जिणतउ तिब्बु चँरेपिणु केसउ  
 दो वि दुवीसंबुहिसरिसाउस  
 वरदत्तय वरसेण जियंगय  
 ए चत्तारि वि चारुविमाणहं

सच्चित्तयविरमणु जणँदूसहु ।  
 धंभवेरु आरंभसमुज्झणु ।  
 पाउं ण काइं वि मणि अणुमण्णिउं ।  
 भुत्तउ परकिउ केण वि दिण्णउं ।  
 करिवि पत्तु अर्चुइ इंदत्तणु ।  
 सीलायारभारु उच्चल्लिवि ।  
 तँहिं जि तासु जायउ पडिवासउ ।  
 इंदाउहधर णं णवपाउस ।  
 संतमयण मुणिवर चित्तंगय ।  
 तेत्थु जि जाया मज्झि समाणहं । 10

घत्ता—किं सासि भरहुज्जोययरु णं<sup>१</sup> णहकडित्ति णिहित्तिर्यं कागणि ॥  
 अच्ययइ गुणगणु गुणइ पुष्पयंतु सुरगुरु बुहँसिरमणि ॥ १८ ॥

इय महापुगणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरहए  
 महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे भोयभूमीसिरिहरसयंपहसुँविह-  
 केसवइंदपडिंदभवावर्णणं णाम  
 छव्वीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २६ ॥

॥ संधि ॥ २६ ॥

18. १ MBP दसणु. २ P सामायहु. ३ M जिण°. ४ P पाउ वि काउ ण ५ MBP °सरणत्तणु.  
 ६ MBP अच्ययइ°. ७ P करेपिणु. ८ MB पडिजायउ, P पडिभायउ. ९ MBP °उहभरणं णं (P णउ  
 पाउस. १० M णहकडित्ति णं, ११ MBP वित्तय. १२ MB बुहमिरिमणि. १३ MBP °सुविहि°.

18. ८ b इदा उह° इन्द्रधनुः ९ a जियंगय जित अज्जज कामो याम्भ्याम्. 10 म मा णहं सामा-  
 निकानां देवानाम्.

## XXVII

संजायइं विच्छायइं तेओहामियचंदहो ॥  
 \* णिययंगइं खयलिंगइं अञ्चयकप्पसुरिंदहो ॥ ध्रुवकं ॥

1

अइसोमसहाव महारउइ	संचल्लिय चल ससिरवि बलइ ।
किह वंचविं कालरहट्टचारु	घडिमालइ लंघिउं <sup>३</sup> आउणीरु ।
अप्पउ जाणेण्णिणु वियलियाउ	छम्माम समञ्चिवि वीयरउ । 5
मिरिणिहिउं णिरहु तहु चरणजमत्तु	भवियहु भवणांसे वि वित्तु विमलु ।
चुउ कालें अञ्चयसग्गणाहु	कहु कालें किर कवल्लिउ ण देहु ।
इह जंबुदीवि सुग्गिगिहि पुच्चु	किं भणमि विदेहु विलासदिव्वु ।
रमणीयउववणावल्लिणिवेसु	तंहि वर पुक्खलवइ णाम देसु ।
बहुवण्णमणिसिलावद्धभूमि	पुरु पुंडगिंकिणी तेत्थु सामि । 10
हरिमउडपडिच्छियपायरेणु	णरणाहु जिणेसरु वज्जसेणु ।
मुहससिजोण्हाधवल्लियदियंत	मिरिकंता णामें तासु कंत ।
सो नियसराउ ह्यदुरियवाहि	तहि हुउ णामें वज्जणाहि ।

घत्ता—सग्गायउ संभयउ वग्गत्तु वि तहि बालउ ॥

विजयंकउ हरिणंकउ णं उग्गामिउ सुहालउ ॥ १ ॥

MBP gave, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

गुरुधर्मोद्धवपावनमभिनन्दितकृष्णार्जुनगुणोपेतम् ।

भीमपराक्रमसारं भारतमिव भरत तव चरितम् ॥ १ ॥

GK do not give it.

1 १ MBP किं वण्णमि २ MBP वित्तुं. ३ M रिमि°. ४ MBP चलणजुयलु. ५ MBP भवणाम विवित्तु विमलु ६ P जंबुदीउ. ७ MBP °उववणावाणि°. ८ MBP तहि पुक्खलवइ णामेण देसु. ९ MBP पुरि.

1. 3 b बलइ बलीवती. 11 a हरि° इन्द्रः. 15 विजयंकउ विजयनामा, हरिणंकउ चन्द्रः. सुहालउ सुखालयः, सुखालयोऽमृतालयश्च.

## 2

घरसेणु वि ह्यउ वइजयंतु  
 सुरलोयहु चेलिवि पसंतमयणु  
 ए सहूलोइय चउ सहाय  
 हेट्टिमगेवज्जविमाणवासु  
 आयउ मइवरु जायउ सुबाहु  
 अहमिंदु अकंपणु हुयउ पीदु  
 जे वज्जजंघभवि भिच्च तासु  
 हौता चिरु एवहिं विहिवसेण  
 ते देविहि गग्भि महासईहि  
 सुसंणेहा जेट्टसँहोयरासु  
 पालेप्पिणु भवकयकम्मछंदु  
 वणिउत्तँ सुरयासत्तमइहि

चित्तंगउ णामँ पुणु जयंतु ।  
 अवराइउ हउ पहुल्लवयणु ।  
 जाया जुवगयहु इट्ट भाय ।  
 मेल्लेप्पिणु जम्महु माणवासु ।  
 आणंदु वि णाम महंतबाहु । 6  
 धूणंमिच्चु वि तेत्थु जि गरुयपीदु ।  
 रायहु उप्पलखेडाहिवासु ।  
 ह्या चत्तागि वि सहं जसेण ।  
 ताहि जि सुग्मिंधुरवइगईहि ।  
 को हाइ वेसु णियभायरानु । 10  
 तेत्थु जि पुग्गि केसवुँ सो पडिंदु ।  
 सिसु जणिउ कुबेरँ णंतमइहि ।

घत्ता—हयतूरहिं गंभीरहिं वंधुवग्गु आणंदिउ ॥

संमाणँ धणदाणँ धणदेउ जि सो सहिउ ॥ २ ॥

## 3

एकहिं दिणि श्चत्ति समागणहिं  
 किं हित्तवुद्धि तुह हिय हणहिं  
 तुहुं देवदेउ तेलोक्कणाहु  
 इय संबोहिउ लोयंतिएहिं  
 सिंगारभारवेहवमरट्टु  
 अंबयवणि खणि णियखवणु कियउ  
 उप्पणउं तायहु धम्मचक्कु

भासिउ किं तुहुं मोहिउं गणहिं ।  
 जँहिं रंजिओ सि णारीरणहिं ।  
 तहिं अण्णहिं को किर बोहिलाहु ।  
 सो वज्जसेणु कयसंतिणहिं ।  
 पविणाहिं वंधिवि गयपट्टु । 5  
 नित्थंकरेण णियहियउ जियउ ।  
 पुत्तहु असिसालइ रयणचक्कु ।

2. १ MBP चविवि. २ MBP सहूलोइ वि ३ G वम्महु. ४ MBP अहमिंद. ५ M धणमेत्तु, BP धणमेत्तु. ६ MBP ससणेहा. ७ G सुहोयरासु. ८ M तवकय°; BP भवु कयकम्मछंदु°. ९ MBP केसउ.

3. १ M सोहिउ. २ M जिह. ३ K कहिं किर.

2. 4 b जम्महु माण वासु मानवस्य जन्मन. 11 a °छदु इच्छा.

3. 7 a धम्मचक्कु केवलज्ञानम्.

ताएण परज्जिउ मोहचक्कु	पुत्तेण वि णिज्जिउ वहरिचक्कु ।
तायहु संठियं णिहि समवसरणि	पुत्तहु वि णव वि संभूय सरणि ।
तायहु इंदा वि करंति सेव	पुत्तहु वि भिच्च गणबद्ध देव । 10
हुउ ताउ धम्मवरचक्कवट्टि	सुउ छक्खंडावणिचक्कवट्टि ।

घँत्ता—सिरि<sup>५</sup> मेइणि सुहदाइणि जुण्णउं तणु व वियप्पिवि ॥

पविदंतहो णियपुत्तहो पच्छइ रज्जुं समप्पिवि ॥ ३ ॥

4

अंगुलिद्वल्लु णहपहकेसगल्लु	सुरवरहंसावलिरववमालु ।
मुणिभमरपीयमयरंदाबिदु	आसंघिउ पिउचरणारविदु ।
पव्वज्ज लइय धग्णीसरेण	विजएण वइजयंतेण तेण ।
संवउ विवेउ पराइपहिं	धीरेहिं जयंतवराइपहिं ।
तउ लइउ मुयैहुं पत्थिवेण	संतेण महाबाहुं णिवेण । 6
णीसेंसजीवविरइयकिवेण	पीढेण महापीढाहिवेण ।
धणदेवें णिवइघराहिवेणै ।	

सज्जीवें पहरयणुलएण	णिम्मुकुविविहरयणुलएण ।
दस रायहं सुयहं वि दससयाइं	जइभावहु तेण समउ गयाइं ।
यक्कु जि विहरइ रिसि वज्जणाहि	परिगणइ सदेहि घुलंत णाहि । 10

घत्ता—महिं हिंडइ तणु दंडइ णिवसइ कहिं मि णिरासइ ॥

भीसावणि टिउ पिउवणि सुण्णावासपएसइ ॥ ४ ॥

5

दंमणविसुद्धि गुरुविणयमारु	सीलव्वएसु अइअणइयारु ।
णेरंतरु थिरु णाणोवचाउ	सत्तिइ तउ णिरु संवेयभाउं ।
किउ वज्जबभंअरगंथचाउ	मुणिसंघहु वेज्जावच्चजोउ ।

४ MBP णिहि सटिय, ५ B सिरिमेइणिहि सुहदाइणिहि, ६ M रज्ज.

4. १ MBP °दल. २ P सुवाहुहु ३ MB add after this line: धणय व्व विविहदव्वाहिवेण.

४ M भीसावणि पिउउवणि, BP भीसावणि वणि पिउवणि.

5. १P अदसणइयारु. २MBP णाणोवओउ. ३ MBP संवेयचाउ. ४MB वेज्जावज्ज°, Pवेज्जावज्ज°.

9 b सरणि गृहे.

4. 10 b णा हि न + अहि, अहीन् सर्पान् न गणयति. 11 णि रा सइ आश्रयशून्यप्रदेशे अभावकाशे.

जिणभत्तिपउरसुयसाहुभत्ति	ते विरइयपवयाणि परमभत्ति ।	
छावोसएसु णायरइ हाणि	अरहंतमग्गु पायइइ णाणे ।	5
भव्वेसु करइ कलिमल्लिणसमणु	वच्छल्लु पयोहणु धम्मठवणु ।	
णीरापं सहुं रयहारणाइं	अरुहंतहु सोलहकारणाइं ।	
एयइं अपवंग्गारोहणाइं	तेलोक्कच्चक्कसंखोहणाइं ।	
भावेण तेण संभाविआइं	घोरइं डुरियइं उड्ढाविआइं ।	
घत्ता—संपुण्णउं वउ चिण्णउं कालकमेण जि लद्धउं ॥		10
जगपियरहो तित्थयरहो णाउं गोत्तु ते बद्धउं ॥ ५ ॥		

## 6

को एम देउ दइवेण पुण्णु	को संचइ किर एवडु पुण्णु ।	
उग्गतउ तत्तु घोरतउ तत्तु	दित्ततउ तत्तु संखीणगत्तु ।	
आमोसहीहिं खेळोसहीहिं	जल्लोसहीहिं विप्पोसहीहिं ।	
सव्वोसहीहिं णावइ सहीहिं	सो सहइ साहु रंजियमहीहिं ।	
तहु कोट्टुबुद्धि वरवीयवुद्धि	संभिण्णसोत्त णामेण बुद्धि ।	5
पायाणुसारिणी अवर बुद्धि	उप्पणी तणुविकिरियरिद्धि ।	
अणिमामहिमालहिमाइ सिद्धि	सुरसैद्धि अहीणमहाणसैद्धि ।	
सो सुहुमसंपरायत्तकरणु	चडियउ गुणठाणु अउव्वकरणु ।	
णत्तिेसमोहसंदोहसमणु	सिरिपहमहिहरमेहलहि समणु ।	
आहारसरररहं चाउ करिवि	पाँउवगमणमरणेण मरिवि ।	10
सव्वत्थसिद्धि सुंरहणि सुराहु	अहमिहु हुयउ रिसि वज्जणाहु ।	

घत्ता—पंडिवडियहिं विहिघडियहिं दिव्वु सरीरु लपप्पिणु ॥

सुकयंगउ अइचंगउ अप्पाणउ जोएप्पिणु ॥ ६ ॥

५ P छावस्सएसु. ६ MBP आराहिनि मोलह. ७ G अपवंग्गइं रोह° ८ MBP तेलोय°.

6. १ MBP आमोसहीहिं जल्लोसहीहिं खेळोसहीहिं विट्ठोसहीहिं (P विप्पोसहीहिं). २ MBP सुरसैद्धि; T सुरसैद्धि. ३ MBP °महाणसिद्धि. ४ MBP सुहुमु. ५ MBP गुणठाणु. ६ M सिरिपहमहिहरमेहलहि; B सिरिपहमहिहलिहे, P सिरिपहमहिहरमेहलिय. ७ MBP पाउग्गमरणमरणेण. ८ M सुरहरे सराहे, BP सुरहरि सरेहु, K सुरहरि सराहु; T सराहु. ९ BP परिवडियहिं.

5. 6 a क लि म ल्लिण स म णु कालि. पापं दोषो वा तेन मल्लिणं मल्लिनता तस्य शमन उपशमः.

6. 7 b सुरसैद्धि शोभनरसैद्धिः. 8 a सुहुमसंपरायत्तकरणु सूक्ष्मसंपरायत्वस्य करणं यस्मादपूर्वकरणात्. 9 b समणु रसिकः. 11 a सुराहु सुशोभः.

## 7

अवहीइ तेण जाणियउं जम्मु  
 घणमणिमऊहर्पिज्जरियमग्गि  
 सिवपयणिवासु सिरिसोहमाणि  
 पिहुजंबूदीवपरिप्पमाणि  
 पविण्णाहभाउ कयधम्मसेव  
 णव ते परमेसर सुकयपुण्ण  
 तणुमाणे जाणिय रयणिमेत्त  
 ते सुक्कलेस मज्झत्थभाव  
 मउडग्गघुलियमंदारदाम  
 खेत्ताउ ण खेत्तंतरहु जंति  
 वरिसहुं तितीसंसहसहिं असंति  
 तेत्तीससमुहोवमु जियंति

पणविउ जिणु जिणवरंकाहिउ धम्मु ।  
 नेसट्टिपडलसिरिचूलयग्गि ।  
 वारहजोयणहिं आपावमाणि ।  
 हिमसंखससिप्पहि नहिं विमाणि ।  
 अट्ट वि जाया अहमिंददेव । 5  
 सुविसुद्धफलिहमाणिक्कवण्ण ।  
 अहिणवसयदलदल्लसरलणेत्त ।  
 अपिसुणसहाव परिहरियगाव ।  
 परियाररहिय संपण्णकाम ।  
 उत्तरवेउविय तणु ण लेति । 10  
 तेत्तिर्यहिं जि पक्खहिं णीससंति ।  
 जगणाडि असेस वि ते णियंति ।

घत्ता—णाइंदहो खयरिंदहो तं णेउ झसधयमंदहो ॥

पुहईसहो ण सुरेसहो जं सुहुं जगि अहमिंदहो ॥ ७ ॥

## 8

गयगव्व भव्वत्तणारूढ धरणीस  
 जयवम्मु होऊण सैणियाणदोसेण  
 होउं महाबलिण संणासु महं कियउ  
 तहिं मरिवि ईस्ताणि ललियंगु सुरु जाउ

पणु भणइ रिसहेसरो णिसुणि भरहेस ।  
 जाओ मि खयरिंदु कयधम्मलेसेण ।  
 सइवुद्धबुद्धीइ बहुपुण्णु संचियउ ।  
 तेत्थाउ अवयगिवि पविजंघु हुउ राउ ।

7. १ MBP °कहिय. २ MBP °सिरिचूलिय°. ३ MP अपावमाणि, B आयावमाणु. ४ K पवि-  
 णाहि°. ५ MBP add after this: दहमउ धणदेउ उप्पण्ण तेत्थु, अहिलच्छि णिरतर सोक्खु जेत्यु.  
 ६ MBP °सरिसणेत्त. ७ MBP परिगालिय°. ८ MBP पवियार°. ९ MBP संगुण्ण°. १० BP तेतीस°. ११ P तेत्तियद्धिं पक्खहिं. १२ MB तण्णज्झसद्धयच्चिंधो, P त णउ मुहु जयमद्दहो, T झसद्धयमंद.  
 १३ MBP पुहईसरहो ण सुरेसरहो.

8. १ MBP अजवम्मु. २ MBP सुणियाण°, MP जाओ सि. ४ P सइवुद्धु.

7. 9 b परि यार र हिय प्रतीचाररहितः. 13 झ स ध य म द हो झषत्रजेन कामेन मन्दस्य विषय-  
 व्यावृत्त्यनुद्यतस्य.

कुरुधरणिरु पुणु वि बीयम्मि कप्पम्मि  
 पुणु सुविहिविहिविहियजिणसासणाणंदु  
 पुणु वज्जणाहेण होऊण मे चिण्णु  
 सँव्वत्थि अहम्मिंदु होउं अहत्तिहरु  
 गहवइसुया धणसिरी णिहयणयजुत्ति  
 जाया पुणो सूहवा बद्धणेहस्स  
 सिरिमइमहीसस्स मय्य पुणु वि कुरुणारि  
 केसत्तु पुणो मरिवि संभूउ पडिसक्कु  
 धणदेउ वउ धरिवि पुणु हुयउ अहम्मिंदु  
 तम्हा समोयरिवि कुरुवंससरहंसु

सिरिहरु सुँहासीय हं कयवियप्पम्मि । ६  
 असु मुइवि हउं हुउ सोलहमसग्गिंदु ।  
 पडिसलियजमकरणु तवचरणु संपँणु ।  
 पुणु भइ इओ अहं पत्थ तित्थयरु ।  
 णामेण णिण्णामिणी विहण वणिउत्ति ।  
 सिरिसरिस सीमंतिणी ललियदेवस्स । 10  
 पुणु रवि स्रयंपहु पुँणरवि दणुयारि ।  
 संसारि संसरइ जगि जीउ इह पक्कु ।  
 सयलत्थि सरयम्भि संकमिउ णं चंदु ।  
 इहु पत्थु उप्पण्णु णरणाहु सेयंसु ।

घत्ता—मल्लु छिंदह जिणु वंदह तिरयणाइं मणि भावह ॥

15

अमरत्तणु सुणरत्तणु गहणु ण मोक्खु वि पावह ॥ ८ ॥

## 9

जो णरवइ णामेँ आसि गिन्दु  
 णरयम्मि चउत्थइ सहिवि विहुुरु  
 पुणु देउ दिवायरु मइवरक्खु  
 पुणु रवि सुवाहु चिरजम्मभाउ  
 अणुहुँजिवि जायउ पत्थु भरहु  
 पीईचद्धण चमुवइ सुँगण्णु  
 हयपंकु अकंपणु रिद्धिपोदु  
 सव्वत्थइंदु मँहु सुउ अरेणु

आहारणारिरससायगिन्दु ।  
 पुणु हुयउ पुल्लि चलकुडिलणहरु ।  
 णरु गेवँज्जामरु सो दिव्वचक्खु ।  
 णिहिलत्थदेउ अहम्मिंदु जाउँ ।  
 महु सुउ लइ होसहि तुहुँ विँणिरहु । 5  
 कुरुमणुर्यपहायरु सुरु पसँणु ।  
 गइवेयवेउ पुणु हुयउँ पीदु ।  
 पुणु पहु पइयउ वसइसेणु ।

५ MB सुहासियउ ह कय°, P सुहासीय हुउ बीय°. ६ MBK संपुणु. ७ MBPT अहलच्छि. ८ MB °देहस्स. ९ MB मय, P मय and gloss मृता. १० MBP पहावतु दंबारि. ११ MBP संकमिय.

9. १ MBP गेजामरु. २ MBP भाइ. ३ MBP जाइ. ४ M जि. ५ MBP सुगणु. ६ M °अपायरु. ७ MBP पसुत्तु. ८ P गइवेइ°. ९ MBP राउ. १० MBP महु तणउ सूणु; T अरणु ज्ञानावरणादिरजोरहितः.

8. a अहत्तिहरु पापार्तिहरु. 9 b विहण निर्धना. 13 b सयलत्थि सर्वाथसिद्धौ.

9. 2 b पुल्लि व्याघ्रः. 8 a अरेणु ज्ञानावरणादिरजोरहितः.

जो'होतउ सुइरु महीसमंति	कुरुकुवलयमाणउ अमियकंति ।	
जो पुणु जायउ कणयाहु तियसु	आणंदु णाम होएवि सवसु ।	10
हुउ पढमहिं पँहु चविवि साहु	पुणु सँ महाबाहु धरित्तिणौहु ।	

यत्ता—गउ इद्रहो सव्वट्टहो णट्टहमिंदसरीरउ ॥

हुउ भुयबलि पसमियकलि केवलि भाइ तुहारउ ॥ ९ ॥

10

जो रायपुरोहिउ समियडमरु	कुरुमणुयपहंजणु पवरु अमरु ।	
धणमित्तु पुणु वि हँउ सुहपहाणि	ओइल्लु अहंविहु परैमठाणि ।	
पुणु हविवि महापीहु वि सँभेउ	सव्वत्थसिद्धि संभूउ देउ ।	
सो मरिवि महारउ णंतविजउ	उप्पणु पुत्तु जीविसु सदउ ।	
जो आसि मरेप्पिणु उग्गसेणु	होएवि वग्घु मुणिचलणलीणु ।	5
कुरुमाणुसु सो'चित्तंगयक्खु	वरदत्तु णराहिउ कमलचक्खु ।	
अञ्जुइ समसुरु हुउ विजयराउ	तवर्चरणे खीणु करेवि काउ ।	
सव्वट्टहँउ ववगयसरीरु	जसवइसुड पँहु सोणंतवीरु ।	
पहिलारउ हरिवाहणकुमारु	पुणु सूरु पुणु कुरु अज्जसारु ।	
सुरु कुंडलिल्लु वरसेणु संतु	समविबुहु पुणु वि जो वइजयंतु ।	10
अहअमरणाहु संजणियविणउ	तहिं चुउ अञ्जुउ हुउ मज्जु तणउ ।	
वणि णागदत्तु वाणरु पँलासि	अज्जउ हूयउ कुरुभूमिवासि ।	

यत्ता—सुँमणोरहु सुरु हयदुहु पुणु चित्तंगउ पत्थिंउं ॥

संचियसमु सुरवइसमु पुणु जयंतु णामे णिंउं ॥ १० ॥

११ B सो हुँउ. १२ M एहु चएवि; B एहु तं चएवि; P पहु चएवि; T पहु अहमिन्द्र., १३ MBP सुमहा°. १४ P धरति°.

10. १ MBP हुउ. २ MBP ओविहु. ३ MBP पढम°. ४ PK सहेउ. ५ K सुरु चित्त°. ६ P तवयरणे. ७ P एहु अणंतवीरु. ८ MBP सुर. ९ P फलासि. १० MBP समणोरहु. ११ MBP पत्थिड. १२ MBP णिउ.

10. 2 b अहंविहु अहमिन्द्र: 7 a समसुरु समारिकदेव: 10 b समविबुहु सामानिकदेव: 11 a अहअमरणाहु अहमिन्द्र: 14 सुरवइसमु सामानिकदेव:



## 11

पुणरवि अहमीसरु मोर्कखणियडि  
 जो सो दुइसैणदुरियभीरु  
 लोलुउ कंदुई लोहेण मुयउ  
 पुणु अज्ज मणोहरु अमयभोइ  
 पुणु हरिसमाणु गिब्वाणु चारु  
 पुणु अंतिमिहु सुखासवासु  
 आवेप्पिणु हुउ तुह माउदेहि  
 जा वज्जजंघमवि मज्झु बहिणि  
 हुई णंदहि णं धम्मलील  
 जा सिरिर्मेइभवि पंडीय धाय  
 बंभी वि तुज्ज जाणहि महीस  
 परिभमियसयलभुवणत्थलीउ  
 रंगं गंडु णहु बहुरुवधारि  
 सा णत्थि थत्ति जेहिं जिउ ण जाउ

घत्ता—कइ हलहर कइ सिरिहर कइ पडिसत्तु णरेसर ॥

मइ जेहा पइ तेहां कइ होहिंति जिणेसर ॥ ११ ॥

## 12

तं णिसुणिवि देवें वुत्त पम्ब  
 होहिंति भुवणि नेवीस पत्थु  
 आगामियाइं जेहा इमाहं  
 कहियाइं जिणहं जैम्मंतराइं  
 मुहयंदोहामियससिमरीइ

मइ जेहा जिणवर गयविलेव ।  
 करिहिंति पयडु सिरिधम्मतित्थु ।  
 बावीसहं तइं तेहाइं ताहं ।  
 संगैहियविमुक्कलेवराइं ।  
 महु णत्तिउ तुह तणुरुहु मरीइ । 5

11. १ MBP सोक्ख<sup>०</sup>. २ MBP दुइसणु. ३ MBP कंदुउ. ४ MBP णरणाहु. ५ MP गिब्वाण. ६ MBP सिरिमेइ चिरु. ७ MBP रगगउ णहु व बहु<sup>०</sup>. ८ K जिउ जहिं. ९ P पुांउउ. १० MBPK जेहा.  
 12. १ P विगयलेव. २ M करहिंति. ३ MBP जेहाइं जाहं. ४ G धम्मतराइं ५ MBP संगहिवि.

11. 2 a दुइसण<sup>०</sup> मिथ्यादर्शनम्, 'दुरिय<sup>०</sup> पापम्. 5 a हरिसमाणु सामानिक'. 6 b अहं वइ अहमिन्द्रः. 11 b तम्मइ खियते. 15 पडिसत्तु प्रतिवासुदेवः.

12. 3 b तेहाइं ताइशानि. 5 a 'ससिमरीइ चन्द्रकिरणाः.

होसइ चउवीसमु तिजगणाहु  
दिय कविलैसीस गुरुभरहतर्णुउ  
जाही मिच्छत्तहु मूहु होवि

सिरिर्घड्डुमाणु णामेण एहु ।  
तं णिसुणिवि णच्चिउ मुइयमणउ ।  
मरिही महु केरउ मउ मुएवि ।

घत्तु—होही सुरु कविलहु गुरु संखसुत्तपवियारउ ॥

णियतणयहु कयविणयहु पुणु पुणु कहइ भडारउ ॥ १२ ॥ 10

## 13

सिरिबाला कीलाविउलसेल  
पइ जेहा णिव णायणुवट्टि  
णव बल णारायण णव णं भंति  
अवर वि तेवीस जि कांमदेव  
मंडलिय मउडवद्ध वि अणेय  
तुह खत्तधम्मु महु परमधम्मु  
सव्वेहिं जुयंति दिणि णामिहिंति  
उम्मूलियतिट्टाकयैलिकंदु

बलवंतसधरधरधरणलील ।  
एयारह महियलि चक्कवट्टि ।  
पडिसत्तु णव जि महिं भुंजिहिंति ।  
एयारह रुह रउइभावे ।  
होहिंति बँहुत्त वि णामधेय । 5  
अवरु वि जं किं पि विसिट्टकम्मु ।  
सिहिमय विसमय घण वरिसिहिंति ।  
ता णरणाहे संथुउ जिणिहु ।

घत्ता—जिणसंतइ भयवंतइ पइ दिट्टइ मलु खिज्जइ ॥

सयलामलु तं केवलु णाणु णरहु उप्पज्जइ ॥ १३ ॥ 10

## 14

णमो वीयराया महादेवदेवा  
सरीरे ण भूसा समीवे ण णारी  
ण चावं ण चक्कं ण खगं ण सूलं  
तुमं देव णूणं गिऊणं णै गम्मो  
ण डिभं ण डंभो ण ए वित्तलोहो

कयाणेयगिन्वाणणिदंवाणसेवा ।  
तुमं देव सच्चं अणंगावहारी ।  
ण दंडो ण हत्थे किवाणं करालं ।  
अहिंसाणिवासो सहावेण सोम्मो ।  
ण मित्तो ण सच्चं ण कामो ण कोहो । 5

६ MBP रिसिवड्डुमाणु, ७ P कविलकेर, ८ P तणउ, ९ G मइउ मणुउ but gloss हृष्टचित्तः.

13. १ P भगति, २ MBP कामएव, ३ MBP add after this: होसहिं णारय णव कलहसील, वयवंभवेरदढधरणसील ( P धरणलील ), ४ MBP पुत्त बहुणाम°, ५ P सव्वइ, ६ P केलिकंदु.

14. १ P °णिञ्जाण, २ K करालं कवाल, ३ MB अगम्मो.

7 b मुइय मणउ प्रहृष्टचित्तः, 9 °प विया रउ प्रवीणः.

13. 7 b सि हि मय अभिवर्षा .

14. 5 a णए न ते तव.

ण माया ण चित्ते पँहुत्ताहिमाणं  
 णँ छत्तेण णो किं पि सीहासणेणं  
 उँयासीणभावं सकम्मक्खणं  
 णरा ते ध्रुवं लोहयारस्स भत्था  
 जई सो णिरासो तुमं छिण्णपासो  
 तुमं जम्मकंतारडाहे किर्साणुं  
 जडा किं णिंमँजंति मिच्छत्ततोए  
 णमंसेवि देवं गओ भूमिणाहो  
 पइट्ठो णियं मंदिरं बंदिरोलं

समं पेच्छसे रायरायं पि दीणं ।  
 ण गव्वोमराहीससंपेसणेणं ।  
 तुमं जे ण वंदंति णाहं णिरेणं ।  
 ससंता वसंती हहा किं णिरत्था ।  
 तुमं लोयबंधू पइ दिव्वभासो । 10  
 तुमं भूयभावंधयारम्मि भाणुं ।  
 तुमाहिं परो को गुँरो जीवलोए ।  
 अउज्झाउरिं भूरिसेणासणाहो ।  
 महात्तरोसं महामंगलालं ।

घत्ता—धरणीसरु भरहेसरु पुरतरुणिहिं विहसंतिहिं ॥

15

अवलोइउ पोमाइउ पुष्करदंत दरिसंतिहिं ॥ १४ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्करयंतविरहए

महाभव्यभरहाणुमणिणए महाकव्वे वज्रँणाहितिहुघणसंखोहणं

जिणँपुँण्णावज्जणं णाम

सत्तावीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २७ ॥

॥ संधि ॥ २७ ॥

४ M पइ णाहिमाणं; BP वइ णाहिमाणं. ५ MBP सत्तणे, ६ M सिंहामणेण, ७ P उदासीण°. ८ MBP किसाणू. ९ MBP भाणू. १० B ण मज्जंति. ११ MBP मिच्छत्तराए. १२ MBP गुरु. १३ MB सूरसेणा°. १४ MBP वज्रणाह°. १५ MPP पुजावज्जणं.

6 a प हुत्ता हि मा ण प्रभुत्वाभिमान. 8 b णि रे ण निष्पापम्. 11 a कि सा णुं अग्निः; b भूय भा वं ध या र म्मि प्राणिमनोज्ञानातिमिरस्य.

## XXVIII

पुरु पद्मसिवि तेण णराद्धिमेण बहुदाणेहिं सँमिद्धं ॥  
दुस्सिविणयदंसणहलहरणु संतिकम्मु पारद्धं ॥ धुवकं ॥

1

जाउडजडिलरसेणायंबइं	अहिसित्ताइं जिणेसरबिंबइं ।	
हिमकणैकणयकैणोलिवियारहिं	घडपल्हत्थियपर्यघयधारहिं ।	
मुणि अणिट्टुट्टासयहाँरिहिं	चंदर्णतौतडिल्लवरँवारिहिं ।	5
पुज्जियाइं छण्यउलधामहिं	कुवलयबउलमहुपलदामहिं ।	
संधुयाइं बहुथोत्तालाविहिं	भावियाइं सुविसुद्धहिं भाँवहिं ।	
कंचणणिम्मियमुँणिपडिमालउ	णाणामणिमऊहाणिर्यँरालउ ।	
दसदिसि गयटंकारविसट्टउ	लंबियाउ चउवीस जि घंटउ ।	
पहि पहि रइयउ तोरणमालउ	पंतजंतणिवणयणसुहालउ ।	10
दिण्णइं दिण्णसोकखसंताणइं	अभयाहारोसहसुयदाणइं ।	
भूमिदोहकयगोदुहसत्थहिं	अंचिउ घरि घरि अरुहु घरत्थहिं ।	
दिण्णइं कारुण्णेण वि अण्णइं	दीणाणाहइं चीरहिरण्णइं ।	
पोसहु सीलु दाणु देवच्चणु	रीं संचोइउ पालइ जणु ।	

MBP give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

मुखनलिनोदरसघनि गुणहृतद्वयया सदैव यद्वसति ।  
चोजमिदमत्र भरते शुक्लापि सरस्वती रक्ता ॥ १ ॥

M reads गुणघृत° for गुणहृत°, GK do not give it.

1. १ MBPT सुणिवद्धं. २ MBP हिमकणु कणय°. ३ BP °कणालि°. ४ P °घयपय°. ५ MB °हारहिं; P °दारहिं. ६ M चंदणतौयतडिल्ल°. ७ MBP °वरधारहिं. ८ MB भाविहिं. ९ M °मणि°. १० MB °णियरालिउ. ११ MB राइं.

1. 3 a जाउ ड ज डिल° जाउडदेशोत्पन्नं कुट्टमम्. 4 a हि मे त्या दि-हिमकणाश्च कनककणाश्च तेषामोलयः व्यूहस्तैस्तुल्यो विकारः परिणामो यासाम्. 5 a अ णि ट्टे त्या दि-न इष्टे विषये दुष्टा आर्तरीद्रोपहता अनिष्टदुष्टाश्च ते आशयाश्च मुनीनामनिष्टाशया निर्मलाभिप्रायास्ताननुहरन्ति अनुकुर्वन्ति तैः; मुन्यनभीष्टदुष्टाभिप्रायनाशकैर्वा; 6 °तौत-डिल्ल° मिथिताः. 9 a °विसट्टउ प्रसरः. 12 a °गो दुह° गोदोहकाः.

घत्ता—धम्मट्टि राण धम्मिट्ट धुउ दुक्कियरइ दुक्कियरउ ॥

15

रायाणुवट्टि जाणि संचरइ जिह णरवइ तिह जणवउ ॥ १ ॥

## 2.

सीहु व सावयाहं अग्गेसरु  
भावंलिंगि होएवि णरेसरु  
गोसयाहं गोदुद्धु जि पिज्जइ  
खारीसयभत्तहं पसउल्लउ  
णरु णराहं पंडिवद्धु महल्लहं  
पासायहु वि मज्झि सयणीयलु  
जइ वि एम जाणइ संगायउ  
तो वि जीउ खज्जइ रीयत्ते  
चकु कालचक्कहु किं रक्खइ  
दंढ कुगइदंडणु दरिसावइ  
असि असिउब्भडलेसहि कारणु  
कौगणि खणि सोहइ दुहलीहहं  
होउ होउ रीयत्ते हो गंथे  
अणुदिणु इय झायंतहु कयंरु व

जिणवरधम्मु करइ भरहेसरु ।  
चित्तइ चत्तदेहु लंबियकरु ।  
गारीसहसहं एक रमिज्जइ ।  
रहलक्खहं महु एकु रहुल्लउ ।  
हरि हरिवाहहं करि वि करिल्लहं । 5  
लइ पग्भुंजणिज्जु धरणीयलु ।  
चित्तिज्जनउ सयलु परायउ ।  
खणविणासि संतावि पहुत्ते ।  
छत्ते छण्णउ जीउ ण पेक्खइ ।  
मणि सोदामणि णहचुउ णावइ । 10  
चम्मु कयंतपडहरवधारणु ।  
अम्हारिसहं धरित्तिसमीहहं ।  
हउ मुणिवरु परिवेडिउ वत्थे ।  
उड्ढिवि जंति<sup>११</sup> रायपरमाणुय ।

घत्ता—सिडिलाइ होंति रीएसरहो णिग्गयमणमलपूरइ ॥

णिचडंति श्चत्ति खोणीयलइ करकंणकेऊरइ ॥ २ ॥

2. १ M जिणवरु धम्म २ M भावलिंग होएव. ३ MBP चत्तदेह. ४ MBP णरवराहं. ५ G पंडिवद्धुगहल्लहं. ६ MBP राइत्ते. ७ MB कागणि खणेण होइ दुहलीहह, P कागणि खणि होसइ दुहलीहइ; T खाणि आकरः. ८ MBP रायत्तहु गंथे. ९ MBP वर वेडिउ. १० MB कयरुय and gloss रोग; T कयंरु व धूलिरिव. ११ G जंतु, K जंतु but corrects to जति and gloss गच्छन्ति. १२ MBP रजेसरहो. १३ G णिग्गमण<sup>०</sup>; K णिग्गमल<sup>०</sup>, but corrects it to णिग्गयमण<sup>०</sup>.

2. 1 a सावयाहं श्रावकाणा श्रापदाना च. 7 a संगायउ संगस्य जातकं संघातम्. 11 a असिउब्भड<sup>०</sup> कृष्णोद्भटः. 14 a कयंरुव धूलिरिव. 15 णिग्गयमणमलपूरइ निर्गता मनोमलपूराः वेपु.

3

रायणाणु किं तासु कहिज्जइ  
जासु खग्गु रणि को वि णं कडुइ  
जो पहाइ परमप्पउ पुज्जिवि  
णयसासणि हिर्यउल्लं घत्तइ  
अहियारिय णिउपसु णिउंजइ  
के वि सणेहालोयणहंसियहिं  
दविणोवाइ पुरिसं संभावइ  
सयलकलाकुसल वि संमाणइ  
पुणु अत्थाणविसग्गु समिच्छइ  
मज्झण्णइ मज्झणउं पईन्निवि  
बालाचालियचार्मरमालइ  
पुणु भुत्तुत्तरि पँहु णिवगोट्टिइ  
घत्ता—संपण्णइ खणि तिज्जइ पहरे जाणिय घडियाघापं ॥

पहु अच्छइ वारविलासिणिहिं सह कीलाइ विणोपं ॥ ३ ॥

4

महिवइ गयलीलइ पर्यं दोर्यइ  
खणि ससहावै मंतु पमंतइ  
जाणइ अप्पउ वण्णपवित्ति वि  
पुणु अवलोयइ विविहपयारइं  
पुणु गुरुयणसहमंडवि पइसइ  
कामसत्थु अवलोयइ जावहिं

पुणु अंतेउरु भमिवि पलोयइ ।  
वज्झु णत्थि किं छग्गुण चित्तइ ।  
वत्तोरणु णैयाणयजुत्ति वि ।  
पहरणभवणइं भंडागारइं ।  
धम्मसत्थसंदेहु वि णासइ । 5  
कामु वि तँहु आसंकइ तावहिं ।

3. 1 M म कट्टइ. 2 MBP पयाउ. 3 G पवट्टइ. 4 MBP हियउल्लउं. 5 M पयवित्तउ. 6 P °सहियहिं. 7 MBP पुरिसु. 8 Our manuscript P ends with चामर°. 9 MB काइं व. 10 MB बुहणिवगोट्टिहि.

4. 1 MB पउ. 2 B दोइउ. 3 B पलोइउ. 4 B वत्तारयणु. 5 MB ण याणइ जुत्ति वि. 6 MB °सत्थु संदेहु. 7 MB तहि.

3. 1 a रायणा णु राजनीतिशास्त्रम् . 8 b °पसंडी° सुवर्णम्.

4. 2 b छग्गु ण संधिविग्रहयानासनशयनद्वैधीभावाः. 3 b वत्ता यरणु कृषिपशुपाल्यादि.

हृत्थिसत्थि हरिसत्थि ण मुँब्बइ  
जोइससउणसमूहणिमित्तइं  
तंतु मंतु तेण जि संजोइउ

आउवेउ घणुवेउ विउज्झइ ।  
णरणारीलक्खणइं विचित्तइं ।  
भरहें सइं जि भरहु उप्पाइउ ।

घत्ता—जसु जासु दियंतैहिं परिभंमइ ससिकरणियरउ पोसइ ॥ 10  
तहु भरहु सरिसु महाणिवइ जगि णउ हुयउ ण होसइ ॥ ४ ॥

## 5

सो रायाहिराउ सामंतहं  
पक्कहिं दिणि धीरहं णिरवायहं  
कुलमइअप्पयपयपरिपालणु  
णिसुणह भुयबलतुँलियकरिंदहं  
जेण चरिचि तउ गिरिवरकंदरि  
एहु लोउ जे धम्मि पवत्तिउ  
कुलु णरणाहहं एत्थु विसेसें  
दंसणणाणचैरित्तभासें  
कुलु लक्खिज्जइ सुद्धायारें  
साइ अणाइ वि दीसइ जायउ  
भरहेरावएहिं कुलु खिज्जइ

मंडलियहं माहिमाइ महंतहं ।  
अक्खइ खत्तवित्तु बहुरायहं ।  
अवरु समंजसत्तु मलखालणु ।  
पंचमेउ चारित्तं णरिंदहं ।  
अज्जिउ तित्थयरत्तु भवंतरि । 5  
परिताइउ खयाउ सो चत्तिउ ।  
कुलु लक्खिज्जइ बुहसहवासें ।  
कुलु रक्खिज्जइ दुण्णयणासें ।  
दढऊढेण अणुव्वयभारें ।  
वीर्यंकेरकमेण कुलु आयउ । 10  
कालि कालि जिणणाहहिं किज्जइ ।

घत्ता—पणवियसिरु मउलियकरकमलु जाहं करइ हरि कित्तणु ॥  
ते पत्थिव कुलसंताणयर ताहं महादेवत्तणु ॥ ५ ॥

८ B मुज्जइ. ९ M दियत्तहिं. १० MB भरि भमइ.

5. १ B णिवायहं T णिरवायहं २ MB खत्तवित्ति. ३ B °तुरिय°. ४ MBK चारित्तु. ५ M पर-  
ताइउ, T परिताइउ. ६ MB कुल णर°. ७ MB °चरित्ताभासें. ८ M दढऊढेण; T दढऊढेण. ९ M वीर्यंकेर.

9 b भरहु संगीतम् .

5, 2 a णिरवायहं अपायरहितानाम्. 6 b परि ताइउ खयाउ परिरक्तितो विनाशाव. ७ b दढ-  
ऊढेण दढधृतेन. 12 हरि इन्द्रः.

## 6

अवरु वि मइ रापं रक्खेवी  
 णासइ णिवमइ मिच्छारंगे  
 णासइ मइ चामीयरलोहे  
 णासइ मइ हरिसे चवेलत्ते  
 णासइ मइ मएण माणेण वि  
 णासइ मइ वेसायणगमणे  
 णासइ मइ जूयम्मि णिउत्ती  
 मइ ण जासु कलिकलुसे छित्ती  
 णिवविज्जारिसिविज्जागामिणि

घत्ता—मइसुद्धिइ वडुइ धम्ममइ धम्मु वि मइ सो घोमिउ ॥

जो खीणकसायहि केवलिहि जीवलोइ उवएसिउ ॥ ६ ॥

अरहंतहु जि सिक्ख सिक्खेवी ।  
 कुगुरुकुदेवकुलिगिपसंगे ।  
 णासइ मइ णिरु कामे कोहे ।  
 णासइ मइ जिणपडिकूलत्ते ।  
 णासइ मइ मइरापाणेण वि । 5  
 णासइ मइ कुरंगवहरमणे ।  
 णासइ मइ पररमणिहि रत्ती ।  
 जिणवरचरणंभोरुहघिती ।  
 तहु होसइ इहपरमवि गोमिणि ।

## 7

धम्मु खमाइ होइ गरुयारउ  
 अज्जउ धम्मु पावु मायारउ  
 धम्मु सउच्च धम्मु तवतप्पणु  
 धम्मु बंभवेरे परिचापं  
 पुण्णाउसु सो णिज्जाडेवउ  
 इय मइसुद्धिइ कहिय णउ रक्खमि  
 हुयैवहपविसणु हुयललियंगउ  
 सत्थग्गहणु महाजलवोलणु  
 पयइ कुच्छियमरणइ दुहमि

धम्महु मइवगुणु पहिलारउ ।  
 धम्मु सच्चवयणोहु वियारउ ।  
 धम्मु असेसवत्थुपवियप्पणु ।  
 जेण ण कियउ वियाणवि रापं ।  
 रज्जे पुणु वि णरइ पाडेवउ । 5  
 तणुपरिरक्ख णरिदहु अक्खमि ।  
 विसकणकवलणु मरणु ण चंगउ ।  
 गिरिणिवडणु अंतावलिघोलणु ।  
 णरु भामेवि घिवांति भवकइमि ।

6. १ MB °कुदेउ°. २ M चवलित्ते. ३ MB read this line and the following as:  
 णासइ मइ जूयम्मि णिउत्ती, जिणवरचरणंभोरुहघिती; मइ ण जासु कलिकलुसे छित्ती, णासइ मइ पररमणिहि रत्ती.  
 ४ G मइसुद्धिइ. ५ MB धम्मु सइ. ६ MB सो मइ.

7. १ B गुरुआरउ. २ MB मइउ गुणु. ३ MB पाउ. ४ MB. °वयणोह. ५ MBK सउच्चु.  
 ६ MB धम्मु जि बंभवेरपरिचापं. ७ MB हुयवहु पविसणु हुउ ललियंगउ.

7. 2 a पाउ पापस्. 3 b °पवियप्पणु त्यागो विवारणं वा. 4 a परिचापं आकिन्धनेन; 6 वियाणवि ज्ञात्वापि. 7 & हुयललियंगउ दग्धशरीरम्. 8 a सत्थग्गहणु आत्मघातः.



घसा—मुर्णिवरणकमलि उवसमु करिवि जो ण मुयउ संग्णसै ॥ 10

चउरासीलक्खजोणिमुहहिं सो परिभमइ किलेसै ॥ ७ ॥

## 8

अवरु वि राणउ करउ गिरिक्खणु  
दुम्मइ हई जाणिवि धाडइ  
जिह गोवउ पालइ गोमंडलु  
णिक्कारणमारणु जो राणउ  
मिसु मंडिवि हलहरसंघायहं  
बुड्ढणारिडिभयसंतावणु  
जणणीसाससिहिहिं सो डज्जइ  
लग्गइ ण जियइ दुक्खहुयासइ  
पहु अणुरत्तपथइं जो तासइ  
रत्तउ सत्तउ भिच्चु भरिज्जइ  
बुज्झियकजावायउवापं  
गुरुवरणारविंद सेवेवउ  
रोसै णउ विसिट्ठु पहेरेवउ

पर्यहि धम्मणापं परिरक्खणु ।  
तिव्वे दंडे गाइ ण ताडइ ।  
तिह पालउ गोवइ गोमंडलु ।  
सो रक्खसु जमदूयसमाणउ ।  
णिहोसहं दिय वणिहिं वरायहं । 5  
जो धणहरणु करइ भीसावणु ।  
अणु वि दुक्कियकम्मं बज्जइ ।  
ण वसइ देसु विसइ परदेसइ ।  
कइहिं वि दियहहिं सो सइ णासइ ।  
तव्विवरीयउ अवहेरिज्जइ । 10  
गरणाहेण णिहालियणापं ।  
अवरु समजसत्तु भवेवउ ।  
दुट्ठपक्खु ण कयावि धरेवउ ।

घसा—इय पंचपयारपयासियउ णिवचरित्तु जो पालइ ॥

कमलासण कमला कमलमुहि तहु मुहकमलु णिहालइ ॥ ८ ॥ 15

## 9

तहिं अच्छइ भरहेसरु जइयहं  
कुहजंगलजणवयगयउरवइ  
सोमप्पहमहिणाहहु णंदणु

गणि पभणइ सुणि सेणिय तइयहं ।  
जिणकमकमलजुयलसेवारइ ।  
लच्छीवइमायहि तोसियमणु ।

4 MB °चरणमूलि.

8. 1 G पहिं. 2 M पावइ. 3 MB °णीमामसयहं. 4 MB दुक्खु म? 5 M अणुरत्तु पयइ.  
6 MB °रविंदु. 7 B भावंतउ. 8 G णियचरित्तु.

9. 1 MB °जगलु.

11 °मुहहिं द्वारेः.

8. 3 a गो वउ गोपः, गो मंडलु गवां संघातः; b गो वइ राजा, गो मंडलु भवलयम्. 8 ८ विसइ  
प्रक्षिप्ति.

सुंदर चोईहभौइहि जेडुउ  
 कुरुब्रंसाहिबेण पणवेप्पिणु  
 तापं रायपट्टि महु बद्धइ  
 तम्मि ह्युइ णिक्कलि कलुसञ्चुइ  
 जाणियपयाणेयवियप्पइ  
 घोरवीरतवचरणञ्चम्भुइ  
 ससहोयरु दिम्मुहइ णियंतउ  
 माहयर्वालयिचलसाहाघणु  
 धम्माणंदं मणु आणंदिउ  
 दिट्टुउ फैणिवरु समउ भुयंगिइ  
 गयसंघच्छरि पुणरवि आपं

जउ णामें अत्थाणि पैइडुउ ।  
 पभणित्तं तेण राउ विहसेप्पिणु । 5  
 रिसिरयणत्तइ सइ उवलद्धइ ।  
 दाणपवत्तणि सुरवरसंथुइ ।  
 रिसहसामिपयपंकयच्छप्पइ ।  
 पित्तिइ सेयंसाहिवि णिन्वुइ ।  
 हउं णियपुरवरंति विहरंतउ । 10  
 एक्कहिं वासरि गउ णंदणवणु ।  
 दिट्टुउ सीलगुत्तु मुणि वंदिउ ।  
 धम्मु सुणंतु सरलललियंगिए ।  
 सा दिट्ठी मुक्किय णियंणाएं ।

घत्ता—दीवंडु काओयरु णाइणि वि विण्णि वि धम्मु सुणंतइ ॥

15

मइं लीलाकमलें ताडियइं तंहिं वि जाइरइरत्तइं ॥ ९ ॥

10

कसणारुणबिंदुयतंणुराइहि  
 इय गरहिवि परिवारेणाहय  
 कासैपुप्फकंतिसंकासउ  
 णिसि णियकंतहि मइं आहासिउ  
 कुमहिलखलचरियाइं पयासमि  
 विविहाहरणकिरणरंजियघरु  
 पुच्छिउ सो मइं किं अवलोयहि  
 तेण पउत्तउं किं ण वियाणहि

कहिं णाइणि कहिं लग्गवि जाइहि ।  
 सहं जारेण तेण सा णिग्गय ।  
 हउं पडिआगउ णियआवासउ ।  
 सयणालइ तं णाइणिविलसिउ ।  
 जाम किं पि किर पिय संभासमि । 5  
 ताव तंहिं जि अवयरिउ वरामरु ।  
 दिट्ठि वियारभरिय किं ढोयहि ।  
 लोयहं तुहुं वि धम्मु वक्खाणहि ।

२ MB चउदहं ३ M भावहि. ४ B बइडुउ. ५ MB पित्तइ. ६ MB °वलियचवलसाहा°. ७ MB फणिवइ. ८ M मरलललियंगइ; B मरललियंगिइ. ९ MB मुक्की णियणाएं. १० G °णियणायाएं. ११ MB काओयरु विसहरु णाइणि वि. १२ M तंहिं जइपरइरत्तइं.

10. १ MB °तणुरायहि. २ MBK कासससंककति°.

9. 7 a त म्मि ताते; गि क्क लि शरीरनिस्पृहे. 9 b णि व्नु इ सुखीभूते. 15 दी व डु सर्पजातिविशेषः; णाइ णि नागी.

दोसगाहणु ण कासु वि किज्जइ  
पइं वि जाइरइ महु कुलउत्ती

पंगुलु पंगुलु केम भणिज्जइ ।  
पाणिपोर्मोर्मै जं छिच्छी । 10

घत्ता—तं पौडिय सयलें परियणेण उवलहिं दंडसहासें ॥  
कंपंतदेह जारेण सहुं सा मुक्की णीसासें ॥ १० ॥

## 11

पुव्वमेव मुउ फणि वयधारउ  
सप्पिणि ह्इई समपरिणामे  
बिण्णि वि मिलियइं हियवइ धरियउं  
आयउ पत्थ जाम किर मारमि  
ता मइं जाणिउं तुहुं पुण्णाहिउ  
एम भणेप्पिणु तेण फणीसें  
दिण्णइं महु दिव्वइं परिहाणइं  
अवसरि सरसु भणिवि गउ तेत्तहि  
णिसुणि देव सासयसंपययरु

हउं हुउ भावणु णायकुमारउ ।  
सुरसरि देवय काली णामे ।  
तं तुह दुर्ववसिउ संभरियउं ।  
आरुसिवि वच्छयलु वियाग्मि ।  
चरमदेह मीलेण पसाहिउ । 5  
समजलसिंचियरोसहुयामे ।  
दिण्णइं भूसणाइं असमाणइं ।  
अहिवइवियग्गि णिहेलणु जेत्तहि ।  
जग्गि जीवहु धम्मु जि लग्गणतरु ।

घत्ता—विहसिवि कुरुणाहें वोड्डियउ भग्गपसाहियमंहियल ॥ 10  
देव वि तहु पायहिं पडहिं फुडु जासु धम्ममइ णिच्चल ॥ ११ ॥

## 12

इय जर्पेण कह साहिय जावहिं  
गीवोलांबियमोत्तियहारें  
तेण पउत्तु णिसुणि णिवरररिसि

अवरु वि मंति पराइउ तावहिं ।  
सो दाविउ गयहु पडिहारें ।  
कासीविमइ णयग्गि वाणारसि ।

३ MB जाइरय. ४ MB °पोमपंकइ. ५ MBK ताडिय.

11. १ M पुव्ववसिउ. २ MB चरमदेहु. ३ MB समजल सिंचिय°. ४ M भूदानइं. ५ MB °महियल.

12. १ B जइण. २ K गीवोलांबिय°. ३ MB गयहु दाविउ. ४ MB °वरससि.

10. 10 a जा इरइ जन्मनः प्रवृत्ति अनुरक्ता.

11. 7 b अ स मा ण इ अद्वितीयानि.

राउ अकंपणु राणी सुप्पह  
 फुलकुसेसयसंणिहसुमुहं  
 सस मृगलोयण ताहं सुलोयण  
 जेट्टहि हँउ काइं किर सीसइ  
 पायहुं काइं कमलु समु भणियउं  
 रिक्खइं वासरि कहिं मि ण दिट्ठइं

सालंकारी णं वरकइकह ।  
 सहसु सुयहं हेमंगयपमुहं । 5  
 लहुइं लच्छीवइ सुहभायण ।  
 उवमाणु जि जहिं किं पि ण दीसइ  
 तं खँणभंगुरु कइहिं ण मुणियउं ।  
 कण्णाणहपहाहि णं णट्ठइं ।

घत्ता—कुंरुविंदु तणु वि जंघाजुयहो णासवंतु करु दंतिहि ॥ 10  
 ऊरुजुयलहि जो सँमुं भणइ सो कइ पडियउ भंतिहि ॥ १२ ॥

13

वण्णमि काइं णियंवगुरुत्तणु  
 भमउ भमउ सो भृगं भुत्तउ  
 कहिं थणजुयलु चित्तगइरुंभणु  
 दड्ढा ताहं दासिसिरमंडणु  
 किं तरुणीवयणहु उवमिज्जइ  
 जेवं कुमरिहियवउं संदाणइ  
 किं सारंगणैयणि सा उत्ती  
 णक्खहं लग्गिचि जा केसग्गइं  
 लीलंदोलणकीलांजुत्तइं

जहिं पत्तउ तिहुयणु जिं लहुत्तणु ।  
 णाहिहि सरिसु ण सलिलावत्तउ ।  
 भासइ कणयकलस कहिं कइयणु ।  
 वंगउ ससहरु समलु सखंडणु ।  
 तासु सरिच्छउ तं जि भणिज्जइ । 5  
 मृगुं ण तें अवलोयहु जाणइ ।  
 केत्तिउ किज्जइ उत्तैपउत्ती ।  
 ताम ताहि णिरुवमइं वरंगइं ।  
 छुडु जि वसंतमासि संपत्तइं ।

घत्ता—अंक्रुरियउ कुसुमिउ पल्लविउ महुसमयागमु विलसइ ॥ 10  
 वियसंति अचेयण तरु वि जहिं तहिं णरु किं णउ वियसइ ॥ १३ ॥

५ B° समुहइं. ६ मिगलोयण. ७ MB तक्खणि भंगरु. ८ B कुंरुविंदुत्तणु. ९ MB जंघाजुयलहो.  
 १० K सम.

13. १ MB वि. २ जिम कुमरिहि हियवउ. ३ MB मिगु ण तेम. ४ MB °णयण. ५ MB उत्त-  
 पडुत्ती. ६ MB °कीलणजुत्तइं.

12. 5 a °कुसेसय° रक्तोत्पलम्. 10 कुंरुविंदु शंखघर्षणम्; तणु काष्ठं लघुश्व.

13. 2 a भुत्तउ युक्तो गृहीतः. 4 a दड्ढा अभिना संतप्ताः.

## 14

छुड मायंदरुक्खु कंटइयउ  
 छुड चंपयतरु अंकूरंचिउ  
 छुड कंकेलि किं पि कोरइयउ  
 छुड मंदारसाहि पल्लवियउ  
 छुड जायउ नैमेरु कलियालउ  
 छुड काणणि पर्कुलु पलासउ  
 छुड फुलिउ मलियफुलोहउ  
 छुड छडयैणविडउलि मउ वाड्डिउ  
 कुँदु कुसुमदंतहिं णं हसियउ  
 दवणयकर्यकुड्डयलपउत्तइं

महलच्छिइ आलिगिवि लइयउ ।  
 णं कामुउ हरिसैं रोमंचिउ ।  
 णं वम्महचित्तारैं रइयउ ।  
 चलदलु णं महुणा णच्चवियउ ।  
 मत्तचभोरकीररावालउ । 5  
 षहियहुं लगगउ विरहहुयासउ ।  
 रमणीयणि पसरिउ रइलोहउ ।  
 वेलिकुसुमरसु चुंबिवि कड्डिउ ।  
 कोइँलु कामपडहु णं रसियउ ।  
 चंदणकहमपिँडेविलित्तइं । 10

घत्ता—छुडु केलीहरइं विणिम्मियइं पुष्पंच्छुरणइं धित्तइं ॥

छुडु लगगइं मिहुणइं सरहसइं अवरोप्परु रयँरत्तइं ॥ १४ ॥

## 15

थिप्पिरमहुछडयहिं महिधुलियइं  
 णवरत्तुप्पलकलियादीवहिं  
 धवलकुसुममंजरिधयमालहिं  
 रायहंसकामिणिकयरंमणहिं  
 कुररकीरकैरंजणिणायहिं  
 सियजलकणतंदुलसोहालहिं  
 अणलससयदलदलसरलच्छिइ

सुमणसुरहिरयरंगावलियहिं ।  
 चंदकवयणडणच्चणभावहिं ।  
 गुमुगुमंतमहुलियगेयालहिं ।  
 थिउ वसंतपहु उव्वेवणभवणहिं ।  
 वणिणजंतु व थोत्तणिँहाणहिं । 5  
 भिसिणिपत्तवरमरगयथालहिं ।  
 धित्त सेस णं तहु वणलच्छिइ ।

14. १ MB मायंदु रुक्खु. २ B राइयउ, K रयउ. ३ M णं मेरु; B णामरु. ४ MBK पफुल्ल. ५ B विडयणविडलि. ६ MB कुंद. ७ MB कोइल. ८ MB °कयकंदुयणपउत्तइं. ९ MBK °विगविलित्तइं. १० MB पुष्पत्थरणइ. ११ MB रइरत्तइ.

15. १ MB °रमणिहिं. २ MB बहुवणभवणिहिं. ३ MB °कारंड°. ४ M °णिकायहिं; B °णिणा-यहिं; K °णिहायहिं.

14. 8 a कोरइयउ कोरकितः. 8 b °कुसुमरसु मकरन्दः. 12 सरहसइं सरभसानि उत्सुकानि.

15. 1 b सुमणसुरहिरय° पुष्पसुगन्धमकरन्दः. 7 a अणलस° विकसितम्.

फग्गुणपद्दसारइ णंदीसरि  
पोसहपरिसमखामसरीरइ  
पुत्तिइ पहसंतें मुहकमलें

खुड सुरणविइ दीवि णंदीसरि ।  
थणजुंयलंतविलंबियहारइ ।  
पहु दिट्ठउ जिणसेसाकमलें । 10

घत्ता<sup>५</sup>—तेलोकपियामहु णववि जिणु णघमयरंदकरंबिउ ॥

तं णलिणु णरिदें णिहिउ सिरे महयरउलमुहखुंबिउ ॥ १५ ॥

16

तेण धूय पियवयणहिं पुज्जिय  
गय सुंदरि णियगेहु पराइय  
भडयणु सब्बु दूरि ओसारिउ  
तणयहि उड्ढदिणि गलियइं गत्तइं  
णं दुपुत्तरइयइं दुचरित्तइं  
घरि कुमारि केत्तिउ रक्खिज्जइ  
सायरमंति चवइ सररुहमुहु  
ढोयहि तासु कण्ण किं अण्णें  
सिद्धत्थेण भणिउं मणरंजणु  
णं पच्चक्खीह्वयउ सइं सरु  
सब्बत्थेण लविउ मुइ महिहरं  
होति<sup>१०</sup> ण अण्णहु तं लायण्णउं  
अविरोहणउं सयंवरमंडणु

करि पारणउं भणेवि विसज्जिय ।  
तायहु विसे चित्तं संभूइय ।  
रायंणं मंतिहि मंतु समीरिउ ।  
महुं दुहंति भो अट्ट वि गंत्तइं ।  
अवलोयहु लहु णववरइत्तइं । 5  
कासु वि कुलगुणवंतहु दिज्जइ ।  
अक्ककित्ति चक्कवइहि तणुरुहु ।  
सामंतेण लोयसामण्णें ।  
अच्छइ राणउ णामु पैहुंजणु ।  
रहवरु बलि वज्जाउहु घणसरु । 10  
तुह पुत्तिहि वरु जइ विज्जाहर ।  
सुमइ कहइ मइं पहु पडिवण्णउं ।  
होउ ण कासु वि णेहहु खंडणु ।

घत्ता—जं बहुसुएण परिणयमइण सुमइबुहेणन्भत्थिउ ॥

परियाणिवि होती कज्जगइ तं सयलहिं मि समत्थिउ ॥ १६ ॥ 15

५ MB °जुयलंति विलं, ६ MBK णविवि.

16. १ MB राएं मंतिहु, २ MB उडुदिण°. ३ MB डहंति. ४ MB अंगइं. ५ M ण दुपुत्तु रइयइं; B ण पुत्तरइयइं. ६ MB किं मंतेण, ७ MB पइंजणु. ८ MB सरु ९ K वज्जाउह; T घणसरु भेषधरः. १० MB महियरु; T महिहर राजानः. ११ MB विज्जाहरु. १२ MB होइ ण.

16. 4 a उडु दि णि ऋतुदिवसे. 8 b °सामण्णें अनुत्कृष्टेन. 10 a सरु स्मरः कंदर्पः; b घण सरु भेषधरः.

## 17

विमाणगोमिणीधवो	कुमारिपुष्पबंधवो ।	
सुरो विचित्तअंगओ	तओ तर्हि समागओ ।	
तिणा सुमंडवो कओ <sup>१</sup>	विचित्तभिसिसोहँओ <sup>३</sup> ।	
ललंततोरणालओ	घुलंतपुष्पमालओ ।	
सैमंतभंतभिगओ	णहृगलगसिंगओ ।	5
सुणीलबद्धभूयलो	तमेण णाइ सामलो ।	
कहिं पि हेमपिजरो	सरो व्व कंजकेसरो ।	
कहिं पि रूपयामलो	विलिसैचंदमंडलो ।	
कहिं पि वत्थुंछणओ	सुपँसपिच्छवणओ ।	
णवंतणत्थलीसमो	महंतपुणसंगमो ।	10
मणीहि रायराइओ	रईइ णाइ छाइओ ।	
कहिं पि देसिं रत्तओ	वहइ णाइ रत्तओ ।	
थिओ णवो व्व मित्तओ	सिरीविलांसदित्तओ ।	
णिहित्तमोत्तियच्चणो	ससंखकुंभंदप्पणो ।	
भसेसमंगलासओ	पगीयगेयंघोसओ ।	15
विसालमत्तवारणो	दिवायरंसुवारणो ।	

घत्ता—मंडवु किं वण्णमि देव हउं बहुमाणिक्कहिं जडियउ ।

जहिं दीसइ तर्हि जि सुहावणउ संगै महिहि णं पडियउ ॥ १७ ॥

17. १ MB add after this: समुच्चमंचसंगओ ( B °संचसंगओ ). २ MB °सोहिओ. ३ MB add after this: वरंगणाहिराहिओ. ४ B भमतमत्त°. ५ MB विचित्तवण्णमंडलो, K विजित्तबंद°. ६ MB वत्थछणओ and gloss वत्थेणावच्छन्नः. ७ GK सुएसुपिच्छवणओ but gloss शुकेसपिच्छवर्णः; T सुएस शुक्रप्रधानः. ८ M णवत्तणत्थली°; B णवत्तणत्थली. ९ MB देस°. १० G दिसी° but corrected to सिरी° in the margin. ११ MB °कुंद°. १२ MB °गीय°. १३ MBK सगु.

17. 1 a वि मा ण गो मि णी ध वो वि मान स्य गो मि नी लक्ष्मी स्त स्या धवः स्वामी, वै मानिक देव इत्यर्थः. 9 b सु ए स पि छ व ण ओ शु के स पि छ व र्णः. 10 a ण वं त णं न वी न त्त्त णम्. 14 b °कुं भं म ज्ज ल क ल षाः. 15 a °भा स ओ आ भयः.

18

जहि कुमारि अहिलसह संहं वर  
 पइं विणु तेण वि काइं णवल्ले  
 अविणउ एत्थु मे होउ मलासिउ  
 तं णिसुणिवि ह्यउ कोऊहलु  
 मेरुधीरु जगणलिणदिणेसरु  
 बल्लिउ पडिभङ्गयघडमहणु  
 बल्लिउ बलि रहँवरु वज्जाउहु  
 भूगोयरविज्जाहरराणा  
 पडुहु अकंपणु पणविउ जावहि  
 सहुं धाइइ भूसणहिं सहंती  
 चोइय हय महिंदरहिणं तहिं  
 जोयइ सुंदरि कंजुइ दावइ

सो पारद्धउ णाहसयंवरु ।  
 लहु चल्लहि किंकरवच्छल्ले ।  
 हउं हकारउ तुँह संपेसिउ ।  
 दिण्ण भेरि गुरुरव मिलियउ बलु ।  
 तं णिसुणिवि बल्लिउ भरहेत्तरु । 5  
 अक्ककिसि णामे तहु णंदणु ।  
 बल्लिउ घणरउ णं कुसुमाउहु ।  
 गंपि सयंवरघरि आसीणा ।  
 संदणि तरुणि चडाविय तावहिं ।  
 भायँसहासे रक्खिज्जंती । 10  
 रायकुमार परिट्ठिय ते जँहिं ।  
 एहु वि णरवइ मणहु ण भावइ ।

घत्ता—तहि अक्ककिसि पलयक्कणिहु बलि भूयबलि वि समाणउ ॥  
 वज्जाउहु वज्जु व आवडिउ दवइ को वि ण राणउ ॥ १८ ॥

19

जिह जिह सुंदरि अप्पउ दावइ  
 को णीससइ ससँइ दिहि छँडेइ  
 कंठाहरणु को वि संजोयइ  
 को वि णियइ णियणहइं अर्भंगइं  
 विरभवि मइं ण कियउ मणणिग्गहु  
 को वि समिच्छइ तहि अहरग्गहु  
 कासु वि आयउ विरहमहाजरु  
 मुच्छिउ पडिउ को वि विहलंघलु

तिह तिह णिवतणयहुं तणु तावइ ।  
 अप्पउ पुण वि पुणु वि कु वि मंडइ ।  
 अप्पउ दप्पणि को वि पलोयइ ।  
 एयइं एयहि थणहि ण लग्गइं ।  
 किइ विरयमि एयहि कंठग्गहु । 5  
 कासु वि लग्गउ काममेहग्गहु ।  
 कासु वि उरि खुत्तउ वम्महसरु ।  
 केण वि णियलज्जहि दिण्णउं जलु ।

18. १ MB सयंवरु. २ M ण होइ. ३ MB तुम्हं पेसिउ. ४ MB रहवर. ५ MB माइ°. ६ MB जेतहिं.  
 19. १ MB सुसइ. २ MB छुइ. ३ MB अंगउं को वि पुणु वि पुणु मंडइ. ४ MB अहंगइं. ५ MB °महाग्गहु.

18. 3 a मलासिउ दोषाश्रितः पापाश्रितो वा. 11 a महिंदरहिणं महेन्द्रसारथिना.  
 19. 8 a विहलंघलु विहलान्नः.



घत्ता—कर मोडइ छोडइ सिंरचिहुर उग्गमंतसिंगारहिं ॥

अहिलसइ हसइ भासइ महुरु भजइ कामवियारहिं ॥ १९ ॥

## 20

तरुणिवयणु जोयवि जोत्तारिं

पुणु रहवरु संचोईउ तेत्तहि

पुच्छइ पेच्छंती गयँवरगइ

पँहु केरलवइ एहु सिंघलवइ

एहु बम्बरवइ एहु गुज्जरवइ

एहु कंभोयकौंगगंगाहुं

एहु कस्सीरणाहु टँकेसरु

सोमपहसुउ पँहु सेणावइ

रुद्धणहंतरधरविन्थारहिं

णिष दिव्विजइ अणेथं परज्जिय

गज्जिउ णवघणघोसणिणापं

इय आयणिणवि पियसहिवयणइं

घत्ता—तिह जोइउ ताइ सुलोयणए जउ णियवइ जयगारउ ॥

जिह रोमि रोमि तहि विष्फुरिउ वम्महु वम्मवियारउ ॥ २० ॥

## 21

जिह जिह कण्णइ पइ आलोइउ

णरवरिंद णीसेस पमाइवि

मउम्मसकंपावियगइगत्तइ

तिह तिह रँहियं संदणु ढोइउ ।

भवंसिणेहसंबंधं जाइवि ।

वीलावसपरिमँउलियणेत्तहि ।

१ B सिरि चिहुर.

20. १ MB सजोइउ. २ B जयणरवइ. ३ GK गइवर° but glos- गजवरगतिः; K corrects गइ° to गय°. ४ MB read lines 4, 5 and 6 as: एहु केरलवइ एहु कोमलवइ, एहु सिंघलवइ एहु मालवपइ; एहु कुंकणबम्बरगुज्जरवइ, एहु जालंधरेसु वज्जरवइ, एहु कंभोयकौंगगंगाहुं, राउ एहु सव्वहं मि कलि-गहं. ५ MB ढकेसरु. ६ MB पहु. ७ MB °जलघारहिं. ८ MB अणेण. ९ MB जिह कारिउ.

21. १ MB रहियं. २ MB भवसणेह°. ३ MB °मउणिय°.

20. 1 a जो ता रँ सारथिना.

21. 2 a प मा इ वि परित्यज्य.

जयहु लच्छिकीलाभूमित्थलि  
कुंसुमसरेण णं कुसुमसरावलि  
गउ लहु सरहु भरहु साकेयहु  
ता दुहंसणु दुद्धरु दुज्जणु  
रविकित्तिहि सुहिबंदाकरिसणु  
मच्छरवंते तेण पउत्तउं  
जहिं अरहंतदेउ तहिं सयमहु ।  
जहिं महिचइ तहिं रयणहं संगहु ।  
ण करहेण खरेण वा णरवंदहु  
हरिकरिथीआइयइं णियंदहु

धित्त सयंवरमाल उरत्थलि ।  
गहिय कुमारि तेण कयपंजलि । 5  
दुम्मइ परिवड्ढिय जुयरायहु ।  
दुट्टु दुरासउ दूसियसज्जणु ।  
अत्थि मंति णामे दुम्मरिसणु ।  
जहिं अहिंस तहिं धम्मु णिरुत्तउ ।  
जहिं मुणिवरु तहिं इंदियणिग्गहु । 10  
घंटाळंबणु सहइ करिंदहु ।  
सयलइं रयणइं हौंति णरिंदहु ।

घत्ता—संकेइय पुत्ति अकंपणेण पहु णिहालिउ बालप ॥

अवमाणिवि तुम्हइं पिउंतेणय घणरबु पुज्जिउ मालप ॥ २१ ॥ 15

22

रोसविमीसहं  
इच्छियवसणहं  
समरि भिडेप्पिणु  
धिप्पइ सुंदरि  
विउसदुगुंछिउ  
कलहुहेसिउ  
तं णिसुणेप्पिणुं  
दरविहसेप्पिणुं  
णिहुक्कियमइ  
भुक्खइ झीणी

जयकासीसहं ।  
दोहं मि पिसुणहं ।  
सिरइं खुडेप्पिणु ।  
णं वम्महपुरि ।  
पहुणा इच्छिउ । 5  
तं तहु भासिउ  
णिवहु णवेप्पिणु ।  
कज्जु मुएप्पिणु ।  
चवइ महामइ ।  
कोवविलीणी । 10

४ MB सकुसुम ण कुसुमसरसरावलि, ५ MB किय°, ६ MB अरहतु देउ, ७ MB add after this: जहिं सुवणु तहिं विसयपरिग्गहु, ८ M °थीअइआइं णियंदहु; B °थीआइअइ णिबंदहु, ९ MB पहुतणय.

22. १ MB कलहुहेसउ, २ MB add after this: कर मउलेप्पिणु, ३ MB add after this. बहु संसेप्पिणु.

6 a सर र हु सरथः, 8 a सु हि वं दा करि सणु मित्रवृन्दकृशताकारकम्, 13 a णि यं दहु वृवन्दस्य.

माणुसाणी	भयविहाणी ।	
जायर्वचिती	दुक्खे तत्ती ।	
गिहरे भुत्ती	गमणासत्ती ।	
सहं जि विरत्ती	अर्णह रत्ती ।	
पयडीवेस वि	जगपंकयरवि ।	15
सा करिकरभुय	भरहेसर सुय ।	
णालिगिज्जइ	णेय रमिज्जइ ।	
एह पउत्ती	परकुलउत्ती ।	
उदालंतहं	जसु मइलंतहं ।	
णउ मुयंतहं	उप्पहि जंतहं ।	20
ओ जुवणिववइ	इहपरभवगइ ।	
अवसें णासइ	तुह किं सीसइ ।	

घत्ता—ससि दिणयरु जलहरु जलणु जलु गयणु महीयलु वाउ वि ॥  
जर्णजीवियकारेणु धुडु मुणहि सुंदर तुहुं तुह ताउ वि ॥ २२ ॥

## 23

धणवंतेण अहव दीणेण वि	अंकुलीणेण वि सकुलीणेण वि ।	
लइय सयंवरि कुवरि ण हिप्पइ	हियवउ गरुपं पावे लिप्पइ ।	
एहु पियामहेण तुह तापं	मग्गु पयासिउ मणुसंघापं ।	
इहु लंघिवि जो भूयइं तावइ	सो णरु दुज्जसु दुग्गइ पावइ ।	
एम कहंतहं णउ पडिबुद्धउ	णं घपण सित्तउ धूमद्धउ ।	6
अककिसि पडिलवइ विरुद्धउ	जइयहु वीरवट्ट नहु बद्धउ ।	
जइयहुं फणिवइ भइण ववकिउ	जणणे जलहरसरु जउ कोक्किउ ।	
तइयहुं महुं रोसाणलु इयउ	णियमिउ पंतु खलहं जमदूयउ ।	

४ MB जा अवचिती. ५ MB read this line as. गमणासत्ती, गिदह ( B गंदह ) भुत्ती. ६ MB अण्णु  
७ G omits this line. ८ B जणु. ९ MB कारण धुउ.

23. १ MB सुकुलेणेण वि अकुलीणेण वि. २ MBK नीरपट्टु.

22. 12 a जा य व चि ती या अपचित्ता उन्मत्ता.

23. 4 a भूयइं प्राणिनः. 5 b धूमद्धउ अग्निः. 7 b अउ वयः इति नाम्ना.

वारिउ छण्णपउसिहिं वण्ये  
सो वूसडु पज्जलियउ वँट्टइ

अज्जु सयंवरमालातुण्ये ।  
रिउलोहियसिउउ ओहट्टइ । 10

घत्ता—भो ओसरु कण्णइ कारं महु हउं किं मग्गु ण बुँज्जवि ॥

जउ अप्पु वि मडंलीहहि गणइ तेण समउ रणि जुज्जवि ॥ २३ ॥

24

● ताडिय समरमेरि कउं कलयलु  
रक्खिय सिक्खिय चइरिवियारण  
भेट्टेपयंगुट्टुहिं संचोइय  
हैरिखरखुरखयखोणीमंडल  
रहरंखोलमाणधयडंबर  
चकंचारचूरियविसहरसिर  
सुणमि सुविणमि महापडु णहयर  
जुवराएण रणंगणि मुक्का  
विजयघोसि करिवरि आरुडउ  
चकचूहमज्जत्थु विहावइ  
एत्तहि कण्ण पइट्टु जिणालउ  
रक्खिज्जंती किंकरवग्गे  
झायइ हो विवाहवित्थारें  
एत्तहि इयं कज्जु समीरिउ

खाणि उट्ठाइउ वउरंगु वि बलु ।  
सूरारुढ सूर वरवारण ।  
गज्जमाण मेहा इव धाइय ।  
वाहिय वरकामिणिमणचंचल ।  
दित्तविचित्तछत्तछण्णंबर । 5  
असिअसमुसललउडिलंगलकर ।  
अंटे चंद णामें विज्जाहर ।  
गरुडवूडु णहि विरइवि थक्का ।  
बालु महाहवसयणिण्णुट्टुउ ।  
रवि परिवेसें वेडिउ णावइ । 10  
णिच्चमणोहर णाम विसालउ ।  
थिअ णिच्चलमण काओसग्गे ।  
णाणाजीवरासिसंघारें ।  
तं चकवइसुएणवहेरिउ ।

घत्ता—एत्तहि जामायं पुलइएण भणिउ अकंपणु धणुडु धरि ॥ 16

रिउ जिणिवि जाम पडिबलमि हउं ता तरुणिहि रक्खणु करि ॥ २४ ॥

३ M वट्टइ, ४ MBK जुज्जमि, ५ MBK मडंलीहहि, ६ MBK जुज्जमि.

24. १ MB किउ, २ K भेट्टे, ३ MB इयखुरेहि खय, ४ MB चकचार°, ५ MB अरुवव,  
६ MB °सयणिव्वूडउ, ७ MB थिय तायाणइ काओसग्गे, ८ MB ज्ञाइय.

24. ७ a °वयडंबर अजाटोपः, 9 b बाहु अर्ककीर्तिः.

## 25

तेण समउ वरवीरु रणुम्भहु  
 क्षमापाणि भीसणु परसिरिहह  
 पंच वि ससिरविणायकुलुम्भव  
 पंच वि णं आसीविसविसहर  
 पंच वि लोयचाल णं दारुण  
 अरितरुमयकंतारविणासण  
 मेहप्पहु खगवइ तहिं छट्टुउ  
 जउ जि जीउ जहिं ववसिउ जायउ  
 विरइयमयरवूहअब्भंतरी  
 दीसइ सोमप्पहसुउ केहउ  
 चोइहभायरेहिं परियरियउ

चलिउ सुकेउ सूरमिचु वि भइ ।  
 देवकिसि जयवम्मु ससिरिहह ।  
 पंच वि कयसंगाममहुच्छव ।  
 पंच वि मउडबद्ध रणसहचर ।  
 पंच वि पंच णाई पंचाणण । 5  
 पंच वि णं सइं पंच हुयासण ।  
 करणहउयरी णाई मणु दिट्टुउ ।  
 तहिं ण धरइ रिउ कम्मणिहायउ ।  
 थिउ वेयडुमहाकरिकंधरि ।  
 वणगिरिमत्थइ केसरि जेहउ । 10  
 रवि व सकिग्णकलावहिं फुरियउ ।

घत्ता—उक्त्वयकरवालभयंकरं आहवि कोवावण्णं ॥

आलग्गं कण्णाकारणिण अक्कित्तिजयसेर्णं ॥ २५ ॥

## 26

परिहियकंचणकंचुइकवयं  
 भइमुहमुक्कहकलल्लकइं  
 झसैकौतासणिघोरायारं  
 मुक्कपिसक्कच्छइयगयणयलं  
 अंकुसवसविसंतमायंगं

सामरिसइं संवरियावयवइं ।  
 भामियचक्कं भेसियसक्कं ।  
 झंणझणंतधणुगुणटंकारं ।  
 रुहिरवारिरेल्लियधरणियलं ।  
 संदणसंकडपडियतुरंगं । 5

25. १ MB वरवीर. २ MB मित्तसूह. ३ B जयधम्म. ४ MB रणसयकर, K रणमहयर. ५ M अइतठ° but gloss अरिः. ६ MB णावइ. ७ MB कोवावण्णइ. ८ MB °सेणइ.

26. १ MB पहरिय°. २ MB °कचुय° ३ MB झसकुंतायणि°. ४ MB रुणुणंत°.

25. 6 a अरितरुमयकंतारं अरयः एव तरवस्तन्मय यत्कान्तारमरणम्. 8 a ववसिउ शत्रु-धराजयकरणे उद्यतः, b ण धरइ रिउ कम्मणिहायउ रिपुरककीर्तिः सुलोचनोद्दालनादिलक्षणं कर्मसंघातं न धरति न स्वीकरोति.

26. 2 a °लक्कइं रौद्राः. 4 a °पिसक्कं बाणाः.

असिणिहसणसिहिसिहपिगलियं  
मिलियकरालकालवेयालं  
रंडखंडभावियभेरंडं

लुयकरसिरउराइं महिघुलियं ।  
हणैहणरावसमुग्गयरोलं ।  
खंडियधवलछत्तधयदंडं ।

घत्ता—जुज्झंतं दिट्ठं विसरिसं पयलियवणरुहिरुल्लं ॥

वेणि वि सेण्णं णं रणसिरिए बद्धं केसुअफुल्लं ॥ २६ ॥

10

27

रत्तमत्तरयणियरवेभले  
पहयहत्थिमत्थिकपंकप  
उद्धबद्धच्चिधोहलूरणे  
उयरऊरुउरयलवियारणे  
भीरुवयणणीसरियहारणे  
ता जयण संपेसिया सरा  
आहया हया विद्धया धया  
ते ण किंकरा जे ण मारिया  
तं ण छत्तयं जं ण छिण्णयं  
सो ण रहवरो जो ण भग्गओ  
ताम पध्विखपक्खेहिं विज्जियं  
फुट्ठकंचुयं फुट्ठमहलं  
घायघुमिरं चत्तगोदलं  
समरकोच्छरो हंसियअच्छरो  
झात्ते बाहुबलिदेवतणुहो  
भुयबलीविलग्गो महाभुवो  
दिव्वलक्खणं कियसरीरहं

घारणीयलुलियंतचोभले ।  
रसवसाणईजणियसंकप ।  
तियससुंदरीतोसपुरणे ।  
बइरिघरिणिमणिहारहारणे ।  
मरणदारुणे तहिं महारणे । 5  
पुंखलग्गडुंकारखरसरा ।  
णिग्गया गया णिम्मया मया ।  
ते ण राइणो जे ण दारिया ।  
तं ण वाहणं जं ण भिण्णयं ।  
सो ण खेयरो जो ण खं गओ । 10  
मग्गणेहिं किवेणं व तज्जियं ।  
तुट्ठपक्खरं मुक्ककुंतलं ।  
चकिसूणुणो णिग्गयं बलं ।  
बंधुपरिहवे बद्धमच्छरो ।  
सोमवंसतिलयस्स संमुहो । 15  
पहु अणंतसेणो वि साणुओ ।  
सयइं पंच भिडियइं कुमारहं ।

५ MB हणहणकार°. ६ M वणासिरिए; B णवसिरिए.

27. १ MB °विभले. २ MB रसवसं णं. ३ G छित्तयं, K छत्तय, corrects it to छित्तयं but scores out the correction and restores it to छत्तयं. ४ MB विजिय. ५ MBK किविणं. ६ MB फट्ठ°. ७ M चित्तगोदलं. ८ MBK हरिसियच्छरो.

27. 1 a °वेभले विहले; b °चोभले समूहे बीभत्से वा. 2 b रसवसाणई° रसव्य वसायाश्च नदी. 7. b मया मृताः. 14 a °कोच्छरो दक्षः. 16 b साणुओ सानुजः लघुभ्रातृभिः पञ्चशतैः सहितः इत्यर्थः.

घत्ता—पुरुदेवतणयतणयहिं मिलिवि जउ आढत्तउ जावहिं ॥  
हेमंगउ भायरदहसयहिं सह अंतरि थिउ तावहिं ॥ २७ ॥

28

णउ तासिज्जइ छिज्जइ भिज्जइ  
लुद्धभवणि णं विहलियसत्थइं  
चरमदेह ण मरंति महाहवि  
मेहेसरसरजालु जलंतउ  
वसुसमससिविज्जहिं पडिखलियउ  
एत्थंतरि असहायसहायहु  
मणइं कुमारु धवलु तुहुं ण कसरु  
सुणमि णिवायहि जउ महु वेरिउ  
कंतामोहमहैण्णवद्धउ  
किं कड्डिउ असिवरु पडुतणयहु  
संमुहुं थाहि थाहि मा णासहि  
ता सो जयणरणाहें हसियउ

एकें एक्कु णं तहिं मारिज्जइ ।  
सत्थइं आविवि जंति णिरत्थइं ।  
किरं थाहिति महामुणि याहवि ।  
कुमरहु उप्परि सिहि व पडंतउ ।  
सहलु सपुंखउ पिट्टु व दलियउ । 5  
मुहुं अवलोइवि खेयररायहु ।  
वट्टइ माम तुहारउ अवसरु ।  
ता तेण वि रिउ रणि पञ्चारिउ ।  
रे जीमूयणाय तुहुं भूढउ ।  
दोहय णिवडिओ सि गुदविणयहु । 10  
पेक्खहुं तिक्ख सिलीमुह पेसहि ।  
इय चवंतु किं णहहु ण व्हसियउ ।

घत्ता—तुहुं कौरउ परयारहु पमुहु अक्कक्कित्ति सइं कत्तउ ॥

हउं णायणिउंजउ धरणियले णियपहुपायहं भत्तउ ॥ २८ ॥

29

एम चवेवि चाउ अप्फालिउ  
णाइं कयंतहु पडहें रसियउं  
भेसियसुरणरफणिसंघायउ  
णिद्धणविहुरविणाससमत्थे

णं काणणि हरिणा ओरालिउ ।  
जगु गिलेवि णं कालें हसियउं ।  
जीयारउ रउहु संजायउ ।  
धणु कड्डियउ तेण सइं हत्थे ।

१ G पुरुदेवतणयहिं.

28. १ MB तहिं ण, २ M चरमदेहे, ३ B धिर, ४ MB कुम्मरहु, ५ M भाह, ७ MB °मह-  
णवे वूढउ, ७ M कायउ.

28. 3 b पाहवि प्रभुत्वे, 5 a वसुसमससिविज्जहिं अष्टवन्दैर्विधाधरेर्विद्याभिः कृत्वा, 9 b जीसूब-  
णाय हे मेघस्वर, 10 b दोहय हे द्रोहिन्, 13 तुहुं कारउ त्वं हेतुः कर्ता, परयारहुपमुहु परदार-  
गमनस्य प्रमुखः प्रधानः, सइं कत्तउ स्वगन्त्रः कर्ता, 14 णायणिउंजउ न्यायनियोजकः.

29. 1 b हरिणा सिहेन.

लोहवन्त किर के णउ मग्गण  
गुणवज्जिय किर के णउ णिट्ठु  
विसविविस के ण किर जलयर  
सुद्धिर्वेत णियदिसिइ विसा  
वहरिहि देहावयवि पइट्ठा  
कोडीसरु जि जाहं पवरासणु

धम्मज्जिय किर के णउ भीसण । 5  
पिच्छञ्चिय किर के णउ णहयर ।  
वम्मण्णेषिय के णउ ताविर ।  
उज्जुय के ण मोक्खु संपत्ता ।  
एक ण जयसर अण्ण वि दिट्ठा ।  
ताहं ण दुग्गामु लक्खु विणासणु । 10

घसा—अइदीहहिं विसविसमाणणहिं णिहिलु णहंगणु रुद्धउ ॥

णारायहिं णायहिं णं मिलिवि सुणमिहि बलु खाणि खद्धउ ॥ २९ ॥

30

कुंजर जूरभावेण व भग्गा  
संदण संदाणिय वावल्लहिं  
तिक्खखुरुप्पहिं छिण्णंइ छत्तंइ  
चउदिसु पच्छाइयसरजालें  
एम दिसाबलि संदिज्जंतउ  
सुणमिं मुक्कु बाणु संघोरउ  
कोइ ण काइं वि तेत्थु णिहालइ  
एत्थु तेत्थु मग्गियअवठंभणु  
बलु णीलीरसि धोलिउ णावइ  
दिणयरसरदीवियदहदिप्पहु

तुरय तुरंतंतयपहि लग्गा ।  
भणु कौहिं किर णिज्जंति रहिल्लहिं ।  
चिंघइं चामराइं वाइत्तइं ।  
विज्जाहर हरेवि णियकालें ।  
पेच्छिवि णिययसेणु भज्जंतउ । 5  
ठंकिउ तेण वहरिपरिवारउ ।  
आहणु पँहरणु को वि ण चालइ ।  
सालसणयणु पमेहियजिंमैणु ।  
जाम अहइ णिइ संप्रावइ ।  
तावंतरि संठिउ मेहप्पहु । 10

घसा—तं घंतु महंतु विणासियउ उज्जोइउं णियंसुहिमुहुं ॥

जगि सज्जणसंगे जायएण कासु ण संपण्णउं सुहुं ॥ ३० ॥

29. १ M मम्मं णिसिय; B धम्मं णिसिय. २ MB ण संताविर.

30. १ MB जरतावेण जि भग्गा. २ MB तुरंत तहे पहि. ३ MB किर कहिं. ४ MB छिण्णहिं.  
५ MBK अंधारउ. ६ M परहणु. ७ MB जेमणु. ८ MB संपावइ. ९ B णियसहिमुहुं.

7 b वम्मण्णेषिय मर्मान्वेषिणः. 9 b जयसर जयस्य बाणाः जितस्मराश्च.

30. 1 a जरं ज्वरः; b तुरंतंतयपहि तुरंत त्वरमाणाः + अंतयपहि अन्तकमार्गे. 2 a वा बलु हिं सेल्लेः; b रहिल्लहिं सारथिभिः. 9 b अहइ अभद्रा. 10. b मेहप्पहु मेघेश्वरमित्रः.



## 31

णं जलहरु जलहरु गइ दूंसिवि  
 सुणमि मुक्कु भीसु पंचाणणु  
 सुणमि मुक्कु जलंतु हुयासणु  
 सुणमि मुक्कु सैंकंदरु मंदरु  
 सुणमि मुक्कु विसंकु महाफणि  
 सुणमि मुक्कु महंतु महीरुहु  
 सुणमि मुक्कु मत्तसौंडालउ  
 जं जं सुणमि म्हाउहु पेसइ

धाइउ तासुँ सुणमि आरुसिवि ।  
 मेहप्पहेण सरहु फुरियाणणु ।  
 मेहप्पहेण मेहँ जलवरिसणु ।  
 मेहप्पहेण सकुलिसु पुरंदरु ।  
 मेहप्पहेण गरुडु खगसिरमणि । 5  
 मेहप्पहेण तणूणवु दूसहु ।  
 मेहप्पहेण सीहु दाढालउ ।  
 नं तं मेहप्पहु विद्धंसइ ।

घत्ता— णउ सक्किउ विसहहुं रिउहि सर कसरु व मुहुं वंकेप्पिणु ॥

ओसरिउ सुणमि खयरहिचइ संगरभारु मुएप्पिणु ॥ ३१ ॥ 10

## 32

भग्गइ सुणमीसरि सौंडीरहिं  
 मेहप्पहु पहरेहिं परज्जिउ  
 दाणचारिपीणियमहुयउल्लु  
 कणिरकणयकिंकिणिकोलाहलु  
 आयसवलयबद्धदंतुज्जलु  
 पभणिउ अक्ककित्ति लहु आवहि  
 वंगउ कियउ रायपुत्तणु  
 परणरणारिहि भडयणमारिहि  
 तं पइं णरचइआण णिसुंभिय  
 तं णिसुणेप्पिणु उत्तरु धुत्तं

अट्टचंदविज्जाहरवीरहिं ।  
 सो णासंतु णं सुरहं वि लज्जिउ ।  
 णहयललग्गतुंगकुंभत्थलु ।  
 करसिक्कारसित्तधरणीयलु ।  
 ता जएण संचोइवि मयगलु । 5  
 अज्ज वि सुंदर काइं चिरावहि ।  
 णिहियउ तिहुयणि दुज्जसकिसणु ।  
 रत्तओ सि जं देवकुमारिहि ।  
 णिहय जागविसि पारंभिय ।  
 पडिजंपिउ भरहाहिवपुत्तं । 10

31. १ MB जलहर°, २ MB भूसिवि; ३ K सुणमि तासु. ४ MBK मेहु. ५ M सुकंदरु.  
 ६ MB महातरु. ७ M तणूणउ; B तणूणउ. ८ MB महत्थु संपेमइ. ९ MB वंकेविणु.

32. १ MB सुणमि समरि. २ MB अट्टचंद°. ३ M वि. ४ G करि°. ५ MB सित्तु. ६ MB  
 चिरावहि. ७ MB उत्तर.

31. 2 b सरहु अष्टापदः. 6 b त णू ण वु तनूनपात् अग्निः.

32. 4 a क णि र° शब्दवत्य.

घत्ता—महु संणिहि आउ सुलोयणए अत्थि भवणि घडवासिउ ॥  
हउं लग्गउं तुह भुयबलमयहो पुव्वमेव आसासिउ ॥ ३२ ॥

33

जेण बलेण जिच्चु घणमंडलु  
तं बलु वेक्खह दावहि अम्हहं  
वेहाविउ आवत्तच्चिलायहिं  
तहिं अवसरि सेंदूरकणारुण  
अट्ट अट्टचंदेहिं आवाहिय  
एक्कु दंति जुवराणं ढोइउ  
हयअरि करिवरेण ते दंतहिं  
सरससमुच्छलंतपलखंडहिं

तोसिउ ससुरु सग्गि आहंडलु ।  
अज्जु परिक्ख करेवी तुम्हहं ।  
तुहुं वि बप्प जुज्झहि सहुं रायहिं ।  
जयवारणहु विलग्गा वारण ।  
कक्खरिक्खगेजावलि सोहिय । 5  
णं इदं अइरावउ चोइउ ।  
णिवडियणवविललंतहिं अंतहिं ।  
दोखंडीहवंनददसौंडहिं ।

घत्ता—गय पाडिय सूडिय णं सिहरि घरणिवीदु आकंपिउ ॥

देवांसुरहिं णहि संठियहिं जय जय जयणिव जंपिउ ॥ ३३ ॥

10

34

एत्तहि रणु कयसूरत्थवणउं  
एत्तहि वीरहं वियलिउ लोहिउ  
एत्तहि कालउ गयमयविब्भमु  
एत्तहि करिमोत्तियइं विहत्तइं  
एत्तहि जयणरवइजसु धवलउ  
एत्तहि जोहविमुक्कइं चक्कइं  
कवणु णिसागमु किं किर तहिं रणु  
ता चप्पिवि मंतिहिं ओसारिउ  
तुमुलरंणै णिरु रोसाउण्णइं

एत्तहि जायउं सूरत्थवणउं ।  
एत्तहि जगु संझारुइसोहिउ ।  
एत्तहि पसरइ मंदु तमीतमु ।  
एत्तहि उग्गमियइं णक्खत्तइं ।  
एत्तहि धावइ ससियरमेलउ । 6  
एत्तहि विरहें रडियइं चक्कइं ।  
एउ ण वुज्झइ जुज्झइ भडयणु ।  
रयणिहि जुज्झमाणु विणिवारिउ ।  
तेत्थु जि वसियइं वेण्णि वि सेण्णइं ।

७ MBK आरोसिउ.

33. १ MB सिंदूर°, २ MB अट्टचंदेहिं, ३ MB अवराइउ ४ MB देवासुर.

34. १ MB संझारुणु सोहिउ, २ MB रोसाइण्णइ.

33. 5 b °गेजावलि° वरप्राभि., 7 b अंत हिं अन्त्रैः.

34. 3 b त मी त मु रात्र्या अन्धकारः.

घत्ता—रसिहिं रणरंगि भवंतियप गरवइकज्जि समत्तउ ॥

10

वरिणिइ पिउ सहियहिं दावियउ सरसयणयलि पसुत्तउ ॥ ३४ ॥

## 35

का वि भणइ ईसावसरुट्टी  
तक्कयरत्तहु हउं किंह रुच्चमि  
का वि भणइ जं मँइ पडिवण्णउं  
जं मँइ चिरु दंतग्गहिं खंडिउं  
का वि भणइ पिय करु मा ढोयहि  
पट्टालंकियसीसहु लक्खणु  
जो मँइ वप्पिउ आसि थणंतहिं  
पणर्यसणिद्धइं पणइणिंजाणइं  
का वि भणइ जाणवि तणुथाणुहि  
णाहँ अंतंणिबंधणु दिण्णउं  
को वि दुवासखुत्तरिउच्चकउ  
केण वि संचिय णिवरिणहारी  
लइय भिडेप्पिणु दोहिं वि हत्थहिं

खग्गधार पियहियइ पइट्टी ।  
हयविहि प्रौणहिं कारं ण मुच्चमि ।  
पिय तं हियउ सिवहिं किं दिण्णउं ।  
अहरँबिबु तं पक्खिणिखंडिउ ।  
ओसर कावालयिं किं जार्यहि । 5  
मं छुड तुहुं णिग्घेण दुवियक्खणु ।  
मो रूद्धउ उरु कविवरदंतहिं ।  
का वि सणाहहु खंडइ वीणइं ।  
आणिय पासि परोहिं णिहाणुहि ।  
असिधेणुयइ साहुँ लइ चिण्णउं । 10  
उप्परि रहहु महारहु थकउ ।  
रयणकोडि मायंगहु केरी ।  
भणु किं ण कियउ पत्थु समत्थहिं ।

घत्ता—रिउ मारिवि पच्छइ उवसमिवि मेह्लिवि ससरु सरासणु ॥

गयवरसंथारइ को वि मुउ करिवि वीरँसंगासणु ॥ ३५ ॥

15

35. १ MB किं रुच्चमि २ MB पाणहिं. ३ M मुहु. B महु. ४ K चट्टिउं. ५ MB अहरबिबु पक्खिणिहिं विहंडिउ. ६ MBK जोयहि. ७ K णिरिष. ८ MB रुद्धउ अरिवरकरिदंतहिं. ९ MB °समिद्धइं. १० MB °ठाणइं. ११ T णिभाणुहे १२ MB अज णिबंधणु. १३ MB मीसु लइ छिण्णउं. १४ MB वीर-संगासणु.

10 समत्तउ समाप्तो मृतः. 11 पिउ प्रियः.

35. 2. a तक्कयरत्तहु खग्गधाराकृत्तरक्तस्य. 9. a तणुथाणुहि शरीरस्तम्भस्य; b णिहाणुहि पुरुषादित्यस्य. 10 b सासु निःश्वासः.

36

पुणु आमिणीगमणि	दिणमणिसमुग्गमणि ।	
भेरीणिणद्दाहं	कयजयविमद्दाहं ।	
जममुहरउद्दाहं	हैरियंदणद्दाहं ।	
गज्जिह्ममैयंगाहं	हिसियतुरंगाहं ।	
वाहियरहोहाहं	सणद्धजोहाहं ।	5
चलवलियविंधाहं	धूलीरयंधाहं ।	
किंलिलिगिलियणिसियरहं	जिगिजिगियअसिबरहं ।	
कंपियधंरग्गाहं	सेण्णाहं लग्गाहं ।	
ता संदणत्थस्स	आहवसमत्थस्स ।	
णरसिर लुणंतस्स	करि हरि हणंतस्स ।	10
विह्वियदणुयस्स	लच्छिमइतणुयस्स ।	
परिवत्तसंकेहिं	वसुंसमससंकेहिं ।	
उब्भूयगावेण	विज्जापहावेण ।	
परपाणपहरणहं	छिण्णाहं पहरणहं ।	
कौताहं कंपैणहं	मुसलाहं घणघणहं ।	15
चावाहं चक्काहं	चूरेवि मुक्काहं ।	
ता गलियसत्थेण	चित्ते महत्थेण ।	
जयणामराएण	इच्छियसहाएण ।	
जियसरयमेहम्मि	जो आसि गेहम्मि ।	
सिद्धो सउण्णेण	घर्णेण वीरेण ।	20
अहिराउ संभरिउ	सो झत्ति अवयरिउ ।	
फणिवासु रणि तिव्वु	अद्धेदुसरु दिव्वु ।	
ढोएवि खणि तासु	गउ णाइणीवासु ।	

36; १ M हरियव°. २ MB °मइंगाहं. ३ MB किलिकिलिय°. ४ MB °वयग्गाहं. ५ MBK परिवत्त°. ६ B omits this foot. ७ MB कप्पणहं. ८ MB वितियमहत्थेण. ९ MB वीरेण घण्णेण; G वम्मेण वीरेण.

36 3 b हृरियदणद्दाहं हरिचन्दनाद्दाणि. 11 b लच्छिमइतणुयस्स जयस्यत्थेः. 12 वसुंसमससंकेहिं अष्टमिर्विंधाधरेः. 20 a सउण्णेण स्वपुण्येन. 22 फणिवासु नागपादाः.

ता विजयवंतेण	ससिभासपुत्तेण ।	
जाला मुयंतेण	जालियदियंतेण ।	25
हुयवहसमाणेण	अंहिदिण्णबाणेण ।	
कूबरधुरासहिअ	णिहहिवि रंणि रहिय ।	
दरमलियधंयसंढि	णच्चवियारिउं कांढि ।	
परिभमियगिद्धउलि	पइसरिवि भडतुमुलि ।	
अट्ट वि विट्ट तेण	बद्धा तुरंतेण ।	80
कूरारितासेण	दढणायवासेण ।	
धरिओ रुसारुणउ	नक्कवइपिउं तणउ ।	

घन्ता—जिणु तायताउ पिउ रंधिवइ तो वि णिबंधणु पत्तउ ॥

उइं माइ कुमांरु णराहिवेण दुक्कियफलु किह भुत्तउ ॥ ३६ ॥

## 37

एम्ब चवंतिहिं सुरवरगणियहिं	वण्णिउं जयसाहसु घणथणियहिं ।	
घल्लिउ कुसुमपयरु सुरणियरं	गाइउं णं रुणुरुणिएं भमरं ।	
जयविलासु जयरायहु केरउ	दइवहु तणउं चारु विवरेरउ ।	
रहणिहियउ कुमारु विच्छायउ	करकलियंकुसचोइयणीयउ ।	
जलहरसरु पइट्टु ससुरयघरि	विजयाणंडु पवट्टिउ पुरवरि ।	5
तक्खणि सयल वि परभवतत्तिइ	गय जिणभवणहु परमइ भत्तिइ ।	
जम्मावासपासविवरंमुहु	वंदिउ अरुहु तिजगपुज्जारुहु ।	
मिलियणरिंदहिं मउलियपाणिहिं	मुहकुहरुग्गयसुललियवाणिहिं ।	
बहुमिच्छत्तबीयउप्पणणउ	मोहविसालमूलु वित्थिण्णउ ।	
चउगइखंधु सुहासासाहउ	पुत्तकलत्तलुलियपारोहउ ।	10

१० B अहदिण्ण°. ११ MB रहरहिय. १२ धरसडि. १३ M रिउखंडि. १४ MB °णायपासेण. १५ MB °पिय. १६ M चक्कवइ. १८ B एवमाइ. १८ K कुमार.

37. १ MB °णाइउ. २ MB पवट्टिउ. ३ K °मूल.

24 b ससि भा स° सोमप्रभ., 27 a कूबर° रथमुखम्, b रहिय सारथिम. 30. a अट्ट वि विट्ट अट्टापि चन्दा विथाधरस्वामिनः. 34 उइ माइ पइय मातः.

37. 3 b चारु चेष्टा. 4 b °णायउ गजः.

गहियमुक्कबहुविहतणुपत्तउ  
सोक्कल्लदुक्कल्लफलसिरिसंपण्णउ

पुण्णपावकुसुमेहिं णिउत्तउ ।  
इंदियपक्खिउलहिं पड्डिवण्णउ ।

घत्ता—इय भवतरु ज्ञाणहुयासणेण पइं दड्डुउ परमेसर ॥

जिण जम्मि जम्मि महुं तुहुं सरणु जँय जय जियवम्मीसर ॥ ३७ ॥

38

अक्ककित्तिदुज्जयजयरायहं  
पयहुं मरइ मज्झि जइ एकु वि  
तो वि णिवित्ति मज्झु आहाग्हु  
इय चिंतंति पुत्ति संभाविय  
तुह सइ मामत्थे असमंजस  
हइ संति हांउ किं ज्ञायहि  
जणवयणु णिसुणेयि कुमारिइ  
सिरिणाहहु मिरि व्व आवग्गी  
जाइवि पासि कुमारहु णेहं  
जउ साकं पुणु पायहिं पड्डियउ  
अम्हइं णर तुहुं णरपरमेसर  
अम्हइं णालिणायर तुहुं दिणयर  
अणुपालियहं काइं रुसिज्जइ

महु कारणि उच्चाइयघायहं ।  
पच्छइ इच्छइ जइ मइं सकु वि ।  
लच्छिहि कुच्छियकुणिमसरीरहु ।  
लंबियकर तापं बोल्लायिय ।  
रणि उव्वरिय महीस महाजस । 5  
सुंदरि करपल्लव उच्चायहि ।  
णियमु विसज्जिउ कामकिसोरिइ ।  
जयरायहु करपंकइ लग्गी ।  
महिणिहित्तदंढासणदेहं ।  
भासइ सामिभँत्तिभरणमियउ । 10  
अम्हइं पक्खि देव तुहुं सुरतरु ।  
अम्हइं कुवलयसर तुहुं ससहरु ।  
अभयपदाणु सभिच्चहं दिज्जइ ।

घत्ता—इय वयणहिं सो भरहंगरुहु मच्छरु माणु मुयाविउ ॥

लच्छीमइवहिणिसुलोयणहे पुप्फयंतु परिणाविउ ॥ ३८ ॥

15

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए

महाभव्यभरहाणुमण्णिणए महाकव्वे सुलोयणासयंवरविवाहो णाम

अट्टावीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २८ ॥

॥ संधि ॥ २८ ॥

५ MB जय णिजियवम्मेसर.

38. १ MB जइ मइं इच्छइ. २ MB संधि ३ MB साकंपणु, K साकंपणु<sup>१</sup> ४ MB भावइ. ५ M भत्तिभरणडियउ; B<sup>०</sup> तत्तिभरणडियउ. ५ MB वयणे.

12 b पड्डिवण्णउ आभ्रित..

38. 5 a असमंजस कोपाविष्टा.. 8 a सिरिणा हहु विष्णो..

## XXIX

जे रुद्धा संगरि बद्धा ते णिव भेल्लिवि पुज्जिय ॥

पियवयणहिं वत्थाहरणहिं णियणियपुरहं विसज्जिय ॥ ध्रुवकं ॥

1

किह हउं संपत्तउ बंधणारु	जा सोयइ अप्पउ णिवकुमार ।
ता पभणितं तेणाकंपणेण	ज्जिणचरणलीणणिच्चलमणेण ।
तुहुं बद्धउ णं णिववंसि चिंधु	तुहुं बद्धउ णं सुयणोहबंधु । 5
तुहुं बद्धउ णं मायंगदंतु	तुहुं बद्धउ णं सरहलु महंतु ।
तुहुं बद्धउ णं सासेण बीउ	तुहुं बद्धउ णं पुण्णेण जीउ ।
तुहुं बद्धउ णं सिरिमणिविलासु	तुहुं बद्धउ णं सुकहाविसेसु ।
हेलइ जपण जयराइपण	तुहुं बद्धउ णं रसेवाइपण ।
इयरह किं अम्हहं सहलु होसि	अण्णापं दूंसिउ खयहु जासि । 10
इय भणिवि तेण कयदेहदित्ति	णियपुरहु विसैज्जिउ अक्ककित्ति ।

घत्ता—घरु जाइवि लज्ज पमाइवि सिरु पयजुयलइ दोईउ ॥

ते भरहहु अरिहरिसरहहु कह व कह व मुहुं जोईउ ॥ १ ॥

B give, at the commencement of this Samdhi, the following stanzas:-

णाइन्दसुरिन्दणरिन्दवन्दिया जणियजणमणाणन्दा ।

सिरिकुसुमदसणकइमुहणिवसिणी जयइ वाईसी ॥ १ ॥

तन्त्रीवाधैरनिन्यैर्वरकविरचितैर्गद्यपद्यैरनेकै-

कान्तं कुन्दावदातं दिशि दिशि च यशो यस्य गीतं सुरीषैः ।

काले तृष्णाकराले कालिमलमलितेऽप्यस्य त्रिद्याप्रियो यः

सोऽयं संसारसारः प्रियसखि भरतो भाति भूमण्डलेऽस्मिन् ॥ २ ॥

GK do not give the stanzas here but at the commencement of Samdhi XXX. See note on Samdhi XXX.

1. B बुद्धा. २ MB पुग्हु. ३ MP सुदिणेइबंधु. ४ M सरयणु, BT सरयलु. ५ MBK रडु वाइएण. ६ MB बद्धउ. ७ M विसज्जिय. ८ MB दोइयउ. ९ MB जोइयउ.

1. 3 a बंधणारु बन्धनम्. 5 b सुयणो ह<sup>०</sup> सुहदाम्. 6 b सरहलु काण्डफलम्. 7 a सासेण धान्येन. 9 b रसवाइएण धाहुवादिना. 10 a इयरह अन्यथा.

2

लज्जंतु वि तापं सो पउत्तु  
 वसणेसु रमइ खलवयेणु सुणइ  
 जो पइउ सो वरं कहिं वि जाउ  
 महु चरपुरिसहिं दुहंतदुरिउ  
 होपेण सुदुण्णयगारएण  
 गुरुकोवेँ सिसु जाणंति मग्गु  
 गुरुकोवेँ को वि ण खयहु जाइ  
 गुरुवयणइं कहुयइं जाइं जाइं  
 लग्गाइं ण सुइसुसिरंति जाहं  
 लइ दिज्जमि हउं दिइंतु एत्थु

वरं गलउ गब्भु मा होउ पुत्तु ।  
 अविवेयभाउ सयणाइं हणइ ।  
 मा करउ पयहि परिणहु ताउ ।  
 पयहु केरउ वज्जरिउं चरिउं ।  
 ता वित्तिउ तेण कुमारएण । 5  
 गुरुकोवेँ जैगि सिज्जइ ति वग्गु ।  
 गुरुकोवेँ संपय घरहु पइ ।  
 परिणामि सुपत्थइं ताइं ताइं ।  
 जिम परिहउ ति म धुउ मरणु ताहं ।  
 लंघियउ जेण गुरुसुयपयत्थु । 10

घत्ता—जयवंते सुप्पहकंते तो पेसिउ गुणवंतउ ॥

आवेप्पिणु पहु पणवेप्पिणु पमणइ सुमइमहंतउ ॥ २ ॥

3

भो देव कसणसियतंबिराहं  
 किं तुह णवणिहिवइ पाहुडेण  
 लइ भसितो वि णियकिंकराहं  
 जयविजयाकंपणपत्थिवाहं  
 पहिलउ जि दोसु दीहरमुयासु  
 बीयउ जं कोक्किउ वरणिहाउ  
 तइयउ जं जइ णिक्खित्त माल  
 परघांरेणि हरंतहु रोसणडिय

लइ रयणइं लइ पवरंबराइं ।  
 किं किर जलहिहि पाणियघडेण ।  
 तुह पायपोमलालियसिराहं ।  
 विण्णविउ णिसुणि णिव अवणिवाहं ।  
 जं दिण्णी सुय णउ तुह सुयासु । 5  
 दावियउ सयंवरविहिणिओउ ।  
 रइलालस लग्गी तासु बाल ।  
 चोत्थउ तुह तणयहु समरि भिडिय ।

2. १ MB वरु. २ MB °वयण. ३ M किर. ४ G परिणयहु. ५ B जाएण. ६ K सदुण्णय°. ७ धुउ सिज्जइ.

3. १ MB °णिहाउ.

2. 6 b ति वग्गु धर्मार्थकामाः. 8 b सु पत्थइं सुपथ्यानि. 9 a सुइसुसिरंति श्रोत्रविवरमप्ये.

3. 2 a ण व हि व इ हे नवनिधिपते. 3 a भसि तां वि भक्तितोऽपि. 4 b अवणिवाहं अवनिपानां राङ्गाम्. 6 b °णिओउ नियोगः.



पंचमउ दोसु बद्धउ कुमार  
इय दोहा दोसपरंपराहं  
तं देव पद्मदा तुज्जु सरणु  
किं मारणु किं भणु किं किलेसु  
हो हउं पडिवज्जमि कासिराउ  
जउं पुणुं महु दाहिणु बाहुदंड  
उवयरइ दप्प संगामकालि

णिउ णियणयरहु रणैरंगवीरु ।  
जं ण वि मुच्चहुं अज्ज वि घराहं । 10  
किं दंडु पर्यु सव्वस्सहरणु ।  
तं णिसुणिवि जंपइ मेइणीसु ।  
पवसियइ ताइ महु सो जि ताउ ।  
जं सो तं चकु ण वरुं दंडु ।  
उल्ललियगिद्धखदंतमालि । 15

घत्ता—बलगव्धे रोसें तिच्चै जो जणवउ संघट्टइ ॥

सुउ दंडवि सो सहं खंडवि जो उप्पहिण पयट्टइ ॥ ३ ॥

4

इय कट्टिवि तेण पट्टविउ मंति  
णरवइ मण्णइ पइं पिउसमाणु  
महु अवर विण्णि भुयदंड भणइ  
रूसइ सवोसि गुणवंति महइ  
बंगउ किउं पुत्तहु दप्पसाडु  
तं मज्जु णिरारिउ डहइ अंगु  
ता जयकंपण हरिसियसुधाम  
घरणिहियमंतिअप्पाहिपण  
अणवरयणत्रियजिणवरपपण  
अण्णहिं दिणि आणंदियजपण

गउ सो घोसइ णियपहुहि संति ।  
जय विजय वे वि रिउतिमिरमाणु ।  
तुम्हागउ माणुंसु सुट्टु गणइ ।  
को भरहहु केरी लील वहइ । 5  
जं कण्ण देवि विरइयउ चाहु ।  
णउ किज्जइ खलि संमाणसंगु ।  
कुरुचंसणाह वंसाहिराम ।  
दुज्जयचिन्दायसप्पाहिपण ।  
अणुहुंजियणरवइसंपपण ।  
आउच्छिउ णियम्मसुरउ जपण । 10

घत्ता— तुह गोट्टिहि जिणवरदिट्टिहि माम विरइ किं किज्जइ ॥

अविणम्मै तो वि सकम्मै जीउ णियट्टिवि णिज्जइ ॥ ४ ॥

२ K रणरंगवीरु. ३ MB तणुकिलेमु. ४ B जमु. ५ MB महु पुणु. ६ MBK वज्जदंडु. ७ M उवरइ.

4. १ G माणु सुट्टु. २ MB रमइ. ३ MB गमइ. ४ MB पुत्तहु किउ. ५ M वरदिट्टुहे.

10 a दोहा द्रोहिणः. 15 b गिद्ध खदंतमालि गृध्रैर्भक्षिता अन्त्रश्रेणय यस्मिन्. 16 संघट्टइ पीडयति.

4. 5 a दप्पसाडु मानभङ्गः; b देवि दत्ता. 12 अविणम्मै निष्ठुरेण.

## 5

को विसहइ सुहिविच्छोयताउ  
उम्मुक्क सुयावरु ससुरएण  
णहु पिहिउ गिल्ल महि करिमएण  
कय जल्लहिवलय चलवलियणीर  
उट्टिय गहीर भेरीणिणाय  
गच्छंतु संतु सो समियसत्तु  
णियणियदूसावासाहिं सउण्ण  
पडकुडिहि महामहु सुरसमाणु

परियाणवि कज्जवियप्पभाउ ।  
तें जंतें हरिखुरस्यरण ।  
चलवल्लिउ खल्लिउ धयवहु धएण ।  
थिय विसहर भरंभयव्लिय धीरें ।  
आकांपिय ककुहणिवास णाय । 5  
दियहहिं गंगाणइतीरं पत्तु ।  
हेमंगयाइ सयल वि णिसण्ण ।  
थिउ राणउ गंग पलोयमाणु ।

घत्ता—सविहंगहि दिट्ठइं गंगहि छणससिरविपडिविबइं ॥

णं वेल्लिहि अमरसुहेल्लिहि कुसुमइं पंडुरतंबइं ॥ ५ ॥

10

## 6

आमेल्लिवि खंधावारु तेत्थु  
साकेयहु जाइवि भुवणसारि  
पडिहारें पइसारिउ दवट्टि  
विसहरणरखेयरविहियसेव  
ता दिण्ण दिट्टि णाहें विसाल  
पसरंतपणयरससायरेण  
णं कलियइ णेहमहीरुहासु  
उवाविट्टु तुट्ठुं संमाणु कियउ

कइवयभडेहिं सह महिमहत्यु ।  
थिउ पंजलियरु णरवइदुवारि ।  
विण्णविउ णवेप्पिणु चक्कवट्टि ।  
जउ पणवइ एत्तहि पेक्खु देव । 5  
ससिवियसिय णं कंदोट्टमाल ।  
मुहुं जोइवि सइं परमेसरेण ।  
अंगुलियइ दाविउ पीढु तासु ।  
पोरिसु परमुण्णइं सैहहि णियउ ।

5. १ B कज्ज. २ MB add after this: पडिबोहिउ बुहमण्णे वरेण. ३ MB add after this: पडिपेळिउ सदणु संदणेण. ४ M भयभर°; B पयभर°. ५ MB धीर. ६ MBK ककुहणिवासी. ७ MB °तीरु.

6. १ MB सुट्टु. २ MB सयहि.

5. 3 b गिल्ल आर्द्रा. 6 b ककुहणिवासणाय दिग्गजाः. 9 a महामहु महातेजाः

6. 1 b महिमहत्यु मयां महार्यो महान् महान्तो वा अर्थधर्मादयो यस्य. 3 a दवट्टि शीघ्रम् 5 b कंदोट्ट° नीलोत्पलम्. 7 a णेहमहीरुहासु स्वहस्तसंवर्यितवृक्षस्य कलिकया इव अडुल्या. 8 b सहहि सभायाम्

णउ जलणहु पासिउ अवरु उणहु  
गयणंगणाउ णउ अवरु गरुउ  
जिणु मेळिवि को तेलोक्कसामि

परमाणुयाउ णउ अवरु सणहु ।  
कामाउराउ णउ अवरु सरुउ । 10  
पइं मेळिवि को सुहडग्गामि ।

घत्ता—जो दुँक्खिउ सो परिरेक्खिउ जं दुँहुँहु तं लद्धउं ।  
पइं होंते रणि पहरंते जय महुं काई ण सिद्धउं ॥ ६ ॥

## 7

इय भणिवि विसज्जिउ जउ महंतु  
चडियउ वेयडुमहाकरिदि  
चमु चाँलिय पुणु दिण्णउं पयाणु  
जोयवि गंगहि सारसहं जुयलु  
जोयवि गंगहि सुललियतरंग  
जोइवि गंगहि आवेत्तभवणु  
जोयवि गंगहि पप्फुल्लकमलु  
जोइवि गंगहि वियरंत मच्छ  
जोइवि गंगहि मोत्तियहु पंति  
जोइवि गंगहि मत्तालिमाल

रापं गउ णियसिमिँहु तुरंतु ।  
णं दिणयरु उययमहीहरिदि ।  
पत्तउ सुरसरिजलमज्झठाणु ।  
जोयइ कंतहि धणकलसजुयलु ।  
जोयइ कंतहि तिबलीतरंग । 5  
जोयइ कंतहि वरणाहिरमणु ।  
जोयइ कंतहि पिउ वयणकमलु ।  
जोयइ कंतहि चलदीहरच्छ ।  
जोयइ कंतहि सियदसणपंति ।  
जोयइ कंतहि धम्मेल्ल णलि । 10

घत्ता—णियगेहिणि वम्महवाहिणि देवि सुलोयण जेही ॥  
मंदाइणि जर्गसुहदाइणि दीसइ रापं तेही ॥ ७ ॥

३ M दुदिपउ. ४ MB पाडेरक्खिउ. ५ M दुलहुउ; B दुलहु.

7. १ MB °सिविहु. २ MB चलिय पुणु वि दिण्णउं. ३ MB जोइउ. ४ MB जोइवि. ५ MB भावत्तु भवणु ७ B णं सुहदाइणि.

10 ७ सरुउ सरोगः

7. 11 वम्महवाहिणि कामनदी, 12 मंदाइणि गङ्गा.

8

आहंङलमयगलसरिसलीलु  
 सहं बहुवरेण पर्यलंतदाणु  
 दहि पियदुहकयअवलोयणाइ  
 आलम्गपुच्छकच्छंतरालि  
 अवलोइवि रुइओहामियक  
 पत्थंतरि थरहरियासणाइ  
 वणदेविइ वारियवइरिणीइ  
 णं घणसंपत्तिइ कामभोउ  
 णि.वेसँद्वे णिउ सुरसरिहि तूहु  
 राणि वणि जलि जलणि समाइएण

तहि अवसरि मंयहे धरिउ पीलु ।  
 बहुजलत्रिलंति वोलिज्जमाणु ।  
 धप्पाणउं धिचु सुलोयणाइ । 5  
 हाहारववड्डियगरुयरोलि ।  
 हेमंगयपमुह कुमार दुक्क ।  
 देवंगवत्थसुरिणिवसणाइ ।  
 करि कड्डिउ सुरसरितारिणीइ ।  
 उद्धरिउ अहिसइ णं तिलोउ ।  
 हरिसँ णञ्चिउ किंकरसमूहु ।  
 रक्खिज्जइ पुरिसु पुराइएण । 10

घत्ता—वेउन्विउ घरु मणिणिम्मिउ चारुतीरि स्रुयसेविए ॥

हरिऊढइ थविवि सुपीढइ ण्हविय सुलोयण देविए ॥ ८ ॥

9

दिण्णइं सुरजोग्गइं णिवसणाइं  
 दिण्णी वियसिय मंदारमाल  
 पभणइ का तुहुं करि केण धरिउ  
 भणु भणु सुरसुंदरि सुयणवंदि  
 विंझउरिकडइ विंझइरि अत्थि  
 महपवि पियंगुसिरी सुरुय  
 परियाणवि तापं तुह पहाउ

दिण्णइं अर्णण्णइं भूसणाइं ।  
 सहं णरवरेण विभइय बाल ।  
 किं तारिये सरि सो कवणु तरिउ ।  
 ता भणइ सा वि हिंडियपुलिंदि । 5  
 पइ विंझकेउ बलकलियहत्थि ।  
 हउं विंझसिरी णामेण धूय ।  
 सिक्खहुं णीसेसु कलाकलाउ ।

8. १ MB हारें. २ M पलयंत° ३ MB read this line as 5. ४ MB read this line as 3. ५ MB °णियसणाइ. ६ MB तीरिणीइ. ७ GK णिवसद्वे but gloss निमेषार्थः. ८ MB सुयसेविए.

9. १ B अण्णइं. २ MB सहं. ३ MB तारिउ. ४ MB विंझइरि°.

8. 3 a दहि हदे. 9 a तूहु रोधस्तटम्. 10 b पुराइएण पूर्वार्जितेन कर्मणा. 11 सुयसेविए श्रीसेविते.

9. 8 b तरिउ तारकः.

हउं तुज्जु समप्पिय हे वयंसि  
णंदणवणि विउलि वसंततिलइ  
असिआउसाइ वंजणविसिट्ठ

संभेरसि ण कीलहुं अं गयासि ।  
हउं दट्ठी सप्पे वेह्लिणिलइ ।  
पइं परम मंत महु पंच सिट्ठ । 10

घत्ता—ते णिसुणिवि दुक्किउ णिहुणिवि पही लद्ध विहूई ॥

सुरणीइइ गंगाकूइइ गंगादेवय इई ॥ ९ ॥

## 10

कीलंती कुच्चियविसहरेण  
जा पहय सरलदलकोमलेण  
जा णासंती अवरहिं णरेहिं  
सा इईं णिसुणहि हलि पियालि  
ओलक्खिवि जउ वहराणिबंधु  
मयरीइ हवेप्पिणु कूरिमाइ  
मइं जाणित्तं आसणकंपणेण  
सा किं हम्मइ खलकालियाइ  
इय चित्तिवि हउं अवयरिय जाम  
मइं उत्तारित्तं सिंधुरु बलेण

सह सरसें णाहें णिब्भरेण ।  
तुइं कंतें कररत्तुपलेण ।  
मुसुमूरिय दंडहिं पत्थरेहिं ।  
जलदेवय णामे पत्थु कालि । 6  
कुंजरु कक्किउ कुंजाइ ताइ ।  
जा जणिय मयच्छि अकंपणेण ।  
मुणिमइ किं छिप्पइ कालियाइ ।  
वहरिणि गय णासिवि कहिं वि ताम ।  
तुह इयउ सुहु सुक्कियफलेण । 10

घत्ता--मलु तुट्ठइ बुद्धि पयट्ठइ विस वसुधारहिं दुब्भइ ॥

रित्तं णासइ णिहिं घरि पइसइ धम्मं कारं ण लब्भइ ॥ १० ॥

## 11

इय थुणिवि सुलोयण चंदहासु  
पुणु चोइवि वारणु णं गिरिट्ठ

गय गंगादेवय णियणिसासु ।  
गउ गयउरु पत्तउ जयणरिट्ठ ।

५ MB संभरिसि.

10. १ MB णिसुणहि इई. २ MB कोवेण.

10 a वंजण विसिट्ठ व्यञ्जनानि अक्षराणि विशिष्टानि येषु; b परममंत पञ्च परमेष्ठिनः.

10. 3 b मुसुमूरिय मारिता. 4 a पियालि प्रियसखि. 5 b कालिमाइ पापेन कालुष्येण.

बहुकालपरिट्टिउ सुहिण जाव  
 बहुपेम्मसोक्खसंजोयणाइ  
 अच्छइ अत्थाणि णिसण्णु जाम  
 हा देवि पहावइ कहिं भणंतु  
 हा णाह णाह विलवंतियाहिं  
 सिंविउ चंदणमीसियजलेण  
 पारावयमिहुणालोयणेण  
 हा रइवर हा रइवर रसंति  
 \* पारावइ हउं रंविसेण आसि  
 तुहुं रइवरु पारावउ ण भंति

सत्तंगु रज्जु पालंतु ताव ।  
 पक्कहिं दिणि समउ सुलोयणाइ ।  
 णहि खयरमिहुणु तं दिट्ठु ताम । 6  
 मुच्छिउ पहु जम्मंतर सरंतु ।  
 कुलउत्तियपणियाइयतियाहिं ।  
 आसासिउ चलचमराणिलेण ।  
 मुच्छिय पिय पणयासायणेण ।  
 उट्टिय पुणरवि सा णीससंति । 10  
 चिरभवकुलउत्ती तुज्झु दासि ।  
 लग्गी पिथंणीयहि इय भणंति ।

यत्ता—कहिं णिववरु कहिं सो रइवरु कवडं वल्लहु किज्जइ ॥

जयपत्तिहि भणिउं सवत्तिहि कइयवेण जणु खज्जइ ॥ ११ ॥

## 12

सोमप्पहपुत्ते णायरेण  
 जाणंतेण वि सुहमायणेण  
 पुच्छंतहु कंतहु सुइरु विचु  
 इह जंबुदीवि सुरदिसिविदेहि  
 वेयड्ढमहीहरणियड्ढेसि  
 सोहापुरवरि वयंपालु राउ  
 तहु वंदियपयपंकरुहरेणु  
 अडइसिरिघरिणिआलिंगियंगु  
 हिंउंतु कहिं मि लक्खणपसत्थु

जणमणसंसयहरणायरेण ।  
 पुच्छिय पिय अवहिविलोयणेण ।  
 वज्जरइ सुलोयण णियवरिचु ।  
 पुक्खलवइविसइ विलांसगेहि । 6  
 तहिं धणयमालवणंतवासि ।  
 देवसिरिदेविसंजणियराउ ।  
 सामंतु पसिद्धउ सत्तिसेणु ।  
 रेहइ णं रइभूसिउ अणंगु ।  
 णवरेकु बालु संपचु तेत्थु ।

11. १ MB omit this line. २ MBK जम्मंतर. ३ MT पणियंगण°, B पणयगण°. ४ B मुच्छाविय पणया°. ५ MB रइसेण. ६ MB पियगीवहि.

12. १ MK °भायरेण. २ MB विसालगेहि. ३ MB णयपालु. ४ MB अडयसिरि.

11. 7b पणियाइयतियाहिं अवरुद्धादिपण्यत्तीभिः. 9 b पणयासायणेण ज्ञेहानुभवेन. 12 b पियगीयहि त्रियस्य प्रीवायाम्. 14 कइयवेण कपटेन वैशिकेन.

12, 1. a णायरेण चतुरेण. 2 b अवहिविलोयणेण जातिस्मरणादुत्पन्नावधिचक्षुषा. 8 a अडइ-सिरि° अटवीभीः.

सामंतै पुच्छिउ भणु कुमार                      तुहुं कासु पुत्तु सुसररीरमार ।      10  
किं किर वियरहि महि सेसवेण                      तं वयणु सुणेप्पिणु भणिउं तेण ।

घत्ता—उप्पेक्खिउ भवणु ण रक्खिउ गउ हउं सिसु हकारिउ ॥  
पर मायप णिडुरवायप मंदिराउ णीसारिउ ॥ १२ ॥

## 13

महु वप्प सिसुत्तणि मुइय माय                      विणु मायइ डिंभहु कवण छाया ।  
भूयत्थे तापण वि ण दिट्ठु                      हउं तुम्हारउ पुरवरु पइट्ठु ।  
ता तेण सत्तिसेणे अगाउ                      पाँडेवणु पुत्तु सो सच्चदेउ ।  
पंचहिं वि कहिउ णिइलियकम्मु                      अमियमइअणंतमईहि घम्मु ।  
रापं वज्जिउ महु मज्जु मंसु                      राणियइ तेम तं किउ ससंसु ।      5  
सामंतै पुणु अणगारवेल                      पालिय जिणरायहु तणिय वेल ।  
वणसिरियइ किउ दुक्कियविरामु                      तत्तु अणुपवडुकल्लाणणामु ।  
सा सिसु मयच्छि गुरुहार जाय                      संचलिय तेत्थु जहिं वसइ माय ।  
परिमुक्कु सिविरु संरविउलकूलि                      सह पइणा वसइ वणंतरालि ।  
जा तावेत्तहि सुहिसोक्खसयरि                      जणणहरि मुणालवइ स्ति णयरि ।      10  
कणयसिरि वणिडु सुकेउ कंतु                      भवदेउ पुत्तु णं कलिकयंतु ।  
उट्टेउ दुम्महु सो जि भणिउ                      पुरवरि अण्णेक्कु वि तहिं जि वणिउ ।

घत्ता—सिरियत्तउ पिउपयभत्तउ विमलमिरी तहु गेहिणि ॥  
सुहकारिणि सुयमणहारिणि रइवेया रइवाहिणि ॥ १३ ॥

13. १ MB सरविमलकूलि. २ M उट्टेउ.

11, a से सवे ण बाल्ये.

13. 1 b छाया शोभा. 6 a अणगारवेल अनगारवेलार्या भोजनवेलाकरत्वम्. 7 b अणुपवडु-  
कला ण शुकुपक्षे प्रतिपत्पञ्चम्यष्टमीचतुर्दशीपौर्णमासीषु भूहारपूर्णभाजनानि सम्यग्दृष्टिभ्यो विधिना देयानि; पूर्णेषु पञ्चसु  
वर्षेषु पथकल्याणीप्रतिमां प्रतिष्ठाप्य संघभोजनं कर्तव्यमिति; b वेल आज्ञा 10 a °सोक्ख स य रि सौख्यघत-  
दायक.

## 14

विमलसिरिभाउ वणि विहयसोउ  
जिणयत्त घरिणि णंदणु सुकंतु  
ता ससुराणिवासु दुवारु धरिवि  
जइ हउं णावेसमि तावरासु  
णिइविणु ण गिणहमि अज्जु माम  
चक्कवइसंख वळ्ळर पउण्ण  
पच्चारिय सँक्सि णिबंधु मुक्कु  
णिस्सिसु तिक्खणिस्सिसवंतु  
मंडेवि णिरुद्धु थेरीयडेण  
गलगज्जिवि तज्जिवि कंचुइउ

अण्णेक्कु वि अत्थि असोयदेउ ।  
सुहउ सँ सोमु सोमु व सुकंतु ।  
बारहवरिसइं मज्जाय करिवि ।  
ता तेरी तँणुरुह देज्जसु वरासु ।  
गउ वँणिज्जहि सो जाम ताम । 5  
कण्णहि थणयल समएण पुण्ण ।  
सुय दिण्ण सुकंतहु वइरि दुक्कु ।  
मरु दारविं मारविं वरु भणंति ।  
वहुवरु वि पणट्टु पँरोहडेण ।  
अवल्लोयवि वंपइ पर्यंपइउ । 10

घत्ता—कुठि लग्गउ पिसुणु अभग्गउ ईसावसु हेवाइउ ॥

सहुं घरिणिइ हरिणु व हरिणिइ वणु वरइचु पराइउ ॥ १४ ॥

## 15

दोहं वि पयरत्तइं पयलियाइं  
तँ रिउणा कह व ण मारियाइं  
विम्मक्खिवि रयणिहि रीणयाइं  
पासेयधोयतणुमंडणाइं  
सूरग्गामि पत्तइं बे वि तेत्थु  
दुँज्जणु अणुलग्गु जि दुक्कु केम

दोहं वि मुहकमलइं मउलियाइं ।  
अंगइं तरुकंटयसीरियाइं ।  
दुमलग्गफट्टपरिहाणयाइं ।  
अवल्लोइयमयउलभंडणाइं ।  
आवासिउ वणसिरिणाहु जेत्यु । 5  
चलपावइयहं कुसुमसरु जेम ।

14. १ MB विहियसेउ. २ MB सुसोम्मु. ३ M सायरासु. ४ M गियतणुरुह. ५ MB परासु. ६ MB वाणिज्जे. ७ B सखिणिब्बंधमुक्कु. ८ MB मारवि दारवि. ९ MB मंडव. १० MB परोवडेण. ११ MBK पयगइउ.

15. १ MB दो वि. २ B omits this line.

14. 4 a तावरासु ता + अवरासु अपरत्त्व. 6 a चक्कवइसंख द्वादश; b समएण कालेन. 8 a णिस्सिसु निर्दयः; णिस्सिसवंतु खड्गयुक्तः. 9 a थेरीयडेण वृद्धासमूहेन; b परोहडेण पश्चाद्द्वारेण, कुण्णे छिद्रं कृत्वा गृहपश्चाद्द्वारेण. 11 कुठि पृष्ठे; हेवाइउ कुपितः.

15. २ b ० सीरियाइं विदारितानि. 3 a विम्मक्खिवि भ्रान्त्वा.



दिट्टुउ दोहि वि तहिं सत्तिसेणु  
 कहिं णासहं आयउ अञ्जु मरणु  
 णिसुणिवि वइयरु करमंडलगु  
 गउ णाँसिवि सहसा मलियमाणु

आसंधिउ कैलमहिं णं करेणु ।  
 लइ तुज्जु पेइट्टुं बे वि सरणु ।  
 दक्खालिउ तेण किराहु भग्गु ।  
 किं करइ तिमिरु जहिं फुरइ भाणु । 10

घत्ता—ण उवेक्खिउ बहुवरु रक्खिउ किउ पडिवक्खहु दूसणु ॥

घणवरिसहुं जगि सप्पुरिसहुं दीणुद्धरणु जि भूसणु ॥ १५ ॥

## 16

विसकरिखरकरहतुरंगवाहु  
 धारिणिकंतामुहरायरत्तु  
 संठिउ समीवि विरण्वि ठाणु  
 कंतारमग्गि चारण पइट्टु  
 बेण्णि वि ठाभणिय महाजसेण  
 मुणिवसहहं णवविहु लेवि पुण्णु  
 णहयलि त्रइं तियसहिं हयाइं

धंभीरु धणेसरु सत्थवाहु ।  
 ता तहिं जि समागउ मेरुदत्तु ।  
 करिहरिरवबहिरियसिहरिसाणु ।  
 सरणागय पविपंजरेण दिट्टु ।  
 रिसिगयवर थिय विणयंकुसेण । 5  
 जोग्गउ भोयणु भावेण दिण्णु ।  
 अच्छरियइं पंच समुण्णयाइं ।

घत्ता—मणि दोयहुं पुण्णु पलोयहुं पैसरियमुहससिरायउ ॥

तहु केरउ पणयजणेरउ मेरुदत्तु घरु आयउ ॥ १६ ॥

## 17

तहिं तेण तासु जोयवि दाणु  
 आंगामि जम्मि महु होउ पुत्तु  
 महि रंगमाणु णं णिसि णिरिक्कु

धारिणियइ सहं बद्धउ णियाणु ।  
 पइउ दुत्थियकल्लाणमित्तु ।  
 ता तहिं पत्तउ पंगुलउ पक्कु ।

३ B omits this foot. ४ MB कलहहिं. ५ MB पइट्टु। बे वि. ६ MB णिसुणेवि वइरु. ७ MB मज्जिवि. ८ MB णउ पेक्खिउ.

16. १ MB वरवीरु. २ MB add after this रयणहिं सह फुल्लइ घल्लियाइं, वयणाइं मणोजइं बोळियाइं. ३ MB पसरियमुहु.

17. १ MB आगम्मि. २ B णिरिक्कु.

9 a वइयरु व्यतिकरः.

16. 1. b ध र धी रु पर्वतवद्धीरः.

17. 3 a णि रि कु चोरः

पुच्छिउ वणिणा णियमंतिवग्गु  
सँउणिं जंपिउ अवँसउण जाय  
भेसइणा भासिउ सुहमहेहिं  
धण्णंतरि जंपइ पयइदोसु  
पवणें भञ्जइ माणवहु गच्छु

भणु पयहु किं गइपसर भग्गु ।  
पयहु भवि तेण पणट्ट पाय । 5  
उद्धिट्टु पहु कूरग्गहेहिं ।  
सँभें जैडत्तु पित्तेण सोसु ।  
भूयत्थे मंतिं पुणु पुउत्तु ।

घत्ता—सउणत्तइं गहणक्खत्तइं सहं पयईहिं पउत्तइं ॥

चिन्भावहं सयलहं जीवहं हौंति सकम्मायत्तइं ॥ १७ ॥ 10

18

इय सँणिउं सणिउं पभणेवि तेहिं  
किं सउणु किं व दुग्गहवियारु  
किं कारणु पंगुत्तहु मुणिंद  
वहिरंथ कुट्ठि वाहिल्ल भिल्ल  
अविसिट्ठु दुट्ठु दँप्पिट्ठु कट्ठु  
छिण्णोट्टु कण्णणासाविहीण  
णिल्लञ्ज खुञ्ज वामण कुसील  
जरत्तीवरधर फरसुद्धकेस  
जूयार णिसेवियणँयरटिट्ट  
पंगुल पँरघररपिंडावलुड  
णउ देव दँति णउ ते हरंति

पुणु पुच्छिउ गुरु मउलियकरेहिं ।  
किं पयइदोसु किं कम्मचारु ।  
ता भणइ सूरि सुँणि भो वणिंद ।  
दालिदिय दूहव मूय लल्ल ।  
दँट्ठोट्टु रुट्ठु दुहघट्टु वंठें । 5  
दुग्गंधदेह काणीण दीण ।  
पलखंड सौंड चंडाल कील ।  
छोहाणलहय कंकालवेस ।  
पावेण हौंति णर कुंट मंट ।  
विवरीय हौंति धम्मं विसुद्ध । 10  
देविंद वि पुण्णक्खइ मरंति ।

घत्ता—रिसिपिसुणिउं भवियहिं णिसुणिउं णियमं चिच्चु णियत्तिउं ॥

परदविणइ परवहुरमणइ लोयणजुयल्लु ण र्घत्तिउं ॥ १८ ॥

३ MB सउणें, ४ M अवसवण, ५ MB सिंभें, ६ MB मंते.

18. १ M सणउं सणउ. २ MB भो सुणि, ३ M दुप्पिट्टु, ४ M दुट्ठोट्टु, ५ B वट्टु, ६ MB णयरटेट्ट. ७ MB परहर°, ८ M चित्तउं; B चित्तिउं.

5. a सउ णि सक्कुनत्तेन. 6 a भेसइणा ज्योतिर्विदा; सुहमहेहिं शुभप्रयोजनविनाशकैः. 7 a धण्णंत रि वैद्यः. 10 चिन्भावहं चैतन्यरूपाणाम्.

18. 8 b छोहाणल° कोधानलः. 12 °पिसुणिउं प्रतिपादितम्.

## 19

ता तर्हि ओलक्षिखुत तरणितेउ  
 ए एहि पुत्त दे देहि खेउं  
 सुय तुह सुहयंगइं कोमलाइं  
 होंताइं आसि महु सुहयराइं  
 सुय तुह मुहलालाबिंदुयाइं  
 सिक्खाविओ सि सिमुगइवयाइं  
 वीसरियउ सुंय तुहुं किं सताउ  
 इय पत्थिओ वि सो मंदणेहु  
 पिउणा तिमुंढपविराइरण  
 छिंदेप्पिणु ददयरु मोहवासु  
 सुरगुरुणा गैहिउ रिसिन्नु जेम्ब

भूयत्ये कोक्किउ सञ्चदेउ ।  
 किं वीसरियउं महु तणउ णाउं ।  
 लग्गंतइं धूलीधूसराइं ।  
 णिल्लोद्धियपियकंताकराइं ।  
 हउं सुयरविं णियउरयलि चुयाइं । 5  
 सिद्धंणमाइं अक्खरवयाइं ।  
 किं बहुणं महु घर जाहुं आउ ।  
 पडियागउ णउ णियजणणेहु ।  
 तवचरणु लइउ णिव्वेइरण ।  
 तहु गुरुहि पासु णहचारणासु । 10  
 सँउणी धण्णंतरिणा वि तेम्ब ।

घत्ता—तं बहुवरु णवपंकयकरु सेट्टिहि तेण समप्पिउ ॥

महु सामिहि गयवरगामिहि गेहि थवेज्जसु जंपिउ ॥ १९ ॥

## 20

गउ वणिवइ सोहाउरु तुरंतु  
 सो तेण णिरोविउं तासु जाम  
 माउहरि थवेप्पिणु णिययघरिणि  
 वंदिवि मुणालवइ जिणहराइं  
 गुरुहार णारि पंसदलसरीर

पणवेप्पिणु पहुहि सकंतु कंतु ।  
 एत्तहि वि सत्तिसेणक्खु ताम ।  
 णं विंझलयाहरि पवरकरिणि ।  
 अवलोयवि ससुरय सिरिहराइं ।  
 सासुरयहु णउ सकइ सहार । 5

19. १ MB सुयरमिं. २ MB सिद्धतमाइं. ३ MB किं तुह सुय. ४ MB सहिउ. ५ MB सउणें.

20. १ MB वणिवइ. २ MB णिरुविउ. ३ MB °पसदिल°.

19. 2 a खेउ आलिङ्गनम्. 5 b सुयरवि म्मरामि. 6 a °बयाइं पदानि. 9 a ति मुं डे त्यादि—  
 प्रशस्तमनोवाक्कायव्यापारप्रविराजितेन.

20. 5 a पसदल° प्राशियिलम्; b सहार भारसहिता.

सासुरयद्दु गिग्गउ भडवरिद्दु  
घरि दिद्दु राउ इच्छियसिवेण  
णिउ णिययणिवासद्दु दिण्णं धामु  
आसणु भूसणु णिवसणु समग्गु  
मँउ मेरुक्कन्तु पायडियसिरिहि  
पयपालणरिंदणिहित्तच्चिउ

आवेप्पिणु सोर्हापुरि पइद्दु ।  
वहुवरु मग्गिउ पसरियकिवेण ।  
गोउलु माहिसु फलछेत्तु गाँसु ।  
तद्दु करिवि मंति गय कं पि सम्गु ।  
तहिं देसि पुंडरिक्किणिपुरिहि । 10  
वणि ह्यउ णाम कुबेरमिच्चु ।

घत्ता—तुद्दु धारिणि मरिवि सुकारिणि जइ वि ण सम्माइट्ठिणि ॥  
वउं पालिवि दुक्किउ खालिवि ह्इ धणवइसेट्ठिणि ॥ २० ॥

## 21

पुत्तत्थिणि भवभावियणियाण  
गम्भेसरि सयलकलापवीण  
भवदेवें पावें पसुवहेण  
घरि अट्टग्गणें मरिवि तेत्थु  
पारावयजुयलु मणोहिरामु  
तं धेप्पइ खुज्जयवावणेहिं  
णक्कइ हक्कारिउ सहु देइ  
पुच्छिउ पहुणा कहिं पाव जंति  
तं दावइ वंचुइ णरयमग्गु  
तहिं पक्खिणि हउं रइसेण णाम  
अच्छहुं कीलंतैइं बे वि जाम

सा एकूतीसघरिणिहिं पहाण ।  
धयरट्टगमण सहेण वीण ।  
तं बहुवरु द्दुउ हुयवहेण ।  
जायउ पुरेसेट्ठिणिवासि पत्थु ।  
गुंजारुणच्छु वण्णेण सामु । 5  
तं<sup>३</sup> संभासिज्जइ परियणेहिं ।  
पट्टवियउ पुणु रंगंतु जाइ ।  
धम्मेण जीव किर कहिं वसंति ।  
उट्टाइ ताइ सम्पापवग्गु ।  
तुहुं रइवरु पक्खि सँणेहकाम । 10  
सो सत्तिसेणु तहिं मरिवि ताम ।

घत्ता—तै<sup>६</sup> वणिणा वणिसिरंमणिणा धणवइयहि सुउ जायउ ॥  
सोहग्गें जणमणलग्गें रुवें णं सुररायउ ॥ २१ ॥

४ M सोहाउरि; B साहाउरि. ५ MB विण्णु धाउ. ६ MB गाउ. ७ MB मुउ. ८ MB पयडिय<sup>०</sup>.  
९ MB वउ.

21. १ MB पुत्तत्थि वि. २ MB पुरि सेट्ठि<sup>०</sup>. ३ MB संभासिज्जइ परियणजणेहिं. ४ MB सिणेह<sup>०</sup>.  
५ MB कीलंत बे वि. ६ M तं. ७ MB <sup>०</sup>सिरिमणिणा.

21. 2 b धयरट्टगमण हंसगमना.

## 22

णं णियकुलहरकमलसिरिकंतु  
 सुमरेण्णिणु धम्माणंदजोउ  
 वत्थंगु तियसतरु भूसणंगु  
 पवहइ पुंडुच्छुरसप्पवाहु  
 णिच्चं विय पिच्चइ सालिच्छेत्तु  
 सयमेव रणइ वीणा सवेणु  
 इय दिव्वभोयभुंजणखणालु  
 पियसेणु तेण सहयरु पउत्तु  
 इच्छइ भणु तेरउ परममित्तु  
 एकहिं दिणि गय उज्जाणमाज्झि  
 वंउ लइयउ णामे एकपत्ति

णामे सो भणिउ कुबेरकंतु ।  
 ते मंतिदेव तहु देति भोउ ।  
 महरंगु तुरिय उब्भोयणंगु ।  
 मज्जणइं पवरिसइ वारिवाहु ।  
 अवरु वि सुइसुसिर सुहेल्लिमेत्तु । 5  
 धरि चित्तिउ दुब्भइ कामधेणु ।  
 णवजोच्चणु पिउणा दिट्टु बालु ।  
 किं बहुपं किं एकु जि कलत्तु ।  
 आहासइ सो णवणलिणणेत्तु ।  
 दिट्टुउ मुणि दोहिं वि लवल्लिगुज्झि । 10  
 को पावइ तुह सुय सीलसत्ति ।

घत्ता—तेत्थु जि पुरि छुहपंकियघरि वणि वइंसमणसमाणउ ॥

धणवइयहि बंधवु पयहि सायरदत्तु कुलीणउ ॥ २२ ॥

## 23

तहु केरी णं अमिण सित्त  
 तहि परजंमंतरि बद्धपणय  
 णं सुरयसोकखमाणिकखाणि  
 णीलालिवलयसंकासकेस  
 णामे पियदत्त पसण्णदिट्ठि  
 अण्णहिं दिणि किस्सिमकुसुममाल

गेहिणि णामेण कुबेरमित्त ।  
 इइ वणलच्छि मरिचि तणय ।  
 कल्लहंसगमण कलयंठिवाणि ।  
 णं काममल्लि पच्छणवेस ।  
 गुणैणय णं वम्महच्चावलट्ठि । 5  
 कय ताइ णाई मयैणसत्थसाल ।

22. १ MB देतु. २ MB तुरीयउ भोयणंगु. ३ MB दोहिं वि मुणि. ४ MB वउ. ५ MBK वइसवण°.

23. १ MB जंमंतरवद्ध°. २ MB कलहंसिगमण. ३ MB गुणणयणइ. ४ MB मयणत्थमाल; K मयणयत्थसाल and gloss अज्ज; G in gloss मदनराजसाला.

22. 3 b उब्भो य णं गु उत्कृष्टभोजनाङ्गः 6 a सवेणु वंशवाद्येन सहिता. 10 b लवल्लिगुज्झि चन्दनलतागृहमध्ये. 12 वइसमण° कुबेरः.

23. 5 b गुणणय गुणनता.

गय लेष्पिणु ससुरयघरु वयंसि  
तं पेच्छिवि विभिउ इब्भतणैउ  
तं वयणु सुणिवि सच्छइ सईइ

पियकारिणि गइजियरायहंसि ।  
एउं विण्णाणु ण मुणइ मणुउ ।  
णियसुण्ह पसंसिय धणवईइ ।

घत्ता—पियँवत्तइ सुइसुहमेत्तइ मयणजलणु संधुक्किउ ॥

10

मणु लेंतें तेण जलंतें झत्ति कुमारु झँलुक्किउ ॥ २३ ॥

## 24

जाणिवि तणयहु कण्णाहिलासु  
णंदणवणि पट्टण जणमणोज्ज  
भायणइं दुतीस संमीरियाइं  
तहिं एक्कु पंचमाणिकवंतु  
वणिउत्तियाउ संप्राइयाउ  
सव्वहं वणिणाहें भूसणाइं  
गेण्हह पभणिवि पंरिभावियाइं  
ता कणयवत्त बहुभोज्जु थइउ  
सरयणु पुर्यदत्तहि करि विलग्गु  
पयपालसुयाहिं सुहालियाहिं  
आलइउ णंउ तहिं चरुयवत्तु

वणिणा पारइ विवाहु तासु ।  
णिव्वत्तिवि णियकुलजक्खपुज्ज ।  
णिरु चोक्खभक्खपंडिउरियाइं ।  
जा गेण्हइ तहि सो होइ कंतु ।  
वत्तीस जि पियदत्ताइयाउ ।  
दिण्णाइं विलेवणणिवसणाइं ।  
चरुभरियइं थालइं दावियाइं ।  
एक्केक्कइ एक्केक्कउ जि लइउ ।  
को लंघइ किर भवियव्वमग्गु ।  
गुणवइजसवइणामालियाहिं ।  
हियवउ संसारहु खणि विरत्तु ।

5

10

घत्ता—मृगंरोलइ गिरिकुहरालइ वंर पइसिवि तंरुं किज्जइ ॥

णउ दाणहु सुहिसंमाणहु कारणि हलि कलहिज्जइ ॥ १४ ॥

५ MB °तणुउ. ६ MB एयहुं. ७MB पियदत्तइ ८ MB संधुक्कियउ. ९ MB जेण. १०.MBT झुलुक्कियउ.

24. १ B समारियाइं. २ MB परिपूरियाइं. ३ MB संपाइयाउ. ४ B गेहं पभणिवि. ५ K पभा-  
वियाइं. ६ MB एक्केक्कउ एक्केक्कहिं. ७ MB पियदत्तहि. ८ MB भवियव्वु मग्गु. ९ MB णं वि. १० MB  
मिग°. ११ MB वणि. १२ MB तउ.

10 पियवत्तइ प्रियावार्तया. 11 झ लुक्किउ संतापित..

24. ३ a समीरियाइं प्रसारितानि. 10 a सुहालियाहिं सुखवतीभि.. 11 a चरुयवत्तु  
चरुक्कपात्रम्.

## 25

रांयहरणियहि जिणवरणिघासि  
 तवुं लइयउ ताहिं सीमंतिणीहिं  
 घणितणयहु सुयणुच्छाहराहु  
 वर्यवालु मरेप्पिणु लोयवालु  
 देवसिरिदेवि मल्हणगईहि  
 गयजम्मघरिणि सा दिण्ण तासु  
 संताणि थवेप्पिणु सो जि पुत्तु  
 देवीउ कणयमालाइयाउ  
 जे परियण ते पव्वइय सव्व  
 एहु जि बुडुउ स कुबेरमिच्चु

अमियमइअणंतमईहि पासि ।  
 पत्तहि वि पडहमंगलहुणीहिं ।  
 प्रियदत्तइ सहुं विरइउ विवाहु ।  
 पयपालहु सुउं इयउ गुणालु ।  
 वसुमइ सुय इई घणवईहि । 5  
 पुणु लग्गउ दोहि मि पेम्मपासु ।  
 णरणाहें लइयउ मुणिवरिच्चु ।  
 पव्वज्ज लएप्पिणु संठियाउ ।  
 कोमलमइ थिय घैरि घरि सगव्व ।  
 सो भावइ तरुणहं णाहं सच्चु । 10

अन्ता—चवलमइं भासिउ कुमइं हसहुं ण खेलेहुं लब्भइ ॥

अपसत्थउ भेलावत्थउ माणुसु एम जि खुब्भइ ॥ २५ ॥

## 26

जो णिव तुह ताएं णिहिउ मंति  
 किं विहडियकरण णियंति कञ्जु  
 मावउ अम्हहं भिउडंतु दिट्ठि  
 राउ वि कुमारु मंति वि कुमार  
 सुहिदिट्ठपरंपरु बहु सुयहु  
 अविपिकबुद्धि कीलणसहाउ

तहु दंसणेण अम्हहुं ण संति ।  
 हो धेरहं कम्मु ण किं पि दिञ्जु ।  
 अच्छउ णियमंदिरि ताम सेट्ठि ।  
 दीणं वि होंति जोव्वणि वियार ।  
 वारिउ पड्डणा घरु पंतु बुडु । 5  
 सिसुमंतिहिं सहुं रायाहिराउ ।

25. १ MB रायहरे णियउ°. २ MB तउ लइउ तेहिं. ३ MB प्रियदत्तइ. ४ MB णयवालु.  
 ५ MB सिउ. ६ MB णियघरि. ७ MB चवलमइहिं. ८ MB कुमइहिं. ९ MB खेलेहुं. १० MBT  
 हेलावत्थउ.

26. १ MB दंसणि अम्हइ णाहिं संति. २ MB भिउडत्त. ३ MBK दीणहु.

25. 4 a वय वालु प्रजापाकः. 5 a म ल्ह ण ग ई हि मवगमनायाः. 12 भे का वत्थ उ अतिवृद्धावत्थः.

26. 4 b वियार सविकाराः. 6 a अविपिक° अप्रवीणा.

अण्णहिं विणि णंदणवणि पइदु	अरुणच्छवि वाविजलोहु विदु ।
पुच्छिउ विहसिवि चवलमइ तेण	इह लोहिउ जलु किंह कारणेण ।
बुहसिद्विसिद्विगर्हचुण	पडिजंपिउं विउलमईसुएण ।
वावीयलि अच्छइ मणि णिहिचु	तहु छायर दीसइ सलिलु रनु । 10
ता तेहिं मिलिवि अंसंसएहिं	पाणिउं बहि घल्लिउं घडसएहिं ।
चिककल्लंतल्ललोलणविलोल	थिय सयल णाईं कर्ककील कोल ।
माणिकु ण विदुउ तेहिं केम	बहुमोहंधहिं जिणवयणु जेम ।
अण्णाणकिलेसं णत्थि सिद्धि	गय घरहु परिक्षिय मंतिबुद्धि ।
घत्ता—गर्हगावइ सपणयंकोवइ पयहिं पडंतु वि कयरइ ॥ 15	
वसुमइयइ रयणिहिं दइयइ चरणं सिरि हउ णरवइ ॥ २६ ॥	

## 27

मंडलियमउडरइरइयराइ	अत्थाणि णिसण्णे सुण्णहाइ ।
जो मह सिरु पहणइ णियपएण	तहु किं वुत्तउं णरवइणएण ।
ते तरुणमंति पुच्छिउ णिवेण	तेहिं वि एउचु सफेरसरवेण ।
तुह जेणं दिण्णु सिरि चरणघाउ	खंडिजइ णिव तहु तणउ पाउ । 5
तं वयणु सुणेप्पिणु विमलवंसु	संठिउ हेट्टामुह रायहंसु ।
महु सिरचूडामणि मयणसरणु	खंडिजइ किह सुंदरिहि चरणु ।
अविवेउ महंतउ जासु गेहि	दुक्कर सिरि णिवसइ तासु देहि ।
संसिद्धसमग्गातिवग्गलिणु	भल्लारउ भुवणि वियदुसंगु ।
इय चित्तिवि णियकुलकमलमिचु	कोकाविउ तेण कुबेरमिचु ।
आउच्छिउ तं णीरारुणत्तु	अवेरु वि जं सीसि पयग्गु चिचु । 10
तं णिसुणिवि मामे वुचु एम	पाणियरत्तत्तणु णिसुणि देव ।

४ MB किं. ५ MB वावीजलि. ७ B असेसएहिं. ७ MB चिकिखल. ८ MB कयलील. ९ MB गुरु.

27. १ MB omits this line. २ MB फरुसें मणेण, ३ MB दिण्णु जेण. ४ B गेहि. ५ MB अवह वि सीसें पयलगु चिचु.

9 a बुहे त्या दि— बुधैर्यां शिष्टा उपदिष्टा विशिष्टगतिर्व्युत्पत्तिस्तया च्युतो रहितः. 10 a वावी य लि वापीतके.

11 a अ सं स ए हिं संघयरहितैः.

27. 2 b णरवइणएण नीतिशास्त्रे. 13 वणु जलम्.



घत्ता—रसगिर्द्धे र्घत्तिउ गिर्द्धे तीररुक्खि मणि अच्छइ ॥

तहु छायइ पसरियरायइ जणु वणु लोहिउ पच्छइ ॥ २७ ॥

## 28

गुरुणारीडिभयवरणु पडुहि  
तुह पुणु जाणवि रोसंक्रियाइ  
तं पुज्जिर्द्धे वरणेउरेण  
धणवइइ पइहि कुरुलोलिणीलि  
साहंतु व जिणधम्मोवएसु  
तं पेच्छिइवि भव्वु कुबेरमिच्च  
सुरमहिहरु गंपि सुधम्मजइहि  
जाया मरेवि मेहूरहासि  
विउलंभेइ णाम चारणमुणिदु  
सिसु चित्तिवि पुच्छिउ तर्हु दुगेज्जु  
दाहिणपंचंगुलियउ करमि  
गउ मुणिवरु काले पंच पुत्त  
जो सच्चदेउ मुउँ सो जि एउ

सिरिलगाइ अण्ण ण सउलविहुहि ।  
सिरि घल्लिउ होही पउ पियाइ ।  
ता संथुउ सेट्ठि महीसरेण ।  
दिट्ठउ पलियंकुरु कण्णमूलि ।  
जैरदासिइ दृसिउ दइयकेसु । 5  
अवरु वि पव्वइउ समुहदत्तु ।  
इया सुसीसे सुविसुद्धमइहि ।  
लोक्यंतियँ सुर बंभंतवासि ।  
पियदत्तइ भुंजाविउ अणिंदु ।  
कइयहुं होसइ मुणिणाह मज्झु । 10  
वामइ कणिट्ट दाविवि णहग्गि ।  
लहुणं कुबेरदइएण जुत्त ।  
संभूउ पुणु वि पिउ बद्धणेहु ।

घत्ता—कह गिरहहु तोसियभरहहु जयहु सुलोयण भासइ ॥

सोहंती पइई फुरंती कुंदपुष्पदंती सइ ॥ २८ ॥

15

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरहए

महाभवभरहाणुमण्णिण महाकव्वे जयमहारायसुलोयणाभव-

संभरणं णाम पक्कणतीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ २९ ॥

॥ संधि ॥ २९ ॥

६ MB विसउ.

28. १ B पुज्जइ. २ MB सुसीसु विसुद्ध°. ३ MB हिमहारहासि. ४ MB लोक्यंतिय ते. ५ MB विमलमइ. ६ MB तउ. ७ MB सुउ. ८ MB पइय.

28. 1 b °वि हुहि °चन्द्रस्य. 4 a कुरुलो लि° कुन्तलभ्रेणी. 8 a मेहारहासि मेघया अहस्वे.  
15 पइइ प्रमया, सइ सती

XXX

अभियमहअणंतमईसईहिं सीलगुणेहिं पसाहिउ ॥

झिणवइगुणवइवरजसवइहिं बंधुवग्गु संबोहिउ ॥ ध्रुवकं ॥

I

लोयवालु सा वसुमइ राणी  
 बारहविहदिक्खाइ समग्गइं  
 खंतिहिं कहियउं धम्मु गिरंतैरु  
 णिञ्चुच्छवमंगलणिग्घोसहु  
 चरियामग्गे णिग्गयरायउ  
 पयदत्तावरइत्तं णवियउ  
 तां तहिं पक्खिजुयलु संपत्तउ  
 दोहिं विमुणिहिं गुणिहिं जोयंतहं  
 रिसि पेच्छिवि भउ सुमरिवि मुच्छिउ  
 सलिले सिंचिउ थियउ सइत्तउ  
 भरई पक्खि किं कीरइ पक्खिणि  
 सरइ सैकौंति पुण्णससिकंतं

पउरंदरियहिं ट्यंयहिं समणी ।  
 बिण्णि वि सावयवइ दिट्ठु लग्गइं ।  
 अरुहमग्गि लग्गउ अंतेउरु । 5  
 ताम कुबेरकंतवणिवासहु ।  
 जंघाचारणजुयलउं आयउं ।  
 छुडु जि तेण पंगणि पउ थवियउ ।  
 पक्खहिं पहणइ पयरउ भत्तउ ।  
 धम्मबुद्धि होउ स्ति भणंतहं । 10  
 महिहि पडंतु णरेहिं णियच्छिउ ।  
 अवरोप्परहुं जि णवर विरत्तउ ।  
 कहिं रइवेय महारी पणइणि ।  
 किह जीवमि णिम्मुक सुकंतं ।

घत्ता—सोहापुरि बहुवरु पउ चिरु एवहिं दंपइ णहयर ॥ 15

लोलंत पलोयवि धरणियले कउ अलाहु गय मुणिवर ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

णाहन्दणरिन्दसुरिन्दवन्दिया जणियजणमणाणन्दा ।

सिरिकुसुमदसणकइमुहणियासिणी जयइ वाईसी ॥ १ ॥

GK give this stanza as well as तन्त्रीवाचैरनिन्दैः etc here for which see note on Samdhi XXIX.

1. १ MB तियहिं. २ M सवाणी. ३ MBT °सिक्खाइ. ४ MB कहिउ. ५ MB णेरंतरु. ६ MB वियदत्ता°. ७ MB ता तं पक्खिमिहुणु. ८ MB भणइ. ९ MB सुकंति; T सकुंति.

1. 4 a बारह विहदिक्खाइ अणुव्रतगुणव्रतशिक्षाव्रतरूपया दीक्षया. 9 b पयरउ पदरजः. 12 a सइत्तउ मूर्च्छारहिततया सचेतनम्. 13 a भरइ स्मरति. 14 स कौंति पक्षिणी. 16 अलाहु अलाभोऽन्तरायः.

## 2

वसुमईर णवपंकयणेत्तह  
 वंचुइ पट्टियेम्मि संणिहियइं  
 णहयरियहि सकंतु जाणावित्त  
 मा विहडेवि चरह म विरप्पह  
 वयणे तेण ताइं पुंणु रत्तइं  
 रुप्पयगिरिसमीवि सुरघरगिरि  
 ते तहिं जंघाचारण जइवर  
 अमयमईहि अणंतमईहि वि  
 पुच्छिय ते कुसुमसरणिवारा

विणिण वि पुच्छियाइं प्रियदत्तह ।  
 दोहिं मि गयमवणामइं लिहियइं ।  
 रइवेयागमु खयरहु दावित्त ।  
 विणिण वि सुहुं भुंजह कंवप्पह ।  
 कणु चुणंति खेलंति पसंत्तइं । 5  
 करिदंसणविहंइहंजियहरि ।  
 जायवि थक्क तिणाणदिवायर ।  
 जायवि संजईहिं विहिं तीहिं वि ।  
 पारावयसंबंधु भडारा ।

घत्ता—माणवमिहुणुल्लउ तं मरिवि भवसंकडि संदाणिउं ॥ 10  
 मुणि अक्खह रक्खह किं पि ण वि जिह णाणेण वियाणिउं ॥ २ ॥

## 3

जिह वइसउलि पट्टयइं बालइं  
 जिह जायउ विवाहु जिह णट्टइं  
 जिह खल्लु मगलग्गु णिब्भच्छिउ  
 पालिउ वंउं जिह सज्जणसत्थे  
 जिह घरि रिउणा कयउ पलीवणु  
 इयं जिह जिह साहिउ मुणिणाहे  
 तिह तिह कंतियाहिं आवेप्पिणु  
 सुहसंजोयहु सिदिलियसोयहु

रइवेयासुकंतणामालइं ।  
 जिह सामंतहु सरणु पट्टइं ।  
 कण्णकइयवयणेहिं दुगुंछिउ ।  
 जिह भउ लद्धउ सुहसामत्थे ।  
 जिह बहुयरु पत्तउ पक्खित्तणु । 5  
 मयणहरिणविद्धंसणवाहे ।  
 लोयवालपुरवरि पइसेप्पिणु ।  
 साहिउ सयलहु सावयलोयहु ।

घत्ता—इय णिसुणिवि जणवउ धम्मरुइ ह्यउ विरैसियवत्तह ॥  
 सुणवइजसवइपायंतियइ लइयउ वंउ मृगणेत्तह ॥ ३ ॥ 10

2. १ MB पियदत्तह. २ MB पट्टियेम्मि. ३ MB पडिवत्तहं. ४ MB पमत्तहं. ५ MB °विरुदे रंजिय°.  
 3. १ MB वउ. २ MB इह. ३ MB विहसिय°. ४ MB वउ मिग°.

2. 5 b प स त इं प्रसक्तौ अन्योन्यरक्तौ.  
 3. 1 a व इ स उ लि वैश्यकुले. 6 b °वा हे व्याघ्रेण, °व्याघेन. 9 वि य सि अ व स इ विकक्षितवदनवा.

## 4

अस्त्रिय हृई सम्माइद्विणि  
 अवर कुबेरसेण रायाणी  
 किंकरेण केण वि ण पलोइउ  
 गयउ कवोयजुयलु सारामहु  
 कणु वंचुइ कइइ णयगीवइ  
 सरहुंदुरसेढामिसभोयणु  
 असुहरतिक्खकुडिलणहपंजरु  
 वइविवराउ झत्ति णीसैरियउ  
 पक्खिणि पासिहिं भमिवि झडप्पइ  
 चिरभववइरें दसणकरालें

घरु मेलेपिणु घणवइसेद्विणि ।  
 दिक्ख लेवि थिय सुट्टु अदीणी ।  
 तं विहिविहियविहाणें चोइउ ।  
 कहिं मि भंमंतु पुंरंतिमगामहुं ।  
 जाम चरइ किर वइसामीवइ । 5  
 णवमहुबिंदु व पिंगललोयणु ।  
 उट्टेंट्टु तहिं जायउ मंजरु ।  
 तेण कंठि पाराघउ लइयउ ।  
 णियपियपरिहवि णौरि वि कुप्पइ ।  
 कसंमसत्ति खगु खड्डु विरालें । 10

प्रस्ता—मुइ वल्लहि दुहविहाणियए विहि बलवंतु पउत्तउ ॥

अप्पउ तणु मण्णिवि रिच्छियए विसदंसहु मुहि घित्तउ ॥ ४ ॥

## 5

पक्खिहिं पसुहुं वि पेम्मु पयट्टइ  
 पुणु तहिं पुक्खलवइदेसंतरि  
 रययसेलि खगदाहिणसेदिहि  
 दिणयरगइ णिवसइ खयरेसरु  
 तहु ससिपहदेविहि हुउ रइवरु  
 तैत्थु जि गिरिवरि उत्तरसेदिहि  
 च्छडियउ तहिं राणउ विज्जाहरु  
 सा रइसेण मरिवि तहिं पक्खिणि

णरहु ण किं विरहें मणु फुट्टइ ।  
 जीवदयाहलेण सुहसुंदरि ।  
 उंसिरिहि णयरिहि मोक्खणिसेणिहि ।  
 तेयं णं पञ्चक्खु दिणेसरु ।  
 तणउ हिरण्णवम्मु णं रइवरु । 5  
 गउरीविसयभोयपुररुदिहि ।  
 मरुइ माहवियहि देविहि वरु ।  
 ताहं बिहिं मि हृई णं अक्खिणि ।

4. १ K भवंतु, २ MB परंतिम°, ३ MB णीहरियउ, ४ K धरियउ, ५ K णारी कुप्पइ, ६ M कसमसंतु; B कसमसत्तु, ७ T रिच्छियए.

5. १ MB उंसिरिहि, २ MBK सोक्ख°, ३ K चडिउ.

4. 5 a णयगीवइ नतप्रविया; b वइ° वृत्तिः, 10 b कसमसत्ति भक्षणप्रकारानुकरणे, 12 रिच्छि-  
 यए पक्षिण्या.

5. 5 a रइवरु कामः.

धूय पसिद्ध पहावइ णामें  
गयउ कर्हिं वि णंदणवणकीलइ  
तेण हिरण्णवम्मणामालें  
पडि जं वित्तउ जम्मकहाणउं

घत्ता—कई पिउणा पवरसयंवरए ताइ मयच्छिइ लक्खिउ ॥

पारावयजुयलउ णियणियडे संचरंतु सुणिरिक्खिउ ॥ ५ ॥

6

णियभदु बुज्झिंवि णिवडिय महियलि  
रइसेणाचरि मज्झें खामिय  
कंचुइणा णरवइ विण्णवियउ  
होउ सयंवरेण किं किज्जइ  
दइयइ चित्तपट्टु पट्टाविउ  
मंदरि जायवि गइरणु मंडिउ  
सुरगिरि परियंचिंवि उद्धाइय  
लइयउ तं जाव सुह ण पावइ  
जाम जणणु हरिसें कंटइयउ  
खेयरणियरु जाव छुडु जित्तउ

सिंचिय पाणिपण सिरि उरयलि ।

सा रइवरविरहें आयामिय ।

दुहियहि देहु दुरोएं खवियउ ।

आउ आउ खगवइ जाइज्जइ ।

सो वि ताइ णियहियवइ भाविउ । 5

फुल्लदामु जं सइं तंहि छंडिउ ।

खयरहुं अग्गइ कुंयंरि पराइय ।

पुत्तिहि केरी गइ को पावइ ।

मंतिवयणु अवलोयवि मुइयउ ।

ताव हिरण्णवम्मु तर्हिं पत्तउ । 10

घत्ता—पुणु माल पघल्लिय मंदरहो विण्णि वि सह धावंतइं ॥

दिट्ठइं फणिकिंणरस्सिरविहिं तुरिउं पयाहिण देंतइं ॥ ६ ॥

7

रइवरचरु रइरहसैं चोइउ  
तेण पडिच्छिइय महिहि पडंती  
दिट्ठी कुसुमावलि अलिधारिणि

घुलइ माल जर्हिं तर्हिं संप्राइउ ।

णहयलि खगकामिणि व णडंती ।

णं कामें संधिय सरधोरणि ।

४ MB णं. ५ MB पक्खिणिभवविरहयसंमाणउ; K पक्खिरुपु विरइय°. ६ MB कय.

6. १ MB मंदर. २ MB जं तर्हि सइं छंडिउ. ३ MB कुमरि. ४ MB को गइ.

7. १ MB संपाविउ. २ MB खगकामिणि णिवडंती.

6. ३ b दुरो एं दुष्टरोगेण.

7. ३ a कुसुमा वलि पुष्पमाला.

दोहि वि धरियइ चप्पिवि चित्तइ  
दोहि मि दिण्णउं दलियफणिंदहु  
गउं वरु तहिं जोयवि मणहारिणि  
पट्टउ ताइ तासु दैक्खालिउ  
जोइवि धुज्जिय पक्खिकहाणी  
ससयण पिउहरु पत्त पहावइ  
कउ विवाहु बहुत्तरणिणायहिं  
दोहि वि कंताकंतहुं पयहुं

घोलंतइं विवलंतइं णेत्तइं ।  
दडलज्जंकुसु मयणगइंदहु । 5  
तावंतरि संठिय पियकारिणि ।  
तेण वि तरलच्छीहिं णिहालिउ ।  
एत्तहि सा खगतएणि पहाणी ।  
जो णाईंदहु वण्णहुं णावइ ।  
रविगईमारुयरहखगरायहिं । 10  
पयलियपेवंबंधैपासेयहुं ।

घत्ता—परियलइ कालु कुलमंडणहं पसरियदिट्टिवियारहं ॥

दंसणसंभासणगुणविणयदानदिण्णसिंजारहं ॥ ७ ॥

8

अण्णहिं वासरि त्रे वि रमंतइं  
हल्लियघंटाटंकारालउ  
मोहैजालतरुजालहुयासहं  
मुणि वम्महवम्मोहवियारणु  
पुच्छिउ णियैय तेहिं जम्मंतरु  
वणिभवि मायापियरइं तुम्हहं  
पुणु संजायइं केत्तिउ सीसइ  
जो भवदेवबणु चिरु वणिवरु  
पुम्बणामु सिरिवम्मु पयासिउ  
गयणगमणु तवतावै सिद्धउ  
पणाविधि पयजुयलउ रइस्सेणहु

पत्तइं गयणुच्छंगि चंडंतइं ।  
सिद्धसिहरु णामेण जिणालउ ।  
तहिं पुज्जिवि पडिमाउ जिणेसहं ।  
पुणु वंदिधि सन्वोसहिचारणु ।  
रिसिणा कहियउ गयउ कहंतरु । 5  
जाइं ताइं एवहं सुहंक्म्महं ।  
भवसंसारहु छेउ ण दीसइ ।  
इह उप्पणउ सो हउं णहयरु ।  
रिसि सन्वोसहिचारणु भासिउ ।  
तइयउ णाणु विसेसें लद्धउ । 10  
मुक्कउ दुक्कियदुक्कविहाणहु ।

३ G चिधइं. ४ MB गउ वरु जोइवि बहु मणहारिणि. ५ MB दिक्खालिउ. ६ MB रविगय°. ७ MBK °पेम्मबंध°.

8. १ MB चरंतइं. २ MB मोहमहातरुजाल°. ३ MB तेहिं णियय. ४ K सुक्म्मह.

11 b पय लिय पेवंबंध पा सेय हुं प्रगलितः प्रेमबन्धेन प्रखेद. ययोः.

8. 1 b गयणु च्छंगि आकाशमध्ये. 10 b तइयउ णाणु अवधिज्ञानम्. 11 a रइसेणहु रति-  
वेणस्य भट्टारकस्य.

घत्ता—गुरुवयणकुठारै तिकखण भवतरुवरु महं छिण्णउ ॥

विधंतउ पंचहिं मग्गणहिं मयणु दिसाबलि दिण्णउ ॥ ८ ॥

9

सुहमइ वड्डिय रमणिहि रमणहु  
मेहकूड जोइवि णिविण्णउ  
पुत्तु मणोरहु रज्जि परिट्टिउ  
थिउ णिब्भउ ससंगपयारइ  
णियसुय रइवह तं सुहणिवहहु  
अण्णहिं दिणि गयणंगणि रमियइं  
संप्पसरोवरच्चिधु णिण्णिणु  
आयइं णियपुरवरु हकारिउ ।  
पइं इवउ रिसिकुवलयचंदहु  
सहइ हिरण्णवम्मु चारणमुणि  
गुणवइयाइ पहावइ दिक्खिय  
सव्वइं भव्वइं कम्मुविण्णइं

तं आयणिवि गयइं सभवणहु ।  
मारुयरहु पव्वज्ज पवण्णउ ।  
दिणयरगइ वि जइत्तणि संठिउ ।  
रज्जि हिरण्णवम्मु तहु केरइ ।  
मणहरसुयहु दिण्ण चित्तरहहु । 5  
धण्णयमालवणंतरि भमियइं ।  
विण्णि वि पुवज्जम्मु जाणेषिणु ।  
रज्जि सुवण्णवम्मु वइसारिउ ।  
चरणमूलि सिरिपालमुणिदहु ।  
उण्णइं पावइ गुणगरुयउ गुणि । 10  
करणचरणसत्थत्थइं सिक्खिय ।  
ताइं पुंडरिक्किणि अवइण्णइं ।

घत्ता—रिसि थिउ पुरबाहिरि पवरवणि अज्जाजुयलविराइउ ॥

जुयमेत्तदिट्ठि वियरंतु तहि पृथंदत्तहि घरु आयउ ॥ ९ ॥

10

वणिणिइ विणयपणामे रद्धउ  
पुणु आसणु अणुंरुत्तु धिवेण्णु  
किं ण विमाणुं पइं पइजोव्वणु  
हियपरिमियसुमहुरभासिणियइ

नं भुंजाविउ भोज्जु सुणिद्धउ ।  
ताइ पहावइ भाणिय णवेण्णु ।  
किं तारुणइ संसेविउ वणु ।  
तं णिसुणेवि भासिउ तवसिणियइ ।

५ MBK °कुठारै.

9. १ MB दिण्णु. २ MB सच्छ सरो°, T सच्छ and gloss यस्य तीरे पूर्वजन्मनि शक्ति पुण्येन रक्षितस्तस्येद नाम. ३ MB सुयरोपिगु ४ B महं. ५ MB कम्मुलिण्णइं ६ MB पुरबाहिर. ७ MB पियदत्तहि.

10. १ MB भुजाविवि. २ MB अणुरत्तु.

9. 7 x स प्प स रो व र वि धु यस्य तीरे पूर्वजन्मनि शक्तिवेणेन रक्षितौ तस्य नामेदम्.

10. 3 u प इ जो व्णु पतियौवनम्.

एत्थु जि सज्जणयणाणंदिरि	अम्हइ माइ तुहारइ मंदिरि ।	5
अण्णहिं भवि होंताइं कवोयइं	किं ण वियाणाहिं विहियविणोयइं ।	
रइसेणाचररइवरणामइं	कंठसइउक्कोइयकामइं ।	
प्राणिदयाहलेण मणुयत्तणु	पत्तउ दोहिं मि ते णियमिउं मणु ।	
अक्खु कुबेरकंतु वरु तेरउ	कहिं सो अच्छइ सुहइं जणेरउ ।	
सेट्ठिणि भणइ णिसुणि संजमघरि	पियकह जिणपयपंकयमहुयरि ।	10

घत्ता—एक्कहिं दिणि भवणु पराइयहो जिणवरवइणिहिं केरउ ॥

मइं भोयणु देवि णमंसियउ पयजुयलउं सुहगारउं ॥ १० ॥

## 11

जिह पइं तिह महु ताइ पयासिउ	णियतवकारणु णिहिलु समासिउ ।	
इह रइसेणु णाम आयउ चिरु	भूमिविहारत्थिउ सुंदरगिरु ।	
णंदणवणि चलंतहिंतालइ	तालितालतालूरपियारइ ।	
वेत्ठीहरि पसुत्तु विज्जाहरु	पायंगुट्टइ लग्गउ विसहरु ।	
णाहु वि तहिं जि भंमंतु पराइउ	धाडिबि फणिवइ वणु अवलोइउ ।	5
कोएं वंझं हंसं ईरिउ	गरु गरुलेण व तेणुत्तारिउ ।	
हूयउ गाहु विहिं वि मित्तत्तणु	गउ खगु सणयरु वणिवइ सभवणु ।	
आयउ खेयरु पुणरवि तं वणु	अवलोर्यंतिइ बहुणायरजणु ।	
उत्तउं कंतइ एत्थु जि अच्छहुं	कोइं लोउ रमंतु णियच्छहुं ।	
ना रइसेणहु तणियइ णारिइ	महु पिययमु जोइउ गंधारिइ ।	10

घत्ता—हियउल्लउ कामें णिहएण तहिं केरउ णिहलियउं ॥

वरकुंजरचरणें चण्णियउं दिसिहिं जल्लु बुच्छलियउं ॥ ११ ॥

३ MB पाणि°.

11. १ K भवंतु. २ M चण्णिय. ३ MB जलु व उच्छलियउं.

11 °वइ णि हि वतिन्याः.

11. 3 b °ताळर° कपित्थम्. 12 जलु बुच्छ लियउं जलमिव उच्छलितम्.



## 12

मणि पवियंभिह जलयरचिधइ  
 कवणु एहु पिययम किं किं णरु  
 तेण पउत्तउ मिच्छु महारउ  
 एण मंतु गरलंतु विहाविउ  
 बे वि समुब्भियवीणवियाणइं  
 किं रक्खमि तिक्खाइं णहग्गाइं  
 गय पिययम मिच्छुत्तरु संधिवि  
 हा हा उरयएण हउं डंकिय  
 कंतै ओसहसयइं णिउत्तइं  
 महिलहि को ण भुवणि वेहाविउ  
 गउ तेत्तहि तुरिपं पंजलियरु

आउच्छिउ णियवइ पेमंधइ ।  
 अक्खेणु जक्ख किं किंणरु विसहरु ।  
 वणिउ कुबेरकंतु गुणसारउ ।  
 फणिणा खद्धउ हउं जीवाविउ ।  
 कंकेलीतरुतलि आसीणइं । 5  
 फुल्लइं बीणमि पिय तुह जोग्गाइ ।  
 कूटएण करपल्लउ विधिवि ।  
 णिवडिय मिच्छाविसवेयंकिय ।  
 पियइ चडावियाइं सिरि णेत्तइं ।  
 कंतु विभोय सोय संप्रीविउ । 10  
 जाहिं अच्छइ उवइट्टउ महु वरु ।

घत्ता—तेणुत्तउ आवहि मित्त तुहुं विसु सव्वंगइं तावइ ॥

फणिद्वी घरिणि महुं तणिय तुह मंतै धुंभु जीवइ ॥ १२ ॥

## 13

मित्तै मित्तहु णियमणु ढोइउ  
 पइणा गरलिंगु णो लक्खउं  
 मंदरु जाइवि लहु दिव्वोसहि  
 एम कहिवि गउ सुंदरु जावहिं  
 भणइ ण खंजमि सविसभुयंगे

जायवि मुद्धहि वर्यणु पलोइउ ।  
 खयरं मउलियणयणे अक्खउं ।  
 हउं आणमि तुहुं रक्खइ पियसहि ।  
 सुंदरि झत्ति बइट्टी तावहिं ।  
 हउं खद्धी पइं धुत्तभुयंगे । 5

12. १ MB पेमंधइ. २ MB किं पिययम. ३ MB अक्खु सक्खु किं. ४ MB समुब्भियवीणवियाणइ; G समुब्भियवीणवियाणइ, but gloss समुद्धतवीणाम्बरध्वजौ ०वितानौ वा. ५ MB संपाविउ. ६ MB धुउ.

13. १ MB देहु. २ MB गरल°. ३ MB मउलियवयणे. ४ MB सव्वोसहि. ५ MB खंजउं.

12. 1 a ज ल य र चि ध इ मकरध्वजे. 2 b अक्खु कथय. 5 a समुब्भियवीणवियाणइं समुद्धतवीणाम्बरवितानौ.

जइ मम्मणमंतै तणु अंचहि  
तो हउं मुच्चमि विरहविसोहें  
पीयलु हरिवारुणिफलु जेहउ  
वम्महसरहं कैयाइ ण भिज्जमि  
परकुलउत्ती जणणिसमाणी

जई रइरसजलधारइ सिंचहि ।  
ता पडिजंपिउ पसामियमोहें ।  
अंगु वियाणहि मेरउं तेहउं ।  
संदु पुरंधिहिं हउं ण रमिज्जमि ।  
तुहुं पुणु जाय विहिणि मित्ताणी । 10

घत्ता—रइसेणु वि आयउ मंदरहो वणि पुच्छिवि सकलत्तउ ॥

गंधारणयरु सो अप्पणउं णहि विहरंतउ पत्तउ ॥ १३ ॥

२

14

तहु पुणु संहुं महिलइ वियरंतहु  
खलिउ विमाणु दिट्टु मुणि उववणि  
पुच्छिउ धम्मु रिसिंदें भासिउ  
गुणवंतेण सुणिम्मलवइणा  
परयारिउ लोपं णिदिज्जइ  
तित्ति ण पूरइ जूरइ सज्जणु  
लौयणजुयलु वलइ कयणेहउ  
जइ वि लोउ णियकज्जु पँवुकखइ  
मन्थयमुंडणु बिल्लणिबंधणु  
जारु होइ तिहुयणि अपसंसउ

उप्पलखेडहु बहि णहि जंतहु ।  
वंदिउ भावें दोहिं वि तक्खणि ।  
सावयमग्गु विसेसैं देसिँउ ।  
तहिं परयारु णिवारिउ जइणा ।  
असिधाराकरवत्तहिं छिज्जइ । 5  
वडुइ कामडाहु पसरइ मणु ।  
परयारियहु सोक्खु कहिं केहउ ।  
संकालुहि तं ताँसु जि दुक्खइ ।  
कुखरारोहणु णासाखंडणु ।  
मुउ पुणु दूँहउ दुट्टु णउंसउ । 10

घत्ता—इय रिसिवयणाइं सुणंतियए गंधारिहि मँणु तप्पइ ॥

हा हा महं दुट्टइ दुट्टु किउ इय णियहियइ वियप्पइ ॥ १४ ॥

६ MB जइ रसजलधारहिं मइ सिंचहि. ७ MB ण काइं वि. ८ MB माय बहिणि

14. १ MB महिलहि सहुं. २ MB सावयधम्मु. ३ MB दंसिउ. ४ MB पवुकइ, T बुकइ  
अवीति. ५ MB तासु खुडुकइ. ६ M वूसउ. ७ MB तणु.

13. 8 a इ रि वा रु णि° इन्द्रवारुणीफलम्. 10 b मित्ताणी मित्रभार्या.

14. 1 b ब हि बाह्ये. 8 a पनुक्खइ पर्यलोचयति. 10 b णउंसउ नपुंसकः.

## 15

मणिवि मुणिवरु बे वि पयद्वहं  
 कंतइ गुरुवयणइं चितंतिइ  
 कंतहु सइं अहिमाणैविणासउ  
 हउं पाविट्टुं तुहारी दोही  
 मुइ मुइ जामि देव पावैज्जहि  
 मणु जं पइं पररइमलमइलिउ  
 एवहिं तुहुं महुं सुद्धं महासइ  
 जीवदयाघयधारासित्तै

णहयलणिहियपायकंदोद्वहं ।  
 णोरयविवरवडण संकंतिइ ।  
 कहिउ कुवेरकंतअहिलासउ ।  
 मा होज्जउ तियमइ मइं जेही ।  
 उत्तरु दइपं दिण्णु सभज्जइ । 5  
 तं आलयणजलपक्खालिउ ।  
 आउ जाहुं ता बहु पडिभासइ ।  
 सुहपरिणामसमीरपलित्तै ।

घत्ता—घरमोहबहलधूमुज्झिणण जइ तवज्जलणें डज्झामि ॥

तां तत्तसुवण्णसलाय जिह हउं भत्ताग विसुज्झामि ॥ १५ ॥ 10

## 16

केम वि चाडुयसयहिं ण थक्की  
 बेणिण वि' ताइं तेत्थु पावइयइं  
 थिउ मुणि बाहिरदेसि रवण्णइ  
 जिहं जिह सा महु कहिय कहाणी  
 तिह तिह पिययमेण आर्यणिय  
 भत्तिइ तहि पणामु विरयंतें  
 सव्वहिं जायवि हयसंसारउ  
 सकुलकमु गुणवालहु दिण्णउ

ता णाहेण णियंबिणि मुक्की ।  
 एउं णयरु विहरंतइं अइयइं ।  
 घरु आयइ अज्जाइ पसण्णइ ।  
 गुज्झरहच्छे चारु विराणी ।  
 णिग्गच्छिवि सा तेण पर्मणिय । 5  
 थुय गंधारि धीरधी कंतें ।  
 वंदिउ मो रइसेणु भडारउ ।  
 लोयवालु पव्वज्ज पवण्णउ ।

15. १ MB णहयालि णिहियं. २ णरयविवराणिवडण. ३ MB विणासिउ. ४ MB पाविट्टु धिट्टु तुह दोही. ५ MB पाविज्जहि. ६ MB सुद्ध. ७ M धारोसित्तै. ८ M तो, B भो.

16. १ MB ताइं तेत्थु वि. २ MB इय जिह जिह महु. ३ M गुज्झरहच्छे, B गुज्झरहच्छे. ४ MBK विराणी. ५ M आयाणिय. ६ M पमाणिय. ७ MB पमाणु.

15. 5 a मुइ मुइ मुख मुख.

16. 4 b विराणी विराणिणी.

पुत्तचउकैँ सहुं भत्तारैँ  
लइय दिक्ख व्वालियवयभारैँ  
हउं कुबेरदइएं तेणच्छमि

णिप्पिहेण तोडियमयमारैँ ।  
मोहिय लहुययरेण कुमारैँ । 10  
पुत्तहि मुह पँहपहसिउं पेच्छमि ।

धत्ता—गुणवालहु कयमंगलसयहिं घल्लिय कामिणि सेसहो ॥  
पुणु दिण्णी ताइ कुबेरसिरि णियकुमारि धरणीसहो ॥ १६ ॥

## 17

सा कुबेरपृय तणुरुहु पुँच्छिवि  
पत्तइं पारावयइं णरत्तणु  
कयलीकंदलकोमलगत्तइ  
संतहि दंतहि वहुगुणगणणिहि  
कयजयवयणावंगालोयण  
तहिं पुरि बहि मसाणि सो जइवरु  
णरवइ पुरु परियणु संखोहिउ  
सत्तमि दियहि पवणिण पहावइ  
थिय णिसिं णयरपओलिसमीवइ  
एँत्तहि जो रिउ वणि पुणु मंजरु  
णिसिहि समागय गर्यवरगामिणि  
सा कुंदलय तेण परिपुच्छिय

इंदियसुहसंबंधु दुगुंछिवि ।  
पेच्छिवि अरुहधम्मचारत्तणु ।  
किउ णिक्खवणु तुरिउ पृयँदत्तइ ।  
अरणमूलि तहि गुणवइगणणिहि ।  
पुणु वि कदाणउं कहइ सुलोयण । 5  
थक्कु हिरण्णवम्मु लंबियकरु ।  
मुणि पडिमाजोएं संबोहिउ ।  
मुणिचरियाणुय गिरिणिच्चलमइ ।  
जिणु थुवंति णियमणराईवइ ।  
सो णरु ह्यउ तलवरकिंकरु । 10  
तासु पासि पुरँवणिवइकामिणि ।  
अज्जु सुइरु सुंदरि कहिं अच्छिय ।

धत्ता—मुणि पडिमाजोएं संठियउ तहु चलणाइं णरिंदे ॥  
वंदियइं अँसेसें पट्टणेण अम्हारपण वणिंदे ॥ १७ ॥

८ MB चालिय°, ९ MB लहुयरेण इह कुमारैँ. १० M मुहुं महु पइसिउं; B मुहुं पइपइसिउं.

17. १ MB कुबेरपिउ. २ MB पेच्छिवि. ३ MB मणुयत्तणु. ४ MB °धम्मु चारुत्तणु. ५ MB कयलीकोमलकंदलगत्तइ. ६ MB पियदत्तइ. ७ MB पडिबोहिउ. ८ MB णिसियर°. ९ MB थवंति. १० MB एत्तहि वइरिउ. ११ MB वरगय°. १२ M पासि वणिवर पुरि कामिणि; B पासि पुरवणिवरकामिणि. १३ MB असेसइं.

10 a वा लिय° पालितः. 11 b पइपइसिउं प्रभया प्रहसितम्.

17. 5 a °अ वंग अपाङ्गः 9 b °राईवइ पइजे.

## 18

सावयवगौ वज्जियविग्घे  
 सव्वहिं संथुय जइवरपायइं  
 चिरु मुणिणाहहु केरी गेहिणि  
 वयधारिणि अत्थवियइ सूरइ  
 दुम्महवम्महसरसंधारी  
 ताइं बे वि पारावियजुम्मइं  
 वणि लद्धइं खद्धइं मैज्जारें  
 बे वि विरत्तइं धरियच्चरित्तइं  
 ताहं णाहु गउं वंदणहत्तिइ  
 ना णिसुणियविसदंसपवंचें  
 ताइं बे वि जाणवि महु अहियइं

गुणवइजसवइरणणीसंधे ।  
 तं पिउवणु मेह्लेप्पिणु आयइं ।  
 बुद्धिविसुद्धसीलजलवाहिणि ।  
 एंति एंति थिय णयरदुवारइ । 5  
 तणुविसग्गु विरएवि भडारी ।  
 सेट्ठिगेहि जाणियजिणधम्मइं ।  
 जायइं मणुयइं सुहसंचारें ।  
 तवतत्ताइं एत्थ संपत्तइं ।  
 तेण समागय गहयहि रत्तिहि । 10  
 भर्तुं संभरियउ तलवरभिच्चें ।  
 मइं जि पुव्वजम्मंतरि वहियइं ।

घत्ता—मिच्छुत्तरु वेसहि वज्जरिवि गउ कोवग्गिपलित्तउ ॥

जहिं अच्छइ संजमधारिणिय तहिं पुरि बाहिरि पत्तउ ॥ १८ ॥

## 19

सा जोइवि पुणु मुणि अवलोइउ  
 पडियाएण तेण पञ्चारिय  
 तुहुं महु पुव्वभवम्मि पलाणी  
 सो वरइत्तु काइं पइं मुक्कउ  
 आउ तुज्जु मेलणउं समारामि  
 एम भणेविणु खंधि चडाविय  
 आलिं गह भणेवि रइलुद्धइं  
 भीमं भीसणेणं खयथत्तिहि

सिहि मसाणकट्टहिं संजोइउ ।  
 पाविट्टेण ते वि धिक्कारिय ।  
 जेण नमउ अच्छिय सुहलीणी ।  
 अच्छइ तुह रइरंमणहु दुक्कउ । 5  
 एवहिं हउं विवाहु अवयारमि ।  
 विरयहु णियडि विरैय संप्राविय ।  
 बिण्णि वि एक्कीकरिवि णिवद्धइं ।  
 धित्तइं वियहि जलंतजलंतैहि ।

18. १ MB बुद्ध विसुद्ध°, २ MB जम्मइ, ३ MB मंजारें, ४ MB जायइ मणुएं, ५ MB वंदण-  
 गउ हत्तिइ, ६ MB भउ, ७ MB पुरबाहिरि.

19. १ MB अवलोयउ २ MB रइमणहो चुक्कउ, ३ MB विरइ संपाइय, ४ B भीसंतेण.

19. ३ a पलाणी नष्टा, ६ b विरय भार्या, ८ b चियहि चितायाम्.

दडुइं बिणिण वि सिमिसिमियंगइं  
रसवसर्वासैद गंधालित्तउ  
णिहंधैइयउ जंपइ वेरिउ  
तं णिसुणिवि वेसइ उवलक्खिउ  
पेयालइ कुंभवहेण पलीविउ

णिग्घिणु णिहणेप्पिणु णीसंगइं ।  
आवेप्पिणु णियभवणि पसुत्तउ । 10  
चंगउ सहुं महिलइ मइं मारिउ ।  
रविउग्गामि जइजुयलु णिरिक्खिउ ।  
रापं पउरयणे सिरु चालिउ ।

घत्ता—मणि चित्तिउ ताइ विलासिणिण दुक्खिउ कासु कहिज्जइ ॥

इह जम्मि अहव परजम्मि सइं पावै पाउ गिलिज्जइ ॥ १९ ॥ 15

20

हाहासइं मपगु णरोहै  
वहकारिहि लोएहिं गंविट्टउ  
खलु णाउं वि रूउं वि पल्लट्टिवि  
एकमेक खय कंठणे लइयइं  
उप्पण्णाइं सग्गि सोहम्मइ  
सुरु मणिमालि देवि चूडामणि  
आउ ताहं मुणि गणणौसुद्धइं  
उत्तिराणयरिहि कयपर्यायहु  
केण वि पालियसंजमणियरइं

अप्पाणउ णिदिउ णरणाहै ।  
पायमग्गु पुंरि गंवि पइट्टउ ।  
णट्टउ भयभावेण विसट्टिवि ।  
बेणिण वि मरिवि ताइं पाँवइयइं ।  
मणिकूडइ विमाणि रुईरम्मइ । 5  
णं मेहहु सोहइ सोदामिणि ।  
पल्लइं पंव पमाणिबद्धइं ।  
कहिउ सुवणवम्मखयरायहु ।  
मारियाइं विणिण वि तुह पियरइं ।

घत्ता—सा देव पुंडरिंकिणि णयग्गि हुयवहजालहिं उज्जइ ॥

10

रिसिमारय संगहयारि खलु गुणवालु वि रणि बज्जइ ॥ २० ॥

५ M जलंतजलंतिहि; B omits जलंतजलंतहि. ६ M वीमरु. ७ M णिहंधउ इय जंपइ ८ MB वहरिउ.  
९ MB हुयवाहै पउलिउ.

20. १ B गरिट्टउ. २ MB पुर. ३ M णाउं रूउ वि; B णाउं वि रूवं, ४ M कारणे; B करणे.  
५ MB पवइयइ. ६ MB रइरम्मइ. ७ MB गणिणा, ८ M णामहु

18 a पेया लइ इमशाने.

20. 3 b विसट्टिवि प्रकम्प. 7 a आउ आयु.; मुणि जानीहि. 8 a पयणा यहु प्रजाया  
न्यायस्य.

## 21

तं णिसुणिवि सहुं सेण्हि णिग्गउ  
साहणु सिद्धकूड संप्रौइउ  
देवै देविहि क्हिउ क्हाणउं  
अम्हहं मरैणु मुद्धि णिसुणेप्पिणु  
पुरवरु ड्हहुं पट्टु संचलियउ  
एव्व भणेप्पिणु बिण्णि वि जायइं  
आसीणइं वसैहिहि पलियकं  
कंचर्णवम्मै बिण्णि वि भावै  
किं कुइओ सि पुत्त उचसंतइं  
सावउ विरयजुयत्तु किं मारइ

सो गल्लगञ्जिवि णावइ दिग्गउ ।  
तं सुरमिहुणु वि त्तिहि जि पराइउ ।  
तुह तणपण विइण्णु पयाणउं ।  
गुणवालहु उप्परि रूसेप्पिणु ।  
अम्हहुं दइववसेण जिं मिलियउ । 5  
संजमधग् संजमवरकायइं ।  
वंदियाइं कुलकुमुयमियंके ।  
उत्तं मायामुणिवरदेवै ।  
अम्हइं अच्छहुं बे वि जियंतइं ।  
अज्ज वि सो पट्टु हियइ विसुरइ । 10

घत्ता—जेणम्हइं पावइं मारियइं सो सच्चन्थ गवेमिउ ॥

तणुरुह गुणवालणगाहिणेण अप्पउ दुक्कं सोसिउ ॥ २१ ॥

## 22

जइ वि मुयइं तो वि किर ण मुयइ  
जायइं देवइं दिव्वसरीरइं  
वार वार भवमुकिउ पसंसिउ  
कणयवम्मु खमभावै लइयउ  
गउ णियवासहु सो खयरंसरु  
ने वंदहुं संपत्तु सुरंसरु  
भवरु वि सा अच्छर सो सुरवरु  
जिण्णदिव्वज्झुणिरंजियकण्हं  
तां त्तिहि पच्छइ मयमहरामउ  
जिणु चक्केसिं पुच्छिउ पायडु

अम्हइं बेण्णि वि भुंजियअमयइं ।  
अणिमामहिमाईहिं गहीरइं ।  
सुरमिहुणै णियरूउ पदंसिउ ।  
देवदिण्णभूमणवंचइयउ ।  
वच्छंदसि मिबधोसु जिणेसरु । 5  
अरुहदत्तु णामे चक्केसरु ।  
संथुउ संसमेण तित्थंकरु ।  
छुडु छुडु मव्वइं जाम णिसण्हं ।  
अवइण्णउ सइं मीणइणामउ ।  
किं धरयम्मविहणै वावडु । 10

21. १ MB णाइं दिग्गउ २ MB सपाइउ ३ MB मुद्धि मरणु. ४ M वि. ५ B वसुहहि. ६ MB कंचणवण्णो. ७ M उत्तमु. ८ साविउ.

22 १ MB मुयाइं. २ MB दिव्व°. ३ (GKT) p संभवेण इति पाठे आदरेण. ४ M दिण्णदिव्व°. ५ MB तो.

21. 9 a कुइओ कुपितः. 12 तणुरुह हे पुत्र.

22. 7 b संसमेण समीचीनोपशमेन. 10 b वावडु व्यापृतत्वम्.

समउ पुरंदरेण किं णायिउ  
केवलणाणपरिवे दिट्ठउ

देविजुयलु दरिसियमुहरायउ ।  
चक्कीसहु जिणणाहे सिट्ठउ ।

घत्ता—बिहिं मालायारिहिं दिट्ठु वणे वंदिउ मुणि ह्यकम्मउ ॥

कर मउलिकरिवि आयणियउ भावे सावयधम्मउ ॥ २२ ॥

## 23

लउं घउं घरविहि परिवट्ठइ  
उत्तमंगु भत्तिइ णावेप्पिणु  
वे वि विवंति चंद्रविणयणइं  
एण णिओएं गलियइ कालइ  
एक्कहि पाणिपांमि फणि लग्गउ  
सहि णियसहियहि पासु पधाइय  
विसमचिसाणलेण जलजलियइं  
दोहिं वि देरवेयणइं संगंतिहिं  
भोर्याकंखइ करिवि णियाणउं  
घरणिणाह लुड्ड लुड्ड उप्पणउ  
पयउ विण्णि वि णियवइपच्छइ  
अज्जि वि णिवडिउ तणुजुयलुलउं

जाहुं जिणिदभवणु ण पयट्ठइ ।  
देव णमोरहंत पभणेप्पिणु ।  
पढमं चिय कुसुमंजलियणइं ।  
एक्कहिं वासरि लवलिलयालइ ।  
हाहारउ वयणाउ विणिग्गउ । 5  
सा वि भुयंगमेण आसाइय ।  
बिहिं वि सरिीरइं महियलि घुलियइं ।  
दिट्ठउ इंदागमणु मरंतिहिं ।  
लउं सुरवइदेवीठाणउं ।  
तेण समागयाउ सुरकण्णउ । 10  
पयहु केरउ अच्छइ कच्छइ ।  
लोएं जोइउ गयजीउलउं ।

घत्ता—कह कहइ सुलोयण तहु जयहो भरहवरणणवियंगहो ॥

कंतीइ पयावे हुज्जयहो पुष्कयंतगुणतुंगहो ॥ २३ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्कयंतविरइप

महाभव्यभरहाणुमणिणए महाकन्वे जिणधित्तपुष्कंजलिफलं णाम

तीसमो पणिच्छेओ समत्तो ॥ ३० ॥

॥ संधि ॥ ३० ॥

१ M विण्णायउ, ७ MB णारिजुयलु.

23. १ MB लइयउ, २ B वर घर°, ३ MB जाहं, ४ MB गर° ५ MK सहंतिहिं; T सरंतिहिं.

६ MB भोर्याकंख करिवि, ७ M गुणवंगहो.

23. 1 a घर वि हि पुष्कयंतगुणविक्रयादिशुद्ध्युपायः. 8 a सरंति हिं स्मरन्तीभिः. 11 a णियवइपच्छइ निजपतिपश्चात्; b कच्छइ अरण्ये, 13 पुष्कयंतगुण तुंगहो पुष्पदन्तौ चन्द्रादिस्थौ तयोर्गुणौ कान्तिः प्रतापश्च तौ तुङ्गौ महान्ती यस्य.



XXXI

जिणवयणइं आयणिणवि  
मालइमालामालिउ

णियहिउल्लइ मणिणवि ॥  
सहुं कंतइ मणिमालिउ ॥ धुवकं ॥

1

गउ सिरिमाणु  
णहि विहरंतउ  
उण्णयतालउ  
णाउं पसिउउ  
इंसहिं धवल्लिउ  
वल्लजलहल्लिउं  
गयमयम्मामलु  
पत्तहिं णोलिउ  
विट्ठउ मणहरु  
मणि विण्णुरियउ  
कर्यरिसिसेवें

णवकमलाणु ।  
काणु पत्तउ ।  
धण्णयमालउ ।  
महिरुहरिउउ ।  
चक्कहिं मुहलिउ ।  
कमलहिं फुल्लिउं ।  
केसरपिगलु ।  
भमरहिं कालिउ ।  
सर्पसरोवरु ।  
भवें संभरियउ ।  
भासिउं देवें ।

5

10

अप्ता—आसि जम्मि संवियधणु  
तुहुं रइवेगपियारी

हउं सुकंतु वणिणंदणु ॥  
होनी घरिणि महारी ॥ १ ॥

15

2

दीसइ पुरि एह मुणालवइ  
ण धरियइं कह व चीरंचलइ  
इह माणैहरणभयविहडियइं

जहिं इइं विहिं वि विवाहरइ ।  
उट्टेउ लमाउ पच्छलइ ।  
धावंतइं विणिण वि णिवडियइं ।

1. १ B ण कमल°. २ MB काणणि. ३ M केसरि ४ MB सच्छ° २ MB भउ. ६ B कय-  
सिरिसेवें. ७ MBK रइवेगपियारी.

2. १ MB णउ धरिय. २ MB पाण°.

1. ३ a सिरिमाणु लक्ष्माभोक्ता.

इह तुह पयलोहिउं पयलियउं  
 इह कंटर लग्गउ कंञ्चुयउ  
 एहु सो सरवर खगभूसियउ  
 एत्थेत्यु जाम सो धरर खलु  
 सो सत्तिसेणु राणउ सुयणु  
 पुब्बिल्लउ जम्मु णिहालियउ  
 इय वयणु वियारिउ जाम जैहिं  
 अमरें विहुणेप्पिणु सिरकर्मलु

धत्ता—वेणिण वि रमणरसङ्गं  
 पारावयभैवु पत्तं

3

पुणु उप्पण्णं विज्जाहरं  
 भवदेवं विडालउ नलवरउ  
 सो एवहिं जायउ एहु जइ  
 परिभावहुं एयहु तणिय मइ  
 इय जंपिवि हयवम्महसरहु  
 कय वंदण पुच्छिय धम्मविहि  
 सत्थे सहुं लेसासंख मुणि  
 हउं किं पि ण यौणउं णवसंघणु  
 कयैगाद्दु तियसहु णउ रहिउ  
 जिह जीवाजीवपुण्णगइउ  
 जिह आसवसंवरणिज्जरं

इह महु उप्परियणु वियलियउं ।  
 इह दोहं मि देहकंपु हुयउ । 5  
 जसु जलेण देहु आसासियउ ।  
 तावेत्थु जि दिट्ठउ पबैलु बलु ।  
 संभरहि ण किं तुहुं हलि सुयणु ।  
 ता देविइ सिर संचालियउ ।  
 रिसि एक्कु णिरिक्खिउ ताम तहिं । 10  
 पुणु जंपिउ वण्णपंतिसरलु ।

जेण णिहेलणि दड्ढं ॥  
 अद्धं णिग्गयरत्तं ॥ २ ॥

हुणियां मसाणइ मुणिवरं ।  
 जो हौतउ चिरु दुक्कियणिरउ ।  
 इज्झहुं संसारु विचित्तगइ ।  
 किं रुसइ किं अम्हं खमइ ।  
 आसण्णु णिसण्णउ जइवरहु । 5  
 रिसि भासइ सुय सुयणाणणिहि ।  
 ए पंति पपुच्छहि तच्च गुंणि ।  
 किं देवहु करमि धम्मसवणु ।  
 पुणु तेण तासु तिजगु वि कहिउ ।  
 जिह वड्डियाउ पावयमइउ । 10  
 जिह बंधमोक्खभावंतरं ।

3 MB पवर. 4 वण्णु. 5 M तहिं. 6 M °कवंलु. 7 MB °भउ.

3. 1 MB भवदेउ. 2 MB मुणि. 3 K याणमि. 4 B समणु. 5 MB किय°.

2. 8 a सु य णु सुजनः; b सु य णु हे सुतनु.

3. 7 a ले सा सं ख वट्.

तिह मुणिणा सयलु पयासियउ  
परं लहउ सिसुत्तणि तवर्धरणु

घत्ता—तं णिसुणिवि हयरायइ  
केवलिकहियउ वइयरु

4

घरासिहरारुढरामियखयरि  
तहिं कुंभोयरु णिवसइ वणिउ  
उन्विण्णउ णिलयहु णिद्धणहु  
जइ वंदिवि सावर्ययउ गहिउं  
परवहियम्मेणुंणियहियहो  
जे दिण्णउं अप्पहि तासु सुय  
तापण सहत्थे पेत्थियउ  
परंभारउ परथीद्ववहरु  
लुद्धु वि पहि बद्धु णियच्छियउ  
नेहि वि अक्खिउं णियणियचरिउं

घत्ता—जेण जीवकुलु हिंसिउ  
जेण परद्वसु हित्तउ

5

जो लोहकम्पां भावियउ  
मइं भणिउं ताये पयइं व्रयइं

तं णिसुणिवि तियसें भासियउ ।  
भणु वइरायहु कारणु कवणु ।

मउगंभीरइ वायइ ॥

देवहु अक्खइ मुणिवरु ॥ ३ ॥ 15

अर्थाह पुंडरिंकिणि णयरि ।  
णामेण भीमु णंदणु जणिउ ।  
हैंउं कीलइ गउ णंदणवणहु ।  
घरु आयहु बप्पे णउ साहिउं ।  
व्रंउ किं सुंदरु दालिहियहो । 5

आवेदि जाहुं लहु दीहभुय ।  
मुणिवसहु हैंउं पुणु च्छियउ ।  
परम्मविहट्टणु अलियसरु ।  
जणणे पक्केकउ पुच्छियउ ।  
हिसालियवयणहिं परियरिउं । 10

जेण अम्मच्चउ भासिउ ॥  
जसु मणु परवहुरत्तउ ॥ ४ ॥

मो कवणु ण विट्ठे तावियउ ।  
मइं गहियइं वंदिवि रिसिपयइं ।

१ MB तवचरणु.

4. १ MB °वउ लयउ. २ MB °णुणियदियहो, G णुणियदियहो and gloss निद्वारहितस्य, K णुणियदियहो but corrects to °णुणियदियहो; T उणियदियहो. ३ MB वउ. ४ MB पुणु हुं ५ MB read in place of this line. पाणहरु अलियभासिरउ थेणु, परमहिलारउ मणमडलरेणु; T मणमडलरेणु मनसि मलं पापं रेणुश्च ज्ञानदर्शनावरणलक्षणं रज.. ६ MBK परस्सु विहित्तउ and gloss in MK on विहित्तउ विशेषेण हतम्; T परस्सु वि परद्रव्यमपि.

5. १ M reads this line as मइं गहियइं वंदिवि रिमिपयइं, मइं भणिउ ताइ पयइं वयइ. २ MK ताइ. ३ MB वयइं.

4. 5 a परव हिय म्मे ण भारबाहकर्मणा; उ णिय हिय हो निद्वारहितस्य.

एयं वयधिवरंमुह बद्ध जिह  
तं गिसुणिवि पिउणा इच्छियउ  
गय विणिण वि णयरुज्जाणवरु  
तहु वयणें वणिवरु उवसमिउ  
दोर्गिच्चें किं वर करमि तवु  
मइं एमं णएण समुल्लविउ  
तसथावरजीवहुं कयदयइ

हउं रीयं बज्जमि जणण तिह ।  
मइं देसच्चरिसु पडिच्छियउ ।  
पणविउ मुणि भुवणाणंदयरु । 5  
घरधम्मि जिणिंदसेट्ठि रमिउ ।  
किं णासमि लद्धउ मणुयमवु ।  
पिउहत्थहु अप्पउ मेल्लविउ ।  
उद्धरियइं पंचमहव्वयइं ।

घत्ता—कयफणिसुरणरसेवहु  
दूसहुदुक्खणिंरंतरु

पायमूलि जिणदेवहु ॥ 10  
गिसुणिउं णियजम्मंतरु ॥ ५ ॥

6

महु तिहुयणणाहें ईरियउ  
गिसिं चिरु भवदेवें विण्णिएण  
पणु तं चि वि जुयलउं लक्खियउं  
जइयहुं ताइं जि तवतत्ताइं  
तइयहुं होंतां सि तलारु तुहुं  
गुणवालें तुहुं अण्णेसियउ  
जाइवि अण्णेत्थ वासु रइउ  
पइं पुणरवि णयरि पवेसु कंउ  
लोयहु केरउ धणु चोरियउ  
तें आरक्खियउल्लु गराहियउ  
तुहुं विज्जुचोरु दिट्ठउ धरिउ

पइं वणि मिहुणुल्लउ मारियउ ।  
होंतेण कालकंदलपिएण ।  
मज्जारें होइवि भक्खियउं ।  
पइं धरिवि हुयांसणि हिस्साइं ।  
ओसहिगुणेण णट्ठो सि लहुं । 5  
कह कह व ण जमउरिं पेसियउ ।  
सो णरवइ हुँउ जं पावइउ ।  
अंजणगुणेण दिच्चारु हउं ।  
पउरें रायहु पुक्कारियउ ।  
तेण त्रि पडियंजणु साहियउ । 10  
पइं वित्तणिवासु वि वज्जरिउ ।

✓ MB ए. ५ MB पावें. ६ MB दोगतें किंकर. ७ T एण णएण. ८ MB दूसहु.

6. MBKT रिसि and gloos in T रिसि हे भीममुने. २ M °कंदालि°. ३ MBT तं चि व  
जुवल्लुउं खियउं. ४ K हुयामें णिहिताइं. ५ MB अण्णत्थ. ६ MB हुयउ पव्वइउ. ७ MB कयउ,  
८ MB हुउ; T हउ

5. 7 a दोग चें दरिद्रेण.

6. 2 b °कंदल° कलहुः. 3 a तं चि वि जुयलउ तदेव पक्खियुगलम्. 3 b दिच्चारु हउ इच्छिचोरो  
इतः, अदस्यो जातः.

अस्ता—कयरमणीयणकीलणि कंचणयारणिहेलणि ॥  
 पई णिहियाहं जियकइं हरिबि सत्त माणिकइं ॥ ६ ॥

7

तं मंदिरु दाविउ णिवर्णरहुं  
 सोण्णारु वि मइं हक्कारियउ  
 पहुणा सो पुंछिउं भोयणउं  
 आणाविय मंणि गेहे णिहिय  
 जिम्ब खाहि छाणु जिम देहु घणु  
 इय विमइहि दंडु वियारियउ  
 गोमउ वि ण भक्खहुं सक्कियउ  
 पडिवाडिइ सो तिण्णि वि करिवि  
 तुहुं पुणु चंडालहु ढोइयउ  
 कुद्धउ दोहिं मि पहु घणतिमिरि  
 पईं भणिउं पाण प्राणहं हरणु

अस्ता—ता चंडाले भासिउं<sup>१५</sup>  
 जं संसारइ पत्तउं

करवालकौतकंपणकरेहुं ।  
 मग्गिउ ण देइ विहिवारियउ ।  
 तं घरणिहि भासिवि लंछणउं ।  
 वणिमालइ ओलक्खिवि गहिय ।  
 जिम्ब विसहहि मँल्ल मुट्टिहणणु । 5  
 मल्लै घायहि ओसारियउ ।  
 वसु ढोयइ चित्ति चवक्कियउ ।  
 दुम्मइ दुग्गइ पत्तउ मरिवि ।  
 व्रंउ लइयउ तेण ण घाइयउ ।  
 दोण्णि वि बंधिवि<sup>१०</sup> घसिय विवरि । 10  
 हउं संप्राविउ किं णउ मरणु ।

णिसुणहि कम्म दुविलसिउं ॥  
 मइं णियदेहै भुत्तउं ॥ ७ ॥

8

इह होतउ गुणवालउ णिवइ  
 पुहई वसु णामे धीरमण  
 गंठयत्ते सरिस मेरुगिरिहि  
 अच्छंतहं ताहं तेत्थु सघरि

राणी कुबेरसिरि सच्चवइ ।  
 सच्चवियहि भायर बिण्णि जण ।  
 पक्कु जि बंधउ कुबेरसिरिहि ।  
 णिवक्खरिदु कीलंतु सरि ।

7. १ M °णराहं; B णरहं. २ M °कराहं; B करहं. ३ M सोणारु; B सुण्णारु. ४ MBK पुच्छिउ. ५ MBK मणि मणिगणि णिहिय. ६ M मल्लि. ७ MB भक्खहि. ८ MB चवक्कियउ. ९ MB वउ; K वउ but वउ in second hand. १० MB घल्लिय बंधिवि. ११ M मइं पमणिउं पाणु पाणहरणु; B मइं पहणिउं पाणु पाणहरणु. १२ MB संपाइउ. १३ MB भासियउं. १४ MB दुविलसियउं.

8. १ MB गुरुयत्ते.

12 b कंचणयार° सुवर्णकारः.

7. 3 b लंछणउं अभिज्ञानम्. 11 a पाण आण्डालः.

8. 2 a पुहई प्रयुषीः.

वणि समवसरणि जिणदेवझुणि  
अवलंबिउ हिंसविरंसियउ  
अधिसुद्धउ गालु ण अहिलसइ  
करि कवल्लु ण गिण्हइ प्राँणपूउ  
ने पलपिंडउ दरिसावियउ  
पणु अणु वि सुँदु पयच्छियउ

आयण्णवि जायउ झत्ति गुणि । 5  
जिउँ जोयवि सणियउं दिण्णु पउ ।  
गयवालउ महिवालहु दिमइ ।  
ता राएँ पहिउ कुबेरपिय ।  
ते ण णियइ कँणि वरभावियउ ।  
तो हत्थिदेण पाँडिच्छियउ । 10

घसा—वारणु दुण्णयवारउ  
इय मरवंतु वियाणियउ

हुयउ अणुव्वयधारउ ॥  
वणि पाणहु संमाणियउ ॥ ८ ॥

9

अँण्हि दिणि णरणाहहु तणउ  
घरु आयउ णञ्चाविय दुहिय  
पुच्छिय राएँ विरइयतिलय  
मयणाहिविसेणुअंतियए  
मुद्धइ णीराउ पजंपियउ  
णियघरु जाणवि वणीसरहु  
सा सुहएँ पडिवयणेण ह्य  
संबोहिय सहियइ हंमगइ  
दुम्महवम्महमर्गणवहिय  
सहि वट्टइ विचु दुसंथवउ  
हलि पंचमु मरंसु समालवहि  
तो मरउं णिरुत्तउं कहियउ मइ

णहु णट्टमालि णवतोरणउ ।  
रसविअमहावभावमहिय ।  
णामेणुअलमाला विलय ।  
वणिवइसरुउ चिंतंतियए ।  
राएँ णियहियइ विवपियउ । 5  
वेमाइ णिउंजिय दूइ तहु ।  
पँणयंगणरयहु णिविन्ति कय ।  
दुल्लहलंभेसु म कगहि रइ ।  
ता जंपइ पवगविल्लंभिणिय ।  
संभूयउ वल्लहु णवणवउ । 10  
जइ सुँदुवु कह व ण भेलवहि ।  
अम्ममक्खि मवेवउं माइ पइ ।

२ MB हिंसविरसि जिउ. ३ MB जोयवि सणियउं पहि दिण्णु पउ. ४ MB पाणपियउ. ५ MB करिवरु भावियउ. ६ MBK सुदु. ७ MB अइमइ°.

9. १ MB add before this the following lines: पुणु णिवए तूमिवि दिण्णु वरु, गेट्ठि पउसु आणदयरु; अच्छउ ( M अच्चउ ) वरु थवणीराय महु, जइया मग्गससि देसि पहु. २ MB पणियगण°. ३ MB मग्गणवणिया; K °वणिय°. ४ MB °विलासिणिया. ५ MB सरु मुग्गमा° ६ MB सुहउ णउ महु मेरुवहि. ७ MB मरमि.

8 b पहिउ प्रेक्षितः.

9. 4 a मयणा हि° कामसर्पः, 5 b राएँ रागेण, 12 b असमक्खि परोक्षे.

घत्ता—सहि पभणइ अट्टमदिणि  
दियवइ अरुहु धरेप्पिणु

थक्कइ जिणभवणंगणि ॥  
कायविसग्गु करेप्पिणु ॥ ९ ॥

10

तइयहुं तुह संचियज्ञाणरसु  
इय तेहिं बिहिं वि आलोइयउ  
थियुं ओलंबियकरु धीरुं जहिं  
उच्चाइवि आणिवि वालियहं  
मुद्धाइ सुरयविहिं मयलु कउ  
हे<sup>१</sup> णीरसत्तु दुब्बोल्लियउ  
तं गणण वि आयणियउं  
उवहसिय वेम णर परिहरिवि

उच्चाइवि आणमि सो भवसु ।  
तां अट्टमिणत्तु पराइयउ ।  
आलिइ जापंपिणु तुरिउ तहिं ।  
पिउ अप्पिउं उप्पलमालियहे ।  
वरु थक्कउ णावइ कट्टमउ । 5  
जहिं अक्किल्लउ तहिं पुणु घल्लियउ ।  
वाणिवरु थिरत्तणु मणियउं ।  
अग्गि थक्की बंभत्तेरु धरिवि ।

घत्ता—लुयासुत्तं वज्झइ  
वेसहि जडयणु णिवडइ

मसउ ण हन्थि णिरुंज्झइ ॥  
विउसहु तहिं मणु विहडइ ॥ १० ॥ 10

11

तलवरसुउ अवरु वि मंत्तिसुउ  
तहिं मत्तमहंमयगामिणिहे  
एक्कहु जि एक्क दुक्खालियउ  
परिवारिडइ दिण्णवयणणियल  
पिहिइं वि तहिं विहिणा आणयउ  
जां दिण्णउ सुकियसाम्म रसहिं  
सो आणप्पिणु महु देमि जइ  
मंजूस सक्खिकय गउ घरहु

भोयालउ णिवंभोइणिहि सुउ ।  
एण घरु आया कामिणिहे ।  
भयभावें मणु संभालियउ ।  
मंजूसाह पइमारिय मयल ।  
गइमग्गिरु तरुणइ भाणियउ । 5  
महु तणउ हारु पइं णियससहि ।  
तो देमिं हउं मि तुह रमणरइ ।  
वीयइ दिणि उग्गमि दिणयरहु ।

८ MB काउविसग्गु.

10. १ MB तहु संचिय. २ MB तावट्टमि. ३ MB थिय. ४ MB वीरु. ५ M आवेप्पिणु.  
६ MB अप्पउ. ७ MB हो णीरसु ति. ८ MB याणियउ. ९ M विरुज्झइ.

11. १ MB णिवभोयणिहे. २ MB 'महाग्गय'. ३ MB पिहिंवि. ४ MB रउ मग्गिरु तरुणिय.  
५ MB देहि. ६ K देवि.

10. १ b<sup>०</sup>णत्तु गग्गिः. ३ b आ लि इ सख्या. ९ ल या<sup>०</sup> कोलिक.

11. १ b णिव भो इ णि हे सु उ दासीपुलः 5 a पि हि इ पृथुधीनाम्ना सत्यवर्ताभ्राता.

जिह हारु नेण उच्छवि गहिउ  
सुग्ग्याकंखइ पडिवणुं जिह  
माणिणिइ मंति ओहाभियउ

जिह लोहिद्वे पुणरवि रहिउ ।  
गयहु विसंतु पउचु तिह । 10  
णिज्जीवन्निख आणावियउ ।

घत्ता—गहियंगारयहन्यहि दासिहिं भणिउं समत्थहिं ॥  
फुइ मंजूमि समासहि मा हुयवहमुहि पैइसहि ॥ ११ ॥

## 12

तामायसवल्लयविहसियए  
पडिवणु हारु गयेदियहि पइं  
वे देहि विहसणु सुंदरिहे  
उप्पणु च्छेत्तु णियसिरु भुण्णिउं  
परधणहरगारउ माडियउ  
ते तिणिण वि तहिं णिग्गय कुविड  
णरणहें पुच्छिय सच्चवइ  
पिहिविहि अलद्धकंचणधवहु

घत्ता—खलु दुव्वयणिहिं दोच्छिवि  
महिवैइणा आणाविउ

सहसा घोसिउ मंजूसियए ।  
नुहुं कट्टु कट्टु किं भणहि मइं ।  
मा पडहि मंति णारयदरिहे ।  
रुहिं तरु चवंति पडुणा भणिउं । 5  
मंजूसहि मुहुं उग्घाडियउ ।  
णारिहि के के णउ मलिय जड ।  
सा भणइ भडारी सुद्धमइ ।  
मइं हारु समप्पिय बंधवहु ।  
ता समंति णिम्मच्छिवि ॥  
तहि भूसंण देवाविउ ॥ १२ ॥ 10

## 13

आणंदु पवड्डिउ माणिणिहे  
तें दंडणु अपु पवियप्पियउ  
भोऽणि तलवर मंतिहि तणय  
सिरफमलु लुणह पुहइहि तणउं  
जइयहुं परिणामु विहावियउ  
तइयहुं जो पइं सइं दिणु तरु

मणि रोसु रायचूडामणिहे ।  
असहंतें एम पयंपियउ ।  
तिणिण वि धाडह दसियविणय ।  
ता वणिवरु चवइ सुहावणउं । 5  
जइयहुं कुंजरु भुंजावियउ ।  
सो अत्तु देहि णिव मंतियरु ।

७ MB पडिदिणु. ८ M मणि णियए, B माणिणियए; ९ MB मंजूस. १० M पयसहि.

12. १ MB ता आयस°. २ MBK गइ दिवहि. ३ MB महिवइ. ५ MBK भूसणु.  
13. १ MB ते दंडणु पुरियप्पियउ; ( B पवि° ) २ MB पइं जो महु दिणु. ३ MBT पट्टवहि.



ए परदेसहु मा पिंडवहि  
ना तहिं धरणीसैं किउं करुणु  
वणिवयणु णरिदैं जं कियउ  
उवयारु खलहु दोसैं सरिसु  
संचितइँ सो मार्गम मरमि

एहु वि मा खमो खंडवहि ।  
वारिउ विदेसवियरैणु मरणु ।  
तं पिहिविचिनु रोसंकियउ ।  
फणिदिण्णउं दुद्धु वि होइ विसु । 10  
मेट्टिहि णिग्गहु अवसैं करमि ।

यत्ता—पुणु गण्ण णइतीरण  
विज्जाहरकरयियलिय

नेण तुसारसमीरण ॥  
अंगुत्थलिय णिहालिय ॥ १३ ॥

14

अंगुलियइ कय सुहदाइरणिय  
किं जोयहि मंनै पुच्छियउ  
महु कामरुवधरि मुहडिय  
णं पिययम णाहामिक्खविय  
पुणु मगिर्यं खयरं दिण्ण तहो  
लहुयउ भायरु वसु सिक्खविउ  
एक्कामणि चडियउ राणियहं  
सां पेक्खइ णिययसहोयरउ  
पिसुणं पुहवीसहु विण्णविउं

ना खयरु पलोयइ मेइणिय ।  
तेणुत्तउं इह हउं अच्छियउ ।  
एत्थेत्थु मित्त कन्थइ पडिय ।  
तं तहु सा विहम्मिदि दक्खविय ।  
संतुट्टउ गउ णियमंदिरहो । 5  
मुहइ कुबेरपिउ सो जि किउ ।  
सक्खइहि धम्मवियाणियहं ।  
जणु पेक्खइ वणि अयज्जणिरउ ।  
परमेसर तुह कलसु गमिउं । 10

यत्ता—णवजोव्वणमयमत्तं  
मा परुं चरु संजोयहि

धुउ धर्णवइर्याह पुत्तं ॥  
जाइवि अप्पणु जोयहि ॥ १४ ॥

४ MB ०विरयणु, ५ MB चितइ सो मार्गम पुणु मरमि, ६ MB ठाडवि,

14. १ MB कं पियमटणा हासैं खविय, २ B मगिगवि, ३ M सो ४ MB वाणं णिवभजरउ, ५ K षणजोव्वणं, ६ M पियदत्ताहं, ७ M वर णर

13. 7 a पिंडवहि प्रेषय, 13 अ गुत्थ लिय मुद्रिका,

14. 4 a णाहामिक्खविय भर्ता अशिक्षिता, 8 b अयज्जणिरउ अकार्यनिरतः, 11 परुक्ख अन्त्यं मृत्यम,

## 15

मायावत्सत्तविलंबियउ  
दुष्पिच्छमच्छरुक्रोर्येणहिं  
ण वियाणित कवडरुवरयणु  
शरु जाइवि रायहु पेसणिण  
पिहिं वीं चारित्तमहिद्धियउ  
वणिवइं मारहुं णेवावियउ  
जूरइ सच्चवइ कुबेरमिनि  
उण्हउ ममहरु रवि मीयलउ  
अहवा लइ पउं होइ जइ वि  
तहिं भवमरि सो चंडालयहु

यत्ता—पाणे ब्रह्मि विमुक्ती  
म्वगलट्टि जमदई

मुद्धइ डिंभउ तिरि चुंबियउ ।  
दिट्टउ राणं सइं लोयणहिं ।  
किउ भिउडिभंगभंगुरवयणु ।  
जमदृएण व जमसासणिण ।  
पडिमाइ परिट्टिउ कडियउ । 5  
उप्फाले जणु मेलावियउ ।  
हा किं चत्तु हयउ मेरुगिरि ।  
हा किं जायउ धम्महु पलउ ।  
तहु भच्चहु मीत्तु सुद्ध तइ वि ।  
अप्पिउ तालियकरवालयहु । 10

त्रणिगलकंडलि दुक्की ॥  
सियहागवलि हई ॥ १५ ॥

## 16

साहु त्ति भणिवि पणावियपयण  
सांवण्णभूमि मणिमंडविय  
णिक्करुणु साहु जो णिम्महइ  
अचंरुक्कहिं मच्छरणिच्चरहिं  
अण्णेक्कइं वेउद्धाइयइं

पउमासणु किउ पुरदेवयण ।  
तहु पाडिंहरसिरि णिम्मविय ।  
भूपहिं णिबद्धउ सो पुहइ ।  
णिंदिवि सिंरि चूरिउ टक्करहिं ।  
जहिं णरवइ तहिं संप्राइयइं । 5

15. १ MB 'वहसत् २ MB 'कोवर्णाहिं, ३ MB पिहिविवि चरित्त°. K पिहिवे चारित्त°. ४ MB add after this the following lines:—

पुण हट्टहु मज्जे तालियउ  
णि तंतु पेक्किववि जणु स्वह  
कु वि गवइ राउ कु वि पुहइअउ  
जो दुरणहिं तरणहिं जत विर  
उद्धणु जेम वाट्टु जणेण  
सो गवहिं चरणहिं चरइ कित

सव्वेहिं जणेहिं णिहालियउ ।  
कु नि थामि थामि धाहउ मुयइ ।  
सुदरु मुसीत्तु दुट्टु पावियउ ।  
जाणहिं जपाणहिं गुणपवरु ।  
रोवो सयलं परियणेण ।  
दुक्कम्महिं पायउ परिमु जिह ।

16. १ M णिक्करणु. २ MP: सिरु. ३ MB अण्णेक्क. ४ MB संपाइयइं.

15. 1 a मायावत्सत्त मायावणिवत्त्वम्. 3 a °रयणु रचनम्. 4 b जमसासणेण यमाक्कवा.  
b b उप्फाले पटहन्वनिना.

हा दुदु दुदु महं मंति यउ  
 हा दुदु दुदु महं भासियउ  
 खंतवु कैंरहु णीमल्ल सुहुं  
 जिह तुम्हहुं तिह तिजगहु जि स्वमिउं  
 घत्ता—ता वृरुज्झियमच्छरु  
 गउ गुरु वंदि वि सग्गहु

हा दुदु दुदु महं चिनियउ ।  
 हा दुदु दुदु महं ववमियउ ।  
 एवहिं ण वइरु केणावि सहं ।  
 हउं एवहिं भणमि संजमिउ । 10  
 अमरु सवामरु मच्छरु ॥  
 ण ढलित्ते जिणवग्गगहु ॥ १९ ॥

## 20

सो भीमसाहु विहरंवि महि  
 आवेवि सिवंकरि मंडियउ  
 उप्पणउं केवलणाणु खणे  
 तहु एक्कु ल्लुत्तु दो चामरइं  
 पोमांमणु मणिमंडवु विउल्लु  
 पैहुवज्जियाउ चउजक्खणिउ  
 तहिं अवसरि पवणुइयउ  
 विणु पइणा ताहिं णियच्छियउ  
 जइणा पउत्तु महमाहणिया  
 वसुसेण वसुंधरि धारिणिय  
 मिग्गिइ असोय सेती विमल  
 पर्यहिं अट्टहिं वि सुणिम्मियउं  
 कर्णउ मरि वि सुहसइयउ

घत्ता—रइसेणा सुग्गामिणि  
 सुहवइ कोमलहत्थी

वसुपालणयग्गि उज्जाणवहि ।  
 तहु मोहु असेसु वि णिट्ठियउ ।  
 कंपावियसुग्गवस्सुग्गभवणे ।  
 णवियइं चउविहइं वग्गमरइं ।  
 हेसुज्जल्लु ल्लज्जइ धग्गणियल्लु । 5  
 आयउ अण्णाउ वियक्खणिउ ।  
 देवीउ अट्टट्टु समागयउ ।  
 को पइ होही जइ पुच्छियउ ।  
 इह पुग्गि सुग्गदेवहु गंहणिया ।  
 अण्णक पुहइ सुहकारिणिय । 10  
 चोत्थी अग्गामि तासु विमल ।  
 वणि सुणिहि पासि गहियइ वयइं ।  
 अच्चयवइ देविउ हइयउ ।

अवर सुसेण सुहाविणि ॥  
 चित्तसेण सुपग्गन्थी ॥ २० ॥ 15

३ MB करहि ४ MB तुम्हहु तिजग°, ५ MB चलित्ते,

20. १ K पउमासणु, १ MB मणिमंडउ, ३ MB विमल, ४ MBK omit this line.

५ MB चयारि, ६ MB पवुत्तु, ७ MB सुणिम्मलइ, ८ MB कंताउ.

20. 18 a °सुइयउ °सुचित्ताः.

21

लंजियउ चयारि वि कयवयउ  
 तहिं चिस्तवेय जंक्लेसरिय  
 अञ्जु जि उप्पणउ दिव्वकुले  
 सुरदेवै वाणु ण मण्णियउं  
 मुउ इयैउ गहहु दुइंतु सहु  
 पुणु दाढाभासुर घोणसउ  
 महं समउ आसि सो धिचु विले  
 जिणधम्मु तिसुद्धिइ भावियउ  
 तेण वि तहु आउ पयासियउ  
 ओसारियदृमहभवरिणइं  
 उप्पणउ एवहिं फुहु जि दिवि  
 सो पइ तुम्हारउ णवियसुरु

संभूइयाउ वणदेवयउ ।  
 वंणवइ वणदेवी धणसरिय ।  
 इह एयउ पेच्छहु गयणयले ।  
 रिसिदिज्जंतउं अवगण्णियउं ।  
 पुणु वायसु पुणु उंदुरु सरहु । 5  
 पुणु हुउ चंडालु कुमाणुसउ ।  
 हउं मरिवि पइयउ णरयविले ।  
 वउलें चिरु जइवइ सेवियउ ।  
 सत्त जि अहरत्तइं भामियउ ।  
 संणासु करिवि रिसिसमदिणइं । 10  
 को पुसइ णं विहिणा विहिय लिवि ।  
 लइ सो जि महारउ धम्मगुरु ।

घत्ता—सुरदेवहु जा मायणि सा मरेवि तुच्छोयरि ॥  
 एत्थु जि देसि चिरंतणे उप्पलखेइइ पट्टणे ॥ २१ ॥

22

सिरिधम्मपालणिवणंदियहे  
 मुणिदाणहलेण सुसीलिणिय  
 तहिं तहि विवाहि कयणिग्गहहो  
 रइसंभवसोक्खाकंखिणिहिं  
 भणु भणु भुवि को अम्हहं रमणु

उप्पण्णी पुत्ति अण्णियहे ।  
 जगसुंदरि मंदरमालिणिय ।  
 अम्हइं मुक्कां बंदिग्गहहो ।  
 गुरु पुच्छिउ चउहुं मि जक्खिणिहिं ।  
 ता कहइ काममयविद्वैवणु । 5

21. १ MB चक्केसरिय. २ MB धणवइ धणदेवी. ३ MB गहहु हुउ ४ M दाढीभासण, B दाढा भीसणु. ५ MB वि.

22. १ MB °धम्मवालसिरिणादियहे. २ MB मुक्कइ. ३ MB °विद्वमणु.

21. 1 a लंजियउ दास्य. 8 b वउले बकुलनाम्ना चाण्डालेन. 10 b रि सि समदिण इ वस दिनादि.

22. 2 b मंदरमा लि णिय मन्दरमालिनीनाम्नी.

जं पाणें कय संणासगइ  
दरिसावियसीहवग्घमुहहे  
सो हांसइ तुम्हहं हिययहरु

तहु तणउ पुत्तु अज्जुणु सुमइ ।  
अणसणि थिउ सिद्धसेल्लगुहहे ।  
वरु सूहउ णावइ कुसुमसरु ।

घत्ता—माणवदेहु सुपप्पिणु  
गाढालिंगणु देसइ

जक्खु सुरिंद हवेप्पिणु ॥

तुम्हहं पुलउ जेसणइ ॥ २२ ॥

10

## 23

अच्चयपडिंदु सिंगारधरु  
नें वंदिउ णियगुरु गरुयगुणु  
जक्खिहं जाणवि जसंज्जणहो  
आगामिउं पुणु पसंसियउ  
तहिं अवसरि वणिवरदत्तु णरु  
जायाउ ताउ णिहंसणउ  
अंसहंतें विरहविरोल्लियउ  
मुउ णागदत्तवणिवरहु सुउ

ह्यउ आयउ सो बउलचरु ।  
सहियउ देविहिं गउ सग्गु पुणु ।  
संणासु करंतहु अज्जुणहो ।  
तहु णियमहिलत्तणु भासियउ ।  
लगउ देविहिं पसरंतकरु ।  
विडि खुत्तउ वम्महम्मणउ ।  
तेणप्पउ कक्कणि वल्लियउ ।  
सहससि पिसल्लंदेउ हुउ ।

6

घत्ता—नेत्थु जि णयणाणंदणु  
गेहिणि तासु वसुंधरि

पुरि सुकेउ वणिणंदणु ॥

वाहइ णौहु वसुंधरि ॥ २३ ॥

10

## 24

अणुणु वि फणिदत्तु णामु वसइ  
वणित्तं लोयदिट्ठिभवणु  
पुर्याहिरि पइ किसि करइ जहिं  
दहिओल्लिउं अल्लयमींसयउं

तहु कंत सुणेत्त सुदत्तसइ ।  
कागविउ तेण णायभवणु ।  
अण्णहिं दिणि वल्लिय घरिणि तहिं ।  
भोयणु गेणहवि सुइवासियउं ।

४ MBK ज.

23. १ B वउलचरु. २ MB जसज्जणहो ३ B अलहंतें. ४ MB °विरोल्लियउ, T विरोलउ.  
५ MB णायदत्त°. ६ MB पिसल्लउ ७ B णाह.

24. १ MB वणिउ २ M फणिदत्तें. ३ MB ओयणु.

23. 1 b वउलच ६ वकुलनामा चाण्डाल. 3 a जसज्जणहो यथासा श्वेतस्य. 7 a °विरोल्लियउ कदर्थित. b कक्क रि पर्वतशिखरान. 8 b पिसल्ल देउ पिशाच.

24. 2 a लोयदिट्ठिभवणु लोकाना ष्ठे मुन्दरतया भवनमाश्रय. 4 a अल्लय° करमलम्; b सुइ-  
वाशियउ कर्पुर्लाज्जरकादिवासितम्

पहे जंतिइ साहु पलोइयउ  
ससिवयणइ पडिवणि णायहरे  
दाणेण तेण जणसंथुयइं  
गिब्वाणहिं रयणइं घित्ताइं

आहारु तांसु तहि ढोइयउ । 5  
भुत्तउ मुणिणा मंणिहिउ करे ।  
जायइं पंच वि अञ्जभुयइं ।  
करकच्चुरियाइं विचित्ताइं ।

घत्ता—जोइवि मंणिगणबुट्टी

पणइणि तसिय पणट्टी ॥

गय घणकणिसहु छेत्तहु

अक्खइ सा णियकंतहु ॥ ४ ॥

10

25

तुह कूरकरंबउ आणियउ  
केण वि तहिं फुल्लइं मुक्काइं  
अण्णेत्तहिं रुइरकिरणजडिय  
अण्णेत्तहिं काइं वि गजियउ  
अण्णेत्तहिं माहु माहु भणितं  
तं णिसुणिवि हउं गट्टी सभय  
तुहुं महु केरी घरकमलसिरि  
तुहुं गुणमाणिक्हं तणिय खणि  
पत्थर ण हौति ते दिव्वमणि  
धरियउ विवक्खवइसेण धणु

जो तेण साहु मइं पीणियउ ।  
पिययम महु मत्थइ थक्काइं ।  
गयणंगणाउ पत्थर पडिय ।  
णउ जाणउं वज्जउं वज्जियउ ।  
अण्णेत्तहिं वगिमिरघणञ्जुणितं । 5  
ता भणइ णाहु हलि तुहुं सद्य ।  
पइ हौतिइ होसइ मज्जु सिरि ।  
पइं कियउ धम्मु भुंजविउ मुणि ।  
इय भणिवि अहीहरु दुक्कु वणि ।  
उत्तउ सुकेउ मा किं पि भणु । 10

घत्ता—हिमगोखीराभासइ

महु केरइ फणिवासइ ॥

पडियइं रुइरहियक्कइं

महु जि हौति माणिक्हइं ॥ २५ ॥

26

इयरे पवुत्तु तुहुं खुहु खलु  
मा हरहि चोर रूसइ णिवइ  
गउ तहिं जहिं अच्छइ धरणिवइ

महु धरिणिहिं करउ दाणहत्तु ।  
ता दव्व लण्णिकणु सो कुमइ ।  
को पावइ धम्महु तणिय गइ ।

४ MB ताइ तहु. ५ B मणगणबुट्टी. ६ MB घणकसणहु.

25. १ MB ण. २ M वज्जुउ. ३ MB वेत्तिवि ४ MB तुहुं हलि.

25. 5 b वरि सि र° गन्धोदकवर्षणशीलः. 9 b अहीहरु नागभवनम्. 10 a विवक्खवइसेण नागदत्तेन.

सो गणउ अयरु वि सो वणिउ  
जिह जिह मणि तं सीकरइ धणु  
पुरदेवियमुकहिं दीहरहिं  
णरणाहु वि हियवइ संकियउ  
दिण्णउ रयणाहु दप्पु गलिउ

घत्ता—अण्णहिं दिणि पण्णयघग्नि  
आसाइयपरवित्तं

27

तं कड्डिउ कह व कह व धरिवि  
महु करि ण चडहि किं वज्जरिवि  
पहरंतहु उच्छल्लिवि स्वयलि  
उग्गयंगंडेण वियारियउ  
धणसंखइ ववहारेण जिउ  
धणु वड्डिमु जायउ जेत्तिउं जि  
कुपुरिसु वसुगव्वे वग्गियउ  
तेणुत्तउं म धरहि भिउड्डिमुहुं  
पुणु तेण फणीसरु पुँच्छियउ  
मग्गंतहु किं पि ण दिण्णु वरु

घत्ता—वाणि पभणइ भुर्यभूसणु  
भो भो विमहरन्नाग

विम्मूढगूढु लोहं वणिउ ।  
तिह तिह जि होइ इंगालगणु । 5  
भेसाविय किंकर ढंढरहिं ।  
संठिउ सुकेउ पुलयंकियउ ।  
भणु तववंतेण कां ण मलिउ ।  
दिट्ठउं मणि तरुकोडरि ॥  
एकु कहिं वि अहिदत्ते ॥ २६ ॥ 10

पुणु रोसहुयासं विप्फुरिवि ।  
गुरुपं पाहाणं हुंकरिवि ।  
णिट्ठुरु तहु लग्गउ भालयलि ।  
वणिणागदत्तु हकारियउ ।  
अहरत्तु वसुंधारिवइहि णिउ । 5  
हारिउ तहिं पिसुणं तेत्तिउं जि ।  
तं दव्वु सुकेउं मग्गियउ ।  
देवाण पहायइ देमि तुहुं ।  
हउं पइं किं देव गलन्थियउ ।  
ता भणइ सप्पु भणु देवि वरु । 10  
वल्लु सुकेउविद्धंमणु ॥  
दिज्जउ मज्जु भडाग ॥ २७ ॥

26. १ MB विम्मूढ मूढः K विम्मूढ गूढ. २ MB पुरदेविविमुकहिं; K पुरदेविद मुकहि. ३ M किं किर ४ MB दिण्णउ ५ M अहिदित्तं.

27. १ M गरुयं, B गरुए. २. MB उग्गयन्वडेण. ३ M अहरत्ति. ४ MBK जेत्तउं. ५ MBK तेत्तउ ६ MB गव्वियउ; T वग्गियउ ७ MB पत्थियउ. ८ MB भभूसणु.

26. 5 a सी कर इ स्वीकरोति. b ढ ड र हिं राक्षसे. 9 पण्ण य च रि नागभवने.

27 5 b अ हर तु अधरत्वम्. 7 a व रि ग य उ उट्टो भूत. 8 b द वा ण देवाज्ञया.

## 28

पडिजंपइ फणि गंभीरसणु  
 प्राणावहारु तहु को करइ  
 मइं तो वि तासु तुहुं अल्लिबेहि  
 भणु फणिवइ कम्मभारु वहइ  
 ता जायवि चितियविप्पियउ  
 किउं णियमंतु विहावियउ  
 णिसेसइं कम्मइं णट्टियइं  
 मग्गइ पेसणु उरजंगमउ  
 भाणिवि भवणंगणि लहु उवहि  
 तहिं बंधिवि खंभि सुघणघणइ  
 तुहुं तत्थु वप्प सट्टेण विणु  
 इय णिम्मइ भणियउ जइयहुं जि

यत्ता—ता विसहरु विहंसेप्पिणु  
 मंकडंवेसु धरेप्पिणु

दविणेण ण जिप्पइ दिव्वधणु ।  
 जसु पुणुणु सहेजउं संवरइ ।  
 मज्जायवयणु एहउं लवहि ।  
 जइ णत्थि कम्मु तो पइं वहइ ।  
 फणि तेण सुकेउहि अप्पियउ । 5  
 अहि हियइच्छिउ कारावियउ ।  
 संसिद्धइं कज्जइं संठियइं ।  
 वणि भणइ खंभु पाहाणमउ ।  
 गरुभारउ वाणरु तुहुं हवहि ।  
 गलि संखल लाइवि अप्पणइ । 10  
 आरुहणुत्तरणहिं खवहि दिणु ।  
 तुह अवरु देमि हउं तइयहुं जि ।  
 तुरिउ खंभु आणेप्पिणु ॥  
 थिउ अप्पउ बंधेप्पिणु ॥ २८ ॥

## 29

खंभग्गसिहरि उद्धिवि चडइ  
 अहि दिट्टुउ अंहिदत्तेण किह  
 णरंतरु णिसिदियेहइं गमइ  
 विसि भणइ मित्त मइं भेल्लवहि  
 ता तेण माणु अवहत्थियउ

उत्तरइ सरइ धरणिहि पडइ ।  
 सज्जायहु लग्गउ साहु जिह ।  
 लइं विहिविहाणु सव्वहु भमइ ।  
 पडिवक्खे सहुं णिम्मउ चवहि ।  
 धयणामु णवंपिणु पत्थियउ । 5

28. १ MB पाणाव°, २ MBT अल्लवहि, ३ MB केउ, ४ B विसहेप्पिणु, ५ MB मकड°.

29. १ M अंहिदत्तेण, २ MB लगइ, ३ MB °दिवसइं

28. 2 b सहेजउं सहायम. 3 a अल्लिवहि समर्पय, 8 a उरजंगमउ भुजगः, 11 a सट्टेण विणु शाब्देन विना.

29. 4 a वि सि नाग.



पइं मणुपं णाउं वि बद्धु जहिं  
 बुद्धीइ धणेण वि<sup>५</sup> तुहुं जि गुरु  
 तं णिसुणिवि मेल्लवि घल्लियउ  
 अबलोयवि दिणयरअत्थवणु  
 संसेविउ गुणहंरुगुरुचरणु  
 णिंमच्छराहि णिरु णिंमयहि  
 दिक्खंकिंय घरिणि वसुंधरिय  
 मुणिवरु सुकेउ मुउ विहुरहरे  
 थील्लिगु हणेप्पिणु णिरुवमिय  
 सम्मत्तालंकिंय भव्ववर

वणिणज्जइ साहसु काइं तहिं ।  
 भो वब्बउं मेल्लहि णायसुरु ।  
 फणिवइ वणिणा मोक्कल्लियउ ।  
 णियसुयहु समप्पिवि णियभवणु ।  
 त्तिंधंके लइयउ तवचरणु । 10  
 मणिंयहि पणवेप्पिणु सुव्वयहि ।  
 पग्गिपालिवि छावासयकिरिय ।  
 उप्पण्णउ सग्गि सयारवरे ।  
 तत्थु जि सुरं हई तासु पिय ।  
 रामासु विरार्यपणामयर । 15

घत्ता—भरहजणणाविण्णायइ अपइंमइ णरयणिकेयइ ॥  
 होति ण वणभवणंतरि पुष्कदंतवासंतरि ॥ २९ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्कयंतविरहइए  
 महाभव्वभरहाणुमणिणए महाकव्वे वणिणागदत्तसुकेउकहासंबंधो णाम  
 एकतीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३१ ॥

॥ संधि ॥ ३१ ॥

४ MBK देउ. ५ MB जि. ६ MB मेल्लहि वच्चउ. ७ MB वणिवइ. T वणिणा. ८ M गुणहरु गुरु°. ९ MB गुणणिंमराहि. १० MB गणणिहि. ११ M सुर ह्वउ. १२ B विराम°. १३ M अपदमणरय, K पढमइ णरय°. १४ MB मणि°.

5 b धय णा सु सुकेतुः. 8 b व णि णा सुकेतुना. 15 b रा मा सु तिर्यग्मनुष्यदेवलीषु, वि रा य प णा म य र  
 वीतरागपणामकराः. 16 अ प ड म इ ण र य णि के य इ अध. षण्णरकबिलेषु. 17 पुष्क दं त वा सं त रि ज्योतिर्निकाये.

## XXXII

गिसुरासुरविज्जाहरसरणे आसीणे आसि समवसरणे ॥  
गुणपालजिणिदे जं भणिउं जं मइं वि पइं वि सुंदग्णि सुणिउं ॥ ध्रुवकं ॥

1

देवि सुलोयाणि विंत्तु क्हाणउं  
इय जएण पुच्छिय भासइ सइ  
तेत्थु जि चारु पुंडरिंकिणिपुरि  
ससिरिपालु वसुपालु णरेसरु  
ता चिंतिउ कुबेरमिरिमायइ  
दीमइ सव्वु लोउ सवियारउ  
अण्णु वि सो कुबेरपिउ भायरु  
गयं वेणिण वि ते पुणरवि णाया  
एम भणंतिहि वामउ लोयणु  
हियवइ परमुच्छाहु ण माइउ

तं वज्जरहि मज्झु अहिणाणउं ।  
सिरिपालहु केरी गुणसंतइ ।  
घरसोहाणिज्जियसुरवरघरि । 5  
सहुं णिवसइ णं ससुरु सुरेसरु ।  
जंपिउ मुहकुंहरुग्गयवायइ ।  
एक्कु ण दीसइ णाहु महारउ ।  
तेपं णिज्जिय चंदु दिवायरु ।  
किं जाणहुं विहाय सिविजाया । 10  
फंदइ सुहिदंसणसंपायणु ।  
ताम सैमुहं वणवालु पराइउ ।

घत्ता—सा पभणइ मयणवियारहरु  
गुणवालु देउ सुरपगियरिउ

सुणि सामिणि केवलणाणधरु ॥  
उज्जाणि महारिसि अवयरिउ ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

बम्भण्डाहण्डलखोणिमण्डलुच्छलियकित्तिपसरस्स ।  
खण्डेण समं समसीसियाइ कइणो ण लज्जन्ति ॥ १ ॥

GK do not give it.

1. १ MBK आसीणेणासि. २ MB बुत्तु. ३ MB मिरिवालहु. ४ M सिरिपाले वसु°; B सो सिरि-  
पालु वसु°. ५ G °कुहरग्गय°, K °कुहरग्गय° but corrects it to °कुहरग्गय°. ६ K गय ते विणिण वि.  
७ M समुहुं, B सुमुहुं. ८ M गुणवाल.

1. 10 b सि वि जा या शिवीभूताः मोक्ष गताः.

## 2

अण्णेकु वि तिहिं गुप्तिहिं गुत्तउ  
 जो कुबेरपिउ जायउ मुणिवरु  
 तं णिसुणेवि देवि' रोमंच्चिय  
 वंदणाहस्तिइ गय परमेसरि  
 चल्लिय सुंदर चोइय संदण  
 विट्ठ तेहिं उवघणि विहयाँयवु  
 पत्थरघडिउ जडिउ बहुरयणहिं  
 तहु तलि जक्खु णाम जंगपालउ

प्रस्ता—जगपालणरिंदहु तवचरणे  
 तहु अग्गइ णच्चिउ णरमिहुणु

ज्ञानवसेण णिमीलियणेत्तउ ।  
 सो आयउ तुम्हारउ भायरु ।  
 वेह्लि व अमयरसोहे सिच्चिय ।  
 इहे ह्यगयलालामयसणि ।  
 अण्णे पंथे विण्णि वि णंदण । 5  
 सदलु महलु कोमलु वडुपायवु ।  
 संथुउ णाणं बहुयणवयणहिं ।  
 अवरु णिहालिउ णरवरमेळउ ।

सेरु लोएं तहिं संणिहिउ वणे ॥  
 वसुपालु भणइ सिरिपाल सुणु ॥२॥ 10

## 3

विण्णि वि णारिउ विण्णि वि णरवर  
 तं णिसुणेवि कुमारिं उँत्तउं  
 णरवेसेण सरलसोमाली  
 तहि अवसरि काँमे सरु दोइउ  
 दिह्लीदूयउ णीवीबंधणु  
 फुरइ अहरु पासेउ पवियलइ  
 सुसई वयणु खलियक्खरु भासइ  
 पुक्खलवइधिसयम्मि सुहम्मउ  
 तहिं सिरिउँरि लच्छीहरु णरवइ

जइ णच्चंति होंति ता मणहर ।  
 देव देव मइं मुणिउं णिरुत्तउं ।  
 पइ दुइजी णडइ महेली ।  
 मायापुरिसै रमणु पलाँइउ ।  
 परिभमंति णयणइं कँपइ मणु । 5  
 केसभारु दढबंनु वि वियलइ ।  
 ता कँचुइइ सुहयहु सीसइ ।  
 रम्मउ देसु धणोहे रम्मउ ।  
 तहु सुहकारिणि धरिणि जयावइ ।

2. १ B omits from देवि down to चल्लिय in 5 a २ MB विहियायउ. T विहयायउ.  
 ३ MB पायउ. ४ B जुगपालउ. ५ MB सुरलोएं.

3. १ MB णचंत. २ MB वुत्तउं. ३ MB सरु कामे, ४ MB कपिय तणु. ५ MB दढबधु वि  
 विलुलइ. ६ B सुतियवयणु. ७ MB कंचुइइइ. ८ MB सहम्मउ. ९ MB सिरिउँरि.

2. 1) a विहयायवु विहयतापः.

3. 8 a सुहम्मउ सुहर्माः.

जसमइ बुहिय महिय णिर्वचंदे  
 कयकंदप्पदप्पदुमकंदे  
 पुरिसवेस णच्चंती जाणइ  
 तं णिसुणिवि महु गायणवायण  
 विट्ठउ मंतिहिं जं जिह जेहउ  
 घत्ता—परियंचिवि पुरइं सधयवडइं  
 णच्चावहि दावहि तणय तिह

पुच्छिउ जइवइ णविवि णरिंदे । 10  
 अक्खिउ इंदभूइसवणिंदे ।  
 जो सो पुत्तिहि जोव्वणु माणइ ।  
 दिण्णा राएं भाउप्पायण ।  
 कच्चु पयासिउ तं तिह तेहउ ।  
 णयराइं सखेडइं कब्बडइं ॥ 15  
 वरइच्चु णिहालहि तुरिउ जिह ॥ ३ ॥

4

पेक्खु पेक्खु पच्चक्ख णिरावय  
 सुय णयराउ णयरि णच्चंती  
 एवहिं एउ समागय पुरवरु  
 णच्चइ मुद्धहि सच्छ सहेज्जी  
 ताहं जुवेसें दिण्णइं वत्थइं  
 एत्थंतरे सुहिंसुहइं जणेरउ  
 तहु वयणें च्छिय विण्ण वि जण  
 ताम णियच्छिउ तेहिं अरूढउ  
 आसु पमग्गिउ सो सिरिपाले

ता मइं आणिय णं वणदेवय ।  
 जणु णवरससलिले सिंचनी ।  
 तुहुं दिट्ठे सि होसि एयहि वरु ।  
 णडेपरमेसरपुत्ति दुइज्जी ।  
 आहरणइं मंदिरइं पसत्थइं । 5  
 जणणियाइ पेसिउ हक्कारउ ।  
 अग्गइ अणुंसरंति जा सज्जण ।  
 णरवरु चंचलतुरयारूढउ ।  
 दिण्णउं धणु लेप्पिणु हर्येवालें ।

घत्ता—सो तहि कयपरिणामे णडिउ  
 आसण्णु जि सेणमज्झि च्छलिउ

सहसा कुमारु हयवरि च्छिउ ॥ 10  
 हरि दुरु गंपि दुरुल्लिउ ॥ ४ ॥

5

बाहपवाहजल्लेच्छियणयणहं  
 तुरिउ तुरंगु अदंसणु जायउ

हाहारउ भेल्लंतहं सयणहं ।  
 महिवइ भाउसमीउ समायउ ।

१० MB णिवचंदे.

4. १ MB णउ परमेसर<sup>०</sup>. २ B सुहइं जणियारउ. ३ MB अणुसरत. ४ MB अणवालें.

15 परि यं चि वि परिभ्रम्य.

4. 1 a णिरावय आपद्रहित. 4 a सहेज्जी सहाया. 5 a जुवेसें युवराजेन श्रीपालेन. 8 a अरू-  
 ढउ अप्रसिद्धः. 10 कय परिणामे कर्मपरिणत्या.

इद्विभोयसोयतवियंगु  
जणणि वि सोउ करन्ति णिवारिय  
गयइं तेत्थु जहिं जियवम्मीसरु  
वंदिउ वंदारयसयवंदिउ  
भाणिउं कुबेरसिरीइ दुरासें  
तद्धु भयवंत समागमु कइयहुं  
तइयहुं आर्यउ पेक्खहि बालउ  
सुरगिरितलि संठियइं सुरत्तइं

घत्ता—वेयडुमहामहिहरणियाडि  
रिउणा नुरयत्तणु परिहरिउ

णं पक्खुज्जिउ पडिउ विहंगेउ ।  
मंतिहि कह व कह व सा हारिय ।  
केवलणाणधारि जोईसरु । 5  
भस्तिइ भव्वलोउ आणंदिउ ।  
पुत्तु महारउ णिउ मायासें ।  
पभणइ जिणु सत्तमु दिणु जइयहुं ।  
ता पणवेप्पिणु मुणि गुणवालउ ।  
सिखिरु मुपैप्पिणु मायापुत्तइं । 10

काणणि कुत्तुमियतरुवरि वियडि ॥  
भीयरु रयणीयररुवु धरिउ ॥ ५ ॥

5. 1 MB add after this the following lines:—

पेक्खेवि णदणु सोयकंतउ  
भवलोकंतु भमइ महि संतउ (B omits it)  
हाहाकार करंतउ देविए  
कहहु एहु किं मुच्छिउ णदणु  
केण वि कहिय वत्त परमेसरि  
तं णिसुणेवि वच्छ पमणंती  
अंगु समोडइ दुक्खे राणी ( B राणी )  
हा हा पुत्त मज्झु विच्छोइउ  
किं अवहरियइ रणि चरतइ  
हा किं पावे हिउ महु णंदणु  
हा विहि दइव केण हरि ढोइउ  
पुहइणाहु गुणमणिरयणायर  
जेण अणंगहु हय बाणावलि  
कसु घाहावमि को आसंघमि

सयलु वि परियणु दिदु भवंतउ ।  
पुच्छिय मंति जगतयसेविए ।  
जो जगवंदु (B जगवंदु) जेम वरवंदणु ।  
हरिवरेण हिउ णरवरकेसरि ।  
महियले णिवडिय देवि रुअती ।  
सप्पि व दंडाहय विहाणी ।  
केण दुरासें हयवरु ढोइउ ।  
पक्खिणिहरिणिवरहिहि पुत्तइं ।  
तिदुअणजणमणयणाणंदणु ।  
जे महु पुत्तजुयलु विच्छोइउ ।  
हा कहं मुक्कु (Bकसु मुक्कु) रुअंतउ भायरु ।  
सो पइं पुत्त ण वंदिउ केबलि ।  
हा हा दइव कवण दिसि लंघमि ।

२ MB आवइ. ३ MB मुएविणु. ४ MB रयणियरत्तउ.

5. 1 a बाह° ३. श्रुणि. 4 b हारिय आश्वासिता. 7 b मायासें मायाश्वन. 12 रयणीयररुवु राक्षसरूपम्.

## 6

उरयलविलुलियविसहरहारो  
 पंडुरपधिरलदीहरदसणो  
 मंदरकंदरसंणिहंतोडो  
 सिसुससहरसमदाढाभीसो  
 णवघणसामलकुवलयकालो  
 भासइ हित्ता घरिणि महारी  
 कुस्रो तुज्झु दुरंतकयंतो  
 भैरइ कुबेरसिरीए पुत्तो  
 एण्ह भवजलसायरतरणं  
 मौमणिओ तुरएण कुमारो  
 ता विहंगजाणियसुहिदुक्खो

घत्ता—रणभरधुरधारियकंधरहो  
 जुवरायहु कारणि दुद्धरहो

कडियलवळइयघोणसघोरो ।  
 वग्घचम्मवरविरइयवसणो ।  
 मणुयवसाचच्चिक्रियगंडो ।  
 जलियजलणजालाणिहकेसो ।  
 खयरो होऊणं वेयालो । 5  
 पइं गयैजम्मि सुचंपयगोरी ।  
 जौसि इदाणी कह जीयंतो ।  
 अहमिह णियकम्मेण णिहिचो ।  
 जिणवरकमकमलं मह सरणं ।  
 इय जणघत्ताबुज्झियचारो । 10  
 पत्तो तहिं जयैपालो जक्खो ।

चंडासिदंडमंडियकरहो ॥  
 अब्भिट्टु जक्खु रयणीयरहो ॥ ६ ॥

## 7

भणइ जक्खु खल रोसपरव्वस  
 मा णिवड्हि जलंति कालाणलि  
 मा ओहट्टउ आउ तुहारउ  
 अमरिसरसवसु कहिं मि णमाइउ  
 सो रक्खे खग्गेण दुहाइउ

जाहि जाहि विज्जाहररक्खस ।  
 वइवसवयणविवरि जगघंघलि ।  
 मा तासहि कुमारु महु केरउ ।  
 एम भणंतु महंतु महाइउ ।  
 वणसुरवरु विहिं रुविहिं धाइउ । 5

6. १ MB °विरइय°, २ MB °संणिहंतुडो, ३ MB गयजम्मे चंपयगोरी, ४ MB तुरंतु कयंतो, ५ MB एवहिं कहिं दुहु जासि जिंयंतो, ६ MB भणइ, ७ MB जाम णिहिउ, B सामणिओ, K माणिणिओ, ८ MB °सुहदुक्खो, ९ MB जगपालो, १० M रणभरधुरधारिय°; G रणभरधारिय°.

6. 10 a मामणिओ मामकः मदीयः.

7. 2 b वइवस° यमः; °घंघलि त्यापदि, 4 b महाइउ महादतः, 5 b वणसुरवरु व्यन्तरदेवो यक्षः.

हय बिण्णि वि चत्तारि समुग्गय  
 पहय चयारि अट्ट पडिभाया  
 हय सोलह बत्तीस भयंकर  
 चउसट्ठिहिं वेउब्बिउ रूवउ  
 तं पि दुँवड्डिउ ववगयसंखहिं  
 घत्ता—रयणियरहु भुयबलु णउ कलिउं  
 किं होही कम्मं णियंतियउं

गलगज्जंत दिव्वं णं दिग्गय ।  
 अट्ट वि हय सोलह संजाया ।  
 बत्तीसहं चउसट्ठि मउज्जुर ।  
 अट्टावीसैंउं सउं संभूयउ ।  
 जलु थलु णहयलु पिहियउ जक्खहिं ।  
 देवहु हियउल्लउं संबलिउं ॥  
 भवियञ्जु कुमारहु चितियउं ॥ ७ ॥

## 8

नें तहु होंतउ सुँहुं पडिबण्णउं  
 रुण्णयसेलहु उण्णरि थाइवि  
 रिउणा चित्तउ खयलोयरियउ  
 सणिउं सणिउं सिरिसिहरइ उधियउ  
 फलिहसिलौयलु ढंकिउ सरवरु  
 तोयाकंखइ धवलि पवित्थरि  
 चितइ बालउ विभिउं णिग्गरु  
 ना तहिं अवसरि कामकिसोरी  
 जलधिवरंतरि सा पइसंती  
 तेण वि मग्गे जायवि कोमलु  
 घत्ता—धर्वलेहिं चलंतिहिं लोयणहिं  
 कलसंकियकडिइ णियच्छियउ

थिउ विग्गवि रूँवु पच्छण्णउं ।  
 जोयणसउ गयणंगणि जाइवि ।  
 देविँदेँ<sup>३</sup> लहु विज्जइ धरियउ ।  
 णिवणंदणु तहिं तण्हइ खवियउ ।  
 दिट्टउ जलु मैण्णिवि गउ सुंदरु । 6  
 पसरियकरयलै लगा पत्थरि ।  
 देससहावै सालिलु वि णिट्ठरु ।  
 घडकडियल संप्राइय गोरी ।  
 दिट्ठी तरुणै णीरु भरंती ।  
 रसिउ तेण सुकुसुमंरयपरिमलु । 10  
 सो महिवइ मर्यणुक्कोवणिहिं ॥  
 पडिहँहाइयाइ णाउंछियउ ॥ ८ ॥

7. १ M मत्त. २ MB पडिभाया. ३ M अट्टावीसा सउ. ४ MB थ वड्डिउ. ५ MB कम्मणियत्तियउ.

8. १ MB सुह°. २ MB रूउ. ३ MB देवै दलु लहु, T दललहु पर्णलघु. ४ MB °सिलायालि.  
 ५ MB मण्णेविणु मुदरु. ६ MB सवित्थरि. ७ MB °करयलु. ८ MB विंमय°. ९ MB °संपाइय°. १० MB °रयपरिमलु ११ MB चवलचलतहिं लोयणहिं, K चलंतहिं. १२ MB मयणुक्कोयणहिं. १३ MB पडिहाइय णायाउच्छियउ, T परिहाइय.

४ ७ मउज्जुर मदोत्कटः.

8. 3 a खयलोयरियउ आकाशादवतीर्णः. 10a कोमलु मनोज्ञम् 12 पडिहाइयाइ प्रतिभाहृतया.

9

सरसमणुभवपणयसंणिद्ध  
हरि जइ तो तहु चक्रु ण लंछणु  
ससि जइ तो तहु णत्थि कुरंगउ  
सुरवइ तो जइ कुलिसु ण तहु करि  
मइ अवलोइउ एकु जुवाणउ  
किं जाणहुं जं जणवउ घोसइ  
लइ आयउ पिययमु तुम्हारउ  
ता संचलियउ पंच कुमारिउ  
णं कंदप्पे भल्लिउ मुक्कउ  
भासिउ भहे धव्लियगयणहिं  
किं महु आसण्णाउ णिविट्ठउ  
नं णिसुणेपिणु विहसिवि धिट्ठइ  
घत्ता—पुक्खलवइमहिहि सुगोहणइ  
सीहउरि सहइ णरवालणिहुं

आइय भवणहु भासिउं मुखइ ।  
वम्महु जइ तो तहु ण कोसुमंघणु ।  
रवि जइ तो सो ण वि अत्थं गउ ।  
तोयहु जंतिइ माइ महासरि ।  
किं जाणहु तेल्लोकहु राणउ । 5  
सो सिरिवालु णराहिउ होसइ ।  
घोलउ थणयलि णं मणिहारउ ।  
गयहु पासि णावइ गणियारिउ ।  
ताउ तासु आसण्णउ दुक्कउ ।  
किं जोयहु अंडुद्धहिं णयणहिं । 10  
आसि कालि किं कत्थइ दिट्ठउ ।  
दिण्णु पडत्तरु जेट्ठकणिट्ठइ ।  
पर्यडम्मि देसि दुज्जोहणइ ॥  
लच्छीकंतइ णं लच्छिर्धवु ॥ ९ ॥

10

हउं सस रइकंतहि लहुयारी  
मयणकंत मयणवइ कुमारिहि  
अवर वि विमल वयंसिय छट्ठी  
अम्हहिं सहुं उववणि कीलंती  
मभिउ ते ताणण ण दिण्णउ  
भणिउ जणणु रिसिणा पिहुं बोहे

जयदत्ता पयहुं गरुयारी ।  
जयवइ जेट्ठहुं जणमणहारिहि ।  
असणिवेयखयरिदे दिट्ठी ।  
कामुयमइणेहेणुभंती ।  
पुच्छिउ जइ को परिणइ कण्णउ । 5  
एवहिं णरवइ काइं विवाहे ।

9. १ MB °समिद्धइ. २ MB कुसुमधणु. ३ MB गणियारउ. ४ MB धवलियवयणहिं. ५ MB अद्धद्धहिं. ६ MB पायडवि. ७ MB °णिउ. ८ MB लच्छिधउ.

10. १ MB मयणकंति. २ MB तेण ताउ णउ दिण्णउ. ३ M पडुबोहे.

9. 8 a गणियारिउ इस्तिन्यः. 14 लच्छिधवु विण्णु.

10. 4 a कामुयेत्यादि—विद्युद्वेगविद्याधरस्य मतिः कामासक्त्या विह्वलीभूता. 6 b पिहु बोहे पृथुज्ञानेन.



गेहिणीउ होसंति पिसाक्किहु  
पुणु अग्गहं मग्गइ तडिवेयउ  
चोरिवि आणियाउ णिकरुणं  
तेण दुरासपण दुहंतै

घत्ता—णिवसहुं काणणि णिवच्छवि जणिउ  
अप्पउ हियवइ सोयंतियउ

तुह पुत्तिउ सिरिवालहु चक्किहु ।  
पिउवयणेण णिरुत्तरु जायउ ।  
जलयसिगसंचोइयचरणं ।  
णिहियउ णिज्जणि रोसु बहंतै । 10  
तारुंरजुयलसंणिहथणिउ ॥  
सिरिवालपंथु जोयंतियउ ॥ १० ॥

## II

तुहुं जि णाहु पइं तवियइं अंगइं  
लइ लइ घंरिणि कंत रिउचंडहिं  
भासइ सूहंतै जइ वि रवणुणउं  
अण्णेक्क वि कुमारि संप्राइय  
णियडी हौंति अणंणं लद्धी  
सवणं हय सारंगि व लोलइ  
तहिं अवसरि गइयउ छ वि तरुणिउ  
इयरइ पुणु पासाउ विरइयउ  
सरसालाव तासु सुइ पाविय  
जं वल्लहु मईइ अवरंडिउ  
तं दोसेण विज्ज गय णासिन्नि  
इइं कामगहं विवरेरी

घत्ता—अचलत्तं णिज्जियमहिहरहु  
सिरिसिहरहु चउजायणसयहिं

अण्णु कि णाहहु मत्थइ सिगइं ।  
अवरंडहि दीहहिं भुयदंडहिं ।  
कण्णागयणु होइ णादिणुणउं ।  
रक्खसिरुवें कहिं वि ण माइय ।  
पंचहिं सरंहिं उरुत्थलि विद्धी । 5  
सुहयहु केरउ वयणु णिहालइ ।  
वग्गिहि गंधं णावइ हरिणिउ ।  
सयणमग्गु सोहइ अइसइयउ ।  
णयणंजुवल मीणा इव भामिय ।  
जं कण्णावउ कण्णइ खंडिउ । 10  
थिय संसिमुहि अप्पाणउं दसिवि ।  
पुच्छइ सूहउ तुहुं कहु केरी ।

सा कहइ सवइयरु णरुवरहु ॥  
रयणउरु अन्थि मंडिउ धयहिं ॥ २१ ॥

४ B णियवयणेण, ५ M णिरुत्तरु, ६ MB माल्हरु

11. १ MB परिणि., २ MB मृहउ जइ वि सूरवणुणउ., ३ MB सपाटय., ४ MB रक्खसिरुविवि  
कइ वि., ५ MB लुद्धी., ६ MB पचसरंहिं., ७ M णयणजुवल मीणा इव, B णयणकूव मीणा इव, ८ MB  
मडइ., ९ MB ससिविमुह

7 a पिसक्किहु बाणयुक्तस्य. 9 b जलयसिगं भेषमस्तकम् 11 तारुंरु बिल्वफलम्.

11. 1 a कि. किम्, 4 a सयणमग्गु पर्यङ्कः, 9 a तासु श्रीपालस्य; सइ कर्णो. 12 a विवरेरी  
विह्वला, 13 सवइयरु स्वव्यतिकरम्.

12

थणियवेउ तहि अत्थि णरेसरु  
 असणिवेउ तहु पुत्तु पमत्तउ  
 हउं तहु तणिय बहिणि पिय तडिरय  
 किं जीवहि किं मुउ सिंचियसिलि  
 दूरहु जोइओं सि मइं रोसें  
 णवर हउं जि हय वम्महकंडे  
 दे<sup>१</sup> सोहग्गभिक्ख मइं मग्गिउ  
 पक्कवार जइ करि करु ढोयहि  
 तो जीवियफत्तु मइं जगि लद्धउं  
 महुं विणपं पारद्ध महुच्छव  
 तो गिण्हमि णं तो धुउ वज्जमि  
 ता सा गय जवेण रयणउरहु  
 मुउ सो णरु मग्गियपलसयलइं

घत्ता—णीसासजलणजालियदिसइ

जहिं णिवसइ थिरु वरु जित्तमहि

जोइवेयदेविहि वल्लहु वरु ।  
 तेणाणेप्पिणु ईह तुहुं चित्तउ ।  
 ते पेसिय पइं णियहुं समागय ।  
 णिवडेप्पिणु खयलि गिरिवरयलि ।  
 किर पइं हणमि णिसीयरिवेसें । 5  
 इंदचंदणाइंदविहंडे ।  
 मच्छरु मेल्लिवि तुहुं ओलग्गिउ ।  
 पक्कवार जइ मुहुं अवलोयहि ।  
 तं तहि भासिउ नेण णिसिद्धउ ।  
 जइ पइं देति मिलेविणुं बंधव । 10  
 कण्णासाहसेण हउं लज्जमि ।  
 भासइ भाइहि मारियवइरहु ।  
 मइं दिट्ठइं भमियइं गिद्धउलइं ॥

असहंतिइ असणिवेयससइ ॥

तहिं पेसिय मयणवडाय सहि ॥ १२ ॥

13

ताइ गंपि सूहउ अत्थत्थियउ  
 विज्जाहररायहिं रइधुत्तिउ  
 सो परिणेसइ रुइहयरविरहु  
 रूवुं तुहारउ हियवइ भावइ  
 भणइ कुमारु काइं भासिज्जइ

जो रक्खेसइ जणवउ दुत्थियउ ।  
 थणियवेयमरुवेयहं पुत्तिउ ।  
 चक्कवट्टि सिरिपालु महापहु ।  
 विज्जुवेय पिय दुक्करु जीवइ ।  
 होंतउ केण कम्मु लंघिज्जइ । 5

12. १. B जाइवेय<sup>०</sup>. २ MB उहुं इह. ३ MB णिसायरवेसें. ४ M दिहि. ५ MB करु करि.  
 ६ MB बहुविणपं. ७ K मिलेप्पिणु. ८ MB मारीय<sup>०</sup>.

13. १ MB सिरिवालु. २ MB रूउ. ३ MBK विज्जवेय.

12. 3 a तडिरय विद्युद्देगा. 13 a पलसयलइं मांसखण्डानि. 11 मयणवडाय मदनपताकानाक्षी.

जाहि दूर हउं पिययसु होसमि  
तं णिसुणिवि गय गेहहु दूर  
आइय पुणु विरहाउर तेत्तहि  
कुमरिउ रमणभावरसगिल्लउ

बालहि लीलालिंगणु देसमि ।  
आलोइय कुमारि किस दूर ।  
अच्छइ णरमयरद्वउ जेत्तहि ।  
संभासंतु ताउ पुव्विल्लउ ।

घत्ता—अवल्लोइवि सुंदरि सुंदरिउ  
णं मुणिवरवित्तिहि दुग्गइउ

वणि णट्टउ खणि छँ वि कुंयरिउ ॥ 10  
णं सुकइमइहि जडकइमइउ ॥ १३ ॥

## 14

आय णिसण्णी णियडि खगेसरि  
चवइ सवयणु पिहेप्पिणु हत्थे  
भो मणसियकणोहवित्थारा  
हउं वि सणेहिं जंपिय पेक्खमि  
तो वि देव वीसासु ण किज्जइ  
एम चवेप्पिणु मरगयतोरणु  
तहिं कुबेरसिरितणुरुहु णिहियउ  
अणुदिणु पंतिहिं रइरसतुरियहिं  
तिह तहिं दुद्धरि रमणु थवेप्पिणु  
अरुणावरणच्छण्णु खरतौं  
णिउ णिवचंदु रुंदगयणयलहु

णाइं समुदासण्ण महासरि ।  
एत्थु जि घोरतवह सामत्थे ।  
मरणु ण कासु वि होइ भडारा ।  
तं पइं पुण्णवंतु किर रक्खमि ।  
वणयरदुग्गउ भवणु रइज्जइ । 6  
खंभहु उप्परि कयउ णिहेलणु ।  
रत्ते कंबलेण संपिहियउ ।  
जिह णउ धिप्पइ भूगोयरियहिं ।  
गय पणइण पेसणु भौंसेप्पिणु ।  
मण्णिवि मासपिंहु भेरुंडे । 10  
अंगुत्थलिय घुलिय करकमलहु ।

घत्ता—आएसपुरिसणामं कधरि  
तां रक्खणभिच्चहिं णिम्मलहु

दूसहविओयसिहितावहरि ।  
घेरु आणिवि अप्पिय वप्पिलहु ॥ १४ ॥

४ B सुंदर. ५ MBT उउओयरिउ and glass in T क्षामोदराः.

14. १ M अत्थु अ घोर°. २ MB भणेप्पिणु. ३ MB भावेप्पिणु. ४ MB सा. ५ MB धरि.

14. ३ a °कणोह° बाणौघः. 13 वप्पिलहु कच्छावतीदेशविजयाधे मेघपुरे कम्पनराजा, राज्ञी विमा-  
विनी, तयोः वप्पिला, तस्याः दत्ता सा मुद्रिका.

15

जाणारयणफुरंतपईवइ  
जाव पक्खि घराणियलि परिट्टिउ  
तसिउ खयरु उट्टिउ णहि चंचलु  
पट्टिउ धरहि किंकरहि णियच्छिउ  
एत्तैहि एण वि दिट्ठउ जिणहरु  
धुइ विरयंतहु दुण्णयसाडइं  
जे दिट्ठे णट्ठइ संविउ मलु  
जे दिट्ठे कुदिट्ठि ओहट्टइ  
जे दिट्ठे उवसमु संपज्जइ  
जे दिट्ठे दुग्गइगइ णासइ  
सो दिट्ठउ दुक्कम्मणिवारुउ  
थोत्तवित्तु कइमग्गपसिद्धउ

घत्ता--तुहुं मायबप्पु तुहुं संतियरु  
जिण णिम्मय तेरी जेहिं तणु

सिद्धकूडजिर्णालियसमीवइ ।  
ता पहु अंगु वल्लेप्पिणु उट्टिउ ।  
तहु पयणहलग्गउ गउ कंबलु ।  
जाणवि मयणवईहि पयच्छिउ ।  
दुक्कियदुक्खलक्खणिक्खयकरु । 5  
विहडियाइं ददकुलिसकवाडइं ।  
जे दिट्ठे उप्पज्जइ केवलु ।  
जे दिट्ठे सम्मइ परिवट्टइ ।  
जे दिट्ठे अप्पउ परु णज्जइ ।  
जे दिट्ठे जगु सयलु वि दीसइ । 1.)  
देवदेउ अरहंतु भडारउ ।  
गुणवालंगरुहे पारद्धउ ।

तुहुं णिरलंकारु वि हिययहरु ॥  
इह तिहुयणि तेत्तिय जि अणु ॥१५॥

16

इय वंदिवि जिणु गुणाहिं विसिट्ठउ  
तां तहिं संपत्तउ खेयरणरु  
इह भोगउरि समुण्णयमाणउ  
पिय कंतवइ णाम तहु गेहिणि  
को होहि त्ति पणयतणयहि वरु

मुहंमंडवि कुमारु उवविट्ठउ ।  
आहासइ सिरसंजोइयकरु ।  
अणिलवेउ णामे खगराणउ ।  
सुय भोयवइ भोयजलवाहिणि ।  
पुच्छिउ तेण को वि जोईसरु । 5

15. १ MB °जिणभरण °. २ M लेनिणुउ दिट्ठउ; B वल्लेविणु तुट्टिउ, ३ MB एतएण ते दिट्ठ ३.  
४ MB णिट्ठइ संविउ मलु. ५ M °णिवारिउ. ६ MB तिहुयणि फुडु तेत्तिय.

16. १ MB सुहंमंडवि. २ MB उवइट्टउ. ३ MB तो.

15. 10 a दुग्गइगइ दुर्गातिगमनम्.

16. 1 a मुहंमंडवि रत्नमण्डपे. 5 a पणय° प्रणता जेहयुक्ता वा.

गाढधरियसंजमसुहलीसैं  
जेणाएं विहडंति सुणिविडइं  
होसइ सो चम्महसरभत्थहि  
हउं जोयहुं रापण णिवेइउ  
णेच्छंतु वि कुमारु उच्चाइउ  
चिक्रमंति पासायहु उप्परि  
सा भोयवइ तेण सुईलीणें  
एह णारि आसीविस णाइणि  
विणु आहारें एह विसुई

घत्ता--खयरहिचपुरिसाणियंविणिइ  
थणजुयलउ णिच्चाणिरूवियउं

तं जाणिवि जंपियउ जईसैं ।  
सिद्धकूडजिणभवणकवाडइं ।  
वरु तुह सुयहि सुरूवपसत्थहि ।  
णरवइ तुहुं एवहिं संभोइउ ।  
णहयरु तुरिउ णहेणुद्दाइउ ।  
पुरु संपत्तें दाविय सुंदरि ।  
णिंदिय बंधवसोयविलीणें ।  
एह णारि असुभक्खिणि डाइणि ।  
विणु सिहिणा वि चुरुलि संभूई ।

दुज्जणलीणइ मणैताविणिइ ॥ 10  
णियमणथद्धत्तणु दावियउं ॥ १६ ॥

## 17

कंदरेण विणु वग्घि महेली  
रयणि व भित्तहु पुरउ ण थक्कइ  
मईरा इव णिच्चु जि मयमत्ती  
हो हो उक्कंठिउ णिरु अच्छमि  
तो हउं जीवमि दिट्ठें णाहें  
एम भणंतु रइयरिउभेयहु  
अण्णु वि अबिस्सउ जिह णउ इच्छिउ  
णियसुयर्णिदावायविरुद्धें

गरलंसत्ति णं मारणसीली ।  
समलहु दोसायरहु पदुक्कइ ।  
सौणि व दाणमत्तकयमेत्ती ।  
मायभाउ जइ वेण्णि वि पेच्छमि ।  
होउ पहुच्चइ मउच्चु विवाहें ।  
दरिसिउ सुंदरु मारुयवेयहु ।  
जिह तं णारीरयणु दुग्गुच्छिउ ।  
तं णिसुणिवि खयरेसैं कुद्धें ।

5

४ MB सरूव°. ५ MB संभासिउ. ६ GK record a p सइलीणें इति पाठे सर्वेषां कर्णपरिचितेन; शास्त्र-  
लीनेन वा. ७ MB परताविणिइ. ८ MB °यद्धत्तणु.

17. १ MB गयसत्ति व णरमारण°. २ MB मयराइ व. ३ M साणि व दाणमत्तकय°; B साणिववाण-  
कयमेत्ती. ४ MB दुगाच्छिउ.

(1) a सुहलीसैं शोभनहलीषेण (हलीशेन), धुरधरेणेत्यर्थः. 7 a जेणाएं येन आगतेन. 9 a संभाइउ  
संभावितो दृष्टः. 12 a सुइलीणें शास्त्रलीनेन. 14 a विसूई विषुविका; b चुरुलि ज्वाला.

17. 3 a नाणिव कुक्कुरीव.

उत्तउं उञ्चापिपिणु गिञ्जाणि  
 थेरीरुवुं रणवि दइधं  
 घत्ता—बुड बुड जि गिहिस्तउ बालु तँहि  
 शायंतु मंतु बलणिजियउ

18

तंबिरणेत्तइ पिंगलकेसइ  
 विज्जइ वंतैउं जं जं जेहउं  
 पिव पिव ताहि भणंतिहि पीयउ  
 पुच्छइ पडु तुहुं हिरि सिरि दिहि महि  
 सिद्धी तुज्जु वीर परमत्थं  
 लद्धदिव्वविज्जासामत्थं  
 सो जायउ पुणरवि णवजोव्वणु  
 पभणइ सीहकेउ तुहुं सामिउ  
 जो कहिओ सि आसि रिसिवयणहिं  
 सुट्टु दुमज्जइ गिरुं गिरवज्जइ  
 घत्ता--बारह संवच्छर इह वसिउ  
 दइवेण लच्छि तुम्हारिसहं

19

एम भणिवि गउ णहयरु जावहिं  
 गलिय रयणि उग्गामिउ दिवायरु  
 रणिण भवंते तेण गिविट्ठी  
 उग्गामिवि करु भिउँडुवि णयणइं  
 चित्तइ णरवइ वैर होज्जउ तणु

पडु गहिल्लउ घल्लउ पिउवाणि ।  
 घत्तिउ सो तँहि तेण जि भिञ्जे । 10  
 हँरिकेउ पवणजवपुत्तु जहिं ॥  
 सव्वोसहिचिज्जइ तज्जियउ ॥१७॥

दाढाभीसणरक्खसवेसँइ ।  
 उट्ठिवि अंजलि तं तं तेहउं ।  
 सुहइच्चित्तु ण वि किं पि वि भीयउ ।  
 कहइ देवि हउं सा सव्वोसहि ।  
 तां पविलोइय तुट्ठावत्थे । 5  
 णियतणु पुसिय तेण णियहत्थे ।  
 ता पत्तउ खयरहिणंदणु ।  
 हउं तुह किंकरु पेसणगामिउ ।  
 सो दिट्ठो सि देव णियेणयणहिं ।  
 जाणिओ सि मँइ सिद्धइ विज्जइ । 10  
 फलकालि अज्ज विज्जहि तसिउ ॥  
 उज्जमु णिरत्थु अम्हारिसहं ॥ १८ ॥

पहर चयारि वि णिट्ठिय तावहिं ।  
 संचल्लिउ वसुवालसहोयरु ।  
 जरँसीमंतिणि तरुतालि दिट्ठी ।  
 देइ ताहि जणवउ दुव्वयणइं ।  
 णउ माणुसु विणिबंधु विणिद्धणु । 5

५MB °रुउ धरेवि. ६ MB जहिं. ७ MB ता हरिपवणंजवपुत्तु तँहि.

18. १ MB दाढी°. २ MB °भीसइ. MB वमियउं, ४ MB ताए विलोइय. ५ MB विहिं णय-  
 णहिं. ६ MB णिव. ७ M संसिद्धइ.

19. १ MB मवंती. २ B जरु. ३ MB भिउँडुवि. ४ MB वरि होज्जइ. ५ MB णिव्वंघउ णिद्धणु;  
 T विणिबंधउ.

19. 4 a भिउ डु वि भुकुटीकृत्य. 5 a त णु तृणम्; b विणिबंधु विनिर्गतबन्धुः; बन्धुरहितः.

हाँ किं णायरेहिं कलहिज्जइ  
ता चिरणारिइ णियतणु जेही  
तें हत्यें णियंगु पैरिमट्टउ  
पुरुमहिलइ रायहु विष्णवियउ  
जं जिह देहि देव णिव्वत्तिउ  
तासु गवेसा पेसिय रापं  
सीहसरहसरपूरियदिप्पहि  
दिट्ठा सोलह सुहड महाबल

थेरि भणेप्पिणु पइ हसिज्जइ ।  
विहिय कुमारहु तककणि तेही ।  
जिह पुव्विल्लउ तिह पुणु दिट्टउ ।  
मइं वरइसचरिउ सच्चवियउ ।  
तं तिह जरसरुडु परियत्तिउ । 10  
वणि जंतें कुबेरसिरिजापं ।  
संठिय चउंदिस्सु मिलिय चउप्पहि ।  
सोलह पत्थर वट्टपवट्टुल ।

घत्ता—सो तेहिं<sup>१</sup> भणिउ सुमहु रगिरिहिं  
भो भो कुमार किं<sup>२</sup> चिकमहि

अग्गइ थाइवि पंजलियरिहिं ॥  
गोलयहु उवरि गोलउ थवहि ॥ १९ ॥ 15

## 20

इयरहं पंथिय जाहुं ण लब्भइ  
इय विहसेप्पिणु पंथिउ बुद्धइ  
जामि बप्प किं एण पलावें  
एम्ब भणंतु वि धरिउ णिरुंभिवि  
वट्टत्तिविडि वि रइय छइल्लें  
कवणु देसु को णरवइ भुंजइ  
भिच्च कहंति महासिहरुडहु  
पवणवेउ णामें खयरहिउ

रायाणइ गोसिंणु णं दुब्भइ ।  
वट्टहु उप्परि वट्टु ण थक्कइ ।  
रायविणोपं मिच्छागावें ।  
हेवाइदें सत्तिइ थंभिवि ।  
पुच्छिय किंकर बुद्धिमहिंल्लें । 5  
वट्टहि वट्टठवणु किं जुज्जइ ।  
उत्तरसेठियाहि वेयइहु ।  
एत्थ महीवइ अक्खयराहिउ ।

६ MB हा किह. ७ MB पर मट्टउ. ८ M जरसरुड; B जरमत्तउ. ९ MB चउंदिस्सि. १० B तेण. ११ Gकं.

20. १ MB वि. २ BK बुक्कइ. ३ MBT वेहाइदें; GK record a p वेहाइदें इति पाठेप्यय-  
मेवार्थः; T हेवाइदें इति पाठेप्ययमेवार्थः. ४ MBK °महल्लें. ५ MB महासिहरुडहु. G महासिररुडहु.

7 a चिरणारिइ वृद्धाजिया. 9 a पुरुमहिलइ अतिवृद्धया. 13 b वट्टपवट्टुल अतिशयेन वृत्ताः.

20. 5 a वट्टत्तिविडि उत्तरंडी (?); छइल्लें धूर्तेन. 8 b अक्खयराहिउ अक्षरद्वयस्याधिपः.

जो आवइ णरु वट्टपरिक्खहि  
उज्जलवण्णउ णवलायण्णउ  
गयै अणुयर णियणियरायंतिउ  
मेहविमाणसिर्हरि जोपप्पिणु  
थक्कु महाणयरहु बहि जाव्वहिं

घत्ता—ऊरकसरसिरइ लंबियथणिइ  
हउं रीणी माइ किं पि चविउ  
21

पसिदिलच्चम्मछिरौलविवण्णी  
णिववालहु केरउं सिरिमाणु  
सुहत्तण्हापहस्सेयं स्त्रीणउं  
तिण्णि तिसाल्लुहपहसमणासइं  
प्रांसियाइं सुहयं रसेणिद्धइं  
वसुवालहु जाइवि दरिसेसमि  
इय चितंतुं जाम सो अच्छइ  
ता बुद्धइ कुंदुज्जलदंतिइ  
महु फलाइं किं मुहियइ भक्खहि  
चवइ णरिंदु असच्चु ण जंपमि  
जइ आवहि तुहुं णयरु महारउ  
कवणु णयरु को तुहुं के जायउ  
घत्ता—तं णिसुणिवि भासइ च्चक्कवइ  
गुणपॉल्लु राउ तहु तणउ सुउ

सोलहखयरणरेसरसिक्खहि ।  
सो परिणेसइ सोलह कण्णउ । 10  
कुवरें अग्गइ गमणु जि चित्तिउ ।  
भूयरमणु काणणु मेल्लेप्पिणु ।  
अवर वि बुद्ध पराइय ताम्बहिं ।

आवेप्पिणु थेरणियंविणिइ ॥  
कुवलीहलपिडउल्लउ थविउ ॥ २० ॥ 15

तरुतलि तासु जि णियद्धि णिसण्णी ।  
दिट्टउ ओहँल्लिउं कमलाणणु ।  
अंगु णिहालवि णिरु विहाणउं ।  
दिण्णइं बोरेइं अमयाभासइं ।  
बीयइं चीरंचलइं णिवद्धइं । 5  
णियपुरणंदणवणि पइरेसमि ।  
णियबंधवसंजोउ णियच्छइ ।  
देहि मोल्लु भासिउ पइसंतिइ ।  
वयणु केम णिल्लज्ज णिरिक्खहि ।  
जं मग्गहि तं सयलु समप्पमि । 10  
तो णिहणामि दालिहु तुहारउ ।  
भणइ थेरि भो इहँ किं आयउ ।

पुरि पुंडरिंकिणि दिण्णरइ ॥  
घसुपॉल्लु भायरु हउं लहुउ ॥ २१ ॥

६ MB परिणइ सोलह णिवकण्णउ. ७ MB गय णर णियणियरायइं मंतिउ; T अणुयर. ८ MB °सिहरु.  
९ MB तेण चविउ.

21. १ MB पसदिल°. २ MB °विराल°. ३ MB ओहल्लउं; K ओहुल्लिउं. ४ MB पासियाइं.  
५ MB रसनिद्धइं. ६ MB दसेसमि. ७ MB किं इह. ८ MB सक्कवइ. ९ MB दिण्णरइ. १० MB गुणवालु.  
११ MB वसुवालहु.

11 a °राय तिउ राजसमीये. 14 °क सर° पाण्डुराः.

21. 1 a °वि वण्णी विरूपा. 6 b पइ रेसमि वप्प्यामि.



## 22

जगि सिरिपालु णामु जाणिज्जमि  
 मायाहरिवरेण पत्थाणित्त  
 गुरुविओयसंतावें णिट्ठित्त  
 जइ भायरहु मिलमि तो जीवमि  
 भणइ वुड्ढं भो तुहुं णर दीणउ  
 बोरट्टिलियउ बंधिवि लइयउ  
 परदोगैसु तुहुं वि किं णासहि  
 तेरउ पुरु महियरहं अगोयरु  
 णत्थि दविणु अलियउं जि म भासहि  
 आरा सरु सा भणिय महीसं  
 घत्ता—णवरुल्लिवि पयणियपुलइ  
 जाणिय तेण वि मायाविणिय

सुरवीणातंतिहिं गाइज्जमि ।  
 जोइसियहिं असेसैहिं जाणित्त ।  
 अच्छमि सुट्टु इट्टुकंठित्त ।  
 णं तो णिच्छउ जमउरि पावमि ।  
 एण सहावें होसि ण राणउ । 5  
 कवणें दइवें तुहुं वुड्ढुं रइयउ ।  
 अप्पाणउं णरणाहु पयासहि ।  
 कहिं तुहुं कहिं सो तुज्जु सहोयरु ।  
 महु वाहिल्लहि वाहि विणासहि ।  
 णासिउं रोउ पाणिसंफासैं । 10

आलग्गी तहु गलकंदलइ ॥  
 लइ पइ खयरि मयणें वणिय ॥ २२ ॥

## 23

कइइ कुमारु म भउंहउ चालहि  
 कइयवेण किं पृउं आढप्पइ  
 ता जररुउ विमुक्कउ कण्णइ  
 भो भो णिसुणि णरेसर णिक्कल  
 नेत्थु धोयकलहोयमहीहरु  
 राउ अकंपणु विज्जाहरवइ  
 णामें हउं भुयणयलि पसिद्धी  
 णहयरणाहहिं मिल्लिवि सणिद्धउ

हो हो केत्तिउ मइं खरियालहि ।  
 सन्भावेण मुद्धि धुवुं धिप्पइ ।  
 उत्तउं कोमलसामलवण्णइ ।  
 पुव्वविदेहइ वसुमइ पुक्खल ।  
 तहिं रायउरि घसइ करिकरकरु । 5  
 समिपइ गेहिणि धूव सुहावइ ।  
 सा ण विज्ज जा महु णउ सिद्धी ।  
 महु विज्जाजयपट्टु णिबद्धउ ।

22. १ MB सिरिवालु. २ MB अण्येयहिं. ३ MB वुड्ढुं तुहुं णरवर दीणउ. ४ MB णित्त. ५ MB  
 °दोगैसु. ६ B णासमि. ७ MB °संपरिभें.

23. १ MB खलियारहि; T खरियालहि. २ MB कइवएण. ३ MB पित्त. ४ MB धुउ. ५ MB  
 गयउरि णिवसइ. ६ K मिलवि.

22. 10 a आ रा सरु समीपमागच्छ. 12 वणिय व्रणिता.

23. 1 b ख रि याल हि कदर्ययसि. 2 a क इ य वे ण कैतवेन कपटेन.

को वरु ताप पुच्छिउ जइवर  
अवरु वि णिसुणि देव तुहुं सुहइलु  
तहि मेहउरइ मयगलगामिणि  
ताहं पुत्ति वणिल महु पियसहि

घत्ता—अवलोयवि तुज्झंगुत्थलिय  
डज्झइ विरहें वेल्लहल किह

तेण वि काहिउं ताहुं चक्केसर ।  
कच्छावइवसुहहि रर्यथायलु । 10  
कंपणु खगवइ घरिणि विमाणिणि ।  
णं गोमिणिरेमणिहि वल्लइ महि ।

सा तोपं तिम्मइ कंचुलिय ॥  
दवदहणें अहिणववेल्लि जिह ॥ २३ ॥

24

धरु गइयहि मुहणिग्गयवायइ  
को वि आपसपुरिसु तहु मुहिय  
बालवयंसियाइ ण विकंपिउ  
मइं धीरिय सा ससिरयराहिं  
चामीयरपुरवरि हरिदमणहु  
तहिं जि देसि अण्णेक्क वि सुंदरि  
जणणहु पुच्छंतहु रयणुज्जलु  
आणिउं पेच्छवि तेरउ कंबलु  
सुहव तुज्जु विओएं पीडिय  
कंदइ कणइ विमुक्कत्तंसी

घत्ता—तं तेरउ पेम्मपरव्वसइ  
सहिहत्थहु दीणइ मग्गियउ

महुं अक्खिउ तहि तणियइ मायइ ।  
पेच्छवि सुय मयणेण विमहिय ।  
मज्जु वि ताइ संहियउं समण्णियउ ।  
मेलावक्कु करमि सहु णाहिं ।  
मयणवेयसीमंतिणिरमणहु । 5  
मयणवइ ति दुहिय विज्जाहरि ।  
जो जोइहिं भासिउ हयहिमदलु ।  
वियलिउ तहि तरुणिहि मैणि विहिबलु ।  
चिंताचक्कं सा वि भमाडिय ।  
दुक्करु जीवइ मज्जु वयंसी । 10

उहामकामकीलणरसइ ॥  
पंगुरणु मइं वि आलिंगियउ ॥ २४ ॥

७ MB तुहुं जि. ८ MB रयणायलु. ९ B गोमिणिहि णवल्लवल्लइ महि.

24. १ MB घर. २ MB अमु. ३ MB वियण्णिय. ४ MB सहिय. ५ MB सिसिरयरहें. ६ M तेरउ पेच्छवि; B तेरउ पुच्छवि. ७ MB मण°. ८ MBT विमुक्कवयंसी; Gp विमुक्का तेसीति पाठेऽप्ययमेवार्थः; Kp विमुक्कत्तसीति पाठेऽप्ययमेवार्थः; T विमुक्कत्तसीति पाठेऽप्ययमेवार्थः.

12 b गो मि णि र म णि हि लक्ष्मीस्त्रियः. 13 तोएं प्रस्वेदेन.

24. 3 b सहियउं स्वहृदयम्. 4 a ससिरयराहिं चन्द्रसदृशेन, b मेलावक्कु मेलापकः. 10 a विमुक्कत्तसी विमुक्कवत्तंसा.

## 25

तुहुं पत्थाणिउ तडिजवस्त्रयरे  
 हउं णउ पत्तियंति गय तेत्तहि  
 पर्यकुवलयसंबोहणचंदहु  
 सज्जणयणाणंदजणेउ  
 तेण पउत्तउ सिसुभूमीसरु  
 विज्जालाहे सहुं घरि पइसइ  
 दिट्टउ तुहे भायरु अलिकुंतल  
 सुरमहिहरसमीवि णिवसंतइ \*  
 कंदंतइ विमुक्कसिरकेसइ  
 पव्वइ पइसिहिंति पुरि तइयहुं  
 घत्ता—णरतरु गर्यं गय जि गयागयउ  
 भो बल्लह पइं पक्केण विणु

## 26

गिरिसरिदरिवणसयइ णियंतिइ  
 दिट्ठी मउलियच्छि लोलंती  
 विज्जुवेय तुह विरहे सोसिय  
 जइ तुह पियसंजोउ ण संघमि  
 णियभालयलि किसोयरि जाणहि  
 भोयवइहि केरी वियलियमय  
 उच्चउं ताइ वयंसिइ दिट्टउ  
 णिग्गउ पुणु जाणिउं दुस्सिविणउं  
 संतिअन्थु सयलहिं सुअरेव्वउ

एव पजंपिउ णरवइणियरे ।  
 तेरी णयरि णराहिव जेत्तहि ।  
 पर्यहिं पडिय गुणपौलजिणिंदहु ।  
 पुच्छिउ सो आगमणु तुहारउ ।  
 सत्तमि दिणि आवइ भाभासुह । 5  
 पुरयणु सयलु जिं एउ जि भासइ ।  
 दिट्ठी मायरि सोयविंसंडुल ।  
 हा सिरिपाल देव भणंतइ ।  
 दिट्टइं परियणसयणसहासइं ।  
 तुहुं मिलिहीसि णराहिव जइयहुं । 10  
 गणियाउ णाइं वणदेवयउ ॥  
 जणसंकुलु पट्टणु णाइं वणु ॥ २५ ॥

स्त्रयरावासहिं पइं जोयंतिइ ।  
 पंडुगंडुलियालयवंती ।  
 मरणमणोरह मइं मंभीसिय ।  
 तो विज्ञाहरपट्टु ण बंधमि ।  
 अप्पउ मा ललियंगि विमाणहि । 5  
 रइयारिणि सहि तहिं जि समागय ।  
 अज्जु चंदु णिसि भवणि पइट्टउ ।  
 जिणपुज्जुच्छउ परइ सण्हवणउं ।  
 सिद्धकूडजिणणिलइ करेव्वउ ।

25. १ BK णरवर°. २ MB पिय°. ३ MB गुणषाल°. ४ MB वि. ५ MB भायरु तुह. ६ MB  
 °विसंधुल. ७ MB सिरिवाल देव भणंतइ. ८ MB सिरि. ९ MBK सव्वइं. १० M गयागजिगयागउ; B  
 गय गय जि गयागयहो.

26. १ MB °दरिपट्टणइं भंतिइ. २ MB मंभीसिय.

25. 3 a प य कु व ल य° प्रजा: एव कुवलयानि.

26. 3 b म न्भी सिय आधासिता. 5 b वि मा ण हि क्लेशय. 8 b पर इ प्रमाते.

घस्ता—अवरहुं कण्णहु अवरउ सहिउ  
भोयवइहि तुहुं सहि गउरविय

अवरहुं वि लेहु मुइइ सहिउ ॥ 10  
हक्कारी तुँह हउं पट्टविय ॥ १६ ॥

27

एम कहेप्पिणु गय सा सुंदरि  
मणिमयकुंडलमंडियकण्णउ  
सत्तावीसं जोयणवत्तउ  
असणिवेयखयरें वणि घित्तउ  
उच्चाइवि णियपुरवरु णीयउ  
हउं पइं दोदियहंइं जोयंती  
जाम ताम तेरी वित्थारें  
एत्थायइ तुहुं मइं अवलोइउ  
कंचुइरुउ देव मइं धरियउ  
जाणिओ सि <sup>३</sup>णेमित्तिकिबंधें

हउं आरुढी सिरिसिहरुप्परि ।  
दिट्टउ तहिं काणाणि छक्कण्णउ ।  
भूगोयरियउ पिय तुह रत्तउ ।  
मइं कारुण्णएण मृगणेत्तउ ।  
अप्पियाउ णरवालहु धीयउ । 5  
अच्छमि खगणयरेसु चरंती ।  
कहिय वत्त हरिकेउकुमारें ।  
मयणें पंचमु सरु मणि ढोइउ ।  
पिड्डउल्लउ कुवलीहलभरियउ ।  
कहिय पुंडरिंकिणिपूरचिंधें । 10

घस्ता—इय भरहणरेसरकिंकरहो जयरायहु तिजगभयंकरहो ॥  
कह कहइ पुरंधि सुलोयणिय वरकुंदपुप्फदंताणणिय ॥ २७ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए  
महाभव्वभरहाणुमण्णिए महाकव्वे विजाहरकुमारीविरहोवण्णणं  
णाम बत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३२ ॥  
॥ संधि ॥ ३२ ॥

१ MB हउं तुह.

27. १ MB म्रिगणेत्तउ. २ MB पंचमसरु. ३ MBT णेमित्तिनिबंधें. ४ MB °पुरि°. ५ MB °विरहवण्णणं.

27. 10 a णे मि ति कि बंधें नैमित्तिकानामादेशेन.

### XXXIII

सव्वोसहिसामत्थु तरुणें तेण पयासिउं ॥

कयउं सुहावइयाइ णियवुडुत्तु विणासिउं ॥ ध्रुवकं ॥

।

संसाहियविज्जासासणेण  
उद्दामकामकामणमईहि  
वेण्णि वि तारुणालंकियाइं  
तुह वेउ महारउ प्राणइट्टु  
विज्जाहर पिसुण हणंति जेम  
महु कंचुइवेसुद्धारिणीहि  
धरि थेररूउ सुविचित्तकूडु  
तहि बोद्धेहीउ पीवरथणीउ  
कंकेल्लिबालपल्लवभुयाउ  
ता खंधारोहणु कियउ तेण  
उल्लंघिवि तुरिउ णहंगणंतु

कोमलकरयलसंफासणेण ।  
विहुणियउं जरत्तु सुहावईइ ।  
खगकण्णइ वयणइं जंपियाइं । 5  
तुहुं चक्रपाणि सयमेव विट्टु ।  
ण करेव्वउ पइं वि ण मइं वि तेम ।  
चहु खंधइ से सुहकारिणीहि ।  
आवेहि जाहुं तं सिद्धकूडु ।  
मिलिहिति अज्जु तुह पणइणीउ । 10  
अवलोयहि खेयरवइसुयाउ ।  
सा विज्जुचवल चल्लिय णहेण ।  
संपत्तैइं जिणहरपंगणंतु ।

घत्ता—वंदिउ तिहुयणणाहु थोत्तमयइं उग्घुट्टइं ॥

विण्णि वि वुडुइं ताइं मुहसालहि उवविट्टइं ॥ १ ॥ 15

MB give. at the commencement of this Samdhi, the following stanza—

विनयाङ्करशातवाहनादौ नृपस्यके दिवमीयुषि क्रमेण ।

भरत तव योग्यसज्जनानामुपकारो भवति प्रशक्त ( प्रसक्त ? ) एव ॥ १ ॥

GK do not give it.

1. १ MB °साहणेण. २ MB पाणइट्टु. ३ MB सुहयारिणीहि. ४ MBT बोद्धेहीउ. ५ MB संपत्तउ.

1. 4 a उद्दामेत्यादि—उद्दामकामः श्रीपालः तस्य कामने सेवने मतिर्यस्याः सा तस्याः. 6 b विट्टु विष्णुः. 8 b चहु आरोपय. 10 a बोद्धेहीउ तरुण्यः .

## 2

भोयवइ भडारी विञ्जुवेय  
 मयणवइ समागय मयणलील  
 अण्णाउ मणोहरवणियाउ  
 जरसरिधुयसिरकेसासियाइं  
 अबलोयवि तरुणिहिं तणिय रिद्धि  
 छंडिविं जरत्तु जाणियमईइ  
 थिय पुणु पच्छणी सा कुमारि  
 वरइत्तु ताइ दंसणरयाहि  
 ताइ वि बोह्णविउ पिउ अणंगु  
 भोयवइइ तहिं पारद्दु हासु  
 हलि असणिवेय ससि काइं करहि

तहिं दुक्की वण्णिल गिरुवमेय ।  
 रहरमणिहि केरी णाइं कील ।  
 कण्णाउ अट्टु अवइणियाउ ।  
 कुंयरिहिं थेरइं संभासियाइं ।  
 पुणु कंचुइ थिउ विम्भंतवुद्धि । 5  
 णियसिरि दक्खाविय सुहवईइ ।  
 दुल्लकखचारु होएवि थेरि ।  
 भूभंगे दरिसिउ तडिरयाहि ।  
 मायाजराइ पच्छाइयंगु ।  
 वुड्डु उप्परि पेम्माहिलासु । 10  
 लहु णवजुवाणु वरु को वि वरहि ।

घत्ता—ता खयैरायसुर्याहिं बंभु महेसरु अञ्चुउ ॥

णिरलंकारु जिणिंदु सालंकारहिं संथुउ ॥ २ ॥

## 3

रत्ताहराहिं भवसयविरत्तु  
 विरहे तत्तहिं तवचरणतत्तु  
 मज्जे खीणहिं संखीणपाउ  
 कुडिलालयाहिं अकुडिलमइलु  
 णहचारकमियमंदरदरीहिं  
 अहिसेउ कयउ पुज्जापयाह

चंचलचित्तहिं गिरिथविरचित्तु ।  
 मृगणेत्तहिं ज्ञाणणिलीणणेतु ।  
 थद्धत्थणीहिं णित्थइभाउ ।  
 जणमणसल्लिहिं णिम्मुकैसल्ल ।  
 वंदिवि परमेसरु सुंदरीहिं । 5  
 ता वंकीगीउ णामे कुमारु ।

2. १ MB मणोरम°. ६ MB कुअरिहिं. ३ MB विसमंतवुद्धि. ४ MB छडिवि. ५ MB सो जोइउ. ६ B सस; K ससे. ७ K खगराय°. ८ B °सुयहिं.

3. १ B omits from गिरि° down to मृगणेत्तहिं inclusive. २ M मिय°. ३ MB थडु°. ४ MB णित्थडु°. ५ MBK णिम्मुकु. ६ MB वंकीगीउ.

2. 11 a ससि हे भगिनि.

3. 1 b गिरिथविर° अतिशयेन स्थिरम्.

संपत्तउ सहुं गियपरियणेण  
आहरणविसेसहिं विष्फुरंतु  
ता हसिवि पउत्तउ कंचुईइ  
इय भोयवंति पुरि तिसिरराउ  
सुय तासु पहावइ जेदु पुत्तु  
एयहि रयणिहिं रुंजंतसाणि  
विरइउ विज्जइ कोट्टग्गभंगु

थेरेण थेरि पुच्छिय अणेण ।  
किं धावैइ णरमेळउ तुरंतु ।  
के के ण वि ह्य विज्जाकईइ ।  
णिवसर रइपेहकंतासहाउ । 10  
सिंदुं णामे गुणमंडर्णं णित्तु ।  
बहुक्खविणि साहंतहु मसाणि ।  
जरवेयं कंपावियउं अंगु ।

घत्ता—आवेप्पिणु पणएण भिसपं भेसहु दिण्णउं ॥

वहुंतउ जरलिंगु रायकुमारहु छिण्णउं ॥ ३ ॥

15

4

णउ फिट्टइ कंठहु वंकभाउ  
किह होसइ सिसुगल्लउज्जयत्तु  
सव्वोसहि सिज्जइ भुवणि जासु  
करफंसें तहु चक्केसरासु  
आवेसइ सो जिणणाहण्णइ  
तहु दिवसहु लग्गिावि भडसमेउ  
जो णासइ कंधरभंगुरत्तु  
अण्णेक्खु लहर मंडलु हयारि  
किं कण्णइ किं देसेण मज्झ  
ता वेज्जं वेज्ज घोसिउ णिवेणं  
णलिर्णाहकरग्गे छिन्नु जाम

आउच्छिउ जण्णे वीयराउ ।  
तं णिसुणवि जइवइणा पउत्तु ।  
तुह पुत्ति पहावइ पिययमासु ।  
होसइ सुयगीयाभंगणासु ।  
णामेण पसिद्धउ सिद्धैक्कइ । 5  
अवयरइ पहु सररिउणिकेउ ।  
सो चुंबइ कण्णहि तणउं वत्तु ।  
ता पभणइ धीरं परोवयारि ।  
धम्मेण करमि सामेत्थ सज्ज ।  
आरा सरु हो भासिउ णिवेण । 10  
गल्लेमोडि पणट्ठी तासु ताम ।

७ M घावउ. ८ MBK तिमिर राउ. ९ MB रविप्पह°. १० MB सिउ. ११ MB °मंडणु.

4. १ M सिसुगल्ल उज्जयत्तु २ MBK °गीवा°. ३ MB सहसकूडु. ४ MB वीरु. ५ MB सामत्थु सज्जु. ६ M विज्जु विज्जु; G वेज्जु वेज्जु but gloss वैय वैय. ७ MB सिवेण. ८ MB णरणाह. ९ MB गल्लेमोडिय फिट्ठिय.

9 b ° रुईइ अभिलापेण. 14 भिस एं वैद्येन. 15 वहुंतउ जरलिंगु प्रवर्धमानं ज्वरस्य लिङ्गम्.

4. 0 b सररिउणिकेउ स्मरिपुर्जिनस्तस्य गृहम्. 9 b सज्ज साध्यम्. 10 b आरा सरु समीप-  
मागच्छ. 11 a णलिणाह° कमलसदृशेन.

गड मंदिरं तणुरुहु सरलगीड  
परमेष्टिघरंगणसंतिपण  
केण वि कंचुइणा घाहि महिय

अवलयवि सुट्टु पँहट्टु ताड ।  
परकजारंभुक्कंठिपण ।  
इय मंतिहि वत्त पवित्त कहिय ।

घत्ता--विरइयकवडजराए ढंकियणववयकायहो ॥

15

चल्लिउ तुरिउ णरिंदु पासु तासु जांवीयहो ॥ ४ ॥

5

लुड लुड करि चोइउ दाणवासु  
अवइण्णउ जाम खरिंदु तिसिरु  
ता मायाविइ वंचणमईइ  
पियजीवधंणरक्खणमईइ  
पल्लट्टउ तिसिरु अपेच्छमाणु  
एत्तहि मुद्धइ अहिणववरासु  
करसाहाणिहियइ मुहियाइ  
गय पत्त सुहावइ अवर का वि

जिणहरु छज्जीवदयाणिवासु ।  
सुँहिसुहदंसणु पाणीयतिसिरु ।  
णिउ सुंदरु णावइ मउ मईइ ।  
मणिवाविहि णिहिउ सुहावईइ ।  
जलहरवहजववाहियविमाणु । 5  
तडिवेयायारु णरेसरासु ।  
कउ माणवणयणविमैहियाइ ।  
णामेण सुहोदय जेत्थु वावि ।

घत्ता--णवइंदीवरणेत्त रायहंससहवासिणि ॥

पाणियवत्थअियत्थ सोहइ वाविविलासिणि ॥ ५ ॥

10

6

कण्णउ हक्कारइ जाम तेत्थु  
तामेक वि तरुणि ण दिट्टु ताइ  
एत्तहि रापं उहामतेय

जलकीलहि दैतिउ कमलहत्यु ।  
गइयउ सरु परियाणिउं इमाइ ।  
अप्पाणउं दिट्टुउ विज्जुवेय ।

१० MB मरिड तणुरुहु ११ MB पहिट्टु. १२ MB जामायहो.

5. १ MB °दयाववासु; T ° दयाणुवागु. ३ B अइवण्णउ. ३ M सुहसुहदंसणपाणीय°; B सुहिसुह-  
पाणीय°. ४ MB °धम्म°. ५ MB° विमुहियाइ.

10 जां काय हो जामातुः.

1 a दाणवासु मदवर्षः; b छज्जीवदयाणिवासु षट्कारिकायेषु दयायाः निवासः. 2 b °तिसिरु सतृष्णः. 3 b मउ मृगः; मईइ मृग्या. 5 b जलहरवह° अकाशम्. 6 b तडिवेयायारु विषुद्वेगरूपम्. 7 a करसाहा° अञ्जुली.



अवणियउ समाहपंगुलीउ  
 तां तहि अवसरि तहि चेडियाइ  
 धयरट्टुसिलिंधयैगामिणीइ  
 जलरमणकज्जसंकेइयाउ  
 अलिखुंबियगर्यैलंबियघयाउ  
 तहिं गय हउं णिहिय समीवि तुज्जु  
 कण्णाकारणि मच्छरु वहंति  
 एहउ जाणिवि महु राणियाइ

णियरूवधारि थिउ मंतु गीउ ।  
 किं मुइइ हत्यहु फेडियाइ । 5  
 सुसुहावईइ मह सामिणीइ ।  
 इह खगवइधीयउ णाइयाउ ।  
 अण्णेसहिं कथइ जहिं गयाउ ।  
 अवरु वि णरिंद वज्जरमि गुज्जु ।  
 असमंजसु धुवुं पइं ते वहंति । 10  
 उव्वसिआहल्लसमाणियाइ ।

घत्ता—अत्थि वहरि खयरिंद ताहं णाणुं दलवट्टिउ ॥

अंगुत्थलियइ णाह तुह सैरुवु पल्लट्टिउ ॥ ६ ॥

## 7

जो जो आवइ तहु तहु ससाहि  
 चिंतेज्जसु अज्जु महाणुभाव  
 सविमाणविलंबियविविहकेउ  
 ससहोयरिरूउ णिहालमाणु  
 खेयर तहिं पउर वि णउ मुणंति  
 अण्णेकैं मुणियपर्वचणण  
 सुपरिट्ठियदिट्ठिअमूढएण  
 दट्टव्वसोक्खउप्पायणेहिं  
 विणु मुइइइ कण्ण जि पुरिसरयणु  
 जं वज्जरंति गुणवंत साहु

णियतणुसरिच्छससिसियजसाहि ।  
 वंचेज्जसु पिसुण संमुहराव ।  
 एत्थंतंरि पत्तउ असाणिवेउ ।  
 गउ सो णहेण खरभाणुभाणु ।  
 महु महु जि वहिणि सयल वि भणंति । 5  
 तावक्खिउ तहिं कुसुमंचणण ।  
 गय णयरैं रुक्खारूढएण ।  
 मइं दिट्टउ अप्पणु लोयणेहिं ।  
 सच्चउ णउ भासमि अलियवयणु ।  
 गंभीरु धीरु रिउ सोमराहु । 10

6. १ MB तो. २ MB °सिलिंबय°. ३ M सुसहावईइ. ४ MB °गयलुंबिय°. ५ MB धुउ. ६ MB माणु. ७ M सरुउ; B सरुउ.

7. १ M सखुइभाव, B खुइभाव; T समुहराव. २ MB मुइइ.

6. 4 a अवणियउ अपनीता स्फेटिना; समाहपंगुलीउ माहात्म्यसहिता मुद्रिका 0 a °सिलिंधयै° बालः.

7; 2 b समुहराव हे समुद्रध्वने. 4 b खरभाणुभाणु तीव्रादित्यकिरणः. 0 b कुसुमचणण मालिकेन. 7 a सुपरिट्ठियदिट्ठिअमूढएण शोभनेन निजरूपेण परिस्थिते श्रीपाले यादृशं दर्शने तत्रामूढेन अभ्रान्तेन.

जो अग्गइ होसैइ चक्रणाहु

णिच्छउ सो पइ सिरिपालु पइ ।

घत्ता—घम्मोरूढगुणग्गि जो आरूढउ भावइ ॥

इहु सो वम्महबाणु णारिसरीरइं तावइ ॥ ७ ॥

## 8

ता धाइय भइ आहवसंमत्थ  
लद्धउ वइरिउ कर्हि जाइ अज्जु  
इय भणिवि पवेढिउ खेथरेहिं  
णं सिहरि पंलंबिरजलहरेहिं  
णं चंदणतरुवरु विसहरेहिं  
जोपप्पिणु सरवरु सारणालु  
कण्णउ गयाउ कीलवि समत्त  
अवलोयवि रिउसेणावियारु  
णउ दिट्ठु तेहि सो तेत्थु केम

हणु हणु भणंत हलमुसलहत्य ।  
कर्हि होइ राउ कर्हि करइ रज्जु ।  
णं पिउ पुण्णालिहि उत्तरेहिं ।  
णं दिवसु दिवसणहाराकरेहिं ।  
हम्मइ ण जाम फुरियाहरेहिं । 5  
हंसीमुहचुंभिय सिसु मरालु ।  
सा पियवयंसि मणिवावि पत्त ।  
बालइ अइंसणु किउ कुमारु ।  
अर्णणाणिपहिं सव्वणहु जेम ।

घत्ता—उच्चाइवि परिहत्यु अहिणवकंचणवण्णइ ॥

10

पुव्वुत्तइ जिणगेहि वरु संणिहियउ कण्णइ ॥ ८ ॥

## 9

करिणि व्व कर्हि वि कीलीवणासु ।  
णियमुहभोहामियचंदकंति  
धरणीसु ताइ मुहाइ रहिउ

गय सुंदरि णिययणिहेलणासु ।  
पेच्छंतउ फलिहसिलायलंति ।  
णं कामु कामकामिणिहि महिउ ।

३ MB होइइ. ४ MB सिरिवालु. ५ M घम्मोरूढ गुणग्गि;

8. १ MB आहवि समत्थ. २ MB पलविय°. ३ MBK दिवसणाहहं. ४ B अण्णाणिइ हिंस न एहु जाम. ५ B पुव्वत्तइ.

9. १ MB णियसुणिहेलणासु, २ MB णियुमुहुं भोहा°.

12 घम्मोरूढ गुणग्गि धनुष्यारूढस्य चडितस्य गुणस्य दौरस्य अग्नेतनभागे.

8. 10 परिहत्यु शीघ्रम्.

अवलोयाव वप्पिल सालपण  
इहु सा गरिउ गुणपालतणउ  
जो गिज्जइ देवेहिं घरिवि वेणु  
णं पलइ समुग्गउ धूमकेउ  
जिणपंगणाउ रायाहिराउ  
णिउ रिउणा उसिरावइसमीवि  
कालक्खगुहहि कालाहिवासि

परियाणिउं उण्णयभालपण ।  
जो पणइणीहि संजणियपणउ । 5  
जो दुत्थियसंजणकामधेणु ।  
इय चित्तिवि घाइउ धूमकेउ ।  
उक्खिससँउ गहडँ णाइं णाउ ।  
कालइरिहि णच्चियणीलगीवि ।  
घित्तउ हरिवाहिणिसेज्जदेसि । 10

घत्ता—दाहिणैंदइवारंभि खयकालेण विवज्जिउ ॥

सेज्जहि णाहु णिसण्णु कालभुयंगे पुज्जिउ ॥ ९ ॥

10

उसिरावइपुरवरि हेमवम्मु  
जिह च्चडिउ सेज्जि जिह णविउ णाउ  
जिह णिउ णरवइ अण्णत्थ इ त्ति  
तिह णिसुणिवि उसिरावइपुरेसु  
णउं रक्खिउ किं आपसपुरिसु  
तावेत्तहि रइसुहलुंइपण  
चंदउरि णिसिहि तमजालणीलि  
ताडिउ खमों पुणु मोम्मारेण  
णउ भिज्जइ सूले सव्वलेण

तहु भिच्चहिं भासिउ तासु कम्म ।  
जिह णिग्गउ पत्तउ धूमकेउ ।  
जिह केण वि ण मुणिय पुण वि थत्ति ।  
किंकरहं कुइउ किं कियउ दोसु ।  
किं आउंचिउ महु होंतु हरिसु । 5  
वप्पिलमेहुणपं कुद्धपण ।  
पेयालइ पहु णिक्खिन्नु सूलि ।  
पुण्णाहिउ णउ धिप्पइ गरेण ।  
णउ खज्जइ णरु रक्खसकुलेण ।

घत्ता—घित्तउ जलणि जलंति तहि वि परिट्ठिउ अवियलु ॥

10

जिणपयपोमरयासु अग्गि वि जायउ सीयलु ॥ १० ॥

१ MB गुणवाल°, ४ B °सज्जस°, ५ B पंगणाहि ६ B उक्खिण्णउ, ७ MB दाहिणि, ८ MB विसज्जिउ.

10. १ B किं रक्खिउ. २ MB °लद्धपण.

9. 4 a साल एण इयालेन. 9 b °णीलगीवि° मयूरे. 11 दा हि ण° अनुकूलम्.

10. 10 जल णि ज्वलने अमौ.

11

जिणु सुमरंतहं सीहु वि ण खाइ  
असिघडणहुयवहुग्गमियजालि  
जिणु सुमरंतहं रिउ थरहरंति  
करडयलगलियमयजलपवाहु  
घावंतु पंतु गिरिवरसमाणु  
रयपिंजरु कुंजरवरु वि खलइ  
वणगलियरुहिरे करसडियणास  
खैयखासजलोयरजणियसोय  
णिन्थाहसलिलि सरहयदियंति  
माणिककिरणमालाधिविचि  
जिणु सुमरंतहं जलयररउहि  
जिणु सुमरंतहं मंगलइ होंति

विसदुम्महु फणि संमुहु ण थाइ ।  
ओवडियसुहडसंगामकालि ।  
धीरे वि पच्छाउहुं ओसरंति ।  
गुमुगुमुगुमंतचलमहुयरोहु ।  
उरि देतु वेहुं बडयविसाणु । 5  
जिणसुमरणंकुसंकुसिउ वलइ ।  
अविणटुकडुकुट्टाविसेस ।  
जिणु सुमरंतहु णासंति रोय ।  
करिमयरमच्छपुच्छुच्छलंति ।  
कल्लोलंदोलियजाणवत्ति । 10  
बुडुज्जइ ण कयाइ वि समुहि ।  
पयसंखलवलयइ परियंलंति ।

घत्ता--सचु वि मित्त हवंति विट्ठि वि भलउ वासरु ॥

जिणु सुमरंतहं होइ खग्गु वि कमलु सकेसरु ॥ ११ ॥

12

णीसरिउ हुयासहु अहयपिंडु  
आसीणु सिलायलि रायहंसु  
अइबलु णामे पुरि वसइ तेत्थु  
णं वम्महरायहु तणिय सेण  
मुहकुहरुग्गयफरुसक्खरेण  
आगय पिउवणहु नहि णिभाणु  
चित्तिउ अणाइ जयलच्छिगेहु

सोहइ णिउ णं सोवण्णपिंडु ।  
णं भिसिणीदलयलि रायहंसु ।  
विज्जाहरु विज्जाबलसमत्थु ।  
तहु धरिणि कुसीलिणि चित्तमेण ।  
सा सइरिणि णिसि गरहिय वरेण । 5  
दिट्ठु सिति मुहणिग्गच्छमाणु ।  
ण पलित्तउ पयहु तणउ देहु ।

11. १ M सुमरंतहु; B सुमिरतहु. २ MB वीर. ३ MB पच्छामुहुं. ४ MB °वरमहुं. ५ MB लोहबडु. ६ MB रुहिरु. ७ MB खरखास°. 8 MB खरखाय°. ९ MB °सलिलसरसय°. १० MB परिसंखल°.

11. 2 a असीति—असीनां खड्गानां घटनात्परस्परसंघटनात् उद्गमिता निर्गता ज्वाला यत्र. 8 a खय° क्षयरोगः. 9 a °सरहय° जलेन हताः. 12 b पय संखल° पदे शृङ्खलाः.

जं तं होएवउं कारणेण  
इय भणिवि महिल कोऊहलेण  
णउ दड्डी जालाचारिएण  
णीसरिवि णिसण्णी णिवहु पासि  
अइबलु गेहिणिचरणयलवड्डिउ  
आवेहि कांति वच्चहुं णिकेउ

काइं वं संबंधवियारणेण ।  
तहिं सा पविट्टु णवराणलेण ।  
सव्वोसहिरसहयवीरिएण । 10  
अवइण्णउ ता पिउवणाणिवासि ।  
हउं मंदबुद्धि पिसुणेहिं णड्डिउ ।  
ता चवइ धुत्ति संभरिवि हेउं ।

घत्ता—हक्कारहि णियबंधु दीर्युं धरेप्पिणु गच्छमि ॥

असइत्तणमलेणेण मइलिय केत्तिउ अच्छमि ॥ १२ ॥

15

## 13

ता महिलारहरसवेंभलेण  
उवविट्टी सइरिणि घगधगंति  
सा तेण ण दड्डी कैह वि केम  
वंदिय लोएण महासईहि  
दुच्चारिणिचरिउ णियच्छमाणु  
णिग्गव्वसीलु को संपयाइ  
भणु सांसिउ रायपसाउ कासु  
वसणेण ण किउ को जगि णिरत्थु

मेलविय बंधव अइबलेण ।  
दुयवहि दूसहि विद्धत्थधंति ।  
मायाविणि वेस जँडेण जेम ।  
दुयउ सिहि सीयलु सुहमईहि ।  
पवियप्पइ रिउमहिरुहकिसाणु । 5  
पारड्डिउ को सेविउ दयाइ ।  
सघरत्थु वि कं ण डहइ हुयासु ।  
असईयणे वंचिउ को ण पत्थु ।

घत्ता—अविचंचिउ णारीहिं माहियलि को वि ण वच्चइ ॥

भरहपुष्पदंतेहिं पेच्छिउ जणु जिह रुच्चइ ॥ १३ ॥

10

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरहए

महाभव्वभरहाणुमण्णिण महाकव्वे विजाहरीमायापवंचणो

णाम तेत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३३ ॥

॥ संधि ॥ ३३ ॥

12. १ MB वि. २ T भेउ. ३ MB दीउ. ४ MB असइत्तणयकलंकु.

13. १ MB ०रसविभलेण. २ MB दुयवहदूसहि विद्धत्थवंति. ३ MB कहि. ४ MB विडेण.  
५ MB णिग्गंथसीलु. ६ MB सासउ. ७ M पसाय. ८ MB किं. ९ MB जगि को. १० MB अविचंचिउ.  
११ MB पेच्छिउ.

12. 1 a अहय पिं हु अनुपहतशरीरः. 7 a अणाइ अनया. 10 a जाला चारिएण ज्वलतः.

13. 2 b विद्धत्थ धंति विध्वस्तध्वान्ते. 3 b वेस वेइया. 7 a सासिउ शाश्वतः. 10 भरह  
नक्षत्रप्रच्छादको.

### XXXIV

सा कवडपरैव्वइय आलुंचियवय गियपियभवणि पइट्टी ॥  
कामिणिमणहारें तर्हि जि कुमारें कण्णपिसल्लिय दिट्टी ॥ धुवकं ॥

I

।जयसत्तु विमलमइ देविसुय  
विज्जासंसाहणि गहगहिय  
जियरिउणा सुंदरु पत्थियउ  
तहु तहु तुहुं बंधवुं देहि सूर्यै  
ता तरुणें मंतवसिल्लियहि  
अवरोप्परु हियवउं ढोइयउं  
ईसावसेण रुसिवि वरहो  
बुज्झिउ णरणाहें चक्कवइ

कमलवइ णाम सोहग्गजुय ।  
आणिय पिउवणु ससयणि महिय ।  
इह तिहुयणि जो जो दुत्थियउ । 5  
महु तणयहि करहि सणाहक्रियै ।  
पिसउल्लउ पुसिउ पिसल्लियहि ।  
देहि वि अहिलासें जोइयउं ।  
गय झ त्ति सुहावइ गियघरहो ।  
आणिउ गियभैवणहु भुवणवइ ।

घत्ता—पुज्जिवि मणिहारहिं जणियवियारहिं कण्णंतेउरि णिहियउ ॥  
तेहिं वि पुर्यं मुद्धहिं रूंबालुद्धहिं गियणियमणि संणिहियउ ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

तीव्रापदिवसेषु बन्धुरहितैकेन तेजस्विना  
संतानक्रमतो गतापि हि रमा कृष्टा प्रभोः सेवया ।  
यस्यान्वारपदं वदन्ति कवयः सौजन्यसत्यास्पदं  
सोऽयं श्रीभरतो जयत्यनुपमः काले कलौ सांप्रतम् ॥

GK do not give it.

1. १ MB °पइव्वय. २ MB बंधउ. ३ MB सिय. ४ MB क्रिय. ५ MB °भुवणहु. ६ MB पिय. ७ MB सुद्धु विसुद्धहिं; B सुद्धुविसुद्धहिं.

1. 1 °पइव्वइय पतिव्रता; आलुंचियवय त्यक्तव्रता. ७ a स्य श्रीः. 7 b पिसल्लिय हि पिशाचगृहीतायाः.

## 2

ससुरेण भणिउं भो चंदमुह  
 तेण वि तहु वयणु पलोइयउ  
 हे माम ताम मइं णेहि तहिं  
 तहु मिलिवि धरमि करु सुंदरिहि  
 तं णिसुणिवि सज्जणमणु मुणिउं  
 सुंदरु लपवि बहुसोक्खयरि  
 ता सुहउ लपण्णिणु भमियंगेहे  
 णिसि णिवइ तिसइ सोसियवयणु  
 जलु जोयहुं वलिउ खगाहिवइ  
 ता सुक्क णिरिक्खिय तेण किह

कीरइ विवाहकलाणु तुह ।  
 हियउल्लउं बंधुविओइयउं ।  
 वसुपालु सहोयरु वसइ जहिं ।  
 सुरणरणयणंतरंगहरिहि ।  
 जियंसचुं सैलिलसेणु भणिउ । 5  
 लहु जाहि पुंडरिक्किणिणयरि ।  
 गउ वारिसेणु वारिहरवहे ।  
 पत्तउ विमलउरुत्तुंगतणु ।  
 जा दिट्ठि कमलवाविहि धिवइ ।  
 णिण्णेह विलाग्गिणीकील जिह । 10

घत्ता—दर्सियदेहुण्हइ लइयउ तण्हइ धायज्जलक्कइ रीणउ ॥

णवसत्तच्छयतलि खगकोलाहलि जहिं अच्छइ आसीणउ ॥ २ ॥

## 3

विज्जाहरेण आसासियउ  
 आहिंडिवि देव असेसु वणु  
 इय भणिवि वेयवाहिणि सरिया  
 अइअविहयहरिणुत्तण्हियहि  
 रायाहिराय दलियावईइ  
 पिउ जाइवि मालइ ताडियउ  
 अलहंतु सलित्तु विडउच्चमडहु

नहिं जायवि पहु संभासियउ ।  
 मा बीहहि आणवि मिसिरु वणु ।  
 गउ दिट्ठ तेण पाणियभरिया ।  
 अणुहरिय सा वि मायण्हियहि ।  
 सांसिय कण्णाइ सुहावईइ । 5  
 तण्हाकिलेसु णिज्जाडियउ ।  
 आयउ सग्गणु मरीयडहु ।

2. १ B वसुवालु. २ MB जियसत्तु ३ M सलिलासणु ४ MB तुह. ५ MB भणिय गहे. ६ M दणिय°.

3. १ MB आणउं. २ MB सरिय. ३ भरिय. ४ MB हरिणु व तण्हियहि ५ MB वियडुच्चमडहु; T विडउच्चमडहु.

2. 11 धा य ज्जलक्कइ शीघ्रगमनोद्भूतौष्ण्येन; रीणउ श्रान्तः.

3. 4 a अईत्यादि—अनिश्चयेन विहता हरिणानां उत्तण्णा यथा; b मायण्हियइ मृगतृणिकया.  
 7 a विडउच्चमडहु विटपाः वृक्षाः उद्धटा उल्बणा यत्र; b सरसेणु वारिषेणः.

छण्णइ कण्णइ बोलावियउ  
किं पाविज्जइ घरु रमणुं पइं  
पयहु रिउ दुज्जय अत्थि जइ  
तं णिसुणिवि सो पल्लहु णरु  
सयणहं संबंधु समासियउ  
सइं पुहइणरिंदु परिग्गहिउ

तुहुं केण बप्प वेहावियउ ।  
जज्जाहि तुरिउ भणिओ सि मइं ।  
मा कराहि विचु अहिमाणमइ । 10  
णिविसेण पराइउ णिययघरु ।  
णइवाधिजलोहउ सोसियउ ।  
हउं पत्थु कुमारिइ संपिहिउं ।

घत्ता—तहि तणियइ मालिइ च्चलभसलीलिइ पहु खुह तणह ण पावइ ॥

जसु घरिणि सुहावइ हियवउ रावइ तासु दुक्खु कैहिं आवइ ॥ ३ ॥ 15

4

तं णिसुणिवि सयणहिं बोल्लियउ  
सिरिपाल कप्पतरुवरवइहि  
पत्तहि णंदणवणि संडियउ  
सुमरंतु सहायहु दुज्जियइ  
चितइ कुमारु मुणिमणमहहु  
पइरत्तइ पुव्ववहुल्लियइ  
लक्खणपमाणमाणे मविउ

कण्णइ तिजगु वि उच्छल्लियउ ।  
सामत्थु पघुट्टु सुहावइहि ।  
णरणाहु णरहु उक्कंठियउ ।  
हउ कुसुमहिं मायाखुज्जियइ ।  
मग्गण पडंति किं वम्महहु । 5  
णिहंसणरुवु समुल्लियइ ।  
कण्णासरुउ तहु णिम्मविउ ।

६ MB add after this the घना couplet:—

घत्ता—खरतावविमीसें गिभाविसेसें कच्छवमच्छवहइ ॥

असिलट्ठि व दीसइ किं किर सीसइ णिण्णाणिय णइ हई ॥ ३ ॥

and number the कडवक as 3 and subsequent कडवक as 4 etc, upto 13. ७ MB रमण.  
८ M णिवसेण, B णिामेण. ९ MB णयवावि°. १० MB संपिहिउ. ११ MB add after this the  
following three lines: हरिणुल्लउ वइइ ससंकु जलु, संजणइ सविंबहु तेण मलु; मुहससइरु भिगणयणइ  
बइइ, अच्चंत जइहि पोडिम वइइ; कय उत्तिम जासु वियक्खणिय, जहिं दीसइ तहिं जि सलक्खणिय. १२ MB  
मालइ; K मालिइ but corrects it to मालइ. १३ MBK °भसलालइ. १४ M कि.

4. १ MB सिरिवाल. २ MB पइरत्तइ कामगहिल्लियइ, ता पइसिवि पुव्ववहुल्लियइ.

4. 3 b णरहु वारिषेणस्य. 4 a दुज्जियइ केनाप्यपराजितः. 0 a पुव्ववहुल्लियइ सुखावत्या;  
b णिहंसणरुवु निदर्शनरूपम्; समुल्लियइ समायुक्तया.



चित्तं विंताउल्लु भुवणवह  
महु केण कुमारिरुंठु ठविउ

संचियैसंसयसंमूढमह ।  
विणु मुदह पुणु किह संमविउ ।

घत्ता—तं रुंठुं णिपप्पिणु महिल भणेप्पिणु इंसहमयणें भग्गा ॥ 10  
णियगोत्तदिवायर विण्णि वि भायर विज्जाहर तहु लग्गा ॥ ४ ॥

## 5

एकहि भिसिणिहि दो हंसवर  
जइ हौंति हौंतु ण घडइ अवरु  
एकहि तरुणिहि किं विण्णि जण  
इय चित्तिवि रणु पारंभियउ  
सिरिधूमवेयहरिवाहणहं  
अंतरि गरुयारउ भाइ थिउ  
मित्तत्तणु विहडइ बंधवहं  
इय भणिवि णिवारिय बे वि वर  
रुप्पयरहरायहु तणउं घरु  
रायें तहिं चारु वियप्पियउ

एकहि किसकलियहि दो भमर ।  
सरु संघउ विंधउ कुसुमसरु ।  
मउकरयलेहिं माणंति थण ।  
सुयणत्तणु विहिं वि णिसुंभियउ ।  
अंबरोप्परु कड्डियपहरणहं । 5  
विहि पेम्मणिवंधु रउहु किउ ।  
किं पुण इह अवरहं अहिणवहं ।  
उक्खयकरवालकरालकर ।  
णियमायाकुंयरिउत्तुंगसिरु ।  
तणयाहरि सिचिके समप्पियउ । 10

घत्ता—जुवयणमणचोरिहि भणितं कुमारिहि एह कासु किं आइय ॥  
ता पीवरथणियइ खग्वामणियइ विहसिवि वत्त णिवेइय ॥ ५ ॥

## 6

एह माइ सामिणी महंगुणेहि जुत्तिया  
एत्थ कामलंपडेण खेयरेण आणिया  
हारदोरभूसियंगि तारतंबणेत्तिया

पुंडरिंणिणीपुरीणराहिवस्स पुत्तिया ।  
भूपसिद्ध मुद्ध भूमिगोयरी वियाणिया ।  
जंपए ण भाउमाउआविओयतत्तिया ।

३ M सिंचियसंपय°; B संचियसंपय°; T संचिय°. ४ MB °रुज. ५ B विज्जाहरहो.

5. १ MB रहसेण पवाहियवाहणहं. २ MB उक्खयसुकरालकिवाणकर ३ M °कुयरिउ तुंगसिरु.  
B °कुवरिउत्तुंगसिरु. ४ B रायहु तहु चारु समप्पियउ, ५ B सरु ६ MB खगकामिणियइ.

6. १ MB पुंडरिंकिणी°. २ MP, °भूसियंग.

5. 6 b रउहु अतिशयवान्. 10 b सि विरु आवासः. 12 खगवा म णिय इ वामनीरूपया विद्याधराज्ञिया.

ताम जक्खदेवएण वट्टिमा वियारिया	लच्छिवाल चक्खवट्टि एस णो कुमारिया ।
खुज्जिया वि खेयरी सुहावई सुहंकरी	ता रइप्पहाइ भासिया इणं मणोहरी । 5
दक्खवेहि वल्लहं विलासभासियाण संगहं	सूहवं समीणिणी अदीणमाणणिग्गहं ।
तं मुणेवि सुंदरीइ एणलंछणाणणो	कूवि वम्महो गहीररायरिद्धिमाणणो ।
मंतिऊण चित्तिऊण दिव्वमंतसंगमं	दूसिऊण णासिऊण णारिरूवविभ्रमं ।
* दंसिओ बहुल्लियाण पुंडरििकिणीवई	तं पलोइऊण ताण वट्टिया मणे रई ।
का वि कामसल्लिया महीयले णिवाइया	का वि णीससंतिया वयंसियाहिं जोइया ।
पैज्जरंतसाणिया सहीयणस्स लज्जिया	का वि मुच्छिया चलंतचामरोहिं विज्जिया ।

घत्ता—इय कण्णंतेउरु पेच्छंतउ वरु मयणें उप्पहि थवियउ ॥

भिच्चहि जाएप्पिणु पणउ करेप्पिणु पुरायहु विण्णावियउ ॥ ६ ॥

## 7

जा तरुणी बाला लइ थविय  
सा कण्ण ण होइ मरालगइ  
ता खयरकुमार वीरपवर  
असिकणयकोतविप्फुरियदिस  
सुंदरु पेक्खिअवि उवसंत किइ  
तहिं समइ खगिंदु पराइयउ  
जाणउ परमेसरु चक्खवइ  
संमाणउ कंकणकुंडलेहिं  
तियसाहवजयसिरिलंपडेहिं  
चित्तिउ दोहिं पि समेहलहिं

सा अम्हहं खुज्जई दक्खविय ।  
सिरिवालु णाम रायाहिवइ ।  
धाइय अणंत इच्छियंसवर ।  
वग्गिय मग्गियसंगाममिस ।  
जिणणाहु णिहालावि भव्व जिह । 5  
जामाउ सिणेहें जोइयउ ।  
संतोसिउ विज्जाहरणिवइ ।  
वरहारदोरमणउज्जलेहिं ।  
हरिवाहणधूमवेयभडेहिं ।  
अम्हहिं किं कियउ समेहलहिं । 10

३ MB विलासदाससंगहं. ४ M समाणमाणिणीए माणणिग्गहं; T अदीण. ५ MBK मुणेवि. ६ MB क्व°. ७ MBK add का वि before this.

7 १ MB जक्खइ. २ MB इच्छियसवर. ३ MB समाइयउ. ४ M सणेहें जोइयउ; B सणेहें पुजियउ. ५ MB तियसाहिव°.

6. ७ b अ दी ण° प्रचुरः. 7 a ए ण लं छ ण ण णो चन्द्रमुखः.

7. 9 a ति य सा ह व° त्रिदशसंग्रामः. 10 a समे ह ल हिं उपशमवाञ्छास्वीकारेण मुक्ताभ्याम्; b समे ह ल हिं मेखलासहिताभ्याम्.

घत्ता—थिउ कण्णारुवें मायाभावे रिउ रणि णउ संघारिउ ॥

गयं विज्ज पणासिवि गुणगणु दुसिवि अप्पउ पर वेयारिउ ॥ ७ ॥

## 8

गयन्ति जं अग्गहिं कलहियउ

खगणाहें णव्वरु पुच्छियउ

पुणरवि संजायउ पुरिसुं जिह

तं णिसुणिवि तेण समासियउ

गउ विज्जावइ गियमंदिरहु

सुहंसुत्तु जि खयरिहिं हरवि णिउ

गुल्लखंडु रसायणु जेरिसउं

किं वण्णमि तिहुयणमुदियउ

मुहुं तामरसु व आयाससरि

जगगरुयउ गयणु विरौइयउ

तं केण वि कहिं मि ण सँलहियउ ।

तुहुं महिलायारु णियच्छियउ ।

वित्तंतु असेसु वि कहिहि तिह ।

बालासामैत्थइ विलसियउ ।

णिहंगि रमिय तहु सुंदरहु ।

भणु कासु ण रुद्धइ प्राँणप्रिउ ।

सुहयहु सुहवत्तणु तेरिसउं ।

णिज्जंतहु तांसुण्हियउ ।

दीसइ वियसिउ चवलंबुहरि ।

अरहंतु व तेण पलोइयउ ।

5

10

घत्ता—पुणु णियसीमंतिणि तंतिणि 'मंतिणि चितिय तेण सुहावइ ॥

पइं विणु मणहारिण देवि भडारिण को रक्खइ महु आवइ ॥ ८ ॥

## 9

हउं णिज्जम्वि लग्गउ केण कहिं

रवियरपज्जालियमउडमणि

पभणइ किं जूरहि पुरिसहरि

जं भणसि तं जि हेलइ करमि

किं जीवमि किं धुवुं मरमि जहिं ।

तां पयड परिट्टिय णहरमणि ।

ओहच्छमि हउं तुह विहुरहरि ।

पलयक्कु वि गयणि जंतु धरमि ।

६ MB गय वज्जेवि णासिवि.

8. ५ M सालहियउ; B मलहियउ. २ MB णरवरु ३ B पुरिस. ४ MB कहिउ. ५ MB °सामत्थु पविलसियउ. ६ B सुहसुत्तु जि. ७ MB पाणपिउ; K प्राणिप्रिउ. ८ B °खंड. ९ MBT तासु विणिहियउ. १० B मुह तामरसु. ११ MB गिराइयउ १२ MB भित्तिणि, T मंतिणि.

9. १ MB णिज्जमि; २ MB धुउ. ३ MB तो.

8. 8 b उ णि हिय उ निद्रारहितम्. 9 a तामरसं पद्यम्. 11 तंतिणि अक्षोषमन्तपरिज्ञानयुक्ता; म ति णि अक्षोषमन्तपरिज्ञानयुक्ता च.

9. 2 b ण हर म णी विद्याधरी. 3 b ओ ह च्छ मि एषा तिष्ठामि.

कमलवद्दहि विष्णी विट्टि जहिं	ईसाह ईस मुक्को सि तहिं ।	5
कण्णाकारुणो पुण वि मइं	विरहो जलियउ जोयंतु पइं ।	
उच्चाहवि षंतु णिहेलणउं	हरिसेण करंतु व मेलण उं ।	
हउं णिविसु वि पिययम जइ सुवमि	तो किं णिसि णिहा सुहुं सुवमि ।	

घत्ता—इह जणवद्द खलसंकुलि कयरणकलयलि अण्णु ण जयणहिं पेक्खमि ॥

दिट्ठादिट्टसरीरी होइवि धीरी पैइं वि मडारा रक्खमि ॥ ९ ॥ 10

10

वल्लहंतरंगंगकंपणं	एम जाम जायं पयंपणं ।	
माणिमाणवित्थारमंथणं	सित्थंपंथसंणिहियमगणं ।	
जाणिऊण मयणं खलं घणं	सुंदरीहिं विहियं खलंघणं ।	
णहधरिसिद्धिभिस्तिलग्गओ	ताम भीमसहो समुग्गओ ।	
सिहरिकुहरहरिणा वि णिग्गया	भयवसेण दूरं गया गया ।	6
ज्ञाणमेव महमुणिहिं जुंजियं	सकलुसं मइंवेहिं रंजियं ।	
पडिय विडवि फुडियं रसायलं	धुलिय महियलं भीरुंभंभलं ।	
रुवरिद्धिणिजियसईरई	संकिया मणे सा सुहावई ।	
तुट्टिपुट्टिकल्लाणदाइणा	गयणपंगणत्थेण राइणा ।	
सइं णिरिक्खओ सुरहिपरिमलो	करडगलियओहंलियमयजलो ।	10
लुलियवैलियपडिवलियअलिउलो	चरणच्चप्पणो णवियमहियलो ।	
णिययधवलिमाधोयणहयलो	बलविरुद्धजंभारिमयगलो ।	
सीयरंभंसिधियदिसाणणो	चउविसाणणिइलियकाणणो ।	
पंचदंडउच्छेहदेहओ	ताण दूण परिहाणसोहओ ।	

द्वादिट्टिसरीरी. ५ MB पइं जि.

10. १ MBT सिंघपंथ°; K सिद्धपंथ. २ MB महिउलं, ३ MB भीरु वैभले. ४ MB °अविहलिय°. ५ MB वलियपयपडिय°. ६ MBKT परिणाह°.

10. 2 b सि त्थ° प्रत्यक्षाप्रमाणः. 3 b खलं घणं आकाशोल्लघनम्. 7 b भीरु वैभलं कातराणां भयानकम्. 8 a स ई र ई शचीपतिरिन्द्रः.

लंबमाणचलकण्णपल्लवो      दीहतालवट्टो महारवो ।      15  
 तंभुं तालु आयंबमुहणहो      चिर्कवंतकेलाससच्छहो ।  
 लच्छिरमंणु सिरिपालु धाइओ      भइहत्थि गंहणे पलोइओ ।

घत्ता—पडिक्खविधारणु पेक्खि वि वारणु रायहु हरिसु ण माइउ ॥  
 णं विडलसिलालहु हरिवरु सेलहु गलगजंतु पधाइउ ॥ १० ॥

## ॥

दावंतु दंत करु करि घियइ      आलिंगइ सव्वंगइं छिवइ ।  
 मंणु रक्खइ मेळेपिणु दमइ      पुणु दुक्कइ चउपासहिं भमइ ।  
 सरयणु बहुरयणविट्ठसणहु      अणुहरइ हत्थि कामिणिजणहु ।  
 चलु चउवरणंतरी पइसरइ      हकइ हुंकारइ णीसरइ ।  
 लंघइ आसंघइ कुंभयलु      पावइ पुच्छुप्पलु वच्छयलु ।      5  
 दैसदिसिहिं वि हिंडइ कुंजरहु      पंहु विज्जुपुंजु णं जलहरहु ।  
 णिम्महइ गहीरसरेण सरु      रंगंतु धरेइ करेण करु ।  
 आकुंचियतंणु वंचणकुसलु      अक्कमिवि कमेण दसणमुसलु ।  
 बलिणा बलेण णिव्वूढबलु      जुज्जेपिणु सुइरु महंतबलु ।

घत्ता—सो करिमयणिम्भरु लीलामंथरु णरणाहें संभाइउ ॥      10  
 णं पविउलकंदरु मंदरंमाहिहरु भुयवंडहिं उच्चाइउ ॥ ११ ॥

## 12

मयरेहासांहापरियरिउ      जं जुज्झिवि दंति तेण धरिउ ।  
 तं गयणहु कुसुमणियरु घुलिउ      रुणुरुणुरुणंतमहुलिहबलिउ ।  
 जाणपिणु पुण्णपुरिसु पवरु      परिहरिवि भुवणभीयरु समरु ।

७ MB तंबतालु पायंब°, ८ MB चिक्कवतु, ९ MB लच्छिरमणे सिहरि व्व धाइओ, १० MB गयणे,

11. १ MB तणु, २ MB चुक्कइ, ३ B चउदिसिहिं, ४ MB बहु°, ५ M °तणु धारणकुसलु;  
 B तणुधरधरणकुसलु, ६ M मंदरु.

15 b तालवट्ट° पुच्छम्, 17 b गहणे वने, 19 हरिवरु इन्दः.

11. 3 a सरयणु सरत्तः सरदनक्ष, 5 b °उप्पलु पुष्करम्.

करिणा सुंदर कंधरि थविउ	धिजाहरकिंकरेहिं णविउ ।	
णिउ तर्हि जर्हि अच्छइ खयरवइ	सो पभणइ पुलयपसण्णमइ ।	5
कंतावइप्रियं सुकंतरमणा	रइकंता सिरिकंता मयणा ।	
वणबाला बालहुं तुहुं जि वरु	जामाइउ महु जियकुसुमसैरु ।	

घत्ता--करि खंभि णिबद्धउ कंतिंसणिद्धउ भरहसयणसुविणीयउ ॥  
सिंदुरे पिंजरु आसाकुंजरु पुष्पयंतु णं बीयउ ॥ १२ ॥

इय महापुराणे तिसट्ठिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए  
महाभव्वभरहाणुमणिणए महाकव्वे महाकरिरयणैलंभं णाम  
चउत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३४ ॥  
॥ संधि ॥ ३४ ॥

12. १ MB पिय, २ MB add after this: इय पमणिवि चरि पइसारियउ, पुरणरणारिहिं जय-  
कारियउ. ३ K °सिणिद्धउ. ४ MB पुष्पदंतु. ५ MB रयणालंभे.

12. 8 भरहसयणं भरतस्य स्वजना वृत्त्याः 9 पुष्पये तु पुष्पदन्तनामा दिग्गजः.

XXXV

ता चक्खु णिबांधिवि खेयरहं तिजंगुत्तिमलायणइ ॥  
राणउ तहिं होंतउ अवहरिवि णियउ सुहावइकणइ ॥ भुवकं ॥

।

चंडकिरणकरदिण्णालिंगणि  
कहसु सुहावइ किं सरयम्भकं  
किं दीसंति बलायउ पंतितउ  
किं सुरचावइं भदि विचित्तइं  
किं णक्खत्तइं णं णं ग्यणइं  
किं णहु एहु धरग्गि णिसण्णउं  
देव णाययलु णामें राणउ  
एम चवंतइं विण्णि वि तुरियइं  
पभणइ पिययमु हलि किं जणवउ  
महियदुसहससिलेहाविरहहं  
सो हरि धरहुं ण जाइ णरिंदहु

पुच्छइ पृउं गच्छंतु णहंगणि ।  
णं णं घरइं णहग्गणिसुंभइं ।  
णं णं धयमालउ घोळंतितउ । 5  
णं णं पिय तोरणइं पवित्तइं ।  
मंदिरलग्गइं णं पुरेणयणइं ।  
णं णं णागणयरु वित्थिण्णउं ।  
एत्थु वसइ बलवंतु अदीणउ ।  
जहिं जणु मिलियउ तहिं अवयरियइं 10  
कहइ कुमारि एत्थु णिवसइ हउ ।  
गंधवाहरुप्पयचित्तरहहं ।  
चंचलु मणु णावइ कुमुणिंदहु ।

घत्ता—णिर्हुरियणयणु णिम्मंसमुहु लक्खणलक्खविसिट्ठउ ॥

सुणित्ठम्भक्खुम्भक्खुरु वियडउरु रापं हयवरु विट्ठउ ॥ १ ॥ 15

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:—

इति भरतस्य जिनेश्वरसामायिकशिरोमणेर्गुणान् वक्तुम् ।  
मातुं च वार्धितोयं तुलुकैः कस्यास्ति सामर्थ्यम् ॥

GK do not give it.

1. १ MBK तिजगुत्तम°. २ MB पिउ. ३ MB बलायापंतितउ. ४ MB धयमालाउ घुळंतितउ.  
५ MB पुररयणइं. ६ B गिरियणयणु.

1. 4 b णहग्गणिसुंभइं आकाशस्पर्शानि. 9 b अदीणउ लक्ष्मीपरिपूर्णः. 15 सुणित्ठम्भक्खुम्भक्खुरु सुष्ठु नियमेन ऊर्ध्वाः अक्षोभ्याश्च लोहटंकणघटितत्वात् खुरा यस्य; विषड° विस्तीर्णम्.

## 2

धाइउ दुद्धरु	खरखुरखयधरु ।	
मरगयणिहतणु	कंपावियजेणु ।	
तंबिरणयणउ	भंगुरवयणउ ।	
दसणैभयंकरु	अरिअमरिसहरु ।	
भुवणविमहै	लिहिलिहिसैहै ।	5
बहिरियदसदिसु	मग्गियरणमिसु ।	
णवर णरिंदै	चवलु मइंदै ।	
णं सारंगउ	धरिउ तुरंगउ ।	
कुंकुमपिंजरु	चलु पंसरवि करु ।	
भुयबलपोहै	पुणु आरुहै ।	10
रायहं पीलिउ	वग्गइ चालिउ ।	
अवलोइवि कंसु	हरि हूयउ वसु ।	
पुलइयकापं	खगसंघापं ।	
पयइयिमंगलु	घुट्टउ कलयलु ।	

घत्ता—ताँ बुज्झिअवि महिच्चइ अतुलबलु अहिवलेण सुरवण्णी ॥ 15

धरचंदणपरिमलचंदमुहि चंदलेह तहु दिण्णी ॥ २ ॥

## 3

चंदलेह आउच्छिवि गिग्गउ	णियउ सुहावईइ णिविसै गउ ।	
तेत्तहि जेत्तहि सीमामहिहरु	विउलणियंबुग्गयणवसुरतरु ।	
वे वि चारुत्तामीयरवण्णइं	तेत्थु लयाहरि जाम णिसण्णइं ।	
ता मखग्ग खग वेणिण समागय	णं णहि णिसियर णिसिहर उग्गाय ।	
महुरगिराइ पउंजियविणपं	पुच्छिय ते <sup>3</sup> वणितणयातणपं ।	5

2. १ MB °खुरखयधरु. २ M कंपावियतणु. ३ MB दंसणभयकरु. ४ MBK हिलिहिलिसैहै.  
५ MB पसरियकरु; K पसरवि करु. ६ B कियु. ७ MB तो.

3. १ MB णिवसै. २ MB °ग्गयसुरतरुवरु. ३ B तेण तेणयातणपं.

2. 2 a °णि ह° सहशी.

3. 4 b णिसियर णिसिहर चन्द्रादित्यौ. 5 b व णितणयातणपं कुबेरश्रीपुत्रेण श्रीपालेन.



दीसह बे वि सुदु सुच्छाया  
तेहिं पउत्तउ गियपुरु छंडिवि  
अम्हइं आया पइं जि गवेसहुं  
लइ लइ लहु णिसिसु पवंदहि  
तो तुहुं होसिं बप्प चक्रेसरु

कहह कासु किं कारण आया ।  
गयणु पायपुंडरियहिं मंडिवि ।  
दइउ बुद्धि पोरिसु विण्णासहुं ।  
एहु पहीणखंभु जइ छिंदहि ।  
विज्जाहरभुगोथरईसरु ।

10

घत्ता--तं णिसुणिवि असिवरु करि करिवि खंभु कुमारें घाइउ ॥

असिजलधारइ सो णिटुरु वि पत्थरु तइ वि दुर्हाविउ ॥ ३ ॥

4

तुहुं सो चक्कवट्टि जयसिरिहर  
सुहवईइ मंतें औराहिवि  
तरुणतरणिणिहु तरुणहुं ढोइउ  
बहुविज्जासांमत्थममग्गइ  
पुणु एहु णहयलेण णिउ महियन्नु  
चरणरहिउ णं तवसि कुसीलउ  
दुरु मुक्ककंचुउ णं कयरणु  
दुरसणु छिहण्णेसिउ णं खलु  
परतीरु व आयंबिरणेत्तउ  
अण्णु वि णं जैउं जगसंप्रासणु

इय अहिणंदिवि गय ते णंहयर ।  
तं करवालु करालु पसाहिवि ।  
पीडिवि मुट्टिइ तेण पलोइउ ।  
मुद्धइ मुद्धयंदमोहग्गइ ।  
दिट्टउ मणुयजुयलु अमलियबल्लु । 5  
रयणरहिउ णावइ रयणालउ ।  
दसहाविसु णं पलयमहाघणु ।  
पुहइपालु णं विरइयमंडलु ।  
कालें कालैवासु णं वित्तउ ।  
दिट्टु महोरउ दाढाभीसणु । 10

घत्ता—दिट्टुं पुंछि धरिवि पुहईसरिण प्रांण हरंतु पमत्तउ ॥

सो विम्महरु भामिवि गयणयलि महियलि इत्ति णिहित्तउ ॥ ४ ॥

४ MB read for this line लइ णिसिसु देव भुयदंढें, परबलबलदलणेण पयंढें; and add the following: एहु पाहाणखंभु जइ छिंदहि, अम्हइ हियवउ लहु साणंदहि ( B आणंदहि ). ५ MB बप्प होसि. ६ K दोहानिउ.

4. १ K णरवर, २ MB मंतेणाराहिवि, ३ MB करालु करवालु, ४ MB °समत्थसामग्गइ, ५ MB मयराळउ, ६ MB कालपामु, ७ M जमु ८ MB °संपासणु, ९ M विट्टु पुच्छे; B दिट्टु पुच्छि. १० MB पाण.

8 b विण्णासहुं परीक्षितुम्.

4. 2 b करालु भयानकः. 4 b मुद्धयंद° द्वितीयाचन्द्रः. 6 a चरण° चारित्र्यं पादाश्च. 7 b °वि सु गरलं पानीयं वा. 8 a दुरसणु द्विजिह्वः, छिइ° रन्ध्रं दोषश्च. 9 b कालवा सु कालपाशः. 10 a जउं यमः.

5

जायउ रंयण सो जि ह्यगयघड  
अंगुलीउ अंगुलियहि दिण्णउ  
तेण भणित कवडं पणवेण्णिणु  
अइ तुहुं पयइं रयणइं घट्टहि ।  
तो ते तांइं णिहिट्टइं रयणइं  
सिद्धइं भंणिवि णमंसिउ लोपं  
अच्छिहिं अंधसहासें दिट्टउ  
जंपिउ मूयहिं म्हुुरालावें

जं जिप्पंति समरि पडुपडिभड ।  
अण्णेकु वि अरिणरु अवरण्णउ ।  
एह ङांवि कुलिसमय लण्णिणु ।  
तो जाणमि तिहुयणु वि पलोट्टहि ।  
मउलावियइं दुसीलहं णयणइं । 5  
मण्णिउं वण्णिउं दिण्णविहोपं ।  
बहिरहं बहिरत्तणु णट्टउ ।  
मुउ जीवइ सिरिवालपहावें ।

घत्ता—परियाणिवि गुणगणु हरिसिपण कुर्वंलयच्छि कुचलयभुय ॥  
सिरिसेणें तहु सिरिउरवइणा वीयसोय दिण्णी सुय ॥ ५ ॥ 10

6

विजयणयरि जसकिसलयकंदें  
पुणु धण्णउरि धणाहिवरापं  
उप्पण्णा सेणावइ धरवइ  
पुणु वि सुहावइइं पंडु चालिउ  
दससिरु मच्छरजलणुप्पायणु  
हरगलगरलतमालु व कालउ  
कण्णकइयवयणाइं भणंतें  
पञ्चारिय रणि तेण सुहावइ  
मा महु अग्गइ धरहि सरासणु

कित्तिमई वरकित्तिणरिदें ।  
विमलसेण दोइय अणुरापं ।  
सपुरोहिय णिवणयपरिणयमइ ।  
धूमवेउ गयणद्धि णिहालिउ ।  
वीस पाणि परै वीस वि लोयणु । 5  
भिउडिभंगभंगुरभालालउ ।  
णारिवर्राइं तणु व गण्णंतें ।  
मेळ्ळि मेळ्ळि सिरिवालु रसावइ ।  
मा वच्चहि हयासि जमसासणु ।

घत्ता—जसु हियवइ भडहंकारु णवि हालि महुं हासउ दिज्जइ ॥ 10  
रक्खिज्जइ पइं वि महेलियइ सो किह संदु रमिज्जइ ॥ ६ ॥

5. १ MB सो जि रयणु. २ MBK जे. ३ MB दावि. ४ MB ताम्व णिहइइ. ५ MB सुणिवि.  
६ MB लोयइ. ७ MB दिण्णविहोयइ. ८ MB °सहासहि. ९ बहिरंतहि. १० MB कामलच्छि कोमलभुय.  
6. १ B णिउ. २ MB मच्छरु; T मच्छरजलण°. ३ MBK वर. ४ MB °वराइम तणुध गण्णंतें.

5. ३ a ङा वि मुद्रा.  
6. ६ a मच्छरजलण° कोपाभिः.

7

चवइ किसोयरि एउं णं जुत्तउं  
सप्पमग्गु जइ सप्पु जि बुज्झइ  
एहु धरायरु तुहुं गय्येणायइ  
जइ तुह एहु किं पि आसंकरु  
जइ तुहुं ण मरहि एयहु भुयबलि  
खल दल्लवट्टिवि हरिसं णच्चमि  
आउ आउ णियणाहु ण मेल्लमि  
एम चवंति तेण सीं घाइय \*

रे रे धूमवेय पइं वुत्तउं ।  
खयरं सहुं जइ खयरु जि जुज्झइ ।  
वज्जिवि विज्जउ पसरहि णियंयरु ।  
विवरीयाणणु पाउ वि कंपेइ ।  
तो हउं पईसउं जलियमहाणलि । 6  
वइरिमरि हउं णारि ण वुच्चमि ।  
तिक्खतिसुल्लं पइं उरि सल्लमि ।  
करवालेण दुलंघ दुहाइय ।

घसा—ता जायउ विण्णि सुहावइउ उक्कयखग्गविहत्थउ ॥

हणु हणु पमणंतिउ हुंकरिवि थक्कउ जुज्झसमत्थउ ॥ ७ ॥ 10

8

अक्कु वि सक्कु वि वित्ति चवक्करु  
दूण दूण वड्डिय संजायउ  
वेट्ठिउ धूमवेउ चउपासहिं  
विप्फुरंतु जयसिरिउक्कंठिउ  
ता वुत्तउ णिवेण मा घायहि  
अण्णु वि मुइ मइं कहिं मि वणंतरि  
एक्कहियय होएप्पिणु भंडहि  
ता मुइइ पिउ अल्लिउ महिहरि  
दुरु णिरुद्धचंडकिरणायवि  
दिट्ठउ विज्जाहरिइ णरेसरु

सुहइ हणंतु ण णिविसु वि थक्करु ।  
कण्णउ कण्णावेसें जायउ ।  
आहउ जिगिजिगंत णिसिसहिं ।  
सो वि जाम बिहिं कवहिं संठिउ ।  
बहुय होति रिउ कइंनु विवेयहि । 6  
आवेज्जसु पुणु जिंसइ संगरि ।  
अरिसिरकमल्लं खग्गं खंडहि ।  
थिउ लंबियतणु कक्करतरुवरि ।  
बाहहिं लंबमाणु तहिं पायवि ।  
णं गुणि संधिउं मयरद्धयसरु । 10

7. १ MB अजुत्तउं, २ MB गयणेसरु, ३ MB णियकरु, ४ MB विवरीयाणणु, ५ MBK बंकरु, ६ MB पइसमि, ७ MB दल्लवट्टमि, ८ MB पेच्चमि, ९ MB लवंति, १० MB संघाइय, ११ MB दुहाविय, १२ MB उग्गय°.

8. १ MB चमक्करु, २ MBT विहुअंसहिं, ३ MBK कज्ज, ४ MB वित्तइ, ५ MB संठिउ.

8. 9 a °चंडकिरणायवि आदित्यातपे.

घन्ता—तं पेक्खवि वम्महबाणहय सीमंतिणि तहि दुक्की ॥  
जंपइ पयडइं विडवाडुयइं कुलमंजायइ मुक्की ॥ ८ ॥

9

भो भो पुरिससीह दुहसल्लिउ  
सुहव कह व जइ मुयहि महीरुहु  
हइइं कसमसंति भजंतइं  
मा उप्पेक्खहि छणचंदाणण  
इच्छ इच्छ मइं पइं ण पयारमि  
भणइं कुमारवीरु किं खिज्जहि  
वरै पत्थु जि तरुसाहहि सुक्खमि  
वर णक्खाइं मिलायलि भग्गाइं  
वंतपंति वर जाउ दिसंतरि  
केसभारु वर वीएं णिज्जउ  
वच्छत्थलु वर पक्खिहि खज्जउ

पत्थु केण तुहुं आणिवि घल्लिउ ।  
तो णिवडहि णिरुत्तु हेट्टामुहु ।  
अट्ट वि अंगइं पलयहु जंतइं ।  
भो पत्थिवपउमाणण माणण ।  
घोरहु कंतारहु उत्तारमि । 5  
परपुरिसहु मणु देंनि ण लज्जहि ।  
णउ परघरिणिहि वयणु णिरिक्खमि ।  
णउ परणारीउरयलि लग्गाइं ।  
मा खुप्पउ परवड्ढिवाहरि ।  
मा परपणयणीहिं कड्ढिज्जउ । 10  
मा परतृथयणेहिं पेत्तिज्जउ ।

घन्ता—णयणइं धौलंति णिवारियाइं हियवउ जाइ विथारहु ॥  
संताउ पवड्ढइ रयणिदिणु तित्ति ण पूरइ जारहु ॥ ९ ॥

10

गेहदुवारि णिरोहु करेसइ  
लहुं आलिगिवि मुक्कणिबंधणु  
आसंकियमणु किं किर कीलइ  
अणु अणु जइ काइ वि मंतइ

पिसुणु को वि संगहणु धरेसइ ।  
लहु उट्टइ संवरइ पइंधणु ।  
दुज्जेसु धूमै अप्पउ णीलइ ।  
तो परथारिउ णियमणि चितइ ।

१ MB °मजायपमुक्की.

9. १ M कसमसंत. २ B omits this line. ३ B omits this foot. ४ M अक्खमि.  
५ MB बायइ. ६ MB परतिय. ७ MB बोलत, T घोळंति.

10. १ MB गेहि दुवारि. २ MB लइ. ३ MB मुक्क. ४ M सवरियउ; B सवरिउ. ५ MB दुज्जस.

9. 4 पत्थिवपउमाणण राजलक्ष्या आणण उपार्जक, माणण उपभोजक. 5 a पयारमि प्रथारयामि.

10. 1 b संगहणु पुश्चलयुगलम्. 2 a मुक्कणिबंधणु मुक्ककण्ठाश्लेषः; b पइंधणु परिधानम्.

पर्यहि सचिवेयहि हउं जाणिउ	एवहि कहि बन्धमि संदाणिउ ।	5
इहभवपरभवदुण्णयगारउ	परंत्ययरमणु सुट्टु विरुयारउ ।	
जाहि ण इच्छमि परघरसामिणि	उव्वसि जई वि रंभ सुरकामिणि ।	
रमणीयइ पररमणालुद्धइ	तं णिसुणिंवि णहणारिइ कुद्धइ ।	
णरणहें पियसहि वणि मेळिय	साहिसाह सा छिंदिवि घळिय ।	

घसा--थरहरियपाणिपयसिरकमलु विहुरयालि सुहजणणियइ ॥ 10  
 णिवडंतउ धरिउ सैंइ भुयहिं जक्खइ चिरभवजणणिइ ॥ १० ॥

## ॥

वइसारिउ सोवण्णसिलायलि	भाणिउं णिसुणि हई जक्खहुं कुलि ।	
हउं तुह मार्य पुत्त पोमावइ	पुव्वजम्मि होंती पाडलगइ ।	
एम्ब चवेप्पिणु णेहपयामें	बालु पसाहिउ करसंफासैं ।	
भुक्खंतण्हणिहालसु णट्टउ	तणउ पवुचु ताइ संतुट्टउ ।	
फुरियविविहमणिकिरणणिरंतरि	पइसहि गिरिगुहविवरब्भंतरि ।	5
तं णिसुणिंवि सो तेत्थु पइट्टउ	तावेत्तहि संगामि पणट्टैउ ।	
धूमवेउ मज्जियसरजालहि	विजाछेउ करंतिहि बालहि ।	
पुणु उप्पण्णु वियप्पु विहीसरु	जिह देविइ उद्धरिउ णिहीसरु ।	
गय णियवासहु वीणालाविणि	एत्तहि राउ रायचूडामणि ।	

घल्ला—पइसंतु चिन्मंडुलि विवरवहि मलिलमहाद्रहि पडियउ ॥ 10  
 तहिं जंतु तैरंतु सिलामयहु खंभहु उप्परि चडियउ ॥ ११ ॥

६ MB परतिय°. ७ MB जहि. ८ MB रभ जइ वि. ९ M सयभुयहिं, B सयंभुवहिं.

11. १ MB पुत्त माय २ B °निण्ह°. ३ B पइट्टउ. ४ B धूमकेउ. ५ MB °महरहि. ६ MB वुरंतु. ७ T विसंकलि.

6 a °दुण्णय° दोषः अण्कारो वा.

11. 2 a पोमावइ पद्मावती नाम यक्षिणीजातिः; b पुव्वजम्मि सत्यवतीजन्मनि. 8 a विहीसरु देवी वाणी. 10 विसट्टुलि निम्नोक्तते.

12

तावत्थइरि सूरु संपत्तउ  
सहइ जंतु वरुणासालाणिहि  
कुंकुमकुसुमामेलु व रत्तउ  
णं णवदलु णहरुक्खहु ल्हसियउ  
भाणुंभिनु किरणावलजड्डियउ  
मंवंतमालणीलि पसरियतमि  
णक्कच्चकभयपसरविसण्णउं  
सिरिअरहंतसिद्धभायरियहुं  
पंचहुं संचियसम्मयदिट्ठिहिं

णं दिणरापं झेंदुउ धित्तउ ।  
मणि व पडंतु महण्णवस्साणिहि ।  
णं चउपहर रुहिररसलित्तउ ।  
रत्तहलु व दिसेतरुणिइ डसियउ ।  
उग्गत्तेण अहोर्गइवडियउ । 5  
तहिं विवरंतरि रयणिसमागमि ।  
णीलसिलीयलखंभि णिसण्णउं ।  
उज्झावहुं साहुहुं कयकिरियहुं ।  
सुयरइ पट्टुचरणइं परमेट्ठिहिं ।

घत्ता—असियाउसाइं पंचक्खरइं झायंतहु साणंदइं ॥

10

चोरारिमारिमिहिपाणियइं उवममंति मृगंवंदइं ॥ १२ ॥

13

ताम पहाइ कालि रवि उग्गउ  
णीरु तरेप्पिणु तेण तुरंतें  
रापं णयणाणंदजणेरी  
णिन्वियार णिग्गंथ मणोहर  
लक्खणलक्खुवलक्खियदेही  
हउं सा भणमि कुहिणि अपवग्गहु  
सा णाहिं मरसलिलहिं सिचियं  
पुणुं जिणतणुसिरि संथुय भत्तिइ  
भैहपसत्थहत्थगुणराइय

णं महिउयरु वियारिवि णिग्गउ ।  
तीरि परिट्ठिय तहिं जि भमंतें ।  
दिट्ठी पडिम जिणिंदहु केरी ।  
पहरणवज्जिय भोलंबियकर ।  
हउं सा भणमि अहिंसा जेही । 5  
कट्ठिणभुयग्गल णारयमग्गहु ।  
वियभियघवलहिं कमलहिं अंचिय ।  
सव्वभूयगणविरइयमेत्तिइ ।  
ताम तहिं जि जक्खिणि संप्राइय ।

घत्ता—संभासिवि णिहिलणिहीमरिइ हरिसुण्णुल्लियणेत्तउ ॥

10

वैइसारिवि पट्ठि पयाहिवइ मंगलकलमिहिं सित्तउ ॥ १३ ॥

12. १ MB दिसतरुणिइ, २ MB °गइपडियउ, ३ MB °सिलायलि, ४ MB मिग°,  
13. १ MBK पहायकालि २ MB अववग्गहु, ३ MB संचिय, ४ B omits this line,  
५ B omits this foot, ६ MB सपाइय, ७ T आहिसारिवि.

12. 3 a कुंकुमकुसुमामेलु व कुंकुमकेसरसंधात इव. 7 a णक्क व क° जलचरसंधातः.

13. 11 वइसारिवि प्रतिष्ठाप्य.

## 14

भूसणपरिहाणाइं रचण्णइं  
 गयणगमण पाउयजुयलुलउ  
 ताम तहिं जि परिभमिवि सभायइ  
 खँइरिइ मइरिणीइ पहु जोइउ  
 सो पडंतु सयलु वि णिइलियउ  
 पुष्पयंतफणिफुक्कारियसरि  
 एम भणिवि ताए वित्थिणी  
 णवर चंडदंडे सा खंडिय

छत्तदंडरयणइं तहु दिण्णइं ।  
 दिण्णउ अण्णुं वि जं जं मल्लउ ।  
 रयकारणसंभूयकसायइ ।  
 पाहाणोहु णहाउ णिवीइउ ।  
 दिव्वछत्तरयणे पडिखलियउ । 5  
 मइं ण रमंतु मरउ विवरंतरि ।  
 सेलगुहादुवारि सिल दिण्णी ।  
 कुवलयवइणा कणु कणु खंडिय ।

घत्ता--उग्घाडिवि दारु णराहिवइ पाउयजुयले गच्छइ ॥

णहि जंतु पुंडरिंकिणिणियडि सुरमहिहरवणु पेक्खइ ॥ १४ ॥ 10

## 15

पेच्छइ खंधावारु विमुक्कउ  
 माइ तुहारउ लहुउ थणद्धउ  
 तिजगबंधु महु बंधउ णाँइउ  
 वसुवालेण भणितं किं ससहरु  
 किं दीसइं णवसंज्ञाजलहरु  
 सोदामिणि णं णं दंडासणि  
 एम वियप्पिवि राए वुत्तउ  
 इय पलवंतहु तहिं जि पराइउ  
 सुहिपरियणु हरिसे रोमंच्चिउ

सत्तमु दिवसु अज्जु सो दुक्कउ ।  
 मणुयवेसु णावइ मयरद्धउ ।  
 एम भणिवि जलहरवहु जोईउ ।  
 णं णं छत्तु एउ णं णिसिहरु ।  
 पक्खि को वि णं णं णिच्छउ णरु । 5  
 तारावलि णं णं भूसणमणि ।  
 एइ सहोयरु एहु णिरुत्तउ ।  
 विहिणा सोक्खुपुंजु णं ढोईउ ।  
 तं णउ माणसु जं णउ णच्चिउ ।

14. १ M परिहाणइं बहुवण्णइं, B परिहाणइं वरवण्णइ २ MB अवरु, ३ MB रइकारणं  
 ४ MB खयरिइ मइरिणियइ, ५ MB णिवायउ.

15. १ MB मयणवेसु, २ MB णावइ, ३ MB जोयइ, ४ MBK णउ ससिहरु, ५ MBK  
 सीसइ, ६ MB ढोइयउ.

14. ३. a सभायइ समागतया; b रइकारणं रतिमुखकार्ये. (1) a °स रि शब्दे.

15. २ a थणद्धउ पुत्रः.

पणविउ पड्डु णिलयणु णिय तायड्डु      जगतायड्डु पञ्चकखविहायड्डु ।      10  
तेहिं बिहिं वि तेणं जिणु पेच्छिवि      भवसंसरेणावत्थ दुगुंछिवि ।

घत्ता—सिरिवालें गुरुगुणबालु तहिं मउडचढावियहत्थें ॥

वंदिउ परमेसरु परममुणि परमप्पउ परमत्थें ॥ १५ ॥

16

जेण विणासिवि घाल्लिउ ईसरु	पुच्छिउ देविइ सो जोईसरु ।
पुत्तु महारउ केण विड्डुसिउ	चंदु व पवरपहाइ पयासिउ ।
पभणइ जिणुगयजम्मि किसोयरि	पयड्डु हुयमेत्तड्डु मुय मायरि ।
ड्डुई काणाणि ज्कखसुरेसरि	बहुविग्गमविलास णं सुरसरि ।
जाणवि णंदणु अप्पणु देहें	ताइ पड्डु पुज्जिउ बंहुणेहें ।      5
आय मुहावर कहिउ कुमारे	पयइ रक्खिउ हउं बलसारे ।
विज्जाहरहं पयासियवसणहं	मायावियहं अणेयहं पिसुणहं ।
एह मज्जु ड्डुई विह्वंतड्डु	लग्गणवल्लुरि अवड्डि पडंतड्डु ।
एह मज्जु ड्डुई विंतामणि	कामधेणु कप्पहुमगोमिणि ।
एह मज्जु संजीवणि ओसहि	विहुरसमुहणाव णिरु पियसहि ।      10

घत्ता—हउं पयइ रक्खिउ सुंदरिइ पयहि जीउ वि दिज्जइ ॥

जसु पुत्तु कलत्तु ण मित्तु सुहि सो दुहंसलिले मज्जइ ॥ १६ ॥

17

पइं सँडुं मड्डु उग्गयमुहरायउ	माइ माइ मेलावउ जायउ ।
जं तं पयहि तणउं विजंभेउ	पयहि परबँलु बलिण णिसुंभिउ ।
तं णिसुणिवि विणएं पणयंगिय	मासुयाइ कुलवड्डु आलिंगिय ।

७ MB णिउ णिलयणु, ८ MB तेण वि, ९ MB °संसारावत्थ.

16. १ MB चिरु णेहें, २ MB दुहसलिलि णिमज्जइ.

17. १ G सुहु, २ MB वियभिउ, ३ B पनलबलेण.

10 a णिलयणु समवसरणम्, b °वि हा य हु विधातु. प्राणिनां वाञ्छितफलप्रदस्य, 11 a बिहिं वि कुवेरश्री-वसुपालाभ्याम्; तेण श्रीपालेन.

16. 1 a ईसरु अस्य विष्णोरपत्य ई कामस्तस्य सरु बाण. 3 b हुयमेत्तड्डु जातमात्रस्य. 8 b अवड्डि कूपे.

17. 2 a विजं भउ विजृम्भितं चेष्टितम्.



पुषि पुषि पइं काइं पसंसमि  
 चक्रषट्टिलक्षणसंपुण्ड  
 तुहुं जि एक महु आसाऊरी  
 जुवईमइउ हलि कहिं तेरउ  
 तुह केरउ जियकरिकुंभत्यलु  
 महु तणयहु वम्महपासा इव  
 पभणइ कण्ण पुण्णसामत्थं  
 सेलें मिण्णु ण भिज्जइ अंगउ  
 पुणु कुबेरलच्छिइ परिपुच्छिऊ

सिहिसिह किं रविपडिमहि दंसंमि ।  
 पुत्तु महारउ पईं महु दिण्णउ । 5  
 तुहुं संगरि सूरैहं वि सूरि ।  
 कहिं पोरिसु परवीरधियारउ ।  
 धणुगुणछणियउं जयउ थणत्थलु ।  
 तुह भुय रिउहुं कालपासा इव ।  
 गिरि खुउ धरिउ धणेसरिहत्थे । 10  
 जहिं तुह सुउ तहिं सयलु वि चंगउ ।  
 कहउं भवि सुय तहिं कम्मं णियच्छिउ ।

घत्ता—ता कहइ महामुणि राणियहे घोरवीर तवु तत्तउ ॥

चिरभवि दोहिं वि तुह तणुरुहहिं अणसणु किउ जिणवुत्तउ ॥ १७ ॥

## 18

सग्गसिहरि सुरवरसिरि भुंजिवि  
 दिव्वु देहु मेलेपिणु आया  
 वसुवालहु सिरिवालहि केरी  
 मुणि वंदिवि सयलइ संतुद्धं  
 पुज्जिवि पत्तावलिविण्णासहिं  
 मुक्क सुहावइ पिययम मायइ  
 गय सुंदरि णियमंदिरु जामहिं  
 करपल्लवि लग्गउ रइजुत्तिहिं

जिणपडिबिबहु पुज्ज पउंजिवि ।  
 ए बिण्ण वि तुह सुय संजाया ।  
 पुण्णपवित्ति गरुयसुहगारी ।  
 उच्छवेण णियणयर पइद्धं ।  
 चेलियरयणाहरणविसेसहिं । 5  
 धणुधारिणि सम पाउसछायइ ।  
 वसुवालहु विवाहु कउ तामहिं ।  
 अट्टोत्तरु सउ णरवइपुत्तिहिं ।

घत्ता—पुणु कहइ सुलोयण णियचारिउ सइ परिपुरिसपरंमुह ॥

भरहाहिवभिच्चहु घणरवहु पुष्पयन्तमोहियंमुह ॥ १८ ॥

10

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयन्तविरहए  
 महाभव्वभरहाणुमण्णिण महाकव्वे पद्मसिरिपालसंगमो णाम  
 पंचतीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३५ ॥

॥ संधि ॥ ३५ ॥

४ MB देसमि. ५ M °सपण्णउ. ६ MB महु पइ. ७ B सूरइ. ८ MB धणेसर°. ९ B सूलिण. १० MB कम्म. ११ M घोर वीर तव; B घोरवीर तव.

18. १ MB दिव्वदेहु. २ M परंमुहं; B परंमुहहो. ३ M °मुहं; B °मुहहो. ४ MB °सिरिवाल°.

18. 5 b चे लिय फाली (?).

XXXVI

छ वि लेपिणु कण्णउ वरतणुवण्णउ खगहु अकंपहु सा सुय ॥  
सत्तमादिणि सुहमइ पत्त सुहावइ णविय ताइ सइं सासुय ॥ धुवकं ॥

I

भासिउं भइइ गुणजुत्तियउ  
होहिंति भणिवि मृगणेत्तियउ  
संमाणहि मइं संमाणियउ  
ता लच्छिइ ताउ पसाहियउ  
पुव्वं चिय तेत्थु पैरिट्ठियहिं  
हयदइधे कहिं वि विओइयउ  
पहिलारउ परिणिय सेट्टिसुय  
अणुं अवरउ थोरथंद्धथणियउ  
विरहग्गितावणीवावणउं  
दिट्टउ करंतु सो पृंउ ललियउ

पर्यंउ तुह सुय कुलउत्तियउ ।  
तड्ढिवेपं गहणि णिहित्तियउ ।  
पवहि तुह मंदिरु आणियउ । 5  
णवमालइमालावाहियउ ।  
भूगोयेरेहिं उक्कंठियहिं ।  
मायापियरेहिं वि जोइयउ ।  
जसवइ णामे जसकंतिजुय ।  
रइकंताइयउ सुहासिणियउ । 10  
अट्टहिं तरुणिहिं सहुं मेलणउं ।  
मुत्तिहिं समिइहिं णं जिणु मिलियउ ।

घत्ता—जोएवि सवसिहि मुंहु वणिउत्तिहि णीसंसेवि दुहहणणहु ॥

ईसावसकुद्धइ तक्खणि मुद्धइ आसंधिय घरु जणणहु ॥ १ ॥

M has, at the commencement of this Samdhi, the following couplet in the margin:—

पुक्कयंतदिण्णउं धणुहुं सरु दिण्णउ सरु सति ।  
मारिय मिच्छमयाहिवइ गुणु पुणु तिहुयणकिति ॥ १ ॥

BGK do not give it.

1. १ K सत्तमे दिणे. २ B सुहामइ. ३ M एयहि. ४ MB भिग°. ५ MB परिट्ठियउ. ६ MB उक्कंठियउ. ७ MB विअरहिं विच्छोइयउ. ८ MBK पुणु. ९ MB °यट्ट°. १० MB पिय. ११ MB गुत्ती-समिइहिं. १२ B महु. १३ M णीसेसवि.

1. 1 छ षट्कन्याः; सा सुय सा प्रसिद्धा पुत्री. 6 a लच्छिइ कुबेरभिया. 8 a वि ओइयउ विभोगं प्रापिताः. 10 b सुहासिणियउ शोभनवचनाः. 11 a °णीवावणउं विध्यापनम्.

## 2

सुहर्षइयहि तायहु वज्जरिउ  
 मण्णंति ण अम्हइं खेयरइं  
 मेरउ मेळ्ळिवि रिउ जीवहरु  
 अबिसेसाविवाहें किं करामि  
 णउ अण्णणारिरयरंजियहु  
 पडिलवइ जणणु मुइ कलमलउ  
 अण्णण्णहिं कुसुमहिं विणु गमइ  
 पत्थंतरि सिरिवालें णयरि  
 णालोयंतें पुणु जाणियउं  
 अंइ लज्जिवि णियभवणहु गयउ  
 इय चित्तिवि णहयरु पक्कु णरु  
 संपत्तउ गेहुँ अकंपणहु

भूगोयरभूगोयैरचरिउ ।  
 अणुरत्तइं गुणविहियायरइं ।  
 पहिलउ जि किराडिहि धरिउ करु ।  
 वैर णिच्चलु कण्णावउ धरमि ।  
 आलिंणु वैवि तासु प्रियहु । 5  
 विहुँ होइ सहावें चंचलउ ।  
 किं एकहि वेल्लिहि अलि रमइ ।  
 मग्गिय मृगलोयण धरि जि धरि ।  
 हा पृयभाणुसु अवमाणियउं ।  
 किं जंतुं जंतु वि विरहें मयउ । 10  
 पेसिउ लहु लल्लिपं लेहधरु ।  
 जिणचरणभस्मिभावियैमणहु ।

घसा—लेहें सहुं पाहुइ डोइवि खगभहु पडिउ खर्गिदहु पायहि ॥

तुहुं मण्णिउ सज्जणु विणिहयदुज्जणु वसुसिग्गिवालहिं रायहि ॥ २ ॥

## 3

तेण वि णियहत्थि णिवेइयउ  
 तं सोहइं वण्णहं पंतियहिं  
 कंचुइवैइणाइं सुणेवि सइ  
 तं पालिय कुलपरिहां सकुलि

आलिहियउ पत्तु पलोइयउ ।  
 अलवंतीहिं वि पलवंतियहिं ।  
 जं परिणिय वणिवरतणय मइ ।  
 मणु पुणु तुह पुत्तिहि मुहकमलि ।

2. १ K °वइयइ. २ MB °भूगोयरि°; GK add second °भूगोयर° in the margin; T भूगोयरचरिउ. ३ M वरु. ४ G करउ. ५ MB देमि ण तासु. ६ MB प्रियहु, K पृयहु. ७ M विह  
 ८ MB म्गिलोयणि, ९ MB प्रिय°. १० MBK लइ. ११ जणु जंतु वि, १२ M ललियं, १३ MB लेहु.  
 १४ B °भावियरणहु.

3. १ MB साहइ. २ MB वयणाइ. ३ MB ता. ४ MB हासमले.

2. 1 b भूगोयर° वसुपालादयः; भूगोयरचरिउ भूगोचरेषु यथास्वत्यादिषु विषयेषु चैष्टितं आचारं  
 मन्यन्ते. 6 a मुइ मुच्च; कलमलउ ईर्ष्याजनितस्नेदम्. 11 b ल लि एं श्रीपालेन.

3. 2 b अलवंतीहि वि पलवंतियहि स्वयमनुवाणाभिरपि अर्थप्रतिपादनद्वारेण नुवाणाभिः. 4 a  
 कु क प रि हा कुलपरिखा कुलमर्यादा, सकुलि स्वकुले.

संपयकुसुमावलिगोरियहि  
जिह कडिर्णं थणत्थलु तिह पहरं  
कण्णंतु समागय णयण जिह  
जिह मज्झु खीणु तिह विरहियणु  
जणणंकासणइ णिसण्णियइ  
तं णिसुणिवि णिच्चरु च्चितियउ  
तहि पिउणा तं जि पबोल्लियउं  
तापण समउ गय कुमरि तहिं

संभरंमि सुयाहि तुहारियहि । 5  
जिह रत्त रत्तरणु तिह अहर ।  
परमारणसीला बाण तिह ।  
जिह धणु गुणमंडित तिह जि तणु ।  
कण्णियइ कुसुमसंरच्छण्णियइ ।  
महु णाहं माणु णियत्तियउ । 10  
हयगमणभेरिबल्लु च्छियउं ।  
णिवसइ सूहउ वरइत्तु जहिं ।

घसा—संपत्तु अकंपणु सकरि ससंदणु पेच्छिवि छणु णहंगणु ॥

गय विण्णि वि सायर संमुह भायर मम्ममाण आलिंणु ॥ ३ ॥

4

घरि आसीणाइं सणेहदय  
हेट्टामुह वहु वरेण भणिय  
घणु सोहइ पक्कइ विज्जुलइ  
इह सोहमि हउं पक्काइ पइं  
मा रुसहि सज्जणवच्छलिइ  
तं वयणं रोसणियत्तणउं  
वप्पिल संप्राइय रमणवसा  
चलयणजुयलणिज्जियहरिणि  
पंवट्टंसहासइं राणियहं  
पुणु पर्छइ णिरुवमभोयवइ

लहु अभागयपडिवत्ति कय ।  
किं इइं तुहुं मलिणाणणिय ।  
वणु सोहइ पक्कइ कोइलइ ।  
गुरुवयणु करेवउ तो वि मइं ।  
अलिणीलकुडिलमउकौंतलिइ । 5  
जायउं तहि रम्मु पेम्मु घणउं ।  
तडिरयतडिवेयहु तणिय ससां ।  
रइकंता मयणवइं तरुणि ।  
परिणियइं तेण खयरणियहं ।  
खगवइसुय णामं भोयवइ । 10

५ MB read for this foot: लडहंगहि मुणिमणचोरियहि. ६ M कडिणु, ७ B adds after this: महु आवइसयइ णिवारियइं, सभरमि सुयाहि तुहारियाइ. ८ B रत्तु रत्तरणु. ९ M °सीहा. १० M °सरसं-णियइ; B °सरकण्णियइ; T °कण्णियइ. ११ B adds after this: णियपुत्तहि मणु णीसल्लियउ. १२ MB add after this: तहु सइं तिहुयणु हल्लियउ. १३ MK आलिंणु.

4. १ G रोसु, २ MB संपाइउ. ३ MB °वस. ४ MB सस, ५ MB चउवट्ट°. ६ MB राणि-याइं. ७ MB °राणियाइं. ८ B पुच्छइ.

9 ० क णि य इ कन्यकया; °छ णि य इ भल्लिविशेषेण.

घत्ता—सेणावद्वगहवद्वहयगतियमद्वधवद्वपुरोहियजुस्तद्वं ॥

सज्जीवद्वं रयणद्वं रंजियणयणद्वं सप्त तासु संपण्णद्वं ॥ ४ ॥

## 5

रोसेण सुहावद्व हुंकरद्व  
सुरमणियवणियवणसिरिहि  
धरद्वसिहिं जसवद्वरूवु किउ  
परमेसर वणिसुय परिहविय  
तं णिसुणिवि णरवद्व मंचलित  
पद्वभत्तहिं झत्ति मदासद्वहिं  
प्रियवयणद्विं तिह तिह जंपियउ  
ईसालुय पद्वणा उवसमिय  
विज्जाहरि विक्रमहरिहरिहि  
पहरणसालहि सुहलियतवद्वहु  
णवणिविहवद्व जायउ चक्कवद्व

ईसाद्व ण पियपुरि पद्वसरद्व ।  
थिय भवणु रपपिणु सुरगिरिहि ।  
अणणेक्कद्व रायद्वहु विण्णविउ ।  
घरलंजियवेसें घरि थविय ।  
हरिखुरधूलीरउ णहि मिलित । 6  
संपत्तु णिवासु सुहावद्वहि ।  
जिह जिह मणु मुद्वहि कंपियउ ।  
जाद्ववि वणितणय ताद्व णविय ।  
थिय सा वि पुंडरिंकिणिपुरिहि ।  
उप्पण्णउं चक्कु णराहिवद्वहु । 10  
किं वण्णद्व अम्हारिनु कुकद्व ।

घत्ता—तलिमयलि रवण्णद्व ससहरवण्णद्व पडिवज्जिवि पक्कासणु ॥

जसवद्वद्वयद्व रापं सहं सपमापं किउ सुहद्वुहसंभासणु ॥ ५ ॥

## 6

अरि असणिवंउ चिरु मच्छरिउ  
घल्लिउ तंहि रययायलि चिउलि  
गद्वलंघियणहयलजलहरहं

मायाहपण हउं अवहरिउ ।  
हिंदिउ तंहि काणणि गिरिगुहिलि ।  
दिद्वुं कवडद्वं विज्जाहरहं ।

१ MB गिह°. १० MB संपत्तद्वं.

5. १ MB °रुउ. २ MB पद्वभत्तिहि. ३ MB पिय°. ४ B ईसालुद्व. ५ MB जसवद्व महिरापं.

६ MB सुहद्वह संभासणु.

6. १ MB रययालिद्व तंहि. २ MB °थलयरह.

8. 11 °ति यमद्व° खीरल्लमू.

5. 9 a विक्रमद्व हरि हरि हि इन्द्रस्य सामर्थ्यस्फेटिका 10 a सुहलियतवद्वहु पूर्वभवोपाजितं  
सोभनफलितं तपो यस्य.

6. 2 b गिरिगुहिलि गिरिभिर्लघुपर्वतैः निबिडे.

मइं रइयइं पसरियअमरिसइं  
चलकरयललुलियैसुलमुसल  
उइहणपयंडपलैयपिहिर  
वूसासण दुमुँह कालमुह  
ए पिसुणियपिसुण मयच्छि महुं  
कीरइ रिउबलमयणिम्महणु  
उवसमइ खमाइ ण खलहियउं

अवलोइवि णाणासाहसइं ।  
आरुट्टु दुट्टु दप्पिट्टु खल । 5  
रिउ विज्जुमालि हरिवर खयर ।  
हरिवाहणधूमवेयपमुह ।  
ता चवइ कंत कंतेण सहुं ।  
तुप्पेण समइ किं ववदहणु ।  
अस्सिचावहिं जाम ण कलहियउं । 10

घत्ता—पुरिसेण महंते एत्थु जियंते जेण दीणु ण भरिज्जइ ॥

णंदंति ण सज्जण जंति ण दुज्जण खयहु तेण किं किज्जइ ॥ ६ ॥

7

महएविइ कज्जु णियच्छियउं  
भोयवइहि बंधवुं कुलधवलु  
अहिंसिचिवि पट्टुणिबंधु कउ  
रणि जिणिवि णिबंधिवि सत्तु तिणा  
सो तुरयारूढउ दंडकरु  
बहलंसुजलोहियणेत्तियहिं  
णियणाहहु दीणवयणु लविउ  
सयल वि ते परिवड्डियकिवहु  
रापं कारुणु ताहं करिवि

इय एहउ रापं ईच्छियउं ।  
णामे हरिकेउ विसालवलु ।  
सेणावइ खगवइ होवि<sup>३</sup> गउ ।  
आणिय णं विसहर पवरविणा ।  
पणवंतु पलोइउ णिवेण णरु । 5  
विलवंतिहिं खेयरपुत्तियहिं ।  
बहिणिहिं बंधवउलु मेल्लैविउ ।  
चरणारैविद णिवड्डिय णिवहु ।  
पेसिय देसहु अब्भुद्धरिवि ।

घत्ता—महियलु पालिज्जइ मग्गिउ दिज्जइ पणविज्जइ जिणयंदहु ॥ 10

पयवड्डिउ ण हम्मइ मग्गे गम्मइ एउ चरिन्तु णरिंदहु ॥ ७ ॥

३ MBK °तुलिय°. ४ MK पलयमिहिर; B मलयमिहर, G पलयपिहिर but originally पलयमिहिर which is corrected to पिहिर by yellow pigment. ५ MB दूमह. ६ MB तिम्महणु.

7. १ B पुच्छियउ. २ MB बंधउ. ३ MB होइ. ४ MB मेलविउ ५ MB चरणारविदु. ६ B पाविज्जइ. ७ MB जिणइंदहु.

7. 4. b पवरविणा प्रवरश्वासो विश्व गरुडस्तेन.

## 8

चउरासीलकखइं कुंजराहं  
छण्णवइ सहासैहं राणियाहं  
सोलहसैहसइं सिद्धहं सुरैहं  
घरि चोदह रयणइं णव वि णिहि  
सिरिवालहु पुण्णु पवित्थरिउं  
जं णयरायरउप्पण्णु धणु  
ता सकलुसु चविउ सुहावइए  
वसु पउ वि ण वच्चइ मरणदिणे  
इज्जेवउं सहुं बिहिं कप्पडेहिं

तेत्तिय सहसइं रहवैराहं ।  
बत्तीस णिवहं संताणियहं ।  
आणायराहं पंजलियराहं ।  
महि पयच्छ अणुकूलवहि ।  
जणु वण्णइ पुव्वभवायरिउं । 5  
तं जसवइ पइसारइ भवणु ।  
लुद्धइ संचियउ जसोवइए ।  
एक्केण जि भीसणि पेयवणे ।  
किं पुत्तकलत्ताहिं लंपंठेहिं ।

घत्ता—ता मंति<sup>१</sup> भासिउं गुज्जु पयासिउं एवमाइ मा भासहि ॥

10

जसवइयहि केरी तिहुयणसारी सीलविसि मा दृसहि ॥ ८ ॥

## 9

जसवइकुच्छिंहि जिणु संभविही  
जसवइयहि जसु महियलि भमिही  
परियाणिवि दिव्वमुंणिदु मुणि  
देविउ पेसणसंभाइयउ  
वसुहार पडिय घरंपंगणइ  
हरि करि रवि जलणरासि जलिय  
थिउ चंडेपुरंदरथुयचलणु  
सा सुंदरि णविय सुरासुरहिं

जसवइयहि होही परमविही ।  
जसवइयहि पैय इंदु वि णविही ।  
छम्मासहिं होही पत्थु गुणि ।  
सिरिहिरिदिहिकिसिउ आइयउ ।  
सुर मिलिय अणेय णहंगणइ । 5  
दिट्ठी सोलह सिविणावलिय ।  
जिणु देविहि देहइ कयकलुणु ।  
भावणवैतरहिं सविसैहरहिं ।

8. १ M तेत्तियइं जि लकखइ संदणाह; B omits this foot; K तेत्तियइं सहासइं रहवैराहं.  
२ MB add after this: तहु अत्थि सुट्टु संदणवराहं. ३ B सहस. ४ MB सहस सताणियाहं. ५ B  
०सहासइं. ६ MB सुराहं. ७ MB अणुकूलविहि; K ०वहि but corrects it to विहि. ८ MB पुण्ण.  
९ MBK कप्पडेहिं. १० MBK लंपडहिं ११ MB मंतिहिं.

9. १ MB जसवइहि कुच्छि. २ MB पयइं वि इदु णविही. ३ MBT ०मुणिद०. ४ MB घरंपंगणइ.  
५ MBK चंद०. ६ MB सुरासुरेहिं. ७ MB सविसहरेहिं.

8. 4 b अणु कूल व हि अनुकूलपथे, अनुकूलेत्यर्थः.

9. 4 a पेस णसंभाइयउ प्रेषणेन आज्ञादानेन संमानिताः.

तर्हि अवसरि माणमरुद्दु  
आवेप्यिणु गिम्मच्छरमइइ  
दिस्स कवण सुरासहि अणुहरइ  
का पुज्ज णारि पइं माइं विणु

मणि धम्माणंदु अणंतु हुउ ।  
जसवइ सइं णविय सुहावइइ । 10  
किं अवरहि रवि उग्गअं करइ ।  
अण्णाइ उयरि किं धरिउ जिणु ।

यत्ता—अमुणियसंबंधइ चिरु रोसंधइ फरुसक्खरु जं जंपियंउ ॥

तं अमरैपियारिइ खमहि भडारिइ मइं बालइ दुक्किउ कियंउ ॥ ९ ॥

10

णामेण विलासिणि रंगसिरि  
गच्छंति पलोइय वणिवइणा  
मुहयंदुज्जोइयसयलदिस  
ता कहिउ ताइ वणिणाह लहु  
बारहवारिसियउ खासु किह  
पुट्टउ णं अभिपं सिंचियउ  
जसवइपयगलियजलेण जरु  
सा धूमवेय वइरिणि खगइ  
जुवैराय हवेसइ पोट्टि तहि  
तो<sup>१</sup> जणणिइ जणियउ तित्थयरु  
उत्तारिउ धणु ल्हिक्कविय सरं  
णिउ मेरुहि नियसहिं जिणधवलु

अकमलकरि णं सयमेव सिरि ।  
पहि जंति भणिय वड्डियरइणा ।  
किं णच्चहि वच्चहि पुलयवस ।  
देवीपयफासैं णट्टु महु ।  
जिणदंसणेण जणदुरिउ जिह । 5  
तेणंगु मज्झु रोमंविथउ ।  
णासइ गहभूयपिसायडरु ।  
अवर वि गुरुहार जाय जुवइ ।  
जुयरायपट्टं बद्धउ अणहि ।  
भइयइ थरहरियउ पंचसरु । 10  
जिणजम्माणि कम्महु णत्थि धर ।  
जाणमि सिवसिरिकण्णहि धवलु ।

यत्ता—सइं ण्हवइ पुगंदरु आसणु मंदरु कांयिकोडु रयणायरु ॥

जर्हि णहाइ जिणेसरु तं ण्हवणउं णरु कहइ को वि जइणायरु ॥ १० ॥

८ MB दिसि कम्पण. ९ MB मुएनि अणु. १० MB जंपिउ. ११ MB अरुह°. १२ MR किउ.

10. १ M महि इदुज्जोइय°; BK मुहइंदुज्जोइय°. २ MB वच्चहि णच्चहि. ३ MB पयफंसैं ४ MB बारहवारिसियउ वि. ५ MBK जुवराउ ६ MB °पट्टु. ७ K ता. ८ M सिर. ९ MBK कामहु. १० MB कायकुंडु.

10. 11 b धर रक्षा. 12 b सिवसिरि° मोक्षश्रीः; धवलु भर्ता. 14 जइणायरु गणधरदेवः, अथवा बृहस्पत्यादिकक्षत्रः.



## 11

भावणवैतरकप्पाहिवहिं  
 गुणबालु णाउं किउ जिणवइहि  
 णवमासहिं अबरु महासइहिं  
 ससहोयरु भोयवईइ सहुं  
 गउ णरवई सणरु सकरि सरहु  
 वेयइमहीहरि संचरइ  
 साहिय फणि जक्ख वि किणर वि  
 परमण्णउ इयउ जासु घरि  
 भुंजंतहु कामभोयसैयइं  
 पक्कहिं दिणि जिणु णिव्वेइयउ

देवहिं इच्छियसासैयसुहहिं ।  
 आणिवि अप्पियउ जसोवइहि ।  
 संभूयउ पुत्तु सुहावइहि ।  
 खयरहुं णियकेर समुदिसहुं ।  
 अरिवरहरिजूहहु णं सरहु । 5  
 विज्जाहररायहं महि हरइ ।  
 तहु भँइयइ कंपइ कि ण रवि ।  
 णिवसइ सिरि अवसै तासु करि ।  
 लक्ख्वाइं तीस पुव्वहुं गयरं ।  
 लोयंतिपहिं संबोहियउ । 10

घत्ता—तै ढोइवि णीसहं धणु णीसेसहं दुक्खायामियकायहं ॥

पच्छइ पड्डिवण्णउं गुणसंपुण्णउं सुचरिउं खीणकसायहं ॥ ११ ॥

## 12

चउतीसातिसयविसेसधरु  
 गुणवालु भडारउ गुणमहिउ  
 संबोहियवहुभवियंबुरुहुं  
 दुयसीलक्खइं पुव्वहं सधरं  
 पण्णुल्लियबालकमलमुहहु  
 परिचिंतिवि जम्मजरामरणु  
 सोलहसहासधरणीसरहं  
 संसारघोरभारं लइउ

संजायउ केवलि तित्थयरु ।  
 विहरइ महियलि देवहिं सहिउ ।  
 जिणसूरु देउ महु मोक्खु लहु ।  
 सिरिवालु वि भुंजिवि सयल धर ।  
 सिरि पट्टं णिवंधिवि तणुरुहहु । 5  
 णियतणयजिणिंदहु गउ सरणु ।  
 तै सहुं पव्वइय मँहासरहं ।  
 वसुवालु णरिंदु वि पविइउ ।

11. १ MB °वितर°. २ MB सामयसिवहि ३ MB णरवइ सकरि सहरि सरहु. ४ B महए.  
 ५ M °सुहइं; B सहइ.

12; १ M गुणवाल. २ GK °यबुरहु but gloss कमलम. ३ MB सोक्खु. ४ M सकेर.  
 ५ MBK पट्ट. ६ B पर चिंतिवि. ७ MB महीसरहं. ८ MB पव्वइउ.

11. 4 b णियकेर समुदिसहुं निजाजां समुदेषुम्. 11 णीसहं नि.स्वानाम्

12. 4 a सधर सपर्वता. 7 b महासरहं गम्भीरध्वनानाम्.

सहुं पुत्तसहासें सो सहइ  
देविहिं परमत्थवियाणियहं  
बुज्झियधम्मइ उज्झियरइए

तं संजमु तं व्रउं को वहइ ।  
पण्णाससंहासइ राणियहं । 10  
तवि संठिउं समउं सुहावइए ।

घत्ता—सा चरिउ चरेण्णिणु तेत्थु मरेण्णिणु सहं अमरां हिषु हूई ॥  
णासियदुक्कम्मं जिणवरधम्मं धावइ पुरउ विहूई ॥ १२ ॥

## 13

जहिं भुक्ख ण तण्ह ण णिहडिय  
जहिं सत्तु ण मिच्चु ण घरिणि घरु  
णउ माणु ण माय ण मोहु मउ  
मणु इंदिय पंच वि णत्थि जहिं  
वसुवालु वि गुणवालु वि परमु  
इय सुणिवि कहंतरु अप्पणउं  
तूसेण्णिणु ताहि सुलोयणहि  
पुणु भणिउं देवि हियवइ धरंवि  
तहिं अबसरि हरिसुद्धाइयउ  
गंधारिगोरिपण्णत्तियउ  
णियसोहाणिज्जियकमलसिरि

णउ देह सत्तघाउहुं घडिय ।  
जहिं लोहु ण कोउ ण कामजरु ।  
जहिं केवलु जीउ जि णाणमउ ।  
सिरिपालु वि गउ कालेण तहिं ।  
अरहंतु करउ महु रइविरमु । 5  
घणरवेण दिण्णु आलिंगणउं ।  
रायवसविरोल्लियैल्लोयणहि ।  
हउं खगजम्मंतरु संभरमि ।  
जम्मंतरविज्जउ आइयउ ।  
गयणयलविहारपवित्तियउ । 10  
तं पेक्खवि भणइ पियंगुसिरि ।

घत्ता—हउं जाणैउं भाविणि अइमायाविणि केतहु चाडुयकारिणि ॥  
अलियउ जि कहंतरु भवणेरंतरु कहइ दुट्टु दुच्चारिणि ॥ १३ ॥

१ MB वउ. १० MB देवहिं परमत्थु वियाणियहं. ११ MB °सहस रायाणियहं. १२ MB संठिय. १३ MB अमराहिउ.

13; १ MB सिरिवालु गयउ. २ MB °विरोल्लिब°. ३ MB धरमि. ४ B वज्जिउ. ५ MB जाणमि.  
६ MB भवणे णिरंतरु.

13 वि हूई विभूतिः.

13. 13 °णे रंतरु अविच्छिन्नम्.

## 14

तुहुं देवि सुलोयणि अवयरिय  
 परं कहिउ कहंगुं ण सईहंवि  
 रमणीयणसिरैच्चुडामणिहिं  
 लहुमाइहि रञ्जु समप्पियउं  
 हउं गच्छमि गयणे अञ्जु तहिं  
 रयणालंकारहिं विच्छुरिउ  
 जं हौतउ आसि पहावइहि  
 थिय पासि सुलोयण जलयइहि  
 जणु जोयइ उद्धदिट्ठि मुयइ  
 अंतेउरु परियणु णीससइ

हउं पावसवसि खारहं भरिय ।  
 लइ दिट्ठउ पवहिं किं रंहंवि ।  
 णीसञ्जु कयउ दोहि वि जणिहिं ।  
 घणघोसें सहरिसु जंपियउं ।  
 जिणु बंभु सयंभु सइ वसइ जहिं । 5  
 विज्जाहरवेसु तेण धरिउ ।  
 तं रुवुं धरेप्पिणु णियवइहि ।  
 बिण्णि वि उल्ललियइं इत्ति णहि ।  
 असहंतु विओउ कलुणु रुयइ ।  
 बंधवयणु संभरंतु सुसइ । 10

घत्ता—उल्लंघियजलहरि सुरघरमहिहरि भहासालवणंतरी ॥

तं पइसइ बहुवरु चलकिसलयकरु जिणवरभवणम्भंतरी ॥ १४ ॥

## 15

बिण्णि वि वंदेप्पिणु जिणघवलु  
 परिहरिवि ताइं उप्परि गयइं  
 तंहिं णंदणि पुज्जिवि चेइयउं  
 पुणरवि तिसट्ठिसहसइं उवरि  
 वणु दिट्ठउ णामं सउमणसु  
 पणवेवि तहिं मि जयतिजगुत्तमउ  
 पुणु पंचतीससहसइं घणहं

तं भहासालु सालसरलु ।  
 तेत्थाउ पंचजोयणसयइं ।  
 वणि चउदिसु अकयणिकेइयउं ।  
 जोयणहं चडेप्पिणु सुरसिहरि ।  
 करिदसणाहयतरुगालियरसु । 5  
 जिणवरपडिमाउ अकिसिमउ ।  
 पंचसयालंकियजोयणहं ।

14. १ MB पावससि. २ T कहंगु. ३ MB सइहमि. ४ MB कहमि. ५ MB °सि. ६ MB संमु. ७ MB हउ णिएप्पिणु.

15. १ B सालहिं सरलु. २ MB णंदणवणि पुज्जिवि. ३ MB चेइयइं. ४ MB °णिकेइयइं. ५ M पणवे तहिं मि जयजगुत्तमउ; B पणवेवि तेहिं वि तिजगुत्तमउ. ६ B वणहं.

14. २ a कं हं गु कथास्वरूपम्; b रं हं वि गोपयामि. १ b वि ओ उ वियोगः.

15. ३ b अ क य णि के इ य उ अकृत्रिमचैत्यालयाः. ७ a घ ण इ महाप्रमाणयोजनानाम्.

लंघिवि पंडुयवणि पइसरिवि  
जोइवि नृलिय मेरुहि तणिय  
जोइय उत्तरकुरु देवकुरु  
छ वि कुलपव्वय चोइह णइउ

अहिसेउ अरुहविबहं करिवि ।  
चालीस जि जोयण परिगौहिय ।  
अवलोइय दहविह कप्पतरु । 10  
दिट्टउ बहुभूमिभेयगरु ।

यत्ता—जैहिं वसइ सगुणगणु णिरु णिरुवमतणु जंबुदेउ रंजियजणु ॥  
जंबूतरु जोइउ रयणुजोइउ जंबूदीवहु लंछणु ॥ १५ ॥

16

तं जोयवि आयइं तुहिणइरि  
तणुवलइय मणिमयभूसणिय  
जहिं जोयणमेत्तु अत्थि कमलु  
जहिं सुरहं वि चोच्चुप्पायणइं  
तवणीयविणिम्मिय णं णविय  
जहिं कोसपमाणु विमाणु तहे  
तं पेच्छिवि णहयलि चल्लियइं  
गंगासिंधूसिहरइं णिइवि  
सर्वरउलणिलेवियमेहलहो  
जयरुवणलिलणलंपंडे भमरि  
सा भणइ वसइ इह तुलियजगु

जहिं हूइं सहि सिरिविंमसिदि ।  
सोहम्मसुरिंदविलासिणिय ।  
जंबुण्णयणिम्मियविमलदलु ।  
णालु वि हवेइ दहजोयणइं ।  
कण्णिय गव्वूइपरिट्ठविय । 5  
लच्छीदेविहि अरविंददहे ।  
विण्णि वि णियमणि गंजोह्लियइं ।  
तैहि तणउ सलिलु परिमलु पिइवि ।  
पुणु आयइं वेयड्ढायलहो ।  
थिर्यं पंशु णिरोहिवि तहिं खयरि । 10  
गंधारिपिणु णामेण खगु ।

यत्ता—हउं तहु केरी सुय णवकुवल्लयभुय पइं णियंति जणरामं ॥  
गुंणि मग्गणु संधिवि ठाणु णिबंधिवि विद्धी हियवइ कामं ॥ १६ ॥

७ MBK परिगणिय. ८ MB °भूमिभोय°. ९ MB जहि णिवसइ गुणगणु.

16. १ MB जंबूणय°. २ MB वि पविमउ. ३ M तहि तणउ मुपविमलु जलु पिइवि, B तह तणउ जि पविमलु जलु पिइवि. ४ M सुरवरउलसेविय°; B सुरणरउलसेविय°. ५ MB °लंपड. ६ B पियपथु. ७ MB गंधारिपिणु. ८ MB गुणमग्गणु.

16. 8 b जंबुणय° सुवर्णम् 5 b गव्वूइ° क्रोशद्वयम्. 12 °रामं रमणीयेन.

## 17

णमिणहयरणाहहु गेहिणिय  
 विज्जासहाससंपयधरहं  
 मइ इच्छहि सूहव अज्जु जइ  
 तं णिसुणिवि भरहसेणाहिवइ  
 ओसरु सरु पंथहु सइरिणिए  
 महु जणणिसमाणी परघरिणि  
 सो पइं सेवैउ णिरु णिग्घिणरु  
 ता रूसिवि पिंगलकेसियउ  
 सिसुससिंसंणिहदाढालियउ  
 चलजीहापल्लवचयणियउ  
 लंबियघोणसफणिमेहलउ

हउं जगि पसिद्ध तद्धिमालिणिय ।  
 रणि दुज्जंय हउं विज्जाहरहं ।  
 तुह दुल्लहु काइं वि णत्थि तइ ।  
 भासइ तुहुं सुंदरि मूढमइ ।  
 किं जंपहि बोमविहारिणिए । 5  
 जो पइंसिवि सक्कइ वइतरिणि ।  
 हउं पुणु तुह होमि माइ तणउ ।  
 अंसइइ रयणियरिउ पेसियउ ।  
 णवघणणीलंजणकालियउ ।  
 गुंजापुंजारुणयणियउ । 10  
 किलिकिलिसहं कयकलयलउ ।

यत्ता—सुरधणुविण्णासहिं विज्जुंविहासहिं थिरसरधारामेहहिं ॥

आढत्तु अणेयहिं पहरणभेयहिं भिण्णमहाभड्ढेहहिं ॥ १७ ॥

## 18

जयमीलविसुद्धि ण तेहिं हया  
 थिय णियमियचित्त सुलोयण वि  
 तो तं त्थेदुलियइ बुज्जियउ  
 जइ मंदरु णियठाणहु चलइ  
 मं रूसेज्जसु जं मइं दूमियउ  
 गय एम भणेप्पिणु गयणयणि

हियेपं जएण गुरुखंति कया ।  
 जाणंति तो वि खललोय ण वि ।  
 हा किं मइं णिप्फलु बुज्जियउ ।  
 तो तुज्जु वि चित्तवित्ति खलइ ।  
 विज्जउ पेसिवि आयामियउ । 5  
 अमरहिं पुज्जिउ अरिहरिणहरि ।

17. १ M दुज्जिय. २ MB पइसहुं ३ MB गेण्हउ. ४ M असइयइ रयणिइ रिउ पेसिउ;  
 B अमइण रयणियरउ पेसियउ. ५ K विज्जुसहासहिं.

18. १ MB हय. ३ MB हियवइ. ३ MB कय.

17. 5 a ओसरु सरु पंथहु उत्सुज व्रज मार्गात्. 6 b पइसि वि प्रवेष्टुम्. 12 °सर धारा° बलधारा.

दुंदुहिसरु महुरु समुच्छलिउ  
तेणुसुउ इंदे पेसियउ  
जा पइं रोहिधि<sup>१</sup> थिय घणथणिय  
तुह सीलु णिहालहुं पट्टविय

रइपहु णामे सुरवरु मिलिउ ।  
मइं तुह सुइभाउ गवेसियउ ।  
सा ण हवइ सेयरि सुरगणिय ।  
पइं णियज्जणणी विव वित्तविय । 10

घत्ता—कुरुकुलणहयलससि णाणुग्भववसि कंपावियदसैदिव्वइ ॥  
चारिस्तु तुहारउ भवभयहारउ भणु किर केण ण थुव्वइ ॥ १८ ॥

19

जो रुञ्चइ सो तुहुं मग्गि वरु  
वरु मग्गमि णाणपवित्तियरु  
अवरें वरेण महुं कज्जु ण वि  
जहिं सोक्खु कैयाइ ण संचलइ  
सो मोक्खु णिहेलणु जिणवरहो  
ता वंदिवि जयरायहु चरिउ  
तं देवपसंसइ राइयउ  
रीणउ गइ विरइवि णहयलइ  
कणयमयकोणताडणखमहं  
सहेण तेण आयद्धियइं  
सुरसरितरंगससियरसियइं

तं णिसुणिवि पभणइ णंरु पवरु ।  
वरु मग्गमि हउं संसारहरु ।  
पुणु णिवडइ सुरवरु चंदु रवि ।  
जहिं कामहुयासु ण पज्जलइ ।  
हउं तत्ति करेमि सुर तहु वरहो । 5  
गउ अमरु अमरलोयहु तुरिउ ।  
वहुवरु केलासु पराइयउ ।  
आसीणउ रयणसिलायलइ ।  
ता णिसुउ सहु सुररिडिडिमहं ।  
बिण्णिं वि गयाइं महियद्धियइं । 10  
जहिं भरहणराहिवणिम्मियइं ।

घत्ता—चामीयरघडियइं मणिगणजडियइं दिट्ठइं घरइं जिणेसरहं ॥  
पयपणेवियसीमहं तहिं चउवीसहं दिक्खादमियदुरासहं ॥ १९ ॥

४ MB जयभाउ. ५ B रोहिय. ६ MB वित्तविय. ७ MB दहं.

19. १ MB पवरणरु. २ M सहुं. ३ MB ण काइ वि. ४ MB हुयासणु पज्जलइ. ५ B करउं.  
६ MB सुणिउ. ७ MB बिण्णि वि विगयाइं महियद्धियइं. ८ M जिणेसहं. ९ MB °पणमिय°.

18. 11 णा णुग्भववसि ज्ञानोद्भवानि इन्द्रियाणि तेषां वशी; °दि व्व इ दिक्कपतीन्.

19. 9 b णिसुउ निःसुतः. 13 °सी स हं श्रीशानामिन्द्रादीनाम्; दिक्खादमियदुरासहं दीक्षया  
दमिता उपशमिता दुराशा भोगाद्याकाक्षा वैस्तैषाम्.

रिसहं रिसिमग्गपयासयरं  
 संभवदं च सभवमहणं  
 अदुगुंछियद्दच्छियमोक्खगइं  
 पोमप्पहंमवि पोमाहरणं  
 चंदप्पहमहिहयचंदविहं  
 सीयलणयणंभहयंगरुहं  
 सेयंसं सेयपविस्सियरं  
 सिरिवासुपुज्जणामं गिरहं  
 वंदे भयवंतमणंतमहं  
 धम्मं दहधम्मुवदेसयरं  
 संतं संतिं जगसांतियरं  
 कुंथुं कुंथुसुं वि दयाविरयं  
 पणमामि अरं सण्हियसमं  
 मल्लिं मल्लियदामंघिययं  
 णिणमिय णमिणाहं जगसामिं

अजियं जियवम्महमुक्कसरं ।  
 अहिणंदणमहिणंदियभुवणं ।  
 सुमंइं सुमंइं वज्जियकुमंइं ।  
 गयपासं णमह सुपासजिणं ।  
 सुविहिं सुविहिं जसपुंजणिहं । 5  
 सीयलणाहं वंदे अरुहं ।  
 वासवपुज्जं तिहुयणपियरं ।  
 विमलं विमलं तवतावसहं ।  
 मणभमिरभूरिभीसणतमहं ।  
 षणमामि जिणं जाणियसवरं । 10  
 सोलहमं परमं तित्थयरं ।  
 बह्गुंथियगंधपंथविरयं ।  
 अरंमियलं मूलियमोहदुमं ।  
 मुणिसुव्वथमुणिरायं सुवयं ।  
 गुणरहणेमिं वंदे णेमिं । 15

20. १ MB मोकखरयं, २ M सुमयं, ३ M कुमयं, ४ MB पोमप्पहं पवि, ५ K सुविहं, ६ MB °पवित्तरं, ७ MB °धम्मपयासयरं, ८ MB कम्मदुग्गंठिणिण्णासयरं; T °मयरं °स्वपरम्, ९ M संतं, १० MB कुंथेसु दया°, ११ MB दयावहरं; K दयावरय, १२ MB °विहरं; T °विरयं, १३ MB अरमयलुम्मूलिय°, T °उम्मूलिय°.

20. 2 a संभवमहणं संसारविध्वंसकम्. 4 a पोमाहरणं पद्मायाः केवलज्ञानादिलक्ष्म्याः धारकम्; b गयपासं नष्टकर्मबन्धनम्. 5 a अदिहयचंदविहं अभिहता तिरस्कृता चन्द्रस्य विशिष्टा भा दीप्तिर्येन. 6 a सीयलेत्यादि—शीतलवचनाम्भसा हतः प्रक्षालितोऽङ्गरुहः शरीरजो रोगः कामो वा येन. 7 a सेयपवित्तियरं श्रेयो निर्वाणं पुण्यं वा तस्य प्रवृत्तिकरम्; b वासवपुज्जं इन्द्रपूज्यम्. 8 b विमलं विगतो द्रव्यभावस्वरूपः कर्ममलो यस्य. 9 b °तमहं ज्ञानदगावरणघातकम्. 10 b जाणियसवरं ज्ञातस्वपरम्. 12 a कुंथुसु अति-सूक्ष्मजीवेष्वापि. 12 b बह्गुंथियगंधपंथविरयं प्रन्थो बाह्याभ्यन्तरो मिथ्यात्वसुवर्णादिलक्षणो विद्यते येषां मिथ्यादृष्टीनां तेषां प्रन्थाः शास्त्राणि तैरुपदिष्टाः पन्थानः स्वर्गापवर्गाद्युपायास्ते विरता विनष्टा यस्मान्, तेभ्यो वा विरतः उपरतः. 13 a सण्हियसमं सम्यग् निहितः स्थापितः स्वात्मनि भव्येषु च शमो रागाद्युपशमो येन; 14 b अरमित्यादि—अरमत्यर्थं अचलः केनचिदपि न चालयितुं शक्यः; मूलियमोहदुमं मूलितः उन्मूलितः मोहदुमो येन. 15 a णिणमिय नृभिश्चक्रवर्त्यादिभिर्नमितो नतः.

पासं पासासिकर्राण हियं  
वंदे वयवड्डमाणणियमं

सत्तूण वि दरिसियंघम्मसुयं ।  
सिरिवड्डमाणवीरं वीरमं ।

घत्ता—जिह भरहणरिंदे कुवलयचंदे वंदिय सयल जिणेसर ॥  
तिह ते जयरापं समियकसापं पुप्फयंत जोईसर ॥ २० ॥

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुप्फयंतविरइए  
महाभव्वभरहाणुमणिए महाकवे जयसुलोयणातित्थवंदणं  
णाम छत्तीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३६ ॥  
॥ संधि ॥ ३६ ॥

१४ B °करण°. १५ MB दरमियधम्मासिय. १६ MB चरिम.

16 b सत्तूणेत्यादि - शत्रूणामपि दर्शिता धर्माधर्मप्रतिपादनात् या विभूतिविशेषो येन. 17 a वयवड्ड-  
माणणियमं व्रतैरुपलक्षिता वर्धमाना उत्तरोत्तरा नियमा नियतकालव्रतानि यस्य यस्माद्वा भव्यानां स तथोक्तः.  
19 पुप्फयंत जोईसर पुष्पदन्ताश्च योगीश्वराश्च.



## XXXVII

जयरायं रयणविणिम्मियहं एसरियकरणिउरुंबहं ॥  
तेवीसहं जिणहं अणाययहं वंदियाहं पडिबिबहं ॥ भुवकं ॥

I

<p>वंदह सुंदरि वेइयहं जाम ते तियसहिं गय सहं समवसरणु वहुवरहं णवेप्पिणु गुरुपयाहं पत्तेहिं तेहिं दोहिं वि जणेहिं वरविजयवइजयंताइयाहं तोरणहं माणमंदरणिमुंभ सरवरपविमलजलखाइयाउ पायारु णडिंदणिहेलणाहं जोयंतहिं जोयणमेत्तु दिट्ठु बत्तीस सुरिंद णरिंदु एकु जोइसवइ आणिय चंदसूर किंणरवइ दोष्णि महोरइस</p>	<p>तहिं अचिञ्चय मुणिवर विणिण ताम । जहिं णिसवइ रिसहु तिलोयसरणु । मग्गेण तेण ताहं वि गयाहं । 5 जिणदंसणवंदणकयमणेहिं । दौरहं चत्तारि पलोइयाहं । माणककरुज्जलमाणखंभं । पण्णुल्लियवेल्लिउ वेइयाउ । मुणिणाहघरहं सुरतरुवणाहं । 10 मणिमंडउ जहिं जगजणु णिविट्ठु । भरहेसरु वीयउ णाइ सकु । सप्पुरिसमहापुरिसारिजूर । ते कायमहाकायंकभीस ।</p>
---	--

घत्ता—किंपुरिसहं राणा विणिण जण कहिय पुरिस किंपुरिसं वि ॥ 15  
घरिणिहि सोमप्पहतणुरुहेण अवलोयवि णंवरविछवि ॥ १ ॥

MB give, at the commencement of this Samdhi, the following stanza:-

गुरुधर्मोद्धवपावनमभिनन्दितकृष्णमर्जुनोपेतम् ।  
भामपराक्रमसारं भारतमिव भरत तव चरितम् ॥ १ ॥

GK do not give it.

1. १ MB °णितरुंबहं. २ MB तेवीसहं. ३ M अणाययहं. ४ B सुंदरु. ५ B omits this foot  
६ G करुज्जलु. ७ MB °थंभ ८ MB णरिंद. ९ MB किंपुरिसा. १० M णवरच्छवि; B अवरविछवि.

1. 12 a वत्तीस सुरिंद तथाहि कल्पवासिनां द्वादश इन्द्राः, भवनवासिनां दश, व्यन्तराणामष्टौ,  
बन्द्रादित्यौ चेत्ति.

## 2

गंधर्वहं पदु समविसमणाम  
 जक्खिद पुण्ण मणिभद् भणिय  
 तर्हि काल महाकाल वि पिसाय  
 बल वइरोयण दणुइंद कहिय  
 पइ वेणुणालि पुणु वेणुदेउ  
 दीवहिं दीवंगउ दीवचक्खु  
 अभियगइ अभियवाहण दिसेस  
 गज्जंत एंति अलिणालदेह  
 अग्गिंवे अग्गि इयवहसिहाहं  
 इय पेक्खिखवि वीस वि भावणिंद

रक्खसहं भीम अशंतभीम ।  
 भूयाहिव रूव विरूव भणिय ।  
 दाविय गेहिणिहि पिसायराय ।  
 णांइंद धरण फणिवइ ण रहिय ।  
 सोवण्णकुमारहं सोक्खहेउ । 6  
 उयहिहिं जलकंतु जलप्पहक्खु ।  
 हरि हरिकंत वि सोदामणीस ।  
 थणियाहिव मेह महंतमेह ।  
 वेलंब पहंजण पवणणाहं ।  
 धम्माहिणंद वंदिय मुणिंद । 10

घत्ता—विभयपूरियहियउल्लण हारिसुप्फुल्लियवयणें ॥

जय जय पभणंतै जयणिवेण चउदिसु पेसियणयणें ॥ २ ॥

## 3

णाहेयपायणियडइ बईदु  
 पुणु बीयउ गणहरु जईवरिंदु  
 दढरइ दिहिपरियरु सत्तुदमणु  
 धम्माणंदणु इसिणंदणक्खु  
 गुंणि वाउसम्मु झाणोवविट्टु  
 रिसिं अग्गिगुत्तु अण्णेक्खु गोत्तु  
 हलहरु माहिहरु माहिंदु धीरु  
 विण्णाणवंतु विण्णायणेउ

पुणु बसहसेणु गणणाहु विट्टु ।  
 अवलोयउ कुंभु महारिसिंदु ।  
 गणि देवसम्मु घणदेउ समणु ।  
 जइ सोमयत्तु सुरदत्तु भिक्खु ।  
 देवग्गि अग्गिदेउ वि वरिंदु । 5  
 तेयंसिउ सत्तुइयासगुत्तु ।  
 वसुपउ वसुंधरु अचल्लु मेरु ।  
 मुणि मयरकेउ हयमयरकेउ ।

2. १ MB मुणिय, २ MB णागिद, ६ B इलपहक्खु ४ MB एंत, ५ MB अग्गिवइ.  
 3. १ MB णिविट्टु, २ MB जसयरिंदु, ३ MB सोमयत्त, ४ M मुणि वाउसम्मु; B मुणि वाउ  
 समुज्झाणो, ५ MB सिरि अग्गिगोत्तु ६ MB सत्त, ७ MB अचल, ८ M मय, B सय.

2. 7 a दिसेस दिक्कुमाराः; b सो दा मणी स विथुत्तुमाराः.

थिरचित्तु पवित्तु धरित्तुगुत्तु  
पुणु जण्णगुत्तु पुणु सव्वगुत्तु  
पुणु विजयभडारउ विजयमित्तु  
अवर वि परमेसर परमजोइ

सयलोसहिगुत्तु वि विजयगुत्तु ।  
पुणु सँव्वत्थि आयमि पउत्तु । 10  
विजइल सिरिअवराइउ णिरुत्तु ।  
अउरासी गणहर एवमाइ ।

घत्ता—विहिणा लिहियाँ इव भित्तियले झाणलीण मणधीरा ॥

जोइय जण्णं जियजमकरणं सव्व वि साहु भडारा ॥ ३ ॥

4

उग्गतवमहातवतत्ततवहं  
तवसिद्धपुज्जविजाहराहं  
आहारयतणुलयधारयाहं  
अँवियलसुयसायरपारयाहं  
पयवीयकोट्टुबुद्धीसराहं  
पंचविहणाणउप्याययाहं  
छम्मासवरिसउवधासयाहं  
कंदप्पदप्पविणिचारणाहं  
समसत्तुमित्तकंचणतणाहं  
दुज्जयपरवाइगिराहराहं  
खँवियक्खपक्खमिक्खारयाहं

दित्ततव तवंतहं घोरतवहं ।  
अणिमाइगुणडुहं गुणहराहं ।  
मयरहियहं मांअवासारयाहं ।  
णग्गाहं णीसंगहं णीरयाहं ।  
तेजइयरिद्धिसिहिभासुराहं । 5  
बुज्झियपयत्थपजाययाहं ।  
तरुँकोडरकंदरवासियाहं ।  
जलसेढित्तंतुणहचारणाहं ।  
पासायदीवणिच्चलमणाहं ।  
पँलियंकत्थहं लंबियकराहं । 10  
अउरासीसहसइं जईवराहं ।

घत्ता—इहु सो सोमप्पहु दिव्वु मुणि इहु सेयंसु वि समियमणु ॥

इहु पेक्खुँ सुलोयणि तुज्जु पिउ गायगिंसिंदु अकंपणु ॥ ४ ॥

१ MB जणयगुत्तु. १० MB सव्वउत्तु आयमं. ११ MB लिहियाइ वि. १२ MB जण्ण. १३ B °करणा.

4 १ MB अविलयं. २ MB ते जायं. ३ MB उप्पायणाहं. ४ M तवकोडरं. ५ M सेढिय-  
तंठं. ६ M reads this foot as 11 a. ७ M reads this foot as 10 b. ८ B जईसराहं.  
९ M सयंसु. १० MB पेक्ख.

4. 9 b पासायेत्यादि—प्रासादस्थदीपवाक्शिलं मनो येषाम्. 10 a परवाइगिराहराहं परवादि-  
वचननिरासकानाम् 11 a ख वियक्खपक्खं. निर्जितेन्द्रियाः.

## 5

इदु जोयहि भांयसहासु तुज्जु  
 जेणासि सयंवरि सूरदित्ति  
 इदु सो दुम्मरिसणु णरवरिदु  
 सम्मत्तसुद्धिसोहियमईहिं  
 एकंवरल्लइयथणत्थलीहिं  
 जल्लमलविच्चिसंगोयरीहिं  
 सुइसीलसलिलसंगहसरीहिं  
 आसंधियबंधीसुंदरीहिं  
 अज्जियसंखहि कहियाइं जाइं  
 तेत्तियइं जि लक्खइं सावथाइं  
 जीवहं अदिण्णहिंसावईहिं

थिउ जाणिवि धम्मइु तणउं गुज्जु ।  
 रुसाविउ महरणि अक्ककित्ति ।  
 समभावि परिट्ठिउ हुउ मुणिदु ।  
 णाणुग्गमणिल्लूरियरईहिं ।  
 दलवट्टियकल्लिमलकंदलीहिं । 8  
 विज्जाहरीहिं भूगोयरीहिं ।  
 सेवियकाणणमहिहरदरीहिं ।  
 लक्खाइं तिण्णि संजमघरीहिं ।  
 पण्णाससहस्रमहियाइं ताइं ।  
 परिपालियबारहविहवयाइं । 10  
 तहिं पंचेवै य लक्खइं सावईहिं ।

घत्ता--कागणिकेरु सुरगुरु फणिवइ वि पारिगणन्तु मणि मुज्जइ ॥

पणवंतहं देवहं दाणवहं मृगीहं संख को बुज्जइ ॥ ५ ॥

## 6

अञ्चंतत्ततवणीयवणु  
 पेच्छिवि सहमंडवि जगज्जेरु  
 इच्छियभवममणविणिग्गमेण  
 इह चक्कवट्टिसेणाहिवेण  
 जय देव दिण्णपविमलमणीस  
 जय जीवलोयबंधव दयाल

कंकेल्लिकुरुहल्लाहीणिसणु ।  
 णं जंबूदीवहु मज्झि मेरु ।  
 सकलत्ते विलसियउवसमेण ।  
 पारइु धुणहुं जयपत्थिवेण ।  
 जय जिण तिहुयणचूडामणीस । 6  
 जय पुरनित्थंकर सामिसाल ।

5. १ MB भाइसहासु; K भायसहासु but corrects it to भायरसहासु. २ MB एकंवर°.  
 ३ MB °विलित्तं°. ४ MB पंच जि लक्खइं; K चउपण्ण जि लक्खइं. ५ MB °कर. ६ MB मियाइं.

6. १ MB भवभवण°. २ T तिहुवण°.

5. 11 a °हिं साव ईहिं हिंसा आपदश्च याभिः.

6. 1 b °कुरुहं वृक्षः. 2 a जगज्जेरु ऋषमनाथः. 5 b तिहुयणचूडामणीस त्रिभुवनचूडा-  
 मणिमौक्षस्तस्य ईश स्वामिन्. 6 b पुरु° प्रथमः. 7 b मयतरकरेण मृत्युतरुमज्जइस्तिन् (?)

जय कप्परुक्ख जय कामधेणु  
जय सयरायरलोयावलोय

जय चिंतामणि मयतरुकरेणु ।  
संसारमहण्णवतरणपोय ।

घत्ता--पइं पयाणेयवियप्पणयणाएं वारियै परमपय ॥

पइं जीवहं थावरजंगमहं खयभीयहं भासिय जीवदय ॥ ६ ॥ 10

## 7

वड्ढीवियमिच्छामोहरयइं  
पइं जिणिधि णाह जं तच्चु सिट्ठु  
सयलहं मणि णिवसइ सामल्लेगि  
तुहुं जाणहि तिजगु वि वीथराउ  
तुहुं परमप्पउ देवाहिदेव  
इय वंदिवि जिणु जियतरुणिविरहु  
पहु भेल्लहि गच्छमि करि पसाउ  
तं सुणिवि चवईं रायाहिराउ  
ण पहुच्चइ जइ तुह गयउरेण  
पएं सयलेण वि सरयणेण  
हउं अच्छमि अंतेउरि पइट्ठु

समयहं तेसट्ठइं तिणिण सयइं ।  
तं मुणइ ण बंभु ण रुहु विट्ठु ।  
विड संभरंति किं सत्तभंगि ।  
तुहुं इंदमउडमंणिघडियपाउ ।  
हउं कैरेवी तुहारी चरणसेव । 5  
पणविवि संभासिउ तेण भरहु ।  
तवचरणु लेमि भंजमि विसाउ ।  
लइ रज्जु तुहुं जि जय होहि राउ ।  
तो पूरइ किं ण धरायलेण ।  
आयडियणवणिहिहडधणेण । 10  
तुहुं भुंजहि महि आसाणि णिविट्ठु ।

घत्ता--मा जाहि तवोवणु चमुपमुह वेहाविउ रिउ रायहिं ॥

पइं जेहउ वीरु महाभडु वि जिण्णइ विसयकसायहिं ॥ ७ ॥

३ MB धारिय; T निवारिता निराकृता.

7. १ K वड्ढारिय°, ३ MB मणिधिद्वय° ( धिट्ठु ? ). ३ MB करमि. ४ B भणइ. ५ MB वड्ढु.  
६ MB वीर.

9 ए याणेय वियप्पणयणाएं वारिय एकानेकविकल्पौ अद्वैतक्षणिकत्वभेदौ तयोर्न्यास्तत्प्रसाधकप्रमाणानि ते न्यायेन प्रमाणोपपत्त्या निवारिता निराकृता येन.

7 1 b समयहं मतानाम्; तेसट्ठइं तिणिणसयइं त्रिषष्ट्यधिकानि त्रीणि शतानि. ७ a जियतरुणिविरहु धर्मानुरागपरतया निर्जितः हृदयेऽसंप्रधारितस्तर्णविरहो येन. 12 वेहाविउ विजयशुद्धिं नीतः.

8

जिणह्वणधारिधुयमंदरेण  
 मेल्लिहि भरहाहिव जाउ पट्टु  
 तियसिद्धु तं पडिवणु तेण  
 जं चिरु पिउणिलयहु णिग्गयाइं  
 जं सत्तिसेणपरिपालियाइं  
 जं भंगुरणहरहिं दारियाइं  
 मुणिवरइं खलेण णिहालियाइं  
 वेउब्बियतणुसोहाहरां  
 जं वाणि पञ्चारिउ भ्रीमसाहु  
 तं सुयराभि सुंदरि जामि अज्ज

ता विहसिवि चविउ पुरंदरेण ।  
 होसइ गणहरु तवलच्छिगेहु ।  
 णियपणइणि आउच्छिय जयण ।  
 जं णासिवि सरवासहु गयाइं ।  
 अरिणा घरि सिहिणा जालियाइं । 5  
 विण्ण वि मज्जारें मारियाइं ।  
 जं पिउवणजलणें पउलियाइं ।  
 जायाइं सग्गि जं बहुवराइं ।  
 जं ह्यउ सो तेलोक्कणाहु ।  
 साहेवउं मइं परलोयकज्ज । 10

धत्ता - आयणिवि चल संसारगइ विहुणियसव्वसरीरए ॥

अमेल्लिउ पिययमु पणइणिए रुच्चन्तु वि गिरिधीरए ॥ ८ ॥

9

लहुयहिं विजयाइहिं भायरेहिं  
 अवगण्णुं तंणु जिह पुहइरज्जु  
 हंकारिउ पुत्तु अणंतवीरु  
 तट्टु पट्टु णिबंधिवि जैयरवेण  
 आउच्छिवि जीवाजीवभेय  
 अरिमिस्सि पउंजिवि सरिस्स दिट्ठि  
 देव्वं भावेण वि मुक्कगंथु  
 जउ दिक्खंकिउ पणविउ जईहिं

दिज्जंतु वि धम्मकयायरेहिं ।  
 मयभावजणणु णं पीयमज्जु ।  
 गुरुविणयवंतु परलोयभीरु ।  
 जिणवरु जयंकारिवि घणरवेण ।  
 परियाणिवि णाणाणाणणेय । 5  
 सिरि लोउ विइण्णउ पंचमुट्ठि ।  
 णिग्गंथु णियच्छियमोक्खपंथु ।  
 अट्टहिं सपहिं सह णरवईहिं ।

8. १ G मंदिरेण. २ MB मेल्लिहि. ३ MB पिय<sup>०</sup>. ४ MK सरवाहुहु.

9. MB तिणु. २ MB हंकारिवि पुणु. ३ MB जयवरेण. ४ MB जयकारेण. ५ M दिव्वं.

9. 5 b णा णा णा णे य चेतनरूपं ज्ञेयं परिच्छेय, अथवा, नाना अनेकप्रकारा गुणपर्यायापेक्षया, नाना एकप्रकारं द्रव्यापेक्षया, तच्च तद् ज्ञेयं च.

तेणंगहं बारह सिक्खियाइं  
सो मुणिवरु मेह्लिवि मोहवासु

चोदह पुव्वइं उवलक्खियाइं ।  
जायउ गणहरु रिसहेसरासु । 10

घत्ता—संभरमि पुव्वभवसंचरिउ वम्महपसरणिवारा ॥

अणुगामिणि तुंम्हहु होमि हउं संजमु धरमि भडारा ॥ ९ ॥

## 10

जइयहुं वणिवरकुलि वणिवराइं  
कयकम्मपहावै विणंढियाइं ।  
णियकंतइ सहुं सुहिहिययथेणु  
जइयहुं मुणिवेजावच्चु कियउ  
जइयहुं जायइं पारावयाइं  
जइयहुं उप्पण्णइं खेयराइं  
रिसिवंसणेण विभियमणाइं  
तइयहुं लमिभि वहुंपइ णिरुत्तु  
णीसेसजीवसंतीयेण  
सज्जणगुणर्गहणाणंदियाइ  
घल्लिउ सकेसुं लुंवि वि सणेहु  
उम्मुक्कवियारपलोयणाइ

रिउभइयइं छट्ठियमंदिराइं ।  
णासंतइं काणणि णिवडियाइं ।  
जइयहुं सरि मिलियउ सत्तिसेणु ।  
हियउल्लउं काइं वि धम्मि थिवउ ।  
लइयइं दोहिं वि सावयवयाइं । 5  
लीलालंधियविउलंबराइं ।  
जइयहुं सुराइं विण्णि वि जणाइं ।  
भो तुज्जु चरिच्चु जि महुं चरिच्चु ।  
तं वयणु समिच्छिउ मुणिवरेण ।  
अप्पिय सुंदरिइ सुहदियाइ । 10  
व्रथंसीलगुणहिं भूसियउ देहु ।  
लइयउ तवचरणु सुलोयणाइ ।

घत्ता—घुसिणारुण जे थणहारमणि मंडिय ते मलमइलिय ॥

णं वम्महपहुअहिसेयघड रयपंगुत्त णिहालिय ॥१० ॥

१ M तुम्हइं होमि; K तुम्हहुं होमि.

10. १ MB णिवडियाइं. २ MB तुहुं पइं. ३ M मज्जु. ४ MB गहणे णंदियाइ. ५ MB सकेस  
६ MB वय°. ७ MB उम्मुक्कवियारपलोयणाइ.

० b लोउ लोवः.

10. 8 a वहुंपइ वधूपती. 10 b सुहदियाइ भरताममहादेव्या सुभद्रया.

## 11

गंधारिगोरिपण्णासियाउ  
विच्छङ्खियघरवावारतत्ति  
ता पियविश्रोयसिहितवियकाय  
हा पुत्त पडिच्छिउ काइं पट्टु  
इंदियइं पंच णेउ पीलियाइं  
मइं पावइ काइं जियंतियाइ  
इय सा जंपंति मुयंति रिद्धि  
मंतिहिं विणिवारिय दिण्णकामि  
घणरवघरिणिउ वयपयणईउ  
पयारसंगसुयधारिणीइ  
देवीइ अकंपणु तणुरुहाइ

चिरभवविज्जउ परिचासियाउ ।  
अपरिग्गह थिय जयरायपत्ति ।  
जूरइ अणंतवरवीरमाय ।  
विणु पिउणा रज्जे को मरट्टु ।  
झाणेण ण णयणइं मीलियाइं । 5  
पइविच्छोपं तप्पंतियाइ ।  
णियसुयट्टु देति परलोयबुद्धि ।  
थिय रायसासणाणंदधामि ।  
अवरैउ संजायउ संजईउ ।  
णाणापुरगामविहारिणीइ । 10  
रैयणहि सकहंतरु कहिउ ताइ ।

घत्ता—गुरु पुच्छिउ बंभीसुंदरिहिं देव तिलोयालोयण ॥

अग्गइ कहिं संभउ जयरिसिहि होसइ केत्थ सुलोयण ॥ ११ ॥

## 12

भुवणत्तयलोयसुहंकरेण  
उप्पाइवि केवलु विमलु णाणु  
होइवि अहमिदु सुलोयणा वि  
माणियनिव्वाणरईरमाइ  
होही कर्णयद्धउ णाम राउ  
लहिही सुहं अमरणु अकरणालु

ता भणिउं पदमतित्थंकरेण ।  
जाएसइ जउ णिव्वाणठाणु ।  
सुइभावै भावाभावभावि ।  
सुहं भुंजिवि बहुसायरसमाइ ।  
तउ चरिवि पणासिवि रोसुं राउ । 5  
जेवडु सलिलु तेवडु णालु ।

11. १ MB पत्तसियाउ; २ MB ण णिवीलियाइं. ३ MB अवर वि. ४ MB रयणिहि.

12. १ B कणयट्टु. २ MB सो सुराउ. ३ MB सुहं अमणु अकरणालु.

11. 8 b आणंदधामि हस्तिनागपुरे. 9 a वयपयणईउ प्रतजलनद्यः. 11 b रयण हि रत्ना-  
श्राविकायाः.

12. 3 a अहमिदु अच्युतेन्द्रः.



णिप्पज्जइ णल्लिणहु णत्थि भंति  
जिणधम्मि छिज्जइ मोहमूले

जिणधम्मि पैसु वि सुरिद्व होंति ।  
जिणधम्मु सव्वकल्लणम्लु ।

घत्ता—जिणधम्मु पर्माहवि मूढमइ जो परधम्महु लग्गइ ॥

चउरासीजोणिलक्खविहुरि णिवडिउ सो कहिं णिग्गइ ॥ १२ ॥ 10

## 13

मागहमंडलपरमेसरासु  
खाइयसम्मत्तणिहीसरासु \*  
सेणियहु कहइ रिसि पुंसियसंकु  
गणहरु रिसिसंघहु तिलयभूउ  
सइंसिखु भडारउ दुहविणासु  
गेहिणि हई अच्चइ सुरिदु  
णिरसणभूसणभूसिउ अणंतु  
आयासहु णिवडइ पुष्पविट्ठि  
जहिं पाउ देइ तहिं तहिं जि कमलु  
जहिं वच्चइ तहिं कासु वि ण दुक्खु  
सीहासैणु छत्तइं तिण्णि थंति

चेलिणिकमलिणिवणेसरासु ।  
आगामितइयभवजिणवरासु ।  
गोत्तमु दिवैगोत्तंभरमियंकु ।  
जयराउ पक्कहत्तरिमु हूउ ।  
संपत्तउ सो तिजगग्गवासु । 5  
काले महि विहरइ जिणवरिदु ।  
दीसइ सुरयणु ते सहुं चलंतु ।  
चउअहियइं चमरइं चारु सट्ठि ।  
सुरवइ जुंजइ गुरुभत्तिविमलु ।  
जहिं वसइ तहिं जि कंकेल्लिरुक्खु । 10  
तिहुयणपहुत्तु णाहहु कहंति ।

घत्ता—जाणिज्जइ सूरसंवरहिं मृगमायंगतुरंगहिं ॥

जिणणाहहु भासिउ परिणवइ सयलजीवभासंगहिं ॥ १३ ॥

४ MB पुण वि. ५ MB मोहजालु. ६ B मुएवि.

13. MB आगम्मि. २ MB असियसंकु. ३ MB दिवैगोत्ते वर°. ४ MB णिवसण°; K णिवसण  
but corrects it to णिरसण°. ५ MB सीहासण. ६ MB मिग°.

4 b बहु° द्वाविंशतिः. 0 a अ कर णालु अतीन्द्रियम्.

13. 13 °भा संग हि °भाषास्वरूपैः.

## 14

सुर्व्वंरुं दुंदुहि णहि वज्जमाणु ।  
 देसाहिब उच्चारयति चरुउ  
 भामंडलु णवरविमंडलाद्दु  
 पुव्वंगधारि तवतणुसरीरं  
 देसावहिपरमावहिसमेयं  
 णवदिक्खिय सिक्खुयं संत दंतं  
 णिहियक्खयअक्खयपयसमीह  
 जहि गच्छइ तहि गच्छंति भंभव  
 माणव तिरिक्ख सुवर असंख  
 झं झं करंति झुणि झल्लरीउ  
 तुंबुरु णारय गायंति मिट्ठु

पणवइ जणवउ पुलइज्जमाणु ।  
 बहुकुसुमगंधपरिमलित मरुउ ।  
 गच्छंति समउं बहुमेय साहु ।  
 मणपज्जवणीणि सैहावधीरं ।  
 केवलिकेवल्लणाणेक्कतेर्यं । 5  
 वेउन्वियाइं बहुरिद्धिवंत ।  
 कइगमयवाइ वाइहं सीह ।  
 जहि अच्छइ तहि अच्छंति सव्व ।  
 इ इ इयंति चउदिसिहिं संख ।  
 णच्चंति णरामरसुंदरीउ । 10  
 भरहे विट्ठउ पिउं सुंहुं णिविट्ठु ।

घत्ता—आउच्छिउ धम्म महीसरेण जं जिह जेहउ पेक्खइ ॥

केवलि परमप्पउ णिकलुसु तं तिह तेहउ अक्खइ ॥ १४ ॥

## 15

गुणु मोक्खु तउ वि पोग्गलु वि दुविट्ठु  
 भुवणाइं तिण्णि रयणाइं तिण्णि

णिज्जरुं वि दुविह वज्जरइ अरुहु ।  
 सल्लाइं तिण्णि गुत्तीउ तिण्णि ।

14. १ M सुर्व्वंरुं; B सव्वइ. २ B दोसाहिब. ३ B चारु. ४ M °मलियगरुउ; B °मलित गाह. M adds after this in second hand and in the margin : चउसहसदलभयसयाविहीर. ६ B °णाण. ७ M दुइदइसहास. ८ M adds after this in second hand and in the margin : रिधि सयपणास विमुक्खु वास. ९ M adds after this in second hand and in the margin : तेरं-वाहस पयाडियविवेय; B adds : सुणिरंधसहस पयाडियविवेय. १० M °केवलणाणक्क°; B °केवलणाणक्क°. ११ M adds after this in second hand and in the margin : णयणगइं चउसुण्णहिं समेय; B adds : णयणगइं चउसुण्णसमेय. १२ MB °सिक्खय°. १३ M adds after this in second hand and in the margin : दहविउणसहसरिउसयमहंत; B adds : दहविउणसहस रिउसयसहंत, ण हु वयभयदोएक्खु वि णिरीह. १४ B णिहिअक्खयसुअक्खय°. १५ MB सव्व. १६ MB जिणु. १७ B सुहणिविट्ठु.

15. १ MB पोग्गलु दुविट्ठु. २ MB जिजर.

14. 2 a चरुउ अर्धपात्रम् 4 a ° तणु सरीर °कृत्वाधारीः.

15. 9b °ज ल जा य केउ मकरष्वजः कामः.

जीवहं गईउ कहियाँउ तिणिण  
 गुणवयइं तिणिण जगि जोय तिणिण  
 चउविहु चउगइ संसारसरणु  
 चउविहु पमाणु चउविहु जि दाणु  
 चउ ज्ञाणइं चउ देवहं णिकाय  
 चउविहु जि बंधु चउविहु जि णासु  
 चत्तारि वि बंधविणासहेउ

जगवेढणमरु गारव वि तिणिण ।  
 हयकाले भासिय काल तिणिण ।  
 बालाइउ चउविहु भणितं मरणु । 5  
 चउविहु दव्वाइउ दीसमाणु ।  
 चउभिण्णा उच्चविह चउकसाय ।  
 विणउ वि चउविहु गुणगणणिवासु ।  
 भासइ णिज्जियजलजायकेउ ।

घत्ता—सज्जाय पंच आयारविहि णाणइं पंच वरिदुइं ॥

10

णिगंथ पंच-जोईसकुलइं पंचेदियइं वि सिट्टइं ॥ १५ ॥

## 16

अणगारागारिवयाइं पंच  
 आसवणिबंधहेऊउ पंच  
 संसारसरीरइं हौति पंच  
 छज्जीवकाय छकाल समय  
 छह्वइं छावासयविहीउ  
 पर्यइउ अट्ट पुहइउ अट्ट  
 णव णारायण णव सीरधारि  
 णवविह पयत्थ दहभेउ धम्म  
 दह भावणसुर भवणंतवासि  
 पयारह रुइ रउहभाव  
 पच्छिउत्तइं अणुवेक्खावयाइं  
 बारह णरिंद पालियरहंग

पंचत्थिकाय समिदीउ पंच ।  
 लडीउ महाणरया वि पंच ।  
 गुरु पंच मेरु गिरिवर वि पंच ।  
 छलेसाभाव वि समय वि मय ।  
 सत्त वि भय सत्ताहोमहीउ । 5  
 वणदेव जीवगुण ते वि अट्ट ।  
 पडिसत्तु वि णव णिहि दुक्खहारि ।  
 वेज्जावच्चु वि दहविहु सुकम्म ।  
 फणिससिस्सह दह दिसिगय सुहासि ।  
 पयारहविह सावय विगाध । 10  
 बारह जिणवयणविणिग्गयाइं ।  
 बारह तव बारहविह सुयंग ।

घत्ता—तेरह चरियंगइं औक्खियइं तेरह किरियाठाणइं ॥

चउदह गुणठाणारोहणइं चउदह मग्गणठाणइं ॥ १६ ॥

३ MB कहियाइं. ४ MB संसारगमणु. ५ MB चउचउभिण्णा चउविह कसाय. ६ MB विसिट्टइं.  
 ७ MB जोयस°.

16. १ MB °गारवयाइं. २ MB दहभेय. ३ B अणुवेहावयाइं. ४ MB बारह तव बारहविह सुयंग.  
 ५ MB रक्खियइं.

16. 6 ष व ण देव व्यन्तरदेवाः. 9 ष फ णि स सि स ह धरणेन्द्रचन्द्रसहिताः

## 17

अरहंतै सिद्धंतासियाइं  
 चउदह मल चउदह चित्तगंथ  
 चउदह रयणइं गुणिगैहियणाम  
 पण्णारह कम्मघराविहाय  
 सोलह वयणइं दुहदारणाइं  
 संजम दहसत्त दहट्ट दोस  
 असमाहिणिलय वज्जरिय वीस  
 बावीस परीसह कुमुणिभीस  
 तिन्थयर भणिय चउवीस ईस  
 छवीस समासिय वसुहभेय  
 आयारकण्ण पवरट्टवीसं  
 भणियाइं मोहमंदिरइं तीस ।

चउदह पुक्खाइं पयासियाइं ।  
 चउदह कुलयर कयमणुयसंथ ।  
 चउदह दक्खालिय भूयगाम ।  
 पण्णारह उवएसिय पमाय ।  
 सोलह जिणजम्महु कारणाइं । 5  
 णौहज्झाणइं एकूणवीस ।  
 कयमणमल सय्यल वि एकूवीस ।  
 सुइयडुज्झयणाइं वि तिवीस ।  
 मुणिवयमायउ पुणु पंचवीस ।  
 गुण सत्तवीस जइवरविहेय । 10  
 अघसुत्ताइं वि एऊणतीस ।

घत्ता—पर्याहिय तीस विवायरस कम्महं कहिय जिणेसें ॥

बत्तीसुवपस मुणीसरहं कुडिलाउंचियकेसें ॥ १७ ॥

## 18

जं जलि थलि णहि पायालमूलि  
 तं पुच्छंतहु पणवियसिरासु  
 गुरु वंदिवि णिंदिवि दुरिउ दुट्टु  
 णरणाहें रयणिहि सुत्तपण  
 सूयरदादाखंडियकसेरु  
 अक्खिउ पहाइ सुयणहु हिणण  
 किउ णयणगलियजलबिंदुपहिं

जं थूलु सुहुमु तिजगंतरालि ।  
 भासिउं जिणेण भरहेसरासु ।  
 गउ णिउ णियपुरु णिलयाणि पइट्टु ।  
 सिविणंतरि गुरुपयभत्तएण ।  
 इललुलिउ णिहालिउ तेण मेरु । 5  
 सिविणयविवरणउं पुरोहिणण ।  
 वच्छत्थल्लहारोवरि चुपहिं ।

17. १ MB सिद्धंताइयाइं. २ MB मुणिगणियणाम. ३ MB णाहाज्जाणइं. ४ MBK सबल.  
 ५ MB सुइयज्झयणाइं. ६ B तिणि वीस. ७ M adds after this: वयसमिदिपमुह जंपइ जईस.  
 ८ MB एयाहितीस.

18. १ MB सुविणय°. २ MB वच्छत्थल्लु.

17. 1 a सिद्धंतासियाइं सिद्धान्ताश्रितानि. 2 b °संघ संस्था मर्यादा.

तिद्वारयणियरिविलुक्कमाणु	कालाहिमहामुहि णिवडमाणु ।	
उद्धरिवि लोउ अण्णाणुं दीणु	चउदह दिणं वरिससहासहीणु ।	
महि विहँरिवि पुव्वहं पक्क लक्खु	केलासु पराइउ णाणचक्खु ।	10
पावणवणकुसुमामोयमहु	आरुहिवि पसिद्धउ सिद्धिसिह	

घत्ता—दससेहसहिं समउ महारिसिहिं कामकोहणिष्णासणु ॥

थिउ पुणिमदियहि जिणाहिवइ बंधिवि पलियंकासणु ॥ १८ ॥

## 19

जाणिवि <sup>१</sup> जणणहु जणणचयणु	लहुँयउ ओहुँल्लिउ करिवि वयणु ।	
सुविसुद्धबुद्धिसीलावयासु	आयउ भरहु वि अट्टावयासु ।	
गिरि सोहइ चुयमहुआसवेहिं	जिणु सोहइ रुद्धहिं आसवेहिं ।	
गिरि सोहइ वियलियणिउज्जरेहिं	जिणु सोहइ कम्महुं णिज्जरेहिं ।	
गिरि सोहइ णाणाविहमएहिं	जिणु सोहइ रिसिहिं सुणिम्मएहिं ।	5
गिरि सोहइ णच्चियमोरएहिं	जिणु सोहइ सुरसँरमोरएहिं ।	
गिरि सोहइ धम्मणएण जेम	जिणु सोहइ धम्मणएण तेम ।	
गिरि परियंविउ सवराहिवेण	जिणु पणवत्तं भरहाहिवेण ।	

घत्ता--ता णाहु समुग्घायंतरहिं दीहसमयसंताणइं ॥

वेयणियणामगोसँइं करइ तिण्ण वि आउपमाणइं ॥ १९ ॥ 10

## 20

मुणिपवरें किउ किरियाविहाणु	रुंदत्तणेण ससररमाणु ।	
णीसारिउ दंडायारु जीउ	तिजगग्गचरमणरयंतु णीउ ।	

३ MB °पाणु. ४ MB णिविडमाणु. ५ MB अण्णाण. ६ MB °दिणु. ७ G विवरिवि. ८ MB सिद्धिसिह. ९ K दह°.

19. १ MB जाणिवि जणजणणहु २ M लइयउ. ३ MB ओहुँल्लिउं. ४ Tp ससमोरएहिं इति पाठे उपशममुक्ताश्च ते उरगाश्च. ५ B गोत्तहु.

19. 1 a जणणहु ऋषभनाथस्य; जणण चयणु संसारत्यजनम्. 3 a चुयमहुआसवेहिं प्रवृत्त-मधुप्रवाहैः. 6 b °सरमोरएहिं सरमाः सलक्ष्मीकाः उरगाः तैः. 7 a धम्मणएण धर्मनाम्ना वृक्षविशेषेण; b धम्मणएण धर्मन्यायेन. 9 समुग्घायंतरहिं समुद्घातविशेषैः दण्डकपाटप्रतरलोकपूरणरूपैः.

20. 1 a किरियाविहाणु शरीरादात्मप्रदेशानां बहिर्निःसारणम्. 2 °चरमणरयंतु सप्तनरकाणां मध्ये नित्यनिगोदनरकं एकेन्द्रियाणां भेदस्तस्य पर्यन्तम्.

अद्भुतपसारिउ पुणु सुरीड  
अप्याणउ देवें देवणविउ  
णीसेसलोयपूरणु करेवि  
तेजइयकम्मओरालियाइं  
मुणि मेळिवि तिज्जउ सुहुमकिरिउ  
तहिं सुक्कशाणि आयउ अजोइ  
थिउ देहउभंतरि सामिसालु  
अच्छंतु वि अंगु ण छिवइ देउ

णं तिहुयणघरि दिण्णउं कवाडु ।  
रूआयारें सहस सि थविउ ।  
विर्वरीएं चारें संवरेवि । 5  
तिण्णि वि अंगइं णिञ्चालियाइं ।  
संपच्चु चउत्थु छिण्णोकिरिउ ।  
मणवयणकायमुक्कउ विहाइ ।  
क ख ग घ ङ समक्खरमणणकालु ।  
फलछल्लि व अरदेरंडबीउ । 10

घसा—दंसणणाणाइहिं वसुसमहिं सिद्धगुणहिं संपण्णउ ॥

ससहावें जाइवि परमपए परमेसरु संपण्णउ ॥ २० ॥

## 21

ता सक्के कय माणवमणोज्ज  
सियसिधियहि णिहियउ णाहदेहु  
भंभाभेरीसल्लुरिसयाइं  
गायंतिहिं किंणरकामिणीहिं  
धिपंतिहिं णवकुसुमंजलीहिं  
सहलक्खयधूर्वाधिलेवणेहिं  
आढत्तचित्तथुइकलयलेहिं  
कप्पूरचंदणागुरुत्तैरुक्ख  
अंचेण्णिणु रिसिपरमेसरासु  
पय पणवंतहिं तंबिरतिडिक्कु

अरुहहु पंचमकल्लाणपुज्ज ।  
कइलाससिहरि णं अरुणमेहु ।  
सुरत्तूरिपहिं तूरइं हयाइं ।  
णञ्चंतिहिं फणिसीमंतिणीहिं ।  
उब्भियउल्लोवधयावलीहिं । 5  
भिगारहिं कलसहिं दप्पणेहिं ।  
अवरेहिं वि णाणामंगलेहिं ।  
सल्लं विरइय खंडिवि विधिइ रुक्ख ।  
तहिं णिहियउ अंगु अणंगणासु ।  
अग्गिदाहिं मउड्डाणलु विमुक्कु । 10

20. १ G सरीडु. २ M फयरायारें, B कयआयारें, T पयरायारें. ३ MB विवरीरें; T विवरीएं.  
४ MBT णिञ्चालियाइं, ५ B छण्ण°. ६ MB भरण°. ७ MB जरदेरंड°. ८ MB वसुसमिहिं. ९ MB  
जाइवि उद्भुगइ तिहुयणसिहरि णिसण्णउ.

21. १ MB सुरत्तूरएहिं. २ MB धूम°. ३ B पुरुक्ख. ४ M सयल विइय खंडिवि; B सलु विय  
रयवि खंडिवि.

8 a सुरीडु देवस्तवंतु देवसुत वा. 4 b रूआयारें प्रतराकरण. 5 b विवरीएं चारें संवरे वि प्रथमं लोक-  
पूरणसंवरणं कृत्वा ततो रुजकारसंवरणं ततो दण्डाकारसंवरणमिति. 6 b णिञ्चालियाइं निःपरिस्पन्दीकृतानि.

21. 10 a °ति डिक्कु स्फुलिङ्गः.

घसा—अलहंतु णरसणु थरहरिउ भवपरिभवणहु भग्गउ ॥

सिहि णं संसारें तौसियउ जिणकमकमलहुं लग्गउ ॥ २१ ॥

## 22

उल्ललिउ धूमु घणजंणियसंकु  
पुणु मिलिउ गयणि जालाकलाउ  
तहु कुंडहु गणहरजमदिसाइ  
तिण्णि वि सिहि पुज्जिय सोत्तिपहिं  
तं मण्णिवि पुण्णञ्जणु पक्खि  
भालंयलि कंठि भुज्जुयलसिहरि  
अणु मुद्धएसि मउडग्गभाइ

णं सिहिणा मुक्कउ मलकलंकु ।  
तणु पसु खणद्धें भप्फभाउं ।  
मुणिवर सक्कारिय पच्छिमाइ ।  
घय जैव तिल घल्लिवि खसिपहिं ।  
अण्णेक्कहिं लइयउ अग्गिहोसु । 5  
हिप्पंकइ णिहियउ णाहिविवरि ।  
जसमंडणुं जिह तं सहइ काइ ।

घसा—जं तुम्हहं जायउ मोक्खुं सुहुं तं महु होउ पियारउ ॥

इय भणिवि तियाउसु वंदियउ इंदें रिसहहु केरउ ॥ २२ ॥

## 23

जेही तुह तेही होउ बोहि  
इय घोसंतहिं कप्पामरेहिं  
विंतरदेनहिं जोइसगणेहिं  
णंदादेवीइ महासईइ  
भरहेण दुक्खदुमियमणेण  
केसरिकिसोरसरि ।सहरिवासि

अम्हहं वि भडारा मणि समाहि ।  
वंदियउ तियाउसु खेयरोहिं ।  
वंदियउ तियाउसु भावणेहिं ।  
वंदियउ तियाउसु जसवईइ ।  
वंदियउ तियाउसु परिचणेण । 5  
घणतुहिणकणाउलि माहमासि ।

५ MB तावियउ.

22. १ B जलिय°, २ K भप्प°, ३ MB घय तिल जव, ४ (५ भायलि ५ MBK भुयजुयल°,  
६ MB मुद्धएस, ७ MB मोक्खसुहुं.

23. १ MB मणसमाहि.

22. (1) b हि प्पंकइ हत्पक्कजे हृदयकमले, 7 a मुद्ध ए सि मस्तकप्रदेशे (1) तियाउसु भस्म.

23. (1) a °सरि °शब्दे

सूरंगमि कैसणचउहसीहि  
रोवइ सोयाउरु सयणविंदु  
तेलोकमंदिराधारखंडु

णिञ्जुइ तित्थंकरि पुरिससीहि ।  
सइं सोयइ भरहु महाणरिंदु ।  
कहिं पेच्छमि देउ जुगाइबंभु ।

घन्ता--पइं विणु जिण अंधइं लोयणइं दिसउ असेसउ सुंणिणयउ ॥ 10  
उब्भिवि हत्थ ओम्माहियउ पयउ वरायउ हंणिणयउ ॥ २३ ॥

24

तुहुं मज्झ वणु जगडिंभबणु  
पइं विणु को पालइ इट्ट सिट्ट  
पइं विणु को जाणइ तच्चभेउ  
पइं विणु अणाहु सामिय तिलोउ  
इह सो मुउ जो मुउ गग्भि वसइ  
तुह ताउ देउ तित्थयरु पवरु  
सक्केण जि तं जि पउत्तु तासु  
सो तुहुं किं सोयहि जणणु भणिवि  
अरहंतु सरंतहं होइ धम्मु  
तं णिसुणिवि राणं दुण्णिरिक्खु

पइं विणु को कहइ कलावियणु ।  
को विसहइ गुरुतववरणणिट्ट ।  
को होइ देव देवहिं चि देउ ।  
ता गणहरु भणइ म करहि सोउ ।  
छिज्जइ भिज्जइ दुहदलित रसइ । 5  
परमण्णउ ह्यउ अजरु अमरु ।  
जो सुयरंतहं णासइ किलेसु ।  
जो जायहु सिद्धु तमोहु धुणिवि ।  
मा मोहें तुहुं संचहि दुक्कम्मु ।  
महुंइ साहारिउ ताँयदुक्खु । 10

घन्ता--गउ सुरवइ सग्गहु ससुरयणु वंदिवि परमजिणेसरु ॥  
मंडलियमहामंडलियवइ साकेयहु भरहेसरु ॥ २४ ॥

25

सोमण्णहु हयसुहदुक्खहेउ  
गय णिव्वाणहु तिजगुत्तिमंगि

सेयंसराउ बाहुबलि देउ ।  
थिय तिणिण वि अट्टमधराणिरंगि ।

२ MB सूरुगमि. ३ B किसण°. ४ B सुण्णउ. ५ MB ओमहियउ. ६ MB रुल्लियउ.

24. १ M दुहमलित. २ MB मंडइ. ३ MB हिययदुक्खु.

25. १ MB तिजगुत्तमंगि.

11 ओ म्मा हि य उ उत्कण्ठितः.

24. 2 a इट्ट सिट्ट इष्टा मोक्षयोग्यतया ये शिष्टा भव्याः.

25. 1a हय सुहदुक्खहेउ त्यक्केष्टानिष्टविषयः.



सहुं गणणाहहिं उव्वारुएहिं  
 णिद्धाडियेसाडियकम्मरेणु  
 गउ मोक्खहु उब्वेणरमियस्सयरि  
 कुंकुमविलेउ ढोयंतएण  
 अवलोइवि पंडुरु एक्क केसु  
 णयरायरपुरवरपउरदेस  
 भूएसु भूरिपसरियकिवेण  
 परिवडइ ण चिहुरुप्पाड जांम  
 इयउ परमेट्टि धरमप्पताणु  
 फेडिवि भव्वहं मणमोहयालु

णासियमयमोहमहैारुएहिं ।  
 कालेण गैलंतै वसहसेणु ।  
 एत्तहि वि तेत्थु साकेयणयरि । 5  
 दप्पणयलि मुहुं जोयंतएण ।  
 णिंदिवि णरजम्म सुणिब्बिसेसु ।  
 णियसुयहु समप्पिधि महि असेस ।  
 तवचरणु लइउ भरहाहिवेण ।  
 उप्पणउं केवलु तासु ताम । 10  
 वउदेवणिकायहिं थुव्वमाणु ।  
 महिमंडलि विहरिवि दीहकालु ।

घत्ता—गउ भरहु वि मोक्खु विसुद्धमइ विविहकम्मबंधणचुउ ॥

फेणिसहरकिंणरपवरणरपुष्पयंतगणसंथुउ ॥ २५ ॥

इय महापुराणे तिसट्टिमहापुरिसगुणालंकारे महाकइपुष्पयंतविरइए  
 महाभव्वभरहाणुमणिए महाकव्वे सगणहररिसहणहभरह-  
 णिष्वाणगमणं णाम सत्ततीसमो परिच्छेओ समत्तो ॥ ३७ ॥

॥ संधि ॥ ३७ ॥

॥ समाप्तमादिपुराणम् ॥

२ MB उव्वारुएहिं. ३ MB °महाभएहिं. ४ MB °सारिय°; T साडिय. ५ MB गणंतै. ६ MB उबवाणि.  
 ७ B एत्तहिं तेत्थु. ८ M परस्स ताणु; B परप्पताणु. ९ M °कम्मवेधेहिं चुउ; B कम्मबंधेहिं चुउ. १० MB  
 फणिक्खेवर°.

8 a उव्वारुएहिं उद्धरितैः सह. 4 a णिद्धाडिय साडियकम्मरेणु निर्घाटिताः पूर्वोपाकृता निर्जाणीः  
 शानिताः अपूर्वा आगच्छन्तो निवारिताः कर्मरेणवो येन. 10 a परिवडइ निष्पद्यते. 11 a परमप्पताणु  
 परात्मरक्षकः. 14 °विसहर° वृषधरा महामुनयः.

# NOTES



## NOTES

[ *The references in these Notes are to Samdhis in Roman figures and Kadavakas and lines in Arabic figures. A brief summary of the contents of a samdhi is given at the beginning to enable the reader to follow the Text. The Notes that follow supplement those given at the foot of the page. T. Stands for Tippana of Prabhācandra.* ]

### I

[ The Poet offers homage to Ṛṣabhanātha, the first of the Tirthamkaras, and to the goddess of learning, and declares his intention to compose a Mahāpurāṇa. By way of introduction the poet says that once in the Siddhārtha year (881 of the Śaka era, i. e., 959 A. D.) he arrived at the outskirts of the town of Mepādi (Mānyakheta, modern Malkhed) and being fatigued with a long journey rested there in the grove. Two men of the town, Annaiya and Indarāya, approached him and requested him to visit the minister Bharata who would give him a good reception. The poet was at first unwilling to do so because of his bitter experiences at the court of king Bhairava *alias* Viraraja, but these men assured him that Bharata was quite a different person and would receive him well. Accordingly the poet saw Bharata, was well-received, and rested there for a few days. Bharata then requested the poet to compose a Mahāpurāṇa so that he would make the right use of his poetic gifts, and offered him all help. The poet was at first unwilling, because he was afraid of the wicked who criticised even good works. Bharata asked him not to mind them. The poet then modestly said that he was not competent to undertake the task as he was ignorant of the great philosophical systems, works of the poets of the past, works on grammar, rhetoric and metrics, still he would undertake the task out of devotion to the personages figuring in the Mahāpurāṇa. The poet thereupon invoked the aid of Gomukha Yakṣa of Ṛṣabhadeva and of Padmāvati Yakṣiṇī, the goddess of learning.

The poet proceeds : There is in the Jambūdvīpa a country called Magadha with its capital Rājagrha. King Śreṇika was one day seated

## MAHĀPURĀṆA

in his court with Cellaṇādevī, when a messenger brought to him the report that Mahāvira had arrived at the garden outside the city. The king immediately rose from his seat to pay homage to him and recited a prayer glorifying him.]

1. The poet pays homage to Risaha, the first Tirthamkara.

1. 3a सुपरिक्लिय, सम्यग् ज्ञाता, T., having understood well the animate and inanimate divisions of the world. 3b दिश्वतुं, निःस्वेदत्वादिदशातिशयोपेत्-शरीम्, T., the Jina possesses a body which is divine, i. e., it possesses ten excellences such as absence of perspiration. The number of atisāyas which a Jina possesses is 31. See Abhidhāna Cintāmaṇi I. 57-61. Of these ten are peculiar to the body of the Jina. See IV. 2. 4a पयडियसात्तयपयणयरवहं, प्रकटिनः शाश्वतपद्मगरस्य मोक्षस्य पन्था मार्गो रत्नत्रयरूपो येन तम्, T., one who preached the path leading to the city of eternal abode, i. e. emancipation or Siddhi. 5a सुहसीलगुणोद्दण्डिवासहई, शुभाः प्रशस्ताश्च ते शीलगुणाश्च तेषामोघः समूहस्तस्य निवासगृहम्, T., the home of a large number of auspicious qualities. 10a चित्तलियणहं कवुं गिताकाशम्, T. The sky was rendered variegated by flowers which Indra dropped down from heaven. 15b मत्तासन्धं, the poet wants to suggest incidently the name of the metre which is मात्रासमक. 17 जासु तिरिय, यस्य तीर्थं, in whose preachings.

2. The poet pays homage to the five dignitaries of the Faith, usually called पञ्चपरमोद्दिन, viz., तीर्थंकर, सिद्ध, आचार्य, उपध्याय and लक्षु and also invokes the aid of the goddess of learning.

2. 3b कौमलपयाई, कौमलानि चक्षुःप्रीतिजनकानि श्रोत्रमनःमुखदानि च, पयाई पद्व्यामाः पदरचनाश्च, T. The poet describes the goddess of learning under the image of a fair woman ; all the epithets used are therefore applicable to सरस्वती as well as स्त्री. 5a छंदेण जांति, going at will (applicable to a lady); moving in a metrical form (applicable to poetry). 6a चोद्दसपुडिल्ल, चतुर्दशपूर्वेः युक्ता सरस्वती, स्त्री तु चतुर्दशैः (?) पूर्वेः पूर्वपुरुषैर्युक्ता मात्रन्वये हि सप्त पुरुषास्तत्पतेः (?) पित्रन्वये च सप्तेति, T. The goddess possesses fourteen Pūrva books, ancient texts of the Jainas, now lost ; the woman possesses purity of seven ancestors on the mother's side and seven on the father's side. दुवालमंगि, सरस्वती द्वादशाङ्गैर्युक्ता, स्त्री तु—

नलया बाहू य तद्वा नियं च ( नियं च ? ) पुट्टी उरो य सीसं च ।

अद्वेव दु अङ्गाई सेस उवङ्गा दु देहस्त ॥

इत्यष्टौ, कर्णनासिकानयनोद्वाश्वत्वार इति द्वादशाङ्गैर्युक्ता, T. The twelve aṅgas are the

NOTES, I. 1. 7

famous books of the Jain Canon such as आचाराङ्ग etc. The woman's body also is fancifully divided into twelve parts, two legs, two arms, the hips, back, chest, head, ears, nose, eyes and lips. 6b सत्तमंगि, सरस्वती समभङ्गोपेता स्त्री तु सत्तमंगि धैर्यरहिता प्राणिषु कौटिल्ययुक्ता च, T. It would be better to interpret सत्तमंगि applicable to a woman as सत्त्वभाङ्गिणी पुरुषाणां धैर्यनाशिका.

3. 3a-b भुवणक्लेगसु तुडिगु, रुग्णराजः तस्येदं विरुदम् T. We know that the Rāstrakūta kings had a number of *Birulas* ; we have in Puspādanta's works a few others such as Śubhatuṅga ( see I. 5. 2a and note thereon ) and Vallabhadeva. तुडिगु seems to be of Kannada origin. 7b मयंद-गोष्ठगोदलियकीरिं, आम्रलुम्बिमीलिनयुके, ( garden ) where parrots have gathered on the blossom of mango trees. गोदलिय comes from गोदल, a Deśī word, which means a gathering. Compare गोधळ, गंधळी in Marathi. 9b खंड means पुष्पदन्त ; so also अहिमाणमेरु in 12a below. 14 वर or वरि, an expletive of frequent occurrence, means 'it is better,' 'I would rather prefer.' 15 म णिहालउ सूरुगमे, let him not see in the morning the face of a king who is under the influence of the wicked.

4. Drawbacks of royalty condemned.

4. 3a सत्तंगरज्ज, kingdom with its seven constituents, viz., स्वामी, अमात्य, सुहृत्, कोश, राष्ट्र, दुर्ग and बल. 4a विमसहजम्भइ, fortune born along with हालाहल poison at the time of the churning of the ocean.

5. Bharata glorified.

5. 3a पाययकइकव्वरसावउद्दु, connoisseur of the flavour of the poems of Prakrit poets. This epithet has a special significance, probably because Prakrit poetry was not much admired or understood and even ignored altogether at this time.

6. The poet's reception at the house of Bharata, and his proposal to him to compose a Mahāpurāṇa.

6. 9a देवीसुएण, by the son of Devi, i. e., by Bharata.

7. The poet shows his timidity to undertake the task because of the wicked who censure even good works like the Setubandha of Pravaraśena.

7. 3a गोवज्जिइहि etc. This series of epithets have double meaning : one applicable to षगदिण etc. and the other applicable to the wicked.

## MAHĀPURĀṆA

8. Bharata assures Puṣpadanta that wicked people are always like that and that the wise should pay no heed to them.

8. 7b मुक्कउ ङणर्बद्धु सारमेउ, let the dog bark at the full moon.  
9b कव्वपिसङ्खण, another epithet of Puṣpadanta; compare कव्वपिसाव, कव्वरक्खस.

9. The poet, by way of modesty, shows that he is not qualified to undertake the Mahāpurāṇa, and yet he does so out of devotion to the adorable persons.

9. 1a अकलंक etc. For these writers see notes at the bottom of the page, and also Introduction to Nāyakumārācariu, page XXIII.  
13b कुडवेण मव्व को जलणिहाणु, who can measure the waters of the ocean by means of a Kuḍava, a small measure? 17 विदरोक्खए किं अक्खइ, why should I say at the back? i. e., I say it openly, I challenge the people to point out drawbacks in my work if they notice any.

10. The poet invokes the aid of Gomuḥa Yakṣa and Cakkesarī Yakṣiṇī who are the guardian deities of ऋषभ, and of the goddess of learning.

10. 14 जे ञरु भसइ णिबंभइ, he who barks at my work.

11. The location of the Magadha country.

12. Description of Rājagṛha, its capital.

12. 9b मंथामंथियमंथणिरवाइ, मन्थेन रविकूया मथिताद्विलोडितान्मन्थनीरवाः शब्दा यत्र, T., where there are sweet songs of churning women when they are engaged in the act of churning. It is the practice of cowherd women to sing sweet songs at the time of churning.

13. Description of the outskirts of Rājagṛha.

13. 11b संगहु सिरिणयणंजणहु णाइ, it was, as it were, a storehouse, संगहु, of collyrium of श्री. The lotus flower, with a black bee sitting in it, appeared to be a collyrium box of the goddess of beauty.

14. Description of the town of Rājagṛha.

14. 9b अण्णाणिय णाइ कुसासणेहिं, like ignorant people who are misled by false doctrines ( कु+शासन ).

15. Description of Rājagṛha continued.

## NOTES, II 2

16. King Śreṇika described.

18. King Śreṇika receives the report of the arrival of Mahāvira

18. 6b चउदेवणिहाय, the four classes of gods are : स्वर्गपति, ज्यन्तर, ज्जोत्तिका and वैमर्षिक. 7a चउनीतातिसय, the Arhats possess thirtyfour atisayas or excellences which are enumerated in Hemacandra's Abhidhāna Cīntāmaṇi and several other works. See page 5, notes of Miss Johnson's Translation of Trisastī. 9b अट्टिह्याडिहिर, these Prātihāryas, miraculous possessions of Arhats, are eight viz, अशोक, सुरपुष्पवृष्टि, दिव्यध्वनि, चामर, सिंहासन, मामण्डल, दुन्दुभि and त्रिछत्र. 10b विउलहरि, is a small hill in the neighbourhood of Rājagṛha. 15 पुष्कयंततेयाहिय, the poet puts his name in the last line of a Saṃdhi of each of his three known works. It is thus his अङ्क, or mark, and is interpreted in several ways, but more frequently as चन्द्र and सूर्य, and the Tirthaṃkara of that name. The term पुष्कयंत is at times paraphrased by पुष्कदसन, कुसुमदसन etc. भरत, the poet's patron, is also mentioned in the Ghattā lines. The term भरत also may be regarded as another अङ्क of the poet and is interpreted as भारतवर्ष or भरत, the first Cakravartin.

### II.

[ King Seniya, on hearing the news of the arrival of Mahāvira, proceeds along with his retinue to see him. After paying his respects to the Jina, the king asked his disciple Goyama to recite to him the Mahāpurāṇa which he does.

Goyama then begins his narration by first mentioning the divisions of time, the Kulakaras and their contribution to the civilization of the Universe. The last of these Kulakaras was Nāhi ( Sk. Nābhi ), and his queen was Marudevī. Now Indra remembered that a Jina was to be born in their house and therefore ordered Dhaṇaya, i e., Kubera, to make the town of Ujjhā ( Ayodhyā ) gay and pleasant so that it should be a fit place for the birth of the Jina. ]

1. 6b णं वररायविति रिउदारिणि, a lady who took in her hand a कुबलय, i. e. a lotus flower, is compared to royalty ( वररायविति ) which also holds कुबलय, i. e., the globe of the earth, and chastises the enemies ( रिउदारिणि ).

2. 13 जणजणजतिहह, ( Jina ) who removes the misery ( असि-भारि ) of birth ( जण ) of the people. 14 सुरणंभोदहदिसपर, the sun to the



## MAHĀPURĀṆA

lotus, viz., the universe; the Jina gladdens the universe as the sun blooms the lotus.

3. 5-11. These lines contain a long epithet of Jina वरुण...सिर-  
णमणमउडयलमणिसलिलधुवाविमलकमकमल, (Jina) whose lotus-like feet are washed  
by waters flowing from the gems in the coronets of वरुण and other  
gods when they bend their heads (सिरणमण) before him. 35 मई गेज्जसु  
पचमगइहं, you will please lead me to the fifth गति, i. e., सिद्धावस्था,  
emancipation from संसार, the first four गतिस being देव, नारक, तिर्यक्  
and मनुष्य.

4. 7a गणइ गंतु भाविणिहि गिरुत्तउ, there is no beginning (न + आदि) and  
no end (न + अन्त) to the list of the coming Jinas, i. e., the number of  
the future Jinas is infinite. 8-9 कालु अणाइउ etc. Time has no beginning  
and no end; i. e., it is infinite. Time is an associating cause of change  
in the Universe. It has no flavour, no odour, no colour and no  
weight. Time in abstract (निश्चयकाल) is marked by its fleeting i. e.,  
constantly passing (प्रवर्तन). 12 ववहारकालु, Time as understood in our  
daily practice.

5. 3b विचकारिणितणं, by महावीर who is the son of मियकारिणी, popularly  
known as त्रिशला. Compare कल्पसूत्र, 109, where the name given is पीडकारिणी.  
10a नाइज्जइ, गुण्यते, T., is multiplied.

6. 10a भेज्जउ, भेद्यः, divisible, to be divided.

8. 4-5 उच्छप्पिणि, i. e., उत्सर्पिणीकाल is defined as one in which  
strength, prosperity, height of the body, piety, knowledge, gravity and  
courage are on the increase; ओसप्पिणि, i. e., अवसर्पिणीकाल is one in which  
these qualities are on the decrease. 7b द्दहविहविडवि, the ten कल्पवृक्षस,  
enumerated in the foot-notes.

9. 3a पडिसुइ, the first कुलकर of the Jain mythology. 4a अमममियाउ,  
having life of the length of an अमम, a large number. The other कुलकरस  
or मनुस mentioned in 9 and 10 are: सम्मइ, सेमंकर, सेमंधर, सीमंकर, सीमंधर,  
विमलवाहु, चक्खुवमउ (चक्षुमान), जससि, अडिचंद, चंदाह, मरुदेव, पसेणइ and नाहि (नाभि).

11. 1 The first कुलकर explained to the world, i. e., discovered  
for the first time, the functions of the sun and the moon who were  
not noticed by the people upto this time because the world was full of

### NOTES, III

the light supplied by the कल्पवृक्षs. The second discovered the stars and planets. Similarly each कुलकर contributed something towards the human civilization. The last कुलकर i. e. नाभि, discovered the method of cutting the नाळ of children, and also discovered clouds which, by rain, rendered the earth full of various crops so that nobody felt the absence of the कल्पवृक्षs. He also discovered fire, the art of cooking and weaving for the benefit of humanity.

17. 5b सुयसु सुवसु णियमणि तदयहं, Indra, on learning that a तीर्थकर is to be born at a particular place, orders Dhanaya, i. e. Kubera, to make the city beautiful and rich, so that it becomes fit for the birth of a Jina.

19. 1a छुडु छुडु—Hemacandra in his grammar under IV. 422 gives छुडु as a substitute for यदि. I do not think that छुडु always means यदि; in fact the usual sense of छुडु seems to be क्षिप्तम् which sense suits the context here as well as elsewhere. The marginal notes in Mss. here render it as यदा but I do not think it to be correct.

### III

[The birth of a Jina in Jain works is described in such a monotonous way that we are often tempted to think that we are in the field of mythology rather than that of history. When the parents of a Jina are determined, Indra orders Kubera to make the town of his parents beautiful and fit to be worthy of such event. The Jina in the immediately preceding birth is born in heaven. Six months before his period of life in heaven is to end, Indra sends six goddesses, सिद्धि, हिम्बि, दिहि, कान्ति, किन्ती, and लच्छी to the earth to purify the womb of the lady where the Jina is to be born. They then come to the mother of the Jina and wait upon her as her maids. The mother then sees sixteen objects (according to the Śvetāmbara tradition, fourteen) in a dream towards the end of the night. She sees her husband the next morning and tells him that she saw, the previous night, sixteen dreams. The husband then explains to her the fruit of her dreams which in substance is that she would be the mother of a Jina. The Jina then descends into the womb in the form of some object (in the case of Rṣabha, the first Tirthankara, a white bull). Gods attend this event. There is shower of gems sent by Kubera. Jina is then born in due course. Gods headed by Indra arrive at the birth-place of the Jina, see the

## MAHĀPURĀNA

Jina born, go round him three times, offer him prayers. Indra then hands over to the mother a babe produced by his magic, takes away the Jina to the mountain Meru, puts him on a jewelled seat and gives him a ceremonious bath, the waters of which, flowing over the mountain Meru, are subsequently saluted by all gods. Indra then recites some hymns in praise of the Jina, and then brings him back to his parents. This event is usually called a कल्याण ( Sk. कल्याणक ) or more particularly जिनजन्माभिषेककल्याण. These events are almost monotonously described in the life of a Jina, but Puṣpadanta has on every occasion, enlivened the details with his poetic skill. The particulars about Risaha, the first Tirthaṅkara are :—

- (1) Town of birth—Ayodhyā
- (2) Parents—Nābhi and Marudevī.
- (3) Descent in the womb—as a white bull.
- (4) Date of Descent—month Āṣāḍha, dark half, second day, Uttarāśādhā Nakṣatra.
- (5) Date of birth—month Caitra, dark half, ninth day, Sunday, Uttarāśādhā Nakṣatra, Brahma yoga.
- (6) Name—Risaha, Ṛṣabha or Vṛṣabha. ]

4. 9a निवर्षणंति, in the courtyard of the king. Although Prakrits in general do not allow conjunct consonants with र्, we get such conjuncts in Apabhraṃśī. See Hemacandra IV. 398 and 399. Of our Mss. G and K only give conjuncts with र् while MBP do not. I have therefore considered G and K to preserve older recension of our text on this account as also on account of their retaining forms with कृ such as मृग, सृय etc. 11 सइ, i. e., मरुदेवी.

5. This Kadavaka gives the list of sixteen objects which Marudevī sees in a dream, and which foreshadows the birth of a Jina. The Śvetāmbara tradition differs from the Digambara one in that they mention only fourteen objects of the dream ( चौदस महासुमिग ). Compare कल्पसूत्र 4, and 32-47.

गय वसइ सीइ अभितेय दाम सति दिवयरं सतं कुम्भं ।  
 पउमत्तर सागर विमाणभयण रयणुच्चय सिद्धिं च ॥  
 एए चउदस सुविणे सव्वा पसेइ सित्थयरमांथ ।  
 जं रवाणि वइमई कुम्भित्ति महम्मसो जसिहा ॥

NOTES, III. 21

These objects, according to the Digambara tradition, are :—

- ( 1 ) An Elephant breaking open the mountain slopes.
- ( 2 ) A Bull loudly roaring.
- ( 3 ) A roaring Lion.
- ( 4 ) Goddess Lakṣmī being bathed in waters from the trunks of the elephants of the quarters ( दिशागम ). The Svetāmbaras designate this under अभिसेय.
- ( 5 ) Wreaths, two in number, of fresh flowers.
- ( 6 ) The rising moon.
- ( 7 ) The rising sun.
- ( 8 ) A pair of Fish.
- ( 9 ) A pair of Jars filled with water.
- (10) A fine lotus-pond.
- (11) A surging sea.
- (12) A royal seat marked with lion's head ( सिंहासन ). The Svetāmbaras omit this object from their list.
- (13) A heavenly palace or mansion-house.
- (14) A palace of snakes or of the king of snakes ( नागभवन ); this object is omitted in the list of the Śvetāmbaras.
- (15) A heap of Gems.
- (16) Burning Fire.

It will be seen from above that the Svetāmbaras omit 12 and 14 from the above list and thus reduce the number of objects to fourteen.

7. 5a सोलह वि तवभावणाओ पहावेवि, having meditated upon the sixteen forms ( भावना ) of penance such as दर्शनविभुद्धि etc. These भावनाs are :—दर्शनविभुद्धिः, विनयसंपन्नता, शीलव्रतेष्वनतिचारः, अभीष्टं ज्ञानोपयोगः, अभीष्टं संवेगः, शक्तिनस्त्यागः, शक्तिनस्तपः, साधुसमाधिः, वैद्यावृत्त्यकरणम्, अर्हद्भक्तिः, आचार्यभक्तिः, बहुश्रुतभक्तिः, प्रवचनभक्तिः, आवश्यकतापरिहाणिः, मार्गप्रभावना and प्रवचनवत्सलत्वम्. Compare also नायाधम्मकहाओ, VIII. 64 ; तत्त्वार्थाधिगमसूत्र VI. 24.

19. 14 नहु देसहु मंडं णेदि, take me to that region where there is no birth etc., i. e., to the region of the Siddhas.

21. 11a बिद्धु धम्म तेण भाइ त्ति, the Jina is called वृषभ because he shines forth ( भाइ, भाति ) by विस ( वृष ), i. e., धर्म or piety.

## MAHĀPURĀṆA

### IV

[Prince Risaba grew in the royal house in ideal surroundings. He possessed ten bodily atisayas or excellences such as bodily purity, want of perspiration etc. He grew strong and powerful and young. His father then thought of getting him married. The prince was at first unwilling, but being pressed by the king, agreed to be married to जसवई and सुणदा, daughters of the kings of Kaccha and Mahākaccha. The marriage was celebrated with great pomp. On the evening of the celebration, under the moon-lit sky, a concert was arranged by celestial nymphs with dance, music and singing. The ceremony was rounded off by gifts which the king made to everybody so as to satisfy all his desires.]

1. 10a उत्तानसेज्ज, lying on his back the young boy was looking up, but the poet fancies that he is watching the path to emancipation which, as it were, goes in the upward direction. 15a दरुं दैने पयाइं, while walking slowly in the childhood. 16b चउसहि वि कलाउ, sixty-four arts, and not seventytwo as with the Svetāmbaras. For that list see Rāyapaseṇiyasutta or Paśśikalāṇayam, para 39 and my note thereon.

2. This Kaḍavaka mentions some of the atisayas which a Jina possesses.

3. 10a जो कण्ठकवु सो कहु कहु, the so-called wish-tree is, alas! a mere log of wood.

4. 14b अम्माहीरण, स्वदेशस्त्रीचालप्रासद्गगध्वनिना, T., i. e., lullaby or song to make the baby sleep. 15 होहलुरु जो जो, these are the expressions which the mother uses to make the baby sleep.

9. 10a चंदोवचीणपेटेहिं छइउ, covered with fine canopy (चंदोव) of China cloth.

10. 3a सुहाइ, सु+भाति shines forth.

17. 2b दुहुं व धोयउ, दुग्धेनेव धौतः, as if washed or bathed in milk. Note that दुहुं is the Inst. sing. form which is obtainable by a confusion of अनुस्वार of the Instr. ( Cf. Hemacandra IV. 342 ) and उ of the Nom. and Acc. 4a आउज्जहुं जेण मुहण वासु, the arrangement of the musical instruments for a concert is described here, which arrangement is

NOTES, IV. 18

called पञ्चाहार or प्रत्याहार. 9b कम्मरवी is an act of cleaning the musical instruments. 10b उद्धिक्खणु किउ हिंदोलण, the introductory notes of the हिंदोलराग were sung first. 11b कउ पञ्चणीहिं पुणु तहिं पवेसु, the dancing girls then entered presenting the three methods of keeping time ( ताल ), viz. वण्ण, छडय and धारा. T adds:—समस्तनाटकार्थवर्णनादूर्णतालः, शृङ्गाररसाभिनयश्छटकातालः, वीररसाभिनयो धागतालः.

18. The various technical terms of the art of dancing have been explained and their subdivisions enumerated in T. which I quote fully here :—चागी पद्यचारः, सा द्वात्रिंशत्प्रकारा, तत्र सम्पादा स्थितावती सकटास्या अथ-  
द्विका चापगतिः विषया एलका क्रीडिता बद्धा उरुदृत्ता आदिता उच्छदिता वा जतिता स्पदितजिनिता  
अपस्पदिता मतुली मत्तली चेति षोडश भौश्रार्यः, अतिक्रान्ता अपक्रान्ता पार्श्वक्रान्ता अर्द्धजानुः सूची  
नूपुरपादिका दोलापाला पादा आक्षिप्ता आविद्धा उद्धृता विद्युद्धाना आलता भुजंगत्रासिता हरिणकुना  
धमरी चेत्येताः षोडश कासोद्वाश्रार्यः. 3b अंगवदन अंगहारः, स च स्थिरहस्तकः सूचीविद्धः  
आक्षिपकः कर्गल्लेदः विष्कम्भः अपगतः आघ्रीडः भृश्रिकः भ्रमणमदादिविलसित इत्यादिविकल्पान्  
द्वात्रिंशत्प्रकारः. 4b शरीरगमनेऽथा प्रतिष्ठाप्य क्रियते इति क र णा नि . तलपुणपुट वर्तितं अपविद्धं  
लीन स्वास्तक अर्धस्वस्तिकं अर्धस्वस्तिकंरचित निकूटकं अलातं उन्मत्तं ललाटं तिलमित्वाद्यष्टोत्तरशत-  
संख्यानि. दि ण्णु दत्तानि 5a च उ द ह वि सी स . उक्तं च—

अकंपितं कंपितं च धृतं विधुतमेव च ।

परिवाहितमाधूतमर्धाचतनिःकुंचितं ॥

× × × पराहृतमक्लृप्तं चाप्यधोगतं ।

लोलितं प्रकृतं चेति चतुर्दशविधं शिरः ॥

5b भू तं ड व हं नृत्यानि सप्त—

आक्षेपः पाननं चैव धुकृटिश्वनुरं धुवां ।

कुंचितं रेचितं कर्म सहजं चेति सप्तधा ॥ इत्यभियानान्

6a ण व गी व उ । तदुक्तं—समानता आनता अस्ता रचिता कुंचिता कंचिता चिता ललिता  
च निवृत्ता च सीवा नवाविधा स्मृता. 6b छ सी स वि दि ट्टी उ—तथाहि कान्ता भयानका हास्या  
करुणा अद्भुता रौद्रा वीरा बीभत्सा चेत्यष्टौ रसदृश्यः; स्निग्धा हृष्टा दीना क्रुद्धा नृसा भयान्विता  
जुगुप्सिता चेत्यष्टौ स्थायिभावदृश्यः; स्तान्यांमलिना (?) श्रान्ता सलज्जा ग्लाना शंकिता विषण्णा मुकुला  
अभितसा जिह्वललिता वितर्किता कुंचिता विध्रान्ता विभ्रुता ककिकरा (?) विक्रोसा चस्ता मेदिरा  
चेति षट्त्रिंशद् दृश्यः. 7a अं ति मे त्या दि

शृंगार (?) बीभत्सा हास्यरौद्रभयानकाः ।

करुणाद्भुतशान्ताश्च.....रसा स्मृताः ॥

तत्राष्टौ रसा अंतिमरसवर्जिताः.

## MAHĀPURĀṆA

ज णि य भा व

रनिर्हासश्च शक्तिश्च क्रोधोत्साहो भयं तथा ।

जुगुप्सा विस्मयश्चाष्टौ स्थायिभावाः प्रकीर्तिताः ॥

स्तंभस्तनूरुहोद्देदा(?)दृदः स्वेदवेपथु ।

वैवर्ण्यमश्रु प्रलय इत्यष्टौ सात्त्विकाः स्मृताः ॥

तनूरुहोद्देदो रोमांचः । वेपथुः कंपः, वैवर्ण्यं म्लानता निर्वेदः, म्लानता निर्वेद्गदानिः, शंकाभ्रमधुनिजडता-  
हर्षदैन्योग्राचितात्रामेर्ष्यामर्षगर्वाः स्मृतिमरणमदाः सप्त निद्राविबोधा घ्राडाअस्मारमाह शमनिगलसताज्वेग-  
तर्काविहृच्छव्याव्युन्मानादौ विषादोःसुखयचपलयुतास्त्रिशादनेत्रयश्च (?) । अस्मारः उंमारी(?) । तर्कः  
विमर्शः । उवह्निथ आकारगोपनं युद्धः संबद्धा इति । 8a अ वे त्वा दि अस्मात्पूर्वभविभ्यो विन्दक्षणाः .  
भा वा णु भा व भावानुभावभ्योऽनु पश्चाद्भवतीत्यनुभावाः तच्चतुर्विधा (?) मानो (?) वाग्बुद्धिशरीराश्च य  
दर्शिताः . 9a कुर ण ई स्फुरणानि शरीरगतानि . 10h छ द्रु ण य प ओ ए नृत्योपमहारद्रेतुमाल-  
विशेषश्छद्मकर्मयोगस्तेन The Ms. of T. is illegible at numerous places,  
but as the contents seemed to me to be important I have reproduced them.

### V

[ One day Jasavai, the wife of Risaha, saw in a dream the mount Meru, the sun, the ocean and the entry of the globe into her mouth. She told this dream to Risaha who told her that she would get a son who would be a sovereign ruler. In course of time, Jasavai bore a son who was named Bharaba (Sk. Bharata). As the boy grew the father himself taught him various arts as also the science of government, duties of different castes and classes, and the principles of inter-state relations. Jasavai bore ninety-nine more sons, Vasahasena etc., and one daughter named Bam̐bhī. Suṇandā also bore one son named Bāhubali and one daughter named Sundari. Bharaba himself taught both the daughters the various literary and fine arts. Now once it so happened that there occurred a severe famine which worked a havoc on the people. They came to Risaha and asked for relief. He then taught the people various arts and professions. When he attained the age of twenty lacs of pūrva years, he was put on the throne by king Nābhi. ]

2. 8b छक्कंड वि मेदणि, the six continents of the भारतवर्ष. The भारतवर्ष, according to Jain cosmology is bounded on the North by Himavanta Mountain; right through its centre passes the Veyad̐dha (Sk. Vaitādhya) mountain from east to west; the rivers Gaigā and Sindhu

pass through it from North to South; it is in this way that it is divided into six Khandas or continents. A Cakravartin rules over all these six continents of the भारतवर्ष. 10b अहमिन्द्रु or अहमिन्द्र is a god of a very high class residing in the धैवेयक or अनुत्तर्गवमान heaven.

3. 2 तिद्रुयणवह्जयंकोद्गाहियं, The loss of folds on the belly of Jasavai, as a result of her pregnancy, is here considered by the poet as the wiping off of the marks of victory over the lords of three worlds. It means that the son that is to be born to Jasavai will wipe off all marks of supremacy so far held by kings whom he will subdue.

5. 7a सुहउ कीडुहउ, a small insect ( सुद्रः कीटकः ).

6. 13a चित्तलेप्यसिलवरनरुक्मम्ह, painting, plaster-work ( लेप्य ), sculpture, and wood-work.

7. 2 गिग्थिगि...विमयं पयासए, explains ( to Bharaba ) the subject of governance of his consort, viz, the earth ( गिग्थिगिधरगि ) with mountains standing for her breasts.

8. 12 पडमुवाउ, प्रथमः उपायः, i. e., resolution, resolve.

9. 7a क्रेवा, See for the formation of Potential participles Hemacandra IV. 438. 9a अय निवगिस जव, the goats to be offered in sacrifices are and should be यव corn three years' old. 13a जिणपडिमापूयण, worship of the images of the Jinas. This is clearly an anachronism unless we accept that Risaha means by it not himself but the Jinas of the past. To a Jain his religion has no beginning and there were Jinas in the past.

11. 8b कामुण्णु चउविहु दारणु, the four व्यसन or addictions, viz, woman, gambling, wine and hunting.

12. 1 एकंतरिउ मिनु गिरंरु सत्तु. In the मण्डल or द्वादशराजचक्र, the immediate neighbour is an enemy while the next one is a friend (एकान्तरित मित्रम्, निरन्तरः शत्रुः). The immediate neighbour is often in conflict with him because of the common boundary, while the next one is to be on good terms with him in order that both of them have the middle one as their common enemy. 8b अद्दारहतिथई, the eighteen तीर्थs are:—

सेनापतिर्गणकमन्त्रिपुरोद्दिताश्व र्षणां बलीर्धैवलवैत्तरदण्डनाथाः ।

श्रेष्ठा महर्त्त ईतश्च महर्त्तमान्योर्भैत्यो वदन्ति दश चाष्ट च तीर्थमायाः ॥

—Marginal gloss in K.



## MAHĀPURĀṆA

The वर्णस in the above list are ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य and शूद्र, the बलौघ is the fourfold division of the army, viz., हस्ती, अश्व, रथ and पादात्.

18. 6a अवहंसड i. e., अपभ्रंश which is counted as a distinct language. Note the items which were taught to ladies in those days, or even in the days of the poet.

19. 1-2 समयमह...वाग्निना धृयकमरुमलजुषल परमेसर, O Lord, pair of whose lotus-like feet is washed by water dropped down from the gems in the coronet of Indra. 6a लगनसंभु अण्णु को अम्हहे, who, other than yourself, will be our supporting pillar ?

20. 5-11 पल्लव etc.—This passage gives a long list of the names of the countries or different parts of the भारतवर्ष.

21. 3-5 सेडई etc.—This passage gives the list of several types of towns, villages, cities etc., such as सड, कडवड, मडंव, पट्टण, दोणामुह and संवाहण.

22. 4 वरि उच्छुगसु,—the race was named इस्वाकु because its founder brought to his house the juice of suger-cane for drinking.

## VI

[ One day, while prince Kisaha was enjoying his royal fortune and was engrossed in it, Indra thought of reminding him of the mission that he was expected to fulfil on the earth, viz., the propagation of the Jain faith, and sent a celestial nymph named Nilamjasā to perform a dance before him. She arrived, performed the dance and at the end of it fell down dead. Risaha, on seeing her dead, was filled with horror at the momentariness of the worldly life. ]

2. 3 गियमंति जणं, the porters and peons were regulating the conduct of the people in the court-room. The Kadavaka mentions a large number of things which should not be done in the king's presence.

3. 5a भुंजंतु महि तेसहि गय, King Risaha enjoyed his kingship for sixty three lacs of the pūrva years, and still likes these worldly pleasures and is not disgusted with them.

4. 11-12 पुष्णाउस णीलंजस—]f नीलंजसा who completed her period of life, dances before him and after that falls dead, the event will cause disgust for wordly life in his mind.

5. 4b नाह्यणिहेलणि, to the house of Nābheya, i. e., Risaha, the son of Nābhi. 6b वसिं गु वि पुवरंगु—The technical terms of dancing and music used in this Kāvavaka and the two following are explained in T. as follows :—वी स मि त्या दि—नाटकस्थेह प्रथमप्रस्तावनावतारः पूर्वरंगस्तम्भ च प्रत्याहारोऽवतरणा आधारंभ आश्रवणा गीतविधिरूपस्थापना परिवर्तनं रंगद्वारं चारी महाचारी इत्यादीनि विंशतिरंगानि. 7a ति पु वस्त रु चर्मावनद्धं वाद्यं पुष्करं तन्निविधं उत्तममध्यमजन्यभेदेन. 7b सो ल ह अ क्त्वर उ क ख ग घ ट ट ड ड त थ द ध स र ल ह इति षोडशाक्षरं. 8a च उ म गु आलिप्त-अर्द्धिन-गोमुख-वितस्ति-भेदात् चतुर्मागं; दु ले व णु वामलेपनं ऊर्ध्वलेपनं; उ क्त्वर णु रूपं कृतं परिति भेदो रूपशेषी उच्यन्तेति षट् वाद्यकरणानि; 8b ति य ति ल उ समो श्रोतांगतिः गोपुच्छः चेति त्रियनियुक्तं; ति ल य उ द्रुतमध्यविलंबितास्त्रयो लयाः. 9a ति ग य उ तद्दाम नुतं उच्यते(1)श्रेते त्रीणि गतानि; ति य चा रु समप्रचारं विषमप्रचारश्चेति; ति जो य य रु गुरुसंयोगो लघुसंयोगो गुरुलघुसंयोगश्चेति त्रिसंयोगकरं. 9b ति क रि छ उ गृहीतोऽर्थगृहीतो गृहीतमुक्तश्चेति त्रयः. 10a ति म ज्ज ण उ मायूगी अर्द्धमायूरी कर्मारवी चेति मार्जनकम्; 10b वी सा लं का र स ल न्त्त ण उं अलंक्रियते वाद्यं येस्तेऽलंकाराः प्रहागस्तेः सलक्षणं मनांजं चेति विंशत्यलंकाराः—चित्रः समः विभक्तः छिन्नः छिन्नविद्धः अनुविद्धः विद्धः वाद्यमंश्रयः अनुमृतः प्रतिच्युतः दुर्गः अवकीर्णः बद्धावकीर्णः परिक्षिप्तः एकरूपः नियमान्वितः सार्चाकृतः समेखलः सामवायिकः दृढः चेति. 11a अ द्वा र ह जा इ हि तथाहि—सुद्धा दुक्कणा विषमनिष्कंभितेकरूपा च पार्श्विसमापयस्ता समविषमरुता पिक्कीणा च पर्यवसाने चित्तिकिसंयुक्ता संप्रुता तथांभा विगतक्रम चललिगा वंचितिका चैकवाया चैत्यष्टादशजानभिर्मंडितम्; 12a च च उ दु चाचपुटस्थस्रस्त्रिकलतालप्रवृत्तिहेतुः; चा च उ दु चचपुटश्चतुरमन्वतुःकलतालप्रवृत्तहेतुः. 12b छ पि य पु ते वि षे(1) धिजापुत्रः(1)कीपि मिश्र उभयतालप्रवृत्तिहेतुः; म ण हारि चचपुटीदिस्त्रिकारापि(1)नोद्वः; 13a इ य इत्यादि एतेऽथच म्हादिभिर्वाद्यतालविषयोऽस्त्रिभिरलंकरता. 14a ओ ण द्द उ व ज्ज उ व णि य उ इत्यंभूतं यद्वनद्धं वाद्यं तन्निप्रकारं वर्णितं वामं ऊर्ध्वं आलिङ्गकसंज्ञितं चेति. द्विश्रुतिकाः स्वरो जातो निषादो गंधारश्च त्रिभुवसमश्रुतिसंख्यया त्रिश्रुतिकरूपतो धैवतश्च जलि(1)षिमसममंख्यया चतुःश्रुतिकाः पहपचममध्यमाः. 16 च व ल हिं स्थितमुक्ताभिः; अ द्द हिं अर्धमुक्ताभिः कंरमानस्वरूपाभिः; मु क्ति य हिं वंशसुषिरसंभवगहिताभिः(1); व ता व त्तं गु लि य हिं उकविशेषणाविंशष्टाभिव्यक्तव्यकांगुलिभिः व्यकांगुलि स्थितस्थितांगुलि अव्यकांगुलि.

6. 1a प वि र इ हं इत्यादि—वांशस्वरो जातः; कथंभूते 1b व जि य सु षि रे वादिन. सुषिरे, सु अ त्य सु इ शाश्वताः श्रुतयश्च, 3a थि ये त्यादिनां चतुःश्रुतिकाविस्वगणामुत्पत्तिक्रियां प्रदर्शयति, स्थितमुक्तांगुलिः स्वरो इव; सु अ द्द सु इ चतुःश्रुतिकः. 4a कंरमानयांगुल्या उद्गतस्त्रिश्रुतिकः; 4b मुक्तांगुल्या जातो द्विश्रुतिकः; 5a व त्तं गु ली त्यादिनोत्पत्तिक्रमेण प्रत्येकं चतुःश्रुतिकादीनां नामानि कथयति, व्यकांगुलेः सुषिरोपरिस्थितांगुलेः; 6b साम ण स रं त र स णि य ए सामान्यस्वरत्वज्ञया युक्तः. 7b अ द्द ए मु क्क ए अं गु लि य ए अर्द्धया मुक्तया अंगुल्या; सामान्यसंज्ञितः स्वरो निषादः अंतरसंज्ञितो गंधारः 9a तं ती र णि उ वीणावाद्यं तच्च द्विविधं. 9b णि क्क लु ते प्प वि निष्कलं त्रिपंच. 10a घ णु इत्यादि—यत्नं वाद्यं काम्यनालयुगलादिकं. 10b स मे त्या दि-समं यौगपद्येन हस्तं दृत्वा यत्र रंगे वादितं. 12a उ प्प ण्ण इत्यादि—उत्पद्यमानो हि नादः प्रथमतः उ र ठा णं त र ए उरोलक्षणस्थानकार्षणे उत्ययते ततः कंठे ततः शिगमि. 12b वा वी स वि

## MAHĀPURĀNA

सु इ उ द्विश्रुतिक्रयोः द्वयोः चतस्रः श्रुतयः त्रिश्रुतिक्रयोः षट् चतुःश्रुतिकानां त्रयाणां द्वाविंशतिश्रुतयः ; 13a क म र इ य प मा ण हि क्रमोच्चरितसप्तेश्वरा(१)प्रमाणैर्जद(१); 13b व डुं तु मंद्रमध्यमतारभेदेन यथाक्रमं उरसि कंठे शिरसि च वर्धमानो नादः स्वरः श्रुतिर्मद्रादिरूपतया; 14b सर स त्त सरिगमादिनामानः सरसतः स्वराः सप्त ते सु तेषु सप्तस्वरेषु; दो णि जि गा म द्वैवे च ग्रामौ, षड्जग्रामो मध्यमग्रामश्च; ग्रामः समुदायः. कस्मिन्ग्रामे कियत्यो जातयः संभवतीत्याह 15 सु रे त्यादि सुग्रेः पूज्यः स ज्ज ए षड्जग्रामे; जा इ उ जातयः स त्त प उ त्त उ सप्त प्रयुक्ताः शुद्धाश्रितस्रः, जायते पुष्टिं लभंते स्वरा आभ्य इति जातयः. 16 म जिज्ञ म ए मध्यमे ग्रामे, निस्वः शुद्धा अष्टौ संकीर्णाः.

7. 2a जा इ णि च द्व हं तासु जातिषु निवृद्धानां. 2b ल वस्व वि सु द्व हं गीतप्रयोगविशुद्धानां. 3a अं स हं अंसानां; स उ चा ली सा हि य उ शतं चत्वारिंशदधिकं. 3b ए कु त्त रु तं पि चत्वारिंशदधिकशतं एकौच्छं; प सा हि य उ प्रसाधिताः. तथा हि अष्टादशजानिषु यथाक्रमसंभवमेका द्वौ त्रयश्चत्वारि पंच षट् सप्त चासंभत्तो (१) मिलिता एकौत्तरचत्वारिंशदधिकशतसंख्या भवति. 4b गी य उ गीतयः शुद्धेत्यादिनामानः; पंच उ उ ष णि य उ पंचोत्पन्नाः, किंस्वरूपास्ता इत्याह 5a b अयु(१)भिल्लैः शुद्धाः सूर्यैर्व्यक्तैश्च भिन्नकाः । स्वरेर्हृतनैर्गौडी हृत्नैवेति वेमराः । सर्वासा उक्ति-योगात् गीतिः साधारणा स्मृता. 6a त हिं इत्यादि त्रिह मद्रादिगीनिषु तन्मध्यमत्वेनापरे परिग्रामरागाः त्रिंशद्विंशताः, तत्र शुद्धगीतिसंबंधत्वे सच(१)गणनया सप्तग्रामरागाः भणिताः, भिन्नगीतिसंबंधत्वेन व्रतगणनया पंच वेमरागाः समवेमेने. 7a क मे ण जि कथितशुद्धादिगीतिसंबंधक्रमेण संगृहीताः समदितास्त्रिंशत्. 7b उ डु मा ण क्तुप्रमाणाः षडेव. 8a प हि ला र उ तेषु मध्ये प्रथमः ङकृगः. 8b अ णु वे च्चा स म मा स हिं सा हि उ द्वाद्वाभाषासमन्वितः; उक्तं च-कोलाहला मालववसरा च सोगशृङ्गा च त्रवणोद्गवा च । स्यान्मालवा संधविका च ताना ततः परं पंचमलक्षिता च । भाषा मध्यमदशा च ललिता वेगरीजका । त्रवणा ङकृगस्य द्वादशोताः. 9a अ द्वे त्या दि—आभीरी मागधी सैधवी कौशिकी सोराष्ट्री गौर्जरी दाक्षिणात्या त्रवणा चेत्यदि अष्टभिर्भाषाभिस्महिनाः; 9b विं हि मित्यदि द्वाभ्यामेव विभाषाभ्यां अंधालीभावनिकाभ्यां सविभूषितः. 10a आ वा हि ये त्या दि—आवाहिता आकारिता, मोहिता विह्वलीकृता जगद्विलयास्त्रियः. 10b हिंदोलक-व्यतृणां मालववसरीका गौडी छेवट्टिका कन्नोजी चेत्यभाषा निलयः स्थानं. 11a मा ल वे त्यादि मालवाभ्यां विभाषाभ्याम्. 12a भि ण्णे त्यादि—भिन्नषड्जैःपि शुद्धा त्रवण(१)मागली मेधवी ललिता श्रीकंठी दाक्षिणात्येति सप्तभिः भाषाभिः कलितः युक्तः. 12b क क ह इत्यादि ककुभोऽपि, आभीरी रगती भिन्नपंचमी चेति त्रिभिर्भाषाभिः; सं च लि उ मचलितो युक्तः. 13 सु इ ली ण उं श्रुत्यनुप्रविष्टः. 14 म णे त्या दि मनाहरारामरुति मल्लरुतिः डोवरुतिः गौडरुतिरित्येवमादयः; दा पि य उ दर्शिताः.

8. 1-2 द द्वे त्यादि—दश चतुर्भिर्गुणिताश्रवत्वारिंशत्संख्या समुद्धानां भाषाणां भणिता तथा षडपि विभाषः; 3b ए या र हे त्यादि—एकादशा एकविंशति षड्जादिग्रामत्रये प्रत्येकं, सप्त सप्त मूर्च्छना इत्येकविंशति; मूर्च्छन उच्छ्रयमुन्नतिं लभन्तेश्वरा(१) आभ्य इति मूर्च्छना, उत्तरमंद्रा उत्तरायता रजनी अन्वक्राता सोर्वीरी कालोपनना सुमध्यनाः पौर्वीर्वत्यादयः. 4a ए कु णे त्या दि—स्वरस्य तननात्प्रयोगविस्तारात्तानाः अभिष्टोम-गजसूय-अश्वमेध-वाजपेयादियज्ञनामानस्वहा(१)नेयुण्योत्पन्ने, ते च प्रतिग्रामं मेकोनपंचाशद्रेदाः प्रतिपत्तव्याः, तथा हि समतर्जवीणायां प्रत्येकमेकैकतंत्र्या सप्त सप्त स्वराणां तननात्सप्तसप्तगुणिता एकोनपंचाशदग्रामे तथा मध्यमग्रामादावपि. उक्तं च-सप्त(१)श्रयं च सप्तनामेकैका भजने यतः । अत एकोनपंचाशत्क(१)त्याठे सहोदिताः ॥ 5a सं जो य ता णु तथा हि षड्जग्रामे

सप्तसद्वृत्त(1)नानां षाडवोडंबिना, काकलि अंतरं काकल्यंतरं; स्वसंयोगे सति पंचत्रिसप्त योगताना भवति, एवं मध्यमग्रामेऽपि; 7a ते र हे त्या दि त्रयोदशविधं शीर्षं प्रनर्तितं प्राकृतशीर्षं च(1)ज्यते. 7b तथा षट्त्रिंशद्दृष्टिभिर्युक्तमेतच्च प्रागेव व्याख्यातं. 8a ण व ता र उ नव ताराकमाणि । तदुक्तं—भ्रमणं चलनं पातो बलनं संप्रवेशनं । विवर्तनं समुद्रन निष्कामः प्राकृतं तथा, ॥ 8b अ ह वीत्यांद् अष्टौ परिचिता दर्शनगतयः; उक्तं च-सम्पन्नानुवृत्तं च आलोकित प्रलोकितोहोकितेरवलोकित(1) सा तिर्यक्. (!) 9b णं दे त्यादि—नवनंदास्तत्प्रकारं पुद्ग(1)पश्मपट्टकं दर्शिनं उन्मेषश्च निर्मेषश्च प्रसूनं कुचिनं सवर्तितं सस्फुरित पिहितं सविनाडितं. 10a भू म च मे य भू समभेदा; 10b छविहेत्यादि—तत्र नासा पद्मविधा, उक्तं च-नता मंदा विरुष्टा च सोच्छ्वासा सविकूर्णता । स्वाभाविकी चेति बुधैः षड्विधा नासिकाः स्मृताः ॥ तथा कपोलं षड्वावध-क्षामं फुल्लं च पूर्णं च कंपितं कुर्चनं सममित्यभिधानात्, तथा अथरः षड्विधः; तदुक्तं-विवर्तनं कंपनं च विसर्गो विनिगूहनं । संदृष्टकं समुद्रश्च षट्कर्माप्यधरस्य च ॥ 11a म च वि हुाचि वु उ समचिबुक्तं, च उ मु ह हु रा य कृटन स(1)रागाः स्वाभाविकप्रसन्नश्च रक्तः समर्थानुरोधतः प्रयोजनवशात्. 11b नव गला नव ग्रीवानृत्यानि उक्तलक्षणानि; च उ स ट्टि वि क र ण भा व चतुःषष्टिरपि हस्तभेदाः पताकः कर्तारमिस्रः अर्द्धचंद्रः आगारः शुकतुंडः स्रट्टकामुस्रः पद्मकोशः चतु(1)रध्रमर इत्यादयः. 12a सो ल ह वि हु मर्वहस्ताना षोडशविधं कर्म । तथाहि आकंपनं कर्षणं च उत्कर्षणमथापि च । परिग्रहो नियहश्च आह्वानं नोदनं तथा ॥ सश्लेषश्चदि(1)योगश्च रक्षणं मोक्षणं तथा । छेदनं भेदनं चैव स्फोटनं मोटनं तथा । ताडनं चेति विज्ञेयं ना(1)ज्ञैः कर्मकराभितः; तथाहि सर्वां अपि हस्तप्रचारस्त्रिप्रकारो भवति, तदुक्तं-उत्तानः पार्श्वराश्रवैव तथाधोमुख एव च । हस्तप्रचारस्त्रिविधो नाय-वृत्तसमाश्रयः ॥ च उ वि ह वि सर्वमपि हस्तकर्म चतुर्विधं भवति, उक्तं च-अपचेष्टितमेकं स्यात् उद्धेष्टितमथापरम् । व्यावर्तितं तृतीयं च चतुर्थं परिवर्तितम् ॥ 12b भु उ द ह वि हु वि भुजवृत्तमार्गो दशाविधोऽपि कृतः; उक्तं च-निर्यग ऊर्ध्वगतिश्चैव तथाधोमुख एव च । आविद्धश्च प्रविद्धश्च मंडलः स्वस्तिकं तथा ॥ अजितः क्षुधनश्चैव पृष्ठत-श्रौत ते दश. 13a ऊ रु सर वि हु उरोनृत्यं शरविधं पंचप्रकारं, उक्तं च- नतं समुन्नतं चैव प्रसारितविवर्तितं । तथापसृतमेवं तु पार्श्वकर्मापि पंचधा ॥ 13b पो हु वि पा य द्वि य उ तं ति वि हु-क्षाम सल्लं च पूर्णं च संप्रोक्तमुद्रं त्रिधा । इत्यभिधानात्. 14a क डि य लेत्यादि कटीतलजंघाक्रमकमलानि त्रीण्यपि । तत्र कटी तावत्पंचप्रकारा, तथा हि-छिन्नावनिवृत्ता च रोचता कंपिता तथा । उद्धाहिता चेति कटी नाद्ये वृन्त्येव पंचधा ॥ तथा जंघा पंचधा । उक्तं च-आवर्तिता अंतःक्षिप्तमुद्धाहितमथापि च । परिवृत्तिस्तथा चैव जंघाकर्मापि पंचधा ॥ तथा क म क म ला इ पंचधा । उक्तं च-उद्धाहितः समश्रवैव तथाग्रतलसंचरः । अंचितः कुंचितश्चैव पादः पंचविधः स्मृतः ॥ 15b च ले त्यादि—चला द्वात्रिंशद्गहारा मिता परिच्छिन्ना यत्र करणान्यंगहाराश्च प्रागेव कथितानि. 16a च उ रे य य चत्वारो रेचकाः; तदुक्तं-पादरेचक एकः स्याद्द्वितीयः कटिरेचकः । तृतीयः कर(1)स्वस्थस्य श्रियायां च चतुर्थकः ॥ 16b स त्ता र ह पिंडी बंध कय-एश्वरी वा(1)ज्जं भोगिनी सिंहवाहिनी ऐगवती मान्मथी पद्मा पिंडिन्यादि सप्तदश पिंडीनां बंधाः कृताः. 17a चा रि उ सो ल ह दु य सं क्षि य उ चार्थः षोडश द्विकसंख्या द्वात्रिंशत्संख्याः. 18a श्री स वि मंड ल ई प या सि य ई अतिक्रान्तं विचित्रं ललितं संचरं अललातकं आक्रान्तं आकाशगामि इत्याद् संचारिभर्तवैः स्थायिभिश्च प्रागुक्तलक्षणैरुद्धृतेरनेकैर्नृत्यति.

## MAHĀPURĀNA

### VII.

[ The death of Nīlamjāsā brought about a change in Kisaha's outlook of the world. He thought that everything in the universe was impermanent, momentary, helpless, solitary ; the soul has to pass through a series of births and deaths, and experience sufferings, commits sins and thus prolongs his wanderings in saṃsāra. If the soul therefore wants to secure his good, he should first stop doing sinful activities so that his stock of already acquired acts does not increase, and he should practise penance in order to exhaust the stock of old acts. Thus thinking, Kisaha decided to renounce the worldly life. Gods at this juncture arrived there to encourage him in his resolve and requested him to propagate the Jain doctrine. Kisaha then put his son Bharata on the throne of Ayodhya, gave Poyanapura to Bahubali, and sat in a palanquin to leave the worldly life. This event was celebrated by gods with their presence on the earth. Kisaha was followed by his aged parents and by his wives and his ninety-nine sons. He then went to the forest, sat on a slab of stone, and pulled out five handfuls of hair. The hair was received by Indra in a jewelled plate and were disbursed in the milk-ocean. He then took the five great vows and became a naked monk. ]

1. 11 नृयदि लवणु जसु उत्तारज्जड, a person over whom salt is passed by women, i. e., one who is so much loved by women, is taken down on a grass-bed on his death. It refers to the practice of passing salt over the body of a person that is dear to them by women in the house. It also refers to the practice of taking down the dead body from its usual bed and of placing it on straw.

2. 6a पण्णारहमेत्तुम्भव, born in fifteen कर्मभूमि, i. e., five in भारतवर्ष, five in ऐरावतवर्ष, and five in निदह. It is in one of the कर्मभूमि that a man is able to attain any state after death as a result of his acts. 12 तिचरणु चरित्ति, activities of mind, body and speech ( त्रिकरणं चरित्रं ).

7. 11-12 पसु फाडिषि etc.—If a person, i. e., a Brahmin, can obtain emancipation by eating the flesh of animals and by drinking wine, what is the use of Dharma ? Wait upon a hunter ( who does exactly the same things. )

10. 8a जाउ मसाणहु ते मणुयत्तणु—Let this human life go to the burial place, as we say in Marathi मसणात जावो, i. e., I care a straw for the human life.

11. 1a तिणयारसंठाणय, the world is divided into three sections each having a different shape ; the region of demons and creatures in hell has the shape of an earthen plate ( शराव ) turned downwards : the region of human beings and lower animals has the shape of a वज्रमणि ; the region of gods has the shape of a मृदङ्ग. 9a मोक्षु वि आयवत्तर्मेणह्यरु, the place or region for emancipated souls has the shape of an umbrella.

12. 4a पानुल्लियानुल्लहिं, by beams made of ribs.

13. 1a णाणावरणित पचपयाउ—Acts which obscure knowledge are of five types, viz., मतिज्ञानावरणीय, श्रुतज्ञानावरणीय, अवधिज्ञानावरणीय, मनःपयायज्ञानावरणीय and केवलज्ञानावरणीय. See उत्तराध्ययनसूत्र xxxiii. 4. 5a णवविहदंसणु, acts which obscure दर्शन fall under nine heads:—निद्रा, निद्रानिद्रा ( deep sleep ), प्रचला ( drowsiness ), प्रचलाप्रचला ( heavy drowsiness ), म्यानर्धि ( somnambulism ), चक्षुर्दर्शनावरणीय, अचक्षुर्दर्शनावरणीय, अवधिदर्शनावरणीय and केवलदर्शनावरणीय. See उत्तराध्ययन, xxxiii. 5-6. For other divisions of कर्म see the same text and Appendix II in Miss Helen Johnson's translation of Triṣasti. 13 तिगइ i. e., पाणियुका, लाङ्गली and गाम्त्रिका, straight, curved and zigzag movements.

14. 12-13 पाहेयामवदादृ etc.—If a person stops all sources of sin and conducts himself properly, new acts do not enter the soul, and those acts which long remained with it are destroyed by bodily sufferings as they do not get any nourishment.

15. 2b होमि दिर्यको, I shall be a naked monk. The emphatic and express mention of this term here and also in 26. 15b below and at several other places shows that the work is written from the point of view of the Digambara Jains. 10b द्वाजावतिमंजाविण्णासहिं by particular permutations and combinations of morsels of food obtained by begging. It refers to the various भिक्षुप्रतिमास in which food is regulated on the basis of counting the दत्त or dole obtained or the morsels to be eaten. See below 16. 3a.

16. 12-13 जिह हयणिज्झरणे etc.—Just as a pond is dried up by the rays of the sun, and also when water already therein is drained and the influx of it is stopped by building dams (यद्धे वरणे), in the same way acts

## MAHĀPURĀNA

done in various births are exhausted by the control of senses ( which prevents the influx of sinful acts ) and by the practice of penance ( prescribed for a monk ).

19. 1b अणुवेकस्मिन्, reflections of twelve types on the momentariness, impurity etc. see तत्त्वार्थाधिगम, IX. 7.

21. 4a सोणदियहु, to the son of सुणन्दा, i. e. बाहुबलि. सुणन्दा is the second wife of रिसह.

24. 7b जसवइणदउ, i. e., जसवई and सुणन्दा, the two wives of रिसह.

26. 16 The passage gives the date of the निष्क्रमण which is the ninth day of the dark half of Caitra with उत्तराषाढा नक्षत्र.

## VIII.

[ Risaha thereafter began to practise the life of a Jain monk and observe the rules of conduct prescribed for him. Nami and Vinami, sons of the kings of Kaccha and Mahakaccha and his brothers-in-law, came to him in the forest, and after having greeted him, said that Risaha did not assign to them even a small portion of the earth when he divided it among his sons. Risaha, of course, as a monk, could not make any reply as he had completely dissociated himself from the affairs of the world. The king of snakes at this juncture felt a tremor and learnt by his अवधिज्ञान how Risaha was placed in a difficult situation. He therefore came to him, saw Nami and Vinami standing before him and said to them that Risaha had told him ( the king of snakes ) before he ( Risaha ) renounced the worldly life, that when they would come to him and ask for a portion of earth, the king of snakes should assign to them the southern and northern slopes, belonging to Vidyādhara, of the Vaitadhya mountain. The king of snakes then showed to them the various cities situated on the slopes, saved Risaha from the awkward situation and went home. ]

1. 9b मयसिंभिरहं, मदस्य सैन्यानि, T. I think that सिंभिर comes from सिंभिर, camp of the army, but is loosely used to designate army. 12b सुइवडणी, consisting of pure vows ( शुचिमतयुक्ता ). 19 थिउ सग्गु etc.—He stood, standing as if he was the path leading to heaven as also to emancipation ( य + अपवग्गु ).

2. 1-4 विसयवसा etc.—Those great warriors who took vows of asceticism simultaneously with Rishaba, were sinking (भग्ना) in a few days' time as they were unable to bear unpleasant contacts, were frightened by terrific tigers, lions, and Sarabhas, and were overcome by tortures of thirst and hunger.

6. 7b सालरहि, by his brothers-in-law. 9a वर नेण विमुक्क वरत्यकम्मु, but he has left all activities of a householder. 12a कूम्भुदि, a handful of cooked rice.

7. From line 6 to 20 note the दामयमक or शृङ्खलायमक. The sets of a large number of दुवईs, constituting a kadavaka, is not rare in this work, although normally दुवई forms only its opening couplet. The passage describes the commotion caused by the coming out from the nether world of the king of snakes. 26 जीहहि दमसयसंवरहि, with his thousand (tentimes hundred) tongues. P reads दुमहससंवरहि which means two thousand tongues as the tongues of snakes are cut into two when they licked nectar lying on the darbha grass on the occasion of its distribution.

11. 8b रसवाड व मई णिवडियमुवण्ण, like the alchemist who always attempts to prepare gold out of baser metals, the mount वेयडू always showed gold.

12. 15b मय दूयत्तण हलिणिहि करणि, parrots act as messengers of ploughing women to carry their love-messages to their lovers.

13. 9b The passage gives the list of fifty cities situated on the right side of वेयडू which are assigned to नमि.

14. 5a The passage gives the list of cities situated on the left hand side of वेयडू which were assigned to भेनमि. The cities are enumerated from west to east ( वारुणामामुहाओ ).

## IX.

[ Rishaba then spent six months in meditation, and controlled the activities of his mind completely. He considered that reduction of food was one of the best means of attaining purity. He therefore decided to accept food which would be free from forty-six flaws, and pure from nine points of view. The principle of his life was that food exhausts



## MAHAPURĀNA

the body, this reduction of food constitutes penance, this penance controls senses, the control of senses exhausts all acts which event leads to emancipation. He therefore practised these rules of life, and while wandering on the earth came to Gayapura where king Soma-prabha, the son of Bāhubali, was ruling. His younger brother, Seyamsa, saw in a dream the previous night objects like sun, moon etc. and told this dream to his brother. The fruit of this dream was that some great person was to visit his house. In fact Risaha did arrive the next day to his house to break his fast. Prince Seyamsa thereupon offered him reception and a jar of sugar-cane juice, which Risaha accepted. There was a divine voice to proclaim "what a noble gift!". Risaha thereafter proceeded with his wanderings and in due course obtained the fourth knowledge called Manapajjavauāna, knowledge by which minds of others are known. He then proceeded to Nandanavana, and under a banyan tree acquired the Gumasthānas, and in due course attained kevalajñāna by which he was able to see the entire universe. Gods arrived at this juncture to celebrate the event, and built up a samavasaraṇa on the occasion. All the thirty-two Indras graced it with their presence. They then offered prayers to Risaha.]

1. 7 उञ्जित आह्नकम्मुद्गमर्दि, food which is to be offered to Jain monks should be free from flaws such as आघाकर्म, which the marginal note explains as नीचं कर्म स्वयंपाकादिकम्, but elsewhere it is explained as आवानं भ्रात्रा साधुनिमित्तं चेतसः प्रणिधानं तस्याः कर्म पाकादिक्रिया, तद्योगाद् भक्षाद्यपि आघाकर्म. 15a पाणिपत्ति, in the plate, viz., the palm. 17 एण, these men, i. e., his followers who became monks along with him.

3. 3a सत्सिण्हाणुजम्भिणा, by the younger brother of सत्सिण्ह, i. e., सोमप्रभ, the son of बाहुबलि. 3b भवानुबद्धधम्मिणा, by one who stored meritorious deeds in the previous births.

4. 15b भुवणिवंधु, भुजनिचन्धः, arms.

5. 5a माहह तुम्हहं मडणि दिण्णी, by whom the earth was given to Bharata and to you, i. e., to Somaprabha and Sreyāmsa, of course through their father Bahubali.

6. 2 सिरिमइवज्जजंचजम्मंतरावचारे, the incidents in the sixth previous birth of Risaha when he was born as वज्जजंच and his consort was सिरिमई. At that time सेचंत was the charioteer and knew that वज्जजंच ( or वज्जनाम )

NOTES, IX. 15

was destined to be the first तथिर्कर. For details see Hemacandra, Triṣaṣṭi, III. 284-287 and also this work XXIV.

7. 16a सद्गुहाणु णव पंचहुं सत्तहुं, i. e. faith in nine पदार्थs, five अस्तिकायs and seven तत्त्वs. 18a देसचरित्तालंकिउ, marked by a partial observance of the Vows, as in the case of a householder who takes the अणुव्रतs and not the महाव्रतs.

9. 2 दाययदेज्जपत्तववहारसाग्मग्ग, principles in essence of the classification of the donor ( दायय, दायक ), the gift ( देज्ज, देय ) and the receiver ( पत्त, पात्र ). 11-12असणेण तणु etc.—food helps the body to practise penance, penance produces forbearance, forbearance results in the removal of impurities, the removal brings about kevalajñāna, which in its turn secures bliss. Compare for the objects of begging alms :—

वेयण वेयावच्चे इरियटाए य संजमटाए ।

तह पाणवत्तियाए छट्ठं पुण धम्मचिन्ताए ॥

—पिण्डनिर्युक्ति, 662

11. 8-9 तहु दिवसहु etc, the day on which Seyamsa served alms to Kusaha was the third day of the bright half of वैशाख, which day, even now, is called अक्षय्यनृतीया. The passage explains the Jain view why the day is so called.

12. 7a पंचवीसवयमायउ, the mothers of the vows which are the twenty-five भावनाs. Compare तत्त्वार्थाधिगमसूत्र, VII. 4-8.

15. 10b अप्पमात्ति गुणठाणि व लग्गउ, he stuck to अममत्तगुणस्थान which is the seventh गुणस्थान. This गुणस्थान enables the monk to possess 18000 शिल्पाङ्कs. The monk is engaged in धर्मध्यान and there is a beginning of शुक्लध्यान. 11b सणि अउव्वु आरूढउ तावहिं, he then rose to अपूर्वकरणगुणस्थान which is the eighth. शुक्लध्यान is now fully developed here. 13b अणियट्टिहि छत्तीस जि जित्तउ, in the अनिवृत्तिबादरगुणस्थान, which is the ninth, he conquered the thirty-six kinds of कर्म. 14a सुहुमसंपगायउ पावेप्पिणु, having acquired the सूहमसंपगायगुणस्थान which is the tenth, he destroyed the संज्वलनलोभ. 15a पुणु जायउ उवसंतकसायउ, he then pacified his passions. उपशान्तमोह is the eleventh गुणस्थान. 16 क्षीणकसायचरिउ पडिवण्णउ, he reached the क्षीणकसाय or क्षीणमोह गुणस्थान which is the twelfth where the second शुक्लध्यान begins. In this गुणस्थान the monk destroys sixteen कर्मप्रकृतिस, viz., five ज्ञानावरणीय, six out of nine दर्शनावरणीय and five अन्तराय. At this stage he attains केवलज्ञान, and becomes a सयोगिकेवली which is the thirteenth गुणस्थान.

## MAHĀPURĀNA

20. 7a अक्षयधारिणि, अक्षयानां सिद्धानां धार्मिका सिद्धिवधुः, T. 14b धणए समवसरणु किउ तावहिं, at that time Kubera built a meeting place for gods etc. who arrived there to celebrate the attainment of Kevalajñāna by Risaha.

### X.

[ Indra and other gods glorified Jina on his attaining the Kevalajñāna. Jina also possessed twenty-four more atisāyas or excellences as a result of this knowledge. At this juncture a report was brought to Bharata that his father obtained the kevala, that the cakraratna has made its appearance in his armoury and that his queen got a son.— King Bharata was hesitating for a moment whether he should first see his son, or cakra or father, but ultimately decided to see his father, went to him and praised him and thereafter returned home.

On seeing that the Jina has obtained the kevala, pious persons, desirous of attaining emancipation from samsara went to him. To them the Jina began to describe categories of Jiva and Ajīva. He first explained the six pajjattis, i. e., faculties to develop, then the lower species of animals, then the lower animals with five senses, then the number of dvīpas and samudras and finally the dimensions of their bodies.]

2. 3 अक्षय दह etc. The Jina had already ten atisāyas from his birth such as निःश्वेदत्व etc., but when he attained केवल, he got twenty-four more as a result of his knowledge. They are described here and in the following kaḍavaka.

4. 3a दहकुमार i. e., ten gods belonging to the class of भवनपनि.

5. 1-8 The Jina is here described in terms of the epithets of god Śiva but is shown superior to him, e. g. वामाविमुक्क, god Śiva is always associated with his consort, but the Jina is devoid of her. 9-13. Similarly the Jina is shown superior to Brahmā, and in 14-17 to Viṣṇu.

9. 4a चउरामिलक्खजोगिहिं पग्गिममत्ति, तथा नित्येतरनिगादयोः पृथिव्यमेजोवायुकायानां च प्रत्येकं सप्त योनिलक्षाणि, वनस्पतिकायिकानां दश, द्वित्रिचतुर्गिन्द्रियाणां प्रत्येकं द्वे द्वे, सुरनगरक-तिरश्चां चत्वारि, मनुष्याणां चतुर्दशेति, तदुक्तम्—

शिञ्जेदरधादु सत्त य तरु दम विचल्लिदिएसु लब्बेव ।  
सुरणरयनिगिय चदुगे चाद्वस मणुए मदसहस्स ॥ T.

## NOTES, XI 10

6-7 आहार...पञ्चति ति भर्गति एत्यु. The passage defines पर्याप्ति as a faculty which helps the development. These पर्याप्तिs are six, viz. आहार, eating food and digesting it; सरिर, body, इन्द्रिय, sense-organs; आणापाण, breathing; भासा, speech, and मन, mind.

19. 11 सद्गुणगोचरसमुद्भवहं, of those that spring from the subtle गुणगोचर or निर्गोद; this निर्गोद is a physical body with infinite lives or souls.

## XI

[ The Jina proceeds further to define the functions of different sense-organs and creatures that possess them. He then mentions the duration of their life. After a general description of the Geography of the Jambūdvīpa and other dvīpas with their rivers and mountains and antaradvīpas, the Jina proceeds to describe the human species with their characteristics and capacities. He then goes on to detail the heavenly regions and gods. He explains the fourteen Guṇasthānas, the various prakṛtis of karma, the characteristics of the Siddhas and their happiness. On hearing the discourse the eighty-four lacs of princes renounced the worldly life and became monks who were then called his Gaṇadhara. Similarly Bāmbhī and Sundarī became the first nuns of the Order. Only Maricī remained unenlightened. The first lay disciple was Suyakitti and the lady disciple was Piyāmvayā or Priyāmvadā. The first disciple to obtain emancipation was Anantavīra. ]

6. 6b वयगुणियउ, multiplied by वय i. e. five, because there are five vows.

8. 9-10 महर्गादि etc. The passage gives the names of the ten कल्पवृक्षs.

9. 2b गिरुह, परामर्शश्न्याः, 'I., incapable of guessing or imagination.

10. 4 सावयवयहलेण सोलहमउ समु लह माणुसु, a human being obtains the sixteenth heaven as a result of his vows of a Śrāvaka. The sixteen heavens are: सौधर्म, ऐशान, सानकुमार, महिन्द्र, ब्रह्मा, ब्रह्मोत्तर, लान्तव, कापिष्ठ, शुक्र, महाशुक्र, शतार, सङ्कार, आनत, माणत, आरण and अच्युत. According to the Śvetāmbaras the number of heavens is twelve, which number they obtain by dropping from the above list ब्रह्मोत्तर, कापिष्ठ, शुक्र and शतार.

## MAHĀPURĀṆA

11. 10 राम उडुगह etc. The passage says that the nine बलदेवs or रामs are destined to obtain heavens while the nine वासुदेवs are destined to go to hells.

17. 8b चंगउ कउलु तुज्जु वक्खाणइ, the creatures in hell are made to drink as wine hot liquid juice of metals like copper. When they are so made to drink it, the keepers of hell say to them ironically that they were well taught by the Kāpālikas not to observe the vows and as they followed their advice they suffer the miseries in hell.

22. 1a अदकविट्टसग्गिंसंठाणइं, the shape of the heavenly abodes resembles the कपित्थ fruit cut into two.

25. 12 पडिचार, attendance, service, or cure.

26. 3b अनुलसोक्खु णिह्लहु अहमिंदहु, all अहमिन्द्रs enjoy happiness for which there is no parallel.

29. 8-15 मग्गणठाणइं चोदुसभेयइं etc. The passage gives the list of fourteen Guṇasthānas. They are:—मिथ्यात्व, सात्त्वादनसम्यग्दृष्टि, ( ससण of our text ) सम्यग्मिथ्यादृष्टि ( मीसु of our text ), अविगतिसम्यग्दृष्टि, देशविगति ( विगयाविउ of our text ), प्रमत्त, अप्रमत्त, अपूर्वकरण ( अउच्चउ of our text ), अनिवृत्तिवाद ( अणियत्ति of our text ), सूक्ष्मसंपराय ( मुट्टमराउ of our text ), उपशान्नमोह ( उवमंतु of our text ), क्षीणमोह ( परिष्णीणकमाय of our text ), सयोगिकेवलि ( सजोइणिण of our text ), and अयोगिकेवलि ( अजोइ of our text ). For details see Miss Johnson's Trisasti Appendix III. Pages 429-436.

32. 5b अइयालीसउं सउ, i. e. one hundred and thirty-eight प्रकारतिस of कर्म. In the Guṇasthānas from number four to seven, one hundred and thirty-eight कर्मप्रकारतिस are destroyed. They are: ज्ञानावरणीय 5, दर्शनावरणीय 9, वेदनीय 2, मोहनीय 21, आयुः 3 ( i. e. नारक, तिर्यक् and देव ), नाम 93, गात्र 2, and अन्तराय 5. The total of these comes to 138 as stated above. 11a अहमपुहईं वट्ठि, i. e., on the सिद्धभूमि or सिद्धशिला.

35. 12b एक्कु मरीइ णेय पडिबुडउ, only मरीचि who is the son of भरत and grandson of ऋषभ, was not enlightened as he was overcome by दर्शनावरणीयकर्म and मोहनीयकर्म. The Śvetāmbara version says that he, by his boasting and pride, was not fit to obtain सम्यक्त्व. See Hemacandra, Trisasti, VI. 385-390.

XII.

[ Now Bharata started on a campaign for the conquest of the six continents of the earth or Bhāratavarṣa. In the season of autumn, when the sky was clear and the roads dry, he saluted the holy beings and after going round the cakra, made some gifts to the needy and the poor. He consulted his ministers, took a huge army and, led by the cakra, proceeded to the eastern direction. After crossing the Ganges he went to the shore of the eastern ocean and wanted to conquer the Māgadha Tīrtha. He first observed a fast and then took his bow and discharged the arrow in the direction of that region. The arrow was dropped down in the house of the king who was very much enraged at its sight. He was however pacified by his minister by saying that it was no use thinking of waging war against a Cakravartin, that Bharata was the Cakravartin of the Bhāratavarṣa and that it would be well for all to pay tribute to him and to accept his sovereignty. The king of Magadha Tīrtha did accordingly. ]

1. 3a छुडु छुडु, immediately, quickly. 15-16 सार्यमयलंछणु etc. If the autumnal moon that pleases the heart of men by its lustre, had not been spotted or spoiled by the deer-mark, I would have given it ( this very moon ) as the simile, i. e., I would have compared, the fame of the Jina to it ( the moon )

5. 30 साडी णं हिमवंतहो, the river Ganges looked like the upper garment of the mount Himavat. The next three Kadavakas contain a fine description of the river.

12. 12 खंभुद्धरियडिंभया, the Kirāta chiefs carried their children on their shoulders as is the custom with them.

14. 12 णत्थि सहवाटु ओसटु, there is no cure for nature. Compare proverbs like स्वभावास औषध नार्हा in Marathi.

19. 2a विविह्णिहिसरासु, to the master of various Nidhis or treasures. The Nidhis are nine in number and their names are:—नैसर्प, पाण्डुक, पिङ्गल, सर्वरत्नक, महापय, काल, महाकाल, माणव and संसक. For the functions of these Nidhis see Hemacandra, Triṣaṣṭi, IV. 574-782 and also below XVIII. 15. 6-10. 2b गियकालवट्टसंधियसरासु, to one who has fixed an arrow

## MAHĀPURĀṆA

to his bow named कालवृत् or कालवृष्ट. Miss Johnson's note ( see page 223 of her Tran. of Trisasti ) on this word is not justified in view of this evidence which is quite independent of Hemacandra. 7b तो तुम्हें नउ अम्हें मि देव, my lord, in that case there will remain neither we nor you. Compare तुम्हीही नाही आणि आम्हीही नाही in Marathi.

### XIII.

[ King Bharata then proceeded to the South and arrived at the entrance to the region belonging to Varataṇu ( of Varadāma Tirtha ). He again performed a fast, and after it discharged an arrow which fell in the house of Varataṇu. King Varataṇu immediately came to Bharata with a tribute and accepted him as his sovereign. Thereupon Bharata proceeded towards the west, came to the entrance of the river Sindhu. There too he practised a fast, and having penetrated the Lavanāsamudra, discharged an arrow at the king of Prabhāsa Tirtha. The king arrived and accepted Bharata as his sovereign. Bharata thereafter conquered different countries such as Mālava etc., and thus established his rule over the entire Aryan region. Thereafter Bharata proceeded to Vijayārdha or Vaitādhya mountain to complete his conquest of the remaining three continents or Khaṇḍas. ]

1. 4a सिमिं समुल्लर, the camp of the army is making rapid movements. 23 वजयंतिणियदे, in the neighbourhood of वैजयन्ती, i. e., a narrow strip of water or channel of the sea through which access to the sea is possible.

2. 13 द्विकवाडं विहडिवि थकं, the gates of different dvīpas or islands in the लवणसमुद्र stood opened before him, i. e., as soon as Bharata recollected the holy chant, it was certain that his enemies would be defeated and the dvīpas conquered.

4. 3a सहमंडवि वरतणुहि, in the court-room of वरतणु, the king of वरदात्मतीर्थ. Hemacandra does not mention the name of the king in his Trisasti.

9. 20 पहासें, by the king of the Prabhāsa Tirtha, situated at the confluence of the river Sindhu and the sea.

## NOTES, XIV. 1

10. 1a सुरसिंधुसरिहि देहलिय धरिबि, i. e., regions standing between the Ganges (सुरसरि) on the east and the Sindhu on the west. 5a अज्जसंहु, the continents where the Aryans live. 14a विजयद्रुह संमुहु, towards the विजयार्ध mountain. This is another name of mountain Vaitāḍhya as can be seen from lines 24-25 below where it is said that the mountain विजय divides the earth into three Khandas on either side and crosses the continent from east to west.

## XIV.

[ After having conquered the three southern continents King Bharata came to Vaitāḍhya and encamped there. A god arrived there and requested him to strike the opening of a cave in the mountain so that he would obtain passage through it to the other side. Bharata then ordered his general to do accordingly. When he struck it the cave burst open causing great excitement among its residents. The guardian deity of the mountain came out with presents to Bharata who stayed there for six months. He then directed his disc to proceed through the cave and the army to follow it, but it was very difficult to pass through it because of darkness. The general of the army then took the Kāgani gem and wrote out on the walls of the cave the sun and the moon. With their light the army proceeded further and came to the region of snakes or Nāgas. Two rivers stood on the way of the army but the Sthapati or the engineer prepared a bridge or dam and the army went further. Āvarta and Kirāta, two Mleccha kings, finding that their region was invaded, invoked the aid of the king of the Nāgas called Meghamukha (Clouds in the Mouth), who began to pour down rain over the army continuously for day and night. The priest of Bharata brought to the notice of the king how the army was troubled by heavy rain, when he asked his general to use the Carma gem to act as an umbrella for the whole army. The army then attacked Āvarta and Kirāta who then offered tribute to Bharata. Bharata then proceeded towards Himavanta mountain along the course of the river Sindhu, the guardian deity of which offered him a wreath of flowers.]

1. 12b जसवइपुत्ते पेसणु अक्सिउ, the son of Jasavai, i. e. king Bharata, then gave orders to his general who is one of the fourteen gems of a Cakravartin.



## MAHAPURĀNA

2. Note that the four lines of the Daṇḍaka have a दामयमक.

3. 5b तग्निर्दिणामो, bearing the name of that mountain, viz. विजयार्थ. 26 आरासयकुण्डियु, sparkling with a hundred spokes.

5. 3 इय चित्तिवि etc. The general then took up the कागणि gem, and with it wrote out the moon and the sun.

6. 8b सविष्णाणिणा संकमेणं कर्णं, with the help of a dam (संकम, संकम) or bridge built by the clever engineer, i. e., स्थपतिग्ल.

### \* XV.

[Thereafter Bharata proceeded along the Himavanta mountain. Sitting on a seat of darbha grass he observed a fast and at the end discharged his arrow at the guardian deity of that mountain. The deity at first was inclined to wage war with the warrior who discharged the arrow, but on reading the name of Bharata decided to pay tribute to him. He came to Bharata and offered him presents. Bharata also, in return, made some presents to him and sent him away. Proceeding further Bharata came to Vṛṣabha Mountain. He found that all the four sides of the mountain were filled with names of the kings of the past and there was hardly any space there for Bharata to write out his name. He however wrote his name there and thus completed his conquest of the six continents of the Bhāratavarṣa. Gods praised him on the occasion. He proceeded further along the foot of the mountain Himavanta and in due course arrived on the banks of the Ganges. The deity of the Ganges then appeared before Bharata, bathed him with her waters, offered him presents by way of tribute and was then sent away duly honoured by him in return. He then came to the cave Timisā of the Vaitādhya mountain and asked his general to strike open its gates as before and halted there for six months. God Nattamāli who used to stay there, came and paid tributes to Bharata. The cave however did not become passable to Bharata, when his ministers told him that his maternal uncles, Nami and Vinami, lived on the slopes of the mountain as lords of the Vidyādharas, and it was on their account that Bharata could not proceed further till they allowed him passage. Bharata then sent messengers to them who told them to pay tribute to Bharata, if not as kings, at least as his relatives. Both of them

## NOTES, XV. 22

agreed to do this and paid homage to Bharata. The Kāgaṇi gem then produced light with the help of which the army was able to proceed. Then Bharata came to the mountain Kailāsa where the Jina, his father, was practising penance. On seeing him he offered him prayers. ]

2. 11b वङ्माहटाणु, a posture in which left knee is placed on the ground and the right knee is half bent with its top up. This posture enables the archer to discharge the bow with the greatest possible force.

4. 9b परिच्छेयवनाई, well-defined, clearly written, readable. 16a जो जियइ सो जियइ etc. he who lives under or abides by the command (of Bharata) (alone) can live, the other will surely die.

6. 15 वसुमड सेदुलिय, the earth is like a wanton lady who would not mind going with the father and after him with the son.

7. 12b को एम समंकि पाउं थवइ, who will, like you, put his name, i. e., write his name, on the moon? It was considered to be the highest glory to write one's name on the moon. 18 तुज्जु समाण तुहु, you are like yourself, i. e., there is nobody who is like yourself.

12. 5-14 The passage compares the river, सरि, and the बल or army, both called by a common name बाहिणी, by a series of expressions bringing out their common characteristics

13. 2b तिमिसहि दुग्गमहे, तिमिसा or तिमिसा is a dark cave through which Bharata had to pass along with his army.

15. 6b धरणेण, by धग्ग, the king of snakes who gave on behalf of ऋषभ, the towns to नमि and विनमि.

17. 7b अम्हं पुणु दइयंबरिय गइ, to us there will be the mode of life peculiar to sky-clad monks. The expression दइयंबरिय indicates the sectarian attitude of the present work along with several other similar expressions like sixteen heavens.

22. 10 महिहर महिहरहु etc. the mountain (महिहर, महीधर) certainly observes all formalities towards a king (महिरहु).

## MAHĀPURĀṆA

### XVI.

[ Having saluted the Jina, Bharata got down from the Kailāsa mountain and then proceeded in the direction of Ayodhyā, and having crossed various countries he came to gates of the city. The disc or Cakra however did not enter the city but stood outside it. His priest then told him that it did not enter the town because Bāhubali, his younger brother, was not yet conquered and thus his conquest of the world remained still incomplete. Bāhubali was very strong and might even defeat Bharata, but he kept quiet so long. Similarly his other brothers also did not pay tribute to him. On hearing this Bharata got angry and sent messengers to his brothers to accept his sovereignty. They declined to do that but went to Kailāsa mountain and become monks. Bāhubali on the other hand would not accept the sovereignty of his brother and challenged Bharata to fight with him ].

1. 2 साकेयद्दु संग्रह, towards Sāketa, i. e. Ayodhyā, of which it is another name. See Geographical Dictionary of Nundo Lal Dey. 12a कुंकुमेण छडउल्लउ, sprinkling with water mixed with saffron. छडउल्लउ is a Deśī word. Compare सडा in Marathi. 19 सट्टिहिं वगिससद्दसहिं, after sixty thousand years which was the period taken by Bharata for his conquest of the world.

4. 10 अज्ज वि ते etc., in as much as they are not yet won, the cakra does not enter the town. The idea is that the disc cannot enter the town unless the conquest is complete.

6. 12a किं किं वणिणणं कंदुप्ये, how can one describe (fully) god of love or Cupid? Bāhubali, the son of Kisaha, looked like god of love and the poet says it is not possible to do justice to his beauty by a description.

7. 11-11 जहं जम्मजरामरणहं हरहं etc.—we shall pay homage to King Bharata if he can ward off birth, oldage and death from us, if he can save us from birth in fourfold species or from saṃsāra.

11. 7b बुद्धसंगमु, i. e., बुधसंगमः, company of the wise. Note the appearance of र्फ in the word as sanctioned by Hemacandra, IV. 399.

## NOTES, XVII 2

18. 12a काउ कंदलावलिहि न विसउ, let not the crow cry on the skulls of your head. The crying of a crow over the head is considered as a sign of approaching death. 13a देहि कपु, pay tribute or homage to Bharata.

21. 4a जो बलवन्तु चोर सो राजउ, he becomes a king who is the strongest or most powerful thief. A successful thief becomes a king while an unsuccessful one is called a robber or traitor.

24. 14 धवलाइं नि गिरु धवलाईं, on the sandy banks of the Ganges the wings of swans and cheek of ladies away from their lovers, which are already white, became whiter when bathed in the rays of the moon.

## XVII.

[ Bharata then declared that if he does not kill Bāhubali because it would be an offence to his father, he would hold him firm as an elephant is held in chains. The armies of both Bharata and Bāhubali met and trumpets blown and drums beaten, when Bāhubali said to his ministers that he would not move a step from his place but would stop the progress of Bharata's army. When their armies were about to strike, the ministers stood between them and adjured them not to discharge an arrow, and then requested both Bharata and Bāhubali not to engage themselves into a war which would lead to the destruction of poor soldiers, but that they should fight with each other in three ways, viz., they should fix their gaze on each other so that none would move his eye-lashes, that they should strike each other with water, and that they should go in for a wrestling match till one holds or weighs the other on his arms. Both of them agreed to fight accordingly. But in all the three forms of fight Bāhubali came out victorious. When Bharata was lifted up by Bāhubali, he thought of his cakra which immediately went round Bāhubali and stood by the right hand side of Bharata. Bāhubali thereupon dropped his brother Bharata on the ground. ]

1. 2 गंदागंदणहो, of the son of गंदा, i. e., सुगंदा, i. e., बाहुबलि.

2. 9b पडिवक्खणाहि, with the lord or prominent member of your enemy. 10 ऊणेण हएण etc. There is no gain by killing a low man,

## MAHĀPIURĀNA

and therefore Rāhu, the eclipsing planet does not get angry with stars.

4. 14 सरवरपनिहि वरुण शिबंघमि, I shall build a dam ( to stop the progress of the army ) by a series of arrows, having the shape of snakes ( गाय्यायागहिं ).

5. 13 ण एवहिं मज्झमि, I do not behave well when I am with you, i. e., it is not right for me to indulge in pleasures when my king is marching against his enemy विमुज्झमि, shall pay off, shall redeem, shall clear off.

8. 10 कुट्टि णाई आलिहियई, as if drawn in picture on a wall.

9. 3a विण्णि वि जण, both of you. Compare दोषे जण in Marathi. 13 रणु तिविहु, threefold fight, viz., gazing at each other without winking ; splashing water against each other so as to overpower one ; and a wrestling match in which one would weigh the other on his arms.

11. 5 हेद्विह्व दिदि etc., The lower eye, i. e. the eye of Bharata, was conquered by the upper eye, i. e. the eye of Bahubali, whose glance was steady, fixed and unwinking.

12. 6b मिहाहारपूरंतचंचूचऊ, in which the beaks of cakora birds were being filled with eatable stalks of lotus 12 वियलई उपपरि मेइल्लेहे, would just fall ( slightly ) above the waist but would not cover his face.

14. 5 पीलिज्जउ तेरउ उच्छुचाउ etc. Let your bow of sugar-cane be crushed, let ( people ) drink its juice, or let ( them ) eat the sweet raw sugar ( गुळ, गुळ ). Bāhubali had his bow made of sugar-cane and hence the reference. 10 ता भणइ जइण etc., Then the son of Jina i. e. Bāhubali said: why do you talk in vain ? why do you ridicule my bow and arrow ?

15. 10a अलंभुयजुज्झविदाणम-पाई, hundred ways of wrestling.

16. 8b ना विनिउ चक्कु सुकंथेण, then the fine-necked (Bharata) thought of his cakra or disc, saying to himself that he could not in reality be a cakravartin if he was to be so overcome by his younger brother.

XVIII

[ Having lifted Bharata on his arms and thus defeated him for the third time, Bāhubali felt that he insulted his elder brother and cakravartin. He therefore asked Bharata to forgive him for the offence and desired to be a monk. Bharata however did not like to have the kingdom when he remembered that he had been defeated by his younger brother in the presence of the army, relatives and women. He therefore offered his kingdom to Bāhubali and desired to renounce the worldly life. Bāhubali could not agree. The ministers also intervened and Bāhubali placed his son on the throne, and went to Kailāsa mount to practise penance. He practised penance there for one year when Bharata himself came to see him and praised him. Bāhubali however, remained indifferent to the praise and was engrossed in acquiring the qualities which a Jain monk should acquire. In course of time he attained Kevalajñāna. Gods headed by Indra came to him and praised him. Bharata also was glad to hear the news that his brother had become a Kevalin. Thereafter he enjoyed perfect sovereignty over the six continents of the earth. ]

2. 11 हउं जित्तउ पइं तुहुं सउ खानउ, I was defeated by you, and you have once ( सउ, सकन् ) forgiven me.

3. 1-3 जइ पइं etc. If you, after having lifted me by your arms, had thrown me on the ground with a crash, if it had not been possible for my disc to save me, would any body have seen me alive? You have thus won or conquered even earth in forgiveness; you have frightened Indra ( कषसिउ, कौशिकः, i. e., इन्द्र ) by your valour. 10-11 ससि सूरहो, etc, To the sun there is a counterpart in the moon; to the Mandara mountain there is (small) Mandara; to Indra there is Pratindra, but O son of queen Nandā ( i. e., सुनन्दा ), to you alone I do not see any second or counterpart.

5. 6 जइ एवहिं etc. If even after this ( talk ) you do not desire to have the earth, i. e., do not desire to rule over the earth, then return it to him who gave it to you, i. e. to Risaḥa, our father. It means Bāhubali is quite unwilling to rule and asks Bharata to rule as before.

## MAHĀPURĀNA

6. 7 पइं मेहिबि etc. Hatred ( दोसु, द्वेषः ), having left you, now stands in the form of a dark spot on the moon who is called दोसायर, दोषाकर ( दोस + आयर, आकर ).

7. 9a वयसमिदि, i. e. five समितिस viz., इरिया, भासा, एसणा, आदाण and उच्चार. Note that the word समिदि often retains द in this book as also ठिदि in the next line. 9b आवासयजोउ, practice or observance of the six आवश्यकस, viz, सामाह्य, चउवीसइत्थव, वन्दण, पडिक्कमण, काउस्सग्ग and पच्चक्खण.

10. This kadavaka and the next record that Bāhubali, as monk, acquired the knowledge of certain tenets of Jainism and practised them. These tenets are arranged in numbers from one to thirty-two. A similar mention of these tenets occurs in the Uttarādhyayana Sūtra, XXXI, and also in this book in XXXVII 15-17. I think it is a good occasion for me to treat them here fully.

( 1 ) एकहु जीवहु गुण मणि भाविय, he cultivated in his mind the quality of Jiva which is one, i. e., solitariness, as nobody can share the effects of acts done by him. This गुण may be उपयोग as defined in नचगथेमूत्र II. 8 ( उपयोगो लक्षणम् ), or better still, the एकत्वभावना.. In the Uttarādhyayana Sūtra however we find:

एगओ विरइं कुज्जा एगओ थ पवत्तणं ।  
असंजमे नियत्तिं च संजमे थ पवत्तणं ॥ XXXI. 2

i. e., one should practise abstinence in one respect, and advancement in the other; i. e., Jiva should abstain for असंजम, indisciplined life, and advance with self-discipline.

( 2 ) गय रोस द्वाण्णि वि उड्ढाविय, he sent away, ( lit: made to fly ) both गग and रोष. The Uttarā. however mentions गग and द्वेष which is more in keeping with the usual list. Our text certainly reads रोस in all Mss.

( 3 ) ( a ) तिण्णि वि सल्लइं हियउद्धरियइं, he removed from his heart the three शल्यस, viz., मायाशल्य, निदानशल्य and मिथ्यादशंशल्य.

( b ) तिण्णि वि रयणइं लहु संभवियइं, he soon acquired the three jewels, viz, सम्यग्ज्ञान, सम्यग्दर्शन and सम्यक्चारित्र.

( c ) तिण्णि वि इंभ मुक्क संसेवे, he left quickly ( संसेवे, सक्षेपेण, शीघ्रम् ) the three types of crookedness, viz, bodily, verbal and mental. The Uttarā. has मनोदण्ड, वाग्दण्ड and कायदण्ड in place of इंभ of our Text.

NOTES, XVIII. 10-11

(d) गारुड तिष्ठिण विवर्जित्य देवे, the divine one, i. e. Bāhubali, avoided three गारुड (गौरव), viz., गिद्धिगारुड, रसगारुड and सायागारुड. The Uttarā. adds three उपसर्गs here:

दिव्ये य जे उवसम्मे तहा तेरिच्छमाणसे ।

जे भिक्खू सहई जयई न से अच्छइ मण्डले ॥ ५ ॥

(4) चउगइकम्मणिबंधणरमियउ सण्णउ चत्तारि वि उवसमियउ, he suppressed or pacified the four appetites or emotions, viz., आहार, मय परिग्रह and मैथुन, which take delight as it were in forming कर्म which puts the Jīva in the fourfold संसार, viz., देव, ताण्ड, निर्यक् and मनुष्य. The Uttarā. has :

विगहकसायसन्नाणं ज्ञाणाणं च दुय तहा ।

जे भिक्खू वज्जई निबं न से अच्छइ मण्डले ॥ ६ ॥

There are four विकथाs, viz. राज्य, देश, भोजन and स्त्री. there are four कषायs, viz., क्रोध, माण, माया and लोभ; the four संज्ञाs are mentioned above; the four ध्यानs are आर्त, रौद्र, शुक्र and धर्म out of which first two types are bad.

(5) (a) पंच महव्याहं, the five great vows of the monk, viz., अहिंसा, अदत्तादानवर्जन, असत्यवर्जन, परिग्रहत्याग, and ब्रह्मचर्य.

(b) पंचासवद्वारहं, the five sources of sin, viz., हिंसा, अदत्तादान, असत्य, परिग्रह and मैथुन.

(c) पंचिंदियहं कयाहं गिरत्थहं, he avoided the (enjoyment of) objects of five senses, viz., शब्द, स्पर्श, रूप, रस and गन्ध.

(d) पंच वि गाणावग्गहं ग्रंथहं, he (cut off) the knots of five types of ज्ञानावरणीयकर्म viz., श्रुतज्ञानावरणीय, आभिनिसोधिकज्ञानावरणीय, अवधिज्ञानावरणीय, मनःपर्याय-ज्ञानावरणीय and केवलज्ञानावरणीय.

(6) (a) छावासयउज्जमु सविसंसिउ, he made a special effort to observe the six आवश्यकs, viz., सामाहय, चउरीसइत्थव, वन्दण, पडिक्कमण, काउरसग्ग and पञ्चकस्साण.

(b) छज्जीवहं दयभाउ पयासिउ, he manifested kindness or compassion towards six classes of living beings, viz., पृथ्वी, अप्, तेजस्, वायु, वनस्पति and त्रस.

(c) छह लेसहं परिणामुवइहइ, he got stopped the effect of the six लेश्याs, viz., रुग्ण, नील, कपोत, तेजस्, पद्म and शुकु.

(d) छ वि दुब्बहं पञ्चक्सहं दिइइ, he saw or realised all the six entities, viz., धर्म, अधर्म, आकाश, पुद्गल, जीव and काल.



## MAHĀPURĀṆA

(7) (a) सत्त भयाई ह्याई गहीरें, the serene one (i. e. Bāhubali) destroyed the seven fears or risks, viz., इहलोकभय, परलोकभय, आदानभय, अकस्माद्भय, आजीवभय, मरणभय, and अश्लोकभय.

(b) सत्त वि त्वाई णायई धीरें, the wise one knew all the seven truths, viz., जीव, अजीव, आस्रव, संवर, निर्जर, बन्ध and मोक्ष.

(8) (a) अट्ट वि मय णिट्ठविय अट्टुट्टे, the unsoiled one exhausted or destroyed all the eight prides, viz., जानिमद, कुलमद, बलमद, रूपमद, तपोमद, ऐश्वर्यमद, श्रुतमद, and लाभमद.

(b) अट्ट सिद्धगुण मत्थिय वरिद्धें, the excellent one remembered the eight qualities of the सिद्धs, viz.,

सम्मत्तणाणदंसणवीरियसुद्धमं तद्देव अवगहणं ।

अगुरुलद्धमव्वाचाहं अट्ट गुणा होन्ति सिद्धाणं ॥

—सिद्धभक्ति, २०

युद्धात्मादिपदार्थविषये विपरीताभिनवेशारहितः परिणामः क्षायिकसम्यक्त्वमिति भण्यते । जगत्त्रयकालत्रयवर्तिपदार्थयुगपद्विशेषपरिच्छित्तिरूपं केवलज्ञानं भण्यते । तत्रैव सामान्यपरिच्छित्तिरूपं केवलदर्शनं भण्यते । केवलज्ञानविषये अनन्तपरिच्छित्तिशक्तिरूपं अनन्तवीर्यं भण्यते । अतीन्द्रियज्ञानविषयत्वं सूक्ष्मत्वं भण्यते । एकजीवावगाहपदेशे अनन्तजीवावगाहदानसामर्थ्यमवगाहनत्वं भण्यते । एकान्तेन गुरुलघुत्वस्याभावरूपेण अगुरुलघुत्वं भण्यते । वेदनीयकर्मोदयजनितसमस्तबाधारहितत्वादव्याबाधगुणश्चेति ॥

—परमात्मप्रकाशटीका

(9) (a) णवावेहु बंभचेरु परिपालिउ, he observed the ninefold celibacy, viz.,

इत्थिविसयाहिलासो अन्नविमोक्खो य णणिद्रससेवा ।

संसत्तदध्वसेवा तहिन्दियालयणं चैव ॥ १ ॥

सक्कारपुरक्कारो अदीदसुमरणमणागदहिलासो ।

इट्ठविसयसेवा वि य णवभेदमिदं अबम्भत्तं ॥ २ ॥

—T. in Ms. K.

Devendra's Com. on Uttarā. XXXI. 10 however gives the nine rules of celibacy as follows :

वसहि कह निसिज्जिन्दिय कुट्टिन्तरपुअक्कीलिय णणीए ।

अहमायाहार विभूत्तणा य नव चम्भगुत्तीओ ॥ १ ॥

(b) णवपयत्थपरिमाणु णिहालिउ, he realised the extent of nine entities, viz., जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बन्ध, and मोक्ष.

( 10 ) दसविद्दु जिणधम्मु वियाणियउ, he knew the tenfold qualities of the Jina, viz.,

सन्ती य मज्जवज्जव मुत्ती तव संजमे य बोद्धव्वी ।  
सच्चं सोयं आकिंचणं च बम्मं च जइधम्मो ॥ १ ॥

( 11 ) एयारह हयजडिमउ अवियारहं धीरहं सावयहं...पडिमउ, he also understood the eleven प्रतिमास which lay disciples practise. These eleven प्रतिमास are :—

दंसण वय सामाइय पोसह पडिमा अबम्म सच्चित्ते ।  
आरम्म पेस उद्धिवज्जए समणभूए य ॥

For details see my notes on Uvāsagadasāo, pages 224-229.

( 12 ) बारह भिक्खुहं पडिमउ, he also knew the twelve प्रतिमास of the monks. These are described in Devendra's Com. on Uttarā. XXXI 11, as follows :—

मासाहं सत्तन्ता पढमा चिड् तइय सत्तराइदिणा ।  
अहराइ एगराइ भिक्खुपडिमाण बारसगं ॥ १ ॥

The duration of the first भिक्षुप्रतिमा is one month, of the second two months and so of the seventh seven months; of the eighth one week, of the ninth two weeks, of the tenth three weeks, of the eleventh one day and night, and of the twelfth one night. There are several things which the monk practising these प्रतिमास is called upon to observe. Devendra describes them as follows :—

पडिवज्जइ एयाओ संघयणधिईजुओ महासत्तो ।  
पडिमाउ भावियप्पा सम्मं गुरुणा अणुन्नाओ ॥ १ ॥  
गच्छे चिय निम्माओ जा पुब्बा दस भवे असंपुण्णा ।  
नवमस्स तइयवत्थुं होइ जहन्तो सुयाभिगमो ॥ २ ॥  
वोसहचत्तदेहो उवसगसहो जहेव जिणकप्पी ।  
एसण अभिग्गहीया भत्तं च अलेवडं तस्स ॥ ३ ॥  
गच्छा विणिक्खमित्ता पडिवज्जइ मासियं महापडिमं ।  
दत्तेग भोयणस्सा पाणस्स वि तत्थ एग भवे ॥ ४ ॥  
जत्थत्थमेइ सूरुो न तओ टाणा पथं पि संबलइ ।  
नाएगराइवासी एगं व दुगं व अन्नाए ॥ ५ ॥  
दुहस्सहत्थिमाईण नो भएणं पथं पि ओसरइ ।  
एमाइनियमसेवी विहरइ जासण्डिओ मासो ॥ ६ ॥

## MAHĀPURĀNA

पच्छा गच्छमईं एव दुमासी तिमासि जा सत्त ।  
 नवरं दत्तीबुद्धीं जा सत्त उ सत्तमासीए ॥ ७ ॥  
 नत्तो य अट्टमीया भवईं हु पढम सत्तराईदी ।  
 तीह चउत्थचउत्थेणऽपाणणं अह विसेसो ॥ ८ ॥  
 दोष्वा वि एसि च्चिय बहिया गामाइयाण नवरं तु ।  
 उक्कुड लंगइसाईं दण्डायय उडुं ठाइत्ता ॥ ९ ॥  
 तच्चाए वी एवं नवरं ठाणं तु तस्म गोदोही ।  
 वीरासणमहवा वी ठाएज्जा अंबखुज्जो हु ॥ १० ॥  
 एमेव अहोराईं छहं भत्तं अवाणयं नवरं ।  
 गामनगराण क्कहिया कग्गरियपाणिए ठाणं ॥ ११ ॥  
 एमेव एगराईं अट्टमभत्तेण ठाण चाहिओ ।  
 ईसीपक्कभाग्गए अणिमित्तनयणेगदिट्ठा य ॥ १२ ॥

( 13 ) ( a ) तेरह किरियाठाणइं मुणियईं, he understood the thirteen क्रिया स्थानs, which are enumerated below :

अट्ठाणहा हिंसाऽकम्हा दिट्ठी य मोसऽदिन्ने या ।  
 अज्जसत्थ माण मेत्ती माया लोमेरियावहिया ॥ १ ॥

For details of these see सूचगड II. 2.

( b ) तेरहमेय चरितइं गणियईं, he also counted upon the thirteen types of good conduct, viz, पञ्चाश्रवसंकर, पञ्चममिनि and गुणित्तय

( 14 ) ( a ) चोद्धह गंध, he avoided the fourteen knots which are enumerated in T. as follows :—

मिच्छत्तवेदरागा तहासादिया ( ? ) य छट्ठोसा ।  
 चत्तारि तह कसाया चोद्धह अक्कभन्तरा गन्था ॥ १ ॥

( b ) ( चोद्धह ) मला वि समुज्झिय, he avoided the fourteen impurities enumerated in T. as follows :—

नहोमजन्तुअट्ठी कणकोडियपूचम्ममंसरुहिराणि ।  
 वीय फलकन्दमूलानि मला चोद्धसा होन्ति ॥ १ ॥

( c ) चोद्धह भूयगाम सईं बुज्झिय, he understood fourteen groups of creatures. These fourteen groups are enumerated in T. as follows :—  
 एकैन्द्रियाः सूक्ष्मवाद्रपर्याप्तपर्याप्तमेदाश्चत्वारः, द्वित्रिचतुरिन्द्रियाः पर्याप्तापर्याप्तमेदात् षट्, पञ्चेन्द्रियाः संशयमज्ञिपर्याप्तापर्याप्तमेदाश्चत्वारः इति चतुर्दशविधो भूतग्रामः ।

वादरसुहुमे इन्द्रियदुनिचतुरिन्द्रियसन्न्याया ।  
 पज्जत्तापज्जत्ता...चतुदस भूदसंगामा ॥ १ ॥

(15) (a) पण्णारह पमाय मेहंते, abandoning the fifteen pmaḍs or flaws, enumerated in T. as follows :—

विकल्पा तद् य कसाया इन्द्रिय निह्वा य पणगो य ।

चउ चउ पण एगेरं ह्येन्ति पमाया ह्यु पण्णरमा ॥ १ ॥

i. e., four types bad talk, viz. राज्यकथा, देशकथा, भोजनकथा and स्त्रीकथा, four कर्णयस, viz., क्रोध, मान, माया and लोभ, faults of five senses, sleep and drink (पणग, पानक)।

(b) पण्णपावभूमिउ जाणंते, knowing the (fifteen kind of) regions where men act (to acquire merit and demerit), viz., five in each of भारत, इरावत and विदेह.

(16) (a) सोलहविह कसाय पसमेने, pacifying the sixteen forms of passions. T. notes these as : कषायाः क्रोधमानमायालोभाः प्रत्येकमनन्तानुबन्धिअप्रत्यास्थानप्रत्यास्थानसंज्वलनविकल्पाः सन्तः षोडशविधा भवन्ति.

(b) सोलहविहवयणेस रमेते taking delight in sixteen types of expressions. T. records them as follows:—काललिङ्गवचनानि प्रत्येकं त्रीणि नव, तथा वि (?) कोनमिश्रवचनानि त्रीणि समयलोकदृष्टप्ररोक्षवचनानि चत्वारिती षोडश. The Uttarā. has गाहामोलसएहि which refers to the sixteen lessons of the first volume of मूयगडं of which the sixteenth is called गाहज्जयणं.

(17) असंजमोह सत्तारह, seventeen types of असंयम, indiscipline ; Devendra has enumerated these as follows:—असंयमे सप्तदशभेदे पृथिव्यादिविषये, तत्संख्यात्वं चाम्य तत्प्रतिपक्षस्य संयमस्य सप्तदशभेद्वान् । यत उक्तम्—

पुढवि-दग-अगणि-मारुय-वणफह-वि-रति-चउ-पणिन्दिअज्जीवे ।

पेहेपेहमज्जण-परिठवण-मणो-वहं-काए ॥

T. has the following explanation : पृथिव्यग्नेजोवायुवनस्पतयः द्वित्रिचतुःश्रेन्द्रियाणाम-गतिलेखन (1) दुष्प्रतिलेखनापहस्योपेज्ञानि (1) जीवमनोवाक्कायाः अपहस्य (1) गृहीताण्डादिजन्तून् प्रतिलेख्ये (1) उपेक्षा (1)...। अथवा—

पञ्चासवेहि विरमणं पञ्चिन्द्रियनिगहो कसायजओ ।

तिहि दण्डेहि य विरदी संजमो सत्तगमभेओ ॥

तत्प्रतिषेधादसंयमः सप्तदशविधः .

(18) जाणिवि संपराय अट्टारह, having known eighteen types of संपराय viz., ten यतिधर्मस such as क्षान्ति etc., five ममिदिस and three गुप्ति.

(19) एउणवीस वि गाहज्जयणइं, having known nineteen lessons or chapters of the book on Illustrations ( नाय-ज्ञात or न्याय ? ). This is clear-

## MAHĀPURĀNA

ly a reference to the sixth Aṅga of the Jain Canon which in the Śvetāmbara tradition forms the first part of the नायाधम्मकहाओ. This book consists of two parts Nāyas, Jñātas or illustrations and धम्मकहा or sacred narratives. Our Mss. invariably read ह so that our reading is नाहज्जयणई. This reading is supported by T. also. Uttarā. reads नायज्जयणेसु. The change of Sk. त to ह is not unusual, compare भरह for भरत. It also appears that ज्ञान or न्याय constituted at one time an independent work of the Canon to which a small section of धम्मकहा might have been added later. The present text of the नायाधम्मकहाओ in the Śvetāmbara Canon contains nineteen sections called नायस and are named as :

उक्खित्तनाए<sup>१</sup>संधाडे अण्डे कुम्भे यं सेलए ।  
तुम्भे यं रोहिणी मल्ली मार्यदी चन्दिमा इय ॥ १ ॥  
दावद्धवे उदगनाए मण्डुकं तेयली इय ।  
नन्दिकले अवरकङ्का आइज्जे सुंसु पुण्डरिए ॥ २ ॥

—Devendra on Uttarā XXXI. 14.

It appears that in the Digambara tradition there was also a book of the sacred canon called नाह or णाह ; it contained nineteen lessons as in the Śvetāmbara tradition, but the names of the Nāhas with the Digambaras had a different order as can be seen from the list given below:—

1. उक्कोडणाग constituted the first अज्जयण. The story as given in T. is as follows:—उक्कोडणाग श्वेतहन्ती । अस्य कथा । उत्तरापथे कनकपुरे राजा कनकको, महागङ्गा कनका । पुत्रो नागकुमारः तपो गृहीत्वा विहरमाणः अटव्या दावानलेन दग्गमानः समाधिना मृत्वा अच्युतेन्द्रो जातः । तदर्धदग्धकलेवरं दृष्ट्वा तुङ्गमद्रो नाम तत्रत्यो भिल्लो जातपश्चात्तापो मृत्वा तत्रैव श्वेतगजो जातः । सोऽच्युतेन्द्रेण जिनधर्मं ग्राहितः पुनर्दावानलेन दग्गमानं शशकं स्वपादतले स्थितं रक्षित्वा ( दह ) मानोऽपि दहयती मृत्वा मृत्वा देवो जातः. If we compare this narrative with the one in the first ज्ञान called उक्खिसज्ञान of the Śvetāmbara version, we shall see that there is no reference there to a Bhilla being taught by अच्युतेन्द्र, although there is agreement in that the elephant saved the life of a rabbit that crept under his foot. It thus appears that the Digambara version of the narrative may have been different from the Śvetāmbara one.

2. कुम्भ—This is second in the Digambara tradition, but fourth in the Śvetāmbara one. T. gives the narrative as follows:—कुम्भ कुम्भक्यानम् । यथा कुम्भेण मुस्रचरणसंक्रान्तं रुत्वात्तनो ब्राह्मणान्मरणं निवारितं तथा मुनिभिरपि पञ्चेन्द्रियसंकुचितैर्मरणपरंपरा निवारयितव्या.

3. अंडय—This is the third ज्ञान in both the versions. T. says :—  
अण्डजकथा पञ्चप्रकारा । तद्यथा कुक्कुटकथा माताप्येका पिताप्येकः इति । तापसपण्डिकास्थितशुक्र-  
कथा । चारणारुयस्याकरणवेदकशुककथा । अगन्धनसर्पकथा । हंसयूथयन्धनमोचक कथा. In the  
Śvetāmbara version we get only one story of the eggs of a peahen and  
not five as T. seems to indicate.

4. रोहिणी—This is the seventh story in the Svetāmbara version  
while it is fourth in the Digambara one. T. reads : सुपुत्रचलदेवेन सह रोहिणी  
निष्ठनीलि लोकप्रवादं श्रुत्वा रोहिण्या भणितं यद्यसौ शुद्धा तदा यमुनानदी शौरिपुरं वेष्टित्वा पूर्वाभिमुखं  
वहति । तन्माहात्म्यात्तथैव जातम् । The story in the ज्ञानाधर्मकथा is altogether  
different.

5. सेल—This seems to correspond to सेलए which is the fifth narra-  
tive in the Svetāmbara version. T. reads : शेषे शिष्यकथा यथा वेलिणीपुत्रवारि-  
षेणप्रतिबोधितः पण्डालः. The story in the ज्ञानाधर्मकथा is altogether different.

6. तुंब (and not रुब as read in foot-notes)—This is the sixth story  
in both the versions. T. reads : तुम्बकथा रोषेण दत्तकटुककुम्भोजनमुनिकथा. The  
story in the ज्ञानाधर्मकथा is different as can be seen from its summary in  
the com. which runs as follows :—

जह मिउलेवालितं गरुडं तुम्बं अहो वयइ एवं ।  
आसवकयकम्मगुरू जीवा वच्चन्ति अहरगयं ॥ १ ॥  
तं चेव्व तब्बिमुक्कं जलोवरि ठाइ जायलहुभावं ।  
जह तह कम्मविमुक्का लीयग्गपइहिया होन्ति ॥ २ ॥

7. संघाद—This is called संघाड and is the second in the Svetāmbara  
version. T. reads :—संघादे । अस्य कथा । कौशाम्ब्या नगर्यामिन्द्रदत्तादयो द्वात्रिंशदिभ्याः,  
तेषां समुद्रदत्तादयो द्वात्रिंशत्पुत्राः परस्परमित्रत्वमुपागताः । सम्यग्दृष्टयस्ते केवटिमर्मापि स्वल्पं निजजीवितं  
ज्ञात्व लपो गृहीत्वा यमुनातीरे पादोपयान ( पादपोपगमन ! ) मरणेन स्थिताः । अतिवृष्टौ जातायां  
जलप्रवाहेण यमुनामध्ये सर्वेऽपि ते पातितः । परमसमाधिना कालं कृत्वा स्वर्गं गताः. The  
narrative in ज्ञानाधर्मकथा is altogether different from the above.

8. मादंगि—It appears that मायन्दी which is the ninth story in the  
Svetāmbara version should be the counterpart of मादंगि of the Digambara  
version. T. seems to make मादंगिमल्लि as one narrative which would  
however reduce the number of narratives to eighteen. T. reads : मादंगि-  
मल्लिकथा यथा वज्रमुष्टिमहाभटमार्याया मंगि ( मादंगि ! ) नामायाः मल्लिपुष्पमालाभ्यन्तरस्थितसर्पदृष्टायाः  
कथा. The narratives of the Svetāmbaras and the Digambaras do not  
at all agree.

## MAHĀPURĀNA

9. मल्लि—This is the eighth narrative in the ज्ञानाधर्मकथा. For remarks see above.

10. चंदिमा—This is the tenth narrative in both the versions. T. says : चंदिमा चन्द्रावधकथा ( चन्द्रवृद्धिकथा ). Perhaps both the versions give the same narrative.

11. तावद्द्व—The eleventh narrative in the Svetāmbara version is called दावद्द्व which is the name of a tree in that version. T. however seems to mean a different story. T. reads : तावद्द्व—तापद्रवदेशोत्पन्न-घोटकहरणसगरचक्रवर्तिकथा.

12. तिका—It appears that this तिका should correspond with तेयली which is the fourteenth story in the ज्ञानाधर्मकथा. T. reads: तिका मनुष्यकरोडि-समुत्थितवंशत्रिकस्य कर्कण्डमहाराजकृतच्छत्रे ध्वजाङ्कुशदण्डकथा. The Svetāmbara version of तेयली does not seem to agree with the above.

13. तडाया—This seems to correspond to दद्दु which is the thirteenth story in the Svetāmbara version. T. reads : तडाया तडागयान्यामेकवृक्ष-कोटरस्थिततपस्विनो गन्धर्वारघनकथितकथा. This has no correspondence with दद्दु of the Svetāmbara version.

14. किन्न ( आकीर्ण ! ) —This seems to be आङ्गण of the Svetāmbara version which is the seventeenth story there. T. reads: बाहिमर्दनस्थितकर्षक-पुरुषसत्यकथा. This story also does not seem to have any correspondence with the Svetāmbara version.

15. सुसुकेय—This should correspond with सुसुमा of the Svetāmbara version which is the eighteenth story there. T. reads : आराधनाकथितसुसु-मारद्रहनिक्षिप्तपाणकथा. There seems to be no agreement between the two versions.

16. अवरकंके—This is called अवरकंका in the Svetāmbara version where also it is the sixteenth narrative. T. reads : अवरकंकनामपत्तनोत्पन्न-जनचौरकथा. There is mention of the town of अवरकंका in the Svetāmbara version, but beyond this there seems to be nothing common between the stories in the two versions.

17. नंदिकले—This is called the same in the Svetāmbara version but there it is the fifteenth story. T. reads : अटल्या स्थितसुमुक्षणीद्वितधम्बन्तरि-

विश्वानुलोमभृत्यानां किंपाकफलकथा. The narrative seems to be similar in both the versions.

18. उद्गनाह—This seems to correspond to उद्गनाम of the Svetāmbara version which is the twelfth story there. T. reads: उद्गनाह उन्नकुनाथ (?) कथा यथा राजामात्यसमक्षगडुककथा. The story seems to be similar in both the versions.

19. पुंडरिगो य—This is the last story in both the versions. T. reads: पुंडरिगो य पुण्डरीकगजपुत्र्याः कथा. The Svetāmbara version seems to be different from the above as will be seen from the extract from the com.

वाससहस्रं पि जईं काऊणं संजमं सुविउलं पि ।  
अन्ते किलिद्वभावो न विसुज्जइ कण्डरीउ व्व ॥  
अप्पेण वि कालेणं के वि जहागहियसीलसामण्णा ।  
माहिन्ति निययकज्जं पुण्डरीयमहागिसि व्व ॥

T. adds: “अथवा—गुण जीवा प्र(1)जर्त्तापाणासायामग्गणा उ य ।

एउणवीसा एदे णाहज्जयणा मुणेयव्वा ॥

अथवा—नव केवललद्धीओ कम्मवत्तययं जं हवन्ति दम चैव ।

णाहज्जयणा एए एउणवीसा विवाणेहि ॥

कर्मक्षयजाः घातिकर्मक्षयजाः दशानिश्चयाः. It is clear that the names of the अज्जयण agree in the two versions largely, but their contents seem to differ widely. Of course this is a mere hypothesis based upon somewhat imperfect evidence of T.

(20). वीसविहईं अममाहीठाणईं—Twenty types or causes of असमाधि, absence of tranquility of mind. These twenty causes are given in Devendra's com. as follows:—

1. दवदवचारी—दुयं दुयं वच्चन्तो इहेव अप्पाणं पवडणाइणा अन्ने य सत्ते वावायणाइणा असमाहीए जोयइ, परलोगे य अप्परयं सत्तवहजणियकम्मणा असमाहीए जोयइ.

2. अपमज्जिए ठाणनिसीयणाइ करेइ.

3. दुप्पमज्जिए ठाणनिसीयणाइ करेइ.

4. अहरित्ताए सेज्जाए आसणे वा निवसइ.

5. राइणिए परिभवइ.

6. थेरोवघाईं—सीत्ताहदोसेहिं थेरे उवहणइ ति पुत्तं भवइ.



## MAHĀPURĀNA

7. भूओवषाई-अणहाए एगिन्द्याइए उवइणइ त्ति वुत्तं भवइ.
8. मुहुत्ते मुहुत्ते संजलइ.
9. सहं कुहो य अबन्तकुहो हवइ.
10. पिट्टिर्मसिए हवइ.
11. अभिक्खणमोहारिणिं भासइ जहा दासो तुमं चांगे व त्ति.
12. नवाइं अहिगरणाइं करेइ.
13. उवसन्ताणि य उइरेइ.
14. ससरक्खपाए अर्थडिलाओ थण्डलं संकमइ, ससरक्खोइ वा हत्थेहिं भिक्खं गेणइइ.
15. अकाले सज्जायं करेइ.
16. असंसाइसहं करेइ राईए वा महया सहेण उल्लवइ.
17. कलहं करेइ, तं वा करइ जेण कलहो हवइ.
18. तारिसं करेइ भासइ वा जेण सब्बो गणो सज्जाविओ अच्छइ.
19. सूरौदयाओ अत्थमणं जाव भुअइ.
20. एसणासमिहं न पालेइ.

T. also gives a similar list of twenty causes, but the text is very corrupt.

(21) एकवीस सबल वि, i. e. twentyone impurities or impure and sinful acts (सबल). They are given by Devendra as :—

- तं जह उ (१) इरधक्कम्मं कुव्वन्ते (२) मेहुणं तु सेवन्ते ।  
 (३) राईं च भुअमाणे (४) आहाक्कम्मं च भुअन्ते ॥ १ ॥  
 (५) नत्तो य रायपिण्डं (६) कीयं (७) पामिच्च (८) अभिहइ (९) अल्लज्जे ।  
 (१०) भुअन्ते सबले ऊ पच्चविसयऽभिक्ख भुअन्ते ॥ २ ॥  
 (११) छम्मासकम्मन्तरो गणा गण संकमं करिन्ते य ।  
 (१२) मासकम्मन्तरे तिणिणं य दगलेवा ऊ करेमाणे ॥ ३ ॥  
 मासकम्मन्तरो विय माइहाणाइं तिणिणं कुणमाणे ।  
 (१३) पाणाइवाघाउट्ठिं कुव्वन्ते (१४) मुत्तं वयन्ते य ॥ ४ ॥  
 (१५) गिण्हन्ते य आदंजं (१६) आउट्ठिं तह अणन्तरहियाए ।  
 पुडधीए ठाण सेज्जा निसीहियं वा वि चेएइ ॥ ५ ॥  
 (१७) एवं ससिणिद्धाए ससरक्खाए चित्तमग्गसिलल्लं ।  
 कोलावासवहाइ कोलपुणा नेसि आवासो ॥ ६ ॥  
 (१८) सण्हसपाणसधीए जाव उ संताणए भवे तहियं ।  
 डाणाइ चेषमाणे सबले आउट्ठियाए उ ॥ ७ ॥

- (१९) आउट्टि मूलकम्भे पुष्के य फले य वीयहणिए य ।  
 भुञ्जन्ते सबले ऊ (२०) तहेव संबच्छरस्सन्तो ॥ ८ ॥  
 दस दगलेवे कुब्बं तइ माइहाण दस य वरिसन्तो ।  
 (२१) आउट्टिय सीओदगवग्घारियइत्थमत्ते य ॥ ९ ॥  
 दुब्बीइ भायणेण य दिउज्जन्तं भत्तपाण घेत्तूण ।  
 भुञ्जइ सबलो एसो इगवीसो होइ नायण्वो ॥ १० ॥

( 22 ) सहिवि दुवीस दुसउस परीसह, having borne twenty-two unpleasant contacts, viz., क्षुत्, विपासा etc. For details see तत्त्वार्थाधिगमसूत्र IX. 9.

( 23 ) तेवीस वि सुत्तयइइं, i. e. twenty-three chapters of the सूत्ररुताङ्ग, the second Aṅga of the Canon of the Jains, beginning with समयाभ्ययन and so forth. T. reads : सममए वेदालिजोए उवसग्गं इत्थिपरिणामे निरवन्तर वीरधुदी कुसीलपरिभासिए धम्मो य अग्गमग्गे समसरणं तिकालागन्धसाहयए (!) आदा तदित्था (!) पुंडरीको वीरियहाणे पयआराहेयपरिणामे पच्चक्खण अणगाग्गुणाक्खिती सुद अत्थ णालन्दे सुदयइउत्तवणाणि तेवीसं द्वितीयाङ्गभ्युत्तवर्णनाधिकारात्थ. It we are to trust the text of T. which is admittedly corrupt, the order of adhyayanās in the Digambara version would be different from the Svetāmbara one.

( 24 ) चउवीस वि जिणतित्थइं—the twentyfour तीर्थs of the twentyfour Jinas.

( 25 ) पञ्चवीस भावणउ—For details see तत्त्वार्थाधिगम, VII 3-8. T. reads : एकेकस्य परिपालनार्थं वाइमनोगुमीवां (!) दानसमित्यादयः पञ्च भावनाः; अथवा, त्रयोदश क्रियाः द्वादश तपोति च पञ्चविंशतिर्भावनाः.

( 26 ) छुब्बीस वि पुहुवाउ, the twentysix regions; T. reads : सौधर्मादि-मोक्षपर्यन्ता एका (!) पृथ्वी उत्सर्पिण्योभरतैरावतयोरवसर्पिण्यां शुद्धा नाम पृथ्वी भवति । उत्सर्पिण्यां च सेव सारा इत्युच्यते इत्येका पृथ्वी । रत्नप्रमो (!) मोक्षभागचित्रादयः (!) पङ्कभागादयः सप्त नरकभूमयः इति षड्विंशतिः पृथिव्यः.

( 27 ) सत्तवीस जइगुण, twentyseven vows of a monk, viz., द्वादश भिक्षु-प्रतिमाः, अष्टौ प्रवचनमातरः, क्रोधमानमायालोभमोहरागद्वेषाणामभावश्च सप्त, T. Devendra how- ever gives a different list :—

- वयउक्कमिन्दियाणं च निग्गहो भविकैर्रेणसत्तवं च ।  
 सर्मथा विरार्थेया वि य मर्णमाइणं निरोहो य ॥ १ ॥  
 कायाण उक्कं जोगम्मि जुत्तथा वेयर्णाहियासणया ।  
 तह मार्रेणन्तियहियासणा य एएणगारगुणा ॥ २ ॥

## MAHĀPURĀNA

(28) अट्वीस पवगयारकम्—There are twentyeight (?) मूलगुण as T. says; but Devendra gives them as : प्रकृष्टः ऋत्नः यतिव्यवहारो यस्मिन्निति प्रकल्पः, स चेहाचाराङ्गमेव शस्त्रपरिज्ञाद्यष्टविंशत्यध्ययनात्मकम्.

(29) एउणतीस वि दुक्कियसुत्तई, twenty-nine books of heretics which they believe to be sacred. T. reads : चित्रकर्मादिसूत्रं गणितसूत्रं वैद्यसूत्रं नृत्यसूत्रं गान्धर्वसूत्रं पटहसूत्रं अगदसूत्रं मयसूत्रं सूतसूत्रं राजनीतिसूत्रं मजुरंगसूत्रं (?) चतुरंगसूत्रं गजतुरंगसूत्रं पुरुषस्त्रीगोम्बहृद्गंजनानां (!) लक्ष (लक्षण ?) सूत्राणि अंगं सरं वंजनलक्षणं च छिण्णं वीभोमंसमिणंतरक्खं (!) इत्यष्टाङ्गनिमित्तसूत्राणीति एकोनविंशत्यपसूत्राणि । अथवा

अट्टारह य पुराणा सडंगविण्णा ( विज्जा ! ) य लोइयाणं तु ।

बुद्धाइ पंच समय्ण परूवणा जा सुदी लोए ॥ १ ॥

Devendra gives a different list :

अट्ट निमित्तंगाई दिव्वुप्पीयन्तैल्लिक्खंभोमं च ।

अंक्कं सरं लक्खेण वंजणं च तिविहं पुणेक्केक्कं ॥ ५ ॥

सुत्तं वित्ती तह वत्तियं च पावसुयमउणतीसविहं ।

गन्धर्वे नट्टे वत्थं ओउं धम्मवेयसंजुत्तं ॥ २ ॥

For still another list see नन्दीसूत्र under मिच्छासयं.

(30) तीसविहई मोहटाणई, thirty causes or types of infatuation. T. reads : तथा हि—ब्रतविषये पञ्चप्रकाशो मोहः । पञ्चप्रकारमनुष्यविषये पञ्चप्रकाशमोहः । पञ्चप्रकार-मनुष्याः भोगभूमिजमनुष्याः विद्याधरत्रिषष्टिशालाकापुरुषमनुष्याः पञ्चदशकर्मभूमिजचतुर्थकालोत्पन्नमनुष्याः भगतेरावतेषु दुःकर्मातिदुःषमकालोत्पन्नमनुष्याः समुद्रमध्यद्वीपोत्पन्नकर्णप्रोचरणादि ( कर्णपावरण ! ) मनुष्याश्च । जीवाजीवान्धवसंवरनिर्जराबन्धमोक्षपुण्यपापानां स्वरूपे नव-प्रकारो मोहः । कर्मबन्धनस्वरूपे एको मोहः । द्वादशविधतपःस्वरूपे एको मोहः । दर्शनस्वरूपे एको मोहः । नेगमसंयहव्यवहारकजुसूत्रशब्दसमभिरुद्धेवंभूतानां सप्तनयानां स्वरूपे सप्त मोहाः । ब्रतविनाशविषये एको मोहः ॥ अथवा—क्षेत्ररत्नस्वरूपा (!) सुवर्णधनधान्यदासीदासकुप्य-दण्डलक्षणबाह्यग्रन्थविषयो दशप्रकारो मोहः । मिथ्यात्ववेदगागादिलक्षणाभ्यन्तरग्रन्थविषयश्चतुर्दशप्रकारः । पञ्चोन्द्रियदुष्टमनोविषयः षट्प्रकाशो मोहः. Devendra's list is altogether different from this for which see his com.

(31) एकतीस मलवाय धुणनें, shaking off the thirty-one types of impure acts. They are given in T. as follows :—तथाहि ज्ञानावरणीयं पञ्चप्रकारं दर्शनावरणीयं नवविधं वेदनीयं सातासातरूपतया द्विभेदं मोहनीयं दर्शनमोहनीयचारित्रमोहनीयमेवाद् द्विप्रकारं आयुश्चतुर्भेदं नाम शुभमशुभं च गोत्रमुच्चैः (!) अन्तरायाः पञ्चप्रकाराः.

(32) जिणुवएस बत्तीस मुणन्ते, meditating upon thirty-two preachings of the Jinas. They are given in T. as follows :—

आर्वीसयंङ्गपुर्वीं छब्बारसचोइमा य ते कमसो ।

बत्तीसमिमे नियमा जिणोवएसा मुणेयव्वा ॥ १ ॥

The Uttarā. XXXI. 20 mentions one more series of thirty-three terms as नेत्तीसासायणासु, but we do not find any mention of it in our work either here or in XXXVII. 15-17 below.

14. 9b छप्पणन्तरदीवहं—These fifty-six अन्तरद्वीपस are located in the लक्ष्मणसमुद्र outside जम्बुद्वीप, seven in each of the eight quarters. For details see नन्दसिञ्जरीका of मलयगिणि, pp. 102-103.

15. 6-10. These lines describe the different functions of the nine निधिs or treasures.

### XIX.

[ Bharata then thought that the wealth he acquired would be of no use if it was not given to worthy persons, popularly known as Brahmins. These Brahmins, according to him, were persons who observed the vows laid down by the Jinas. He gave largely and liberally to such persons presents such as clothes etc.

One day Bharata saw a bad dream towards the end of the night. He was very much disturbed by the dream and hence went to see Risaha the next morning. After offering prayers to him Bharata asked him to tell him how and by what meritorious act Risaha became a Jina and Bharata as cakravartin, Bāhubali a strong man, Śreyāmsa a liberal donor, and Somaprabha a meritorious ruler. Risaha then narrated to him how there would come hard times of Duḥṣamā when all notions of morality would be completely changed.]

8. 13 अवसवणउं, अपस्वप्नः, a bad dream.

10. 12-13 धीवरिसरिपुत्तहं देहिंति पदुत्तणु, they will give full powers to persons like व्यास who is the son of a fisherwoman and दुर्वासस् who is the son of a female ass. व्यास is known to be the son of सत्यवती by पराशर, but the origin of दुर्वासस् as the son of a female ass I am not able to trace.

12. 2a पंचमजुगि, i.e., in दुष्णमा.

## MAHĀPURĀNA

### XX.

[Risaha first refutes various theories of creation and states that the elements that constitute the universe are earth, air, fire and water, and that these are beginningless and endless. The universe is not created by either Brahmā, Viṣṇu or Śiva. In the midst of this universe is situated the human world called Tiriyaloya with many islands and oceans. There on the western side of the mountain Meru there is a region named Gandhela with its capital Alayā (Alakā). There ruled a king named Aibala (Atibala) with his queen Maṇoharā. A son named Mahābala was born to them and as soon as he attained youth king Atibala decided to place him on the throne and renounced the worldly life. King Mahābala thereafter began to rule the earth. He had four ministers named Mahāmatī (Mahāmati), Saṃbhinnamati, Satamati and Saṃbuddha (Svayambuddha). Now one day this Svayambuddha told the king the futility of pleasures of the world, and advised him to practise the pious life as recommended in Jainism. Then Mahāmatī, championing the cause of the Cārvāka school, advocated the doctrine of the identity of the body and the soul. The minister Svayambuddha refuted the doctrine of Mahāmatī, when Saṃbhinnamati advocated the doctrine of momentariness advanced by the Buddhists. This doctrine of momentariness was also refuted by Svayambuddha when Satamati came forward with his doctrine of illusion. Svayambuddha refuted this doctrine also.

Svayambuddha then narrated to king Mahābala a story of one of his ancestors, viz. Aravinda. This Aravinda had two sons named Haricandra and Kuruvinda. One day Aravinda suffered from a terrible burning sensation in his body, and, when he found that it did not alleviate by any remedy, asked his son Kuruvinda to prepare a pool of blood of animals, bathing in which, he said, would stop his sufferings. Kuruvinda obeyed his father's command, but prepared a pool of artificial blood (liquid lac). When Aravinda entered it he tasted the liquid and found that his son had deceived him. He then ran after his son to kill him, but stumbled on the way and was killed by his own sword.

## NOTES, XXI.

There was another ancestor of Mahābala named Daṇḍaka. His son was named Maṇimāli. He amassed a large fortune and having died became an ajagara (a kind of non-poisonous snake) and kept a watch over his wealth. One day Maṇimāli came to the house and saw the snake. The snake recollected his former birth and recognising his son did him no harm. Maṇimāli was surprised to see this, went to the sage and asked him who the snake was. On learning that he was his father, Maṇimāli came home and instructed him in the Jain doctrine. The snake practised it and was born as a god in the next birth. The god came to his son Maṇimāli and offered him a present of a necklace which Mahābala had been wearing. ]

17. 2-3 अणिहणइं etc. The four elements, viz., the earth, the air, the fire and the water have no beginning, no end and are not caused by any. Whenever these four elements combine, marks of cetanā become visible. Life comes into existence in the elements as intoxicating element does by the combination of raw sugar, water and flour. There is thus no difference between the body and the soul. This is the doctrine of the Cārvāka school.

18. 9b पउरंदरिय वित्ति, the doctrine of Puramdara, i.e., Indra, who along with Brhaspati is mentioned as founder of the Cārvāka school. 10-11. विणु जीवें etc. If elements combine without jīva or soul and form themselves into a body, then let there be a body in a jar where a concoction of herbs is kept; in other words living bodies may come into being even in test-tubes.

19. 11 गिसिसमयहु भत्तएण, by one who was the devotee of the doctrine of the sage i.e. Jina. 12. गिरणउ, निरन्वयम्, without continuity.

21. 3. आयाह etc. A Tittibha bird, saying that the sky will fall, is frightened, and rests raising up its legs (to support the falling sky).

## XXI.

[ Svayambuddha further told Mahābala that his father, grandfather and great-grandfather had all attained auspicious places as a result of their pious life. On hearing this he also went to the

## MAHĀPURĀNA

Mandara mountain to pay homage to the Jina. Just at this juncture there arrived a pair of Cāranamunis. Svayāmbuddha saluated them and asked them about the future of his master Mahābala. They thereupon told him that he was destined in the tenth birth to be a Tirthaṅkara; but in his past life he was the son, named Jayavarman, of king Śriṣeṇa and queen Sundarī. As the king gave his throne to his younger son Srivarman, Jayavarman felt that he should turn out to be a monk. He therefore went to Tirthaṅkara Svayamprabha of the past age and became a monk. Now at this juncture there arrived a Vidyādhara king with a huge paraphernalia. The young monk Jayavarman was so much impressed by the king's fortune that he formed a hankering to have, as a result of his penance, royal fortune similar to that of the king in his next life. It was on this account that in the subsequent birth he was born as Mahābala. Svayambuddha then went to Mahābala, saved him from his other ministers who were misleading him. As Mahābala had only one more month of life left to him, he decided to die a samnyāsa marana. He was born in the Isāna heaven after death, as a god named Lalitāṅga and had as his consorts Svayamprabhā and Kanakaprabhā.

2. 12 करु णिउ सेसासयदल्लहे, he stretched his hand (to pick up) a lotus flower from among those that were offered to the images of the Jinas.

4. 4b किं भव्नु अभव्नु व वज्जरह, tell me whether Mahābala is bhavya, i. e., capable of attaining emancipation or no.

8. 1a बद्ध णियाणु, he formed a hankering or cherished a desire that his ascetic life should bring him some reward in the following birth.  
9 मणकुडिल्ले, i. e., on account of मायाशल्लय.

## XXII.

[One day Lalitāṅga saw some signs such as the withering of flowers on his body which indicated that his period of life as a god was to come to an end soon. He was very much frightened but was advised that he should better spend the rest of his life in doing some pious acts. He thereupon went to worship the Jinas. In course of

## NOTES, XXII.

time he died and was born as son named Vajrajamṅha to king Vajrabāhu. Now while Vajrajamṅha had been growing on the earth, his consort Svyamprabhā wept bitterly for the loss of her husband, and after her death, was born as daughter named Śrīmatī to king Vajradanta and queen Lakṣmīmatī of Pundarikīṇī. One day when this Śrīmatī was half asleep, she saw a dream of a visit of a Jina with a large number of gods attending on him. She was immediately reminded of her former birth and former husband and fell on the ground in a swoon. She was soon brought round and her parents were called in. The king soon discovered that his daughter was love-sick. He therefore put her under the care of a wise nurse and asked her to ascertain the person loved by her.

At this juncture a report was brought to him that Jasahara attained Kevalajñāna and Cakra made its appearance in his armoury. The king immediately went to pay homage to the Jina, and as a result of this act he obtained Avadhijñāna. He came home and told his daughter the story of her former life in heaven and assured her by saying that she would soon meet her former lover, and then went away on his conquest of the world.

One day the nurse attending on her asked her to speak out her mind. Thereupon Śrīmatī told her that she was in the third previous birth the youngest daughter named Nirṇāmikā of a poor merchant named Nāgadatta who had a large family of ten. One day while this Nirṇāmikā was returning from the forest where she had picked some fruit, she saw a large crowd of people going to meet the Jina. She also went there, paid homage to the Jina and asked him why she was born poor. Thereupon the Jina told her that in her previous birth she put the dead body of a dog on a monk, but as the monk was unaffected by it, she removed it on the third day out of compassion. As a result of this act she was born poor. The Jina thereafter explained to her the true nature of Dharma and asked her to observe one hundred and fifty-eight fasts so that she would get rid of her inauspicious acts. She did accordingly and after death was born in Īśāna heaven as wife of Lalitāṅga. Six months after his death, she also came to the earth and was born as Śrīmatī. On recollecting her



## MAHĀPURĀṆA

love to Lalitāṅga she fainted. Having narrated the story of her past lives, Śrīmatī drew on canvas the portrait of Lalitāṅga and asked her nurse to find him out. ]

9. 11b सवलहणउं सवलहणु व दिहिहरु, the scented paste (सवलहणउं, समालम्भनम् ) takes away my courage as it destroys force (स्वलहणु) or as if it is like a bath to the dead (शव + लम्भन).

11. 8b अतियालउ संबुद्धतियालउ, although he (i. e. Jina) is destitute of wife or consort (तियाल-स्त्रीसहित, अतियाल-स्त्रीरहित) he knows the three times, viz., past, present and future (तियाल, त्रिकाल).

15. 6a अम्हं दहजणाई, we ten people, i. e., father, mother, five sons, viz., नंद, नंदिमित्त, नंदिमेण, धरसेण and विजयसेण, and three daughters, viz., सिरिवहा, सिरिहरा and णिण्णामिया. Note the use of जण with numerals which is preserved in Marathi. Compare: अम्ही दहा जण, दहा जणी, दोघे जण, पांच जण etc. 10b मई उच्चोलि भरिय माहुरयहु, I filled the cavity of my clothes (particularly of the कटीबख) with a vegetable called माहुरय which is similar to spinach (माठ or पोकळा). This माहुरय seems to be a common article of food as vegetable available to poor people.

18. 9a धम्मु होइ षइ णियमुह्दंसणि, there is merit, i. e., one acquires merit by looking his face into ghee. This line and several others in this kaḍavaka mention some of the beliefs or superstitions of Brahmanic religion.

19. 11 षण्णासदुत्तरु, etc. If, O young girl (बालि), you observe one hundred and fifty-eight fasts on the fifth day of the bright half (सियपंचमि, शुक्लपंचमी) of the month, you shall get rid of your past sins. शुक्लपञ्चमीनामष्टयश्चाशुदधिकशतपरिणामोपवासैः (परिमाणोपवासैः ?) श्रुतसागरविधिर्भवति तासामेव सप्तषष्टिभिरुपवासैः जिनगुणसंपत्तिविधिरिति, T.

## XXIII.

[ The nurse of Śrīmatī then took the portrait painted on canvas and went to the temple of the Jinas, and announced to the people that the person who would read correctly the events painted on the canvas, would marry the princess Śrīmatī. A crowd of princes from

different countries arrived there to try their luck, but to no purpose. Now her father returned from his conquest of the world and narrated to her the story of his former lives.

Vajradanta said : In my fifth previous birth I was born as son named Candrakīrti of an Ardhacakravartin. I had a friend named Jayakīrti. We both of us enjoyed the kingdom for a long time, and having practised penance, were born next in the Māhendra heaven. After that we were both born as Baladeva and Vāsudeva named Śrīvarman and Vibhīṣaṇa to king Śrīdhara and queen Manoharā of the town of Ratnasamca. When we attained youth, our father handed over the kingdom to us, practised penance and obtained kevalajñāna. Our mother remained at home, but spent her time in doing pious acts. She was born next as god Lalitāṅga. In course of time my brother Vibhīṣaṇa died, but not knowing that he was dead I carried on my shoulder his body and wandered from place to place. God Lalitāṅga, i. e., my mother in the previous birth, saw this, and in order to bring me round, stood on the way crushing sand to extract oil from it. I asked him what he was doing, and on hearing from him his objective, told him that he would not get oil from sand. The god then asked me why I had been carrying the dead body of my brother as it would not regain life. Then I realised that my brother was dead. I did the funeral rites for my brother, gave my kingdom to my son, practised penance, and after death was born as Indra in the Acyuta heaven.

Vajradanta narrates further the various births of Lalitāṅga till he is born in Utpalakheda as Vajrajamgha. ]

3. 2 सो सरसरविहिण्णु सा ण लद्ध, he, being hit ( विहिण्णु, विभिन्नः ) by the arrows ( सर, शर ) of the god of love ( सर, स्मर ), does not secure her ( सा ). Note that सा is used here as Acc. sing. feminine, which is very rare in Apabhramśa.

5. Note the शुंखलायमक or दामयमक here. Note particularly 7a which line looks apparently incomplete as there is no 7b in any of the Mss. The occurrence of such half lines seems to be justified and correct, and we need not suppose that b is lost, for the यमक here °गिहे—गिह°—गिये—गियराय° in 6b, 7a and 8a remains in tact.

## MAHĀPURĀṆA

8. 9b सीहणिकीडियउ—This is a kind of penance or a series of fasts which Jains observe. Similarly सवभद्दु in 10a ; मुत्तावलि in 9. 9a and रचनावलि in 9. 14a, कणचावलि in 11. 9a are fasts the details of which can be seen in any dictionary.

21. 2 इंदवयाउ, इन्द्रपदात्, from the place of इन्द्र. 13a अणामिया i. e., जिण्णामिया.

### XXIV.

[ In the meanwhile the wise nurse of Srimati went out with the picture and while wandering over different countries came to Utpalakheḍa. There she kept the picture in the temple. Vajra-jaṅgha came to that place, saw the picture and fell into a swoon. When he recovered he was asked what the matter was and told his friends that he saw in the picture the events of his past life including his love to Svayamprabhā. He was unable to stand the pangs of separation from her and asked the nurse where his former beloved was born. Vajrabāhu, the father of Vajrajaṅgha was informed of the happenings, and having assured his son that he would secure Śrīmati for him, started for Puṇḍarīkiṇī. He was received well by Vajradanta, and was asked why he came to his house. After having heard of the picture incident, Vajradanta offered his daughter Śrīmati to Vajrajaṅgha, and thus brought about the union of lovers ].

4. & 5. Note the events drawn in a picture as also those that could not be and had not been drawn in the picture.

8. 8b को नं पुसइ णिडालइ लिहियउ, who can wipe off what is written on the forehead ? This has become a proverb in M.

### XXV.

[ After marriage Vajrajaṅgha and Srimati returned to Utpala-kheḍa. Fifty-one twin sons were born to them. One day Vajrabāhu saw in the sky a cloud in the autumn which disappeared in a moment. He then thought that everything in the universe was momentary and hence decided to renounce the worldly life. Vajradanta also saw in a lotus a dead bee as it was fond of lotus-odour and did not

## NOTES, XXVI

leave the lotus even though it was closing in the evening. On seeing this he also was disgusted with pleasures which brought death to creatures and renounced the worldly life. His son Amitatejas then did not like to rule over the earth and followed his father. Thus Puṇḍarika, the grand-son of Vajradanta came to the throne. As he was young, his mother thought that he should be helped by friends like Vajrajaṅgha, and therefore sent a letter to him. He proceeded to her place, and while camping in a forest, met a pair of young monks who were no other than his own youngest sons, and asked them to narrate to him the story of his previous births, viz. those as Jayavarman, Mahābala, Lalitāṅga and Vajrajaṅgha. They then narrated the four previous births of Śrīmatī, viz, those as Dhanasri, Nirnāmika, Svayamprabhā and Śrīmatī. They also narrated the previous births of his priest, minister, friends and servants. He was also told that in his eighth birth he would become a Tirthaṅkara, and Śrīmatī would become prince Śreyāṃsa. After listening to this he proceeded to Puṇḍarinkiṇī, saw there his sister Anuṃdhari and the young prince Puṇḍarika, and after having arranged for the proper government of his kingdom, returned home.

12. 6b दृशावासु, a camp in tents ( दूम, दूष्य, पट्टग्रह ).

19. 11a कंदुवि, a sweet-meat seller, a baker.

## XXVI.

[Vajrajaṅgha and Śrīmatī were then born in the Uttarakurus as twins to Aninda and Ajjavā. There they recollected their previous birth when a pair of Cāraṇamunis arrived there. One of them was no other than Svayambuddha, the minister of king Mahābala. This Cāraṇamuni then explained to him the subsequent births of Mahābala as also his own, and advised him to follow the Jain doctrine. Vajrajaṅgha was then born as Śrīdhara in the Īsāna heaven, and Śrīmatī, changing her sex, was born as god Svayamprabha in the same heaven. The Cāraṇamuni also narrated the subsequent lives of the three other ministers of Mahābala. Now god Śrīdhara was next born as prince Suvīdhi of king Subhadraṣṭi and queen Nandā. Suvīdhi married Manoramā, the daughter of king Abhayaghoṣa. God Svayamprabha

## MAHĀPURĀNA

was now born as son to Suvidhi and was named Keśava. Suvidhi was next born in Acyuta heaven as Indra, and Keśava was born as Pratindra in the same heaven.]

1. 14b कव्य पाययं—It appears that the study of Prakrit poems was considered to be a fashion of the day.

7. 10b विउ णाणस्मि धाउ सुपसिद्धउ—The root विउ (विउ in Prakrit) is widely known to mean “to know”, so the term Veda means knowledge. Now, as our text says, the Veda should preach kindness to creatures, and therefore those books which preach the doctrine of हिंसा cannot be called वेद but a कर्वाल, i. e., sword.

## XXVII.

[Acyutendra and Pratindra were next born as prince Vajranābhi and merchant Dhanadeva. Vajranābhi became a monk after having handed over his kingdom to his son Pavidanta or Vajradanta. Dhanadeva also became a follower of Vajranābhi. Now Vajranābhi, by his hard penance, acquired the acts which secured for him the Tirthaṅkara nāma and gotra, and in due course was born in the Sarvārthasiddha heaven as Ahamindra. Dhanadeva also was born as Ahamindra in the same heaven. In the following birth Vajranābhi was born as Risaha and became the first Tirthaṅkara and Dhanadeva was born prince Seyaṃsa. Similarly Risaha narrated the births of several others of his followers including his sons. Bharata then asked the Tirthaṅkara as to how many Tirthaṅkaras, Vāsudevas, Baladevas, Prativāsudevas and Cakravartins would there be in future. Risaha mentioned their number. Bharata then offered a prayer to Risaha.]

8. Note that this kaḍavaka summarises the ten previous births of Risaha. They are :—जयवर्मन, विद्यार्थेन्द्र, महाबल, ललिताङ्ग, वज्रजय, श्रीधर, सुभीष, अच्युतेन्द्र, वज्रनाभि and सर्वार्थमिद्वाहमिन्द्र. Similarly the previous births of Seyaṃsa are summarised here.

12. 5-8 महु णत्तिउ तुह तणुरुहु मरिइ—The passage says that मरीचि, the son of मरु, will be the twentyfourth Tirthaṅkara named वर्धमान.

## NOTES, XXVIII.

On hearing this prophecy मरीचि was delighted and danced out of joy. This exhibition of pride and joy on his part was responsible for his long wanderings in Samsāra. He was destined to be the teacher of Kapila, the author of Sāṃkhyasūtras. Compare Hemacandra, Triṣaṣṭi. VI. 373-390.

## XXVIII.

[ Bharata then returned to Ayodhyā and performed some propitiatory rites for his dreams. He made gifts to the needy and the poor and led a pious life. He ruled as a good and noble king, explained to his feudatories how they should behave as kings.

Gautama, the pupil of Mahāvira, continued the narration further and said to Śrenika as follows:—King Somaprabha had fourteen sons. The eldest of them was called Jaya. He was crowned and placed on the throne. His father and his uncle Seyaṃsa became monks. When one day King Jaya went to the pleasure-garden he saw a monk preaching and a snake and its mate listening to it. King Jaya came to that very place next year when he found that the snake had left the female snake which then formed friendship with a low class snake called Divaḍa. The king touched them with the lotus-flower in his hand. The king narrated the event to his wife at night, when there arrived a god and told the king that he was the snake and that his wife, the female snake, after being touched by the king, was killed by his attendants and became a goddess. The god thereafter gave to king Jaya heavenly garments and went away.

Now a minister of Jaya came and told him that there was a beautiful princess named Sulocanā, daughter of king Akampana and queen Suprabhā. Her father saw her in youth and thought he should find out a suitable husband for her. He accordingly arranged to hold a Svayanvara. King Jaya attended this and was chosen by Sulocanā there. Arkakīrti got angry because he was rejected and wanted to fight with Jaya. At this juncture Sulocanā went to the Jina and took a vow that if any of the two, viz., Arkakīrti or Jaya dies on her account in the fight she would die by renouncing food. In the fight however king Jaya defeated Arkakīrti and arrested

## MAHĀPURĀNA

him. Sulocanā therefore returned home. In the meanwhile Jaya also approached Arkakīrti and coaxed him to give up his anger towards him.]

20. 11b मेहेसरु जि ह्क्कण्डि राएँ, king Jaya was called मेहेसर or मेघस्वर because his voice resembled that of a cloud. Our text gives मेहेसर here and also in 28. 4a, but elsewhere we find the name as प्रणव in 21. 15 ; जलहरसर in 23. 7b ; जीपूयजाय in 28. 9b. Metrically मेहेसर here is not good, but in 28. 4b it is quite right. In T. also under 30. 10b we get मेघेश्वरगमित्रः .

### XXIX.

[King Jaya returned home and paid homage to his father. While returning home he stopped on the bank of the Ganges, when an elephant attacked Sulocanā, but her life was saved by the guardian deity of the forest who gave her presents. Sulocanā then asked her who she was. She then told her that she was called Vindhyaśrī, the daughter of Vindhya ketu and Priyaiguśrī, and obtained her present position because of the fact that Sulocanā taught her the mantra of five Paramēsthis. Now the female snake touched by king Jaya and killed by his servants became a crocodile in the Ganges and sent out of enmity the elephant to attack Sulocanā.

One day when king Jaya was seated in the court, he saw a couple of divine beings. He recollected his previous birth, and fell into a swoon saying "O, where is Prabhāvati?" Sulocanā also fainted saying "Rativara, where are you?" On recovering from the faint, she said that she was a female pigeon and Jaya was her lord then. When king Jaya asked her to narrate their former life, Sulocanā said :

In the town of Śobhāpura there was a king named Vratapāla and queen Devaśrī. There lived the minister Śaktiṣeṇa and his wife Ataviśrī. One day a beautiful orphan came to him. The minister asked him why he had been wandering in the childhood. The boy then told the minister that he was driven out by his step-mother from the house as he did not keep watch well on the house. The minister

Saktiṣeṇa therefore adopted him as his son and named him Satyadeva. Sulocanā continues the narrative of her past lives and also of the boy, Satyadeva ].

5. 2a सुयावर, daughter Sulocanā and her husband Jaya. 8a पङ्कुडिहि, in the tent.

9. 10a अनिआउसाई i. e. five letters अ, सि, आ, उ and सा, standing for the initial letters of the five परमेष्ठिs, viz. अरहन्त, सिद्ध, अत्यरिय, उवज्जाय and साहु. Thus अनिआउसा becomes a sort of मन्त्र which the Jains put on par with ओंकार and such other mystic syllables. Compare XXXV. 12. 10 where also the same mantra occurs.

11. 11-12 पागवइ हउं etc. Sulocanā says that she was a female pigeon named Ravṣienā, while king Jaya was a male pigeon called Rativara. 14 कइयवण जणु सज्जइ, people are overcome (सज्जइ, lit. swallowed) by tricks. The co-wives of Sulocanā did not believe the story as narrated by her and therefore said that it was a trick by her to win the love of king Jaya.

12. 4 The story of the former lives of Jaya and Sulocanā begins here. 8a अडइसिरि is mentioned in the sequel as वणसिरि (See 13. 7a). 13 परमायए, by my step-mother.

16. 4a चरण is a class of ascetics. This class has two types, viz., Jamghācārana and Vidyācārana. Both the classes are capable of flying through the sky. Jamghācārana acquires the art of flying as a result of his fast of four days and the Vidyācārana does it as a result of his learning and fast of three days.

21. 8-9 The pair of pigeons was asked by their master as to where the sinners go and the pair would show by their beaks the region underground, viz., the hell; and as to where the meritorious go, the region above, viz., the heaven.

24. 4 तहिं एकु etc. There is one plate containing five jewels. He who discovers it will marry Priyadattā.



## MAHĀPURĀṆA

### XXX.

[ Sulocanā continues the narrative of her previous births, particularly of her birth as Prabhāvati and of Jaya as Hiranyavarman. There they practised penance as ascetics and passed through several births on the earth as well as in heaven. In one such births they were born as gardener and his wife when they used to offer flowers to the Jinas. One day they were both bitten by a snake and died but cherished a hankering for the enjoyment of pleasures. They were born next as Sukānta and Rativegā. ]

6. 10*b* हिरण्यवम्—This name occurs elsewhere, e. g., 20. 8*b*, 20. 8*a* and 22. 4*a* as सुवण्णवम्म, कंचणवम्म and कणयवम्म.

12. 9*b* विचइ चडावियाई सिरि जेतइं, the lady raised her eyes or pupils of her eyes, towards her head. This is considered to be a sign of approaching death. Compare डोजे वर चदविणे or फिरविणे in Marathi.

15. 4*b* तियमइ, i. e., खामति, i. e., wicked mind of a woman or a woman.

### XXXI.

[ Sukānta and Rativegā recollected then their former life. They met in that birth a monk, who had but recently renounced the worldly life and said he did not know much of the sacred Law, but he told them the salient features of the Jain faith. Sukānta then asked the monk the reason why in youth he became an ascetic. Thereupon the monk gave him the story of his life.

Incidentally there is a mention of a story of a merchant named Suketu and his rival Nāgadatta. Nāgadatta had a wife named Sudattā. One day, while Suketu's wife was carrying food for her husband, she met a monk to whom she served it at the nāgagrha of her husband's rival. There appeared, as a result of this gift five wonders, particularly a shower of gold and gems. Nāgadatta then said that the wealth belonged to him as it fell in the nāgagrha belonging to him. Thereupon Suketu said to Nāgadatta that the wealth really belonged to his wife as it was due to gift made by her. Nāgadatta thereupon took all the

## NOTES, XXXII.

wealth and went to the king, but the wealth handed by Nāgadatta immediately turned into charcoal, and his servants were frightened by goblins. Nāgadatta then handed over the wealth to Suketu. The next day Nāgadatta discovered one more gem in the temple and in anger tried to crush it with a big piece of stone, but the stone hit him instead. Nāgadatta propitiated the Snake in the temple and asked a boon to have an army that would defeat Suketu. The snake however said that it was not possible to kill Suketu. Suketu subsequently renounced the worldly life, and after death was born as a god. His wife, Vasumdhārā became a nun, and was born as a god in heaven changing her sex. ]

3. 8a णवमवणु, a monk who has been but recently admitted to the Order.

10. 9 ह्यामुत्ते etc. A fly is caught up in the web of a spider and not an elephant. A fool falls a victim to a courtesan, but a wise man becomes disgusted with her.

24. 1a फणिदत्तु, i. e. merchant Nāgadatta.

25. 10a विवस्त्रवहसेण, i. e. by Nāgadatta. 12 रुद्रहियकई, gems that put into background the lustre of the sun.

27. 5a धनसंसह etc. Nāgadatta thus become inferior to Suketu, the husband of Vasumdhārā, in point of wealth.

## XXXII

[Jaya asked Sulocanā again to narrate to him the happenings of their previous life, particularly those which were told by the Jina Guṇapāla. Thereupon she gave the narrative of Śrīpāla and his adventures. Śrīpāla and Vasupāla were the sons of king Guṇapāla and queen Kuberaśrī. Guṇapāla renounced the worldly life and became a monk. One day a report was brought to her that a sage named Guṇapāla had arrived in the grove and the queen went to see him. Under a banyan tree in the grove there was a temple of a yakṣa, and people were engrossed in festivities. A pair of ladies, of whom one was dressed as male, were dancing there. King Vasupāla

## MAHĀPURĀṆA

did not like the dance of a man and woman when his brother Śrīpāla said that they were not man and woman but both women. It was prophesied that the person who would recognise the lady in man's dress was destined to be her husband. This was the starting point of numerous adventures of Śrīpāla who took a horse that disappeared in the sky. It was prophesied that Śrīpāla would return safe on the seventh day. Now Śrīpāla was really removed by a demon in the form of a horse. When the demon began to fight with Śrīpāla there arrived a yakṣa named Jayapāla to help him. After escaping from the demon, Śrīpāla met six Vidyādhara girls whom he ultimately married as also Vidyudvegā, a Vidyādhara girl, Sukhāvati, and Vappilā.]

11. 1a-b तुङ्गं जि णह्णु etc.—You yourself are my lover ; for you have caused the pangs in my body. Are there other signs of a lover such as a horn on the head ? To have a horn on the head was considered to be an extraordinary sight and hence proverbs in the vernaculars डोक्यावर शिंगे असणे etc.

### XXXIII.

[ Sukhāvati, mentioned in the previous Samdhi, was a Vidyādhara girl, and possessed miraculous powers. She first showed herself to be an old lady and as soon as Śrīpāla showed to her that he possessed powers to cure any ailment, she gave up the form of an old lady. Both of them then went to Siddhakūtā and offered prayers to the Jina. All the young girls who loved Śrīpāla arrived there. In their presence Sukhāvati showed her powers once more, made Śrīpāla an old man and still loved him, thus causing her friends to laugh at her. There he cured the bend in the neck of a prince and married his sister Prabhāvati. In the meanwhile Aśanivega, the brother of Vidyudvegā, arrived there, recognised Śrīpāla, attacked him, but he disappeared from there with the help of Vidyudvegā.]

11. Note effects of devotion to the Jina mentioned in the Kaḍavaka. 13 विट्टि वि भङ्गउ वासर, even a rainy day becomes a fair day on account of the devotion to the Jina 14 सगु वि कमलु सकेसर, a sword becomes like a lotus full of filaments.

XXXIV.

[Sukhāvati came back home and her father thought of arranging her marriage with Śrīpāla, but he desired to see his elder brother before that event. He was accordingly being taken to Puṇḍarīkiṇī. He met a number of adventures on the way, and got an excellent elephant in the forest. The elephant had first a mind to attack him, but it was ultimately overcome by Śrīpāla.]

2. 5b जियसत्तुं सलिलसेणु मण्ड, Jitaśatru, the father of Sukhāvati said to his son Salilaseṇa, i. e., Vāriṣeṇa, to escort Śrīpāla to his town. सलिलसेणु and सरसेणु in 3. 7b are only synonyms of वारिषेण.

9. 15 दिहादिद्वसरीरी, one, i. e. Sukhāvati, who makes her person appear and disappear as the occasion demands.

XXXV.

[Sukhāvati now took Śrīpāla, in the presence of the crowd, towards Puṇḍarīkiṇī through the sky, and brought him to the region where the wicked horse left him. Nāgabala then offered the hand of his daughter Śaśilekhā to him. After marrying her, Śrīpāla was led further by Sukhāvati. In the meanwhile two Vidyādharaś met him and asked him to strike a stone pillar, saying that if he could cut the pillar into two with his sword, he would become a Cakravartin. Śrīpāla did cut it into two. On his way many kings offered him their daughters and in course of time he secured all the gems that a Cakravartin should possess. On the way he fought with Dhūmavega, a wicked Vidyādhara, met his mother in one of his previous births, viz., Satyavati, who had now become a yakṣiṇī. After having gone through many adventures he arrived on the seventh day at his capital, met his mother Kuberaśrī, and brother Vasupāla. Śrīpāla told them that the powers that he attained had been entirely due to the good offices of Sukhāvati, who was his wife.]

16. 11 एवहि जीव वि दिज्जह—Note the corresponding saying in Marathi: इच्यासाठी जीव सुद्धा द्यावा, I shall even sacrifice my life for her.

## MAHĀPURĀṆA

### XXXVI.

[ Śrīpāla was thereupon married to all the girls ; but Vappilā did not like that her husband should marry so many ; hence she returned to her father's house. Śrīpāla however went there and persuaded her to return home. Similarly he caused Sukhāvati also to return to him. Thereafter he got the seven living gems of the Cakravartin such as senāpati etc., and in due course the cakra also made its appearance in his armoury. All the wealth that came to the king was in the charge of Jasavaī, but Sukhāvati thought her to be a miser. The minister however told her that Jasavaī was destined to be the mother of a Jina. In course of time Jasavaī gave birth to the Jina who was named Gunapāla. Śrīpāla, in course of time, placed the son of Sukhāvati on the throne and went to practise penance under Gunapāla, his son.

Sulocanā narrated the above story to King Jaya. He then remembered fully his previous lives and obtained all the vidyās that he then possessed. Priyaṅguśrī however thought that Sulocanā had been giving a story which was not true. In order to convince her king Jaya and Sulocana went up into the sky to offer worship to Risaha. On their way Indra put a temptation to trap king Jaya, but he stood the test well. Indra was pleased with him and offered him a boon. King Jaya thereupon arrived at Kailāsa, and offered a hymn to all the twenty-four Jinas whose temples were built by King Bharata. ]

4. 21 सज्जीविहं रयणहं, the seven living gems of a cakravartin, viz., सेनापति, गृहपति, अश्व, गज, स्त्री, रथपति and पुगेहिन as opposed to lifeless gems such as चक्र etc.

8. 9a इज्ज्वतं सहं विहि कप्पडेहिं, the dead body is burnt along with two pieces of cloth, which is the only property that the dead take with them.

### XXXVII.

[ King Jaya with his queen saluted the images of the coming Jinas and then went to Samavasaraṇa where Risaha was seated in the midst of gods, men, women, monks and nuns. He saw there his

father and uncle who had also become monks and came to stay there. Sulocanā saw her father Akampana who also had become a monk and her several other relatives. Jaya then recited a hymn to praise Risaha, at the end of which he requested Bharata to allow him to be a monk. Bharata at first did not like it, but at the intervention of Indra allowed him to do so. Sulocanā also allowed him to be a monk. He was then admitted to the Order of monks and studied the sacred books. Sulocanā became a nun after him.

Now Risaha explained to Bharata all the principles of the Jain faith. Bharata then returned home and saw the same night a dream in which Meru was shaken. Next morning he asked his priest what the dream signified. The priest said that Risaha was about to attain emancipation. Bharata then immediately went to Kailāsa. Indra also came there to arrange for the celebration of the nirvānakalyāṇa of the Jina. Indra and other gods made a funeral pile of several fragrant trees, Agni-kumāras produced fire to light the pile, and his body was burnt to ashes which were saluted by all gods. Risaha attained emancipation on the fourteenth day of the dark half of the month of Māgha.

Bharata returned to Ayodhyā. One day he found a gray hair on his head. At this indication he handed over his kingdom to his son, renounced the world, soon attained kevalajñāna and obtained emancipation from saṃsāra ].

6. 9) एयाणेयवियप्पणार्णं, by the law which has modes of expression such as एकत्व and अनेकत्व. I take this to refer to the famous सप्तभङ्गीनय in the form स्यादस्ति एकम् etc. See 7. 3b below where we get express mention of सप्तभङ्गी.

7. 1b) समयहं तेसद्दहं तिण्णि समयहं, i. e., three hundred and sixty-three systems of heretics. There are frequent references to this number of the systems of heretics in Jain literature. This number is made up as is mentioned in the famous stanza :—

असिदिंसिंदं किग्घिणं अक्किरियाणं च आहु सुँलसीदी ।  
सत्तंही अण्णणी वेणडयाणं च होदि धँत्तीसं ॥१॥

## MAHAPURĀNA

12. 6b जेवढु सलिलु तेवढु णालु णिणज्जइ णल्लिणहु, the lotus plant has as much (length of its) stalk as (the depth of) water in which it grows, neither more nor less. Similarly Jiva has the same period or extent of saṃsāra as its acts have made it to be.

15-17. These three kaḍavakas mention some of the tenets of Jainism arranged in consecutive and increasing numbers as in XVIII. 10-11. The terms or items are not entirely identical, but a number of them are repeated. I therefore do not give exhaustive treatment of these terms as I did there, but I think some of them require explanation which I quote chiefly from T.

15. 1 गुणु मोक्खु तउ वि पोमलु वि दुविहु, णिज्जरु वि दुविह वज्जरइ अरुहु—गुणु जीवगुणः पुद्गलगुणश्च, मूलोत्तरगुणा वा; मोक्खु अर्हदवस्था सिद्धावस्था च, तउ बाह्यमाभ्यन्तरं च; पोमलु अणु स्कन्धं च; णिज्जरु विपाकजा इतरा च. 3a जीवई गईउ क हिंया उ ति णिण पाणि-मुक्ता लाङ्गली गोमूत्रिका च. 3b जगवेढणमरु घनोदधि-घननिलय-तनुवाताः. 4a जगि जोय ति णिण कायवाङ्मनोयोगाः. 5b बालाइउ च उ विहु भणि उं मरु णु बालमरणं बालपण्डित-मरणं पण्डितमरणं पण्डितपण्डितमरणं च, बालबालमरणस्य बालमरणान्तर्भावान्. 6a च उ विहु पमाणु प्रत्यक्षानुमानागमोपमानानि. It is rather strange that a Jain writer should mention these four pramaṇas as against pratyakṣ and parokṣ. च उ विहु जि दाणु अभया-हारोषधशास्त्रदानानि. 6b च उ विहु दव्वाइ उ द्रव्यक्षेत्रकालभावाः. 7a च उ भिण्णा मन्दमन्दतर-लीघ्रतीघ्रतस्वभावेध्वतुर्धा भिन्नाः, च उ विहु कसाय अनन्तानुबन्धिअप्रत्याख्यानप्रत्याख्यानसंज्वलनानि एकैकस्य भेदाः. 8a च उ विहु जिबन्धु प्रकृतिस्थित्यनुभवप्रदेशाः. च उ विहु जिणा सु नाम-स्थापनाद्रव्यभावभेदेन चतुर्विधो न्यासः निक्षेपः. 8b विण उ वि च उ विहु ज्ञानदर्शनचारित्र्योपचारिका विनयाः. 9a चत्तारि वि बंधविणा महे उ ज्ञानदर्शनचारित्र्यतगासि 10 सज्जाय पंच वाचना-प्रच्छन्नानुमेक्षास्त्रायधर्मोपदेशाः. (पंच) आया र विहि ज्ञानदर्शनचारित्र्यतपोवीर्याणि. 11 णिभं थ पंच पुलाकबकुसकुशीलनिर्ग्रन्थस्नातकाः. जोइस कुल ई पंच सूर्याचन्द्रमसो ग्रहनक्षत्रप्रकीर्णतारकाश्च.

16. 2a आसवणि बन्धहेऊ उ पंच मिथ्यात्वाविरतिप्रमादकषाययोगाः. 2b लद्धी उ दानलाभभोगोपभोगवीर्याणि. महाणरया वि पंच रौरवासिपत्रकूल्मलिकुम्भीयाः (?). 3a संसार द्रव्यक्षेत्रकालभवभावाः; सरीर ई हें ति पंच ओदारिकवेक्रियकाहारकतैजसकर्मणानि. 4b समय पइ दर्शनानि. 5b सत्ताहोमही उ ससनरकभूमयः. 6a पयई उ अहु अष्ट कर्मप्रकृतयः. 6b षण्ण देव व्यन्तरदेवाः अष्ट किंनरकिंपुरुषमहोरगगन्धर्वयक्षराक्षसभूतपिशाचाः. जीवगुण ते वि अहु सम्यग्दर्शनादयः; अथवा, अणिमामहिमालघिमात्राग्निप्राकाश्वेशित्ववशित्वकामरूपित्वामिति. 8b वेज्जा-वच्चु वि दह विहु आचार्योपाध्यायतपास्विक्षेत्रमलानगणकुलसंघसायुमनोज्ञानाम्. 9a दह भावणसुर असुरनागविसुत्सुपर्णाभिवातस्लनितोदधिद्वीपादिष्कुमाराः. 9b क णि स ति म ह द ह दि ति ग य सु हा ति धरणेन्द्रचन्द्रसहिनाः अष्ट लोकपालाः.

NOTES, XXXVII. 20

17 1a सिद्धं तासिया इ 2a च उदह मल चतुर्दश मलादयः द्वात्रिंशज्जिनोपदेशपर्यन्ता  
बाहुबलिकेवलहानोत्पत्तिसमये व्याख्याताः .

20 6b णिञ्चालियाइ निष्परिस्पन्दानि कृतानि, were rendered inactive. 10a  
अच्छंतु वि अंगु ण लिबइ देउ, Risaha, although he still existed as a soul, had  
given up all contact with body. At the time of मोक्ष the soul exists, but  
it is not in any way connected with physical body. 11 वसुसमहिं सिद्ध-  
गुणहि—for the eight qualities of a सिद्ध, see page 630, (8) (b).

---





## GLOSSARY OF IMPORTANT PRAKRIT WORDS

[ In this Glossary only some rare and important Prakrit words are indexed and their convenient equivalents in Sanskrit are supplied. Only one occurrence of the word, usually the first, is noted. A complete glossarial index of Prakrit words is no longer a necessity as dictionaries like *Paiyasaddamahannavo* are now available. M stands for Marathi. ]

- अइमल्लहइ-मन्दगमनं करोति xv. 18. 7  
 अइवत्त-अतिमुक्तक xl. 1. 8  
 अक्का-माता xvi. 25. 12  
 अट्टिलिय-अस्थिका ( cf आठळी M )  
 xxxii. 22. 6  
 अब्भिट्ट-अभिगत xxxii. 6. 13  
 अम्मणु-कियन्मात्रम् ( cf अंमळ M )  
 xxv. 2. 5  
 अम्माहीरअ-रागध्वनिविशेष iv. 4. 13  
 अलियल्लि-श्याघ्र xiii. 18. 9  
 अल्लय-करमल, आर्द्रक xxxi. 24. 4  
 अल्लवइ-समर्पयति, xxxi. 8. 3  
 अल्लिवइ-समर्पयति xxxi. 28. 3  
 अवरुंडइ-आलिङ्गनि i. 17. 13  
 अवरुंडिय-आलिङ्गित vi. 5. 11  
 अवसें-अवश्यम्, xv. 22. 10  
 अविहंडिय-परिपूर्ण x. 3. 13  
 असराल-बहुल xix. 2. 4  
 भालुंखिय-आस्वादित xiii. 11. 4  
 आहुइ-अर्धचतुर्थं xi. 25. 2  
 उच्चोलि-कटीवस्त्र, नीवी ( cf ओटी M )  
 (H gives उच्चोल i. 131) xxii. 15. 10  
 उट्टेट-उन्मत्त xxx. 4. 7  
 उप्फाल-पट्टहध्वनि xxxi. 15. 6.  
 उब्भिय-ऊर्ध्वीकृत vii. 21. 18  
 उल्लुरिअ-कान्द विक ( A baker )  
 xxv. 21. 1  
 उल्लहाइ-अङ्गारावस्थो भवति v. 5. 4  
 उव्वार-उद्धारण, रक्षण, xvi. 21. 11  
 उव्वारुअ-अवशिष्ट ( cf. उर्वरित M )  
 xxxvii. 25. 3  
 ओइल्ल-उपरितन xl. 5. 4  
 ओम्माहिय-उन्माथित, उत्कण्ठित  
 xxxvii. 23. 11  
 ओरालि-शब्द ( cf. ओरड M ) v. 1. 7  
 ओरालिअ-आक्रन्दन xxviii. 29. 1  
 ओल्लिगिय-सेवित vi. 5. 5  
 ओहइइ-हीनं भवति vii. 18. 7  
 ओहामिय-तिरस्कृत iv. 4. 4; अभिमूत  
 xviii. 1. 5  
 ओहुल्लिय-म्लान vii. 10. 1  
 कउल-चावाक, कापालिक xl. 17. 8  
 कक्कर-पर्वतशिखर xxxi. 23. 7  
 कक्खड-कर्कश, निघुर xl. 13. 10  
 कडप्प-संचान, समूह viii. 7. 6  
 कडिल्ल-कटिसूत्र iv. 4. 5  
 कड्डुअ-सुम्बकपाषाण xx. 19. 2  
 कणइल्ल-शुक xiii. 7. 7  
 कप्पड-कर्पट, वस्त्र ( cf. कापड M )  
 xxxvi. 8. 9  
 कब्बड-वसतिविशेष v. 21. 3  
 कयंर-धूलि ( cf. कचरा M ) xxviii. 2. 14  
 करंड-स्थागिका iv. 19. 9  
 करोडि-शिरोस्थि ( cf. करोटी M )  
 xii. 17. 8  
 कलमलअ-कालुष्य, ईर्ष्याजनित सेद ( cf.  
 कळमळ, तळमळ M. ) xxxvi. 2. 6  
 कसर-बलीवर्द, vii. 20. 4; वसंतर viii. 2.  
 18; गोयुवा xxviii. 28. 7.

## MAHĀPURĀNA

- कसर-पाण्डुर XXXII. 20. 14  
 कसेरु-वृण I. 3. 12  
 कंकोलि-अशोकवृक्ष IV. 1. 5  
 कंदोद-नीलोत्पल XXIX, 6 5  
 किम्मीर-विचित्र VII. 19. 3  
 किलिगिलिय-शब्दानुकार XV. 1. 6  
 कुडुष-वादनकाष्ठ IV. 10. 10  
 कुढ-पृष्ठ XXIX. 14. 11  
 कुद्दीर-चन्द्र XVII. 4. 5  
 कुवलीहल-बदर XXXII. 20. 15\*  
 कुसुमाल-चोर XXXI. 18. 4  
 कुहिणि-मार्ग XXXV. 13. 6  
 कुंड-जलद्रोणी IV. 3. 7  
 कुंयारि-कुमारी XXXIII. 2. 4  
 केया-वरत्रा, रज्जु XII. 11. 5  
 केर-आज्ञा XVI. 6. 9  
 कोक्काविअ-आहूत, आकारित XXIX. 27. 9  
 कोक्किय-आहूत V. 17. 15  
 कौच्छर-दक्ष IV. 18. 1  
 कोट्ट-प्राकारभित्ति (cf कोट्ट M) XXIV. 9. 11  
 कोडु-कौतुक XIII. 6. 1  
 कौड-जलद्रोणी IV. 3. 7  
 खरियालइ-कदर्थयनि XXXII. 23. 1  
 खुत्त-क्षिम, महत् XXXI. 23. 6  
 खुप्पइ-क्षिप्यते XXXV. 9. 9  
 खुप्पंत-निक्षिपन् XIV. 7. 10  
 खुरप्प-क्षुप्र (cf. खुरपें M) XI. 1. 9  
 खेउ-आलिङ्गन XXIX. 19. 2  
 खेव-आलिङ्गन XIII. 8. 7  
 खेड-वसतिविशेष V. 21. 3  
 खेरि-वैर VIII. 1. 11  
 खोल्ल-गम्भीर (cf. खोल M) II. 13. 9  
 गणियारी-हस्तिनी XVI. 23. 5  
 गलत्थिय-कदर्थित XXXI. 27. 9  
 गलमोडी-गलवक्रत्व XXXIII. 4. 11  
 गलहत्थण-प्रसन VIII. 5. 7  
 गंजोल्लिय-रोमाञ्चित XIV. 12. 12  
 गाउय-गन्वृति X. 14. 10  
 गिल्ल-आर्द्र XXIX. 5. 3; प्रस्त  
 XXXII 13. 9  
 गीढ-युक्त IV. 16. 3  
 गास-प्रभात I 16. 10  
 गौळ-गुच्छ (cf. घोंस M) I 3. 7  
 गौदल-संग्राम (cf. गोंधर M) XI. 16 9  
 गौदलिय-मिलित I. 3. 7  
 घणघण-सातिशय III. 1. 6  
 घत्थ-प्रस्त IX. 7. 3  
 घल्लइ-क्षिपति (cf. घालणें M) III. 16. 10  
 घल्लिय-क्षिम VII. 5. 12  
 घंघल-आपद् XXXII 7. 2  
 चक्खइ-सादति, आस्वादयति (cf. चाखणें M)  
 II. 19. 4  
 चट्ट-शिष्य I. 16. 1  
 चडइ-आरोहति (cf. चडणें M) II 16. 1  
 चडाविय-आरोपित XXX. 12. 9  
 चप्पिवि-हृतात्, दृढम् VII. 13. 12  
 चप्फल-बहुमलापिन, निष्फल III. 14. 24  
 चवइ-जल्पति VIII. 7. 3  
 चंग-उत्तम (cf. चांग, चांगलें M) IX. 4. 14  
 चंगअ-उत्तम VI. 2. 12  
 चंचेल-वक्र XXIII 4. 13  
 चंदकव-मयूर XIII. 7. 10  
 चाउरि-शय्या (गादीति देशी T.) VI. 1. 6.  
 चिक्खल्ल, चिक्खल्ल-कदम II. 13. 9  
 चिच्चि-अग्नि X. 11, 11  
 चिडउल्ल-चटक IX. 8. 14  
 चिडुइ-आर्द्रभिबति (cf. चिडणें M)  
 II. 20. 11  
 चिम्मक्कइ-चमस्कृति करोति XVI. 2. 3  
 चिम्मक्कइ-भ्रमति XXIX. 15. 3  
 चिलिच्चिल-भीमत्त (cf. चिडवीड M)  
 XX. 10. 11

GLOSSARY OF PRAKRIT WORDS

- चुकर**-भक्षयति IV. 8. 5  
**चुणह**-भक्षयति XVI. 13. 2  
**चुणय**-अरोचकव्याधि XVI. 3. 7  
**चुरलि**-ज्वाला XXXII. 16. 14  
**चुहुर**-लगति XVI. 7. 10  
**चैचइय**-अलंरुत III. 2. 4  
**चोअ**-कौतुक, आश्चर्य ( cf चोज M )  
 VIII. 7. 23  
**चोवाण**-याए I. 16. 10  
**चौमल**-बीभत्स, समूह ( cf चुंयळ, चुंभळ M )  
 XXVII. 27. 1.  
**छजइ**-राजते, शोभते ( cf सजणें M )  
 I. 14. 3  
**छडउल्लअ**-संमार्जन, जलादिनिक्षेप  
 ( cf सडा M ) XVI. 1. 12  
**छडयण**-धम IX. 18. 4  
**छलि**-त्वक् ( cf साल M ) XXXVII. 20. 10  
**छंडइ**-परित्यजति ( cf सांडणें M )  
 VII. 19. 15  
**छाहि**-छाया ( cf साहली M ) XVII. 3. 12  
**छिवइ** स्पृशति ( cf सिवणें, शिवणें M )  
 IV. 5. 13  
**छिप्पइ**-स्पृशति ( cf शिवणें M ) VI. 2. 13  
**छिक**-छिका ( cf शिक M ) XXVI. 4. 2  
**छुडु**-क्षिप्य II. 19. 1  
**छोडअ**-छटिका, छुटिका XXIV. 8. 1  
**छोइ**-सोभ, विक्षेप XVII. 1. 6; क्रोध  
 XXIX. 18. 8  
**जडिल**-कुङ्कुम XXVIII. 1. 3  
**जंपाण**-शिबिका ( पालसीति देशी, T. ) VII. 1. 7  
**जांवाय**-जामाता XXXIII. 4. 16  
**जूरण**-सेदन VII. 6. 12  
**जूरिय**-निर्भर्त्सित VII. 5. 5  
**जेंवइ**-मुंके XVIII. 7. 11  
**जोइय**-दृष्ट XVIII. 9. 4  
**जोक्खइ**-तोलयति ( cf जोखणें M )  
 IV. 5. 5  
**जोक्खअ**-तोलित XVIII. 9. 5  
**झडप्पइ**-आक्रमति ( cf सडप M ) XXX. 4. 9  
**झडप्पण**-ताडन ( cf सडप M ) XXV. 4. 8  
**झडप्पिय**-पतन VIII. 3. 9  
**झलक**-पूर्णाञ्जलि ( cf चुळक M ) XVII.  
 13. 6; ओण्य XXXIV. 2. 11  
**झलझलिय**-ध्वन्यनुकरणे शब्द ( cf मुळमुळ  
 वाहणें M ) XII. 2. 13  
**झलुक्खिअ**-संतापित ( cf झळ M )  
 XXIX. 23. 11  
**झंपइ**-आच्छादयति ( cf झंपणें, झांणें M )  
 I. 11. 4  
**झंपड**-नेत्रयोरधोन्मीलन ( cf झंपड M )  
 XII. 12. 5  
**झंपिअ**-आच्छादित XXVI. 14. 9  
**झुलइ**-कम्पते ( cf झुलणें M ) XIV. 5. 12  
**झुंयुक्क**-स्तचक ( cf झुयका M ) IV. 9. 9  
**झेंदुअ**-कन्दुक ( cf चेंडू M ) I. 16. 10  
**झेंदुलिया**-पुंश्वली ( cf शितळ M )  
 XV. 6. 15  
**डकर**-शिलासकल ( cf टोकर M )  
 XXXI. 16. 4  
**टिट**-पुंश्वली XXIX. 18. 9.  
**टेट**-वृन्त ( cf टेंठ M ) XII. 9. 18  
**डर**-भय ( cf डर M ) XXV. 8. 9  
**डंकिय**-दष्ट XXX. 12. 8  
**डाल**-शाखा ( cf डाहाळी, डाळी M ) I. 18. 2  
**डाधि**-मुद्रा, मुद्रिका XXXV. 5. 3  
**डुंग**-समूह IX. 2. 27  
**डेंवंत**-धावन् XVII. 2. 8  
**डेंडुइ**-दुण्डुभ XVI. 20. 9  
**डोलइ**-आन्दोलनं करोति ( cf डोलणें M )  
 IV. 18. 2; कम्पते XV. 18. 3  
**ढलइ**-च्यवति ( cf ढरणें M ) XXXI. 19. 12  
**ढलइलिय**-चालित XVII. 7. 5  
**ढलिय**-स्वस्त VIII. 9. 12

MAHĀPURĀṆA

- ढंकर-आच्छादयति ( cf साकणे M )  
 I. 13. 10
- ढंकिय-आच्छादित XIII. 11. 1
- ढंख-पुष्पपत्रफलर ह्येन वृक्ष XIX. 13. 5
- ढंढर-राक्षस XXXI. 26. 6
- ढालह-चालयति ( cf ढाळणे M ) XIV. 10. 7
- ढिल्लीह्वय-शिथिलीभूत ( cf ढिल्ले M )  
 XXXII. 3. 5
- णक-नक, जलचर XXXV. 12. 7
- णग्गोर-कपूर् XII. 10. 7
- णाहल-शहर XV. 1. 9
- णिकसुत्तउं-निश्चितम् XI. 9. 7
- णिकसुत्तु-निरन्तरम् XX. 1. 7
- णिच्छट्टह-स्सलति IV. 15. 11
- णिडुरिय-निष्कासित XXXV. 1. 14
- णियह-अवलोकयति V. 15. 9
- णिययणी-वरात्रा, रज्जु XXV. 18. 12
- णिरारिउ-अतिशयेन XIII. 7. 13
- णिरिक-चोर XXIX. 17. 3
- णिरु-अतिशयेन XIII. 11. 11
- णिरोविय-अर्पित XXIX. 20. 2
- णिहेलण-गृह III. 1. 10
- णिसाड-निशाचर, राक्षस XVI. 26. 8
- णीवह-विध्यापयति ( cf. निवणे M )  
 II. 19. 10
- णंसर-सूर्य I. 1. 1
- णेहीर-कुङ्कुम XXV. 9. 12
- तकारि-साराथि XII. 13. 9
- तरु-शीघ्रम् XXV. 19. 13
- तलप्य-करप्रहार IV. 11. 7
- तल्ल-सुद्रसर्गम् ( cf तळे M ) XXV. 2. 8
- तंडअ-समूह ( cf तांडा M ) XVI. 22. 8
- तारुअ-कर्णधार XXV. 9. 3
- तिगिच्छि-मकरन्द, पराग IX. 21. 14
- तिडिक-स्फुलिक XXXVII. 21. 10
- तिया-स्त्री I. 15. 4
- तियाउस-भस्म XXXVII. 22. 9
- तिगिच्छि-मकरन्द, पराग V. 1. 10
- तिगिच्छि-मकरन्द, पराग XI. 5. 6
- तुय-स्त्री IX. 22. 9
- तुप्प-घृत ( cf. तूप M ) XXVI. 1. 5
- तुंदाहि-गण्डूपद VII. 12. 7
- तुह-तट XXIX. 8. 9
- तौंड-मुस ( cf. तौंड M ) V. 3. 3
- तौंतडिल्ल-मिश्र XXVIII. 1. 5
- तौंद-उदर XX. 23. 3
- थड-समूह XII. 3. 19; स्तचक XIII. 6. 5
- थत्ति-स्थान II. 15. 12
- थद्ध-घन XII. 11. 1
- थहु-धन XII. 11. 1
- थरहरण-कम्पन VII. 9. 12
- थव-स्तचक ( cf थवा M ) XII. 9. 19
- थिणिर-गलनशील ( cf थिवकर्णे, थियकर्णे M )  
 VII. 12. 10
- थंभ-विन्दु ( cf थेंच M ) III. 14. 20
- दडत्ति-ध्वन्यनुकरणे शब्द ( cf धाडकम् M )  
 IX. 13. 2
- दलवट्टह-छिनत्ति, नश्यति XVI. 23. 6
- दलवट्टिअ-सण्डित, नष्ट XV. 3. 5
- दवक्की-अभानिपात VII. 14. 2
- दवट्टि-शीघ्रम् XXIX. 6. 3
- दह-हृद XXIX. 8. 3
- दंडिखंड-शतजर्जरं जीर्णं सिबितं वस्त्रम्  
 XXII. 16. 22
- दाढा-दंष्ट्रा XVIII. 1. 15
- दविड-सर्पजातिविशेष ( cf दिवड M )  
 XXVIII. 9. 15
- दुण्णोल्लिय-दुरूक VII. 5. 11
- देहलिय-मर्यादा XIII. 10. 1
- देंट-वृन्त ( cf देंड M ) IV. 11. 11
- दोर-सूत्र, रज्जु ( cf दोर M ) II. 16. 2
- धण-धन्या ( स्त्री ) XX. 7. 3

GLOSSARY OF PRAKRIT WORDS

- धाह-** आकाश, कन्दन ( cf धाय ) XIV. 8. 5  
**पारिक-**प्रचुर IX. 24. 12  
**पउलण-**प्रज्वलन, पाक VII. 6. 12  
**पकल-**समर्थ XIV. 7. 5  
**पूछाउहुं-**पञ्चानुसम् XXXIII. 11. 3  
**पहुकह-**प्रसरति XXXII. 17. 2  
**पत्तल-**सूक्ष्म, सुन्दर ( cf पातळ M )  
 XVII. 10. 1  
**परअ-**प्रभात, परोयुः ( cf परवां M )  
 XXXII. 26. 8  
**परइ-**प्रभाते XVI. 20. 12  
**परवाली-**पर+वाळा ( परवाी ) XI. 18. 3  
**परियंदइ-**आन्दोलयति IV. 4. 13  
**परिहत्थं, परिहत्थं-**वेगेन XIV. 1. 20  
**परोहड-**पश्चाद्भाग ( cf परडा, परहुं M )  
 XXIX. 14. 9  
**पह्णडिअ-**परिवर्तित XXXIII. 6. 13  
**पसंडि-**सुवर्ण IX. 7. 1  
**पहुल-**पुष्प ( 1 ), प्रभूत XXV. 8. 5  
**पंगुत्त-**प्रावरण ( cf पांचरूप M ) I. 14. 4  
**पंगुरइ-**पटेन आच्छादयति ( cf पांगुरणं M )  
 IV. 15. 14  
**पंगुरण-**प्रावरण VII. 23. 9  
**पाडिहेर-**प्रातिहार्य I. 18. 9  
**पाण-**चाण्डाल XXXI. 17. 5  
**पालिद्वय-**वंशवेष्टितपताका XII. 9. 4  
**पासुय-**शुद्ध, प्रासुक IX. 7. 4  
**पासुलिया-**पार्श्वस्थिसंघात VII. 12. 4  
**पासेय-**प्रस्वेद VII. 24. 10  
**पाहुण-**अतिथि ( cf पाहुणा M )  
 XXIV. 10. 7  
**पिचइ-**पकं भवति VII. 14. 2  
**पीलु-**हस्तिशावक XXIX. 8. 1  
**पुण्णालि-**पुंश्चली XVII. 1. 7  
**पुलि-**व्याघ्र XXV. 16. 4  
**पेहावेलि-**संभ्रम IX. 18. 16  
**पेल्लिय-**प्रेरित I. 12. 5  
**पोह-**उदर ( cf पोह M ) IX. 8. 15  
**पोहल-**ग्रन्थि ( cf पोहळी M ) XX. 10. 12  
**पोत्ति-**स्नानशाटी IX. 4. 13  
**पोफली-**पूर्णाफलवृक्ष ( cf पोफळी )  
 XXII. 7. 13  
**फिट्टइ-**नश्यति ( cf फिट्ठे M ) VIII. 4. 36  
**फुलंधुय-**भ्रमर IX. 11. 9  
**फुलुदुय-**भ्रमर IX. 11. 9  
**वइसइ-**उपविशति IV. 1. 11  
**वण्ण-**पुत्र इति संबोधने IV. 8. 7  
**वण्णीह-**चातक XII. 7. 2  
**वण्णीहय-**चातक II. 13. 13  
**वाहिरि-**बहिस् XVI. 3. 3  
**वुक्करइ-**शब्दं करोति ( cf मुंकरणं M )  
 VII. 25. 5  
**वुक्कार-**भूत्कार XV. 19. 8  
**वुहुइ-**मज्जति XXXIII. 11. 11  
**वुध-**मूल VIII. 7. 10  
**बोल-**ध्वनिविशेष XVII. 3. 4  
**बोलइ-**जल्पति VIII. 5. 17  
**बोलाविअ-**भाषित IV. 4. 9  
**बोहित्थ-**नौः XVII. 4. 4  
**भउंहा-**भुक्रुटि XXII. 8. 2.  
**भम्म-**सुवर्ण IV. 10. 1  
**भल-**भद्र ( cf. भला M ) IV. 5. 7.  
**भलारअ-**शुभ, उत्तम VII. 17. 11  
**भसल-**भ्रमर IX. 28. 2  
**भंडइ-**कलहं करोति XXXV. 8. 7  
**भिडिअ-**संमुखं गत ( cf. भिडणं M )  
 XVII. 1. 1  
**भुकाइ-**भषति ( cf. मुंकरणं M ) I. 8. 7.  
**भेल-**अतिवृद्ध XXIX. 25. 12  
**भोल-**मूढ ( cf. भोळा M ) II. 20. 7  
**मडण्ण-**गर्व XV. 15. 11  
**मडइ-**सुन्दर XII. 12. 3

MAHĀPURĀNA

- मडहा-तन्वी, लब्धी XVI. 26. 2  
मडब-वसतिविशेष v. 21. 4  
मडु-नालिकेरवन ( cf. माड M ) XIII. 2. 3;  
यलात्कार XIII. 2. 3  
मड-बलात्कारण IX. 14. 10  
मम्भीसिया-मा भेषीः इति उक्ता, आश्वासिता,  
XXXII. 26. 3  
मयासि-( अमृताशी ) देव XIV. 1. 4  
मरट्ट-दर्प, गर्व, XVI. 16. 8  
मल्हण-मद्युक XXIX. 25. 5  
मंट-निरुपम ( cf. मट्ट M ) IX. 8. 11  
मंट-निम्नोन्नत XII. 5. 25.  
मंडल-श्वा v. 15. 12  
मंदीरय-रविकानिरोधकलोद्भवलय XII. 11. 3  
मायण्हिय-मृगवृष्णिका XX. 20. 7  
माहुंडल-सर्पविशेष XVI. 9. 12  
मुसुमूरइ-द्रवति III. 3. 3  
मुसुमूरण-पिण्डीकरण VII. 6. 12  
मुंडिय-मन्दुरोभयपार्श्वनिज्ञानकाष्ठद्वय  
XV. 2. 5  
मूरधअ-तापित, कथित XII. 11. 10  
मेरा-मर्यादा VIII. 1. 13  
मेलअ-समूह ( cf. मेळा M ) XXVIII. 3. 8  
मेलवक्क-संगम XXXII. 24. 4  
मेंडअ-मेष ( cf. मेंडा M ) XVI. 9. 10  
मोक्कल्लिय-मुक्त XIII. 5. 10; मोचिन  
XXXI. 29. 8  
मोडिय-भ्रम VIII. 12. 5  
रडि-आक्रन्दन XV. 20. 4  
रवण-रम्य II. 2. 3  
रहट्ट-अरघट्ट ( cf. रहाट्ट M ) XXVII. 1. 4  
रहल्लि-तरङ्ग, वीची ( cf. लहर M )  
IV. 15. 12  
रहिअ-आच्छादित XV. 12. 4  
रंखोलिर-विलसनशील III. 2. 1  
रंगइ-जानुभ्यां चलति ( cf. रंगणं M )  
IV. 1. 11  
रंजण-मृद्राजनविशेष ( cf. रंजण M )  
v. 19. 11  
रंडिय-विधवीरुत XVII. 9. 10  
रिंछ-शुक I. 14. 4  
रुंटइ-शब्दं करोति v. 1. 10  
रुणुंरुंइ-गुञ्जति VI. 1. 14  
रुंद-विस्तीर्ण ( cf. रुंद M ) III. 7. 10  
रुंदिम-विस्तार XI. 4. 5  
रेल्ल-चालन ( cf. रेलणं M ) XIV. 10. 1  
रेह-शोभा XI. 23. 4  
रेहइ-राजते, शोभते II. 2. 12  
रोयर-रुचिकर XVII. 12. 7  
रोल-कोलाहल XIV. 5. 9  
लइ-अतीव ( वाक्यालकारे ) ( cf. लइ M )  
v. 16. 14  
ललाविय-प्रसारित XVII. 1. 1  
लल्ल-अस्फुटवाक् IX. 8. 11  
लल्लक-रौद्र ( cf. लल्लकार M ) XIV. 7. 5  
लंजिया-गृहदासी XXXI. 21. 1  
लाणिं-मर्यादा, अन्न IV. 5. 14  
लीह-रेखा XII. 6. 7  
लुक्क-निर्लान IX. 14. 12  
लहसइ-पतति, भ्रंसते II. 8. 13  
वट्टुत्तिविडि-वट्ट+उत्तिविडी ( cf. उतरंड M )  
XXXII. 20. 5  
वड्डु-महत् I. 12. 6  
वड्डल-सम्प्राप्तवान ( cf. वादळ M ) VII. 16. 8  
वमाल-कोलाहलशब्द I. 11. 7  
वळ्वीह-चातक II. 13. 13  
वावल्ल-सेछ, कुन्त, सर्वलोहमयायुधविशेष  
VII. 5. 11  
वाहियालि-अश्ववाहनमार्ग I. 14. 8  
विट्टल-अपवित्र, अस्पृश्यसंसृष्ट ( cf. विटाळ M )  
VII. 12. 8  
विडप्प-राहु ( विदर्प ! ) XII. 6. 3  
विड्डुम-भय XVIII. 13. 1

GLOSSARY OF PRAKRIT WORDS

- विदत्त-अर्जित XVI. 3. 4  
 विराल-विडाल, मार्जार XXX. 4. 10  
 विरिक्त-विमक्त VIII. 13. 23  
 विरोहिय-कदर्थित XXXI. 23. 7  
 विलया-वनिता V. 4. 13  
 विसंभर-तन्तुवाय, कोलिक XXXI. 17. 12  
 विस्तुरइ-सियते XIV. 5. 10  
 विहलंघल-विह्वलाङ्ग XXVIII. 19. 8  
 वृण्ण-संकुपित XVII. 15. 12  
 वेच्छिल-कोरुण्टवृक्ष XXV. 5. 9  
 वेल्हल-कोमल III. 1. 11  
 वेहाविय-वञ्चित ( द्वैधीकृत ! ) XVIII. 2. 2  
 वैभल-विह्वल XXVIII. 27. 1  
 वोद्रही-तरुणी XXXIII. 1. 10  
 वोल्इ-अतिक्रामति IX. 19. 14  
 वोलाविय-त्यक्त XV. 6. 4; अतिक्रामित,  
 निष्कासित, XVIII. 2. 2.  
 वोलीण-अतिक्रान्त II. 9. 1  
 वोक्क-यकृत ( कलिना T. ) XI. 24. 12  
 सइत्त-सचेतन XXX. 1. 12  
 समलहिय-अभिलिप्त VI. 1. 9  
 सल-शवशयन, चिन्ता, XXIII. 8. 6  
 सलसलइ-सलसलष्वनिं करोति ( cf. सळ-  
 सळणें M. ) IV. 11. 10  
 सवडंमुह-संमुस II. 2. 12  
 भवलहण-समालम्भन ( विलेपन ) III. 4. 7  
 सव्वल-सर्वलोद्भवयी घाणी, तिलपीडनायुध  
 XI. 16. 9  
 सहइ-शोभते III. 12. 16.  
 संगहण-पुंश्वलयुगल, जारजारिणीयुगल  
 XXXV. 10. 1  
 संच-शरीरबन्ध VIII. 9. 12; नमूह  
 XVII. 5. 2  
 साइउं-आलिङ्गन V. 15. 9  
 साड-विध्वंसक XIV. 5. 14  
 साडी-शादी, वस्त्र XII. 5. 3.  
 सारी-उत्तमा III. 6. 1  
 सिणिसिच-तन्तुवाय, कोलिक XXXI. 17. 13  
 सिप्पि-शुक्ति ( cf. शिप M ) IV. 6. 11  
 सिप्पीर-पलाल VII. 19. 4  
 सिलिंघय-बाल XXXIII. 6. 6  
 सिलिब-शिभु II. 13. 9  
 सिहिण-स्तन II. 16. 2  
 सीसक्क-तुष XIX. 2. 2  
 सुडिअ-दुःसित III. 17. 2  
 सेल्ल-प्राप्त VII. 5. 11  
 सेहीर-सिंह XXV. 3. 5  
 सेंभ-श्लेष्मा XX. 14. 10  
 सोण्णार-स्वर्णकार ( cf सोनार M )  
 XXXI. 7. 2  
 हट्ट-पण्यवीथिका ( cf हाट्ट M ) I. 16. 1  
 होडि-शृसला VII. 13. 8  
 हल्लइ-कम्पते ( cf हल्लणें M ) XIV. 5. 12  
 हल्लिय-कम्पित I. 12. 5; वलित XV. 15. 5  
 हुर-दुःसत XI. 11. 4  
 हुंड-विकलेन्द्रिय XI. 1. 11  
 हल्लिय-प्रोत VII. 5. 10.  
 हवाइइ-कुपित XXXII. 20. 4  
 होहल्लर-जो जो शब्द IV. 4. 14





## ADDENDA ET CORRIGENDA

Page	Kaḍavaka	Line	For	Read
४	१(n)	१४(n)	उद्धय <sup>०</sup> उद्धत <sup>०</sup>	उद्धूय <sup>०</sup> उद्धृत
१५	१६	८	णं	ण
२४	७	६	भ वहि	भावाहि
२४	७(n)	३(n)	जिनाग	जिनागमे
२७	११	१	जंतजणेण	जत जणेण
३९	४	११	सई	सइ
४६	१२	५	जोणयहं	जोयणहं
५२	१९	१	णवं	णवं
७७	७	१०	मुद्दिदारेण	मुद्दिदारेण
८३	१४	९	फलिइ	फलिह
८९	२२	६	पुरसु सपससहु	पुरिसु सपसंसहु
१०६	१०	१०	मरंत	मरंत
१२४	३	७	एत्थु	एत्थु
१४८	१०	८	संकारह	संकारहिं
१६५	१	५	तुहं	तुहं
१६८	४	६	रुढएहिं	रुढएहिं
१८४	७	९	एक्कोरुय	एक्कोरुय
१८५	८	१५	अद्दुव	अद्दुव
१८९	१५	१	वइसइ	वइसइ
२०५	३५	११	अज्जिय संघहु	अज्जियसंघहु
२३२	११	७	सडणय	सडयण
२३३	१	१५	स पहु	सपहु
३००	८(n)	९(n)	कंदासिहि	कंदासिइ
३०२	११(n)	६(n)	हंभ	तुंभ
३०९	६(n)	९(n)	आहं	आहं
३२१	८(v.l.)	१०(v.l.)	MP	MP
३३९	७	६	ि वाउ	पणिवाउ
३४७	३	१४	वावहि	वाविहि
३७९	१	७	पंडियभवणहु	पंडिय भवणहु
३८०	३	१	वदिय	पंदिय
३९८	१२	८	मुणिविणयं <sup>०</sup>	मुणि विणयं <sup>०</sup>

# MAHĀPURĀNA

Page	Kāvaka	Line	For	Read
४००	१५	४	सिरिसुय	सिरि सुय
४००	१५	१०	बइइदेसि	बइइदेसि
४१७	१४	५	उबलोहुवि	उबलोहु वि
४२९	१२	७	दिय कविल	दियकविल
४६३	८	३	धप्पाणउं	अप्पाणउं
४६६	१३	१४	सुयमण	सुय मण
४६७	१४	७	सक्खि	सक्खि
४७१	२१	४	अट्टसाणे	अट्टसाणे
४७३	२४	४	जा	जो
५०२	१७	१३	कणाणिय	केणाणिय
५०६	२२	१०	जेसणइ	जणेसइ
५०७	२४	६	पड्डिवणि णाय	पड्डिवणिणाय
५३३	५	१०	वत्थअणियत्थ	वत्थणियत्थ
५३६	९	५	सा	सो
५५२	८	५	होति	होति
५५७	१६	३	जिणुगय	जिणु गय
५७४	१	४	णिसवइ	णिवसइ
५८४	१५	७	उच्चविह	चउविह
५८४	१६	२	हेऊउ	हेऊ उ
५८४	१६	३	संसारसरीरइं	संसार सरीरइं



५ १० कथा  
१ ५ सा

५

वीर सेवा मन्दिर

पुस्तकालय

काल न० 228, 09 पुष्प

लेखक पुष्प

शीर्षक महापुराणम्

खण्ड 632 क्रम संख्या

। बापसी का